प्रकाशक

देवप्रिय वलीसिंह

मंत्री

महाबोधि सभा, कलकत्ता

• • •

मूल्य

[redacted]

• • •

मुद्रक

मोहनलाल भट्ट

राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

• • •



विद्यालंकारपरिवेणाधिपति
किरिवत्तुडुवे पञ्ञासार नायकमहास्थविर पादयन्वहसे
वेतटयि



प्रकाशकीय

पवित्र पाली-त्रिपिटकके सुत्तपिटकके पाँच निकायोमे अंगुत्तर-निकायका विशिष्ट-स्थान है। शेष चार निकायोंका अधिकांश भाग अनूदित हो चुकने पर भी अंगुत्तर-निकाय अभी तक हिन्दीमे अनूदित नही ही हुआ था। हम भदन्त आनन्द कौसल्यायनके चिर-कृतज्ञ है कि उन्होंने 'जातक' जैसे महान अनुवाद कार्यको समाप्त कर अब अंगुत्तर-निकायके अनुवाद-कार्यको हाथमे लिया और हमे यह सूचना देते हुए हर्ष होता है कि उन्होंने अंगुत्तर-निकायके प्रथम भागके अनन्तर हमे यह अवसर दिया है कि हम अंगुत्तर-निकायके द्वितीय-भागका हिन्दी अनुवाद भी अपने प्रेमी पाठकोंकी भेंट कर सके।

हम केन्द्रीय सरकारके भी कृतज्ञ है जिसकी कृपासे हमे शास्त्रीय ग्रन्थोके मूल तथा अनुवाद छापनेके लिये चार हजार रुपये वार्षिकका अनुदान प्राप्त है।

यदि हमे यह सरकारी अनुदान प्राप्त न हो तो हमे इसमे बडा सन्देह है कि हम इस पवित्र-कार्य को करनेमें समर्थ सिद्ध होगे।

४ ए, बंकिम चटर्जी स्ट्रीट,
कलकत्ता–१२

मंत्री
महाबोधि सभा

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्स।

प्रस्तावना

सूत्र-पिटक, विनय-पिटक तथा अभिधर्म-पिटक ही बौद्धधर्मके प्रामाणिक त्रिपिटक हैं। इनकी भाषा, इनका रचना-काल, इनका सम्पादन, इनमें विद्यमान् भगवान् बुद्धके उपदेश विद्वानोंकी ऊहापोहके विषय हैं ही।

सूत्र-पिटक दीर्घ-निकाय, मज्झिम-निकाय, सयुक्त-निकाय, अगुत्तर-निकाय तथा खुद्दक निकाय नामक पाँच निकायोंमें विभक्त माना जाता है। अगुत्तर-निकाय की रचना-शैली सभी दूसरे निकायोंसे विशिष्ट है। इसके 'एकक' निपातमें एक ही एक धर्म (= विषय) का वर्णन है, 'दुक निपात' में दो-दो धर्मों (= विषयों) का, इसी प्रकार 'तिक-निपात' में तीन-तीन विषयोंका। यही क्रम पूरे ग्यारह निपातों तक चला जाता है। प्रत्येक निपातमें अकोत्तर-वृद्धि होती चली गई है, इसीसे 'अगुत्तर-निकाय' नाम सार्थक है।

दीर्घ-निकाय, मज्झिम-निकाय, सयुक्त-निकाय तथा खुद्दक-निकायके भी कुछ ग्रन्थोंका हिन्दी रूपान्तर हो चुकनेके बाद अगुत्तर-निकाय ही सूत्र-पिटकका वह महत्वपूर्ण-निकाय शेष रहा था, जिसका अनुवाद सचमुच बहुत पहले समाप्त हो जाना चाहिये था। खेद है कि वर्तमान अनुवादक भी अभी तक इस कार्यको पूरा न कर सका।

जिस कालामा-सुत्तकी बौद्ध-वाङमयमें ही नहीं, विश्वभरके वाङमयमें इतनी धाक है, जो एक प्रकारसे मानव-समाजके स्वतन्त्र-चिन्तन तथा स्वतन्त्र-आचरण का घोषणा-पत्र माना जाता है, वह कालामा-सुत्त उसी अगुत्तर-निकायके तिक-निपातके अन्तर्गत है। भगवान्ने उस सुत्तमें कालामोंको आश्वासन दिया है—

"हे कालामो आओ। तुम किसी बातको केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह बात अनुश्रुत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह बात परम्परागत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह बात इसी प्रकार कही गई है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे धर्म-ग्रन्थ (पिटक) के अनुकूल है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह तर्क-सम्मत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह न्याय (=शास्त्र) सम्मत है, केवल इस लिये मत स्वीकार

करो कि आकार-प्रकार सुन्दर है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे मनके अनुकूल है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि कहने वालेका व्यक्तित्व आकर्षक है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि कहने वाला श्रमण हमारा 'पूज्य' है। हे कालामो, जब तुम आत्मानुभवसे अपने आप ही यह जानो कि ये बाते अकुशल है, ये बाते सदोष है, ये बाते विज्ञ पुरुषो द्वारा निन्दित है, इन बातोके अनुसार चलनेसे अहित होता है, दुःख होता है—तो हे कालामो ! तुम-उन बातोको छोड दो।" (प्रथम भाग—पृ १९२)

इन पक्तियोका लेखक तो इस सूत्रका विशेष ऋणी है, क्योकि आजसे पूरे ३५ वर्ष पूर्व भगवान्का जो उपदेश विशेष रूपसे उसके त्रिशरणागमनका निमित्त-कारण हुआ था, वह यही कालामा-सूत्त ही था।

इसके तीन वर्ष बाद लदनमें रहते समय उसे एक वयोवृद्ध अग्रेज द्वारा लिखित एक ग्रथ पढनेको मिला। नाम था "ससारका भावी धर्म"। देखा, उसके मुखपृष्ठ पर भी यही कालामा-सूत्त ही उद्धृत है।

जहाँ तक अगुत्तर-निकायके मूल-पाठकी बात है, अनुवादकने प्रथम-भागका अनुवाद-कार्य मुख्य रूपसे रेवरेण्ड रिचर्ड मारिस एम ए, एल एल डी द्वारा सम्पादित तथा सन १८८५ मे पाली टैक्सट सोसाइटी, लदन द्वारा प्रकाशित पालि सस्करणसे ही किया है। यूं बीच-बीचमे वह सिहल-सस्करण तथा स्यामी-सस्करणको भी देख लेता ही रहा है। किन्तु दूसरे भागका अनुवाद एक प्रकारसे सिहल-सस्करणसे ही किया है। सौभाग्यसे इधर भाई भिक्षु जगदीश काश्यपजीके प्रधान-सम्पादकत्वमे प्रकाशित पालि-त्रिपिटकका देवनागरी सस्करण भी प्राप्त हो गया है। अब मूल पालि-पाठके लिये किसी भारतीय अनुवादकको पराङ्मुखी होनेकी अपेक्षा नही। अगुत्तर निकायका यह द्वितीय भाग तो पाठकोके हाथमे है। तीसरे भागका अनुवाद अगुत्तर निकायके देवनागरी सस्करणसे ही किया जा रहा है।

निस्सन्देह विनम्र अनुवादककी प्रवृत्ति अर्थकथाओको मूलके प्रकाशमे ही समझनेकी है, तो भी आचार्य्य बुद्धघोषकृत अगुत्तर निकायकी मनोरथ-पूर्णी अट्ठ-कथाका भी उस पर अनल्प उपकार है।

अगुत्तर निकायके पहले भागमे प्रथम तीन निपातोका ही समावेश हो सका था। इस दूसरे भागके अन्तर्गत चतुक्कनिपात तथा पञ्चक-निपात है। शेष छ निपात अनुमानत तीन भागोमे समाप्त हो जायेगे। इस प्रकार आशा है, किसी-न-किसी दिन अगुत्तर-निकायके पाँचो भाग हिन्दी पाठकोके हाथो तक पहुँच सकेंगे।

किसी भी 'प्रस्तावना' में अगुत्तर-निकायका विस्तृत अध्ययन तो कदाचित् उसका अनुवाद-कार्य पूरा होनेपर ही हो सकेगा। कुछ समय तक अनुवादककी धारणा थी कि सभवत अन्य निकायोमे प्राप्य बुद्ध-वचनका ही अकोत्तर वृद्धिक्रमसे जो सकलन है, उसीका नाम अगुत्तर-निकाय है। किन्तु यह बात यथार्थ नही है। अगुत्तर-निकायमे अपनी निजी ऐसी मौलिक सम्पत्ति पर्याप्त है, जिसका अन्य निकायोमे अभाव है। अगुत्तर-निकायके अध्ययनके बिना 'बुद्ध वचन' का अध्ययन सम्पूर्ण नही ही माना जा सकता।

महाबोधि सभाके मन्त्री श्री देवप्रिय वलीसिहका मै चिर-कृतज्ञ रहूँगा जिन्होने अगुत्तर निकायके प्रकाशनका भार ग्रहण कर मुझे इस ओरसे निश्चिन्त किया।

अगुत्तर निकायके द्वितीय-भागका अनुवाद काफी समय पहले समाप्त हो चुका रहनेपर भी 'श्रेष्ठ कार्योमे विघ्न भी आते ही है' के न्यायके अनुसार मुद्रण कार्य शीघ्र आरम्भ न हो सका। पिछले कुछ वर्षोमे मेरा भारतके बाहर श्री० लकाके प्रसिद्ध विद्यालकार विश्वविद्यालयमें रहना भी एक बाधक-कारण सिद्ध हुआ। फिर भी मै राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मन्त्री भाई मोहनलालजी भट्ट तथा प्रेसके सभी कर्मचारियोका विशेष ऋणी हूँ, जिनके 'अप्रमाद' से ही यह कार्य एक बार आरम्भ होकर इतनी जल्दी समाप्त हो सका।

इस बार श्री० लकासे भारत आते समय पानीके जहाजसे उतरनेसे पूर्व अपनी ही असावधानीसे मै इस बुरी तरह गिरा कि पाँवोकी हड्डियोमे चोट आ गई। बिस्तरपर पडे ही पडे प्रूफ आदि सशोधनका सारा कार्य कर सका हूँ। समितिके जिन-जिन कार्यकर्ताओने तथा राष्ट्रभाषा महाविद्यालयके जिन-जिन विद्यार्थियोने इस बीच रोगी-सुश्रुषाके कठिन धर्मको निभाया, उन सबका भी मै विशेष रूपसे ऋणी हूँ, क्योकि उनकी सहायताके बिना मै सर्वथा पङ्गु ही रहता। उन्हे 'धन्यवाद' क्या दूँ! हार्दिक आशीर्वचन।

राजेन्द्रभवन, वर्धा
१७–२–६३

आनन्द कौसल्यायन

अंगुत्तर निकाय

दूसरा भाग

चौथा निपात

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

प्रथम पण्णासक

भण्डग्राम वर्ग प्रथम

ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान वज्जी जनपदमे भण्डग्राममे विहार करते थे। वहा भगवानने भिक्षुओको सम्बोधित किया—

"भिक्षुओ!"

"भदन्त!" कहकर उन भिक्षुओने भगवानको प्रतिवचन दिया। भगवानने यह कहा—

"भिक्षुओ! चार बातो (=धर्मो) का बोध न होनेसे ही, ज्ञान न होने ही, मेरा और तुम्हारा दीर्घ कालतक दौडना, ससारमें बार-बार जन्म ग्रहण करते रहना हुआ है। कौनसे चार धर्मोका? भिक्षुओ, आर्य-शीलका बोध न होनेसे ही, ज्ञान न होनेसे ही, मेरा और तुम्हारा दीर्घकाल तक दौडना, ससारमें बार-बार जन्म ग्रहण करते रहना हुआ है। भिक्षुओ, आर्य-समाधिका बोध न होनेसे ही, ज्ञान न होनेसे ही, मेरा और तुम्हारा दीर्घकालतक दौडना, ससारमे बार बार जन्म ग्रहण करते रहना हुआ है। भिक्षुओ, आर्य-प्रज्ञाका बोध न होनेसे ही, ज्ञान न होनेसे ही, मेरा और तुम्हारा दीर्घ-काल तक दौड़ना, ससारमे बार-बार जन्म ग्रहण करते रहना हुआ है। भिक्षुओ, आर्य-विमुक्तिका बोध न होनेसे ही, ज्ञान न होनेसे ही, मेरा और तुम्हारा दीर्घ कालतक दौड़ना, संसारमें बार-बार जन्म ग्रहण करते रहना हुआ है। भिक्षुओ,

इस आर्य-शीलका बोध हो गया, ज्ञान हो गया, आर्य-समाधिका बोध हो गया, ज्ञान हो गया, आर्य-प्रज्ञाका बोध हो गया, ज्ञान हो गया, आर्य-विमुक्तिका बोध हो गया, ज्ञान हो गया—इसलिये भवतृष्णाका उच्छेद हो गया, भव-हेतुका क्षय हो गया, अब पुनर्भव नही है। भगवानने यह कहा। सुगतने यह कहकर, शास्ताने यह कहा—

सील समाधी पञ्ञा च विमुत्ति च अनुत्तरा
अनुबुद्धा इमे धम्मा गोतमेन यसस्सिना
इति बुद्धो अभिञ्ञाञ धम्ममक्खासि भिक्खुन
दुक्खस्सन्तकरो सत्था चक्खुमा परिनिब्बुतो

[यशस्वी गौतमने शील, समाधि, प्रज्ञा तथा सर्वश्रेष्ठ विमुक्तिका बोध प्राप्त किया। इस प्रकार बुद्धने इनका ज्ञान प्राप्तकर भिक्षुओंको धर्मोपदेश दिया। (फिर) दुःखका अन्त करनेवाले, शास्ता, चक्षुमान, परिनिर्वाणको प्राप्त हो गये।]

२ भिक्षुओ, जो इन चार बातो (=धर्मो) से युक्त नही होता, वह इस बुद्ध-शासन (=धर्म-विनय) से पतित हुआ माना जाता है। कौनसी चार बातोंमे ? भिक्षुओ, जो आर्य-शीलसे युक्त नही होता, वह इस बुद्ध-शासनसे पतित हुआ माना जाता है। भिक्षुओ, जो आर्य-समाधिसे युक्त नही होता, वह इस बुद्ध-शासनसे पतित हुआ माना जाता है। भिक्षुओ, जो आर्य-प्रज्ञासे युक्त नही होता, वह इस बुद्ध-शासनसे पतित हुआ माना जाता है। भिक्षुओ, जो आर्य-विमुक्तिसे युक्त नहीं होता, वह इस बुद्ध-शासनसे पतित हुआ माना जाता है। भिक्षुओ, जो इन चार बातो (=धर्मो) से युक्त नही होता, वह इस बुद्ध-शासन (=धर्मविनय) से पतित हुआ माना जाता है। भिक्षुओ, जो इन चार बातो (=धर्मो) से युक्त होता है, वह बुद्ध-शासन (=धर्म-विनय) से पतित हुआ नही माना जाता। कौन सी चार बातोंमे ? भिक्षुओ, जो आर्यशीलसे युक्त होता है, वह इस बुद्ध-शासनसे पतित हुआ नही माना जाता। भिक्षुओ, जो आर्य-समाधिसे युक्त होता है, वह बुद्ध-शासनसे पतित हुआ नही माना जाता। भिक्षुओ, जो आर्य-प्रज्ञासे युक्त होता है, वह बुद्ध-शासनसे पतित हुआ नही माना जाता। भिक्षुओ, जो आर्य विमुक्तिसे युक्त होता है, वह बुद्ध-शासनसे पतित हुआ नही माना जाता। भिक्षुओ, जो इन चार बातो (धर्मो) से युक्त होता है, वह इस बुद्ध-शासनसे पतित हुआ नही माना जाता।

चुता पतन्ति पतिता गिद्धा च पुनरागता
कतकिच्चं रतं रम्मं सुखेनान्वागतं सुखं।

[जो च्युत, जो पतित हैं, वे गिरते हैं। जो तृष्णा-युक्त हैं, वे पुन. ससारमें आते हैं। जो कृत्य-कृत्य हैं, वे रमणीयमे अनुरक्त रहते हैं और मुखसे सुखको प्रतिष्ठित करते हैं।]

३. भिक्षुओ, चार वातो (=धर्मो) से युक्त मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुष अपनी हानि करता है, विज्ञ पुरुषोकी दृष्टिमे छोटे वडे दोषोका करने वाला होता है और बहुत अपुण्यार्जन करता है। कौनसे चार धर्मोसे ? विना सोचे, विना परीक्षा किये गुण-रहितका गुण कहता है; विना सोचे, विना परीक्षा किये गुणीका अवगुण कहता है; विना सोचे, विना परीक्षा किये अप्रसन्न होनेके स्थानपर प्रसन्नता व्यक्त करता है; विना सोचे, विना परीक्षा किये प्रसन्न होनेके स्थानपर अप्रसन्नता व्यक्त करता है। भिक्षुओ, इन चार धर्मोसे युक्त मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुष अपनी हानि करता है, विज्ञ पुरुषोकी दृष्टिमें छोटे वडे दोषोका करनेवाला होता है और बहुत अपुण्यार्जन करता है। भिक्षुओ, चार वातो (=धर्मो) से युक्त ज्ञानी पण्डित, सत्पुरुष अपनी हानि नही करता, विज्ञ पुरुषोकी दृष्टिमें छोटे-वडे दोषोका करनेवाला नही होता, बहुत पुण्यार्जन करता है। कौनसे चार धर्मोसे ? सोचकर, परीक्षा करके दोषीका दोष कहता है; सोचकर, परीक्षा करके गुणीका गुण कहता है; सोचकर, परीक्षा करके अप्रसन्न होनेके स्थानपर अप्रसन्नता व्यक्त करता है; सोचकर विचारकर प्रसन्न होनेके स्थानपर प्रसन्नता व्यक्त करता है। भिक्षुओ, इन चार वातो (=धर्मो) से युक्त ज्ञानी, पण्डित, सत्पुरुष अपनी हानि नही करता, विज्ञ पुरुषोकी दृष्टिमे छोटे-वडे दोषोका करनेवाला नही होता, बहुत पुण्यार्जन करता है।

यो निन्दिय पससति त वा निन्दति यो पससियो
विचिनाति मुखेन सो कलि कलिना तेन सुख न विन्दति
अप्पमत्तो अय कलि यो अक्खेसु धनपराजयो
सब्बस्सामि सहापि अत्तना अयमेव महत्तरो कलि
यो सुगतेसु मन पदोसये सत सहस्सान निरब्बुदान
छतिसति पञ्च च अब्बुदानि यमरिय गरहिय निरय
उपेति, वाच मनञ्च पणिधाय पापक।

[जो निंदनीयकी प्रशसा करता है, वा प्रशसनीयकी निन्दा करता है, वह अपने मुखसे 'पाप' का ही चयन करता है, 'पाप' का चयन करनेके कारण वह सुख नही भोगता है। जुयेमे जो अपने साथ सर्वस्व धनकी भी 'हानि' होती है,

वह बड़ी 'हानि' नही होती। यह जो 'सुगत' के प्रति मनको मैला कर लेना है, यही बड़ी 'हानि' है। जो पापयुक्त मनसे सदोष वाणी बोलता है, वह लाखो निरब्बुद (नरक) तथा ३६ और ५ अब्बुद नरकोमे जाता है, जो किसी श्रेष्ठ-पुरुषकी निन्दा करता है।]

भिक्षुओ, इन चारके प्रति अनुचित व्यवहार करनेवाला मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुप अपनी हानि करता है, विज्ञपुरुषोकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोषोका करनेवाला होता है और बहुत अपुण्यार्जन करता है। किन चारके प्रति? भिक्षुओ, माताके प्रति अनुचित व्यवहार करनेवाला मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुप अपनी हानि करता है, विज्ञ पुरुषोकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोषोका करनेवाला होता है और बहुत अपुण्यार्जन करता है। भिक्षुओ, पिताके प्रति अनुचित व्यवहार करनेवाला . . . करता है। भिक्षुओ, तथागतके प्रति . करता है। भिक्षुओ, तथागत श्रावकके प्रति . करता है। भिक्षुओ, इन चारके प्रति अनुचित व्यवहार करनेवाला मूर्ख अपण्डित, असत्पुरुप अपनी हानि करता है, विज्ञ पुरुषोकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोषोका करनेवाला होता है और बहुत अपुण्यार्जन करता है। भिक्षुओ, इन चारके प्रति उचित व्यवहार करनेवाला पण्डित, ज्ञानी, सत्पुरुष अपनी हानि नही करता है, विज्ञ पुरुषोकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोषोका करनेवाला नही होता और बहुत पुण्यार्जन करता है। किन चारके प्रति? भिक्षुओ, माताके प्रति उचित व्यवहार करनेवाला पण्डित, ज्ञानी, सत्पुरुष अपनी हानि नहीं करता है, विज्ञपुरुषोकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोषोका करनेवाला नही होता और बहुत पुण्यार्जन करता है। भिक्षुओ, पिताके प्रति . पुण्यार्जन करता है। भिक्षुओ, तथागतके प्रति . . . पुण्यार्जन करता है। भिक्षुओ, तथागत श्रावकके प्रति पुण्यार्जन करता है। भिक्षुओ, इन चारके प्रति उचित व्यवहार करनेवाला पण्डित, ज्ञानी, सत्पुरुष अपनी हानि नहीं करता है, विज्ञ पुरुषोकी दृष्टिमें छोटे-बड़े, दोषोका करनेवाला नही होता और बहुत पुण्यार्जन करता है।

मातरि पितरि चापि यो मिच्छा पटिपज्जति
तथागते च सम्बुद्धे अथवा तस्स सावके
बहुञ्च सो पसवति अपुञ्ञं तादिसो नरो
ताय अधम्मचरियाय मातापितुसु पण्डिता
इधेव नं गरहन्ति पेच्चापायञ्च गच्छति
मातरि पितरि चापि यो सम्मापटिपज्जति

तयागते च सम्वुद्धे अथवा तस्स सावके
वहुञ्च सो पसवति पुञ्ञपि तादिसो नरो
ताय धम्मचरियाय मातापितुसु पण्डिता
इधेव न पससति पेच्च सग्गे पमोदति

[जो माता, पिता, सम्वुद्ध तयागत अयवा उनके श्रावकोके प्रति अनुचित व्यवहार करता है, वैसा आदमी वहुत अपुण्यार्जन करता है। माता-पिताके प्रति उस अधार्मिक चर्य्याके कारण पण्डित जन यहाँ इस लोकमे उसकी निन्दा करते है तथा मरकर नरकगामी होता। जो माता, पिता, सम्वद्ध तयागत अयवा उनके श्रावकोंके प्रति उचित व्यवहार करता है, वैसा आदमी वहुत पुण्यार्जन करता है। माता-पिताके प्रति उन धार्मिक चर्य्याके कारण पण्डित-जन यहाँ इस लोकमे उसकी प्रशसा करते है तया मरकर वह स्वर्गमे आनदित होता है।]

भिक्षुओ, इस ससारमे चार प्रकारके लोग है। कौनसे चार प्रकारके? अनुस्रोत गामी-पुद्गल। प्रति स्रोतगामी-पुद्गल, स्यित पुद्गल तया पार होकर स्थल पर स्थित हो गया ब्राह्मण। भिक्षुओ, अनुस्रोत गामी-पुद्गल किस आदमीको कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी काम-भोगोका सेवन करता है, पापकर्म करता है। भिक्षुओ उस आदमीको अनुस्रोतगामी-पुद्गल कहते है। भिक्षुओ प्रतिस्रोत गामी पुद्गल किस आदमीको कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी काम-भोगोका सेवन नही करता, पाप-कर्म भी नही करता, दुख सहन करता हुआ भी, दौर्मनस्य सहन करता हुआ भी, अश्रु-मुख, रोता हुआ भी परिपूर्ण, परिशुद्ध व्रह्मचर्यका आचरण करता है। भिक्षुओ ऐसे आदमीको प्रति-स्रोत गामी पुद्गल कहते है। भिक्षुओ, स्थित-पुद्गल किस आदमीको कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी पतनकी ओर ले जानेवाले पाच वधनोका क्षय कर 'ओपपातिक' हो जाना है, वहीसे परिनिर्वृत हो जानेवाला, उस लोकसे न लौटनेवाला। भिक्षुओ, ऐसे आदमीको स्थित-पुद्गल कहते है। भिक्षुओ, पार होकर स्थलपर स्थित हो गया ब्राह्मण किस आदमीको कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी आस्रवोका क्षय कर, इसी शरीरमे अनास्रव चित्तविमुक्ति, प्रज्ञा-विमुक्तिको स्वय जानकर, साक्षात कर, प्राप्तकर विहार करता है। भिक्षुओ, ऐसे आदमीको पार होकर स्थलपर स्थित हो गया व्राह्मण कहते है। भिक्षुओ, इस ससारमे ये चार प्रकारके लोग है।

ये केचि कामेसु असञ्ञता जना
अवीतरागा इध कामभोगिनो

पुनप्पुन जातिजरूपगा हि ते
तण्हाधिपन्ना अनुसोतगामिनो ॥
तस्मा हि धीरो इधुपट्ठितासति
कामे च पापे च असेवमानो
सहापि दुक्खेन जहेय्य कामे
पटिसोतगामीति तमाहु पुग्गल ॥
यो वे किलेसानि पहाय पञ्च
परिपुण्णसेखो अपरिहानधम्मो
चेतोवसिप्पत्तो समाहितिन्द्रियो
स वे ठितत्तोति नरो पवुच्चति ॥
परोपरा यस्स समेच्च धम्मा
विधूपिता अत्यगता न सन्ति
स वेदगू वुसितब्रह्मचरियो
लोकन्तगू पारगतोति वुच्चति ॥

[जो काम-भोगोके विषयमें असयत है, जो अवीतराग है, जो काम भोगी है, वे तृष्णाभिभूत नर वार वार जाति तथा जराको प्राप्त होते है और 'अनु-स्रोत-गामी' कहलाते है। इसलिये जो धैर्यवान व्यक्ति अपनी स्मृतिको उपस्थित रख, काम-भोगो तथा पापोसे विरत रहता हुआ, दुख सहकर भी काम भोगोका त्याग करता है, उसे प्रति-स्रोत-गामी व्यक्ति कहते है। जो पाँच सयोजनोका त्यागकर देता है, जो परिपूर्ण शैक्ष होता है, जो पतनोन्मुख नही रहता, जो चित्तको कावूमें रखता, जिसकी इन्द्रिया उसके वशमे है, वही 'स्थित' कहलाता है। जिसके सभी (अकुशल-) धर्म शान्त हो गये हो, जो वेदज्ञ हो, जो श्रेष्ठजीवी हो उसे ही लोकके अन्ततक पहुँचा हुआ, लोकके पार पहुँचा हुआ कहते है।]

भिक्षुओ ससारमें चार प्रकारके आदमी है। कौनसे चार प्रकारके? (१) अल्प-श्रुत श्रुतसे अनुपपन्न, (२) अल्प-श्रुत श्रुतसे उपपन्न, (३) बहुश्रुत श्रुतसे अनुपन्न, (४) बहुश्रुत श्रुतसे उपपन्न। भिक्षुओ, आदमी अल्प-श्रुत श्रुतसे अनुपपन्न कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमीने थोडा ही (धर्म) सुना होता है—सुत्त, गेय्य, वेय्याकरण, गाथा, उदान, इतिवुत्तक, जातक, अब्भुतधम्म तथा वेदल्ल। वह उस अल्प-श्रुतके अर्थ और धर्मको न जानकर, उसके अनुसार आचरण करनेवाला नही होता। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी अल्प-श्रुत श्रुतसे अनुपपन्न होता है। भिक्षुओ, आदमी अल्प-श्रुत श्रुतसे उपपन्न कैसे होता है, भिक्षुओ, एक आदमीने थोडा ही (धर्म) सुना होता है—

सुत्त, गेय्य, . .   वेदल्ल। वह उस अल्प-श्रुतके अर्थ और धर्मको जानकर उसके अनुसार चलनेवाला होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी अल्पश्रुत श्रुतसे उपपन्न होता है। भिक्षुओ, आदमी बहुश्रुत श्रुतसे अनुपपन्न कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमीने बहुत सुना होता है—सुत्त, गेय्य, . . वेदल्ल। वह उस बहुश्रुतके अर्थ और धर्मको न जानकर उसके अनुसार आचरण करनेवाला नही होता। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी बहु-श्रुत श्रुतसे अनुपपन्न होता है। भिक्षुओ, आदमी बहुश्रुत श्रुतसे उपपन्न कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमीने बहुत सुना होता है—सुत्त, गेय्य . वेदल्ल। वह उस बहुश्रुतके अर्थ और धर्मको जानकर उसके अनुसार आचरण करनेवाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी बहुश्रुत श्रुतसे उपपन्न होता है। भिक्षुओ, ससारमे ये चार प्रकारके आदमी है।

अप्पस्सुतोपि चे होति सीलेसु असमाहितो।
उभयेन न गरहन्ति सीलेन च सुतेन च॥
अप्पस्सुतोपि चे होति सीलेसु सुसमाहितो।
सीलेन न पससन्ति नास्स सम्पज्जते सुत॥
बहुस्सुतोपि चे होति सीलेसु असमाहितो,
सीलेन न गरहन्ति तस्स सम्पज्जते सुत॥
बहुस्सुतोपि चे होति सीलेसु सुसमाहितो,
उभयेन न पससन्ति सीलतो च सुतेन च॥
बहुस्सुत धम्मधर सप्पञ्ञ बुद्धसावक,
नेक्ख जम्बोनदस्सेव को त निन्दितुमरहति,
देवापि न पससन्ति ब्रह्मुना पि पससितो॥

[अल्प-श्रुत हो और सदाचारी न हो तो उसकी दोनो तरहसे निन्दा होती है, श्रुत (=ज्ञान) की दृष्टिसे भी और आचरणकी दृष्टिसे भी। अल्प-श्रुत हो किन्तु सदाचारी हो तो उसके शीलकी प्रशसा होती है, ज्ञानका तो उसमे अभाव ही रहता है। बहुश्रुत हो और सदाचारी न हो तो उसकी शीलकी दृष्टिसे निन्दा होती है, ज्ञानी तो वह होता ही है। बहु-श्रुत हो और सदाचारी भी हो, तो उसकी दोनो दृष्टियोसे प्रशसा होती है, शीलकी दृष्टिसे भी और श्रुत (=ज्ञान) की दृष्टिसे भी। जो बहु-श्रुत है, जो धर्म-धर है, जो प्रज्ञावान् बुद्ध-श्रावक है, जम्बोनद स्वर्णके समान उसकी कौन निन्दा कर सकता है! देवता भी उसकी प्रशसा करते है, ब्रह्मा द्वारा भी वह प्रशसित है।]

भिक्षुओ, ये चार पण्डित, विनीत, विशारद, बहुश्रुत, धर्मधर, धर्मानुसार आचरण करनेवाले सघकी शोभा बढाते है। कौनसे चार? भिक्षुओ, जो भिक्षु पडित, विनीत, विशारद, व बहुश्रुत, धर्मधर, धर्मानुसार आचरण करनेवाला होता है वह सघकी शोभा बढाता है। भिक्षुओ, जो भिक्षुणी पडिता, विनीता, विशारदा बहुश्रुता, धर्मधरा, धर्मानुसार आचरण करनेवाली होती है वह सघकी शोभा बढाती है। भिक्षुओ, जो उपासक पडित . धर्मानुसार आचरण करनेवाला होता है वह सघकी शोभा बढानेवाला होता है। भिक्षुओ, जो उपासिका पडिता धर्मानुसार आचरण करनेवाली होती है वह सघकी शोभा बढानेवाली होती है।

यो होति व्यत्तो च विसारदो च
बहुस्सुतो धम्मधरो च होति
धम्मस्स होति अनुधम्मचारी
स तादिसो वुच्चति सघसोभनो

[जो पडित होता है, विशारद होता है, बहुश्रुत होता है, धर्मधर होता है तथा धर्मानुसार आचरण करनेवाला होता है, वैसा आदमी सघकी शोभा बढानेवाला कहलाता है।]

भिक्खु च सीलसम्पन्नो भिक्खुनी च बहुस्सुता
उपासको च यो सद्धो या च सद्धा उपासिका
एते खो सघ सोभेन्ति एते हि सघसोभना

[जो भिक्षु शीलवान होता है, जो भिक्षुणी बहुश्रुता होती है, जो उपासक श्रद्धावान होता है तथा जो उपासिका श्रद्धावान् होती है—ये सघकी शोभा बढाते है, ये सघ-शोभन है।]

भिक्षुओ, ये चार तथागतके वैशारद्य है, जिन वैशारद्योसे युक्त होकर तथागत वृषभ-स्थानको प्राप्त होते है, परिषदोमें सिंह-नाद करते है, ब्रह्मचक्र, प्रवर्तित करते है। कौनसे चार? भिक्षुओ, मै इसका कोई लक्षण नही देखता कि सम्यक् सम्बुद्ध द्वारा इन बातकी घोषणा किये जानेपर कि अमुक धर्म जान लिये गये है, कोई श्रमण या ब्राह्मण या देव या मार या ब्रह्मा अथवा विश्वमें कोई और यथार्थ रूपसे यह दोषारोपण कर सके कि इन धर्मोका ज्ञान प्राप्त नही किया गया है। भिक्षुओ, इस प्रकारका कोई लक्षण दिखाई न देनेके कारण ही मै कल्याण-युक्त, निर्भय, वैशारद्य-युक्त होकर विचरता हूँ। मै इसका कोई लक्षण नही देखता कि सम्यक्

सम्बुद्ध द्वारा इस बातकी घोषणा किये जानेपर कि अमुक आस्रव क्षीण हो गये है, कोई श्रमण या ब्राह्मण या देव या मार या ब्रह्मा अथवा विश्वमे कोई और यथार्थ-रूपसे यह दोषारोपण कर सके कि इन आस्रवोका क्षय नही किया गया है। भिक्षुओ, इस प्रकारका कोई लक्षण दिखाई न देनेके कारण ही, मै कल्याण-युक्त, निर्भय, वैशारद्य-युक्त होकर विचरता हूँ। मै इसका कोई लक्षण नही देखता कि सम्यक्-सम्बुद्ध द्वारा इस बातकी घोषणा किये जानेपर कि अमुक धर्म (निर्वाण-मार्गके) बाधक धर्म है, कोई श्रमण या ब्राह्मण या देव या मार या ब्रह्मा अथवा विश्वमे कोई और यथार्थ रूपसे यह दोषारोपण कर सके कि उन उन धर्मोका सेवन अर्थात् उन बातोके अनुसार आचरण (निर्वाण-मार्ग) मे बाधक नही होता। भिक्षुओ, इस प्रकारका कोई लक्षण दिखाई न देनेके कारण ही, मै कल्याण-युक्त, निर्भय, वैशारद्य-युक्त होकर विचरता हूँ। मै इसका कोई लक्षण नही देखता कि सम्यक् सम्बुद्ध द्वारा इस बातकी घोषणा किये जानेपर कि अमुक अमुक धर्मोका पालन दु ख-क्षयका कारण होता है, कोई श्रमण या ब्राह्मण या देव या मार या ब्रह्मा अथवा विश्वमे कोई और यथार्थ रूपसे यह दोषारोपणकर सके कि अमुक अमुक धर्मोका पालन दु ख-क्षयका कारण नही होता। भिक्षुओ, इस प्रकारका कोई लक्षण दिखाई न देनेके कारण ही मै कल्याणयुक्त, निर्भय, वैशारद्य-युक्त होकर विचरता हूँ। भिक्षुओ, ये चार तथागतके वैशारद्य है, जिन वैशारद्योसे युक्त होकर तथागत वृषभ-स्थानको प्राप्त होते है, परिषदोमें सिंहनाद करते है और ब्रह्मचक्र प्रवर्तित करते है।

ये केचि ये वादपथा पुथुस्सिता
यन्निस्सिता समणब्राह्मणाच
तथागत पत्वान ते भवन्ति
विसारद वादपथातिवत्त
यो धम्मचक्क अभिभूय्य केवल
पवत्तयि सव्वभूतानुकम्पि
त तादिस देवमनुस्ससेट्ठ
सत्ता नमस्सन्ति भवस्स पारगु

[जितने भी बहुतसे ऐसे वाद है, जिनमे श्रमण-ब्राह्मण उलझे हुए है, वे वादोसे मुक्त, विशारद, तथागतके पास पहुँचनेपर 'शान्त' हो जाते है। सभी प्राणियोपर अनुकम्पाकर जिन्होने धर्म चक्र प्रवर्तित किया, देव-मनुष्य-श्रेष्ठ भव-पारगत बुद्धको प्राणी नमस्कार करते है।]

भिक्षुओ, ये चार तृष्णाकी उत्पत्तियाँ हैं, जो भिक्षुकी उत्पन्न होनेवाली तृष्णाकी उत्पत्तिका रूप धारण करती हैं। कौन सी चार? भिक्षुओ, या तो भिक्षुकी उत्पन्न होनेवाली तृष्णा चीवरके विषयमें उत्पन्न होती है, या पिण्डपात (=भोजन) के लिये उत्पन्न होती है, या शयनासन (=निवासस्थान) के लिये उत्पन्न होती है, अथवा यह-यह कुछ बननेके लिये तृष्णा उत्पन्न होती है। भिक्षुओ, ये चार तृष्णाकी उत्पत्तियाँ, जो भिक्षुकी उत्पन्न होनेवाली तृष्णाकी उत्पत्तिका रूप धारण करती हैं।

तण्हादुतियो पुरिसो दीघमद्धान संसरं
इत्थभावञ्ञथाभाव संसार नातिवत्तति
एतमादिनवं ञत्वा तण्ह दुक्खस्स सम्भवं
वीततण्हो अनादानो सतो भिक्खु परिब्बजे

[तृष्णाका साथी पुरुष संसारमें दीर्घकालतक भटकता हुआ, इस जन्म और उस जन्मको धारण करता हुआ संसार-सागरसे पार नहीं होता। इस प्रकार इस दुष्परिणामको जानकर कि तृष्णा दुःखका कारण है, भिक्षुको चाहिये कि वह तृष्णारहित तथा आसक्ति-रहित होकर प्रव्रजित हो।]

भिक्षुओ, चार प्रकारके योग हैं। कौनसे चार प्रकारके? काम-योग, भव-योग, दृष्टि-योग तथा अविद्या-योग। भिक्षुओ, काम-योग किसे कहते हैं? भिक्षुओ यहाँ एक आदमी काम-भोगोंकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और काम-भोगोंसे मुक्ति यथार्थ रूपसे नहीं जानता है। उस काम-भोगोंकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और काम-भोगोंसे मुक्ति न जाननेवालेका काम-भोगोंके प्रति जो काम-राग है, कामनंदी है, काम-स्नेह है, काम-मूर्छा है, काम-पिपासा है, काम-परिदाह है, काम-सक्ति है तथा काम-तृष्णा है उससे वह भर जाता है। भिक्षुओ, यह काम-योग कहलाता है। यह काम-योग हुआ। भव-योग किसे कहते हैं? भिक्षुओ, यहाँ एक आदमी भवकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और भवसे मुक्ति यथार्थ-रूपसे नहीं जानता। उस भवकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और भवसे मुक्ति न जाननेवालेका भवके प्रति जो भव-राग है, भव-नंदी है, भव-स्नेह है, भव-मूर्छा है, भव-पिपासा है, भव-परिदाह है, भवासक्ति है, भव-तृष्णा है उससे वह भर जाता है। भिक्षुओ, यह भव-योग कहलाता है। यह काम-योग हुआ, यह भव-योग हुआ। दृष्टि-योग किसे कहते हैं? भिक्षुओ, यहाँ एक आदमी

दृष्टि (मत) की उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और दृष्टिसे मुक्ति यथार्थ रूपसे नहीं जानता उन दृष्टि (मत) की उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और दृष्टिसे मुक्ति यथार्थ रूपसे नहीं जाननेवालेका दृष्टिके प्रति जो दृष्टि-राग है, दृष्टि-स्नेह है, दृष्टि-मूर्छा है, दृष्टि-पिपासा है, दृष्टि-परिदाह है, दृष्टि-आसक्ति है, दृष्टि-तृष्णा है उससे वह भर जाता है। भिक्षुओ, यह दृष्टि-योग कहलाता है। यह काम-योग हुआ, यह भव-योग हुआ, यह दृष्टि-योग हुआ। अविद्या-योग किसे कहते है? भिक्षुओ यहाँ एक आदमी छ स्पर्श-आयतनोंकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम छ स्पर्श-आयतनोंसे मुक्ति यथार्थ रूपसे नहीं जानता। उन छह स्पर्शयतनोंकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और छह स्पर्शायतनोंसे मुक्ति यथार्थ रूपसे नही जाननेवालेको छह आयतनोंके विषयमें जो अविद्या है, अज्ञान है, उससे वह भर जाता है। भिक्षुओ, यह अविद्या-योग कहलाता है। यह जो काम-योग है, भव-योग है, दृष्टि-योग है, अविद्या-योग है, यह पापसे युक्त है, अकुशल-धर्मोसे युक्त है, जो सक्लेश है, जो पुनर्भवका कारण है, जो कष्टकर है, जो दुखदायी है, जो भविष्यमे जाति-जरा मरणका कारण बननेवाले है। इसलिये इनसे युक्त आदमी अयोग-क्षेमी कहलाता है। भिक्षुओ, ये चार योग है।

भिक्षुओ, ये चार विसंयोग है। कौनसे चार? काम-योग-विसयोग, भव-योग-विसयोग, दृष्टि-योग-विसयोग, अविद्या-योग-विसयोग। भिक्षुओ, काम-योग-विसयोग कौनसा है? भिक्षुओ, यहाँ एक (भिक्षु) काम-भोगोकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम, और काम-भोगोसे मुक्ति यथार्थ रूपसे जानता है। काम-भोगोंकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और काम-भोगोसे मुक्ति जाननेवाला काम-भोगोंके प्रति जो काम-राग है, काम-नन्दी है, काम-स्नेह है, काम-मूर्छा है, काम-पिपासा है, काम-परिदाह है, कामासक्ति है तथा कामतृष्णा है उससे वह नही भरता है। भिक्षुओ, यह काम-योग-विसयोग कहलाता है। यह काम-योग-विसयोग हुआ।

भव-योग-विसयोग किसे कहते है? भिक्षुओ, यहाँ एक (भिक्षु) भवोकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और भवोसे मुक्ति यथार्थ रूपसे जानता है, उसका भवोंके प्रति जो भव-राग है, भव-नन्दी है, भव-स्नेह है, भव-मूर्छा है, भव-पिपासा है, भव-परिदाह है, भवासक्ति है तथा भव-तृष्णा है, उससे वह नही भरता है। भिक्षुओ, यह भव-योग-विसयोग कहलाता है। यह हुआ काम-योग विसयोग तथा भव-योग विसयोग। दृष्टि-सयोग-विसयोग किसे कहते है? भिक्षुओ, एक (भिक्षु) दृष्टिकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम, और दृष्टिसे मुक्ति यथार्थ-रूपसे जानता है,

भिक्षुओ, ये चार तृष्णाकी उत्पत्तियाँ है, जो भिक्षुकी उत्पन्न होनेवाली तृष्णाकी उत्पत्तिका रूप धारण करती है। कौन सी चार? भिक्षुओ, या तो भिक्षुकी उत्पन्न होनेवाली तृष्णा चीवरके विषयमे उत्पन्न होती है, या पिण्डपात (= भोजन) के लिये उत्पन्न होती है, या शयनासन (= निवासस्थान) के लिये उत्पन्न होती है, अथवा यह-यह कुछ बननेके लिये तृष्णा उत्पन्न होती है। भिक्षुओ, ये चार तृष्णाकी उत्पत्तियाँ, जो भिक्षुकी उत्पन्न होनेवाली तृष्णाकी उत्पत्तिका रूप धारण करती है।

तण्हादुतियो पुरिसो दीघमद्धान मसर
इत्थभावञ्ञथाभाव ससार नातिवत्तति
एतमादिनव ञत्वा तण्ह दुक्खस्स सम्भव
वीततण्हो अनादानो सतो भिक्खु परिब्बजे

[तृष्णाका साथी पुरुष ससारमे दीर्घकालतक भटकता हुआ, इस जन्म और उस जन्मको धारण करता हुआ ससार-सागरसे पार नही होता। इस प्रकार इस दुष्परिणामको जानकर कि तृष्णा दु खका कारण है, भिक्षुको चाहिये कि वह तृष्णारहित तथा आसक्ति-रहित होकर प्रव्रजित हो।]

भिक्षुओ, चार प्रकारके योग है। कौनसे चार प्रकारके? काम-योग, भव-योग, दृष्टि-योग तथा अविद्या-योग। भिक्षुओ, काम-योग किसे कहते है? भिक्षुओ यहाँ एक आदमी काम-भोगोकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और काम-भोगोसे मुक्ति यथार्थ रूपसे नही जानता है। उस काम-भोगोकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और काम-भोगोसे मुक्ति न जाननेवालेका काम-भोगोके प्रति जो काम-राग है, कामनदी है, काम-स्नेह है, काम-मूर्छा है, काम-पिपासा है, काम-परिदाह है, कामा-सक्ति है तथा काम-तृष्णा है उससे वह भर जाता है। भिक्षुओ, यह काम-योग कहलाता है। यह काम-योग हुआ। भव-योग किसे कहते है? भिक्षुओ, यहाँ एक आदमी भवकी उत्पति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और भवसे मुक्ति यथार्थ-रूपसे नही जानता। उस भवकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और भवसे मुक्ति न जाननेवालेका भवके प्रति जो भव-राग है, भव-नदी है, भव-स्नेह है, भव-मूर्छा है, भव-पिपासा है, भव-परिदाह है, भवासक्ति है, भव-तृष्णा है उससे वह भर जाता है। भिक्षुओ, यह भव-योग कहलाता है। यह काम-योग हुआ, यह भव-योग हुआ। दृष्टि-योग किसे कहते है? भिक्षुओ, यहाँ एक आदमी

दृष्टि (मन) की उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और दृष्टिसे मुक्ति यथार्थ रूपसे नहीं जानता उन दृष्टि (मन) की उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और दृष्टिसे मुक्ति यथार्थ रूपसे नही जाननेवालेका दृष्टिके प्रति जो दृष्टि-राग है, दृष्टि-स्नेह है, दृष्टि-मूर्छा है, दृष्टि-पिपासा है, दृष्टि-परिदाह है, दृष्टि-आसक्ति है, दृष्टि-तृष्णा है उनसे वह भर जाता है। भिक्षुओ, यह दृष्टि-योग कहलाता है। यह काम-योग हुआ, यह भव-योग हुआ, यह दृष्टि-योग हुआ। अविद्या-योग किसे कहते है? भिक्षुओ यहाँ एक आदमी छ स्पर्श-आयतनोकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम छ स्पर्श-आयतनोसे मुक्ति यथार्थ रूपसे नही जानता। उन छह स्पर्शयतनोकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और छह स्पर्शायतनोसे मुक्ति यथार्थ रूपसे नही जाननेवालेको छह आयतनोके विषयमे जो अविद्या है, अज्ञान है, उससे वह भर जाता है। भिक्षुओ, यह अविद्या-योग कहलाता है। यह जो काम-योग है, भव-योग है, दृष्टि-योग है, अविद्या-योग है, यह पापसे युक्त है, अकुशल-धर्मोसे युक्त है, जो संक्लेश है, जो पुनर्भवका कारण है, जो कष्टकर है, जो दुक्खदायी है, जो भविष्यमे जाति-जरा मरनका कारण बननेवाले है। इसलिये इनसे युक्त आदमी अयोग-क्षेमी कहलाता है। भिक्षुओ, ये चार योग है।

भिक्षुओ, ये चार विसयोग है। कौनसे चार? काम-योग-विसयोग, भव-योग-विसयोग, दृष्टि-योग-विसयोग, अविद्या-योग-विसयोग। भिक्षुओ, काम-योग-विसयोग कौनसा है? भिक्षुओ, यहाँ एक (भिक्षु) काम-भोगोकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम, और काम-भोगोसे मुक्ति यथार्थ रूपसे जानता है। काम-भोगोकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और काम-भोगोसे मुक्ति जाननेवाला काम-भोगोके प्रति जो काम-राग है, काम-नन्दी है, काम-स्नेह है, काम-मूर्छा है, काम-पिपासा है, काम-परिदाह है, कामासक्ति है तथा कामतृष्णा है उससे वह नही भरता है। भिक्षुओ, यह काम-योग-विसयोग कहलाता है। यह काम-योग-विसयोग हुआ।

भव-योग-विसयोग किसे कहते है? भिक्षुओ, यहाँ एक (भिक्षु) भवोकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और भवोसे मुक्ति यथार्थ रूपसे जानता है, उसका भवोके प्रति जो भव-राग है, भव-नन्दी है, भव-स्नेह है, भव-मूर्छा है, भव-पिपासा है, भव-परिदाह है, भवासक्ति है तथा भव-तृष्णा है, उससे वह नही भरता है। भिक्षुओ, यह भव-योग-विसयोग कहलाता है। यह हुआ काम-योग विसयोग तथा भव-योग विसयोग। दृष्टि-सयोग-विसयोग किसे कहते है? भिक्षुओ, एक (भिक्षु) दृष्टिकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम, और दृष्टिसे मुक्ति यथार्थ-रूपसे जानता है,

उसका दृष्टिके प्रति जो दृष्टि-राग है, दृष्टि-नन्दी है, दृष्टि-स्नेह है, दृष्टि-मूर्छा है, दृष्टि-पिपासा है, दृष्टि-परिदाह है, दृष्टि-आसक्ति है तथा दृष्टि-तृष्णा है उससे वह नही भरता है। भिक्षुओ, यह दृष्टि-योग-विसयोग कहलाता है। यह हुआ काम-योग-विसयोग, भवयोग विसयोग, तथा दृष्टियोग विसयोग। अविद्या-सयोग-विसयोग किसे कहते है ? भिक्षुओ, एक (भिक्षु) छह स्पर्श-आयतनोकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और मुक्ति यथार्थ-रूपसे जानता है। उसकी छ स्पर्शायतनोके प्रति जो अविद्या है, अज्ञान है, उससे वह नही भरता है। भिक्षुओ, यह अविद्या-योग-विसयोग हुआ। यह हुआ काम-योग-विसयोग, भवयोग-विसयोग, दृष्टि-योग-विसयोग तथा अविद्या-सयोग-विसयोग। ये पापोसे, अकुशल-धर्मोसे, सक्लेशोसे, पुन पुन. होनेवालोसे, कष्ट देनेवालोसे, दुःख परिणामवालोसे तथा भावी जाति-जरा-मरणके कारणोंसे असम्बद्ध है। इसलिये योग-क्षेमी कहलाते है। भिक्षुओ, ये चार विसयोग है।

कामयोगेन सयुत्ता भवयोगेन चुभय।
दिट्ठियोगेन सयुत्ता अविज्जाय पुरक्खता ॥
सत्ता गच्छन्ति ससार जातिमरणगामिनो।
ये च कामे परिञ्ञाय भवयोगञ्च सब्बसो ॥
दिट्ठियोग समुहच्च अविज्जच विराजय।
सब्बयोगविसयुत्तो ते वे योगातिगा मुनी ॥

[जाति-मरणको प्राप्त होनेवाले प्राणी काम-योग, भवयोग तथा दृष्टियोग और अविज्जा योगसे भी सयुक्त होकर आवागमनके चक्करमें पडते है। जो काम-योग, भव-योग, दृष्टि-योग तथा अविद्या-योगको सब प्रकारसे नष्ट कर देते है, वे सभी बन्धनो (= योगो) से मुक्त होते है और वे ही योगी तथा मुनि होते है।]

भिक्षुओ, यदि चलते समय भी भिक्षुके मनमें काम-वितर्क, द्वेष (व्यापाद) वितर्क, अथवा विहिंसा-वितर्क उत्पन्न हो और वह उसे बना रहने दे, उसका त्याग न करे, उसे दूर न करे, उसे हटाये नही, उसका अन्त न करे, तो भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु चलता हुआ भी, लगातार प्रयत्न न करनेवाला, कोशिश न करनेवाला, आलसी तथा हीन-वीर्य्य कहलाता है। भिक्षुओ, यदि (एक जगह) स्थित रहते समय भी भिक्षुके मनमें काम-वितर्क, द्वेष (व्यापाद)-वितर्क अथवा विहिंसा-वितर्क उत्पन्न हो और वह उसे बना रहने दे, उसका त्याग न करे, उसे दूर न करे, उसे हटाये नही, उसका अन्त न करे, तो भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु (एक जगह) स्थित रहता भी लगातार प्रयत्न न करनेवाला, कोशिश न करनेवाला, आलसी तथा हीन-वीर्य्य कहलाता है।

भिक्षुओ, यदि बैठे रहनेकी अवस्थामे भी भिक्षुके मनमे काम-वितर्क, द्वेप-वितर्क अथवा विहिंसा-वितर्क उत्पन्न हो और वह उसे बना रहने दे, उसका त्याग न करे, उसे दूर न करे, उसे हटाये नही, उसका अन्त न करे, तो भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु बैठे रहनेकी अवस्थामे भी, लगातार प्रयत्न न करनेवाला, कोशिश न करनेवाला, आलसी तथा हीन-वीर्य कहलाता है। भिक्षुओ, यदि लेटे रहनेपर, जागते समय भी भिक्षुके मनमें काम-वितर्क, द्वेप-वितर्क अथवा विहिंसा-वितर्क उत्पन्न हो, और वह उसे बना रहने दे, उसका त्याग न करे, उसे दूर न करे, उसे हटाये नही, उसका अन्त न करे, तो भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु लेटे रहनेपर भी जागते समय, लगातार प्रयत्न न करनेवाला, कोशिश न करनेवाला, आलसी तथा हीन-वीर्य्य कहलाता है। भिक्षुओ, यदि चलते समय भी भिक्षुके मनमें काम-वितर्क, द्वेप-वितर्क अथवा विहिंसा-वितर्क उत्पन्न हो और वह उसे न बना रहने दे, उसका त्याग कर दे, उसे दूर कर दे, उसे हटा दे, उसका अन्त कर दे, तो भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु चलता हुआ भी लगातार प्रयत्न करनेवाला, कोशिश करनेवाला, वीर्य्य-वान्, प्रयत्न-शील कहलाता है। भिक्षुओ, यदि (एक जगह) स्थित रहते समय भी भिक्षुके मनमे काम-वितर्क, द्वेप-वितर्क अथवा विहिंसा-वितर्क उत्पन्न हो और वह उसे न बना रहने दे, उसका त्याग कर दे, उसे दूर कर दे, उसे हटा दे, उसका अन्त कर दे, तो भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु (एक जगह) स्थित रहता हुआ भी लगातार प्रयत्न करनेवाला, कोशिश करनेवाला, वीर्य्यवान, प्रयत्न-शील कहलाता है। भिक्षुओ यदि बैठे रहनेकी अवस्थामे भी भिक्षुके मनमे काम-वितर्क, द्वेप-वितर्क अथवा विहिंसा-वितर्क उत्पन्न हो और वह उसे न बना रहने दे, उसका त्याग कर दे, उसे दूर कर दे, उसे हटा दे, उसका अन्त कर दे, तो भिक्षुओ ऐसा भिक्षु, बैठे रहनेकी अवस्थामें भी लगातार प्रयत्न करनेवाला, कोशिश करनेवाला, वीर्य्यवान् प्रयत्न-शील कहलाता है। भिक्षुओ, यदि लेटे रहनेपर, जागते समय भी भिक्षुके मनमें काम-वितर्क, द्वेप-वितर्क अथवा विहिंसा-वितर्क उत्पन्न हो और वह उसे न बना रहने दे, उसका त्याग कर दे, उसे दूर कर दे, उसे हटा दे, उसका अन्त कर दे, तो भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु लेटे रहनेपर भी जागते समय, लगातार प्रयत्न करनेवाला, कोशिश करनेवाला, वीर्य्यवान् प्रयत्न-शील कहलाता है।

चर वा यदि वा तिट्ठ निसिन्नो उदवा सय,
यो वितक्क वितक्केति पापक गेहनिस्सित ।।
कुम्मग्ग पटिपन्नो सो मोहनेय्येसु मुच्छितो।
अभब्बो तादिसो भिक्खु फुट्ठं सम्बोधिउत्तम ।।

यो चर वा तिट्ठ वा निसिन्नो उदवा सय।
वितक्क सममित्वान वितक्कूपसमे रतो।
भव्वो सो तादिसो भिक्खु फुट्ठ सम्वोधिउत्तम।

[चलते हुए, ठहरे हुए, बैठे हुए वा लेटे हुए जो कोई भिक्षु पापी, आसक्ति-युक्त सकल्प-विकल्पोको अपने मनमे स्थान देता है, वह कुमार्ग-गामी है, वह मूढ-विषयोमे मूर्छित है, और ऐसा भिक्षु उत्तम सम्बोधिका स्पर्श करनेके अयोग्य है। चलते हुए, ठहरे हुए, बैठे हुए वा लेटे हुए जो कोअी भिक्षु पापी, आसक्ति-युक्त सकल्प-विकल्पोको छिन्न-भिन्न कर उनके उपशमनमें रत रहता है, वैसा भिक्षु उत्तम सम्वोधिका स्पर्श करनेके योग्य है।]

भिक्षुओ, शीलवान होकर विहार करो, प्राति-मोक्षके नियमोका पालन करते हुए विहार करो, प्रातिमोक्षके सयमसे सयत होकर विहार करो, सदाचरणमे विचरो, छोटेमे छोटे दोषो (के करने) मे भी भय माननेवाले, शिक्षा पदोको ग्रहणकर उनका अभ्यास करो। भिक्षुओ, शीलवान होकर विहार करनेवालोको, प्राति-मोक्षके नियमोका पालन करते हुए विहार करनेवालोको, प्राति-मोक्षके सयमसे सयत होकर विहार करनेवालोको, सदाचरणमे विचरने वालोको, छोटेसे छोटे दोषो (के करने) में भी भय मानने वालोको, शिक्षापदोको ग्रहण कर उनका अभ्यास करनेवालोको आगे और क्या करना योग्य है? भिक्षुओ, यदि चलते समय भी भिक्षुके मनके लोभ तथा द्वेष विनष्ट हो जाते है, आलस्य (थीनमिद्ध) उद्धतपन—कौकृत्य तथा विचिकित्मा प्रहीण हो जाती है, (योगाभ्यासका) प्रयत्न आरम्भ हुआ रहता है, उपस्थित स्मृति लीनता-रहित, मूढता-रहित होती है, शरीर शान्त-अनुत्तेजित होता है तथा चित्त समहित एकाग्र होता है। भिक्षुओ, चलते हुए भी, इस प्रकार रहनेवाला भिक्षु लगातार प्रयत्न करनेवाला, कोशिश करनेवाला, वीर्यवान्, प्रयत्न-शील कहलाता है। भिक्षुओ, यदि (एक जगह) स्थित रहनेकी अवस्थामें भी भिक्षुके मनके लोभ तथा द्वेष विनष्ट हो जाते है, आलस्य (थीन-मिद्ध) उद्धतपन-कौकृत्य तथा विचिकित्सा प्रहीण हो जाती है, (योगाभ्यासका) प्रयत्न आरम्भ रहता है, उपस्थित-स्मृति लीनता-रहित, मूढता-रहित होती है, शरीर शान्त अनुत्तेजित होता है तथा चित्त समाहित एकाग्र होता है। भिक्षुओ (एक जगह) स्थित अवस्थामे भी इस प्रकार रहनेवाला भिक्षु लगातार प्रयत्न करनेवाला, कोशिश करनेवाला, वीर्य्यवान्, प्रयत्न-शील कहलाता है। भिक्षुओ, यदि बैठे रहनेकी अवस्थामें भी भिक्षुके मनके लोभ तथा द्वेष विनष्ट हो जाते है, आलस्य (थीनमिद्ध),

उद्धतपन-कौकृत्य तथा विचिकित्सा प्रहीण हो जाती है, (योगाभ्यास) का प्रयत्न आरम्भ हुआ रहता है, उपस्थित स्मृति लीनता-रहित, मूढता-रहित होती है, शरीर शान्त अनुत्तेजित हो जाता है तथा चित्त समाहित एकाग्र होता है। भिक्षुओ, बैठे रहनेकी अवस्थामे भी इस प्रकार रहनेवाला भिक्षु लगातार प्रयत्न करनेवाला, कोशिश करनेवाला, वीर्य्य-वान् प्रयत्नशील कहलाता है। भिक्षुओ, यदि लेटे रहनेपर जागते समय भी भिक्षुके मनके लोभ तथा द्वेष विनष्ट हो जाते है, आलस्य (थीन मिद्ध), उद्धतपन-कौकृत्य तथा विचिकित्सा प्रहीण हो जाती है, (योगाभ्यास) का प्रयत्न आरम्भ हुआ रहता है, उपस्थित स्मृति लीनता रहित, मूढता-रहित होती है, शरीर शान्त अनुत्तेजित होता है तथा चित्त समाहित एकाग्र होता है। भिक्षुओ, लेटे रहनेपर, जागते समय भी इस प्रकार रहनेवाला भिक्षु लगातार प्रयत्न करनेवाला, कोशिश करनेवाला, वीर्य्यवान, प्रयत्नशील कहलाता है।

यत चरे यत तिट्ठे यत अच्छे यत सये।
यत सम्मिञ्जये भिक्खु यतमेव न पसारये ॥
उद्ध तिरिय अपाचीनं यावता जगतो गति।
समवेक्खिता च धम्मान खन्धान उदयव्यय ॥
चेतोसमथसामीचिं सिक्खमान सदा सर्ति।
सतत पहितत्तोति आहु भिक्खु तथाविध ॥

[चलते समय भी यत्नवान रहे, खड़े रहते हुए भी यत्नवान् रहे, बैठे रहते भी यत्नवान् रहे, लेटे रहते भी यत्नवान रहे, (हाथ-पैर) सिकोडते समय और पसारते समय भी भिक्षु यत्नवान रहे। ऊपर बीचमे तथा नीचे जितनी भी जगतकी गति है, उसमे स्कन्धोका, धर्मोका उदय-व्यय सोचकर जो भिक्षु सदा चित्तके शमन अथवा स्मृतिकी समीचीनताका अभ्यास करता है, वैसे भिक्षुको सतत प्रयत्न करनेवाला कहते है।]

भिक्षुओ, ये चार सम्यक् प्रधान है। कौनसे चार? भिक्षुओ, एक भिक्षु अनुत्पन्न पापी अकुशल-धर्मोके उत्पन्न होने देनेके लिये सकल्प करता है, प्रयत्न करता है, प्रयास करता है, चित्तको उस ओर झुकाता है; उत्पन्न पापी अकुशल-धर्मोके प्रहाणके लिये सकल्प करता है, प्रयत्न करता है, प्रयास करता है, चित्तको उस ओर झुकाता है, अनुत्पन्न कुशल धर्मोको उत्पन्न करनेके लिये सकल्प करता है, प्रयत्न करता है, प्रयास करता है, चित्तको उस ओर झुकाता है, उत्पन्न कुशल-धर्मोकी

स्थितिके लिये, बनाये रखनेके लिये, वृद्धि करनेके लिये, विपुलताके लिये, पूर्ति करनेके लिये सकल्प करता है, प्रयत्न करता है, प्रयास करता है, चित्तको उस ओर झुकाता है। भिक्षुओ, ये चार सम्यक् प्रधान है।

सम्मप्पधाना मारधेय्याभिभूता
ते असिता जातिमरणभयस्स पारगू
ते तुसिता जेत्वान मार सवाहन
ते अनेजा (सब्ब) नमुचिबल उपातिवत्ता (ते सुखिता)

[जो सम्यक् प्रधानमे रत है, (उन्होने) मार-ध्येयको अभिभूतकर लिया, वे आसक्ति-रहित है, वे जाति-मरण-भयकी सीमाके उसपार पहुँच गये, वे सेना सहित मारको जीतकर सतुष्ट है, वे स्थिर है, उन्होने सारी नमुची (मार) सेनाको हरा दिया, वे सुखी है।]

भिक्षुओ, ये चार प्रयत्न है। कौनसे चार? सवर-प्रयत्न, प्रहाण-प्रयत्न भावना-प्रयत्न, तथा अनुरक्षण-प्रयत्न। भिक्षुओ, सवर-प्रयत्न किसे कहते है? भिक्षुओ एक भिक्षु चक्षुसे रूपको देखकर न उसके निमित्तको ग्रहण करता है और न उसके अनुव्यजनको ग्रहण करता है, जिसके कारण यदि भिक्षु चक्षु इन्द्रियको असयत रखता है तो लोभ-दौर्मनस्य आदि पाप-धर्म घरकर लेते है, उस चक्षुको सयत रखनेके लिये प्रयत्नशील होता है, चक्षु-इन्द्रियकी रक्षा करता है, चक्षु-इद्रियको कावूमे रखता है, (इसी प्रकार) श्रोत्र-इन्द्रियसे शब्द सुनकर, घ्राण-इद्रियसे गध सूंघकर, जिव्हासे रस चखकर, काय (स्पर्श-इन्द्रिय) का विचारकर, न उसके निमित्तको ग्रहण करता और न उसके अनुव्यजनको ग्रहण करता है, जिसके कारण यदि भिक्षु मन इन्द्रियको असयत रखता है, तो लोभ-दौर्मनस्य-धर्म घरकर लेते है, उस मनको सयत रखनेके लिये प्रयत्न-शील होता है, मन-इन्द्रियकी रक्षा करता है, मन-इन्द्रियको कावूमें रखता है। भिक्षुओ, यह सवर-प्रयत्न कहलाता है।

भिक्षुओ, प्रहाण-प्रयत्न किसे कहते है? भिक्षुओ, एक भिक्षु उत्पन्न काम-वितर्कको बना नही रहने देता है, त्यागकर देता है, दूरकर देता है, हटा देता है, अन्तकर देता है, उत्पन्न व्यापाद-वितर्कको बना नही रहने देता है, त्यागकर देता है, दूरकर देता है, हटा देता है, अन्तकर देता है . उत्पन्न विहिसा-वितर्कको ... अन्तकर देता है, जो जो पाप-धर्म, अकुशल-धर्म उत्पन्न होते है, उन्हे बना नही रहने देता है, त्यागकर देता है, दूरकर देता है, हटा देता है, अन्तकर देता है। भिक्षुओ यह प्रहाण-प्रयत्न कहलाता है।

भिक्षुओ, भावना-प्रयत्न किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक भिक्षु, स्मृति-सम्बोधि-अगकी भावना करता है, जो विवेकाश्रित है, विरागाश्रित है, निरोधाश्रित है तथा जो परित्याग-परिणामी है, धर्म-विचय-सम्बोधि-अगकी भावना करता है, जो .. वीर्य-सम्बोधि-अगकी भावना करता है, जो . . . प्रीति-सम्बोधि-अगकी भावना करता है, जो .. प्रश्रब्धि-सम्बोधि-अगकी भावना करता है, जो . . . . समाधि-सम्बोधि-अगकी भावना करता है, जो .. उपेक्षा-सम्बोधि-अगकी भावना करता है, जो विवेकाश्रित है, विरागाश्रित है, निरोधाश्रित है तथा जो परित्याग-परिणामी है। भिक्षुओ, यह भावना-प्रयत्न कहलाता है।

भिक्षुओ, अनुरक्षण-प्रयत्न किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक भिक्षु उत्पन्न श्रेष्ठ समाधि-निमित्तकी रक्षा करता है, चाहे वह अस्थि-सज्ञा हो, सूजे-शरीरकी सज्ञा हो, नीले पड गये शरीरकी सज्ञा हो, पीप पड गये शरीरकी सज्ञा हो, छेद पड गये शरीरकी सज्ञा हो, बहुत फूल गये शरीरकी सज्ञा हो—भिक्षुओ, यह अनुरक्षण प्रयत्न कहलाता है। भिक्षुओ, ये चार प्रयत्न है।

संवरो च पहाणञ्च भावना अनुरक्खणा,
एते पधाना चत्तारो देसितादिच्चबन्धुना,
ये हि भिक्खु इधातापि खय दुक्खस्सपापुणे॥

[आदित्य-बन्धु (तथागत) ने सवर-प्रयत्न, प्रहाण-प्रयत्न, भावना-प्रयत्न तथा अनुरक्षण-प्रयत्न इन चार प्रयत्नोका उपदेश दिया है। जो कोई भी इनमें प्रयत्नशील होगा, वह दु खके क्षयको प्राप्त करेगा।]

भिक्षुओ, ये चार अग्र-प्रज्ञप्तियाँ है। कौनसी चार? भिक्षुओ, शरीर धारियोमें यह अग्र है जो कि यह राहु असुरेन्द्र, भिक्षुओ, काम भोगियोमे यह अग्र है जो कि यह राजा मान्धाता, भिक्षुओ, (दूसरोपर अपना) आधिपत्य रखनेवालोमें यह अग्र है जो कि यह पापी मार; भिक्षुओ, सदेव, समार, सब्रह्म लोकमे, सदेव मनुष्य, सश्रमण-ब्राह्मण जनता (प्रजा) मे अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध तथागत ही श्रेष्ठ कहलाते है। भिक्षुओ, ये चार अग्र-प्रज्ञप्तियाँ है।

राहग्ग अत्तभावीन मन्धाता कामभोगिन,
मारो आधिपतेय्यान इद्धिया यससा जल।
उद्ध तिरिय अपाचीन यावता जगतो गति,
सदेवकस्स लोकस्स बुद्धो अग्ग पवुच्चति॥

[जितने शरीरधारी है उनमें राहु अग्र है, जितने कामभोगी है उनमें मन्धाता अग्र है, ऋद्धि तथा ऐश्वर्यसे प्रज्वलित मार (दूसरोपर) आधिपत्य करनवालोमें अग्र है। ऊपर वीचमें तथा नीचे जितनी भी जगतकी गति है, उसमें सदेवलोकमें बुद्ध ही अग्र कहलाते है।]

भिक्षुओ, ये चार सूक्ष्मतायें हैं। कौनसी चार? भिक्षुओ, एक भिक्षु पर रूप सूक्ष्मतासे युक्त होता है, वह अपनी उस रूप-सूक्ष्मतासे प्रणीततर वा श्रेष्ठतर कोई दूसरी रूप-सूक्ष्मता नही देखता, वह अपनी उस रूप-सूक्ष्मतासे प्रणीततर वा वढ कर अन्य किसी रूप-सूक्ष्मताकी कामना नही करता, पर वेदना सूक्ष्मतासे युक्त होता है, वह अपनी उस वेदना-सूक्ष्मतासे प्रणीततर वा श्रेष्ठतर कोई दूसरी वेदना-सूक्ष्मता नही देखता, वह अपनी उस वेदना-सूक्ष्मतासे प्रणीततर वा वढकर अन्य किसी वेदना-सूक्ष्मता की कामना नही करता, पर-सज्ञा-सूक्ष्मतासे युक्त होता है, वह अपनी उस सज्ञा-सूक्ष्मतासे प्रणीततर वा श्रेष्ठतर कोई दूसरी सज्ञा-सूक्ष्मता नही देखता, वह अपनी उस सज्ञा-सूक्ष्मतासे प्रणीततर वा वढकर अन्य किसी सज्ञा-सूक्ष्मताकी कामना नही करता, पर सस्कार-सूक्ष्मतासे युक्त होता है, वह अपनी उस सस्कार-सूक्ष्मतासे प्रणीततर वा श्रेष्ठतर कोई दूसरी सस्कार-सूक्ष्मता नही देखता, वह अपनी उस सस्कार-सूक्ष्मतासे प्रणीततर वा वढकर अन्य किसी सस्कार-सूक्ष्मताकी कामना नही करता। भिक्षुओ, ये चार सूक्ष्मतायें है।

रूपसोखुम्मत ञत्वा वेदनानञ्च सम्भव,
सञ्ञा यतो समुदेति अत्थ गच्छति यत्थ च॥
सङ्खारो परतो ञत्वा दुक्खतो नो च अत्ततो,
सचे सम्मद्दसो भिक्खु सन्तो सन्तिपदे रतो,
धारेति अन्तिम देह जेत्वा मार सवाहन॥

[रूप-सूक्ष्मताको जानकर, वेदनाओकी उत्पत्तिको जानकर तथा उसी प्रकार सज्ञाकी उत्पत्ति तथा निरोधको जानकर, सभी सस्कारोको पराया समझ, दु ख-स्वरूप समझ, अनात्म समझ जो शान्त सम्यक्-दर्शी भिक्षु शान्ति-पदमें रत होता है, वह ससेना मार जीतकर अन्तिम देहधारी होता है।]

भिक्षुओ, ये चार अगति गमन है। कौनसे चार? छन्दागतिको प्राप्त होता है, द्वेपागतिको प्राप्त होता है, मोहागतिको प्राप्त होता है तथा भयागतिको प्राप्त होता है। भिक्षुओ, ये चार अगति-गमन है।

छन्दा दोसा भया मोहा यो धम्म अतिवत्तति,
निहीयति तस्स यसो कालपक्खेव चन्दिमा ॥

[जो कोई छन्द (=कामना), द्वेष, भय या मोहके वशीभूत हो धर्मका उल्लंघन करता है, उसका यश कृष्णपक्षके चन्द्रमाकी तरह हीनावस्थाको प्राप्त होता जाता है।]

भिक्षुओ, ये चार अगति-गमन नही है। कौनसे चार? छन्दागतिको प्राप्त नही होता, द्वेषागतिको प्राप्त नही होता, मोहागतिको प्राप्त नही होता तथा भयागतिको प्राप्त नही होता। भिक्षुओ, ये चार अगति-गमन नही है।

छन्दा दोसा भया मोहा यो धम्म नातिवत्तति,
आपूरति तस्स यसो सुक्कपक्खेव चन्दिमा ॥

[जो कोई छन्द (=कामना), द्वेष, भय या मोहके वशीभूत हो धर्मका उल्लघन नही करता है, उसका यश शुक्ल-पक्षके चन्द्रमाकी तरह अभिवृद्धिको प्राप्त होता है।]

भिक्षुओ, ये चार अगति-गमन है। कौनसे चार? छन्दागतिको प्राप्त होता है, द्वेपागतिको प्राप्त होता है, मोहागतिको प्राप्त होता है तथा भयागतिको प्राप्त होता है। भिक्षुओ, ये चार अगति-गमन है।

भिक्षुओ, ये चार अगति-गमन नही है। कौनसे चार? छन्दागतिको प्राप्त नही होता, द्वेषागतिको प्राप्त नही होता, मोहागतिको प्राप्त नही होता, भयागतिको प्राप्त नही होता। भिक्षुओ, ये चार अगति-गमन नही है।

छन्दा दोसा भया मोहा यो धम्म अतिवत्तति,
निहीयति तस्स यसो कालपक्खेव चन्दिमा ॥
छन्दा दोसा भया मोहा यो धम्म नातिवत्तति,
आपूरति तस्स यसो सुक्कपक्खेव चन्दिमा ॥

[जो कोई छन्द (=कामना), द्वेष, भय या मोहके वशीभूत हो धर्मका उल्लघन करता है, उसका यश कृष्णपक्षके चन्द्रमाकी तरह हीनावस्थाको प्राप्त होता जाता है।

जो कोई छन्द, द्वेप, भय या मोहके वशीभूत हो धर्मका उल्लघन नही करता उसका यश शुक्ल-पक्षके चन्द्रमाकी तरह अभिवृद्धिको प्राप्त होता है।]

भिक्षुओ, जिस भोजन-व्यवस्थापक (भिक्षु) में ये चार बाते हो उसे ऐसा, ऐसा ही मानना चाहिये जैसे लाकर नरकमे डाल दिया गया हो। कौनसी चार

बाते ? वह छन्दागतिको प्राप्त होता है, वह द्वेषागतिको प्राप्त होता है, वह मोहागतिको प्राप्त होता है, वह भयागतिको प्राप्त होता है। भिक्षुओ, जिस भोजन-व्यवस्थापक (भिक्षु) मे ये चार बातें हो उसे ऐसा ही मानना चाहिये जैसे लाकर नरकमे डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस भोजन-व्यवस्थापक (भिक्षु) मे ये चार बाते न हो उसे ऐसा ऐसा ही मानना चाहिये जैसे लाकर स्वर्गमे डाल दिया गया हो। कौनसी चार बाते ? वह छन्दागतिको प्राप्त नही होता, वह द्वेषागतिको प्राप्त नही होता, वह मोहागतिको प्राप्त नही होता, वह भयागतिको प्राप्त नही होता। भिक्षुओ, जिस भोजन-व्यवस्थापक (भिक्षु) मे ये चार बातें हो उसे ऐसा ही मानना चाहिये जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो।

ये केचि कामेसु असञ्ञता जना,
अधम्मिका होन्ति अधम्मगारवा ॥
छन्दा च दोसा च भया च गामिनो,
परिसक्कसावो च पनेसवुच्चति ॥
एव हि वुत्त समणेन जानता,
तस्मा हि ते सप्पुरिसा पससिया ॥
धम्मे ठिता ये न करोन्ति पापक,
न छन्द दोसा न भया च गामिनो ॥
परिसाय मण्डो च पनेस वुच्चति,
एव हि वुत्त समणेन जानता ॥

[जो जन काम-भोगके प्रति असयत रहते है, अधार्मिक होते है, धर्म-गौरव न करनेवाले होते हैं, छन्द, द्वेष तथा भयके वशीभूत होनेवाले होते है, वे परिषदके कलक कहलाते है। जानकार श्रमण (=बुद्ध) ने ऐसा कहा है। इसलिये अगतियोमें न जाने वाले सत्पुरुष प्रशसनीय है। जो धर्ममें स्थित रहते है, जो पाप-कर्म नही करते है ; जो छन्द, द्वेष और भयके वशमें नही जाते, वे परिषदके अलकार कहलाते हैं—यह जानकार श्रमण (=बुद्ध) ने कहा है।]

एक समय भगवान् श्रावस्तीमें अनाथपिण्डकके जेतवनाराममे विहार करते थे। वहाँ भगवानने भिक्षुओको सम्बोधित किया—"भिक्षुओ!" उन भिक्षुओने भगवान्को प्रत्युत्तर दिया—"भदन्त।" भगवानने यह कहा—

भिक्षुओ, अभिसम्बुद्ध होनेके तुर्न्त वाद एक समय मैं नेरञ्जरा नदीके तटपर अजपाल न्यग्राध वृक्षके नीचे, उरूवेलामे विहार करता था। उस समय भिक्षुओ, एकान्तमे चिन्तन करते हुए मेरे मनमें यह सकल्प उठा—किसीके भी प्रति गौरव-रहित होकर, आदर-रहित होकर रहना दु खकर है। क्यो न मैं किसी श्रमण वा ब्राह्मणके प्रति गौरव-युक्त होकर, आदरयुक्त होकर उसके आश्रयमे रहूँ ? तव मेरे मनमे यह हुआ कि मैं अपूर्व शीलस्कन्धकी पूर्तिके लिये किसी श्रमण वा ब्राह्मणके प्रति गौरव-युक्त, आदर-युक्त होकर उसके आश्रयमे रहूँ, किन्तु मैं सदेव समार, सब्रह्म लोकमे , सश्रमण सब्राह्मण सदेव मनुष्य जनता (= प्रजा) मे किसी दूसरे ऐसे श्रमण वा ब्राह्मणको नही देखता जो मेरी अपेक्षा अधिक शीलवान् हो, जिसके प्रति गौरव-युक्त होकर आदर-युक्त होकर मैं उसके आश्रयमे रहूँ। (इसी प्रकार) समाधि-स्कन्धकी पूर्तिके लिये, प्रज्ञास्कन्धकी पूर्तिके लिये किसी श्रमण वा ब्राह्मणके प्रति गौरव-युक्त, आदर-युक्त होकर उसके आश्रयमे रहूँ, किन्तु मैं सदेव, समार, सब्रह्म लोकमे, सश्रमण, सब्राह्मण सदेव-मनुष्य जनता (= प्रजा) मे किसी दूसरे ऐसे श्रमण वा ब्राह्मणको नही देखता जो मेरी अपेक्षा अधिक शीलवान् हो, जिसके प्रति गौरव-युक्त होकर आदर-युक्त होकर मैं उसके आश्रयमे रहूँ। (इसी प्रकार) विमुक्ति-स्कन्धकी पूर्तिके लिये किसी श्रमण वा ब्राह्मणके प्रति गौरव-युक्त आदर-युक्त होकर उसके आश्रयमे रहूँ, किन्तु मैं सदेव, समार, सब्रह्म लोकमे सश्रमण सब्राह्मण सदेव-मनुष्य जनता(= प्रजा) में किसी दूसरे ऐसे श्रमण वा ब्राह्मणको नही देखता जो मेरी अपेक्षा अधिक विमुक्ति-वान् हो, जिसके प्रति गौरव-युक्त होकर आदर-युक्त होकर मैं उसके आश्रयमें रहूँ। तव भिक्षुओ, मेरे मनमे यह हुआ कि जिस धर्मका मैंने ज्ञान प्राप्त किया है, उसी धर्मके प्रति गौरव-युक्त होकर, आदर-युक्त होकर उसके आश्रयमे रहूँ।

तव हे भिक्षुओ, सहम्पति ब्रह्माने अपने चित्तसे मेरे चित्तकी वात जान, जैसे कोई वलवान् पुरुप सिकुडी हुई वाँहको फैलाये या फैली हुई वाँहको सिकोडे, इसी प्रकार ब्रह्मलोकसे अन्तर्धान होकर मेरे सामन प्रकट हुआ। तव भिक्षुओ, सहम्पति ब्रह्मा उत्तरीयको एक कधेपर कर दाहिने घुटनेको पृथ्वीपर टेक, जहाँ मैं था वहा मुझे हाथ जोडकर इस प्रकार वोला—ऐसा ही है भगवान् ! ऐसा ही है सुगत ! भन्ते ! जो भी भूत कालमे अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध हुए हैं, वे भी भगवान्के धर्मके ही प्रति गौरव-युक्त होकर, आदर-युक्त होकर, उसीके आश्रयसे विहार करते थे, भन्ते ! जो भविष्यत्मे भी अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध होगे वे भी भगवानके धर्मके

ही प्रति गौरव युक्त होकर, आदर-युक्त होकर, उसीके आश्रयसे विहार करेंगे; भन्ते! भगवान भी इस समय अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध है, भगवान् भी धर्मके प्रति ही गौरव-युक्त होकर, आदर-युक्त होकर उसीके आश्रयसे विहार करें। सहम्पति ब्रह्माने यह कहा और इसके आगे यह कहा—

ये च व्मतीता सम्बुद्धा ये च बुद्धा अनागता,
यो चेतरहि सम्बुद्धो वहुन्न सोकनासनो ॥
सव्वे सद्धम्मगरुनो विहसु विहरन्ति च,
अथोपि विहरिस्सन्ति एसा बुद्धान धम्मता ॥
तस्माहि अत्थकामेन महन्तममिसखता,
सद्धम्मो गरुकातव्वो सर बुद्धान सासन ॥

[जो भूतकालके सम्बुद्ध हुए हैं, जो भविष्यत् कालके बुद्ध होगे तथा अनेक जनोंके शोक-नाशक जो वर्तमान कालके सम्बुद्ध हैं, वे सभी सद्धर्मका गौरव करनेवाले रहे है, रहेगे तथा हैं—यही बुद्धोका स्वभाव है। इसलिये जो अर्थ-कामी हो, जिसकी महान् आकाक्षा हो, उसे बुद्धोंके शासनका स्मरणकर सद्धर्मके प्रति गौरवका भाव रखना चाहिये।]

भिक्षुओ, सहम्पति ब्रह्माने यह कहा और इसके अनन्तर मुझे अभिवादन कर प्रदक्षिणा कर वही अन्तर्धान हो गया। तबसे भिक्षुओ, ब्रह्माका भी विचार जानकर और अपने भी अनुकूल जिस धर्मका मैने साक्षात् किया उसी धर्मके प्रति गौरव रख, आदर रख, उसीके आश्रय रहने लगा। क्योकि भिक्षुओ, संघका भी महत्व है, इसलिये संघके प्रति भी मेरे मनमें महान गौरव है।

भिक्षुओ, अभिसम्बुद्ध होनेके तुरन्त बाद एक समयमें मै नेरञ्जरा नदी तटपर अजपाल न्यग्रोध (वृक्ष) के नीचे, उरूवेलामें विहार करता था। तब भिक्षुओ, बहुतसे पुरनिया, वृद्ध, बूढे, बुजुर्ग, आयु-प्राप्त ब्राह्मण जहाँ मै था वहाँ आये। आकर मेरे साथ कुशल-क्षेमकी बातचीत की। कुशल-क्षेम पूछ चुकनेपर एक ओर बैठ गये। भिक्षुओ, एक ओर बैठे हुए उन ब्राह्मणोने मुझे यह कहा "हे गौतम! हमने सुना है कि श्रमण गौतम न पुरनियो, वृद्धो, बूढो, बुजुर्ग, आयु-प्राप्त ब्राह्मणोको अभिवादन करता है, न प्रत्युपस्थान करता है, न उन्हें आसन देता है। हे गौतम! यदि यह ऐसा ही है कि श्रमण गौतम न पुरनियो, वृद्धो, बूढो, बजुर्ग, आयुप्राप्त ब्राह्मणोको अभिवादन करता है, न प्रत्युपस्थान करता है, न उन्हें आसन देता है तो हे गौतम! यह उचित नही है। तब भिक्षुओ, मेरे मनमें यह हुआ कि ये आयुष्यमान न तो यह जानते हैं

कि स्थविर (ज्येष्ठ) कौन होता है और न यह जानते है कि स्थविर (= ज्येष्ठ) वनानेवाले धर्म कौनसे होते है? भिक्षुओ, चाहे कोई आयुसे अस्सी वर्षका, नौवे वर्षका वा सौ वर्षका वूढा हो, लेकिन वह हो अकाल-वादी, अभूत (= अयथार्थ)-वादी अनर्थ-वादी, अधर्म-वादी, अविनय-वादी, कौडी कीमतकी ऐसी वाणी वोलनेवाला, जिसका समय नही, जो तर्क-सगत नही, जिसका कोई उद्देश्य नही, जो अनर्थकारी हो, तो ऐसी वाणी वोलनेवाला मूर्ख स्थविर (= ज्येष्ठ) ही कहलाता है। और भिक्षुओ, यदि तरुण हो, युवा हो, लडका हो, काले केशोवाला, भद्र यौवनसे युक्त हो, आरम्भिक आयु हो और वह हो काल-वादी, भूत (= यथार्थ)-वादी, अर्थ-वादी, धर्म-वादी, विनय-वादी, मूल्यवान् वाणी वोलनेवाला, जिसका समय हो, जो तर्क सगत हो, जिसका कोई उद्देश्य हो तथा जो अर्थ-कारी हो तो ऐसी वाणी वोलनेवाला पण्डित स्थविर (ज्येष्ठ) ही कहलाता है। भिक्षुओ, ये चार स्थविर वनानेवाली वाते है। कौनसी चार? भिक्षुओ, भिक्षु शीलवान् होता है, प्रातिमोक्षके नियमोके अनुसार चलनेवाला, आचार-गोचर-युक्त, छोटे दोषमे भी भय माननेवाला, शिक्षा-पदोको ग्रहणकर सीखनेवाला; (२) वहुश्रुत होता है, श्रुत-धर, श्रुतको सचित रखनेवाला, जो धर्म आदिमें कल्याणकारक है, मध्यमे कल्याणकारक है, अन्तमें कल्याणकारक है, सार्थक है, सव्यञ्जन है, केवल परिपूर्ण परिशुद्ध ब्रह्मचर्यके प्रकाशक है, वैसे धर्म वहुश्रुत होते है, धारण किये होते है, वाणी द्वारा परिचित होते है, मन द्वारा अनुपेक्षित होते हैं, (सम्यक्) दृष्टि द्वारा भली प्रकार ज्ञात होते है, (३) चैतसिक, इसी जन्ममे सुखका अनुभव देनेवाले चारो ध्यानोको सरलतासे, सुविधासे, आसानीसे प्राप्तकर लेनेवाला होता है (४) आस्रवोका क्षय होकर अनास्रव चित्त-विमुक्ति तथा प्रज्ञा-विमुक्तिको इसी शरीरमें स्वयं जानकर, साक्षात्कर, प्राप्तकर विहार करता है। भिक्षुओ ये चार स्थविर वनानेवाली वातें है।

यो उद्धतेन चित्तेन सम्फञ्च वहु भासति,
असमाहितसङ्कप्पो असद्धम्मरतो मगो,
आरा सो थावरेय्यम्हा पापदिट्ठी अनादरो ॥
यो च सीलेन सम्पन्नो सुतवा पटिभानवा,
सञ्ञतो धीरधम्मेसु पञ्ञायत्थ विपस्सति,
पारगु सब्ब धम्मान अखिलो पटिभाणवा ॥
पहीणजातिमरणो ब्रह्मचर्य्यस्स केवली,

तमहं वदामि थेरोति यस्स नो सन्ति आसवा;
आसवान खया भिक्खु सो थेरोति पवुच्चति ॥

[जो व्यक्ति उद्धत चित्तसे व्यर्थ बहुत बोलता है, जो असमाहित (=चचल) सकल्पोवाला है, जो असद्धर्ममें रत है, जो मूर्ख है, वह पाप-दृष्टि अनादृत मनुष्य ज्येष्ठपनसे दूर है। जो सदाचारी है, जो बहुश्रुत है, जो ज्ञानी है, जो धीर-धर्मोमें सयत है, जो अपनी प्रज्ञासे अर्थको देखता है, जो सभी धर्मोमें पारगत है, जो दोष-रहित है, जो मेधावी है, जो जाति-मरणके बन्धनसे मुक्त है, जो सम्पूर्ण ब्रह्मचारी है, जिसके आस्रव नही है—मैं उसे स्थविर कहता हूँ। जो भिक्षु आस्रवोंसे मुक्त है, वह स्थविर कहलाता है।]

भिक्षुओ, तथागतके द्वारा ससार (=लोक) जान लिया गया है, तथागत लोकसे मुक्त (=विसयुक्त) है, भिक्षुओ, तथागतके द्वारा लोक-समुदय जान लिया गया है, तथागतका लोक-समुदाय प्रहीण हो गया है, भिक्षुओ, तथागतके द्वारा लोक-निरोध जान लिया गया है, तथागतको लोक-निरोधका साक्षात्कार हो गया है, भिक्षुओ, तथागतके द्वारा लोक-निरोध-गामिनी प्रतिपदा जान ली गई है, तथागत द्वारा लोक-निरोध-गामिनी-प्रतिपदा (=मार्ग) अभ्यस्त है। भिक्षुओ तथागतको 'तथागत' इसलिये कहते है कि सदेव, समार, सब्रह्म लोकमे, सश्रमण-ब्राह्मण सदेव-मनुष्य जनता (=प्रजा) मे जो कुछ भी इष्ट है, श्रुत है, मुत (=शेष इद्रियो द्वारा अनुभूत) है, ज्ञात है, प्राप्त है, परियेपित है, मनसे विचार किया गया है, वह सब तथागत द्वारा जान लिया गया है। भिक्षुओ, जिस रात तथागत 'बुद्धत्व' लाभ करते है और जिस रात तथागत 'परिनिर्वाण' प्राप्त करते है, इस बीच तथागत जो कुछ भाषण करते है, जो कुछ बोलते है, जो कुछ निर्देश करते है, वह सब वैसा ही होता है, अन्यथा नही, इसलिये तथागत 'तथागत' कहलाते है। भिक्षुओ, तथागत जैसा बोलते है, वैसा करते है, जैसा करते है वैसा बोलते है। क्योकि तथागत यथावादी तथाकारी है और यथाकारी तथावादी है, इसलिये तथागत 'तथागत' कहलाते है। भिक्षुओ, समार, सब्रह्म लोकमें, सश्रमण सब्राह्मण, सदेव मनुष्य जनता (=प्रजा) मे तथागत दूसरोको आधीन बनानेवाले हैं, वे किसी दूसरेके आधीन नही है, दस (बल)-धारी है, वशवर्ती है—इसलिये तथागत कहलाते है।

सब्बलोक अभिञ्ञाय सब्बलोके यथातथ,
सब्बलोकविसयुत्तो सब्बलोके अनूपयो ॥

सब्बे सब्बाभिभू धीरो सब्बगन्थप्पमोचनो,
फुट्ठस्स परमा सन्ति निब्बाण अकुतोभय ॥
एस खीणासवो बुद्धो अनीघोच्छिन्नससयो,
सब्ब कम्मक्खय पत्तो विमुत्तो उपधीसङ्खये ॥
एस सो भगवा बुद्धो एस सीहो अनुत्तरो,
सदेवकस्स लोकस्स ब्रह्मचक्क पवत्तयी ॥
इति देव मनुस्सा च ये बुद्ध सरण गता,
सङ्गम्म त नमस्सन्ति महन्त वीतसारद ॥
दन्तो दमयत सेट्ठो सन्तो समयत इसि,
मुत्तो मोचयत अग्गो तिण्णो तारयत वरो ॥
इति हेत नमस्सन्ति महन्त वीतसारद,
सदेवकस्मि लोकस्मि नत्थि ते पटिपुग्गलो ॥

[सब संसार (=लोक) को जानकर, सब लोकके प्रति यथार्थ, सब लोकसे मुक्त, सब लोकसे अलिप्त। वही सबको अभिभूत करनेवाला धीर पुरुष है, वही सब ग्रन्थियोंसे मुक्त है, उसने भय रहित, पर शान्ति स्वरूप निर्वाणका साक्षात कर लिया है। यह क्षीणास्रव बुद्ध है, यह कम्पन-रहित है, यह सशय-रहित है। यह सब कर्मोका क्षय कर चुके है, विमुक्त है, उपधि-क्षय है। यह वह भगवान् बुद्ध है, यह सिंह है, यह सर्वश्रेष्ठ है, इन्होने सदेव-लोकके लिये ब्रह्म-चक्रका प्रवर्तन किया है। जो देव-मनुष्य बुद्धकी शरण गये है, वे इकट्ठे होकर उस महान् बुद्धिमान्को नमस्कार करते है। वह स्वय दान्त है, दमन करनेवालोमे श्रेष्ठ है, शान्त है, शमन करनेवाले है, ऋषी है, मुक्त है, मुक्त करनेवालोमे अग्र है, उत्तीर्ण है, पार उतारनेवालोमे अग्र है। इसलिये आप महान बुद्धिमानको नमस्कार करते है। सदेव लोकमे आपकी बराबरी कर सकनेवाला कोई नही।]

एक समय भगवान् साकेतमे कालकाराममे विहार करते थे। वहाँ भगवान्ने भिक्षुओंको आमन्त्रित किया—"भिक्षुओ!" उन भिक्षुओने भगवानको प्रतिवचन दिया—"भदन्त!" तब भगवानने यह कहा—

"भिक्षुओ! सदेव, समार, सब्रह्म लोकमे, सश्रमण-ब्राह्मण सदेव-मनुष्य जनतामें (=प्रजा) में जो कुछ भी दृष्ट है, श्रुत है, मुत (=शेप इन्द्रियो द्वारा अनुभूत) है, ज्ञात है, प्राप्त है, पर्येषित है, मनसे विचार किया गया है, वह मै जानता हूँ। भिक्षुओ, सदेव, समार, सब्रह्म लोकमे, सश्रमण-ब्राह्मण सदेव-मनुष्य जनता

(= प्रजा) में जो कुछ भी दृष्ट है, श्रुत है, मुत (= शेष इन्द्रियो द्वारा अनुभूत) है, ज्ञात है, प्राप्त है, परियेषित है, मनसे विचार किया गया है, वह मैंने जान लिया है। यह सब तथागतको विदित है, किन्तु तथागत उसे (मैं मेरा करके) अपनाते नही है। भिक्षुओ, यदि मैं यह कहूँ कि जो कुछ भी सदेव, समार, सब्रह्म लोकमे, सश्रमण-ब्राह्मण सदेव-मनुष्य जनता (= प्रजा) में जो कुछ भी दृष्ट है, श्रुत है, मुत (= शेष इन्द्रियो द्वारा अनुभूत) है, ज्ञात है, प्राप्त है, परियेपित है, मनसे विचार किया गया है, वह सब मै जानता हूँ तो मेरा ऐसा कहना मृषावाद होगा। भिक्षुओ, यदि मै यह कहूँ कि मै जानता हूँ और नही जानता हूँ तो यह भी मृषावाद होगा और यदि यह कहूँ कि न तो जानता हूँ और न नही जानता हूँ तो यह दोष होगा। इसलिये भिक्षुओ, तथागत आखसे 'द्रष्टव्य, दृष्टको (मै मेरा करके) नही मानते अदृष्टको नही मानते, द्रष्टव्यको नही मानते, द्रष्टाको नही मानते, कानमे श्रोतव्य, श्रुतको (मै मेरा करके) नही मानते, अश्रुतको नही मानते, श्रोतव्यको नही मानते, श्रोताको नही मानते, मुत (= शेष तीन इद्रियो) से मोतव्य, मुतको (मै मेरा करके) नही मानते, अमुतको नही मानते, मोतव्यको नही मानते, मोताको नही मानते, विज्ञान (= मन) से विज्ञातव्य, विज्ञातको (मै मेरा करके) नही मानते, अविज्ञातको नही मानते, विज्ञातव्यको नही मानते, विज्ञाताको नही मानते। इस प्रकार भिक्षुओ, द्रष्ट, श्रुत, मुत धर्मोके प्रति तथागत का स्थिर (= तादी) भाव ही है। मै कहता हूँ कि स्थिर-चित्त मनमें उनसे श्रेष्ठतर वा प्रणीतर कोई नही है।

यकिञ्चि दिट्ठच सुत मुत वा अज्झोसित सच्चमुत परेस,
न तेसु तादी सयसवुतेसुं सच्च मुसा वापि पर दहेय्य॥
एत च सल्ल पटिगच्च दिस्वा अज्झोसिता यत्थ पजा विसत्ता,
जानामि पस्सामि तथेव एत अज्झोसित नत्थि तथागतान॥

[जो कुछ दृष्ट है, श्रुत है, मुत (= शेष तीन इद्रियो द्वारा अनुभूत है,) अथवा दूसरो द्वारा आसक्तिपूर्वक ग्रहण किया गया है, उन स्वय सवृत–धर्मोमें वह स्थिर नही होता। उस 'पर' को 'सत्य' वा मृषा करके धारण करे। इसी शल्य (= बुराई) को पहले ही देखकर, जिन विषयोमें जनता आसक्ति पूर्वक बधी हुई है; उन्हें मै वैसे ही जानता हूँ, देखता हूँ। तथागतकी किसी विषयमें आसक्ति नही है।]

भिक्षुओ यह जो श्रेष्ठ जीवन (= ब्रह्मचर्य) है, यह जनताके सम्मुख ढोग करनेके लिये नही है, यह जनताके सम्मुख बात बनानेके लिये नही है, यह लाभ सत्कार, और प्रशसा प्राप्त करनेके लिये नही है, यह वाद करनेके लिये नही है,

यह इसलिये भी नही कि लोग मुझे जान लें; भिक्षुओ, यह ब्रह्मचर्य-वास सयमके लिये है, प्रहाणके लिये है, विरागके लिये है, निरोधके लिये है।

सवरत्थ पहाणत्थ ब्रह्मचरिय अनीतिह,
अदेसयी सो भगवा निब्बाणोगधगामिन ॥
एस मग्गो महन्तेहि अनुयातो महेसिहि,
ये च त पटिपज्जन्ति यथा बुद्धेन देसित,
दुक्खस्सन्त करिस्सन्ति सत्थु सासनकारिनो ॥

[उन भगवान् (बुद्ध) ने सवरके लिये, प्रहाणके लिये, यथार्थ ब्रह्मचर्य-वासकी देशना उन लोगोंके लियेकी है जो निर्वाणमें डुबकी लगाना चाहते है। यह वह मार्ग है जिसका महान् महर्षियोने अनुकरण किया है, जो बुद्धकी देशनानुसार इस मार्गपर चलते है, शास्ताके अनुशासनमे रहनेवाले लोग दु खका अन्त कर डालते है।]

भिक्षुओ, जो भिक्षु ढोंगी होते है, जड होते है, वातूनी होते है, झूठे होते है, अभिमानी होते है, चचल होते है हे भिक्षुओ ! वे भिक्षु मेरे भिक्षु नही होते, भिक्षुओ, वे भिक्षु इस धर्म-विनयसे दूर चले गये होते है, वे इस धर्म-विनयकी अभिवृद्धि विपुलता के कारण नही होते। भिक्षुओ, जो भिक्षु ढोंगी नही होते, जड नही होते, वातूनी नही होते, झूठे नही होते, अभिमानी नही होते, चञ्चल नही होते, भिक्षुओ ! वे भिक्षु मेरे भिक्षु होते है, भिक्षुओ, वे भिक्षु इस धर्म-विनयसे दूर चले गये नही होते, वे इस धर्म-विनयकी उन्नति, अभिवृद्धि तथा विपुलताके कारण होते है।

कुहा थद्धा लपा सिङ्गी उन्नला असमाहिता,
न ते धम्मे विरूहन्ति सम्मासम्बुद्धदेसिते ॥
निक्कुहा निल्लपा धीरा अत्थद्धा सुसमाहिता,
ते वे धम्मे विरूहन्ति सम्मासम्बुद्धदेसते ॥

[जो ढोंगी, वातूनी, झूठे, अभिमानी तथा चचल होते है वे सम्यक् सम्बुद्ध द्वारा उपदिष्ट धर्ममें उन्नति नही करते। जो ढोंगी नही होते, वातूनी नही होते, झूठे नही होते, अभिमानी नही होते तथा चचल नही होते, वे सम्यक् सम्बुद्ध द्वारा उपदिष्ट धर्ममे उन्नति करते है।]

भिक्षुओ चार चीजे ऐसी है जो (प्रमाणमें) अल्प है, सुलभ हैं तथा निर्दोष हैं। वे चार चीजे, कौनसी है ? भिक्षुओ, चीवरोमें गुदडी (पाशुकूल) चीवर अल्प होता है, सुलभ होता है तथा निर्दोष होता है। भिक्षुओ भोजनोमें, भिक्षाटनसे प्राप्त भोजन अल्प होता है, सुलभ होता है तथा निर्दोष होता है। भिक्षुओ, शयनासनोमें

वृक्षके नीचे रहना अल्प है, सुलभ है तथा निर्दोष है। भिक्षुओ, भैषज्योंमें गो-मूत्र अल्प है, सुलभ है तथा निर्दोष है। भिक्षुओ, ये चार चीजें प्रमाणमें अल्प है, सुलभ है तथा निर्दोष हैं। भिक्षुओ, जो भिक्षु अल्पसे तथा सुलभसे सन्तुष्ट होता है, यह भी मैं उसके श्रमण-भावका एक अग कहता हूँ।

अनवज्जेन तुट्ठस्स अप्पेन सुलभेन च
न सेनासनमारब्भ चीवरम्पानभोजन ॥
विघातो होति चित्तस्स दिसा न पटिहञ्ञति,
ये चस्स धम्मा अक्खाता सामञ्जस्सानुलोमिका,
अधिग्गहीता तुट्ठस्स अप्पमत्तस्स भिक्खुनो ॥

[जो चीवर, भोजन तथा शयनासनके सम्बन्धमें अल्प तथा सुलभसे सतुष्ट होता है, उसके चित्तको विघात नही होता, उसे दिशाओंकी बाधा नही होती। उसके लिये श्रामण्यके अनुकूल जो धर्म कहे गये हैं, उन्हे उस सन्तोषी अप्रमादी भिक्षुने धारण किया होता है।]

भिक्षुओ, ये चार आर्यवश है जो अग्र है, जो (सुदीर्घ) कालसे है, जो वश-गत है, जो पुराने हैं, जो असकीर्ण है, जो असकीर्ण-पूर्व है, जो न सकीर्ण होते है और न सकीर्ण होगे और जो विज्ञ श्रमण-ब्राह्मणो द्वारा समर्थित है। कौनसे चार आर्यवश हैं? भिक्षुओ, एक भिक्षु जैसे तैसे चीवरसे सतुष्ट होता है, जैसे-तैसे चीवरसे सतुष्ट रहनेका प्रशसक, वह चीवरके लिये अनुचित खोज नही करता, अनुचित प्रयास नही करता, चीवरके न मिलनेपर उत्तेजित नही होता, चीवर मिलनेपर उसे अनासक्त होकर, अमूर्छित रहकर, तृष्णा-रहित होकर, उसके दुष्परिणामोको देखता हुआ उसमेंसे निकलनेकी दृष्टि रखता हुआ उसका परिभोग करता है, वह उस जैसे-तैसे चीवरसे सतुष्ट रहनेके कारण न अपनेको ऊचा करके दिखाता है, न दूसरोको नीचा करके दिखाता है, वह दक्ष होता है, आलस्य-रहित होता है, जानकार होता है तथा स्मृतिमान होता है। भिक्षुओ, इस प्रकारका भिक्षु पुराने, अग्र, आर्य-वशमे स्थित कहा जाता है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु जैसे-तैसे पिण्ड-पात (= भिक्षा) से सतुष्ट होता है, जैसे-तैसे पिण्ड-पातसे सतुष्ट रहनेका प्रशसक, वह पिण्ड-पातके लिये अनुचित खोज नही करता, अनुचित प्रयास नही करता, पिण्डपातके न मिलनेपर उत्तेजित नही होता, पिण्डपात मिलनेपर उसे अनासक्त होकर, अमूर्छित रहकर, तृष्णा-रहित होकर उसके दुष्परिणामोको देखता हुआ, उसमेंसे निलकनेकी दृष्टि रखता हुआ, उसका परिभोग

करता है, वह उन जैसे-तैसे पिण्ड-पातसे संतुष्ट रहनेके कारण, न अपनेको ऊंचा करके दिखाता है, न दूसरोंको नीचा करके दिखाता है, वह दक्ष होता है, आलस्य-रहित होता है, जानकार होता है तथा स्मृतिमान होता है। भिक्षुओ, इस प्रकारका भिक्षु पुराने, अग्र, आर्य-वशमें स्थित कहा जाता है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु जैसे-तैसे शयनासन (निवास स्थानादि) से सतुष्ट होता है, जैसे-तैसे शयनासनसे संतुष्ट रहनेका प्रशसक वह शयनासनके लिये अनुचित खोज नहीं करता, अनुचित प्रयास नही करता, शयनासनके न मिलनेपर उत्तेजित नही होता, शयनासन मिलनेपर उसे अनासक्त होकर, अमूर्छित रहकर, तृष्णा रहित होकर उनके दुष्परिणामोको देखता हुआ, उनमेसे निकलनेकी दृष्टि रखता हुआ परिभोग करता है, वह उन जैसे-तैसे शयनासनसे सतुष्ट रहनेके कारण, न अपनेको ऊँचा करके दिखाता है, न दूसरोको नीचा करके दिखाता है, वह दक्ष होता है, आलस्य-रहित होता है, जानकार होता है तथा स्मृतिमान होता है। भिक्षुओ, इस प्रकारका भिक्षु पुराने, अग्र, आर्य-वशमें स्थित कहा जाता है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु भावना-अभ्यासी होता है, भावनामें रत, प्रहाण अभ्यासी होता है, प्रहाणमें रत, उस भावना अभ्यासके कारण, भावनामे रत होनेके कारण, प्रहाण—अभ्यासी होनेके कारण, प्रहाणमे रत रहनेके कारण, वह न अपनेको ऊचा करके दिखाता है, न दूसरेको नीचा करके दिखाता है, वह दक्ष होता है, आलस्य-रहित होता है, जानकार होता है तथा स्मृतिमान होता है। भिक्षुओ, इस प्रकारका भिक्षु पुराने, अग्र, वशमें स्थित कहा जाता है।

भिक्षुओ, ये चार आर्य-वश है जो अग्र है, जो (सुदीर्घ) कालसे है, जो वश-गत है, जो पुराने है, जो असकीर्ण (अमिश्रित) है, जो असकीर्ण-पूर्व है, जो न सकीर्ण होते है और न सकीर्ण होगे और जो विज्ञ श्रमण-ब्राह्मणो द्वारा समर्थित है। भिक्षुओ, इन चारो आर्य-वशोसे युक्त भिक्षु यदि पूर्व दिशामे विहार करता है तो वह ही 'अरति' को सहन करता है, उसे 'अरति' सहन नही करती, यदि पश्चिम दिशामे भी विहार करता है तो वह ही 'अरति' को सहन करता है, उसे 'अरति' सहन नही करती, उत्तर दिशामे भी विहार करता है तो वह ही 'अरति' को सहन करता है, उसे 'अरति' सहन नही करती, यदि दक्षिण दिशामे भी विहार करता है तो वह ही 'अरति' को सहन करता है, उसे 'अरति' सहन नही करती। भिक्षुओ, यह किसलिये? 'अरति' 'रति' को सहन करनेवाला ही 'धीर' होता है।

नारति सहति धीर नारति धीर सहति,
धीरो च अरतिं सहति धीरो हि अरति सहो ॥
सब्ब कामविहायिन पनुन्न को निवारये,
नेक्ख जम्बोनदस्सेव को त निन्दितुमरहति,
देवापि न पससन्ति ब्रह्मुनापि पससितो ॥

['अरति' धीरको सहन नही करती, 'अरति' धीरको नही पहुँचती; धीर पुरुष ही अरतिको सहन करता है, धीर ही 'अरति-सह' होता है। जिसने सब कामोको छोड दिया, जिसने सबको त्याग दिया, उसे कौन रोक सकता है? जम्बुनद स्वर्णके समान उसकी कौन निन्दा कर सकता है, देवता भी उसकी प्रशसा करते है, ब्रह्मा द्वारा भी वह प्रशसित होता है।]

भिक्षुओ ये चार धर्मपद है, जो अग्र है, जो (दीर्घ) कालसे है, जो वश-गत है, जो पुराने है, जो असकीर्ण (= अमिश्रित) है, जो असकीर्ण-पूर्व है, जो न सकीर्ण होते है और न सकीर्ण होगे और जो विज्ञ श्रमण-ब्राह्मणो द्वारा समर्थित हैं। कौनसे चार?

भिक्षुओ, अलोभ एक धर्मपद है, जो अग्र है, जो (सुदीर्घ) कालसे है, जो वश-गत है, जो पुराना है, जो सकीर्ण (अमिश्रित) है, जो असकीर्ण-पूर्व है, जो न सकीर्ण होता है, और न सकीर्ण होगा और जो विज्ञ श्रमण-ब्राह्मणो द्वारा समर्थित है।

भिक्षुओ, अक्रोध (अव्यापाद) एक धर्मपद है, जो अग्र है, जो (सुदीर्घ) कालसे है, जो वश-गत है, जो पुराना है, जो असकीर्ण (अमिश्रित) है, जो असकीर्ण-पूर्व है, जो न सकीर्ण होता है और न सकीर्ण होगा और जो विज्ञ श्रमण-ब्राह्मणो द्वारा समर्थित है।

भिक्षुओ, सम्यक् स्मृति एक धर्मपद है, जो अग्र है, जो (सुदीर्घ) कालसे है, जो वश-गत है, जो पुराना है, जो असकीर्ण (अमिश्रित) है, जो असकीर्ण-पूर्व है, जो न सकीर्ण होता है और न सकीर्ण होगा और जो विज्ञ श्रमण-ब्राह्मणो द्वारा समर्थित है।

भिक्षुओ, सम्यक् समाधि एक धर्मपद है जो अग्र है, जो (सुदीर्घ) कालसे है, जो वश गत है, जो पुराना है, जो असकीर्ण (= अमिश्रित) है, जो असकीर्ण होगा और जो विज्ञ श्रमण-ब्राह्मणो द्वारा समर्थित है।

भिक्षुओ, ये चार धर्मपद है, जो अग्र हैं, जो (सुदीर्घ) काल से है, जो वश-गत है, जो पुराने है, जो असकीर्ण (= अमिश्रित) है, जो असकीर्ण-पूर्व है, जो न सकीर्ण होते है और न सकीर्ण होगे और जो विज्ञ श्रमण-ब्राह्मणो द्वारा समर्थित हैं।

अनभिज्झालु विहरेय्य अव्यापन्नेन चेतसा,
सतो एकग्गचित्तस्त अज्झत्त सुसमाहितो ॥

[लोभ-रहित, क्रोध-रहित चित्तसे, स्मृतिमान् सुसमाहित, एकाग्र-चित्त होकर विहार करे।]

एक समय भगवान् राजगृहमें विहार करते थे, गृध्र-कूट पर्वतपर। उस समय बहुतसे प्रसिद्ध प्रसिद्ध परिव्राजक जैसे अन्नभार, वरधर, सकुलदायि—तथा अन्य भी प्रसिद्ध परिव्राजक सर्पिणी (नदी) के तटपर परिव्राजकाराममे रहते थे। योगाभ्यास कर चुकनेके अनन्तर शामको भगवान् जहाँ सर्पिणीके किनारे परिव्राजकाराम था, वहाँ गए। जाकर बिछे आसनपर बैठे। बैठकर भगवान्ने उन परिव्राजकोको यह कहा "हे परिव्राजको! ये चार धर्मपद है, जो अग्र है, जो (सुदीर्घ) कालमे है, जो वश-गत है, जो पुराने है, जो असकीर्ण (=अमिश्रित) है, जो असकीर्ण पूर्व है, जो न सकीर्ण होते है और न सकीर्ण होगे और जो विज्ञ श्रमण-ब्राह्मणो द्वारा समर्थित है। कौनसे चार?

"हे परिव्राजको! अलोभ एक धर्मपद है, जो अग्र है, जो (सुदीर्घ) कालसे है, जो वश-गत है, जो पुराना है, जो असकीर्ण (=अमिश्रित) है, जो असकीर्ण-पूर्व है, जो न सकीर्ण होता है और न सकीर्ण होगा और जो विज्ञ श्रमणो-ब्राह्मणो द्वारा समर्थित है। हे परिव्राजको! अक्रोध एक धर्मपद है . . . . हे परिव्राजको! सम्यक् स्मृति एक धर्मपद है . . हे परिव्राजको! सम्यक् समाधि एक धर्मपद है जो अग्र है, जो (सुदीर्घ) कालसे है, जो वश-गत है, जो पुरानी है, जो असकीर्ण (=अमिश्रित) है, जो असकीर्ण-पूर्व है, जो न सकीर्ण होती है और न सकीर्ण होगी और जो विज्ञ श्रमणो ब्राह्मणो द्वारा समर्थित है। हे पारिव्राजको! ये चार धर्मपद है, जो अग्र है, जो (सुदीर्घ) कालसे है, जो वश-गत है, जो पुराने है, जो असकीर्ण (=अमिश्रित) है, जो असकीर्ण-पूर्व है, जो न सकीर्ण होते है और न सकीर्ण होगे और जो विज्ञ श्रमणो ब्राह्मणो द्वारा समर्थित है।

"हे परिव्राजको! जो ऐसा कहेगा कि मै इस अलोभ धर्म-पदका निषेध करके ऐसे श्रमण या ब्राह्मणको प्रसिद्ध करुगा जो लोभी हो, जो कामभोगोके प्रति तीव्र रागी हो, तो मै उसे कहूँगा—वह आये, बोले, व्यवहार करे, उसका प्रताप देखता हूँ। हे पारिव्राजको! इसकी सम्भावना नही है कि वह अलोभ धर्म-पदका निषेध करके, ऐसे श्रमण या ब्राह्मणको प्रसिद्ध कर सकेगा, जो लोभी हो, जो कामभोगो के प्रति तीव्र रागी हो।

"हे परिव्राजको! जो ऐसा कहेगा कि मैं इस अक्रोध धर्मपदका निषेध करके ऐसे श्रमण या ब्राह्मणको प्रसिद्ध करूँगा जो क्रोधी हो, जो द्वेष-युक्त सकल्पोवाला हो, तो मैं उसे कहूँगा—वह आये, बोले, व्यवहारकरे, मैं उसका प्रताप देखता हूँ। हे पारिव्राजको! इसकी सम्भावना नही है कि वह अक्रोध धर्म-पदका निषेध करके, ऐसे श्रमण या ब्राह्मणको प्रसिद्ध कर सकेगा, जो क्रोधी हो, जो द्वेष-युक्त-सकल्पो वाला हो।

"हे परिव्राजको! जो ऐसा कहेगा कि मैं इस सम्यक् स्मृति धर्मपदका निषेध करके, ऐसे श्रमण या ब्राह्मण को प्रसिद्ध करूगा जो मूढ-स्मृति हो, जो अजानकार हो, तो मैं उसे कहूँगा—वह आये, बोले, व्यवहार करे, मैं उसका प्रताप देखता हूँ। हे परिव्राजको! इसकी सम्भावना नही है कि वह सम्यक्-स्मृति धर्म-पदका निषेधकर, ऐसे श्रमण या ब्राह्मणको प्रसिद्धकर सकेगा, जो मूढ़ स्मृति हो, जो अजानकार हो।

"हे परिव्राजको! जो ऐसा कहेगा कि मैं इस सम्यक्-समाधि धर्म-पदका निषेध करके ऐसे श्रमण या ब्राह्मणको प्रसिद्ध करुगा जो एकाग्र-चित्तन हो, जो भ्रान्त चित्त हो, तो मैं उसे कहूँगा—वह आये, बोले, व्यवहार करे, मैं उसके प्रतापको देखता हूँ। हे परिव्राजको! इसकी सम्भावना नही है कि वह सम्यक्-समाधि धर्म-पदका निषेध करके ऐसे श्रमण या ब्राह्मणको प्रसिद्ध कर सकेगा, जो एकाग्र-चित्त न हो, जो भ्रान्त-चित्त हो।

"हे परिव्राजको! जो इन चारो धर्म पदोको गर्हित, निषेध करने योग्य मानता है, वह इसी शरीरमें चार अधार्मिक, आलोच्य, निन्दनीय मतोका माननेवाला हो जाता है। कौनसे चार मतोका! यदि जनाव अलोभ धर्मपदकी गर्हा करते है निषेध करते है तो जो श्रमण-ब्राह्मण लोभी है, काम-भोगोंके प्रति तीव्र रागी है, वे श्रमण-ब्राह्मण ही जनावके पूजनीय वन जाते है, वे श्रमण-ब्राह्मण ही जनाव द्वारा प्रशसित हो जाते है।

"यदि जनाव अक्रोध धर्मपद की गर्हा करते है, निषेध करते है तो जो श्रमण-ब्राह्मण क्रोधी है, द्वेषयुक्त सकल्पोवाले है, वे श्रमण-ब्राह्मण ही जनावके पूजनीय वन जाते है, वे श्रमण-ब्राह्मण ही जनाव द्वारा प्रशसित हो जाते है।

"यदि जनाव सम्यक् स्मृतिकी गर्हा करते हैं, निषेध करते है तो जो श्रमण-ब्राह्मण मूढ-स्मृति है, अजानकार है, वे श्रमण-ब्राह्मण ही जनावके पूजनीय वन जाते हैं, वे श्रमण-ब्राह्मण ही जनाव द्वारा प्रशसित होते जाते है।

"यदि जनाव सम्यक् समाधिकी गर्हा करते है, निषेध करते है, तो जो श्रमण-ब्राह्मण एकाग्र-चित्त न हो, भ्रान्त चित्त हो, वे श्रमण-ब्राह्मण ही जनावके पूजनीय वन जाते है, वे श्रमण-ब्राह्मण ही जनाव द्वारा प्रशसित हो जाते है।

"हे परिव्राजको! जो इन चारो धर्मपदोको गर्हित, निषेध करने योग्य मानता है, वह इसी शरीरमे चार अधार्मिक, आलोच्य, निन्दनीय मतोका माननेवाला हो जाता है।

"हे परिव्राजको! जो उत्कल बोली बोलनेवाले (?) हुए, अहेतुवादी हुए, अक्रिया-वादी हुए, नास्तिक (नास्ति-वादी) हुए, उन्होने भी इन चारो धर्म-पदोकी निन्दा नही की, निषेध नही किया। यह किस लिये? निन्दा, क्रोध तथा उपालम्भके भयसे।

अव्यापन्नो सदा सतो अज्झत्त सुसमाहितो,
अभिज्झा विनये सिक्ख अप्पमत्तोत्ति वुच्चति ॥

[अक्रोधी, सदास्मृति, अपनेमे एकाग्रचित्त, लोभके वशीभूत न होनेवाला, शिक्षाकामी ही 'अप्रमादी' कहलाता है।]

भिक्षुओ, ये चार चक्के है जिनसे युक्त देवमनुष्योका जीवन (=चतु-चक्र) चलता है, जिनसे युक्त देव मनुष्य थोडे ही समयमे भोग्य-पदार्थोके विषयमे महानताको, विपुलताको प्राप्त होते है। कौनसे चार? अनुकूल (प्रतिरूप) देशवास, सत्पुरुष-आश्रय, चित्तकी स्थिरता, पूर्व (-जन्ममे) कृत पुण्य-कर्म। भिक्षुओ, ये चार चक्के है जिनसे युक्त देवमनुष्योका जीवन (=चतुचक्क) चलता है, जिनसे युक्त देवमनुष्य थोडे ही समयमें योग्य-पदार्थोके विषयमे महानताको, विपुलताको प्राप्त होते है।

पतिरूपे वसे देसे अरियचित्त करोसिया,
सम्मा पणिधि सम्पन्नो पुब्बे पुञ्ञकतो नरो,
धञ्ञ धन यसो कित्ति सुखं चेत धिवत्तति ॥

[जो आदमी अनुकूल देशमे रहता है, जो आर्य-चित्त रखता है, जो स्थिर-चित्त रखता है, जिसने पूर्व (-जन्ममे) पुण्य-कर्म किये है, ऐसे आदमीका धान्य, धन, यश, कीर्ति तथा सुख बढता है।]

भिक्षुओ, ये चार (लोक-) सग्रह वस्तुये है। कौनसी चार? दान, प्रिय-वचन, उपकार तथा समानताका व्यवहार। भिक्षुओ, ये चार सग्रह-वस्तुये है।

दान च पेय्यवज्जञ्च अत्थचरियाय च या इध,
समानतता च धम्मेसु तत्थ तत्थ यथा रह,
एते खो सङ्गहा लोके रथस्सानीव यायतो ॥

[दान प्रियवचन, उपकार तथा जहाँ तहाँ यथायोग्य समताका वर्ताव—ये लोकमे चार सग्रह-वस्तुयें है, वैसी ही जैसी चलते हुए रथकी आणी।]

एते च सङ्गहा नास्सु न माता पुत्तकारणा,
लभेथ मान पूज वा पिता वा पुत्तकारणा ॥
यस्मा च सगहा एते समवेक्खन्ति पण्डिता,
तस्मा महत्त पप्पोन्ति पासंसा च भवन्ति ते ॥

[यदि ये सग्रह-वस्तुये न हो, तो न पुत्रसे माताको ही अथवा पिताको ही मान या पूजा मिले। क्योकि पण्डित-जन इन सग्रह-वस्तुओका ध्यान रखते है, इसीलिये वे महत्वको प्राप्त होते है तथा प्रशसनीय बनते है।]

भिक्षुओ, शामके समय मृगराज सिंह अपनी गुफामेंसे निकलता है। वह गुफामेंसे निकलकर जम्हाई लेता है। जम्हाई लेकर चारो ओर देखता है। चारो ओर देखकर तीन बार सिंह-नाद करता है। तीन बार सिंह-नाद करके शिकारके लिये निकलता है। भिक्षुओ, जो भी पशु-प्राणी मृगराज सिंहको दहाडते हुए सुनते है वे प्राय भयभीत हो जाते है, सत्रसित हो जाते है। विलमे रहनेवाले विलमे घुस जाते है, पानीमें रहनेवाले पानीमें घुस जाते है, वनमे रहनेवाले वनमे घुस जाते हैं, आकाशमे उडनेवाले पक्षी आकाशमें उड जाते है। भिक्षुओ, ग्राम-निगम-राजधानिओ मे राजाके जो हाथी बडे मजबूत रस्सोंसे बधे रहते है, वे भी उन बन्धनोको तोडकर, डरके मारे पेशाव-पाखाना करते हुए जहाँ-तहाँ भाग जाते है। भिक्षुओ, पशु-प्राणियोके लिये मृग-राजसिंह ऐसा ऋद्धिमान् होता है, ऐसा महा शक्तिशाली होता है, ऐसा महा प्रतापवान् होता है।

इसी प्रकार भिक्षुओ, जब लोकमें अर्हत्, सम्यक् सम्बुद्ध, विद्याचरण सम्पन्न, सुगत, लोकके जानकार, अनुत्तर, पुरुषोका दमन करनेके लिये सारथी-समान, देव-मनुष्योके शास्ता भगवान् बुद्ध तथागत जन्म ग्रहण करते है, तो वे धर्मोपदेश देते है कि यह 'सत्काय' है, यह 'सत्काय' का समुदय है, यह 'सत्काय' का निरोध है, यह 'सत्काय' के निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है। भिक्षुओ, जो दीर्घायु, वर्णवान् सुख-बहुल, चिरकालसे ऊँचे-ऊँचे विमानोपर रहनेवाले देवता है वे भी तथागतकी, धर्म-देशना सुनकर प्राय भयभीत हो जाते है, सत्रासको प्राप्त होते है। वे सोचते

है—हमने 'अनित्य' होकर अपने आपको 'नित्य' माना, 'अध्रुव' होकर अपने अपने आपको 'ध्रुव' माना, 'अशाश्वत' होकर अपने आपको 'शाश्वत' माना। हम भी 'अनित्य' है, 'अध्रुव' है, 'अशाश्वत' है, 'सत्काय' के अन्तर्गत है। भिक्षुओ, सदेव लोकमें तथागत इतने ऋद्धिमान् है, इतने महाशक्ति शाली है, इतने महान् प्रतापवान् है।

यदा बुद्धो अभिञ्ञाय धम्मचक्क पवत्तयि,
सदेवकस्स लोकस्स सत्था अप्पटिपुग्गलो ॥
सक्कायञ्च निरोधञ्च सक्कायस्स च सम्भव,
अरियचटठङ्गिक मग्ग दुक्खुपसमगामिन ॥
येपि दीघायुका देवा वण्णवन्ता यसस्सिनो,
भीता सन्तासमापादु सीहस्सेवितरे मिगा,
अवीतिवत्ता सक्काय अनिच्चा किर यो मय;
सुत्वा अरहतो वाक्य विप्पमुत्तस्स तादिनो ॥

[सदेव लोकके शास्ता, अतुलनीय बुद्धने जब 'बुद्धत्व' लाभ करनेके अनन्तर धर्मचक्र प्रवर्तित किया (अर्थात्) 'सत्काय', 'सत्काय' का समुदय, 'सत्काय' का निरोध और 'सत्काय' के निरोधका आर्य अष्टागिक मार्ग प्रकाशित किया, तो जितने भी दीर्घायु, वर्णवान्, यशस्वी देव थे वे भयभीत हो गये, सत्रस्त हो गये जैसे सिंहसे इतर पशु। स्थिर-चित्त, विप्रमुक्त, अर्हतके वाक्य सुनकर उन्होने सोचा कि हम 'सत्काय' की सीमाके भीतर है, हम 'अनित्य' है।]

भिक्षुओ, ये चार अग्र प्रसन्नताये (=प्रसाद) है। कौनसे चार? भिक्षुओ जितने भी प्राणी है, अपद हो, द्विपद हो, चतुष्पद हो, बहुपद हो, रूपी हो, अरूपी हो, सज्ञी हो, असज्ञी हो अथवा नेवसज्ञीनासज्ञी हो, तथागत ही उनमे अग्र कहलाते है, अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध। भिक्षुओ, जो बुद्धके प्रति श्रद्धावान् है, वे 'अग्र' के प्रति श्रद्धावान् है। जो 'अग्र' मे श्रद्धावान् है, उन्हे 'अग्र' फलका ही लाभ मिलता है। भिक्षुओ, जितने भी सस्कृत धर्म है, आर्य अष्टागिक मार्ग उनमे अग्र कहलाता है। भिक्षुओ, जो आर्य अष्टागिक-मार्ग मे श्रद्धावान् है, वे 'अग्र' में श्रद्धावान् है। जो 'अग्र' में श्रद्धावान् है, उन्हे 'अग्र' फलाका ही लाभ मिलता है। भिक्षुओ, जितने भी सस्कृत वा असस्कृत धर्म है, 'विराग' उन सबमें 'अग्र' कहलाता है, जो कि मदका मर्दन करनेवाला है, पिपासाको शान्तकरने वाला है, आसक्तिका नाश करनेवाला है, (ससार) मार्गका उच्छेद करनेवाला है, तृष्णाका क्षय करनेवाला है, वैराग्य-स्वरूप है, निरोध-

स्वरूप है, निर्वाण है। भिक्षुओ, जो धर्मने 'श्रद्धावान् हैं, वे 'अग्र' में श्रद्धावान् है। जो 'अग्र' मे श्रद्धावान् है, उन्हे 'अग्र' फलका ही लाभ मिलता है। भिक्षुओ, जितने भी 'सघ' वा 'गण' है, तथागतका श्रावक-सघ उनमे 'अग्र' कहलाता है, जो कि ये चार पुरुष-युगल अर्थात् आठ प्रकारके पुद्गल हैं, यही भगवान्‌का श्रावक सघ है, आदर करने योग्य, पहुनाई करने योग्य, दक्षिणा देने योग्य, हाथ जोडने योग्य तथा लोक का श्रेष्ठ पुण्य-क्षेत्र। भिक्षुओ, जो सघके प्रति 'श्रद्धावान्' हैं, वे 'अग्र' में श्रद्धावान् है। जो 'अग्र' में श्रद्धावान् है, उन्हे 'अग्र' का ही लाभ मिलता है। भिक्षुओ, ये चार अग्र प्रसन्नतायें (= प्रसाद) है।

अग्गतो वे पसन्नान अग्ग धम्म विजानत,
अग्गे बुद्धे पसन्नान दक्खिणेय्ये अनुत्तरे ॥
अग्गे धम्मे पसन्नान विरागुपसमे सुखे,
अग्गे सङ्घे पसन्नान पुञ्ञक्खेत्ते अनुत्तरे ॥
अग्गस्मि दान ददत अग्ग पुञ्ञ पवड्ढति,
अग्ग आयु च वण्णो च यसो कित्ति सुख वल ॥
अग्गस्स दाता मेधावी अग्गधम्मसमाहितो,
देवभूतो मनुस्सो वा अग्गप्पत्तो पमोदति ॥

[जो अग्र (श्रेष्ठ) में प्रसन्न हैं, जो अग्र (श्रेष्ठ) धर्मके जानकार है, जो अग्र (श्रेष्ठ) बुद्धके प्रति श्रद्धावान् हैं, जो अनुत्तर (सर्वश्रेष्ठ) दक्षिणार्ह सघके प्रति श्रद्धावान् हैं, जो विराग-स्वरूप, उपशमनकारक, सुखदायक अग्र (श्रेष्ठ) धर्मके प्रति श्रद्धावान् है, इसी प्रकार अनुत्तर (श्रेष्ठ) पुण्य-क्षेत्र सघके प्रति जो श्रद्धावान् है, वे जव अग्र (श्रेष्ठ) सघको दान देते है तो उनके अग्र (श्रेष्ठ) पुण्यमें वृद्धि होती है और उसकी आयु, वर्ण, यश, कीर्ति, सुख तया वल सव अग्र (वढिया) होता है। जो अग्र (श्रेष्ठ) को देनेवाला मेधावी पुरुष है, जो अग्र (श्रेष्ठ) धर्ममें समाहित है, वह देव-योनि या मनुष्य योनिमें पैदा हो, अग्र (श्रेष्ठ फल) की प्राप्तकर आनन्दित होता है।]

एक समय भगवान् राजगृहमें, वेळुवनके कलन्दकनिवापमे विहार करते थे। तव मगध महामात्य वस्सकार ब्राह्मण जहाँ भगवान् थे वहाँ आया। पास आकर भगवान्‌के साथ कुशल क्षेमकी वातचीत की। कुशल क्षेमकी वातचीत हो चुकनेपर वह अेक ओर वैठ गया। अेक ओर वैठे हुए उस मगध महामात्य वस्सकार ब्राह्मणने भगवान्‌से यह कहा—

"हे गौतम! जो कोई इन चार गुणोसे युक्त होता है, उसे महाप्रज्ञावान् महापुरुष कहते हैं। कौनसे चारगुणोसे? हे गौतम! अुसे उस उस श्रुतिका ज्ञान होता है, वह बहुश्रुत होता है, वह उस उस कथनका अर्थ जानता है, इस कथनका यह अर्थ है और इस कथनका यह अर्थ है, वह स्मृतिमान होता है चिर-कृत, चिर-भाषित की भी स्मृति बनी रहती है, जो गृहस्थोंके गृहस्थकार्य है, उन के विषयमे दक्ष होता है, आलस्य-रहित, उनके विषयमें उपाय-कुशल होता है, करनेमें समर्थ, व्यवस्था करनेमे समर्थ। हे गौतम! जो इन चार गुणोंसे युक्त होता है, उसे हम महाप्रज्ञावान महा-पुरुष कहते है? हे गौतम! यदि मेरा कथन अनुमोदन करने योग्य है तो आप गौतम इसका अनुमोदन करें, यदि निषेध करने योग्य हो तो आप गौतम इसका निषेध करे।"

"हे ब्राह्मण! मै तेरे कथनका न समर्थन करता हूँ और न निषेध करता हूँ। किन्तु हे ब्राह्मण! मै चार गुणोंसे युक्तको महाप्रज्ञावान् महापुरुष कहता हूँ। कौनसे चार गुणोसे युक्त को? हे ब्राह्मण! वह बहुत जनोके हितमे लगा होता है, बहुत जनोके सुखमे, उसके द्वारा बहुत सी जनता कल्याणपथपर, कुशल-पथपर प्रति-ष्ठित होती है, वह जो विकल्प मनमें उठाना चाहता है, वह विकल्प मनमें उठाता है, जो विकल्प मनमे उठाना नही चाहता, वह विकल्प मनमे नही उठाता है, जो संकल्प मनमें उठाना चाहता है, वह सकल्प मनमें उठाता है, जो सकल्प मनमे उठाना नही चाहता, वह सकल्प मनमे नही उठाता है। इस प्रकार वह सकल्प-विकल्पोके वषयमें चित्तका स्वामी होता है, उसे चारो चैतसिक ध्यान, जो सुखविहार है, सुविधा से प्राप्त रहते है, अनायास प्राप्त रहते है, आसानी से प्राप्त रहते है, वह आसवोका क्षय कर अनास्रव चित्त-विमुक्ति, प्रज्ञा-विमुक्तिको इसी शरीरमे स्वय साक्षात कर, प्राप्त कर विहार करता है। हे ब्राह्मण! मै तेरे कथनका न समर्थन करता हूँ और न निषेध करता हूँ। किन्तु हे ब्राह्मण! मै चार गुणोंसे युक्तको महाप्रज्ञावान् महापुरुष कहता हूँ।"

"आश्चर्य है हे गौतम! अद्भुत है हे गौतम! आप गौतमने क्या सुभाषित किया है! हम आप गौतमको ही इन चार गुणोंसे युक्त जानते है। आप गौतमही बहुत जनोंके हितमे लगे है, बहुत जनोके सुखमे; आपके ही द्वारा बहुत सी जनता कल्याण-पथपर कुशल-पथपर प्रतिष्ठित हुई है, आप ही जो विकल्प मनमे उठाना चाहते है, वे विकल्प मनमे उठाते है, जो विकल्प मनमें उठाना नही चाहते, वह विकल्प मनमें नही उठाते है, जो सकल्प मनमे उठाना चाहते है, वह सकल्प मनमें उठाते है,

जो सकल्प मनमें उठाना नही चाहते, वह सकल्प मनमें नही उठाते है। इस प्रकार सकल्प-विकल्पोके विषयमें चित्तके स्वामी है, आपको चारो चैतसिक ध्यान, जो सुखविहार है, सुविधासे प्राप्त है, अनायास प्राप्त है, आसानीसे प्राप्त है, आप आस्रवोका क्षय कर अनास्रव चित्त-विमुक्ति प्रज्ञा-विमुक्तिको इसी शरीरमें स्वय साक्षात कर, प्राप्त कर विहार करते है।"

"निश्चयसे ब्राह्मण! तू ने ठीक वात कही है। लेकिन तो भी मै तुझे यह समझा-कर कहता हू। ब्राह्मण! मै ही वहुत जनोके हितमें लगा हू, वहुत जनोके सुखमे, मेरे ही द्वारा वहुत सी जनता कल्याणपथपर, कुशल-पथपर प्रतिष्ठित हुई है। मै ही जो विकल्प मनमे उठाना चाहता हू वह विकल्प मनमे उठाता हू, जो विकल्प मनमें उठाना नही चाहता वह विकल्प मनमें नही उठाता हू, जो सकल्प मनमे उठाना चाहता हू वह सकल्प मनमें उठाता हू, जो सकल्प मनमे उठाना नही चाहता वह सकल्प मनमें नही उठाता हू। इस प्रकार सकल्प-विकल्पोके विषयमें चित्तका स्वामी हू मुझे चारो चैतसिक ध्यान, जो सुखविहार है, सुविधासे प्राप्त है, अनायास प्राप्त है, आसानीसे प्राप्त है, मैं आस्रवोका क्षय कर अनास्रव चित्त-विमुक्ति प्रज्ञा-विमुक्तिको इसी शरीरमें स्वय साक्षात कर, प्राप्त कर, विहार करता हू।

यो वेदी सब्बसत्तान मच्चुपासा पमोचन,
हित देवमनुस्सान ञाय धम्म पकासयी,
य वे दिस्वा च सुत्वा च पसीदति बहुज्जनो ॥
मग्गामग्गस्स कुसलो कतकिच्चो अनासवो,
बुद्धो अन्तिमसारीरो महापुञ्ञो महापुरिसोति वुच्चति ॥

[जो जानकार है, जिन्होने सव प्राणियोको मृत्यु-पाशसे मुक्त करनेवाले, देव-मनुष्योंके हितकर, ज्ञेय धर्मको प्रकाशित किया है, जिन्हे देखकर तथा जिनका उपदेश सुनकर वहुत जन प्रसन्न होते है, जो मार्ग-मार्गके विषयमें कुशल है, जो कृतकृत्य है, जो अनास्रव है, जो अन्तिम शरीरधारी बुद्ध है, ये महाप्रज्ञ, महापुरुष कहलाते है।]

एक समय भगवान् उक्कटठ तथा सेतव्यके वीच रास्तेसे जा रहे थे। द्रोण ब्राह्मण भी उक्कटठ तथा सेतव्यके वीच रास्तेसे जा रहा था। द्रोण ब्राह्मणने देखा कि भगवानके पाँवमें चक्र है, हजारो है, नेमी सहित है, नाभी सहित है, सभी आकार-प्रकार परिपूर्ण है। उसे देखकर यह हुआ—'अरे! यह आश्चर्य है, अरे! यह अद्भुत है। यह मनुष्यके पाँव नही होगे।

तब भगवान् मार्गसे हटकर एक वृक्षके नीचे बैठे, पाल्थी मारकर, शरीरको सीधाकर तथा स्मृतिको सामने रख।

तब द्रोण ब्राह्मण भगवानके चरण-चिन्होका अनुकरण करते हुए चला। उसने भगवानको एक वृक्षके नीचे बैठा हुआ देखा। प्रसन्न, प्रसन्न-मुद्रामे शान्तेन्द्रिय, शान्त-मन, उत्तम-दमन-शमन-युक्त, सयत, इन्द्रिय-जित। उन्हे देखकर वह जहाँ भगवान् थे वहाँ गया। पास जाकर उसने भगवान्से यह कहा—"आप देवता होगे?"

"ब्राह्मण! मैं देवता नही हूँ।"

"आप गन्धर्व होगे?"

"ब्राह्मण! मैं गन्धर्व नही हूँ।"

"आप यक्ष होगे।"

"ब्राह्मण! मैं यक्ष नही हूँ।"

"आप मनुष्य होगे।"

"ब्राह्मण! मैं मनुप्य नही हूँ।"

"आप देवता होगे?' पूछनेपर आप कहते हैं 'हे ब्राह्मण! मैं देवता नही नही हूँ', 'आप गन्धर्व होगे, पूछनेपर आप कहते हैं, 'ब्राह्मण! मै गन्धर्व नही हूँ'; 'आप यक्ष होगे, 'पूछनेपर आप कहते हैं, 'ब्राह्मण! मै यक्ष नही हूँ', आप मनुष्य होगे' पूछनेपर आप कहते है, 'ब्राह्मण! मैं मनुप्य नही हूँ' तो आप कौन है?"

"हे ब्राह्मण! जिन आस्रवोके होनेसे मुझे 'देवता' कहा जा सकता था, मेरे वे आस्रव 'प्रहीण' हो गये है, जडसे जाते रहे है, कटे ताडकी तरह हो गये हैं, अभाव-प्राप्त हो गये है, भावी उत्पत्तिकी सम्भावना नही रही है। हे ब्राह्मण! जिन आस्रवोंके होनेसे मुझे 'गन्धर्व' कहा जा सकता था, 'यक्ष' कहा जा सकता था, 'मनुष्य' कहा जा सकता था, मेरे आस्रव 'प्रहीण' हो गये है, जडसे जाते रहे है, कटे ताडकी तरह हो गये हैं, अभाव-प्राप्त हो गये है, भावी-उत्पत्तिकी सम्भावना नही रही है। ब्राह्मण! जैसे उत्पल हो, पद्म हो वा पुण्डरीक हो, वह पानीमें पैदा हो, पानीमे बढे किन्तु वह पानीसे अलिप्त रहकर उससे ऊपर रहे। इसी प्रकार ब्राह्मण! मैं लोकमे पैदा हुआ हूँ, लोकमें वढा हूँ, किन्तु लोकको जीतकर (ऊपर उठकर) उससे अलिप्त रहकर विहार करता हूँ। ब्राह्मण! मुझे 'वुद्ध' समझ।

येन देवूपपत्यस्स गन्धब्बो वा विहङ्गमो,
यक्खत्त येन गच्छेय्य मनुस्सत्तञ्च अण्डजे,
ते मय्ह आसवा खीणा विधस्ता विनलीकता॥

पुण्डरीक यथा वग्गु तोयेन नुपलिप्पति,
नवुपलित्तामि लोकेन तस्मा वुद्धोस्मि ब्राह्मण ॥

[जिन आस्रवोके कारण मै देव, गन्धर्व, या यक्ष होकर पैदा होता, अथवा मेरी 'मनुष्य' सज्ञा होती, मेरे वे सव 'आस्रव' क्षीण, विध्वस्त हो गये, नष्ट हो गये। जैसे सुन्दर कमल जलसे लिप्त नही होता, उसी तरह मै भी लोकसे लिप्त नही होता। इसीलिये हे ब्राह्मण! मै वुद्ध हूँ।]

भिक्षुओ, चार वातोसे युक्त भिक्षु पतनके अयोग्य हो जाता है, उसे निर्वाणके समीप ही समझना चाहिये। कौन-सी चार वातोसे? भिक्षुओ, भिक्षु, शील-सम्पन्न होता है, इन्द्रियोको वशमे किये होता है, भोजनकी मात्रा जाननेवाला होता है, जागनेवाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु शील सम्पन्न कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु शीलवान् होता है, प्रातिमोक्षके नियमोके अनुसार चलनेवाला, आचार-गोचरयुक्त, अणु-मात्र दोप करनेमे भी भय-भीत, शिक्षापदोका सम्यक् प्रकार ग्रहण कर अभ्यास करने वाला। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु शीलसम्पन्न होता है। भिक्षुओ, भिक्षु इन्द्रियोको कैसे वशमे किये रहता है? भिक्षुओ, भिक्षु चक्षुसे रूपको देखकर न उसके निमित्तको ग्रहण करता है, न उसके अनुव्यजनको ग्रहण करता है, जिस चक्षु इन्द्रियके असयत विहारसे लोभ, द्वेप रूपी पापी अकुशल-धर्म उत्पन्न हो सकते है, उस चक्षु इन्द्रियको सयत रखनेके लिये प्रयत्नशील होता है, वह चक्षु इन्द्रियकी रक्षा करता है, चक्षु इन्द्रियको सयत रखता है, श्रोतसे शब्द सुनकर घ्राणसे गन्ध सूघकर जिव्हासे रस चखकर स्पर्श इन्द्रियसे स्पर्श करके तथा मनसे मनके विपयोका मननकर न उसके निमित्तको ग्रहण करता है, न उसके अनुव्यजनको ग्रहण करता है, जिस मन इन्द्रियके असयत विहारसे लोभ, द्वेप रूपी पापी अकुशल धर्म उत्पन्न हो सकते है, उस मन इन्द्रियको सयत रखनेके लिये प्रयत्नशील होता है, वह मन इद्रियकी रक्षा करता है, मन इन्द्रियको सयत रखता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु इन्द्रियोको वशमे किये रहता है।

भिक्षुओ, भिक्षु भोजनकी मात्रा जानने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु सोच विचार कर आहार ग्रहण करता है, न हसी-खेलके लिये, न मदके लिये, न मण्डनके लिये, न अपने आपको सजानेके लिये, जव तक इस शरीरकी स्थिति है तव तक शरीर-यापनके लिये, विहिंसासे विरतिके लिये, ब्रह्मचर्य्य (श्रेष्ठ जीवन) पर अनुग्रह करनेके लिये, पुरानी वेदनाओका शमन करूँगा, नई वेदना उत्पन्न न होने दूगा, मेरी जीवन-यात्रा निर्दोप होगी तथा जीवन सुविधापूर्वक वीतेगा। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु भोजनकी मात्रा जानने वाला होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु जागने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु दिनमे चलते-फिरते रहकर वा बैठकर चित्तके आवरण-मलोसे चित्तको शुद्ध करता है, रात्रिके प्रथम याममे चलते-फिरते रहकर वा बैठकर चित्तके आवरण-मलोंसे चित्तको शुद्ध करता है, रात्रिके मध्यम-याममे पाँवपर पाँव रखकर दाईं करवट सिंह शैय्यामे लेटता है, स्मृति-मान, उठनेके सकल्पको मनमे जगह देकर, रात्रिके अन्तिम-याममे उठकर चलते-फिरते रहकर वा बैठकर चित्तके आवरण-मलोसे चित्तको शुद्ध करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु जागनेवाला होता है।

भिक्षुओ, इन चार बातोसे युक्त भिक्षु पतनके अयोग्य हो जाता है, उसे निर्वाणके समीप ही समझना चाहिये।

सीले पतिट्ठितो भिक्खु इन्द्रियेसु च सवुतो,
भोजनम्हि च मत्तञ्ञू जागरियं अनुयुञ्जति,
एव विहरमानो पि अहोरत्तमतन्दितो,
भावय कुसल धम्म योगक्खेमस्स पत्तिया,
अप्पमादरतो भिक्खु पमादे भयदस्सिवा,
अभब्बो परिहाणाय निब्बाणस्सेव सन्तिके॥

[जो भिक्षु शीलमे प्रतिष्ठित होता है, जिसकी इद्रिया सयत होती है, जो भोजनके विषयमे मात्रज्ञ होता है तथा जाग्रत रहता है, वह इस प्रकार विहार करता हुआ रात-दिन आलस्य-रहित होता है, योग-क्षेमकी प्राप्तिके लिये कुशलधर्मकी भावना करता है। (इस प्रकारका) प्रमादमे भय माननेवाला अप्रमादी भिक्षु पतनके अयोग्य होता है, वह निर्वाणके समीप ही होता है।]

भिक्षुओ, जिस भिक्षुने सब मिथ्या-धारणाओको त्याग दिया रहता है, वह सब ऐषणाओका त्यागी होता है, उसके काय-सस्कार शान्त होते है, वह प्रतिलीन (समाधि-प्राप्त) होता है। भिक्षुओ, भिक्षु चारो मिथ्या धारणाओका त्यागी कैसे होता है? भिक्षुओ, अनेक श्रमण-ब्राह्मणोकी जो अनेक प्रकारकी मिथ्या धारणाये है, जैसे यह लोक शाश्वत है, यह लोक अशाश्वत है, यह लोक सान्त है, यह लोक अनन्त है, जो शरीर है वही जीव है, शरीर अन्य है जीव अन्य है, तथागत मरणानन्तर रहते है, तथागत मरणानन्तर नही रहते है, तथागत मरणान्तर रहते है और नही भी रहते है, तथागत मरणान्तर न रहते है और न नही रहते है—उसकी ये सब धारणायें नष्ट हो गई रहती है, त्यक्त होती है, निकल गई रहती है, परित्यक्त होती

है, प्रहीण हो गई रहती है, विनाशको प्राप्त हो गई रहती है, भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु मिथ्या धारणाओका त्यागी होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे सब एषणाओका त्यागी होता है? भिक्षुओ, भिक्षुकी कामैषणा प्रहीण होती है, भवैषणा प्रहीण होती है, ब्रह्मचर्य्यैषणा शान्त होती है; इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु सभी एषणाओका त्यागी होता है।

भिक्षुओ, भिक्षुके काय-सस्कार कैसे शान्त होते है?

भिक्षुओ, भिक्षुके सुख और दु खका प्रहाण हो जाने पर, सौमनस्य तथा दौर्मनस्य भावोका पहले ही अस्त हुए रहनेपर वह अदु खरूप, असुखरूप, उपेक्षा-स्मृति-युक्त परिशुद्ध चतुर्थ ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षुका काय-सस्कार शान्त होता है?

भिक्षुओ, भिक्षु प्रति-लीन (समाधि-प्राप्त) कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षुका अहकार प्रहीण होता है, जडसे जाता रहता है, कटे ताडसा हो गया रहता है, अभाव-प्राप्त हो गया रहता है, भविष्यमें पुनरुत्पत्तिकी सम्भावना नही रहती। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु प्रति-लीन होता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुने सब मिथ्या-धारणाओको त्याग दिया रहता है, वह सब एषणाओका त्यागी कहलाता है, शान्त-काय-सस्कार कहलाता है तथा प्रतिलीन कहलाता है।

कामेसना भवेसना ब्रह्मचरियेसना सह,
इति सच्चपरामासो दिटठट्ठाना समुस्सया ॥
सब्बरागविरत्तस्स तण्हक्खयविमुत्तिनो,
एसना पटिनिस्सट्ठा दिट्ठट्ठाना समूहता,
सचे सन्तो सतो भिक्खु पस्सद्धो अपराजितो,
मानाभिसमया बुद्धो पतिलीनोति वुच्चति ॥

[कामैषणा, भवैषणा और ब्रह्मचर्य्यैषणा—ये जो (मिथ्या-) सत्योंके सम्पर्क (=परामर्श) है, इन (मिथ्या) दृष्टि-स्थानोका नाश होनेसे जिसके सब रागका क्षय हो गया, जिसकी तृष्णाका क्षय हो गया, उसकी एषणा शान्त हो गई तथा उसके (मिथ्या) दृष्टि-स्थान जडमूलसे जाते रहे। वही भिक्षु शान्त है, वही स्मृतिमान है, वही प्रश्रब्ध है, वही अपराजित है, उसीने अपने मानका नाश किया है, वही जाग्रत है, (प्र-) बुद्ध है तथा वही प्रतिलीन कहलाता है।]

उस समय उज्जाय नामक ब्राह्मण जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास पहुँचकर कुशल-क्षेम पूछा। कुशल-क्षेमकी बातचीत कर चुकनेपर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए ब्राह्मणने भगवानसे यह कहा—

"हे गौतम! आप भी यज्ञकी प्रशंसा करते है ?"

"ब्राह्मण! न मैं सभी यज्ञोंकी प्रशंसा करता हूँ और न मैं सभी यज्ञोकी निन्दा करता हूँ। ब्राह्मण! जिन यज्ञोंमे गौओंकी हत्या होती है, बकरी-भेडोकी हत्या होती है, मुर्गे-सूअरोकी हत्या होती है तथा (अन्य) नाना प्रकारके प्राणियोकी हत्या होती है, हे ब्राह्मण! मैं इस प्रकारके हिंसक यज्ञकी प्रशंसा नही करता। यह किसलिये? ब्राह्मण! इस प्रकारके यज्ञमे न अर्हत ही आते है और न अर्हत मार्गारूढ। ब्राह्मण! जिस यज्ञमे न गौओंकी हत्या होती है, न बकरी-भेडोकी हत्या होती है, न मुर्गे-सूअरोकी हत्या होती है और न (अन्य) नाना प्रकारके प्राणियोंकी हत्या होती है, हे ब्राह्मण! मैं इस प्रकारके अहिंसक यज्ञकी कल्पना करता हूँ जो कि यह नित्य दान देना है, यह अनुकूल यज्ञ है। यह किसलिये? ब्राह्मण! इस प्रकारके अहिंसक यज्ञमें अर्हत या अर्हत-मार्गारूढ आते हैं।

अस्समेध पुरिसमेध सम्मापास वाजपेय्य निरग्गल,
महायञ्ञा महारम्भा न ते होन्ति महप्फला ॥
अजेळका च गावो च विविधा यत्थ हञ्ञरे,
न त सम्मग्गता यञ्ञ उपयन्ति महेसिनो ॥
य य यञ्ञ निरारम्भ यजन्ति अनुकूल सदा,
अजेळका च गावो च विविधा नेत्थ हञ्ञरे ॥
त च सम्मग्गता यञ्ञ उपयन्ति महेसिनो,
एत यजेथ मेधावी एसो यञ्ञो महप्फलो ॥
एत हि यजमानस्स सेय्यो होति न पापियो,
यञ्ञो च विपलो होति पसीदन्ति च देवता ॥

[अश्वमेध, पुरिसमेध, सम्मापाश, वाजपेय्य तथा निरर्गल—ये महारम्भ वाले महायज्ञ महाफलदायी नही होते। जहाँ बकरी-भेडोकी, गौओकी तथा अन्य प्राणियोकी हत्या होती है, वहाँ सम्यकमार्गगामी महर्षि जन नही जाते है। जिस अनुकूल अहिंसक यज्ञका सदा यज्ञ किया जाता है, जहाँ बकरी-भेडो, गौओ तथा अन्य नाना प्रकारके प्राणियोकी हत्या नही होती, जहाँ सम्यकमार्गगामी महर्षि-जन जाते है, मेधावी-जनको चाहिये कि इस प्रकारका यज्ञ करे, क्योकि इसी प्रकारका यज्ञ महान्

फलदायी होता है। इस प्रकारका यज्ञ करनेवालाका भला ही होता है, बुरा नही होता। यज्ञ भी बडा होता है तथा देवता प्रसन्न होते है।]

उस समय उदायी ब्राह्मण जहा भगवान् थे, वहाँ गया। पास पहुँचकर कुशल-क्षेम पूछा। कुशल-क्षेमकी बात-चीत कर चुकनेपर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए ब्राह्मणने भगवान्से कहा—

"हे गौतम! आप भी यज्ञकी प्रशसा करते है?"

"ब्राह्मण! न मै सभी यज्ञोकी प्रशसा करता हूँ और न मै सभी यज्ञोकी निन्दा करता हूँ। ब्राह्मण! जिन यज्ञोमे गौओकी हत्या होती है, बकरी-भेडोकी हत्या होती है, मुर्गे-सूअरोकी हत्या होती है तथा (अन्य) नाना प्रकारके प्राणियोकी हत्या होती है, हे ब्राह्मण! मै इस प्रकारके हिसक यज्ञकी प्रशसा नही करता। यह किसलिये? ब्राह्मण! इस प्रकारके यज्ञमे न अर्हत् ही आते है और न अर्हत् मार्गारूढ। ब्राह्मण! जिस यज्ञमे न गौओकी हत्या होती है, न बकरी-भेडोकी हत्या होती है, न मुर्गे-सूअरोकी हत्या होती है और न (अन्य) नाना प्रकारके प्राणियोकी हत्या होती है, हे ब्राह्मण! मै इस प्रकारके अहिसक-यज्ञकी कल्पना करता हूँ, जो कि यह नित्य दान देना है, यह अनुकूल यज्ञ है। यह किसलिये? ब्राह्मण! इस प्रकारके अहिसक यज्ञमें अर्हत् वा अर्हत मार्गारूढ आते है।

अभिसङ्खत निरारम्भ यञ्ञं कालेन कप्पिय,
तादिस उपसयन्ति सयता ब्रह्मचारयो॥
विवत्तच्छद्दा ये लोके वीतिवत्ता कुल गति,
यञ्ञमेत पससन्ति बुद्धा पुञ्ञस्स कोविदा॥
यञ्ञे वा यदि वा सद्धे हव्य कत्वा यथारह,
पसन्नचित्तो यजति सुखेत्ते ब्रह्मचारिसु॥
सुहुत सुयिट्ठ सुप्पत्त दक्खिणेय्येसु य कत,
यञ्ञो च विपुलो होति पसीदन्ति च देवता॥
एव यजित्वा मेधावी सद्धो मुत्तेन चेतसा,
अब्यापज्झ सुख लोक पण्डितो उपपज्जति॥

[जिस यज्ञमे पशुओकी हत्या न होती हो, ऐसा अभिसस्कृत यज्ञ उचित समयपर करना चाहिये। जो सयत हैं, जो ब्रह्मचारी है वे वैसे 'यज्ञ' मे जाते है। जिनके कपाट खुले है, जो कुल-गतिकी सीमाओंके उसपार है, जो पुण्यके जानकर 'बुद्ध' हैं वे ऐसे ही यज्ञकी प्रशसा करते है। यज्ञमें अथवा श्रद्धासे किये जाने

वाले कर्ममे यथायोग्य 'आहुति' डालने वाला सुक्षेत्र ब्रह्मचारियोमे प्रसन्नचित्त हो 'यज्ञ' करता है। दक्षिणा देने योग्यो को जो दान दिया जाता है, वह अच्छी आहुति देना है, वह अच्छा यज्ञ करना है, वह अच्छी प्राप्ति है और ऐसा 'यज्ञ' महान् यज्ञ होता है। देवता-गण प्रसन्न होते है। जो मेधावी होता है, जो श्रद्धावान् होता है, वह मुक्त चित्तसे इस प्रकार यज्ञ करके व्यापाद-रहित सुख-लोकको प्राप्त होता है।]

भिक्षुओ, समाधि-भावना चार प्रकारकी होती है। भिक्षुओ, एक समाधि-भावना ऐसी होती है जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढानेसे यही 'सुख' की अनुभूति होती है। भिक्षुओ, एक समाधि-भावना ऐसी होती है, जिसकी भावना करनेसे जिसका अभ्यास बढानेसे, ज्ञान-दर्शनका लाभ होता है। भिक्षुओ, एक समाधि-भावना ऐसी होती है जिसकी भावना करनेसे जिसका अभ्यास बढानेसे स्मृति-सप्रजन्यकी प्राप्ति होती है। भिक्षुओ, एक समाधि-भावना ऐसी होती है, जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढानेसे आस्रवोका क्षय होता है। भिक्षुओ, वह समाधि-भावना कौन-सी है जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढानेसे यही 'सुख' की प्राप्ति होती है? भिक्षुओ, यहाँ एक भिक्षु काम भोगोसे पृथक हो चतुर्थ ध्यान प्राप्त कर विहार करता है। भिक्षुओ, यह है वह समाधि-भावना जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढानेसे यही 'सुख' की प्राप्ति होती है। भिक्षुओ, वह समाधि-भावना कौन-सी है जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढानेसे ज्ञान-दर्शनका लाभ होता है? भिक्षुओ, यहाँ एक भिक्षु आलोक-सज्ञाको मनमे धारण करता है, दिवस-सज्ञाको मनमें धारण करता है, उसके लिये जैसा दिन वैसी रात होती है, जैसी रात वैसा दिन होता है। वह खुले चित्तसे, बाधा-रहित चित्तसे प्रभायुक्त चित्तकी भावना करता है। भिक्षुओ, यह है वह समाधि भावना जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढानेसे ज्ञान-दर्शनका लाभ होता है। भिक्षुओ, वह समाधि-भावना कौन-सी है जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढानेसे स्मृति-सप्रजन्यकी प्राप्ति होती है? भिक्षुओ, यहाँ एक भिक्षुकी जानकारीमे वेदनाओकी उत्पत्ति होती है, वेदनाओकी स्थिति रहती है, तथा वेदनाये अन्तर्धान होती है; जानकारीमे सज्ञाओ तथा वितर्कोकी उत्पत्ति होती है, स्थिति होती है तथा जानकारीमे ही ये अन्तर्धान होते है। भिक्षुओ, यह है वह समाधि-भावना जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढानेसे स्मृति-सप्रजन्यकी प्राप्ति होती है। भिक्षुओ, वह समाधि-भावना कौन-सी है, जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढानेसे आसवोका क्षय होता है? भिक्षुओ,

यहाँ एक भिक्षु, पाँच उपादान स्कन्धोकी उत्पत्ति तथा व्ययका विचार करता विहरता है, यह 'रूप' की उत्पत्ति है, यह 'रूप' का विनाश है, यह 'वेदना' की उत्पत्ति है, यह 'वेदना' का विनाश है, यह 'सज्ञा' की उत्पत्ति है, वह सज्ञाका विनाश है, यह सस्कारोकी उत्पत्ति है, यह सस्कारोका विनाश है, तथा यह 'विज्ञान' की उत्पत्ति है, यह 'विज्ञान' का विनाश है। भिक्षुओ, यह है वह समाधि-भावना जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढ़ानेसे आस्रवोका क्षय होता है। भिक्षुओ, समाधि-भावनाके ये चार प्रकार है। भिक्षुओ, मैंने इसी सम्बन्धमे 'पारायण पूर्ण प्रश्न' मे कहा है।

सखाय लोकस्मि परोवरानि,
यस्सिञ्जित नत्थि कुहिञ्चि लोके
सन्तो विधूमो अनिघो निरासो,
अतारि सो जातिजरति ब्रूमि॥

[लोकमें पर तथा अवरको जान लेनेके बाद ससारमें जिसका मन किसी भी विपयमे चचल नही है, मै कहता हूँ कि वह शान्त है, वह धूम्र-रहित है, वह दु ख-रहित है, वह आशाके बन्धनोसे मक्त है तथा उसने जन्म-जराके सागरको पार कर लिया है।]

भिक्षुओ, प्रश्नोको निवटानेके ये चार ढग (=व्याकरण) है। कौनसे चार? भिक्षुओ, ऐसा भी प्रश्न होता है जिसका 'हाँ' या 'नही' मे एकाश उत्तर दिया जाना चाहिए, भिक्षुओ, ऐसा भी प्रश्न होता है जिसका विभाग करके उत्तर दिया जाना चाहिए, भिक्षुओ ऐसा भी प्रश्न होता है कि जिसका प्रति-प्रश्न पूछकर उत्तर दिया जाना चाहिये तथा भिक्षुओ, ऐसा भी प्रश्न होता है कि जिसका उत्तर नही देना चाहिये। भिक्षुओ, प्रश्नोको निवटानेके ये चार ढग है।

एकस वचन एक विभज्जवचनापर,
ततिय पटिपुच्छेय्य चतुत्थ पन थापये॥
यो च नेस तत्थ तत्थ जानाति अनुधम्मत।
चतुपञ्हस्स कुसलो आहु भिक्खु तथा विध॥
दुरसदो दुप्पसहो गम्भीरो दुप्पधसयो,
अत्थो अत्थे अवत्थे च उभयस्स होति कोविदो
अनत्थ परिवज्जेति अत्थ गण्हाति पण्डितो,
अत्थाभिसमया धीरो पण्डितोति पवुच्चति॥

[कोई वचन एकांश उत्तर देने योग्य होता है, कोई दूसरा विभाग करके उत्तर देने योग्य होता है, कोई तीसरा प्रति प्रश्न पूछने योग्य होता है तथा कोई चौथा विना उत्तर दिये ही रख देने योग्य (= ठपनीय) होता है। जो भिक्षु उन प्रश्नोको, उस उस प्रकार जानता है, वैसे भिक्षुको चारो (प्रकारके) प्रश्नोको उत्तर देनेमे कुशल भिक्षु कहते हैं। वह दुर्विजय होता है, कठिनाईसे जीता जा सकता है, गम्भीर होता है (उसपर) कठिनाईसे आक्रमण किया जा सकता है, वह अर्थ तथा अनर्थ दोनो विषयोमे पण्डित होता है। जो बुद्धिमान आदमी अनर्थको छोडकर, अर्थको ग्रहण करता है, वह अर्थका जानकार धीर पुरुष पण्डित कहलाता है।]

भिक्षुओ, लोकमे चार प्रकारके आदमी हैं। कौनसे चार प्रकारके ? क्रोधको महत्व देनेवाला किन्तु सद्धर्मको महत्व न देनेवाला, म्रक्ष (= ढोंग) को महत्व देनेवाला किन्तु सद्धर्मको महत्व न देनेवाला, लाभको महत्व देनेवाला किन्तु सद्धर्मको महत्व न देनेवाला, सत्कारको महत्व देनेवाला किन्तु सद्धर्मको महत्व न देनेवाला। भिक्षुओ, लोकमे ये चार प्रकारके आदमी हैं।

भिक्षुओ, लोकमे चार प्रकारके आदमी हैं। कौनसे चार प्रकारके? सद्धर्मको महत्व देनेवाला, किन्तु क्रोधको महत्व न देनेवाला, सद्धर्मको महत्व देनेवाला, किन्तु म्रक्ष (= ढोंग) को महत्व न देनेवाला, सद्धर्मको महत्व देनेवाला, किन्तु लाभको महत्व न देनेवाला; सद्धर्मको महत्व देनेवाला किन्तु सत्कारको महत्व न देनेवाला। भिक्षुओ, लोकमे चार प्रकार के आदमी है।

कोध मक्खगरुभिक्खु, लाभसक्कार गारवा,
न ते धम्मे विरुहन्ति सम्मासम्बुद्धदेसिते।
ये च सद्धम्म गरुनो विहसु विहरन्ति च
ते वे धम्मे विरूहन्ति सम्मासम्बुद्धदेसिते ॥

जो भिक्षु क्रोध, ढोंग, लाभ तथा सत्कारको महत्व देनेवाले हैं, वे सम्यक् सम्बुद्ध द्वारा उपदेश किये गये धर्ममे वृद्धिको प्राप्त नही होते।

जो सद्धर्मको महत्व देते रहे है और देते है, वे ही सम्यक् सम्बुद्ध द्वारा उपदेश किये गये धर्ममे वृद्धिको प्राप्त होते है।

भिक्षुओ, ये चार असद्धर्म है। कौनसे चार ? क्रोधको महत्व देना, सद्धर्मको महत्व न देना, म्रक्षको महत्व देना, सद्धर्मको महत्व न देना, लाभको महत्व देना, सद्धर्मको महत्व न देना, तथा सत्कारको महत्व देना, सद्धर्मको महत्व

न देना। भिक्षुओ, ये चार सद्धर्म हैं। कौनसे चार? सद्धर्मको महत्व देना, क्रोधको महत्व न देना, सद्धर्मको महत्व देना, म्रक्षको महत्व न देना, सद्धर्मको महत्व देना, लाभको महत्व न देना तथा सद्धर्मको महत्व देना, सत्कारको महत्व न देना। भिक्षुओ, ये चार सद्धर्म हैं।

कोधमक्खगरु भिक्खु, लाभसक्कारगारवो,
सुखेत्ते पूतिवीजव सद्धम्मे न विरुहन्ति॥
ये च सद्धम्मगरुनो विहसु विहरन्ति च,
ते च धम्मे विरुहन्ति स्नेहमन्वायामिवोसध॥

[जो भिक्षु क्रोध, ढोंग, लाभ तथा सत्कारको महत्व देता है, वह उसी प्रकार वृद्धिको नही प्राप्त होता जैसे अच्छे खेतमे डाला हुआ सड़ा हुआ बीज। जो सद्धर्मको महत्व देते रहे हैं तथा रहते हैं उनकी सद्धर्ममे उसी प्रकार वृद्धि होती है जैसे नमी मिलनेसे वनस्पति की।]

एक समय भगवान श्रावस्तीमे अनाथपिण्डिकके जेतवनाराममें विहार कर रहे थे। तव रोहितस्स नामका प्रकाशमान् देवपुत्र चादनी रातमें सारेके सारे जेतवनको प्रकाशित करता हुआ जहाँ भगवान् थे वहाँ पहुँचा। पास जाकर भगवान्को अभिवादन कर एक ओर खडा हुआ। एक ओर खडे हुए रोहितस्स देवपुत्रने भगवान्से यह कहा—"भन्ते! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता है, न मरना होता है, न च्युति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, तो भन्ते! क्या गमनसे लोकके उस अन्ततक पहुँचा जा सकता है, उसे देखा जा सकता है अथवा उसे प्राप्त किया जा सकता है?

"आयुष्यमान्! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता है, न मरना होता है, न च्युति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, मैं यह नही कहता कि गमनसे लोकके उस अन्ततक पहुँचा जा सकता है, उसे देखा जा सकता है अथवा उसे प्राप्त किया जा सकता है।"

"भन्ते! यह आश्चर्य है। भन्ते! यह अद्भुत है। भन्ते! आपका यह कहना सुभाषित है कि आयुष्यमान्! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता है, न मरना होता है, न च्युति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, मैं यह नही कहता कि गमनसे लोकके उस अन्ततक पहुँचा जा सकता है, उसे देखा जा सकता है अथवा उसे प्राप्त किया जा सकता है।

"भन्ते! मैं पहले रोहितस्स नामका ऋषि था, ग्रामणी-पुत्र, ऋद्धिमान, आकाशगामी। उस समय भन्ते! मेरी ऐसी चाल थी जैसे कि दृढ धनुष-धारी

जिसे धनुषकी अच्छी शिक्षा प्राप्त हो, जिसका हाथ धनुष पर बैठा हो, जिसे धनुषका अच्छा अभ्यास हो, वह हलकेसे तीरसे विना कठिनाईके सीधी ताळ-छायाको लाँघ जाये (उसी प्रकार उतनी देरमे मैं चक्रवालका चक्कर काट कर लौट आता था अट्ठकथा०।)

"भन्ते! उस समय मेरा कदम इतना वडा था कि जैसे पूर्व समुद्रसे पश्चिम समुद्रके वीचकी दूरी।

"भन्ते! ऐसी चाल और इतने वडे कदमो वालेके मेरे मनमे इच्छा उत्पन्न हुई कि मैं चलकर लोकके अन्त तक पहुँच जाऊँ। भन्ते! मैंने खाना-पीना छोडा, पेशाव-पाखाने जाना छोडा तथा निद्रा और आलस्य छोडा और सौ वर्षका मैं, सौ वर्ष तक जीता रह कर, सौ वर्ष तक घूमते रह कर, लोकके अन्त तक विना पहुँचे, रास्तेमे ही मर गया। भन्ते! यह आश्चर्य है। भन्ते! यह अद्भुत है। भन्ते! आपका यह कहना सुभाषित है कि आयुष्मान! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता है, न मरना होता है, न च्युति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, मैं यह नही कहता कि गमनसे लोकके उस अन्त तक पहुँचा जा सकता है, उसे देखा जा सकता है अथवा उसे प्राप्त किया जा सकता है। आयुष्मान्! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता है, न मरना होता है, न च्युति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, मैं यह नही कहता कि गमनसे लोकके उस अन्त तक पहुँचा जा सकता है। और आयुष्मान्! मैं यह भी नही कहता कि विना लोकके अन्त तक पहुँचे, दुःख का नाश हो सकता है। आयुष्मान्! इसी व्याम-भरके लम्बे सज्ञा-युक्त शरीरमे ही मैं लोककी प्रज्ञप्ति करता हूँ, लोक-समुदयकी, लोक-निरोधकी तथा लोक-निरोधकी ओर ले जाने वाले मार्ग की।

गमनेन न पत्तब्वो लोकस्सन्तो कुदाचन,
न च अप्पत्त्वा लोकन्त दुक्खा अत्थि पमोचन॥
तस्मा हवे लोकविदु सुमेधो
लोकन्तगु वुसितब्रह्मचरियो,
लोकस्स अन्त समितावी ञत्वा
नासिसति लोकमिम परञ्च॥

[चलकर लोकके अन्ततक कभी नही पहुँचा जा सकता और विना लोकके अन्ततक पहुँचे, दुःखसे मुक्ति भी नही प्राप्त होती।

इसलिये जो बुद्धिमान् है, उसे लोकका जानकार होना चाहिये, लोकके अन्त तक पहुँचा हुआ होना चाहिये, श्रेष्ठ-जीवन व्यतीत किया हुआ होना चाहिये। ऐसा शान्त पुरुष लोकके अन्तको जानकर इस लोक व परलोकमे कही आसक्त नही होता।]

तब भगवान्ने उस रातके बीतने पर भिक्षुओको सम्बोधित किया—"भिक्षुओ! आज रात रोहितस्स नामका प्रकाशमान् देवपुत्र चाँदनी रातमें सारे के सारे जेतवनको प्रकाशित करता हुआ जहाँ मै था, वहाँ पहुँचा। पास आकर मुझे अभिवादन कर एक ओर खडा हुआ। अेक ओर खडे हुए रोहितस्स देवपुत्र ने मुझसे यह कहा—भन्ते! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता है, न मरना होता है, न च्युति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, तो भन्ते क्या गमनसे लोकके अन्त तक पहुँचा जा सकता है, उसे देखा जा सकता है अथवा उसे प्राप्त किया जा सकता है? भिक्षुओ, ऐसा कहने पर मैंने रोहितस्स देवपुत्रको ऐसा कहा—'आयुष्मान्! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता है, न मरना होता है, न च्युति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, मै यह नही कहता कि गमनसे उस लोकके अन्त तक पहुँचा जा सकता है, उसे देखा जा सकता है, अथवा उसे प्राप्त किया जा सकता है? ऐसा कहनेपर भिक्षुओ, रोहितस्स देवपुत्रने मुझे ऐसा कहा—भन्ते! आश्चर्य्य है। भन्ते! अद्भुत है। आप भगवान् का जो यह सुभाषित है कि आयुष्मान्! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता है, न मरना होता है, न च्युत्ति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, मै यह नही कहता कि गमनसे उस लोकके अन्त तक पहुँचा जा सकता है, उसे देखा जा सकता है अथवा उसे प्राप्त किया जा सकता है? भन्ते! मै पहले रोहितस्स नामका ऋषि था, भोजपुत्र, ऋद्धिमान्, आकाशगामी। भन्ते! उस समय मेरी इतनी तेज चाल थी, जैसे कोई शक्तिशाली, अभ्यस्त, सधे हाथवाला, होशियार धनुर्धारी एक हलकेसे तीरसे, आसानीसे, ताडकी छायाको सीधे लाँघ जाये (?) तथा इस प्रकारकी छलाग थी जैसे पूर्व-समुद्रसे पश्चिम समुद्र। भन्ते! उस समय इस प्रकारकी चाल और इस प्रकारकी छलागसे युक्त मेरे मनमे यह इच्छा उत्पन्न हुई कि मै गमनसे लोक (= विश्व) के अन्त तक पहुँचूगा। भन्ते! मै विना खाये-पिये, विना मलमूत्र त्याग किये, विना सोये वा विश्राम किये सौ वर्ष की आयु प्राप्त कर सौ वर्ष तक चलते रहकर भी विना लोकका अन्त प्राप्त किये वीचमे ही मर गया। भन्ते! आश्चर्य है। भन्ते! अद्भुत है। आप भगवान्का जो यह सुभाषित है कि आयुष्मान्! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता

है, न मरना होता है, न च्युति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, मै यह नही कहता कि गमनसे उस लोकके अन्त तक पहुँचा जा सकता है, उसे देखा जा सकता है अथवा उसे प्राप्त किया जा सकता है।

"ऐसा कहने पर भिक्षुओ, मैंने रोहितस्स देवपुत्रको यह कहा कि आयुष्मान्! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता है, न मरना होता है, न च्युति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, मै यह नही कहता कि गमन से उस लोकका अन्त होता है, लेकिन साथ ही आयुष्मान्! मैं यह भी नही कहता कि बिना लोकका अन्त किये दुखका अन्त किया जा सकता है। आयुष्मान्! मैं इसी छ फुटके शरीरमें जीते जी 'लोक' की बात कहता हूँ, लोक-समुदयकी बात कहता हूँ, लोक-निरोधकी बात कहता हूँ तथा लोक-निरोधकी ओर ले जाने वाले मार्गकी बात कहता हूँ।

गमनेन न पत्तब्बो लोकस्सन्तो कुदाचन,
न च अप्पत्वा लोकन्त दुक्खा अत्थि पमोचन॥
तस्मा हवे लोकविदु सुमेधो,
लोकन्तगु वुसितब्रह्मचरियो।
लोकस्स अन्त समितावी ञत्वा
नासिसति लोकमिम परञ्च॥

[अर्थ ऊपर आ ही गया है—देखो पृ० ४९–५० . . .]

भिक्षुओ, ये चार एक दूसरेसे परस्पर अत्यन्त दूर है। कौनसे चार? भिक्षुओ, एक तो आकाश और पृथ्वी एक दूसरेसे परस्पर अत्यन्त दूर है, भिक्षुओ, दूसरे समुद्र का एक किनारा दूसरे किनारे से परस्पर अत्यन्त दूर है, भिक्षुओ, तीसरे जहाँसे सूर्य (=वैरोचन) उदय होता है और जहाँ अस्त होता है ये दोनो परस्पर एक दूसरेसे अत्यन्त दूर है, भिक्षुओ, चौथे सत् पुरुषोका धर्म और असत् पुरुषो का धर्म परस्पर एक दूसरेसे अत्यन्त दूर है। भिक्षुओ, ये चार एक दूसरेसे परस्पर अत्यन्त दूर है।

नभं च दूरे पठवी च दूरे पार समुद्दस्स तदाहु दूरे,
यतो च वेरोचनो अब्भुदेति पभङ्करो यत्थ च अत्थमेति॥
ततो हवे दूरतर वदन्ति सतञ्च धम्म असतञ्च धम्म,
अब्यायिको होति सत समागमो यावम्पि तिट्ठेय्य तथेव होति,
खिप्प हि वेति असत समागमो तस्मा सत धम्मो असब्भि आरका

[आकाश भी दूर है, पृथ्वी भी दूर है तथा समुद्रका उस पार भी (इस पारसे) बहुत दूर है। इसी प्रकार जहाँ सूर्य उदय होता है और जहाँ अस्त होता है—ये दोनो भी परस्पर बहुत दूर हैं। इन सब से अधिक एक दूसरे-से-दूर सत्पुरुषोके धर्म तथा असत्पुरुषोंके धर्मको कहा गया है। सत्पुरुषोका सम्बन्ध स्थिर होता है, जब तक भी बना रहता है एक रस ही रहता है। असत्पुरुषोका सम्बन्ध शीघ्र ही बिगड जाता है। इसलिये सत्पुरुषोका धर्म असत्पुरुषोंके धर्मसे बहुत दूर है।]

एक समय भगवान श्रावस्तीमे जेतवनमे अनाथपिण्डिकके आराममे विहार करते थे। उस समय पचाली-पुत्र आयुष्मान् विशाख उपस्थान-शालामें भिक्षुओको धार्मिक, विनम्र, स्पष्ट, निर्दोष, अर्थका बोध करानेमे समर्थ, गम्भीर, ऊँचे भावोवाली वाणीसे शिक्षित करता है, प्रेरित करता है, उत्साहित करता है तथा हर्षित करता है। तब भगवान् सायकालको योगाभ्याससे उठ, जहाँ उपस्थान-शाला थी वहाँ पहुँचे। जाकर बिछे आसनपर बैठे। बैठकर भगवानने भिक्षुओको सम्बोधित किया—"भिक्षुओ, उपस्थान-शालामे कौन भिक्षु भिक्षुओको धार्मिक, विनम्र, स्पष्ट, निर्दोष, अर्थका बोध करानेमे समर्थ, गम्भीर ऊँचे भावोवाली वाणीसे शिक्षित करता है, प्रेरित करता है, उत्साहित करता है तथा हर्षित करता है? "भन्ते! आयुष्मान विशाख उपस्थान-शालामे भिक्षुओको धार्मिक, विनम्र, स्पष्ट, निर्दोष, अर्थका बोध करानेमे समर्थ, गम्भीर, ऊँचे भावोवाली वाणीसे शिक्षित करता है, प्रेरित करता है, उत्साहित करता है तथा हर्षित करता है।" तब भगवान्ने पचाली-पुत्र आयुष्मान् विशाखको यह कहा—"विशाख! बहुत अच्छा, बहुत अच्छा विशाख बहुत अच्छा, तू भिक्षुओको धार्मिक विनम्र, स्पष्ट, निर्दोष, अर्थका बोध करानेमे समर्थ, गम्भीर, ऊँचे भावोवाली वाणीसे शिक्षित करता है, प्रेरित करता है, उत्साहित करता है तथा हर्षित करता है।

नामासमान जानन्ति मिस्स बालेहि पण्डित
भासमानञ्च जानन्ति देसेन्त अमत पद॥
भासये जोतये धम्म पग्गन्हे इसिन धज
सुभासितधजा इसयो धम्मो हि इसिन धजो॥

[जब तक आदमी बोलता नही, तब तक मूर्खोंमें मिले पण्डितकी पृथक पहचान नही होती। जब कोई बोलता है, अमृत वाणीका उपदेश करता है, तभी वह पहचाना जाता है। धर्मका भाषण करे। धर्मको प्रकाशित करे। ऋषियोकी

ध्वजाको धारण करे। सुभाषित ही ऋषियोकी ध्वजा है, धर्म ही ऋषियोकी ध्वजा है।]

भिक्षुओ, ये चार सञ्ज्ञा-विपर्यास है, चित्त-विपर्यास है, दृष्टि-विपर्यास है। कौनसे चार? भिक्षुओ, अनित्यको नित्य मानना सञ्ज्ञा-विपर्यास है, चित्त-विपर्यास है दृष्टि-विपर्यास है। भिक्षुओ, दुःख को सुख मानना सञ्ज्ञा-विपर्यास है, चित्त-विपर्यास है, दृष्टि-विपर्यास है। भिक्षुओ, अनात्म को आत्म मानना सञ्ज्ञा-विपर्यास, है, चित्त-विपर्यास है, दृष्टि-विपर्यास है। भिक्षुओ, अशुभ (=असुन्दर) को शुभ (=सुन्दर) मानना सञ्ज्ञा-विपर्यास है, चित्त-विपर्यास है, दृष्टि विपर्यास है। भिक्षुओ ये चार सञ्ज्ञा-विपर्यास है, चित्त-विपर्यास है, दृष्टि-विपर्यास है।

भिक्षुओ, ये चार न सञ्ज्ञा-विपर्यास है, न चित्त-विपर्यास है, न दृष्टि-विपर्यास है। कौन से चार? भिक्षुओ, अनित्य को अनित्य मानना न सञ्ज्ञा-विपर्यास है, न चित्त-विपर्यास है, न दृष्टि-विपर्यास है। भिक्षुओ, दुःखको दुःख मानना न सञ्ज्ञा-विपर्यास है, न चित्त-विपर्यास है, न दृष्टि-विपर्यास है। भिक्षुओ, अनात्मको अनात्म मानना न सञ्ज्ञा-विपर्यास है, न चित्ता-विपर्यास है, न दृष्टि-विपर्यास है। भिक्षुओ, अशुभ (=असुन्दर) को अशुभ मानना न सञ्ज्ञा-विपर्यास है, न चित्त-विपर्यास है, न दृष्टि-विपर्यास है। भिक्षुओ, ये चार न सञ्ज्ञा-विपर्यास है, न चित्त विपर्यास है और न दृष्टि-विपर्यास है।

अनिच्चे निच्चसञ्ञिनो दुक्खे च सुख सञ्ञिनो,
अनत्तनि च अत्ताति असुभे सुभसञ्ञिनो
मिच्छादिट्ठि गता सत्ता खित्तचित्ता विसञ्ञिनो,
ते योगयुत्ता मारस्स अयोगक्खेमिनो जना।
सत्ता गच्छन्ति संसारं जातिमरणगामिनो
यदा च बुद्धा लोकस्मिं उप्पज्जन्ति पभङ्करा।
तेसं धम्मं पकासेन्ति दुक्खूपसमगामिनं,
तेसं सुत्वान सप्पञ्ञा सं चित्तं पच्चलत्थु ते।
अनिच्चं अनिच्चतो दुक्खं दुक्खमद्दक्खु दुक्खतो,
अनत्तनि अनत्ताति असुभं असुभतद्दसुं,
सम्मादिट्ठिसमादाना सब्बं दुक्खं उपच्चगुंति॥

[अनित्यको नित्य मानने वाले, दुःखको सुख समझने वाले, अनात्मको आत्म समझने वाले, अशुभ (=असुन्दर) को शुभ समझने वाले, जो मिथ्या-दृष्टिवाले

विक्षिप्त-चित्त सज्ञा-विहीन जन होते है, वे मारके वशी भूत होते है और निर्वाणसे विमुख होते है। ऐसे प्राणी जन्म-मरणको प्राप्त हो, ससारमें भटकते रहते है। लेकिन जब प्रभकर बुद्ध लोकमें उत्पन्न होते है और दु खका उपशमन करने वाले अपने धर्मको प्रकाशित करते है तो प्रज्ञावान् उस धर्मको सुनकर अपने चित्त (के वशीभाव) को प्राप्त होते है। वे अनित्यको अनित्य मानते हैं, दु खको दु ख करके देखते है, अनात्मको अनात्म करके देखते है तथा अशुभ (= असुन्दर)को असुन्दर करके देखते है। ऐसे सम्यक् दृष्टि जन समस्त दु खको लाँघ जाते है।]

भिक्षुओ, ये चार चन्द्रमा तथा सूर्यके मैल है, जिनसे मलिन होनेके कारण चन्द्रमा तथा सूर्य न तपते है, न प्रकाशित होते है और न चमकते है। भिक्षुओ, बादल चन्द्रमा तथा सूर्यका मैल है, जिससे मलिन होनेके कारण चन्द्रमा तथा सूर्य न तपते हैं, न प्रकाशित होते है और न चमकते हैं। भिक्षुओ, धुंध चन्द्रमा तथा सूर्यका मैल है जिससे मलिन होनेके कारण चन्द्रमा तथा सूर्य न तपते है, न प्रकाशित होते हैं और न चमकते है। भिक्षुओ, धूम्रराज चन्द्रमा तथा सूर्यका मैल है, जिससे मलिन होनेके कारण चन्द्रमा तथा सूर्य न तपते हैं, न प्रकाशित होते है, और न चमकते हैं। भिक्षुओ असुरेन्द्र राहु चन्द्रमा तथा सूर्य का मैल है, जिससे मलिन होनेके कारण चन्द्रमा तथा सूर्य न तपते हैं, न प्रकाशित होते हैं और न चमकते हैं। भिक्षुओ, ये चार चन्द्रमा तथा सूर्य के मैल है जिससे मलिन होनेके कारण चन्द्रमा तथा सूर्य न तपते है, न प्रकाशित होते है और न चमकते हैं।

इसी प्रकार भिक्षुओ, श्रमण-ब्राह्मनोंके भी चार मैल है जिनसे मलिन होनेके कारण कुछ श्रमण-ब्राह्मण न तपते है, न प्रकाशित होते हैं और न चमकते है। कौन से चार? भिक्षुओ, कुछ श्रमण-ब्राह्मण ऐसे है जो सुरा पान करते है, मेरयका सेवन करते हैं, सुरा-मेरयके पानसे विरत नही रहते है। भिक्षुओ, यह श्रमण-ब्राह्मणोका प्रथम मैल है जिससे मलिन होने के कारण कुछ श्रमण-ब्राह्मण न तपते हैं, न प्रकाशित होते है और न चमकते हैं। भिक्षुओ, कुछ श्रमण-ब्राह्मण मैथुन-धर्मका सेवन करते हैं, मैथुन-धर्मसे विरत नही होते है। भिक्षुओ, यह श्रमण-ब्राह्मणोका दूसरा मैल है जिससे मलिन होनेके कारण कुछ श्रमण-ब्राह्मण न तपते हैं, न प्रकाशित होते है और न चमकते है। भिक्षुओ, कुछ श्रमण-ब्राह्मण चाँदी-सोना स्वीकार करते हैं, चान्दी-सोना ग्रहण करने से विरत नही होते है। भिक्षुओ, यह श्रमण-ब्राह्मणोका तीसरा मैल है, जिससे मलिन होनेके कारण कुछ श्रमण-ब्राह्मण न तपते है, न प्रकाशित होते है और न चमकते है। भिक्षुओ, कुछ श्रमण--

ब्राह्मण मिथ्या जीविका से जीवन यापन करते है, मिथ्या-जीविका से विरत नही होते है। भिक्षुओ, यह श्रमण-ब्राह्मणोका चौथा मैल है, जिससे मलिन होनेके कारण कुछ श्रमण-ब्राह्मण न तपते है, न प्रकाशित होते है और न चमकते है। भिक्षुओ, श्रमण-ब्राह्मणोके ये चार मैल है, जिनसे मलिन होनेके कारण कुछ श्रमण-ब्राह्मण न तपते है, न प्रकाशित होते है, और न चमकते है

राग दोस परिक्किट्ठा एके समणब्राह्मणा
अविज्जानिवुता पोसा पियरूपाभिनन्दिनो।
सुर पिवन्ति मेरय पटिसेवन्ति मेथुन,
रजत जातरूपञ्च सादियन्ति अविद्दसु।
मिच्छाजीवेन जीवन्ति एके समण ब्राह्मणा,
एते उपक्किलेसा वुत्ता बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
येहि उपक्किलिट्ठा एके समणब्राह्मणा
न तपन्ति न भासन्ति असुद्धा सरजामगा
अन्धकारेन ओनद्धा तण्हा दासाय नेत्तिका
वड्ढेन्ति कटसिं घोर आदियन्ति पुनब्भवति॥

[कुछ श्रमण-ब्राह्मण राग-द्वेपसे मलिन होनेके कारण, अविद्यासे अभिभूत होनेके कारण, प्रिय रूप वस्तुओका अभिनन्दन करने वाले होनेके कारण सुरा-मेरयका पान करते है, मैथुन-धर्मका सेवन करते है, मूर्ख जन चाँदी-सोना ग्रहण करते है तथा मिथ्या-जीविकासे जीवन यापन करते है। आदित्य-बन्धु बुद्धने ये चारो श्रमण-ब्राह्मणोके मैल कहे है। इन्ही मैलोसे मलिन होनेके कारण कुछ श्रमण-ब्राह्मण न तपते है, न प्रकाशित होते है, वे अस्थिर होते है, धूमिल होते है। वे अन्धकारसे घिरे होते है, तृष्णाके जुएमे जुते रहते है, वे घोर जन्म (= मरण) के बढाने वाले होते है, बार बार पैदा होने वाले मरने वाले। "

भिक्षुओ, ये चार पुण्य-प्राप्तियाँ है, कुशल प्राप्तियाँ है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमें जन्मका कारण, है इष्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिये और सुखके लिये है। कौन-सी चार बाते? भिक्षुओ, भिक्षु जिस (दायक) के चीवरका परिभोग करते हुए असीम चित्त-समाधिको प्राप्त हो विहार करता है उस (दायक) के लिये यह असीम पुण्य-प्राप्ति है, कुशल-प्राप्ति है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, सुख विपाक-दायिका है, स्वर्गमे जन्मका कारण है, इष्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिये और सुखके लिये है।

भिक्षुओ, भिक्षु जिस (दायक) के दिये हुए भोजन (पिण्डापात) का परिभोग करते हुए असीम चित्त समाधिको प्राप्त हो विहार करता है, उस (दायक) के लिये यह असीम पुण्य प्राप्ति है, कुशल-प्राप्ति है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, सुख-विपाक दायिका है, स्वर्गमे जन्मका कारण है, इष्ट है, सुन्दर है मनोनुकूल है, हितके लिये और सुख के लिये है। भिक्षुओ, भिक्षु जिस (दायक) के दिये हुए शयनासनका परिभोग करते हुए असीम चित्त-समाधि को प्राप्त हो विहार करता है, उस दायकके लिये यह असीम पुण्य-प्राप्ति है, कुशल प्राप्ति है, सुख दिलाने वाली है स्वर्गीय है, सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमे जन्मका कारण है, इष्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हित-के लिये और सुखके लिये है। भिक्षुओ, भिक्षु जिस (दायक) के दिये हुए रोगी-के आहार दवाई आदि (= ग्लान-प्रत्यय भैषज्य परिष्कार) का परिभोग करते हुए असीम चित्त-समाधिको प्राप्त हो विहार करता है, उस दायकके लिये यह असीम पुण्य-प्राप्ति है, कुशल-प्राप्ति है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमे जन्मका कारण है, इष्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिये और सुख-के लिये है। भिक्षुओ, ये चार पुण्य प्राप्तियाँ है, कुशल-प्राप्तियाँ है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमे जन्मका कारण है, इष्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिअे और सुखके लिये है।

भिक्षुओ, जो आर्य-श्रावक इन चार कुशल-प्राप्तियोंसे युक्त है उसके पुण्यका इन चार पुण्य प्राप्तियोंसे मापना आसान नही है कि इतनी पुण्य-प्राप्ति है, कुशल-प्राप्ति है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमें जन्मका कारण है, इष्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिये और सुखके लिये है। यही कहा जायेगा कि यह गणनातीत है, सीमातीत है, महा पुण्य स्कन्ध है। भिक्षुओ, जैसे महासमुद्रके पानीका मापना आसान नही कि इतने आळहक है, इतने सौ आळहक है, इतने हजार आळहक है अथवा इतने लाख आळहक है। यही कहा जायगा कि जल मापसे परे है, सीमासे परे है, महा जल-स्कन्ध है। इसी प्रकार भिक्षुओ, जो आर्य-श्रावक इन चार पुण्य-प्राप्तियोंसे, इन चार कुशल-प्राप्तियो-से युक्त है, उसके पुण्यका मापना आसान नही है कि इतनी पुण्य प्राप्ति है, कुशल प्राप्ति है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमे जन्म-का कारण है, इष्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिये और सुखके लिये है। यही कहा जायेगा कि यह गणनातीत है, सीमातीत है, महापुण्य स्कन्ध है।

महोदधिं अपरिमित महासर
वहुभेरव रतनगणानमालय,
नज्जो यथा नरगणसघसेविता
पुथु सवन्ति उपयन्ति सागर ॥
एव नर अन्नदपानवत्थद
सेय्यानि सज्जत्थरणस्स दायक,
पुञ्ञस्स धारा उपयन्ति पण्डित
नज्जो यथा वारिवहाव सागर ॥

[जिस प्रकार आदमियोके समूह द्वारा सेवित सभी नदियाँ असीम जल-राशि वाले, नाना भय-भैरव युक्त, रत्नो के आगार सागर को प्राप्त होती है, इसी प्रकार जो दाता अन्नपान, वस्त्र (= चीवर) तथा शयनासनका दायक है उस पण्डित को पुण्य रूपी नदियाँ उसी प्रकार प्राप्त होती है, जैसे जल की नदियाँ समुद्र को ।]

भिक्षुओ, ये चार पुण्य-प्राप्तियाँ है, कुशल-प्राप्तियाँ है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, इप्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिये और सुखके लिये है। सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमे जन्मका कारण है। कौन-सी चार वातें ? भिक्षुओ एक आर्य-श्रावक वुद्धके प्रति स्थिर श्रद्धासे युक्त होता है—वे भगवान् अरहत है, सम्यक् सम्वुद्ध है, विद्या तथा आचरणसे युक्त है, सुगत है, लोकके जानकार है, अनुपम है, देवताओ तथा मनुष्योके शास्ता है, वुद्ध भगवान है। भिक्षुओ, यह पहली पुण्य-प्राप्ति है, कुशल-प्राप्ति है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमे जन्म का कारण है, इप्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिये और सुखके लिये है। फिर भिक्षुओ, आर्य श्रावक धर्मके प्रति अचल श्रद्धावान होता है—भगवान् द्वारा धर्म सु-आख्यात है, सादृष्टिक है, अकालिक है, उसके वारेमे कहा जा सकता है कि आओ और स्वय परीक्षा कर लो, (निर्वाण की ओर) ले जाने वाला है तथा प्रत्येक विज्ञ आदमी द्वारा स्वय साक्षातकार किया जा सकता है। भिक्षुओ, यह दूसरी पुण्य-प्राप्ति है, कुशल-प्राप्ति है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमे जन्मका कारण है, इप्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिये और सुखके लिये है। फिर भिक्षुओ, आर्य-श्रावक सघके प्रति अचल श्रद्धावान् होता है, भगवानका श्रावक सघ सुप्रतिपन्न है, भगवानका श्रावक-सघ ऋजु-प्रतिपन्न है, भगवानका श्रावक-सघ ज्ञान-मार्गपर प्रतिपन्न है, भगवान्का श्रावक-सघ समीचीन मार्ग पर प्रतिपन्न है, ये जो चार पुरुषोके जोडे है, ये जो आठ आर्य पुद्गल है—यही भगवान्का

श्रावक सघ है, आदर करने योग्य है, आतिथ्य करने योग्य है, दक्षिणाके योग्य है, हाथ जोडने योग्य है, लोगोंके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र है। भिक्षुओ, यह तीसरी पुण्य-प्राप्ति है, कुशल-प्राप्ति है, सुख दिलानेवाली है, स्वर्गीय है, सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमे जन्मका कारण है, इष्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिये और सुखके लिये है। फिर भिक्षुओ, आर्य-श्रावक मनोरम आर्यशीलसे युक्त होता है, अखण्डित शीलसे, छिद्रविरहित शीलसे, बे-दाग शीलसे, अकलंकित शीलसे, परिशुद्ध शीलसे, विज्ञजनो द्वारा प्रशसित शीलसे, निर्मल शीलसे तथा समाधि-सहायक शीलसे। भिक्षुओ, यह चौथी पुण्य-प्राप्ति है, कुशल-प्राप्ति है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमे जन्मका कारण है, इष्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिये और सुखके लिये है।

यस्स सद्धा तथागते अचला सुप्पतिट्ठिता
सीलञ्च यस्स कल्याण अरियकन्त पससित।
सघे पसादो यस्सत्थि उजुभूतञ्च दस्सन,
अदळिद्दो ति त आहु अमोघ तस्स जीवित ॥
तस्मा सद्धञ्च सीलञ्च पसाद धम्मदस्सन,
अनुयुञ्जेथ मेधावि सर बुद्धानसासन ॥

[जिसकी तथागतके प्रति अचल श्रद्धा सुप्रतिष्ठित है, जिसका मनोरम आर्यशील प्रशसनीय है, जो सघके प्रति श्रद्धावान् है, जिसे सम्यक्-दृष्टि प्राप्त है, वह दरिद्र नही है, उसका जीवन सुफल है। इसलिये मेधावी पुरुपको चाहिये कि बुद्धानुशासनका ध्यान कर श्रद्धावान् बने, शीलवान् बने, प्रसाद (प्रसन्नता) युक्त बने तथा धर्म-दर्शी बने।]

एक समय भगवान् मधुरा और वेरजाके बीच चले जा रहे थे। बहुतसे गृहपति तथा बहुत-सी गृहपतिनियाँ भी मधुरा और वेरजाके बीच चली जा रही थी। तब भगवान् मार्गसे हटकर एक वृक्षके नीचे बैठ गये। उन गृहपतियो तथा गृहपतिनियोने भगवान्को एक ओर बैठे देखा। देखकर वे जिधर भगवान् थे उधर पहुँच एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठे उन गृहपतियो तथा गृहपतनियोको भगवान्ने इस प्रकार कहा—'हे गृहपतियो! चार प्रकारके सहवास होते हैं। कौनसे चार प्रकारके? लाश लाशके साथ रहती है। लाश देवीके साथ रहती है। देवता लाशके साथ रहता है। देवता देवीके साथ रहता है। हे गृहपतियो! लाश लाशके साथ कैसे रहती है? गृहपतियो! एक स्वामी होता है प्राणीहिंसा करने वाला, चोरी

करने वाला, व्यभिचार करने वाला, झूठ बोलने वाला, प्रमादके कारण सुरा-मेरय आदिका पान करने वाला, दुःशील, पापी, मात्सर्य्य-मैल युक्त चित्तसे घरमें रहता है, श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा भला कहने वाला; उसकी भार्य्या भी होती है प्राणी-हिंसा करने वाली, चोरी करने वाली, व्यभिचार करने वाली, झूठ बोलने वाली, प्रमादके कारण सुरा-मेरय आदिका पान करने वाली, दुःशील, पापिन, मात्सर्य्य-मैल-युक्त चित्तसे घरमें रहती है, श्रमण-ब्राह्मणोंको भला-बुरा कहने वाली। गृहपतियो! इस प्रकार लाश लाशके साथ रहती है। भिक्षुओ, लाश देवीके साथ कैसे रहती है? हे गृहपतियो! एक स्वामी प्राणी हिंसा करने वाला होता है प्रमादके कारण सुरा मेरय आदिका पान करने वाला, दुश्शील, पापी, मात्सर्य-मैल-युक्त चित्तसे घरमें रहता है, श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा-भला कहने वाला, उसकी भार्य्या होती है प्राणीहिंसा न करने वाली, चोरी न करने वाली, व्यभिचार न करने वाली, झूठ न बोलने वाली, प्रमादके कारण सुरा-मेरय आदिका पान न करने वाली, शीलवान्, सदाचारिणी, मात्सर्य-मैलसे रहित चित्तसे घर पर रहने वाली तथा श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा-भला न कहने वाली। इस प्रकार गृहपतियो! लाश देवीके साथ रहती है। गृहपतियो! देवता लाशके साथ कैसे रहता है? गृहपतियो! एक स्वामी प्राणीहिंसा न करने वाला होता है, चोरी न करने वाला, व्यभिचार न करने वाला, झूठ न बोलने वाला, प्रमादके कारण सुरामेरय आदिका पान न करने वाला, शीलवान्, सदाचारी, मात्सर्य्य-मैलसे रहित चित्तसे घरपर रहने वाला तथा श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा-भला न कहने वाला, और उसकी भार्य्या भी होती है प्राणीहिंसा करने वाली, व्यभिचार करने वाली, झूठ बोलने वाली, प्रमादके कारण सुरामेरय आदिका पान करने वाली, दुश्शील, पापिन, मात्सर्य्य-मैल-युक्त चित्तसे घरपर रहती है, श्रमण-ब्राह्मणोंको भला-बुरा कहने वाली। इस प्रकार गृहपतियो! देवता लाशके साथ रहता है। भिक्षुओ, देवता देवीके साथ कैसे रहता है? गृहपतियो, एक स्वामी प्राणीहिंसा न करने वाला होता है प्रमादके कारण, सुरामेरय आदिका पान न करने वाली, शीलवती, सदाचारिणी, मात्सर्य्य-मैलसे रहित चित्तसे घरपर रहने वाली तथा श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा भला न कहने वाली। इस प्रकार गृहपतियो!! देवता देवीके साथ वास करता है। हे गृहपतियो! ये चार सहवास है।

उभो च होन्ति दुस्सीला कदरिया परिभासका,
ते होन्ति जानिपतयो इवासवासमागता॥

सामिको होति दुस्सीलो कदरियो परिभासको
भरिया सीलवती होति वदञ्ञु वीतमच्छरा,
सापि देवी सववसति छवेन पतिना सह ॥

[(जब) दोनो दुश्शील होते है, कजूस होते है तथा श्रमण-ब्राह्मणोको बुरा-भला कहनेवाले होते है, तो वे दोनो पति-पत्नी लाश लाशके साथ रहने वाले होते हैं। (जब) स्वामी दुश्शील होता है, कजूस होता है, (श्रमण-ब्राह्मणोको) बुरा-भला कहने वाला होता है और उसकी भार्य्या सदाचारिणी, उदार तथा दानशीला होती है, तो वह देवी पति रूपी लाशके साथ रहती है।]

सामिको सीलवा होति वदञ्ञु वीतमच्छरो,
भरिया होति दुस्सीला कदरिया परिभासिका,
सापि छवा सववसति देवेन पतिना सह ॥

[(जब) स्वामी शीलवान् होता है, उदार होता है तथा दानी होता है और उसकी भार्या होती है दुराचारिणी, कजूस तथा श्रमण-ब्राह्मणोको बुरा-भला कहने वाली तो वह स्वय लाश रूप होकर देवता पतिके साथ रहती है।]

उभो सद्धा वदञ्ञू च सञ्ञता धम्मजीविनो,
ते होन्ति जानिपतयो अञ्ञमञ्ञ पियवदा
अत्था सम्पचुरा होन्ति फासत्य उपजायति,
अमित्ता दुम्मना होन्ति उभिन्न समसीलिन
इध धम्म चरित्वान समशीलब्बता उभो,
नन्दिनो देवलोकस्मि मोदन्ति कामकामिनो ॥

[(जब) दोनो श्रद्धावान् होते है, उदार होते है, सयत होते है, धर्मानुसार जीवन व्यतीत करने वाले होते है, तो वे पति-पत्नी परस्पर प्रिय बोलने वाले होते है, उन्हे प्रचुर अर्थ की प्राप्ति होती है, उन्हे आसानीसे अर्थकी प्राप्ति होती है। उन दोनो सदाचारियोके शत्रु दु खी होते है। इस लोकमें धर्मका पालन करके वे दोनो समान-शीली तथा समानव्रती देव लोकमे आनन्दित रहते है। उनकी सभी कामनाओ-की पूर्ति होती है।]

भिक्षुओ, चार प्रकारके सहवास होते हैं। कौनसे चार प्रकारके ? लाश लाशके साथ रहती है। लाश देवीके साथ रहती है। देवता लाशके साथ रहता है। देवता देवीके साथ रहता है। भिक्षुओ, लाश लाशके साथ कैसे रहती है ? भिक्षुओ, एक स्वामी होता है प्राणीहिंसा करने वाला चोरी करने वाला, व्यभिचारी,

झूठ बोलने वाला, चुगली करने वाला, कठोर बोलने वाला, बेकार बोलने वाला, लोभी द्वेषी, मिथ्या-दृष्टि, दुश्शील, पापी, मात्सर्य-मैलसे युक्त होकर घरपर रहता है, श्रमण-ब्राह्मणोको बुरा-भला कहने वाला, उसकी भार्या भी होती है प्राणीहिंसा करने वाली, चोरी करने वाली, व्यभिचारिणी, झूठ बोलने वाली, चुगली करने वाली, कठोर बोलने वाली, बेकार बोलने वाली, लोभी, द्वेषी, मिथ्या-दृष्टि, दुश्शीला, पापिन, मात्सर्य-मैलसे युक्त होकर सदा घरपर रहती है, श्रमण-ब्राह्मणोको बुरा-भला कहने वाली। भिक्षुओ, इस प्रकार लाश लाशके साथ रहती है।

भिक्षुओ, लाश देवीके साथ कैसे रहती है? भिक्षुओ, एक स्वामी होता है प्राणीहिंसा करने वाला . मिथ्या-दृष्टि, दुश्शील, पापी, मात्सर्य-मैलसे युक्त होकर घरपर रहता है, श्रमण-ब्राह्मणोको बुरा-भला कहने वाला। किन्तु उसकी भार्या होती है प्राणीहिंसा न करने वाली, चोरी न करने वाली, अव्यभिचारिणी, झूठ न बोलने वाली, चुगली न करने वाली, कठोर न बोलने वाली, बेकार न बोलने वाली, निर्लोभी, अद्वेषी, सम्यक्-दृष्टि वाली, शीलवान, सदाचारिणी, मात्सर्य-मैलसे रहित होकर सदा घरपर रहने वाली, श्रमण-ब्राह्मणोको बुरा-भला न कहने वाली। भिक्षुओ, इस प्रकार लाश देवीके साथ रहती है।

भिक्षुओ, देवता लाशके साथ कैसे रहता है? भिक्षुओ, एक स्वामी होता है प्राणीहिंसा न करने वाला, चोरी न करने वाला, अव्यभिचारी, झूठ न बोलने वाला, चुगली न करने वाला, कठोर न बोलने वाला, बेकार न बोलने वाला, निर्लोभी, अद्वेषी, सम्यक् दृष्टि वाला, शीलवान्, सदाचारी, मात्सर्य-मैलसे रहित होकर घरपर रहता है, श्रमण-ब्राह्मणोको बुरा-भला न कहने वाला। किन्तु उसकी भार्या होती है प्राणीहिंसा करने वाली . मिथ्या-दृष्टि, दुश्शीला, पापिन मात्सर्य-मैलसे युक्त होकर सदा घरपर रहती है, श्रमण-ब्राह्मणोको बुरा-भला कहने वाली। भिक्षुओ, इस प्रकार देवता लाशके साथ रहता है।

भिक्षुओ, देवता देवीके साथ कैसे रहता है? भिक्षुओ, एक स्वामी होता है प्राणीहिंसा न करने वाला सम्यक् दृष्टि वाला, शीलवान्, सदाचारी, मात्सर्य-मैलसे रहित होकर घरपर रहता है, श्रमण-ब्राह्मणोको बुरा-भला न कहने वाला, उसकी भार्या भी होती है प्राणीहिंसा न करने वाली . सम्यक्-दृष्टिवाली, शीलवान्, सदाचारिणी, मात्सर्य-मैलसे रहित होकर सदा घरपर रहने वाली, श्रमण-ब्राह्मणोको बुरा भला न कहने वाली। भिक्षुओ, इस प्रकार देवता देवीके साथ रहता है। भिक्षुओ, ये चार प्रकारके सहवास होते है।

उभो च होन्ति दुस्सीला कदरिया परिभासका,
ते होन्ति जानिपतयो छवा सवासमागता ॥

सामिको होति दुस्सीलो कदरियो परिभासको,
भरिया सीलवती होति वदञ्ञू वीतमच्छरा,
सापि देवी सवसति छवेन पतिना सह ॥

सामिको सीलवा होति वदञ्ञू वीतमच्छरो,
भरिया होति दुस्सीला कदरिया परिभासका,
सापि छवा मवसति देवेन पतिना सह ॥

उभो सद्धा वदञ्ञू च सञ्ञता धम्मजीविनो,
ते होन्ति जानिपतयो अञ्ञमञ्ञ पियवदा।

अत्था सम्पचुरा होन्ति, फासत्थ उपजायति,
अमित्ता दुम्मना होन्ति उभिन्न समसीलिन।

इध धम्म चरित्वान समसीलव्वता उभो,
नन्दिनो देवलोकस्मि मोदन्ति कामकामिनो ॥

[अर्थ ऊपर आ ही गया है।]

एक समय भगवान् भग्ग (जनपद) के सुसुमार गिरिके भेसकलावन नामक मृगदायमे विहार करते थे। तव भगवान् पूर्वान्हिके समय (चीवर) पहन पात्र-चीवर ले जहाँ नकुलपिता गृहस्थका घर था वहाँ पधारे। पधारकर बिछे आसनपर वैठे। तव नकुलपिता गृहपति और नकुलमाता गृह-पत्निने जहाँ भगवान् थे वहाँ पहुँच, भगवान्का अभिवादन किया और एक ओर वैठे।

एक ओर वैठे हुए नकुलपिता गृहपतिने भगवान्को यह कहा—"भन्ते! जव मैं छोटा था, जव यह नकुलमाता गृहपत्नि भी छोटी थी उसी समय, यह मेरे लिये लाई गई। तवसे मैं नही जानता कि शरीरका तो क्या ही कहना नकुल-माताने मनसे भी कभी विरुद्ध आचरण किया हो। भन्ते! हम चाहते हैं कि इस लोकमे जीते

रहते समय भी हम परस्पर एक दूसरेको देखते रहे, मरनेपर भी परस्पर एक दूसरेको देखते रहे। नकुल-माता गृहपत्निने भी भगवान्‌को यही कहा—" भन्ते! जब मैं छोटी थी, जब यह नकुल-पिता छोटा था उसी समय मैं इसके लिये लाई गई। तबसे मैं नही जानती कि शरीरका तो क्या ही कहना नकुल-पिताने मनसे भी कभी विरुद्धाचरण किया हो। भन्ते! हम चाहते है कि इस लोकमे जीते रहते समय भी हम परस्पर एक दूनरेको देखते रहे, मरनेपर भी एक दूसरेको देखते रहे।"

"हे गृहपति जनो! यदि आप पति-पत्निकी यह कामना है कि जीते रहते भी परस्पर एक दूनरेको देखते रहे, मरनेपर भी परस्पर एक दूसरेको देखते रहे, तो दोनोको चाहिये कि समान-श्रद्धावाले हो, समान-शीलवाले हो, समान रूपसे त्यागी हो, ममान-प्रज्ञावाले हो। जो ऐसे होते है वे इस लोकमे जीते रहते समय भी परस्पर एक दूनरेको देखने है, मरनेपर भी परस्पर एक दूसरेको देखते है।

उभो नद्धा वदञ्ञू च सञ्ञता धम्मजीविनो,
ते होन्ति जानिपतयो अञ्ञमञ्ञ पियवदा ॥
अत्था सम्पचुरा होन्ति फासत्थ उपजायति
अमित्ता दुम्मना होन्ति उभिन्न समसीलिन ॥
इध धम्म चरित्वान ममसीलब्बता उभो,
नन्दिनो देवलोकस्मि मोदन्ति कामकामिनी ॥

[अर्थ ऊपर आ ही गया है।]

भिक्षुओ, यदि दोनो पति-पत्नी यह आकाक्षा करे कि वे जीते रहते भी परस्पर एक दूसरेको देखते रहे, मरनेपर भी परस्पर एक दूमरेको देखते रहे तो दोनोको चाहिये कि समान-श्रद्धावाले हो, समान शीलवाले हो, समान रूपसे त्यागी हो, समानप्रज्ञा वाले हो। जो ऐमे होते है वे इस लोकमे जीते रहते समय भी परस्पर एक दूसरेको देखते है, मरनेपर भी परस्पर एक दूसरेको देखते है।'

उभो सद्धा वदञ्ञू च सञ्ञता धम्मजीविनो,
ते होन्ति जानिपतयो अञ्ञमञ्ञ पियवदा ॥
अत्था सम्पचुरा होन्ति फासत्थ उपजायति,
अमित्ता दुम्मना होन्ति उभिन्न समसीलिन ॥
इध धम्म चरित्वान समसीलब्बता उभो,
नन्दिनो देवलोकस्मि मोदन्ति कामकामिनो ॥

[अर्थ ऊपर आ ही आ गया है।]

एक समय भगवान् कोलिय (जनपद) में सज्जनेल नामके कोलिय-निगममें ठहरे हुए थे। तब भगवान पूर्वान्ह समय (चीवर) धारण कर, पात्र-चीवर ले, जहाँ सुप्पवासा कोलिय-कन्याका घर था, वहाँ पहुँचे। पधारकर बिछे आसनपर विराजमान हुये।

तब सुप्पवासा कोलिय-कन्याने भगवानको प्रणीत आहार अपने हाथसे परोसा। भोजन कर चुकनेपर जब भगवान्ने पात्रसे हाथ खीच लिया, तो सुप्पवासा एक ओर बैठ गई। एक ओर बैठी हुई सुप्पवासा कोलिय-कन्याको भगवान्ने इस प्रकार सम्बोधित किया—"सुप्पवासा! जो आर्य-श्राविका भोजनको दान करती है वह भोजन ग्रहण करनेवालोको चार चीजोका दान करती है। कौन-सी चार चीजे? आयुका दान करती है। वर्णका दान करती है। सुखका दान करती है। बलका दान करती है। वह आयुका दान करनेके कारण दिव्य अथवा मानुषी आयुकी अधिकारिणी होती है। वर्णका दान करनेसे दिव्य अथवा मानुषी वर्णकी अधिकारिणी होती है। सुखका दान करनेसे दिव्य अथवा मानुषी सुखकी अधिकारिणी होती है। बलका दान करनेसे दिव्य अथवा मानुषी बलकी अधिकारिणी होती है। सुप्पवासा! जो आर्य श्राविका भोजनका दान करती है, वह भोजन ग्रहण करने वालोको चार चीजोका दान करती है।

सुसखत भोजन या ददाति
सुचि पणीत रससा उपेत,
सा दक्खिणा उज्जुगतेसु दिन्ना
चरणोपपन्नेसु महग्गतेसु।
पुञ्ञेन पुञ्ञ ससन्दमाना
महत्त्फला लोकविदूनवण्णिता,
एतादिस सञ्ञमनुस्सरन्ता
ये वेदजाता विचरन्ति लोके,
विनेय्य मच्छेरमल समूल
अनिन्दिता सग्गमुपेन्ति ठान।

[जो भली प्रकार तैयार किये गये, शुद्ध, प्रणीत, सरस भोजनका दान करती है, और यदि वह दान ऋजुचर्या वाले, आचार-परायण महान् व्यक्तियोको दिया जाता है, तो लोक विदू (तथागत) ने पुण्यका पुण्यसे मेल विठाकर, इस प्रकारके दानको महान् फलवाला कहा है। इस बातका अनुकरण कर जो प्रसन्न चित्त हो, लोकमें विचरते है वे मात्सर्यरूपी मलका समूल उच्छेद कर अनिन्दित रह स्वर्ग लोकको प्राप्त होते हैं।]

तव अनाथपिण्डिक गृहपति जहाँ भगवान् थे वहाँ गया, पास जाकर भगवान् को प्रणाम कर एक ओर वैठा। एक ओर बैठे अनाथ पिण्डिक गृहपतिको भगवान्ने यह कहा—"आर्य-श्रावक जव भोजनका दान करता है तो ग्रहण करने वालोको चार चीजे देता है। कौनसी चार चीजे ? आयुका दान करता है, वर्णका दान करता है, सुखका दान करता है, तथा वलका दान करता है। आयुका दान करनेसे दिव्य अथवा मानुषी आयुका भागी होता है, वर्णका दान करनेसे   सुखका दान करनेसे   वलका दान करनेसे दिव्य अथवा मानुषी वलका भागी होता है। हे गृहपति ! भोजनका दान करने वाला आर्य श्रावक भोजन ग्रहण करने वालेको इन चार चीजोका दान करता है।

यो सञ्ञतान परदत्तभोजिन
काले सक्कच्च ददाति भोजन,
चत्तारि ठानानि अनुप्पवेच्छति
आयुञ्च वण्णञ्च सुख वलञ्च
सो आयुदायि वलदायि सुख वण्ण ददो नरो,
दीघायु यसवा होति यत्थयत्थुपपज्जति ॥

[जो दूसरोका दिया खाने वाले सज्जन जनोको योग्य विधिसे भोजनका दान करता है, वह उन्हे चार चीजोका दान करता है—आयुका दान करता है, वर्णका दान करता है, सुखका दान करता है तथा वलका दान करता है। वह आयु, वर्ण, सुख तथा वलका दान करने वाला जहाँ कही भी जन्म ग्रहण करता है वह दीर्घायु होता है तथा यशस्वी होता है।]

भिक्षुओ, भोजनका देने वाला दायक ग्रहण करने वालेको चार चीजोका दान करता है। किन चार चीजोका ? आयुका दान करता है, वर्णका दान करता है, सुखका दान करता है तथा वलका दान करता है। आयुका दान करनेसे दिव्य अथवा मानुषी आयुका भागी होता है   वर्णका दान करनेसे   सुखका दान करनेसे   वलका दान करनेसे दिव्य अथवा मानुषी वलका भागी होता है। भिक्षुओ, भोजनका दान देने वाला दायक ग्रहण करने वालोको यह चार चीजे देता है।

यो सञ्ञतान परदत्तभोजिन
कालेन सक्कच्च ददाति भोजन,
चत्तारि अनुपवेच्छति
आयुञ्च वण्णञ्च सुख वल च

सो आयुदायी वलदायी सुख वण्ण ददो नरो,
दीघायु यसवा होति यत्थ यत्थुपपज्जति ॥

[अर्थ ऊपर आ ही गया है ।]

तव अनाथपिण्डिक गृहपति जहाँ भगवान् थे वहाँ गया। पास जाकर अभिवादन कर एक ओर वैठ गया। एक ओर वैठे हुए अनाथपिण्डिक गृहपतिको भगवान्ने यह कहा—"गृहपति! जिस गृहस्थ मे ये चार वाते होती है वह गृहस्थगी सन्मार्गगामी होता है, यश का भागी होता है, स्वर्गाभिमुख होता है। कौनसी चार वातें? गृहपति! वह आर्य-श्रावक चीवर (दान) से भिक्षु सघकी सेवा करता है, पिण्डपातसे भिक्षु-सघकी सेवा करता है, शयनासनसे भिक्षु-सघकी सेवा करता है, रोगीकी आवश्यकताओंसे भिक्षु-सघकी सेवा करता है। इन चारो वातोंसे युक्त गृहस्थ सन्मार्ग-गामी होता है, यशका भागी होता है, स्वर्गाभिमुख होता है।

गिहीसामीचि पटिपद पटिपज्जन्ति पण्डिता,
सम्मग्गते सीलवन्ते चीवरेन उपट्ठिता ॥
पिण्डपातस्सयनेन गितानपच्चयेन च,
तेस दिवा च रत्तो च सदा पुञ्ञ पवड्ढति
सग्गञ्च कमति ट्ठान कम्म कत्वान भद्दक ॥

[पण्डित (–जन) सन्मार्गगामी, सदाचारी भिक्षुओकी चीवर, पिण्डपात, शयनासन तथा रोगीकी आवश्यकताओंसे सेवा करता है। ऐसा करने वालोका पुण्य रात दिन वढता रहता है। शुभ करके वे स्वर्ग-लोकको प्राप्त होते है।]

तव अनाथपिण्डिक गृहपति जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवानको नमस्कार कर एक ओर वैठ गया। हे गृहपति! ये चार वाते ऐसी हैं जो इष्ट है, मनोरम है, अच्छी लगने वाली है (किन्तु) दुनियामें दुर्लभ है। कौन सी चार वातें? धर्मानुसार मुझे योग्य-वस्तुओकी प्राप्ति हो, यह पहली वात है जो इष्ट है, मनोरम है, अच्छी लगने वाली है (किन्तु) दुनियामें दुर्लभ है। भोग्य-वस्तुओकी प्राप्ति होनेपर धर्मानुसार अपने सम्वन्धियो तथा उपाध्यायो सहित मैं यशस्वी होऊ, यह दूसरी वात है जो इष्ट है, मनोरम है, अच्छी लगने वाली है (किन्तु) दुनियामें दुर्लभ है। भोग्य-वस्तुओकी प्राप्ति होनेपर धर्मानुसार अपने सम्वन्धियो तथा उपाध्यायो सहित यशस्वी होनेपर चिर काल तक जीता रहूँ, लम्वी आयु हो, यह तीसरी वात है जो इष्ट है, मनोरम है, अच्छी लगने वाली है (किन्तु) दुनियामें दुर्लभ है। भोग्यवस्तुओकी प्राप्ति होनेपर धर्मानुसार यशस्वी होनेपर, अपने सम्वन्धियो

तथा उपाध्यायों सहित चिर काल तक जीवित रहनेपर, लम्बी आयु प्राप्त होनेपर, शरीर छूटनेपर, मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होऊ, स्वर्गलोकमे उत्पन्न होऊ; यह चौथी बात है जो इष्ट है, मनोरम है, अच्छी लगने वाली है (किन्तु) दुनियामें दुर्लभ है।

"गृहपति! ये जो चारो बाते इष्ट है, मनोरम है, अच्छी लगने वाली है (किन्तु) दुनियामे दुर्लभ है, इन चारोकी प्राप्तिके चार साधन है। कौनसे चार? श्रद्धा-सम्पत्ति, शील-सम्पत्ति त्याग-सम्पत्ति तथा प्रज्ञा सम्पत्ति। गृहपति! श्रद्धा-सम्पत्ति किसे कहते है! हे गृहपति! आर्य-श्रावक श्रद्धावान् होता है, तथागतकी बोधि (प्राप्ति) मे श्रद्धा रखता है—वह भगवान् अर्हत् है, सम्यक् सम्बुद्ध है, विद्या तथा आचरणसे युक्त है, सुगत है, लोकके ज्ञाता है, अनुपम है, (अकुशल-मार्गी) पुरुषोका दमन करने वाले सारथी है, देवताओ तथा मनुष्योंके शास्ता है, बुद्ध भगवान् है। गृहपति! यह श्रद्धा-सम्पत्ति कहलाती है।

"गृहपति! शील-सम्पत्ति किसे कहते है? गृहपति! आर्य-श्रावक प्राणी हिंसासे विरत होता है ... सुरा-मेरय-मद्य आदि जो प्रमाद-स्थल है उनसे विरत होना है। गृहपति! यह शील-सम्पत्ति कहलाती है।

"गृहपति! त्याग सम्पत्ति किसे कहते है? गृहपति! आर्य-श्रावक मात्सर्य रहित चित्तसे युक्त हो गृहवास करता है, त्यागी, मुक्त-हस्त, खैरात करने वाला, दान शील तथा दानी। गृहपति! यह त्याग-सम्पत्ति कहलाती है।

"गृहपति! प्रज्ञा-सम्पत्ति किसे कहते है? गृहपति! अभिध्या अर्थात् विषय-लोभसे युक्त चित्त वाला जो अकरणीय है उसे करता है तथा जो करणीय है उसे नही करता है। अकरणीयके करने तथा करणीय के न करनेसे उसके ऐश्वर्य तथा सुखकी हानि होती है।

"गृहपति! व्यापाद-युक्त चित्तसे विचरने वाला जो अकरणीय है उसे करता है तथा जो करणीय है उसे नही करता है। अकरणीयके करने तथा करणीयके न करनेसे उसके ऐश्वर्य तथा सुखकी हानि होती है।

"गृहपति! आलस्य-युक्त चित्तसे विचरने वाला जो अकरणीय है उसे करता है तथा जो करणीय है उसे नही करता है। अकरणीयके करने तथा करणीयके न करनेसे उसके ऐश्वर्य तथा सुखकी हानि होती है।

"गृहपति! उद्धतपन तथा कौकृत्य-युक्त चित्तसे विचरने वाला जो अकरणीय है उसे करता है तथा जो करणीय है उसे नही करता है। अकरणीयके करने तथा

करणीयके न करनेसे उसके ऐश्वर्य तथा सुखकी हानि होती है। गृहपति! विचिकित्सा-युक्त चित्तसे विचरने वाला जो अकरणीय है उसे करता है तथा जो करणीय है उसे नही करता है। अकरणीयके करने तथा करणीयके न करनेसे उसके ऐश्वर्य तथा सुखकी हानि होती है।

"गृहपति! वह आर्य-श्रावक यह जानकर कि अभिध्या विषय-लोभ चित्तका उप-क्लेश (=मैल) है, अभिध्या विषय-लोभ रूपी चित्तके उप-क्लेशका त्याग करता है, यह जानकर कि व्यापाद चित्तका उप-क्लेश है, व्यापाद रूपी चित्त-क्लेशका त्याग करता है, यह जानकर कि थीन-मिद्ध (=आलस्य) चित्तका उप-क्लेश है, थीन-मिद्ध रूपी चित्त-क्लेशका त्याग करता है, यह जानकर कि उद्धतपन तथा कौकृत्य चित्तका उप-क्लेश है, उद्धतपन तथा कौकृत्य रूपी चित्तके उप-क्लेशका त्याग करता है, यह जानकर कि विचिकित्सा चित्तका उप-क्लेश है, विचिकित्सा रूपी उप-क्लेशका त्याग करता है।

"और क्योकि गृहपति! यह जानकर कि अभिध्या रूपी विषय लोभ चित्तका उपक्लेश है आर्य श्रावक अभिध्यारूपी विषय लोभका प्रहाण कर देता है, यह जानकर कि व्यापाद चित्तका उपक्लेश है, व्यापादका प्रहाण कर देता है, यह जानकर कि आलस्य चित्तका उपक्लेश है, आलस्यका प्रहाण कर देता है, यह जानकर कि उद्धतपन कौकृत्य चित्तका उपक्लेश है, उद्धतपन कौकृत्यका प्रहाण कर देता है, यह जानकर कि विचिकित्सा चित्तका उपक्लेश है, विचिकित्साका प्रहाण कर देता है—ऐसा होनेपर आर्य-श्रावक कहलाता है, महाप्रज्ञावान् बहुल-प्रज्ञ, सूक्ष्म-दर्शी, प्रज्ञानिधि। गृहपति! यह प्रज्ञा-सम्पत्ति कहलाती है।

"गृहपति! जो चारो बातें इष्ट है, मनोरम है, अच्छी लगने वाली हैं (किन्तु) दुनियामें दुर्लभ है, इन चारोकी प्राप्तिके चार साधन है।

"गृहपति! वह आर्य-श्रावक उत्साह और प्रयत्नसे कमाये हुए, बाहु-बलसे कमाये हुए, पसीनेसे कमाये हुए, धर्मानुसार अर्जित किये हुए, भोग्य पदार्थोंको प्राप्तकर चार बाते करता है। कौनसी चार? गृहपति! वह आर्य-श्रावक उत्साह और प्रयत्नसे कमाये हुए, बाहुबलसे कमाये हुए, पसीनेसे कमाये हुए, धर्मानुसार अर्जित किये हुए भोग्य पदार्थोंको प्राप्तकर अपने आपको सुखी करता है, सशक्त करता है, सम्यक् प्रकार सुखी रखता है, माता-पिताको सुखी करता है, सशक्त करता है, सम्यक् प्रकार सुखी रखता है, पुत्र-स्त्री-दास-कर्मियोको सुखी करता है, सशक्त करता है, सम्यक् प्रकार सुखी रखता है, यार दोस्तोको सुखी करता है, सशक्त करता

है, सम्यक् प्रकार सुखी करता है, यह उसका पहला कर्तृत्व होता है, पहला प्रयास, सम्यक् परिभोग।

"और गृहपति! वह आर्य-श्रावक उत्साह और प्रयत्नसे कमाये हुए, बाहु-बलसे कमाये हुए, पसीनेसे कमाये हुए, धर्मानुसार अर्जित किये हुए भोग्य-पदार्थोंसे जो आगसे, पानीसे, राजासे, चोरसे, अप्रिय उत्तराधिकारीसे अथवा अन्य कोई वैसी ही आपदाओंसे आत्म-रक्षा करता है, आत्म कल्याण करता है। यह उसका दूसरा कर्तृत्व होता है, दूसरा प्रयास, सम्यक् परिभोग।

"और गृहपति! वह आर्य-श्रावक उत्साह और प्रयत्नसे कमाये हुए, बाहु-बलसे कमाये हुए, पसीनेसे कमाये हुए, धर्मानुसार अर्जित किये हुए भोग्य-पदार्थोंसे पाँच बलि-कर्म[1] करता है, ज्ञाति-बलि, अतिथि-बलि, पूर्व-प्रेत-बलि, राज-बलि तथा देवता-बलि। यह उसका तीसरा कर्तृत्व होता है, प्रयास सम्यक् परिभोग।

"और हे गृहपति! वह आर्य श्रावक उत्साह और प्रयत्नसे कमाये हुए, बाहुबलसे कमाये हुए, पसीनेसे कमाये हुए, धर्मानुसार अर्जित किये हुए भोग्य पदार्थोंसे जो श्रमण-ब्राह्मण मद-प्रमादसे विरत रहते हैं, क्षमाशील तथा सदाचारी होते हैं, अपने आपको अपने ही दमन करते हैं, अपने आपको अपने ही शमन करते हैं तथा अपने आपको अपने ही परिनिर्वृत करते है, ऐसे श्रमण-ब्राह्मणोको अर्ध्व-अग्र दक्षिणासे प्रतिष्ठित करते हैं, जो (प्रतिष्ठा) स्वर्ग-गमन का कारण होती है, जो सुख-विपाक देनेवाली होती है तथा जो स्वर्गकी सीढी है। यह उसका चौथा कर्तृत्व होता है, प्रयास, सम्यक्-परिभोग।

"गृहपति! वह आर्य-श्रावक उत्साह और प्रयत्नसे कमाये हुए, बाहु-बलसे कमाये हुए, पसीनेसे कमाये हुए, धर्मानुसार अर्जित किये हुए भोग्य पदार्थोंसे इन चार प्राप्त-कर्मोंका करने वाला होता है। गृहपति! इन चार प्राप्त-कर्मोंके अतिरिक्त किसी भी दूसरी प्रकारसे जिस किसीके भी भोग्य-पदार्थ क्षयको प्राप्त होते है, तो कहा जाता है कि उसके भोग्य-पदार्थ अनुचित-स्थान पर क्षयको प्राप्त हुए, अपात्रताको प्राप्त हुए, अयोग्य विधिसे क्षय हुए। गृहपति! इन चार प्राप्त-कर्मोंके अतिरिक्त किसी भी दूसरी प्रकारसे जिस किसीके भोग्य-पदार्थ क्षयको प्राप्त नही होते, तो कहा

---

१ मनुस्मृतिके तीसरे अध्यायमे भी पाँच बलि-कर्म अथवा पाँच यज्ञोका विधान पाया जाता है। वे है (१) ब्रह्मयज्ञ, (२) पितृयज्ञ, (३) देवयज्ञ (४) भूतयज्ञ तथा (५) नृयज्ञ।

जाता है कि उसके भोग्य-पदार्थ उचित-ढगसे क्षयको प्राप्त हुए, पात्रताको प्राप्त हुए, योग्य-विधिसे क्षय हुए।

भुत्ता भोगा भता भच्चा वितिण्णा आपदासु मे,
उद्धग्गा दक्खिणा दिन्ना अथो पञ्च वलीकता।।
उपट्ठिता सीलवन्तो सञ्ञता ब्रह्मचारयो,
यदत्थ भोग इच्छेय्य पण्डितो घरमावस।।

सो मे अत्थो अनुप्पत्तो कत अननुतापिय,
एत अनुस्सर मच्चो अरियधम्मे ठितो नरो

इध चेव न पससन्ति पेच्च सग्गे च मोदति।।

[भोग्य-पदार्थोको स्वय खाया-पिया, नौकर-चाकरोका पालन-पोषण किया, आपत्ति पडनेपर आत्मरक्षाकी, ऊर्ध्व-अग्र दक्षिणा दी, पाँच वलि-कर्म किये, शीलवानो सयतजनो तथा ब्रह्मचारियोकी सेवा की—इन्ही सव अर्थोकी पूर्ति करनेके लिये गृहस्थ भोग्य-पदार्थोकी इच्छा करता है। तव वह सोचता है कि मैंने अपने उद्देश्यको प्राप्त कर लिया, मैंने ऐसा कार्य किया कि मुझे किसी भी प्रकारका अनुताप न हो। जो अपने इन सुकृतोका स्मरण करता है, वह आर्य-धर्ममें स्थित है। यहाँ इस लोकमें भी उसकी प्रशसा होती है और वह स्वर्गमें भी आनन्दित होता है।]

तव अनाथ पिण्डिक गृहपति जहाँ भगवान् थे वहाँ गया, पास जाकर भगवान् को प्रणामकर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए अनाथ पिण्डिक गृहपतिको भगवानने यह कहा—"गृहपति! ये चार सुख हैं जो गृहस्थ कामभोगीको समय समय पर प्राप्त होते है। कौनसे चार? (भोग्य-पदार्थोके) होनेका सुख (भोग्य-पदार्थोको) भोगनेका सुख, ऋणी न होनेका सुख तथा निर्दोष होनेका सुख। गृहपति! (भोग्य-पदार्थोके) होनेका सुख कौनसा होता है? गृहपति! किसी कुल-पुत्रके घरमें ऐसे भोग्य-पदार्थ होते हैं जो उसके उत्साह और प्रयत्नसे कमाया होता है, वाहुवलसे कमाया होता है, पसीनेसे कमाया होता है, तथा धर्मानुसार कमाया होता है। उसे इस वातका सुख होता है, आनन्द होता है कि उसके पास भोग्य-पदार्थ है जिन्हे उसने उत्साह और प्रयत्नसे कमाया है, वाहुवलसे कमाया है, पसीनेसे कमाया है, तथा धर्मानुसार कमाया है। गृहपति! यही (भोग्य-पदार्थोके) होनेका सुख कहलाता है।

"गृहपति! (भोग्य-पदार्थोके) भोगनेका सुख कौनसा होता है? गृहपति! एक कुल-पुत्र ऐसे भोग्य-पदार्थोको भोगता है जिन्हे उसने उत्साह और प्रयत्नसे कमाया होता है, बाहुबलसे कमाया होता है, पसीनेसे कमाया होता है तथा धर्मानुसार कमाया होता है और वह उनसे पुण्य-कर्म करता है। वह जब ऐसे भोग्य-पदार्थोको भोगनेसे जो उनके उत्साह और प्रयत्नसे कमाया होता है, बाहुबलसे कमाया होता है, पसीनेसे कमाया होता है तथा धर्मानुसार कमाया होता है, भोगता है और उनसे पुण्य करता है तो उसे इससे सुख प्राप्त होता है, उसे इससे आनन्द प्राप्त होता है। गृहपति! यही (भोग्य-पदार्थो) के भोगनेका सुख है।

"गृहपति! ऋणी न होनेका सुख कौनसा होता है? गृहपति! एक कुल-पुत्र को किसीका कुछ नही देना होता, न थोडा और न अधिक। उसे यह सोच कि मुझे किसीका कुछ नही देना है, थोडा या अधिक सुख प्राप्त करता है, आनन्द प्राप्त करता है। गृहपति! यही ऋणी न होनेका सुख है।

"गृहपति! निर्दोष होनेका सुख कौनसा होता है? गृहपति! एक कुल-पुत्र निर्दोष काय कर्मसे युक्त होता है, निर्दोष वाणीके कर्मसे युक्त होता है, निर्दोष मनके कर्मसे युक्त होता है। उसे यह सोचकर कि मै निर्दोष काम-कर्मसे युक्त हूँ, निर्दोष वाणी कर्मसे युक्त हूँ, निर्दोष मनके कर्मसे युक्त हूँ, सुख प्राप्त होता है, आनन्द प्राप्त होता है। गृहपति! यही निर्दोष होनेका सुख है। गृहपति! ये चार सुख है, जो किसी भी काम-भोगी गृहस्थको समय-समय पर, वक्त-वक्त पर प्राप्य होने चाहिये।

अनवज्जसुख ञत्वा अथो अत्थि सुख सरे,
भुञ्ज भोग सुख मच्चो ततो पञ्ञा विपस्सति।
विपस्समानो जानाति उभो भोगे सुमेधसो,
अनवज्जसुखस्सेत कल नाग्घति सोळसिति॥

[निर्दोष होनेके सुखको जान ले और भोग्य-पदार्थोके होने तथा उनके भोगने के सुखका स्मरण करे। आदमी भोगोके भोगनेके सुखका अनुभव करता हुआ प्रज्ञासे विचार करता है। जो बुद्धिमान् है वह पूर्वोक्त तीनो सुखो और निर्दोषताके सुखको जानता है। ये पूर्वोक्त सुख निर्दोषताके सुखके तीसरे हिस्सेके भी बराबर नही है।]

भिक्षुओ, जिन घरोमें माता-पिताकी पूजा होती है, वे घर ब्रह्ममय है। भिक्षुओ, जिन घरोमें माता-पिताकी पूजा होती है वे घर पूर्वाचार्यमय होते है, भिक्षुओ, जिन जिन घरोमे माता-पिताकी पूजा होती है वे घर देवता-मय होते है, भिक्षुओ, जिन घरोमे

माता-पिता की पूजा होती है, वे घर आतिथ्य-मय होते है। भिक्षुओ, ब्रह्मा कहते है माता-पिताको, भिक्षुओ, पूर्वाचार्य कहते है माता-पिताको, भिक्षुओ, देवता कहते है माता-पिताको, भिक्षुओ, अतिथि कहते है माता-पिताको। यह किसलिये ? भिक्षुओ, माता-पिता अपनी सन्तानके जनक होते है, पोपण करने वाले है तथा यह लोक दिखाने वाले होते है।

ब्रह्माति मातापितरो पुब्बाचीरयाति वुच्चरे,
आहुनेय्या च पुत्तनि पजाय अनुकम्पका
तस्माहि ने नमस्सेय्य सक्करेय्याथ पण्डितो ॥

[माता पिता ही 'ब्रह्मा' कहलाते है, माता-पिता ही 'पूर्वाचार्य' कहलाते है। माता-पिता अपनी मन्तानसे आतिथ्यके अधिकारी होते है। वे अपनी सन्तान पर दया करने वाले होते है। इसलिये जो बुद्धिमान् है, उसे चाहिये कि उन्हे नमस्कार करे, उनका सत्कार करे।]

अन्नेन अथ पानेन वत्थेन सयनेन च,
उच्छादने(न) नहापणेन पादान धोवनेन च
ताय न परिचरियाय मातापितुसु पण्डिता,
इध चेव न पससन्ति पेच्च सग्गे च मोदति ॥

[जो पण्डित जन अन्न (=भोजन), पेय-पदार्यो, वस्त्रो, तथा शयनासन, ओढने, नहलाने तथा पावोंके धोने द्वारा माता-पिताकी सेवा करते है, उनकी इस लोकमे प्रशसा होती है, और परलोक जानेपर स्वर्गमे आनन्दित होते है।]

भिक्षुओ, जो इन चार बातोसे युक्त हो, उसे ऐसा ही समझो जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो। कौनसी चार बातोमे ? प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, काम भोगो सम्बन्धी मिथ्याचार करने वाला होता है, तथा झूठ बोलने वाला होता है। भिक्षुओ, जो इन चार बातोंसे युक्त हो, उसे ऐसा ही समझो जैसा लाकर नरकमे डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, दुनियामे चार तरहके लोग है। कौनसे चार तरहके ? रूपको प्रमाण मानने वाले या रूपपर प्रसन्न, शब्द (=घोष) को प्रमाण मानने वाले या घोष पर प्रसन्न, (चीवर आदि की) रुक्षताको प्रमाण मानने वाले या रुक्षतापर प्रसन्न, धर्मको प्रमाण मानने वाले या धर्मपर प्रसन्न—भिक्षुओ, दुनियामे ये चार तरहके लोग होते है।

ये चरूपेन पामिनु ये च घोसेन अन्वगु
छन्दरागवसूपेता न ते जानन्ति त जन ॥
अज्झत्तञ्च न जानाति बहिद्धा च न पस्सति,
समन्तावरणो बालो सचे घोसेन वुय्हति ॥
अज्झत्तञ्च न जानाति बहिद्धा च न पस्सति,
बहिद्धा फलदस्सावी सो पि घोसेन वुय्हति ॥
अज्झत्तञ्च पजानाति बहिद्धा च विपस्सति,
(एव) विनीवरणदस्सावी न सो घोसेन वुय्हति ॥

[जो 'रूप' के पीछे भटकने वाले होते हैं तथा जो 'शब्द' के द्वारा वहाये ले जाते हैं ऐसे छन्द तथा रागके वशीभूत हुए जन उस 'जन' (के यथार्थ स्वरूप) को नही जानते। वह न अपने को ही जानता है, न बाह्य जगतको पहचानता है जो चारो ओरसे घिरा हुआ मूर्ख 'शब्द' के द्वारा बहाया ले जाया जाता है। वह भी न अपने आपको जानता है, न बाह्य जगतको पहचानता है जो बहिर्मुख होता है और जो शब्दके द्वारा ही बहाया ले जाया जाता है। वह अपने आपको जानता है और बाह्य जगतको भी पहचानता है, जो यथार्थ-दर्शी है और जो शब्दके द्वारा नही बहाया ले जाया जाता।]

भिक्षुओ, दुनियामे चार तरहके लोग है। कौनसे चार तरहके? राग-युक्त, द्वेष-युक्त, मोह-युक्त तथा मान-युक्त। भिक्षुओ, दुनियामे ये चार तरहके लोग है।

सारत्ता रजनीयेसु पियरूपाभिनन्दिनो,
मोहेन अधमा सत्ता बद्धा वड्ढेन्ति बन्धन ॥
रागजञ्च दोसजञ्च मोहजञ्चापविद्दसु,
करोन्ति अकुसल कम्म सविघात दुखुद्रय ॥
अविज्जा निवुता पोसा अन्धभूता अचक्खुका,
यथा धम्मा यथा सत्ता न सेवन्ति न मञ्जरे ॥

[जो रजनीय विषयोमे अनुरक्त रहते है, जो प्रिय रूपोका ही अभिनन्दन करने वाले है, वे मोहसे मूढ अधम जन अपना बधन बढाते है। अपण्डित-जन राग, द्वेष तथा मोहसे उत्पन्न, वर्तमान काल तथा भविष्य कालमे भी दु ख देनेवाले अकुशल कर्म करते है। जो अविद्यासे ग्रस्त होते हैं, जो अन्धे होते है तथा जो चक्षु-हीन होते है ऐसे राग-द्वेषके वशीभूत हुए प्राणी, हम ऐसे है—यह स्वीकार नही करते।]

एक समय भगवान् श्रावस्तीमे अनाथपिण्डिकके जेतवनाराममें विहार करते थे। उस समय साँप द्वारा डस लिये जानेके कारण एक भिक्षु मर गया था। तव वहुतसे भिक्षु जहाँ भगवान् थे वहाँ गये, पास जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर वैठ गये। एक ओर वैठे हुए उन भिक्षुओको भगवान्ने यह कहा 'भन्ते! यहाँ श्रावस्तीमे साँप द्वारा डसा जानेके कारण एक भिक्षु मर गया है। (भगवान् वोले) "वह भिक्षु निश्चय से चार सर्प-कुलोके प्रति मैत्री भावना नही करता था। यदि वह इन चार सर्प-कुलोंके प्रति मैत्री-भावना करता होता तो वह सर्प द्वारा डसा जा कर न मरता। वे सर्पराजकुल कौनसे है? विरुपाक्ष सर्पराजकुल, एरापथ सर्पराजकुल, छव्व्यापुत्त सर्पराजकुल तथा कहागोतम सर्पराजकुल। भिक्षुओ, वह भिक्षु निश्चयसे इन चार सर्पराजकुलोके प्रति मैत्री-भावना करने वाला नही था। यदि वह इन चार चार सर्पराज कुलोके प्रति मैत्री-भावना करता तो वह सर्प द्वारा डसा जाकर न मरता। भिक्षुओ मै अनुज्ञा देता हूँ कि अपने आपके सरक्षणके लिये, अपनी हिफाजतके लिये इन चार सर्पराजकुलोके प्रति मैत्री-भावनाकी जाय।

विरूपक्खेहि मे मेत्त मेत्त एरापथेहि मे,
छव्व्यापुत्तेहि मे मेत्त मेत्त कण्हागोतमकेहि च ॥
अपादकेहि मे मेत्त मेत्त दिपादकेहि मे,
चतुप्पदेहि मे मेत्त मेत्त वहुप्पदेहि मे ॥
मा म अपादको हिंसि मा म हिंसि दिपादको,
मा म चतुप्पदो हिंसि मा म हिंसि वहुप्पदो ॥
सव्वे सत्ता सव्वे पाणा सव्वे भूता च केवला,
सव्वे भद्रानि पस्सन्तु मा कचि पापमागमा ॥
अप्पमाणो वुद्धो अप्पमाणो धम्मो अप्पमाणो सङ्घो
पमाणवन्तानि सिरिंसिपानि अहिविच्छका
सतपदी उण्णानाभि
सरवू मूसिका कता मे रक्खा कता मे
परित्ता पटिक्कमन्तु भूतानि
सोह नमो भगवतो नमो सत्तान सम्मासम्वुद्धान ॥

[विरुपक्षोंसे मेरी मत्री है, ऐरापथोमेंसे मेरी मत्री है, छव्यापुत्रोंसे मेरी मैत्री है तथा कण्हागोतमोमकोंसे भी मेरी मैत्री है। जिनके पाँव नही है, ऐसे प्राणियोमेंसे भी मेरी मैत्री है, दो पाँव वालोंसे भी मैत्री है, चतुप्पदोंसे मैत्री है तथा

बहुत पाँव वालोंसे भी मैत्री है। बिना पाँवका कोई प्राणी मुझे कष्ट न दे, दो पाँववाला प्राणी मुझे कष्ट न दे, कोई चौपाया मुझे कष्ट न दे तथा कोई बहुत पाँववाला मुझे कष्ट न दे। जितने सत्व हैं, जितने प्राणी हैं, जितने जानदार हैं सभीका कल्याण हो, कोई भी अकल्याणको प्राप्त न हो। बुद्ध (के गुण) असीम हैं, धर्म (के गुण) असीम हैं, संघ (के गुण) असीम हैं। ये जो रेंगनेवाले जानवर हैं, साँप हैं, बिच्छु हैं, कनखजूरे हैं, मकडी हैं, छिपकली है, चूहे हैं—ये सभी सीमित हैं। मैंने आरक्षा की है, मैंने परित्राण (धर्म-देशना) का पाठ किया है। इसलिये उन प्रकारके सभी प्राणी लौट जायें अर्थात् मुझे कष्ट न दें। मैं भगवान्को तथा सात सम्यक् सम्बुद्धोंको[1] प्रणाम करता हूँ।]

एक समय भगवान राजगृहमें गृध्र-कूट पर्वतपर विहार करते थे। उस समय देवदत्तको गये चिरकाल नहीं हुआ था। तब भगवानने देवदत्तके सम्बन्धमें भिक्षुओंको आमन्त्रित किया—"भिक्षुओ! देवदत्तका जो लाभ-सत्कार तथा प्रशंसा है वह उसके आत्म-वधके लिये ही है, वह उसके पराभवके लिये ही है। जैसे भिक्षुओ! केलेका पेड अपने ही वधके लिये फल देता है, अपने ही पराभवके लिये फल देता है, उसी प्रकार भिक्षुओ! देवदत्तका जो लाभ-सत्कार तथा प्रशंसा है, वह उसके आत्म-वधके लिये ही है। जैसे भिक्षुओ, बाँस अपने वधके लिये फल देता है, अपने पराभवके लिये फल देता है, उसी प्रकार भिक्षुओ! देवदत्तका जो लाभ-सत्कार तथा प्रशंसा है वह उसके आत्म-वधके लिये ही है, वह उसके पराभवके लिये ही है। जैसे भिक्षुओ, सरकण्डा अपने वधके लिये फल देता है, अपने पराभवके लिये फल देता है, उसी प्रकार भिक्षुओ, देवदत्तका जो लाभ-सत्कार तथा प्रशंसा है वह उसके आत्म-वधके लिये ही है, वह उसके पराभवके लिये ही है। जैसे भिक्षुओ, खच्चरी अपने वधके लिये ही गर्भ-धारण करती है, उसी प्रकार भिक्षुओ, देवदत्तका जो लाभ-सत्कार तथा प्रशंसा है वह उसके आत्म-वधके लिये ही है, वह उसके पराभवके लिये ही।

फलं वे कदलिं हन्ति फलं वेळुं फलं नलं
सक्कारो कापुरिसं हन्ति गब्भो अस्सतरिं यथा ॥

[केलेका फल उसके पेडकी हत्या करता है, वैसे ही बाँस और सरकण्डा भी, वैसे ही सत्कार दुष्ट आदमीको नष्ट कर डालता है जैसे खच्चरका गर्भ खच्चरको।]

---

१ विपश्यी सम्यक् सम्बुद्धसे लेकर सिद्धार्थ गौतम सम्यक् सम्बुद्ध तक भद्र-कल्प के सात सम्यक् सम्बुद्धोसे अभिप्राय है।

भिक्षुओ, प्रयत्न चार प्रकारके है। कौनसे चार प्रकारके? सवर-प्रयत्न, 'प्रहाण-प्रयत्न, भावना-प्रयत्न तथा अनुरक्षण-प्रयत्न। भिक्षुओ, सवर-प्रयत्न क्या है? भिक्षुओ, एक भिक्षु प्रयत्न करता है, जोर लगाता है, मनको काबूमे रखता है कि कोई अकुशल, पापमय ख्याल जो अभी तक उसके मनमें अनुत्पन्न रहे उत्पन्न न हो। भिक्षुओ, यह सवर-प्रयत्न कहलाता है।

भिक्षुओ! प्रहाण-प्रयत्न किसे कहते है? भिक्षुओ एक भिक्षु प्रयत्न करता है, जोर लगाता है, मनको काबूमे रखता है कि जो अकुशल, पापमय ख्याल उसके मनमें उत्पन्न हो गये हो, वे नष्ट हो जायँ। भिक्षुओ, यह प्रहाण-प्रयत्न कहलाता है।

भिक्षुओ! भावना-प्रयत्न किसे कहते है? भिक्षुओ, एक भिक्षु प्रयत्न करता है, जोर लगाता है, मनको काबूमे रखता है कि जो अनुत्पन्न कुशल धर्म (= अच्छी बाते) हो वे उत्पन्न हो जायँ। भिक्षुओ, यह भावना-प्रयत्न कहलाता है।

भिक्षुओ, अनुरक्षण-प्रयत्न किसे कहते है? भिक्षुओ, एक भिक्षु प्रयत्न करता है, जोर लगाता है, मनको काबूमे रखता है कि जो कुशल धर्म मनमे उत्पन्न हो गये है वे बने रहे, उनका लोप न हो, वे विपुलताको प्राप्त हो तथा वे पूर्तिको प्राप्त हो। भिक्षुओ, यह अनुरक्षण-प्रयत्न कहलाता है।

सवरो च पहाण च भावना अनुरक्खण,
एते पधाना चत्तारो देसितादिच्चबन्धुना,
येहि भिक्खु इधातापि खय दुक्खस्स पापुणे।

[आदित्य-बन्धु (तथागत) ने सवर प्रयत्न, प्रहाण-प्रयत्न, भावना-प्रयत्न तथा अनुरक्षण-प्रयत्न इन चार प्रयत्नोको उपदेश दिया है। इन चारो प्रयत्नोको करने वाला भिक्षु दु खके क्षयको प्राप्त कर सकता है।]

भिक्षुओ, जब राजा अधार्मिक होते है, तो राज्याधिकारी भी अधार्मिक हो जाते है। राज्यधिकारियोके अधार्मिक हो जानेपर ब्राह्मणगृहपति भी अधार्मिक हो जाते है। ब्राह्मण गृहपतियोके अधार्मिक होनेपर निगमो तथा जनपदोके लोग भी अधार्मिक हो जाते है। निगमो तथा जनपदोके लोगोके अधार्मिक हो जानेपर चाँद-सूर्यकी गति विषम हो जाती है। चाँद-सूर्यकी गति विषम हो जानेपर नक्षत्रोकी, ताराओकी गति विषम हो जाती है। नक्षत्रोकी, ताराओकी गति विषम हो जानेपर रात-दिनकी गति विषम हो जाती है। रात-दिनकी गति वषम हो जानेपर महीने आधे-महीनेकी गति विषम हो जाती है। महीने आधे महीनेकी गति विषम हो जानेपर ऋतुओकी, वर्षोकी गति विषम हो जाती है। ऋतुओकी,

वर्षोकी गति विषम हो जानेपर विषम हवायें चलने लगती है, टेढी मेढी। हवाओंकी गति विषम हो जानेपर, उनके टेढा-मेढा चलने लगने पर देवता क्रोधित हो जाते हैं। देवताओंके कुपित हो जानेपर देवता सम्यक् वर्षा नही बरसाते। देवताओके सम्यक् वर्षा न बरसानेपर खेती ठीकसे नही पकती। ठीक से न पके धान्योंके खानेसे मनुष्य अल्पायु हो जाते है, दुर्बल हो जाते है तथा अनेक रोगोसे ग्रसित हो जाते है।

भिक्षुओ, जब राजागण धार्मिक होते हैं तो राजाधिकारी भी धार्मिक हो जाते हैं। राज्याधिकारियोंके धार्मिक हो जानेपर ब्राह्मण-गृहपति भी धार्मिक हो जाते है। ब्राह्मण-गृहपतियोंके धार्मिक हो जानेपर निगमो तथा जनपदोके लोग भी धार्मिक हो जाते है। निगमो तथा जनपदोके लोगोके धार्मिक हो जानेपर चांद-सूर्यकी गति भी विषम नही होती। चांद सूर्यकी गति विषम न रहनेपर नक्षत्रो ताराओकी गति भी विषम नही रहती। नक्षत्रो ताराओकी गति विषम न रहनेपर रात दिनकी गति विषम नही रहती। रात-दिनकी गति विषम न रहनेपर महीने-आध महीनेकी गति विषम नही रहती। महीने आध-महीनेकी गति विषम न रहनेपर ऋतुओकी, वर्षोकी गति विषम नही रहती। ऋतुओकी, वर्षोकी गति विषम न रहनेपर विषम हवायें नही चलती टेढी-मेढी। हवाओकी गति विषम न होनेपर, उनके टेढा-मेढा न चलनेपर देवता क्रोधित नही होते। देवताओंके क्रोधित न होनेपर देवता सम्यक् वर्षा बरसाते हैं। देवताओंके सम्यक् वर्षा बरसानेपर खेती ठीकसे पकती है। ठीकसे पके धान्योंके खानेसे मनुष्य दीर्घायु होते है, सुवर्ण होते है, बलवान् होते है तथा निरोग होते है।

गुन्न चे तरमानान जिम्ह गच्छति पुगवो,
सब्बाते जिम्ह गच्छन्ति नेत्ते जिम्ह गते सति।।
एवमेव मनुस्सेसु यो होति सेट्ठ सम्मतो,
सो चे अधम्म चरति पगेव इतरा पजा।।
सब्बं रट्ठ दुख सेति राजा चे होति धम्मिको,
गुन्न ये तरमानान उजु गच्छति पुंगवो।।
सब्बा ते उजु गच्छन्ति नेत्ते उजुगते सती,
एवमेव मनुस्सेसु यो होति सेट्ठसम्मतो।।
सो चेव धम्म चरति पगेव इतरा पजा,
सब्ब रट्ठ सुख सेति राजा चे होति धम्मिको

[यदि तैरती हुई गौवोके आगे आगे जाने वाला वृषभ टेढा जाता है तो नेताके टेढा जाने के कारण से सब टेढी जाती हैं। इसी प्रकार मनुष्योमे भी जो श्रेष्ठ

माना जाता है यदि वह अधर्मके रास्ते जाता है तो प्रजा उसका अनुकरण करती है। यदि राजा अधार्मिक होता है तो सारा राष्ट्र दुखी होता है।

यदि तैरती हुई गौवोके आगे आगे जाने वाला वृषभ सीधा जाता है तो नेताके सीधा जानेके कारण वे सब सीधे जाते हैं। इसी प्रकार मनुष्योमे भी जो श्रेष्ठ माना जाता है यदि वह धर्मके रास्ते जाता है तो प्रजा उसका अनुकरण करती है। यदि राजा धार्मिक होता है तो सारा राष्ट्र सुखी होता है।]

(३) अपण्णक, वर्ग

'भिक्षुओ, चार वातोंसे युक्त भिक्षु कल्याण-मार्गका पथिक होता है और उसका जन्म आश्रवोके क्षयमें लगा होता है। कौन सी चार वातोंसे ? भिक्षुओ, भिक्षु, शीलवान् होता है, वहुश्रुत होता है, प्रयत्न-शील होता है तथा प्रज्ञावान् होता है। भिक्षुओ, इन चार वातोंसे युक्त भिक्षु कल्याण-मार्गका पथिक होता है और उसका जन्म आश्रवोके क्षयमे लगा होता है।

भिक्षुओ, चार वातोंसे युक्त भिक्षु कल्याण-मार्गका पथिक होता है और उसका जन्म आस्रवोके क्षयमें लगा रहता है। कौनसी चार वातोंसे ? वह निष्क्रमण-वितर्कसे युक्त होता है, अव्यापक-वितर्कसे युक्त होता है, अविहिंसा-वितर्कसे युक्त होता है तथा सम्यक्-दृष्टिसे युक्त होता है। भिक्षुओ, इन चार वातोंसे युक्त भिक्षु कल्याण-मार्गका पथिक होता है और उसका जन्म आस्रवोके क्षयमें लगा रहता है।

भिक्षुओ, जिस किसीमे चार वाते हो उसे असत्पुरुष जानना चाहिये। कौन-चार वातें ? भिक्षुओ, जो असत्पुरुष होता है वह तव भी दूसरोके अवगुण कहता है जव उससे कोई नही पूछता, पूछनेपर, प्रश्न किये जानेपर तो विना छोडे विना कमी किये, पूरी तरहसे विस्तार पूर्वक दूसरोंके दुर्गुण कहने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसे आदमीके वारेमें यह जानना चाहिये कि यह असत्पुरुष है। फिर भिक्षुओ, जो असत्पुरुष होता है, वह तव भी दूसरोके गुण नही कहता जव उससे कोई पूछता है , पूछनेपर प्रश्न किये जानेपर तो छोडकर, कमी करके, विना पूरी तरहसे, विना विस्तारके दूसरोके गुण कहता है। भिक्षुओ, ऐसे आदमीके वारेमे यह जानना चाहिये कि यह असत्पुरुष है। भिक्षुओ, जो असत्पुरुष होता है वह तव अपने दुर्गुण नही कहता है जव उससे कोई नही पूछता, पूछनेपर, प्रश्न किये जानेपर, छोडकर, कमी विना पूरी तरहसे, विना विस्तारपूर्वक अपने दुर्गुण कहने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसे आदमीके वारेमे जानना चाहिये कि यह असत्पुरुष है। भिक्षुओ, जो असत्पुरुष है, वह तव भी अपने गुण कहता है जव उससे कोई नही पूछता, पूछने पर प्रश्न किये जानेपर तो

विना छोडे, विना कमी किये, पूरी तरहसे, विस्तार पूर्वक अपने गुण कहता है। भिक्षुओ, ऐसे आदमीके वारेमे यह जानना चाहिये कि यह असत्पुरुष है। भिक्षुओ, इन चार वातोसे युक्तको असत्पुरुष जानना चाहिये।

भिक्षुओ, जिन किसीमे ये चार वाते हो उसे सत्पुरुष जानना चाहिये। कौनसी चार वातें ? भिक्षुओ, जो सत्पुरुष होता है वह तव भी दूसरोके अवगुण नही कहता जव उससे कोई नही पूछता, पूछनेपर, प्रश्न किये जाने पर तो छोडकर, कमी करके, विना पूरी तरहसे, विना विस्तारपूर्वक दूसरोके दुर्गुण कहने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसे आदमीके वारेमे जानना चाहिये कि यह सत्पुरुष है। फिर भिक्षुओ, जो सत्पुरुष होता है वह तव भी दूसरोके गुण कहता है जव उससे कोई नही पूछता, पूछे जानेपर, प्रश्न किये जानेपर तो विना छोडे, विना कमी किये, पूरी तरहसे विस्तार-पूर्वक दूसरोके गुण कहने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसे आदमीके वारेमे जानना चाहिये कि यह सत्पुरुष है। फिर भिक्षुओ, जो सत्पुरुष होता है वह तव भी अपने दुर्गुण कहता है जव उससे कोई नही पूछता, पूछे जानेपर पर, प्रश्न किये जानेपर तो विना छोडे, विना कमी किये, पूरी तरहसे, विस्तारपूर्वक अपने दुर्गुण कहने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसे आदमीके वारेमे यह जानना चाहिये कि यह सत्पुरुष है। फिर भिक्षुओ, जो सत्पुरुष होता है वह तव भी अपने गुण नही कहता जव उससे कोई नही पूछता, पूछे जानेपर, प्रश्न किये जानेपर तो छोडकर कमी करके विना पूरी तरहसे, विना विस्तार पूर्वक अपने गुण कहने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसे आदमीके वारेमे जानना चाहिये कि यह सत्पुरुष है। भिक्षुओ, जिस किसीमे ये चार वाते हो उसे सत्पुरुष जानना चाहिये।

भिक्षुओ, जैसे नई वहु जिस रातको या जिस दिन घरमे लाई जाती है, उस समय उसके मनमे सासके प्रति, ससुरके प्रति, स्वामीके प्रति और तो और जो दास-कर्मकर लोग होते है, उनके प्रति भी वडा सकोच होता है, वडा लज्जा-भय वना रहता है। किन्तु वादमे परिचय वढ जानेपर, विश्वास वढ जानेपर वह सासको भी, ससुरको भी तथा स्वामीको भी कहती है कि हटो, तुम क्या जानते हो ? इसी प्रकार भिक्षुओ, कोई भिक्षु जिस रात या जिस दिन घरसे बेघर हो प्रव्रजित हुआ होता है उस समय उसके मनमे भिक्षुओके प्रति, भिक्षुणियोके प्रति, उपासकोके प्रति, उपासिकाओके प्रति, और तो और विहारोमे रहने वाले भावी-श्रमणोके प्रति भी वडा सकोच रहता है, वडा लज्जाभय वना रहता है। किन्तु वादमे परिचय वढ जाने पर, विश्वास वढ जानेपर वह आचार्यको भी, उपाध्यायको भी कहता है कि हटो, तुम क्या जानते हो ? इसलिये भिक्षुओ, यही सीखना चाहिये कि हम नवागत वहुके समान चित्तसे विहार करेगे, भिक्षुओ यही सीखना चाहिये।

भिक्षुओ, ये चार अग्र ह। कौन से चार? शील-अग्र, समाधि-अग्र, प्रज्ञा अग्र तथा विमुक्ति-अग्र। भिक्षुओ, ये चार अग्र हैं।

भिक्षुओ, ये चार अग्र ह। कौनसे चार? रूप-अग्र वेदना-अग्र, सज्ञा-अग्र तथा भवाग्र। भिक्षुओ ये, चार अग्र हैं।

एक समय भगवान् कुसीनाराके पास मल्लोके शाल वनमें दो शाल-वृक्षोंके बीच लेटे थे, परिनिर्वाणके समय। वहाँ भगवान् ने भिक्षुओको सम्वोधित किया——"भिक्षुओ", भिक्षुओने भगवानको प्रत्युत्तर दिया—"भदन्त।" तव भगवान्ने यह कहा—भिक्षुओ, यदि किसी एक भिक्षुके मनमें भी वुद्धके वारेमे, धर्मके वारेमे, सघके वारेमें, मार्गके वारेमें अथवा प्रतिपत्तिके वारेमे शका हो वा सदेह हो तो भिक्षुओ, पूछ लो। वादमें मत पछताना कि हम अपने शास्ताके आमने-सामने रहे, तव भी भगवान्से पूछ न सके।" ऐसा कहनेपर वे भिक्षु चुप रहे। दूसरी वार भी भगवान्ने भिक्षुओको सम्वोधित किया—"भिक्षुओ, यदि किसी एक भिक्षुके मनमे भी वुद्धके वारेमे, धर्मके वारेमें, सघके वारेमे, मार्गके वारेमें अथवा प्रतिपत्तिके वारेमे शका हो वा सदेह हो तो भिक्षुओ, पूछ लो। वादमें मत पछताना कि हम अपने शास्ताके आमने-सामने रहे तव भी भगवान्से न पूछ सके।" ऐसा कहने पर दूसरी वार वे भिक्षु चुप रहे। तीसरी वार भी भगवान्ने भिक्षुओको सम्वोधित किया—"भिक्षुओ, यदि किसी एक भिक्षुके मनमें भी वुद्धके वारेमें, धर्मके वारेमे, सघके वारेमें, मार्गके वारेमें अथवा प्रतिपत्तिके वारेमें शका हो वा सदेह हो तो भिक्षुओ, पूछ लो। वादमे मत पछताना कि हम अपने शास्ताके आमने-सामने रहे। तव भी भगवान्से न पूछ सके।" ऐसा कहने पर तीसरी वार भी वे भिक्षु चुप रहे।

तव भगवानने फिर भिक्षुओको आमन्त्रित किया—"सम्भव है भिक्षुओ, तुम शास्ताके प्रति तुम्हारा जो गौरव-भाव है उसके कारण भी न पूछो। इसलिये एक मित्र भी अपने दूसरे मित्रको कहकर पूछ सकता है।" ऐसा कहनेपर भी वे भिक्षु चुप रहे। तव आयुष्मान् आनन्दने भगवान्से कहा—"भन्ते! आश्चर्य है। भन्ते! अद्‌भुत है। मै इस भिक्षुसघके प्रति वडा प्रसन्न हूँ। इस भिक्षु सघमे एक भिक्षुके मनमें भी वुद्धके प्रति, धर्मके प्रति, सघके प्रति, मार्गके प्रति वा प्रतिपत्तिके प्रति शका या सन्देह नही है।" "आनन्द! तू ऐसा प्रसन्नताके कारण कह रहा है। किन्तु आनन्द यह तथागतको ज्ञात ही है कि इस भिक्षुसघमे एक भिक्षुके मनमे भी वुद्धके प्रति, धर्मके प्रति, सघके प्रति, मार्गके प्रति वा प्रतिपत्तिके प्रति शका या सन्देह नही है। आनन्द! इन पाँच सौ भिक्षुओमे जो अन्तिम भिक्ष है वह भी स्रोतापन्न है। उसके भी पतन की सम्भावना नही, उसकी वोधि-प्राप्ति सुनिश्चित है।"

भिक्षुओ, ये चार बाते अविचार्य है, इनका चिन्तन नही करना चाहिये। इनका विचार करनेसे उन्माद या चित्तका विघात हो सकता है। कौनसी चार बाते ? भिक्षुओ, जो बुद्धोका-बुद्ध-विषय है, यह अविचार्य है, इसका चिन्तन नही करना चाहिये। इसका विचार करनेसे उन्माद या चित्तका विघात हो सकता है। भिक्षुओ, ध्यानी-का ध्यान-विपय अविचार्य है, इसका चिन्तन नही करना चाहिये। इसका विचार करनेसे उन्माद या चित्तका विघात हो सकता है। भिक्षुओ, कर्म-विपाक अवि चार्य है, इसका चिन्तन नही करना चाहिये। इसका विचार करनेसे उन्माद या चित्तका विघात हो सकता है। भिक्षुओ, लोककी उत्पत्तिकी चिन्ता अविचार्य है, इसका चिन्तन नही करना चाहिये। इमका विचार करनेसे उन्माद या चित्तका विघात हो सकता है। भिक्षुओ, ये चार वते अविचार्य है, इनका चिन्तन नही करना चाहिये। इनका विचार करनेसे उन्माद या चित्तका विघात हो सकता है।

भिक्षुओ, ये चार दक्षिणा-विशुद्धियाँ है। कौनसी चार ? भिक्षुओ, प्रति-ग्राहक से नही, किन्तु दायकसे विशुद्ध होनेवाली दक्षिणा (= दान); दायकसे नही, किन्तु प्रतिग्राहकसे विशुद्ध होनेवाली दक्षिणा, न प्रतिग्राहकसे और न दायकसे विशुद्ध होनेवाली दक्षिणा, दायकसे भी और प्रतिग्राहकसे भी विशुद्ध होनेवाली दक्षिणा। भिक्षुओ, प्रतिग्राहकसे नही किन्तु दायकसे दक्षिणा कैसे विशुद्ध होती है ? भिक्षुओ, यदि दायक शीलवान् होता है, कल्याणामार्गी होता है, और प्रतिग्राहक दुश्शील होते है, पापी होते है तो दक्षिणा प्रतिग्राहकसे विशुद्ध नही होती, किन्तु दायकसे। भिक्षुओ दायकसे नही, किन्तु प्रतिग्राहकसे दक्षिणा कैसे विशुद्ध होती है ? भिक्षुओ, यदि प्रतिग्राहक शीलवान् होते है, कल्याणमार्गी होते है और दायक दुश्शील होता है, पापी होता है, तो दक्षिणा प्रतिग्राहकसे विशुद्ध होती है, दायक से नही। भिक्षुओ, कैसे दक्षिणा न दायकसे परिशुद्ध होती है और न प्रतिग्राहकसे ? भिक्षुओ, यदि दायक भी दुश्शील होते है, पापी होते है, तथा प्रतिग्राहक भी दुश्शील होते है, पापी होते है तो दक्षिणा न दायकसे विशुद्ध होती है और न प्रति-ग्राहकसे। भिक्षुओ, कैसे दक्षिणा दायकसे भी परिशुद्ध होती है और प्रति-ग्राहकसे भी ? भिक्षुओ, यदि दायक शीलवान् होते है तथा कल्याणमार्गी होते है तो दक्षिणा दायकसे भी विशुद्ध होती है और प्रति-ग्राहकसे भी। भिक्षुओ, ये चार दक्षिणा-विशुद्धियाँ है।

तब आयुष्मान् सारिपुत्र जहाँ भगवान थे वहाँ पहुँचे। पहुँचकर, भग-वानको अभिवादन कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे आयुष्मान् सारिपुत्रने भगवानको

यह कहा—"भन्ते ! इसका क्या कारण है, इसका क्या हेतु है कि एक व्यापारी वैसा ही व्यापार करता है, किन्तु उसे हानि उठानी पडती है ? भन्ते ! इसका क्या कारण है, इसका क्या हेतु है कि एक व्यापारी वैसा ही व्यापार करता है, किन्तु उसकी अभिलाषा पूरी नही होती। भन्ते ! इसका क्या कारण है, इसका क्या हेतु है कि एक व्यापारी वैसा ही व्यापार करता है, किन्तु उसकी अभिलाषा पूरी होती है । भन्ते ! इसका क्या कारण है, इसका क्या हेतु है कि एक व्यापारी वैसा ही व्यापार करता है, किन्तु उससे दूसरोकी अभिलाषा पूरी होती है ?

"सारिपुत्र ! कोई कोई किसी ब्राह्मण या श्रमणके पास जाकर प्रार्थना करता है कि भन्ते ! जिस चीजकी आवश्यकता हो कहे। वह जो चीज देनेके लिये कहता है, वह नही देता। वह उस योनिसे च्युत होकर यहाँ जन्म ग्रहण करता है। वह जिस जिस व्यापारको करता है, उसीमें हानि उठाता है।

"सारिपुत्र ! कोई कोई किसी ब्राह्मण या श्रमणके पास जाकर प्रार्थना करता है कि भन्ते ! जिस चीजकी आवश्यकता हो कहे। वह जो चीज देनेके लिये कहता है, उसी आशयके अनुसार नही देता। वह उस योनिसे च्युत होकर यहाँ जन्म ग्रहण करता है। वह जिस जिस व्यापारको करता है, उसकी अभिलाषा पूरी नही होती।

"सारिपुत्र ! कोई कोई किसी ब्राह्मण या श्रमणके पास जाकर प्रार्थना करता है कि भन्ते ! जिस चीज की आवश्यकता हो कहे। वह जो चीज देनेके लिये कहता है, उसी आशयके अनुसार देता है। वह उस योनिसे च्युत होकर यहाँ जन्म ग्रहण करता है। वह जिस जिस व्यापारको करता है, उसकी अभिलाषा पूरी होती है।

"सारिपुत्र ! कोई कोई किसी ब्राह्मण या श्रमणके पास जाकर प्रार्थना करता है कि भन्ते ! जिस चीजकी आवश्यकता हो कहे। वह जो चीज देनेके लिये कहता है, वह दूसरेकी अभिलाषाके अनुसार देता है। वह उस योनिसे च्युत होकर यहाँ जन्म ग्रहण करता है। वह जिस जिस व्यापारको करता है उससे दूसरोकी अभिलाषाकी पूर्ति होती है।

"सारिपुत्र ! इसका यह कारण है, इसका यह हेतु है कि एक व्यापारी वैसा ही व्यापार करता है, किन्तु उसे हानि उठानी पडती है। सारिपुत्र ! इसका यह कारण है, इसका यह हेतु है कि एक व्यापारी वैसा ही व्यापार करता है, किन्तु उसकी अभिलाषा पूरी नही होती। सारिपुत्र। इसका यह कारण है, इसका यह हेतु है कि एक व्यापारी वैसा ही व्यापार करता है, किन्तु उसकी अभिलाषाकी पूर्ति होती है।

सारिपुत्र इसका यह कारण है, इसका यह हेतु है कि एक व्यापारी वैसा ही व्यापार करता है, किन्तु उससे दूसरोकी अभिलाषा पूरी होती है।

एक समय भगवान् कौसाम्वीमे विहार कर रहे थे घोसितारामभे। तव आयुष्मान् आनन्द जहाँ भगवान् थे वहाँ गये। समीप पहुँचकर भगवानको अभिवादन कर एक ओर वैठे। एक ओर वैठे हुए आयुष्ममान आनन्दने भगवानको कहा "भन्ते! इसका क्या हेतु है, इसका क्या कारण है कि स्त्रियाँ न सभामे वैठती है, न खेती आदि कोई काम करती है और न (व्यापार आदिके लिये) काम्वोज जाती है?" "आनन्द स्त्रियाँ क्रोधी स्वभावकी होती है। आनन्द! स्त्रियाँ ईर्षालु होती है। आनन्द! स्त्रियाँ मात्सर्य-युक्त होती है। आनन्द! स्त्रिया मूर्ख होती है। आनन्द! यह हेतु है, यह कारण है जिससे स्त्रियाँ न सभामे वैठती है, न (खेती आदि) कोई काम करती है और न (व्यापार आदिके लिये) काम्वोज जाती है।"

(४) श्रमणमचल वर्ग

भिक्षुओ, जिसमे ये चारो वाते होती है, वह लाकर नरकमे डाल दिया गया जैसा होता है। कौनसी चार वातें? वह हिंसा करने वाला होता है, वह चोरी करने वाला होता है, वह काम-भोग सम्वन्धी मिथ्याचार करने वाला होता है तथा वह झूठ वोलने वाला होता है। भिक्षुओ, जिसमे ये चार वाते होती है, वह लाकर नरकमे डाल दिया गया जैसा होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चारो वाते होती है, वह लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया जैसा होता है। कौनसी चार वाते? वह हिंसा करनेसे विरत होता है, वह चोरी करनेसे विरत होता है, वह कामभोग सम्वन्धी मिथ्याचारसे विरत होता है तथा वह झूठ वोलनेसे विरत होता है। भिक्षुओ, जिसमे ये चारो वाते होती है, वह लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया जैसा होता है।

भिक्षुओ, जिसमे ये चार वातें होती है, वह लाकर नरकमें डाल दिया गया जैसा होता है। कौनसी चार वातें? वह झूठ वोलनेवाला होता है, वह चुगली खाने वाला होता है वह कठोर वोलने वाला होता है, वह वेकार वकवास करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिसमे ये चार वाते होती है, वह लाकर नरकमे डाल दिया गया जैसा होता है।

भिक्षुओ, जिसमे ये चार वातें होती है, वह लाकर स्वर्ग में डाल दिया गया जैसा होता है। कौन सी चार वातें? वह झूठ वोलने वाला नही होता, वह चुगली खाने वाला नही होता, वह कठोर वोलने वाला नही होता, वह वेकार वकवास

करनेवाला नही होता। भिक्षुओ, जिसमे ये चार बातें होती हैं, वह लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया जैसा होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती है, वह लाकर नरकमें डाल दिया गया जैसा होता है। कौनसी चार बाते? बिना विचार किये, बिना परीक्षा किये, निन्दनीयकी प्रशसा करता है। बिना विचार किये, बिना परीक्षा किये, प्रशसनीयकी निन्दा करता हैं। बिना विचार किये, बिना परीक्षा किये, अश्रद्धेय स्थलपर श्रद्धायुक्त होता हैं। बिना विचार किये, बिना परीक्षा किये, श्रद्धेय स्थलपर अश्रद्धायुक्त होता है। भिक्षुओ, जिसमे ये चार बातें होती हैं, वह लाकर नरकमें डाल दिया गया जैसा होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बाते होती है, वह लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया जैसा होता है। कौन-सी चार बातें? विचार करके, परीक्षा करके निन्दनीयकी निन्दा करता है। विचार करके, परीक्षा करके प्रशसनीयकी प्रशसा करता है। विचार करके, परीक्षा करके अश्रद्धेय स्थलपर अश्रद्धायुक्त होता है। विचार करके परीक्षा करके श्रद्धेय स्थलपर श्रद्धायुक्त होता है। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती है, वह लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया जैसा होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बाते होती हैं, वह लाकर नरकमें डाल दिया गया जैसा होता है। कौनसी चार बातें? वह क्रोधको महत्व देनेवाला होता है, सद्धर्मको नही। वह म्रक्षको महत्व देनवाला होता है, सद्धर्मको नही। वह लाभको महत्व देन वाला होता है, सद्धर्मको नही। वह सत्कारको महत्व देनेवाला होता है, सद्धर्मको नही। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह लाकर नरकमें डाल दिया गया जैसा होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती है, वह लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया जैसा होता है। कौन सी चार बाते? वह सद्धर्मको महत्व देनेवाला होता है, क्रोधको नही। वह सद्धर्मको महत्व देनेवाला होता है म्रक्षको नही। वह सद्धर्मको महत्व देने वाला होता है, लाभको नही। वह सद्धर्मको महत्व देनवाला होता है सत्कारको नही। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती है, वह लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया जैसा होता है।

भिक्षुओ दुनियामें चार तरहके आदमी हैं। कौनसे चार तरहके? अन्धकारसे अन्धकारमें जानेवाला, अन्धकारसे प्रकाशमें जानेवाला, प्रकाशसे अन्धकारमे जानेवाला, प्रकाशसे प्रकाशमे जानेवाला। भिक्षुओ, अन्धकारसे अन्धकारमें जानेवाला

कैसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी नीच कुलमे पैदा हुआ होता है, चण्डाल कुलमें, या वंसफोड कुलमें, शिकारियोके कुलमें, या रथ बनानेवाले (चर्मकार?) कुलमे, या सफाई करनेवाले कुलमे; ऐसे कुलमे जो दरिद्र होता है, जहां खाने पीनेकी कठिनाई होती है, मुश्किल होती है, जहां भोजन वस्त्र तकलीफसे मिलता है। वह होता है दुर्वर्ण, दुर्दर्शनीय, बौना, रोग-बहुल, काना, लूला, लगडा, पक्ष-घात वाला। उसे खाना-पीना नही मिलता, वस्त्र नही मिलता, वाहन नही मिलता, माला-गन्ध-विलेपन नही मिलता, सोने-रहनेका स्थान तथा दीपकके लिये तेलवत्ती आदिकी प्राप्ति नही होती। वह शरीरसे दुष्कर्म करता है, वाणीसे बुरा काम करता है, मनसे अकुशल कर्म करता है। वह शरीर, वाणी तथा मनसे दुष्कर्म कर, शरीरका त्याग करनेपर, मरनेपर, नरकमें उत्पन्न होता है। इस प्रकार भिक्षुओ आदमी अन्धकारसे अन्धकारमें जानेवाला होता है। भिक्षुओ, अन्धकारसे प्रकाशमे जानेवाला कैसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी नीच कुलमे पैदा हुआ होता है, चण्डाल कुलमें, या बस-फोड कुलमे, या शिकारियोके कुलमे, या रथ बनानेवाले (चर्मकार ?) कुलमे, या सफाई करनेवाले कुलमे, ऐसे कुलमें जो दरिद्र होता है, जहां खानेपीनेकी कठिनाई होती है, मुश्किल होती है, जहां भोजन-वस्त्र तकलीफसे मिलता है। वह होता है दुर्वर्ण, दुर्दर्शनीय, बौना, रोग-बहुल, काना, लूला, लगडा, पक्ष-घातवाला। उसे खाना-पीना नही मिलता, वस्त्र नही मिलता, वाहन नही मिलता, माला-गन्ध-विलेपन नही मिलता, सोने-रहनेका स्थान तथा दीपकके लिये तेल-बत्ती आदिकी प्राप्ति नही होती। वह शरीरसे शुभ कर्म करता है, वाणीसे शुभ कर्म करता है, मनसे शुभ कर्म करता है। वह शरीर, वाणी तथा मनसे कुशल कर्म कर, शरीर छूटनेपर, मरनेपर स्वर्गमे उत्पन्न होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी अन्धकारसे प्रकाशमे जानेवाला होता है।

भिक्षुओ, प्रकाशसे अन्धकारमे जानेवाला कैसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी ऊँच कुलमे जन्म ग्रहण करता है क्षत्रिय महासारवान् कुलमे, ब्राह्मण महासारवान् कुलमे अथवा गृहपति (=वैश्य) महासारवान् कुलमें, ऐसे कुलमें जो धनी होता है, ऐश्वर्यशाली होता है, जहां सोना चान्दी बहुत होता है, सम्पत्ति बहुत होती है, तथा धन-धान्य बहुत होता है। वह होता है सुन्दर, दर्शनीय, आकर्षक, पहले दर्जेके सौन्दर्यसे युक्त। उसे मिलते है अन्न-पान, वस्त्र, वाहन, माला-गन्ध-विलेपन, सोने-रहनेका स्थान तथा दीपकके लिये तेल-बत्ती आदि। वह शरीरसे दुष्कर्म करता है, वाणीसे बुरा काम करता है, मनसे अकुशल कर्म करता है। वह शरीर, वाणी तथा मनसे दुष्कर्म

कर, शरीर छूटनेपर, मरनेपर नरकमें उत्पन्न होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी प्रकाशसे अन्धकारमें जानेवाला होता है।

भिक्षुओ, प्रकाशसे प्रकाशमे जानेवाला कैसा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी ऊँचे कुलमें जन्म ग्रहण करता है, क्षत्रिय महासारवान् कुलमें, ब्राह्मण महासारवान् कुलमें अथवा गृहपति (= वैश्य) महासारवान् कुलमें, ऐसे कुलमें जो धनी होता है, ऐश्वर्य-शाली होता है, जहाँ सोना-चाँदी बहुत होता है, सम्पत्ति बहुत होती है तथा धन-धान्य बहुत होता है। वह होता है सुन्दर, दर्शनीय, आकर्षक, पहले दर्जेके सौन्दर्यसे युक्त। उसे मिलते हैं अन्न-पान, वस्त्र-वाहन, माला-गन्ध-विलेपन, सोने-रहनेका स्थान तथा दीपकके लिये तेल बत्ती आदि। वह शरीरसे शुभ कर्म करता है, वाणीसे शुभ-कर्म करता है, मनसे शुभ-कर्म करता है। वह शरीर, वाणी तथा मनसे शुभ कर्मकर, शरीर छूटने पर, मरनेपर स्वर्गमें उत्पन्न होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी प्रकाशसे प्रकाशमें जानेवाला होता है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके आदमी होते हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके लोग है। कौनसे चार तरहके? नीचेसे नीचेकी ओर जाने वाले, नीचेसे ऊपरकी ओर जाने वाले, ऊपरसे नीचेकी ओर जाने वाले तथा ऊपरसे ऊपरकी ओर जाने वाले। भिक्षुओ, आदमी नीचेसे नीचेकी ओर कैसे जाता है? भिक्षुओ एक आदमी नीच कुलमें उत्पन्न होता है, चण्डाल कुलमें वह शरीरसे दुष्कर्म करता है, वाणीसे बुरा काम करता है, मनसे अकुशल कर्म करता है। वह शरीर वाणी तथा मनसे दुष्कर्म कर, शरीरका त्याग करनेपर, मरनेपर, नरकमें उत्पन्न होता है। इस प्रकार भिक्षुओ आदमी नीचेसे नीचेकी ओर जानेवाला होता है।

भिक्षुओ आदमी नीचेसे ऊपरकी ओर कैसे जाता है? भिक्षुओ, एक आदमी नीचकुलमें उत्पन्न होता है, चण्डाल कुलमें वह शरीरसे शुभ कर्म करता है, वाणीसे शुभ कर्म करता है, मनसे शुभ कर्म करता है। वह शरीर, वाणी तथा मनसे शुभ कर्म कर, शरीर छूटनेपर, मरनेपर स्वर्गमें उत्पन्न होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी नीचेसे ऊपरकी ओर जानेवाला होता है।

भिक्षुओ, आदमी ऊपरसे नीचेकी ओर कैसे जाता है? भिक्षुओ, एक आदमी ऊँचे कुलमें जन्म ग्रहण करता है, क्षत्रिय महासारवान्में वह शरीरसे दुष्कर्म करता है, वाणीसे बुरा काम करता है, मनसे अकुशल कर्म करता है। वह शरीर वाणी तथा मनसे दुष्कर्म कर, शरीर छूटनेपर मरनेपर, नरकमें उत्पन्न होता है। इस प्रकार भिक्षुओ आदमी ऊपरसे नीचेकी ओर जाता है।

भिक्षुओ, आदमी ऊपरसे ऊपरकी ओर कैसे जाता है? भिक्षुओ, एक आदमी ऊँचे कुलमें जन्म ग्रहण करता है, क्षत्रिय महासारवान् कुलमें .. वह शरीर

वाणी तथा मनसे शुभ-कर्मकर, शरीर छूटनेपर मरनेपर, स्वर्गमें उत्पन्न होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी ऊपरसे ऊपरकी ओर जाता है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग होते है।

भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके लोग विद्यमान है। कौनसे चार तरहके? अचल-श्रमण, पुण्डरीक-श्रमण, पद्म-श्रमण तथा श्रमणोमे सुकुमार-श्रमण। भिक्षुओ, आदमी अचल-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु शैक्ष होता है, मार्गानुगामी होता है, अनुपम योग-क्षेमकी इच्छा करता हुआ विहरता है। भिक्षुओ, जैसे किसी मुकुट-धारी राजाका ज्येष्ठ पुत्र हो, जो अभिषेकके योग्य हो, किन्तु जिसका अभिषेक न हुआ हो और जो निश्चित रूपसे अभिषिक्त होनेवाला हो। इसी प्रकार भिक्षुओ, शैक्ष होता है, मार्गानुगामी होता है, अनुपम योग-क्षेमकी इच्छा करता हुआ घूमता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी अचल-श्रमण होता है।

भिक्षुओ, आदमी पुण्डरीक-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु आस्रवोका क्षय करके अनास्रव चित्त-विमुक्तिको प्रज्ञा-विमुक्तिको इसी शरीरमे स्वय जानकर, साक्षात्कर, प्राप्तकर विहार करता है, किन्तु वह (चित्त-) कायसे आठ प्रकारके विमोक्षोका अनुभव करता हुआ नही विचरता। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी पुण्डरीक-श्रमण होता है।

भिक्षुओ, आदमी पद्म-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ एक भिक्षु आस्रवोका क्षय कर . प्राप्तकर विहार करता है और वह (चित्त-) कायसे आठ प्रकारके विमोक्षोका अनुभव करता हुआ विचरता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी पद्म श्रमण होता है।

भिक्षुओ, आदमी श्रमणोमे सुकुमार-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु प्राय (दायको द्वारा स्वीकार करनेकी) प्रार्थना किये गये चीवरोका ही उपभोग करता है, प्रार्थना न किये गये चीवरोका अल्प मात्रामें, प्राय प्रार्थना किये गये पिण्डपातका ही उपभोग करता है, प्रार्थना न किये गये पिण्डपातका अल्प-मात्रामें, प्राय प्रार्थना किये गये शयनासनका ही उपभोग करता है, प्रार्थना न किये गये शयनासनका अल्प मात्रामें, प्राय प्रार्थना किये गये रोगी-प्रत्यय-भैषज्य परिष्कारका ही उपभोयोग करता है, प्रार्थना न किये गये रोगी-प्रत्यय भैषज्य परिष्कारका अल्प मात्रामें। जिन साथी भिक्षुओके साथ विचरता है वह प्राय उसके साथ अनुकूल ही शारीरिक व्यवहार करते है, प्रतिकूल कभी नही, अनुकूल ही वाणीका व्यवहार करते है, प्रतिकूल कभी ही, अनुकूल ही मानसिक व्यवहार करते है, प्रतिकूल कभी ही। वे अनुकूल ही शारीरिक-चैतसिक व्यवहार करते है।

जो पित्तसे उत्पन्न होनेवाले रोग होते हैं, श्लेपमसे उत्पन्न होनेवाले रोग होते हैं, वायुसे उत्पन्न होनेवाले रोग होते हैं, त्रिदोषसे उत्पन्न होने वाले रोग होते है, ऋतु परिवर्तनसे उत्पन्न होनवाले रोग होते हैं, विषम-परिहारसे उत्पन्न होनवाले रोग होते हैं, (वध-वधनादि) उपक्रमसे उत्पन्न होनेवाले रोग होते है अथवा कर्मफलके स्वरूप उत्पन्न वाले रोग होते है, उसे वे रोग प्राय नही होते। वह अल्प-रोगी होता है। जो चार चैतसिक ध्यान है, जिनकी प्राप्तिसे इसी शरीरमे सुख-विहरण होता है, वे उसे यूँ ही विना कठिनाईके, सरलतासे प्राप्त हो जाते है। वह आस्रवोका क्षय करके अनास्रव चित्त-विमुक्तिको प्रज्ञा-विमुक्तिको इसी शरीरमे स्वय जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर, विहार करता है। इस प्रकार भिक्षुओ, श्रमणोमें सुकुमार-श्रमण होता है। भिक्षुओ, यदि किसीके वारेमे ठीक-ठीक यह कहा जा सकता है कि वह श्रमणोमें सुकुमार-श्रमण है तो यह मेरे ही वारेमें ठीक-ठीक कहा जा सकता है कि मै श्रमणोमे सुकुमार-श्रमण हूँ। भिक्षुओ, मै ही प्राय (दायको द्वारा स्वीकार करनेकी) प्रार्थना किये गये चीवरोका ही उपयोग करता हूँ, प्रार्थना न किये गये चीवरोका अल्प मात्रामें, प्राय प्रार्थना किये गये पिण्डपातका ही उपयोग करता हूँ, प्रार्थना न किये गये पिण्ड-पातका अल्प मात्रामे, प्राय प्रार्थना किये गये शयनासनका ही उपभोग करता हूँ, प्रार्थना न किये गये शयनासनाका अल्पमात्रामें, प्राय प्रार्थना किये गये रोगी-प्रत्यय-भैषज्य-परिष्कारका ही उपभोग करता हूँ, प्रार्थना न कियेगयेरोगी-प्रत्यय-भैषज्य-परिष्कारका अल्प मात्रामें। जिन भिक्षुओके साथ विचरता हूँ वे प्राय मेरे साथ अनुकूल ही शारीरिक व्यवहार करते है, प्रतिकूल कभी ही , अनुकूल ही वाणीका व्यवहार करते है, प्रतिकूल कभी ही, अनुकूल ही मानसिक व्यवहार करते है, प्रतिकूल कभी ही। वे अनुकूल ही शारीरिक-चैतसिक व्यवहार करते है। जो पित्तसे उत्पन्न होने वाले रोग होते है, श्लेषमसे उत्पन्न होनेवाले रोग होते है, वायुसे उत्पन्न होने वाले रोग होते है, त्रिदोषसे उत्पन्न होनेवाले रोग होते है, ऋतु-परिवर्तनसे उत्पन्न होनेवाले रोग होते है, विपम-परिहारसे उत्पन्न होनेवाले रोग होते है, (वध वधनादि) उपक्रमसे उत्पन्न होनेवाले रोग होते है अथवा कर्म फलके स्वरूप उत्पन्न होनेवाले रोग होते है, वे रोग प्राय मुझे नही होते। मै अल्प रोगी हूँ। जो चार चैतस्निक ध्यान है, जिन की प्राप्तिसे इसी शरीरमे सुख-विहरण होता है, वे मुझे यूँ ही विना कठिनाई सरलतासे प्राप्त है। मै आस्रवोका क्षय करके अनास्रव चित्त-विमुक्तिको प्रज्ञा-विमुक्ति को इसी शरीरमें जानकर, स्वय साक्षात् कर, प्राप्तकर, विहार करता हूँ। भिक्षुओ, यदि किसीके वारेमें ठीक-ठीक यह कहा जा सकता है कि वह श्रमणोमें सुकुमार श्रमण

है तो यह मेरे ही बारेमे ठीक-ठीक कहा जाता सकता है कि मै श्रमणोमे सुकुमार-श्रमण हूँ। भिक्षुओ, दुनियामे ये चार तरहके लोग है।

भिक्षुओ, दुनियामे चार-तरहके लोग विद्यमान है। कौनसे चार तरहके? अचल-श्रमण, पुण्डरीक-श्रमण, पद्म-श्रमण तथा श्रमणोमे सुकुमार-श्रमण। भिक्षुओ, आदमी अचल-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु तीनो सयोजनोका क्षय करके स्रोतापन्न होता है, पतनकी सम्भावनासे परे, उसकी बोधि-प्राप्ति सुनिश्चित रहती है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी अचल-श्रमण होता है। भिक्षुओ, आदमी पुण्डरीक-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु तीनो सयोजनोका क्षय करके राग, द्वेष तथा मोहको दुर्बल बना सकृदागामी होता है, वह एक ही बार इस लोकमे आकर दु खका अन्त करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी पुण्डरीक-श्रमण होता है। भिक्षुओ, आदमी पद्म-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु पतनकी ओर ले जाने वाले पाचो सयोजनोका क्षय कर अनागामी वा ओपपातिक होता है, उसका वही (ब्रह्म लोकमे उत्पत्तिके अनन्तर) निर्वान हो जाता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी पद्म-श्रमण होता है। भिक्षुओ, आदमी श्रमणोमें श्रमण-सुकुमार कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु आस्रवोका क्षय कर. . साक्षात कर, प्राप्त कर, विहार करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी श्रमणोमें श्रमण-सुकुमार होता है। भिक्षुओ, दुनियामें चार प्रकारके लोग विद्यमान है।

भिक्षुओ, दुनियामे चार तरहके लोग विद्यमान है। कौनसे चार तरहके? अचल-श्रमण, पुण्डरीक-श्रमण, पद्म-श्रमण तथा श्रमणोमे श्रमण-सुकुमार। भिक्षुओ, आदमी अचल-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु सम्यक्-दृष्टि होता है, सम्यक्-सकल्पी होता है, सम्यक्-वाणी वाला होता है, सम्यक् कर्मान्त करनेवाला होता है, सम्यक् आजीविका वाला होता है, सम्यक्-व्यायाम करनेवाला होता है, सम्यक् स्मृतिवाला होता है तथा सम्यक् समाधिवाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी अचल-श्रमण होता है। भिक्षुओ, आदमी पुण्डरीक-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु सम्यक्-दृष्टि होता है, सम्यक् सकल्पी होता है, सम्यक्-वाणीवाला होता है, सम्यक्-कर्मान्त करने वाला होता है, सम्यक् आजीविका वाला होता है, सम्यक् -व्यायाम करने वाला होता है, सम्यक् स्मृति वाला होता है तथा सम्यक् समाधि वाला होता है। वह सम्यक्-ज्ञानी होता है। वह सम्यक्-विमुक्ति प्राप्त होता है, किन्तु वह (चित्त-) कायसे आठ प्रकारके मोक्षका स्पर्श करता हुआ नही विचरता। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी पुण्डरीक-श्रमण होता है। भिक्षुओ, आदमी पद्म-श्रमण कैसे होता है?

भिक्षुओ, भिक्षु सम्यक्-दृष्टि होता है, सम्यक् सकल्पी होता है, सम्यक् वाणी वाला होता है, सम्यक्-कर्मान्त करनेवाला होता है सम्यक् आजीविका वाला होता है, सम्यक् व्यायाम करनेवाला होता है, सम्यक् स्मृति वाला होता है तथा सम्यक् समाधिवाला होता है। वह सम्यक् ज्ञानी होता है। वह सम्यक् विमुक्ति प्राप्त होता है। वह (चित्त) कायसे आठ प्रकारके मोक्षका स्पर्श करता हुआ विचरता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी पद्म-श्रमण होता है। भिक्षुओ, आदमी श्रमणोमें श्रमण-सुकुमार कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु प्राय (दायको द्वारा स्वीकार करने की) प्रार्थना किये गये चीवरोका ही उपभोग करता है, प्रार्थना न किये गये चीवरोका अल्प मात्रामें . भिक्षुओ यदि किसीके बारेमें ठीक-ठीक यह कहा जा सकता है कि वह श्रमणोमे सुकुमार-श्रमण है तो यह मेरे ही बारेमे ठीक-ठीक कहा जा सकता है कि मैं श्रमणोमें सुकुमार-श्रमण हूँ। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग है।

—

भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके लोग विद्यमान है। कौनसे चार तरहके? अचल-श्रमण, पुण्डरीक-श्रमण, पद्म-श्रमण तथा श्रमणोमें सुकुमार-श्रमण। भिक्षुओ, अचल-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु शैक्ष होता है, अप्राप्त-अर्हत्व, वह अनुपम योग-क्षेमकी प्राप्तिकी कामना करता हुआ विहार करता है। इस प्रकार भिक्षुओ! आदमी अचल-श्रमण होता है। भिक्षुओ, आदमी पुण्डरीक-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु पाँच उपादान स्कन्धोंके उदय और व्ययको देखता विहार करता है—यह रूप है, यह रूपकी उत्पत्ति है, यह रूपका अस्त होना है, यह वेदना है . यह सज्ञा है ये सस्कार हैं यह विज्ञान है, यह विज्ञानकी उत्पत्ति है, यह विज्ञान-का अस्त होना है, किन्तु वह (चित्त-) कायसे आठ प्रकारके मोक्षोको स्पर्श करता हुआ विहार नही करता। इस प्रकार, भिक्षुओ, आदमी पुण्डरीक-श्रमण होता है। भिक्षुओ, आदमी पद्म-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु पाँच उपादान स्कन्धोके उदय और व्ययको देखता विहार करता है—यह रूप है, यह रूपकी उत्पत्ति है, यह रूपका अस्त होना है, यह वेदना है यह सज्ञा है ये सस्कार है ये विज्ञान है, यह विज्ञानकी उत्पत्ति है, यह विज्ञानका अस्त होना है। वह (चित्त-) कायसे आठ प्रकारके विमोक्षको स्पर्श करता हुआ विहार करता है। इस प्रकार भिक्षुओ आदमी पद्म-श्रमण होता है। भिक्षुओ, आदमी श्रमणोमें श्रमण-सुकुमार कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु प्राय (दायको द्वारा स्वीकार करनेकी) प्रार्थना किये गये चीवरोका ही उपभोग करता है, प्रार्थना न किये गये चीवरोका अल्प मात्रामें भिक्षुओ यदि किसीके बारेमें

ठीक-ठीक यह कहा जा सकता है कि वह श्रमणोमे सुकुमार-श्रमण है तो यह मेरे ही बारेमें ठीक-ठीक कहा जा सकता है कि मैं श्रमणोमे सुकुमार-श्रमण हूँ। भिक्षुओ दुनियामे ये चार तरहके लोग हैं।

(५) असुर-वर्ग

भिक्षुओ, दुनियामे चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार प्रकारके? असुर-परिषद सहित असुर, देव-परिषद सहित असुर, असुर-परिषद सहित देव, देव-परिषद सहित देव। भिक्षुओ, असुरपरिषद सहित असुर कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी दुश्शील होता है, पापी होता है। उसकी परिपद भी दुश्शील होती है, पापी। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी असुर परिषद सहित असुर होता है। भिक्षुओ देवपरिषद् सहित असुर कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी दुश्शील होता है, पापी होता है। किन्तु उसकी परिषद शीलवान होती है, सदाचारपरायण। इस प्रकार भिक्षुओ आदमी देव परिषद सहित असुर होता है। भिक्षुओ, आदमी असुर परिषद सहित देव कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी शीलवान् होता है, सदाचारी। किन्तु उसकी परिषद् होती है दुश्शील, पापी। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी असुर परिषद् सहित देव होता है। भिक्षुओ, आदमी देव परिषद् सहित देव कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी शीलवान् होता है सदाचार परायण। उसकी परिषद् भी शीलवान् होती है, सदाचार परायण। इस प्रकार भिक्षुओ आदमी देव-परिषद सहित देव होता है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकार के लोग विद्यमान है।

भिक्षुओ, इस दुनियामे चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार प्रकारके? भिक्षुओ एक आदमीको चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध रहती है, किन्तु उसे प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध नही रहती। एक आदमीको प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिंद्ध रहती है, किन्तु चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध नही रहती। एक आदमीको न चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध रहती है, न प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना। एक आदमीको चित्तकी शमथ-भावना भी सिंद्ध रहती है और प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना भी। भिक्षुओ, दुनियामे चार तरहके लोग विद्यमान है।

भिक्षुओ, इस दुनियामें चार प्रकारके लोग विद्यमान है। कौनसे चार प्रकारके? भिक्षुओ, एक आदमीको चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध रहती है, किन्तु उसे प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध नही रहती। एक आदमीको प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध रहती है, किन्तु उसे चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध नही रहती। एक आदमीको न चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध रहती है, न प्रज्ञा की विदर्शना-भावना। एक आदमी

को चित्तकी शमथ-भावना भी सिद्ध रहती है और प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना भी। भिक्षुओ, जिस किसीको चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध हो और प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध न हो उस आदमीको चाहिये कि वह चित्तकी शमथ-भावनामें प्रतिष्ठित होकर प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना की सिद्धिके लिये प्रयास करे। समय बीतनेपर उसे चित्तकी शमथ-भावनाकी सिद्धि भी प्राप्त रहती है, और प्रज्ञाकी विदर्शना-भावनाकी सिद्धि भी प्राप्त हो जाती है। भिक्षुओ, जिस किसीको प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध हो और चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध न हो उस आदमीको चाहिये वह प्रज्ञाकी विदर्शना-भावनामें प्रतिष्ठित होकर चित्तकी शमथ-भावनाकी सिद्धिके लिये प्रयास करे। समय बीतनेपर उसे प्रज्ञाकी विदर्शना-भावनाकी सिद्धि भी प्राप्त रहती है और चित्तकी शमथ-भावनाकी सिद्धि भी प्राप्त हो जाती है। और भिक्षुओ, जिस किसीको न चित्तकी शमथ-भावनाकी सिद्धि हो और न प्रज्ञाकी विदर्शना भावनाकी सिद्धि हो, उस आदमीको चाहिये कि उन्ही कुशल-धर्मोकी प्राप्तिके लिये विशेष कोशिश करे, प्रयास करे, उत्साहसे काम ले, विना रुके स्मृति तथा सम्प्रजन्यसे युक्त हो। भिक्षुओ, जैसे किसीके कपडोमे आग लग जाय, सिरके वाल ही जल उठें, तो वह उन कपडोकी या अपने सिरके वालोकी आग बुझानेके लिये ही कोशिश करता है, प्रयास करता है, उत्साहसे काम लेता है, विना पीछे हटे स्मृति तथा सम्प्रयजन्यसे युक्त होता है, इसी प्रकार भिक्षुओ, उस आदमीको चाहिये कि उन्ही कुशल-धर्मोकी प्राप्तिके लिये विशेष कोशिश करे, प्रयास करे, उत्साहसे काम ले, विना रुके स्मृति तथा सम्प्रजन्यसे युक्त हो। समय बीतनेपर उसे चित्तकी शमथ-भावना भी सिद्ध हो जाती है, प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना भी सिद्ध हो जाती है। भिक्षुओ, जिस किसीको चित्तकी शमथ-भावना भी सिद्ध हो और प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना भी सिद्ध हो तो भिक्षुओ, उस आदमीको चाहिये कि उन्ही कुशल धर्मोमें प्रतिष्ठित होकर आगे आस्रवोंके क्षय के लिये प्रयास करे। भिक्षुओ, दुनियामे ये चार प्रकारके लोग विद्यमान है।

भिक्षुओ, इस दुनियामे चार प्रकारके लोग विद्यमान है। कौनसे चार प्रकारके? भिक्षुओ, एक आदमीको चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध रहती है, किन्तु उसे प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध नही रहती। भिक्षुओ, एक आदमीको प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध रहती है, किन्तु उसे चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध नही रहती। भिक्षुओ, एक आदमीको न चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध रहती है, न प्रज्ञाकी विदर्शना भावना। भिक्षुओ, एक आदमीको चित्तकी शमथ-भावना भी सिद्ध रहती है, प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना भी। भिक्षुओ, जिस किसीको चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध हो, किन्तु

प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध न हो, उस आदमीको चाहिये कि वह जिसे प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध हो उसके पास जाय और उससे पूछे—आयुष्मान् ! सस्कारोके प्रति क्या दृष्टि रखनी चाहिये ? सस्कारोका कैसे विचार करना चाहिये ? सस्कारो का कैसे चिन्तन करना चाहिये ? वह उसे अपनी दृष्टिके अनुसार अपनी जानकारीके अनुसार बतायेगा—आयुष्मान् ! सस्कारोके प्रति अैसी दृष्टि रखनी चाहिये, सस्कारोका इस प्रकार विचार करना चाहिये, सस्कारोका इस प्रकार चिन्तन करना चाहिये। समय बीतनेपर उसे चित्तकी शमथ-भावना और प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना दोनो प्राप्त रहेगी। भिक्षुओ, जिस किसीको प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध हो किन्तु चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध न हो, उस आदमी को चाहिये कि वह जिसे चित्तकी शमथ भावना सिद्ध हो उस आदमीके पास जाय और उससे पूछे—आयुष्मान् ! चित्तको कैसे सभालना चाहिये ? चित्तको कैसे शान्त करना चाहिये ? चित्तको कैसे एकाग्र करना चाहिये ? चित्तको कैसे स्थिर करना चाहिये ? वह उसे अपनी (सम्यक्) दृष्टि तथा जानकारीके अनुसार कहेगा कि चित्तको कैसे सभालना चाहिये, चित्तको कैसे शान्त करना चाहिये ?' चित्तको कैसे एकाग्र करना चाहिये, चित्तको कैसे स्थिर करना चाहिये ? समय बीतने पर उसे प्रज्ञा की विदर्शना-भावना और चित्तकी शमथ-भावना दोनो प्राप्त रहेगी।

भिक्षुओ, जिस किसीको न चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध हो और न प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध हो, उस आदमीको चाहिये कि जिस आदमीको चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध हो, जिस आदमीको प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध हो वह उसके पास जाये और पूछे—आयुष्मान् ! आयुष्मान् चित्तको कैसे सभालना चाहिये ? चित्तको कैसे शान्त करना चाहिये ! चित्तको कैसे एकाग्र करना चाहिये ? चित्तको कैसे स्थिर करना चाहिये ? सस्कारोके प्रति क्या दृष्टि रखनी चाहिये ? सस्कारोका कैसे विचार करना चाहिये ? सस्कारोका कैसे चिन्तन करना चाहिये ? वह उसे अपनी (सम्यक्) दृष्टिके अनुसार, अपनी जानकारीके अनुसार कहेगा कि चित्तको अैसे सभालना चाहिये, चित्तको अैसे शान्त करना चाहिये, चित्तको अैसे एकाग्र करना चाहिये, चित्तको अैसे स्थिर करना चाहिये ? सस्कारोके प्रति अैसी दृष्टि रखनी चाहिये ? सस्कारोका इस प्रकार विचार करना चाहिये ? सस्कारोका इस प्रकार चिन्तन करना चाहिये। समय बीतनेपर उसे चित्तकी शमथ-भावना और प्रज्ञाकी विदर्शना भावना दोनो प्राप्त रहेगी।

भिक्षुओ, जिस आदमीको चित्तकी शमथ-भावना भी सिद्ध हो और प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना भी सिद्ध हो तो भिक्षुओ, उस आदमीको चाहिये कि उन्ही कुशल-

धर्मोमें प्रतिष्ठित होकर आगे आस्रवोंके क्षयके लिये प्रयास करे। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकारके लोग विद्यमान है।

भिक्षुओ, दुनियामें चार प्रकारके लोग है। कौनसे चार प्रकारके ? न आत्म-हितमें लगा हुआ और न पर-हितमे लगा हुआ, पर-हितमें लगा हुआ किन्तु आत्म-हितमे नही, आत्म-हितमे लगा हुआ किन्तु परहितमें नही, आत्म-हित तथा परहित दोनोमें लगा हुआ। भिक्षुओ, जैसे श्मशानकी लकडी हो जो दोनो सिरोंसे जल रही हो और जिसके बीच में गूंह लगा हुआ हो, वह न गांवमे ही लकडीके काम आती है और न जगलमें। भिक्षुओ, वैसा ही मैं उस आदमीको कहता हूँ कि जो न आत्म-हितमें लगा रहता है और न परहितमे। भिक्षुओ, जो आदमी परहितमे लगा रहता है और आत्म-हितमे नही, वह पहले दोनो प्रकारके लोगोमें बढिया है, श्रेष्ठतर है। भिक्षुओ, जो आदमी आत्म-हितमे लगा रहता है किन्तु पर-हितमें नही वह पहले तीनो प्रकारके लोगोमे बढिया है, श्रेष्ठतर है। भिक्षुओ, जो आदमी आत्म-हित तथा पर-हित दोनोमे लगा रहता है, वह इन चारो प्रकारके लोगोमें अग्र है, श्रेष्ठ है, प्रमुख है, उत्तम है, प्रवर है। भिक्षुओ, जैसे गौ से दूध होता है, दूधसे दही, दहीसे मक्खन, मक्खनसे घी, घीसे शुद्ध घी—शुद्ध घी ही सबसे श्रेष्ठ कहलाता है। इस प्रकार भिक्षुओ, जो आदमी आत्म-हित तथा पर-हित दोनोमें लगा रहता है, वह इन चारो प्रकारके लोगोमें अग्र है, श्रेष्ठ है, प्रमुख है, उत्तम है, प्रवर है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकारके लोग है।

भिक्षुओ, दुनियामें चार प्रकारके लोग है। कौनसे चार प्रकारके ? आत्म-हितमें लगा हुआ किन्तु पर-हितमें नही; परहितमें लगा हुआ किन्तु आत्म-हितमें नही, न आत्म-हितमे लगा हुआ न परहितमें, आत्म-हित तथा परहित दोनोमें लगा हुआ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे आत्म-हितमें लगा होता है किन्तु, पर-हितमें नही। भिक्षुओ, एक आदमी अपने रागको जीतनेमें लगा होता है, किन्तु दूसरोको रागको जीतनेकी प्रेरणा नही देता, अपने द्वेपको जीतनमें लगा होता है, किन्तु दूसरोको द्वेषको जीतनेकी प्रेरणा नही देता, अपने मोह (=मूढता) को जीतनेमें लगा होता है, किन्तु दूसरोको मोहको जीतनेकी प्रेरणा नही देता। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी आत्म-हितमें लगा होता है किन्तु पर-हितमें नही।

भिक्षुओ, आदमी कैसे पर-हितमें लगा होता है किन्तु आत्म-हितमे नही ? भिक्षुओ, एक आदमी अपने रागको जीतनेमें लगा नही होता, किन्तु दूसरोको रागके जीतनेकी प्रेरणा देता है, अपने द्वेषको जीतनेमें लगा नही होता, किन्तु दूसरोको

द्वेषके जीतनेकी प्रेरणा देता है, अपने मोहको जीतनेमे नही लगा होता, किन्तु दूसरोको मोहके जीतनेकी प्रेरणा देता है—इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी पर-हित करनेमे लगा होता है, किन्तु आत्म-हितमे नही।

भिक्षुओ, आदमी कैसे न आत्म-हितमे लगा होता है, न परहितमे? भिक्षुओ, एक आदमी न अपने रागको जीतनेमें लगा होता है, न दूसरोको रागके जीतनेकी प्रेरणा देता है, न अपने द्वेषको जीतनेमे लगा होता है, न दूसरोको द्वेपके जीतनेकी प्रेरणा देता है, न अपने मोहको जीतनेमे लगा होता है, न दूसरोको मोहके जीतनेकी प्रेरणा देता है—इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी न आत्म-हितमे लगा होता है, न पर-हितमे।

भिक्षुओ, आदमी कैसे आत्म-हित तथा परहित दोनोमे लगा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी अपने रागको जीतनेमे लगा होता है, दूसरोको रागके जीतनेकी प्रेरणा देता है, अपने द्वेषको जीतनेमे लगा होता है, दूसरोको द्वेषके जीतनेकी प्रेरणा देता है, अपने मोहको जीतनेमे लगा होता है, दूसरोको मोहके जीतनेकी प्रेरणा देता है—इस तरह प्रकार भिक्षुओ, आदमी आत्म-हित तथा पर-हित दोनों मे लगा होता है। भिक्षुओ, दुनियामे ये चार तरह के लोग है।

भिक्षुओ, दुनियामे चार तरहके लोग है। कौनसे चार तरहके? आत्म-हितमें लगा हुआ, किन्तु परहितमे नही, परहितमे लगा हुआ, किन्तु आत्म-हितमे नही; न आत्म-हितमे लगा हुआ न परहितमे, आत्म-हित तथा परहित दोनोमे लगा हुआ। भिक्षुओ, आदमी कैसे आत्म-हितमे लगा होता है, किन्तु परहितमे नही। भिक्षुओ, एक आदमी कुशल-धर्मोंको शीघ्र ग्रहणकर लेनेवाला होता है, सुने हुए धर्मोंको धारण कर सकने वाला होता है, धारण किये हुए धर्मोंके अर्थका विचार करनेवाला होता है, वह अर्थ तथा धर्मको सम्यक् प्रकार जानकर तद्नुसार आचरण करनेवाला होता है; किन्तु वह सुन्दर भाषण कर सकने वाला नही होता, आकर्षक भाषण देने वाला नही होता, वह विनम्र, स्वच्छ, निर्दोष, स्पष्ट अर्थको व्यक्त करनेवाली वाणीसे युक्त नही होता, वह अपने साथियोको (मार्ग) दिखाने वाला नही होता, उत्साहित करनेवाला नही होता, वढावा देनेवाला नही होता, प्रसन्न करनेवाला नही होता। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी आत्म-हितमे लगा होता है किन्तु परहितमें नही।

भिक्षुओ, आदमी कैसे परहितमें लगा होता है किन्तु आत्म-हितमे नही? भिक्षुओ, एक आदमी कुशल धर्मोंको शीघ्र ग्रहण कर सकनेवाला नही होता, सुने हुए धर्मोंको धारण कर सकनेवाला नही होता, धारण किये हुए धर्मोंके अर्थका विचार कर सकनेवाला नही होता, वह अर्थ तथा धर्मको सम्यक् प्रकार जानकर तद्नुसार

आचरण करनेवाला नही होता, किन्तु वह सुन्दर भाषण कर सकने वाला होता है, आकर्षक भाषण दे सकनेवाला होता है, वह विनम्र, स्वच्छ, निर्दोष, स्पष्ट, अर्थको व्यक्त करनेवाली वाणीसे युक्त होता है, वह अपने साथियोको (मार्ग) दिखानेवाला होता है, उत्साहित करनेवाला होता है, वढावा देनेवाला होता है, प्रसन्न करनेवाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी परहितमे लगा होता है, किन्तु आत्म-हितमें नही।

भिक्षुओ, आदमी कैसे न आत्म-हितमें लगा होता है, न परहितमें। भिक्षुओ, एक आदमी कुशल धर्मोको शीघ्र ग्रहण कर सकने वाला नही होता, सुने हुए धर्मोको धारणकर सकनेवाला नही होता, धारण किये हुए धर्मोके अर्थका विचार कर सकनेवाला नही होता, वह अर्थ तथा धर्मको सम्यक् प्रकार जानकर तद्नुसार आचरण करनेवाला नही होता। वह सुन्दर भाषण कर सकनेवाला नही होता। आकर्षक भाषण देने वाला नही होता। वह विनम्र, स्वच्छ, निर्दोष, स्पष्ट, अर्थको व्यक्त करनेवाली वाणीसे युक्त नही होता, वह अपने साथियोको (मार्ग) दिखाने वाला नही होता, उत्साहित करनेवाला नही होता, वढावा देनेवाला नही होता, प्रसन्न करने वाला नही होता। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी न आत्म-हित करनेवाला होता है, न परहित करनेवाला।

भिक्षुओ, आदमी कैसे आत्म-हित तथा परहित दोनोमें लगा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी कुशल धर्मोको शीघ्र ग्रहण कर लेनेवाला होता है, सुने हुए धर्मोको धारण कर सकने वाला होता है, धारण किये हुए धर्मोके अर्थका विचार कर सकने वाला होता है, वह अर्थ तथा धर्मको सम्यक् प्रकार जानकर तद्नुसार आचरण करनेवाला होता है। वह सुन्दर भाषण कर सकने वाला होता है, आकर्षक भाषण दे सकने वाला होता है। वह विनम्र स्वच्छ, निर्दोष, स्पष्ट, अर्थको व्यक्त करने वाली वाणीसे युक्त होता है। वह अपने साथियोको (मार्ग) दिखाने वाला होता है, उत्साहित करनेवाला होता है, वढावा देने वाला होता है, प्रसन्न करने वाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी आत्म-हित तथा परहित दोनोमें लगा रहता है, । भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके लोग विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग है। कौनसे चार तरहके? आत्म-हितमें लगा हुआ, किन्तु परहितमें नही, परहितमें लगा हुआ, किन्तु आत्म-हितमें नही, न आत्म-हितमें लगा हुआ, न परहितमें, आत्म-हित तथा परहित दोनोमे लगा हुआ भिक्षुओ, दुनियामे ये चार प्रकारके लोग विद्यमान है।

भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग विद्यमान है। कौनसे चार तरहके ? आत्म-हितमे लगा हुआ, किन्तु परहितमें नही, परहितमे लगा हुआ, किन्तु आत्म-हितमें नही; न आत्म-हितमे लगा हुआ, न परहितमें; आत्म-हित तथा परहित दोनोमे लगा हुआ। भिक्षुओ, आदमी कैसे आत्म-हितमें लगा हुआ होता है, किन्तु पर-हितमे नही ? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय प्राणी-हिंसासे विरत होता है, किन्तु दूसरोको प्राणातिपातसे विरत रहनेकी प्रेरणा नही करता, स्वय चोरी करनेसे विरत रहता है किन्तु दूसरोको चोरीसे विरत रहनेकी प्रेरणा नही करता, स्वय काम मिथ्याचारसे विरत होता है किन्तु दूसरोको कामभोग सम्बन्धी मिथ्याचारसे विरत रहनेकी प्रेरणा नही करता; स्वय झूठ बोलनेसे विरत होता है, किन्तु दूसरोको झूठ बोलनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा नही करता, स्वय सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली चीजोका सेवन करनेसे विरत रहता है, दूसरोको सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली चीजोंसे विरत रहनेकी प्रेरणा नही करता। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी आत्म-हित करनमे लगा होता है, किन्तु पर-हित करनेमें नही।

भिक्षुओ, आदमी कैसे परहित करनेमें लगा होता है, किन्तु आत्म-हितमें नही। भिक्षुओ, एक आदमी स्वय तो प्राणी-हिंसासे विरत नही होता, किन्तु दूसरोको प्राणी-हिंसासे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है; स्वय चोरीसे विरत नही होता, किन्तु दूसरोको चोरीसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वय कामभोग सम्वन्धी मिथ्याचारसे विरत नही होता, किन्तु दूसरोको कामभोग सम्वन्धी मिथ्याचारसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है; स्वय झूठ बोलनेसे विरत नही होता, किन्तु दूसरोको झूठ बोलनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वय सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली चीजोंके सेवनसे विरत नही होता, किन्तु दूसरोको सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली चीजोंके सेवनसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी परहित करनेमे लगा होता है, किन्तु आत्म-हितमे नही।

भिक्षुओ, किस प्रकार आदमी न आत्म-हितमे लगा होता है और न परहितमे लगा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी न तो स्वय प्राणी-हिंसासे विरत होता है, न दूसरोको प्राणी-हिंसासे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, न तो स्वय चोरीसे विरत होता है, न दूसरोको चोरीसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, न स्वय कामभोग सम्वन्धी मिथ्याचारसे विरत होता है, न दूसरोको काम भोग सम्वन्धी मिथ्याचारसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, न स्वय झूठ वोलनेसे विरत होता है, न दूसरोको

झूठ बोलनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, न स्वय सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली चीजोके सेवनसे विरत रहता है, न दूसरोको सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली चीजोंके सेवनसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी न आत्म-हित करनेमे लगा होता है, न परहित में लगा होता है।

भिक्षुओ, आदमी किस प्रकार आत्म-हित तथा परहित दोनो करनेमें लगा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय भी प्राणी-हिंसासे विरत होता है, दूसरोको भी प्राणी-हिंसासे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वय भी चोरीसे विरत होता है, दूसरोको भी चोरीसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वय भी कामभोग सम्वन्धी मिथ्याचारसे विरत होता है, दूसरोको भी काम-भोग सम्वन्धी मिथ्याचारसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है,, स्वय भी झूठ बोलनेसे विरत होता है, दूसरोको भी झूठ बोलनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वय भी सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली चीजोके सेवनसे विरत रहता है, दूसरोको भी सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली चीजोंके सेवनसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी आत्म-हित तथा परहित दोनो करनेमें लगा रहता है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग विद्यमान है।

उस समय पोतलिय परिव्राजक जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवानका कुशल-क्षेम पूछ एक ओर वैठ गया। एक ओर वैठे हुए पोतलिय परिव्राजक को भगवानने कहा "पोतलिय! ससारमें चार तरहके लोग विद्यमान है। कौनसे चार तरहके? पोतलिय! एक आदमी समय समयपर जो निन्दनीय है उसकी यथार्थ निन्दा करने वाला होता है, किन्तु जो प्रशसनीय है उसकी यथार्थ प्रशसा करने वाला नही होता। पोतलिय! एक आदमी समय समय पर जो प्रशसनीय है उसकी यथार्थ प्रशसा करने वाला होता है, किन्तु जो निन्दनीय है उसकी यथार्थ निन्दा करने वाला नही होता। पोतलिय। एक आदमी समय समय पर न निन्दनीयकी यथार्थ निन्दा करने वाला होता है, न प्रशसनीयकी यथार्थ प्रशसा करने वाला होता है। पोतलिय! एक आदमी समय समयपर निन्दनीयकी यथार्थ निन्दा करने वाला होता है, प्रशसनीय की यथार्थ प्रशसा करने वाला होता है। पोतलिय! ससारमे ये चार प्रकारके लोग विद्यमान है। पोतलिय! इन चार प्रकारके लोगोमे से तुम्हे कौनसी प्रकारके लोग अधिक अच्छे, श्रेष्ठतर प्रतीत होते है? गौतम! इस ससारमें चार प्रकारके लोग हैं कौनसे चार प्रकारके? हे गौतम! एक आदमी समय समयपर जो निन्दानीय है उसकी यथार्थ निन्दा करने वाला होता है, किन्तु जो प्रशसनीय है उसकी यथार्थ प्रशसा

करने वाला नही होता। हे गौतम! एक आदमी समय समयपर जो प्रशसनीय है उसकी यथार्थ प्रशसा करने वाला होता है, किन्तु जो निन्दनीय है उसकी यथार्थ निन्दा करने वाला नही होता। हे गौतम! एक आदमी समय समयपर न निन्दनीयकी यथार्थ निन्दा करने वाला होता है, न प्रशसनीयकी यथार्थ प्रशसा करने वाला होता है। हे गौतम एक आदमी समय समयपर निन्दनीयकी यथार्थ निन्दा करने वाला होता है, प्रशसनीय की यथार्थ प्रशसा करने वाला होता है। हे गौतम! ससारमे ये चार प्रकारके लोग विद्यमान है। इन चार प्रकारके लोगोमेसे जो समय समयपर न निन्दनीयकी यथार्थ निन्दा करने वाला होता है, न प्रशसनीयकी यथार्थ प्रशसा करने वाला होता है, मुझे हे गौतम! अधिक अच्छा, श्रेष्ठतर प्रतीत होता है। यह किस लिये? क्योकि हे गौतम! उपेक्षा करना बडी अच्छी बात है।"

"पोतलिय! इस ससारमे चार प्रकारके लोग है। कौनसे चार प्रकारके? . . पोतलिय! इस ससारमें ये चार प्रकारके लोग है। हे पोपलिय! इन चार प्रकारके लोगोमे जो समयपर निन्दनीयकी निन्दा करता है, जो समय समयपर प्रशसनीय की प्रशसा करता है वह इन चार प्रकारके लोगोमें अधिक अच्छा है, श्रेष्ठतर है। ऐसा क्यो? पोतलिय! यत्र तत्र कालज्ञ होना अधिक अच्छा है, श्रेष्ठतर है।

"गौतम! इस ससारमें चार प्रकारके लोग है। कौनसे चार प्रकारके? . . हे गौतम! इस ससारमे ये चार प्रकारके लोग है। हे गौतम! इन चार प्रकारके लोगोमें जो समयपर निन्दनीयकी निन्दा करता है, जो समयपर प्रशसनीयकी प्रशसा करता है वह इन चार प्रकारके लोगोमें अधिक अच्छा है, श्रेष्ठतर है। ऐसा क्यो? हे गौतम! यत्र तत्र कालज्ञ होना अधिक अच्छा है, श्रेष्ठतर है।

"बहुत अच्छा है हे गौतम! बहुत अच्छा है हे गौतम! जैसे कोई उल्टेको सीधाकर दे, अथवा ढकेको उघाड दे, अथवा मार्ग-भ्रष्टको मार्ग दिखा दे अथवा अन्धेरेमें प्रदीप जला दे ताकि आँख वाले चीजोको देख सके। इस प्रकार गौतमने अनेक प्रकारसे धर्मको प्रकाशित कर दिया। यह मै आप गौतमकी शरण ग्रहण करता हूँ, धर्मकी तथा भिक्षुसघकी शरण ग्रहण करता हूँ। आप गौतम आजसे मेरे शरीरमे प्राण रहने तक मुझे उपासकरूपसे स्वीकार करे।

(१) वलाहक वर्ग

एक समय भगवान् श्रावस्तीमें अनाथ पिण्डिकके जेतवनाराममें विहार करते थे। वहाँ भगवान्ने भिक्षुओको निमत्रित किया—"भिक्षुओ!" भिक्षुओने प्रति उत्तर दिया—"भदन्त।" तव भगवान्ने यह कहा—

"भिक्षुओ, बादल चार तरहके होते हैं। कौनसे चार तरहके? गरजने वाले किन्तु बरसने वाले नही, बरसने वाले किन्तु गरजने वाले नही, न गरजने वाले, न बरसने वाले, गरजने वाले तथा बरसने वाले। भिक्षुओ, ये चार प्रकारके बादल होते हैं। भिक्षुओ, इसी प्रकार ससारमें, बादलोंसे समानता रखने वाले ये चार प्रकारके लोग होते हैं। कौनसे चार प्रकारके? गरजने वाले, किन्तु बरसने वाले नही, बरसने वाले, किन्तु गरजने वाले नहीं, न गरजने वाले, न बरसने वाले। गरजने वाले भी और बरसने वाले भी। भिक्षुओ, एक आदमी कैसे गरजने वाला होता है, किन्तु बरसने वाला नही? भिक्षुओ एक आदमी बोलने वाला होता है, किन्तु करने वाला नही। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी गरजने वाला होता है, किन्तु बरसने वाला नही। जैसे भिक्षुओ वह बादल गरजता है, बरसता नही, भिक्षुओ वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमे कहता हूँ। भिक्षुओ, एक आदमी कैसे बरसने वाला होता है, किन्तु गरजने वाला नही? भिक्षुओ, एक आदमी करने वाला होता है, किन्तु बोलने वाला नही। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी बरसने वाला होता है, गरजने वाला नही। भिक्षुओ, जैसे वह बादल बरसता है, गरजता नही, भिक्षुओ, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमे कहता हूँ। भिक्षुओ, एक आदमी कैसे न गरजने वाला होता है, न बरसने वाला। भिक्षुओ, एक, आदमी न बोलने वाला होता है, न करने वाला। इस प्रकार भिक्षओ, आदमी न गरजने वाला होता है न बरसने वाला। भिक्षुओ, जैसे वह बादल न गरजता है, न बरसता है, भिक्षुओ, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमे कहता हूँ। भिक्षुओ, कैसे एक आदमी गरजने वाला भी होता है, बरसने वाला भी होता है? भिक्षुओ, एक आदमी बोलने वाला भी होता है, करने वाला भी होता है। इस प्रकार भिक्षुओ आदमी गरजने वाला भी होता है, बरसने वाला भी होता है। भिक्षुओ, जैसे वह बादल गरजने वाला भी होता है, बरसने वाला भी होता है, भिक्षुओ, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, ससारमे बादलोंसे समानता रखने वाले ये चार तरहके लोग है।

भिक्षुओ, बादल चार तरहके होते हैं। कौनसे चार तरहके? गरजने वाले किन्तु बरसने वाले नही, बरसने वाले किन्तु गरजने वाले नही, न गरजने वाले, न बरसने वाले, गरजने वाले तथा बरसने वाले। भिक्षुओ, ये चार प्रकारके बादल होते हैं। भिक्षुओ, इसी प्रकार ससारमें बादलोंसे समानता रखने वाले ये चार प्रकारके लोग होते हैं। कौनसे चार प्रकारके? गरजने वाले किन्तु बरसने वाले नही, बरसने वाले किन्तु गरजने वाले नही, न गरजने वाले, न बरसने वाले; गरजने वाले और बरसने वाले भी। भिक्षुओ, आदमी कैसे गरजने वाला होता है, किन्तु बरसने वाल

नही ? भिक्षुओ, एक आदमी धर्मका पाठ करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, जातकका, अद्भुतधर्मका, वेदल्लका। किन्तु वह यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे नही जानता। यह दुःखका समुदाय है, यह यथार्थ रूपसे नही जानता। यह दुःखका निरोध है, यह यथार्थ रूपसे नही जानता। यह दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा है, यह यथार्थ रूपसे नही जानता। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी गरजने वाला होता है, बरसने वाला नही। जैसे भिक्षुओ, वह बादल गरजने वाला होता है, बरसने वाला नही, मैं भिक्षुओ, उसीके समान इस आदमीको कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे बरसने वाला होता है, गरजने वाला नही ? भिक्षुओ एक आदमी धर्मका पाठ नही करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्भुत-धर्मका, तथा वेदल्लका। किन्तु वह यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है यह दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। इस प्रकार भिक्षुओ आदमी बरसने वाला होता है, गरजने वाला नही। जैसे भिक्षुओ, वह बादल बरसने वाला होता है, गरजने वाला नही, भिक्षुओ, मैं उसीके समान इस आदमीको कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे न गरजने वाला होता है, न बरसने वाला। भिक्षुओ, एक आदमी धर्मका पाठ नही करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तका, जातकका, अद्भुत-धर्मका तथा वेदल्लका। वह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है यह दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी न गरजने वाला होता है, न बरसने वाला। जैसे भिक्षुओ, वह बादल न गरजने वाला होता है, न बरसने वाला, भिक्षुओ, मैं उसीके समान इस आदमीको कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे गरजने वाला और बरसने वाला होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी धर्मका पाठ करता है, सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्भुत-धर्मका तथा वेदल्लका। वह यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है . यह दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी गरजने वाला और बरसने वाला होता है। जैसे भिक्षुओ, वह बादल गरजने वाला और बरसने वाला होता है, मैं उसीके समान इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, ससारमें ये चार आदमी बादलोंसे समानता रखते है।

भिक्षुओ, ये चार तरहके घडे होते है। कौनसे चार तरहके? खाली किन्तु ढका हुआ; ढका हुआ, किन्तु मुंह खुला हुआ, खाली और मुंह खुला हुआ, भरा हुआ तथा ढका हुआ। भिक्षुओ, ये चार प्रकारके घडे होते है।

इसी प्रकार भिक्षुओ, इस ससारमें इन घडोसे ही समानता रखने वाले चार तरहके आदमी है। कौनसे चार तरहके? खाली किन्तु ढका हुआ, भरा हुआ, किन्तु मुंह खुला, खाली और मुंह खुला हुआ, भरा हुआ और ढका हुआ। भिक्षुओ, आदमी कैसे खाली किन्तु ढका हुआ होता है? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर होता है, देखना-भालना प्रियकर होता है, (अगोका) सिकोडना फैलाना प्रियकर होता है। किन्तु वह यह दु ख है, यह यथार्थ रूपसे नही जानता . यह दु ख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे नही जानता, भिक्षुओ, ढका हुआ होता है, वैसा ही मै इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे भरा हुआ किन्तु मुंह खुला हुआ होता है? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना फिरना प्रियकर नही होता है, देखना-भालना प्रियकर नही होता है, (अगोका) सिकोडना फैलाना प्रियकर नही होता है तथा सघाटी-पात्र-चीवरका धारण करना प्रियकर नही होता है। किन्तु वह यह दु ख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है . यह दु ख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी भरा हुआ, किन्तु मुंह खुला होता है। भिक्षुओ, जैसे वह घडा भरा हुआ, किन्तु मुंह खुला होता है, वैसा ही मै इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे खाली और मुंह खुला हुआ होता है? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर नही होता है, देखना-भालना प्रियकर नही होता है, (अगोका) सिकोडना-फैलाना प्रियकर नही होता है तथा सघाटी-पात्र-चीवर धारण करना प्रियकर नही होता है। वह यह दु ख है यह यथार्थ रूपसे नही जानता यह दु ख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे नही जानता। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी खाली और मुंह खुला होता है। भिक्षुओ, जैसे वह घडा खाली और मुंह खुला होता है, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे भरा हुआ और ढका हुआ होता है? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर होता है, देखना-भालना प्रियकर होता है, (अगोका) सिकोडना,फैलाना प्रियकर होता है तथा सघाटी-पात्र-चीवरका धारण करना प्रियकर होता है। वह यह दु ख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है यह दु ख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। भिक्षुओ,

स प्रकार आदमी भरा हुआ और ढका हुआ होता है। भिक्षुओ, जैसे वह घडा भरा हुआ और ढका हुआ होता है, वैसा ही मै इस आदमीके बारेमे कहता हूँ। भिक्षुओ, इस ससारमे, इन घडोसे ही समानता रखने वाले चार तरहके आदमी है।

भिक्षुओ, चार तरहके तालाव होते है। कौनसे चार तरहके ? उथला किन्तु गहरा प्रतीत होने वाला, गहरा किन्तु उथला प्रतीत होने वाला, उथला और उथला प्रतीत होने वाला, गहरा और गहरा प्रतीत होने वाला, भिक्षुओ, ये चार तरहके तालाव होते है। इसी प्रकार भिक्षुओ इन तालाबोके ही समान ससारमें चार तरहके लोग है। कौनसे चार तरहके ? उथले किन्तु गहरे प्रतीत होने वाले, गहरे किन्तु उथले प्रतीत होने वाले, उथले और उथले प्रतीत होने वाले, गहरे और गहरे प्रतीत होने वाले। भिक्षुओ आदमी उथला किन्तु गहरा प्रतीत होने वाला कैसे होता है ? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर होता है, देखना-भालना प्रियकर होता है,(अँगोका) सिकोडना-फैलाना प्रियकर होता है, तथा सघाटी-पात्र-चीवरका धारण करना प्रियकर होता है। किन्तु वह यह दु ख है, यह यथार्थ रूपसे नही जानता . यह दु ख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे नही जानता। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी उथला किन्तु गहरा प्रतीत होने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे, वह तालाव होता है उथला किन्तु गहरा प्रतीत होने वाला, वैसा ही मै इस आदमीके बारेमे कहता हूँ।

"भिक्षुओ, आदमी गहरा किन्तु उथला प्रतीत होने वाला कैसे होता है ? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर नही होता, देखना-भालना प्रियकर नही होता, अगोका सिकोडना-फैलाना प्रियकर नही होता तथा सघाटी-पात्र-चीवर धारण करना प्रियकर नही होता। किन्तु वह यह दु ख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है यह दु:ख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी गहरा किन्तु उथला प्रतीत होने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे ही वह तालाव होता है गहरा, किन्तु उथला प्रतीत होने वाला—वैसा ही मै इस आदमीके बारेमे कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी उथला और उथला प्रतीत होने वाला कैसे होता है ? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर नही होता, देखना-भालना प्रियकर नही होता, अगोका सिकोडना-फैलाना प्रियकर नही होता तथा सघाटी-पात्र-चीवर धारण करना प्रियकर नही होता। वह यह दु ख है, यह यथार्थ रूपसे नही जानता है . यह दु ख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे नही जानता

है। इस प्रकार आदमी उथला और उथला प्रतीत होने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे ही वह तालाब होता है उथला और उथला प्रतीत होने वाला, वैसा ही मै उस आदमीके वारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी गहरा और गहरा प्रतीत होने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर होता है, देखना-भालना प्रियकर होता है, तथा सघाटी-पात्र-चीवर धारण करना प्रियकर होता है। वह यह दु ख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है यह दु ख-निरोध की ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। इस प्रकार आदमी गहरा और गहरा प्रतीत होने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे ही वह तालाव है गहरा और गहरा प्रतीत होने वाला—वैसा ही मै इस आदमीके वारेमे कहता हूँ। भिक्षुओ, इन तालावोके ही समान ससारमें चार तरहके लोग है।

भिक्षुओ, आम चार प्रकारके होते है। कौनसे चार प्रकारके? कच्चे किन्तु पके लगने वाले, पके किन्तु कच्चे लगने वाले, कच्चे और कच्चे लगने वाले, पके और पके लगने वाले। इसी प्रकार भिक्षुओ, ससारमे आमोंमे ही समानता रखने वाले ये चार प्रकारके लोग है। कौनसे चार प्रकारके? कच्चे किन्तु पके लगने वाले, पके किन्तु कच्चे लगने वाले, कच्चे और कच्चे लगने वाले, पके और पके लगने वाले।

भिक्षुओ, आदमी कैसे कच्चा किन्तु पका लगने वाला होता है? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर होता है, देखना-भालना प्रियकर होता है, (अँगोका) सिकोडना-फैलाना प्रियकर होता है तथा सघाटी-पात्र-चीवर धारण करना प्रियकर होता है। किन्तु वह यह दु ख है यह यथार्थ रूपसे नही जानता . . यह दु ख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे नही जानता। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी कच्चा किन्तु पका लगने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे वह आम होता है कच्चा किन्तु पका लगने वाला वैसा ही मै इस आदमीके वारेमे कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे पका किन्तु कच्चा लगने वाला होता है? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर नही होता, देखना-भालना प्रियकर नही होता, (अगोका) सिकोडना-फैलाना प्रियकर नही होता, तथा सघाटी-पात्र-चीवर धारण करना प्रियकर नही होता, किन्तु वह यह दु ख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है यह दु ख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ-रूपसे जानता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी पका किन्तु कच्चा लगने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे वह आम होता है पका किन्तु कच्चा लगने वाला, वैसा ही मै इस आदमीके वारेमे कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे कच्चा और कच्चा लगनेवाला होता है ? भिक्षुओ, भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर नही होता, देखना-भालना प्रियकर नही होता, अगोका सुकेडना-फैलाना प्रियकर नही होता तथा सघाटी-पात्र-चीवर धारण करना प्रियकर नही होता। वह यह दु ख है, यह यथार्थ रूपसे नही जानता है। .. यह दु ख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे नही जानता है। इस प्रकार आदमी कच्चा और कच्चा लगने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे वह आम होता है कच्चा और कच्चा लगने वाला, वैसा ही मै इस आदमीके बारेमे कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे पका और पका लगने वाला होता है ? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर होता है, देखना-भालना प्रियकर होता है, अगोका सिकोडना-फैलाना प्रियकर होता है तथा सघाटी-पात्र-चीवर धारण करना प्रियकर होता है। वह यह दु ख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है यह दु ख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। इस प्रकार आदमी पका और पका लगने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे ही वह आम होता है पका और पका लगने वाला, वैसा ही मै इस आदमीके बारेमे कहता हूँ। भिक्षुओ, ससारमे आमोसे ही समानता रखने वाले ये चार प्रकारके लोग है।

भिक्षुओ, चार प्रकारके चूहे होते है। कौनसे चार प्रकारके ? बिल खोदने वाला, किन्तु उसमे रहने वाला नही, रहने वाला किन्तु बिल खोदने वाला नही, न बिल खोदने वाला, न रहने वाला, खोदने वाला और रहने वाला। भिक्षुओ, ये चार तरहके चूहे होते है। इसी प्रकार भिक्षुओ, ससारमे इन चूहोसे ही समानता रखने वाले चार प्रकारके लोग विद्यमान है। कौनसे चार प्रकारके ? (बिल) खोदने वाले, किन्तु रहने वाले नही, रहने वाले (बिल) खोदने वाले नही, न खोदने वाले और न रहने वाले, खोदने वाले तथा रहने वाले।

भिक्षुओ, आदमी कैसे बिल खोदने वाला होता है, किन्तु रहने वाला नही। भिक्षुओ, एक आदमी धर्मका पाठ करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्भुत धर्मका तथा वेदल्लका। किन्तु वह यह दु ख है, यह यथार्थ रूपसे नही जानता यह दु ख निरोध गामिनी प्रतपदा है, यह यथार्थ रूपसे नही जानता। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी '(बिल) खोदने वाला होता है, किन्तु रहने वाला नही। भिक्षुओ, जैसा वह चूहा होता है बिल खोदने वाला, किन्तु उसमे रहने वाला नही, वैसा ही मै इस आदमीके बारेमे कहता हूँ।

आदमी कैसे रहने वाला होता है, किन्तु बिल खोदने वाला नही। भिक्षुओ, एक आदमी धर्मका पाठ नही करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्‌भुत-धर्मका, तथा वेदल्लका। किन्तु वह यह दु ख है, यह यथार्थ रूपमे जानता है यह दु ख निरोध गामिनी प्रतिपदा है, यह यथार्थ रूप,से जानता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी रहने वाला होता है, किन्तु (बिल) खोदने वाला नही। भिक्षुओ, जैसा वह चूहा होता है, रहने वाला किन्तु (बिल) खोदने वाला नही, वैसा ही मै इस आदमीके बारेमे कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे न (बिल) खोदने वाला होता है, न रहने वाला। भिक्षुओ, एक आदमी धर्मका पाठ नही करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्‌भुत-धर्मका तथा वेदल्लका। वह यह दु ख है, यह यथार्थ रूपसे नही जानता है यह दु ख निरोध गामिनी प्रतिपदा है, यह यथार्थ रूपसे नही जानता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी न (बिल) खोदने वाला होता है, न रहने वाला। भिक्षुओ, जैसा वह चूहा होता है, न खोदने वाला और न रहनेवाला, वैसा ही मै इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे (बिल) खोदने वाला और रहने वाला होता है। भिक्षुओ, एक आदमी धर्मका पाठ करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्‌भुत-धर्मका, तथा वेदल्लका। वह यह दु ख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है यह दु ख निरोध गामिनी प्रतिपदा है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी बिल खोदने वाला और रहने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसा वह, चूहा होता है (बिल) खोदने वाला और रहने वाला, वैसा ही मै इस आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, ससारमे इन चूहोंमे ही समानता रखने वाले चार प्रकारके लोग विद्यमान है।

भिक्षुओ, चार प्रकारके वृषभ होते है। कौनसे चार प्रकारके ? अपनी गौओके प्रति चण्ड, किन्तु पराई गौओंके प्रति नही, पराई गौओके प्रति चण्ड, किन्तु अपनी गौओके प्रति नही, अपनी और पराई गौओंके प्रति चण्ड, न अपनी गौओंके प्रति चण्ड और न पराई गौओके प्रति चण्ड। भिक्षुओ, ये चार प्रकारके वृषभ होते हैं। इसी प्रकार भिक्षुओ, इस ससारमें इन वृपभोंसे ही समानता रखने वाले चार प्रकारके लोग विद्यमान है। कौनसे चार प्रकारके ? अपनी गौओके प्रति चण्ड, किन्तु पराई गौओंके प्रति नही, पराई गौओके प्रति चण्ड, किन्तु अपनी गौओंके प्रति नही, अपनी और पराई गौओंके प्रति चण्ड, न अपनी गौओके प्रति चण्ड और न

पराई गौओके प्रति चण्ड। भिक्षुओ, आदमी कैसे अपनी गौओके प्रति चण्ड होता है, किन्तु पराई गौओके प्रति नही ? भिक्षुओ, एक आदमी अपनी परिषद्‌को ही भयभीत करने वाला होता है, पराई परिषद्‌को नही। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी अपनी गौओके प्रति चण्ड होता है, किन्तु पराई गौओके प्रति नही ? जैसे भिक्षुओ वह वृषभ होता है अपनी ही गौओके प्रति चण्ड, किन्तु पराई गौओके प्रति नही, वैसा ही भिक्षुओ, मै इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे पराई गौओके प्रति चण्ड होता है, किन्तु अपनी गौओके प्रति नही ? भिक्षुओ, एक आदमी पराई परिषद्‌को भयभीत करने वाला होता है, किन्तु अपनी परिषद्‌को नही। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी पराई गौओके प्रति चण्ड होता है, किन्तु अपनी गौओके प्रति नही। जैसे भिक्षुओ वह वृषभ होता है पराई गौओंके प्रति चण्ड, किन्तु अपनी गौओके प्रति नही, वैसा ही भिक्षुओ, मै इस आदमीके वारेमे कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे अपनी गौओके प्रति तथा पराई गौओके प्रति चण्ड होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी अपनी परिषद्‌को भयभीत करने वाला होता है, पराई परिषद्‌को भयभीत करने वाला होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी अपनी गौओके प्रति चण्ड होता है, पराई गौओके प्रति चण्ड होता है। जैसे भिक्षुओ, वह वृषभ होता है, अपनी गौओके प्रति चण्ड होता है, पराई गौओके प्रति चण्ड होता है, वैसा ही भिक्षुओ, मै इस आदमीके वारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे न अपनी गौओके प्रति तथा न पराई गौओके प्रति चण्ड होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी न अपनी परिषद्‌को भयभीत करता है, न पराई परिषदको भयभीत करता है। इस प्रकार भिक्षओ, आदमी न अपनी गौओके प्रति चण्ड होता है, न पराई गौओके प्रति चण्ड होता है। जैसे भिक्षुओ, वह वृषभ होता है न अपनी गौओके प्रति चण्ड होता है न पराई गौओके प्रति चण्ड होता है, वैसा ही भिक्षुओ, मै इस आदमीके वारेमे कहता हूँ। भिक्षुओ, इस ससारमें इन वृषभोसे ही समानता रखने वाले चार प्रकारके लोग विद्यमान है।

भिक्षुओ, चार प्रकारके वृक्ष है। कौनसे चार प्रकारके ? निस्सार वृक्षोंसे घिरा हुआ निस्सार वृक्ष, सारवान् वृक्षोंसे घिरा हुआ निस्सार वृक्ष, निस्सार वृक्षोसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष, सारवान् वृक्षोसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष। इसी प्रकार भिक्षुओ, इस ससारमे वृक्षोसे ही समानता रखने वाले चार प्रकारके लोग है। कौनसे चार प्रकारके ? निस्सार वृक्षोसे घिरा हुआ निस्सार वृक्ष, सारवान् वृक्षोंसे

घिरा हुआ निस्सार वृक्ष, निस्सार वृक्षोंसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष, सारवान वृक्षोंसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष। भिक्षुओ आदमी कैसे निसार वृक्षोसे घिरा हुआ निस्सार वृक्ष होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय दुराचारी होता है, पापी होता है, उसकी परिषद् भी वैसी ही होती है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी निस्सार वृक्षोसे घिरा हुआ निस्सार वृक्ष होता है। भिक्षुओ, जैसे वह निस्सार वृक्षोंसे घिरा हुआ निस्सार वृक्ष होता है, वैसा ही मै इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे सारवान् वृक्षोंसे घिरा हुआ निस्सार वृक्ष होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय दुराचारी होता है, पापी होता है, किन्तु उसकी परिषद उससे उलटी होती है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी सारवान् वृक्षोंसे घिरा हुआ निस्सार वृक्ष होता है। भिक्षुओ, जैसे वह सारवान् वृक्षोंसे घिरा हुआ निस्सार वृक्ष होता है, वैसा ही मै इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे निस्सार वृक्षोंसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष होता है। भिक्षुओ एक आदमी स्वय सदाचारी होता है, कल्याणमार्गी किन्तु उसकी परिषद् उससे उलटी होती है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी निस्सार वृक्षोंसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष होता है। भिक्षुओ, जैसे वह निस्सार वृक्षोसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष होता है, वैसा ही मै इस आदमीके बारेमे कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे सारवान् वृक्षोंसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष होता है। भिक्षुओ एक आदमी स्वय सदाचारी होता है, कल्याणमार्गी, उसकी परिषद भी वैसी ही होती है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी सारवान् वृक्षोसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष होता है। भिक्षुओ, जैसे वह सारवान् वृक्षोंसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष होता है, वैसा ही मै इस आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, इस ससारमें इन वृक्षोंसे ही समानता रखने वाले चार प्रकारके लोग है।

भिक्षुओ, चार प्रकारके सर्प है, विषैला किन्तु घोर विषैला नही, घोर विषैला, विषैला नही, विषैला और घोर विषैला, न विषैला और न घोर विषैला। भिक्षुओ, ये चार प्रकारके सर्प है। इस प्रकार भिक्षुओ इस ससारमे इस चार प्रकारके सर्पोंसे ही समानता रखने वाले चार प्रकारके लोग है। कौनसे चार प्रकारके लोग है। कौनसे चार प्रकारके ? विषैला, किन्तु घोर विषैला नही, घोर विषैला, विषैला नही, विषैला और घोर विषैला, न विषैला और न घोर विषैला।

भिक्षुओ, आदमी कैसे विषैला, किन्तु घोर विषैला नही होता ? भिक्षुओ, एक आदमी प्राय क्रोधित होता रहता है किन्तु उसका क्रोध अधिक देर तक नही

ठहरता। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी विषैला किन्तु घोर विषैला नही होता। जैसे भिक्षुओ, वह सर्प होता है विषैला, किन्तु घोर विषैला नही, वैसा ही मै इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे घोर विषैला किन्तु विषैला नही होता? भिक्षुओ, एक आदमी प्राय क्रोधित नही होता, किन्तु उसका क्रोध देर तक रहता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी घोर विषैला, किन्तु विषैला नही होता। जैसे भिक्षुओ, वह सर्प होता है घोर विषैला, किन्तु विषैला नही, वैसा ही मै इस आदमीके बारेमे कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे विषला और घोर विषला दोनो होता है। भिक्षुओ, एक आदमी प्राय क्रोधित होता है, साथ ही उसका क्रोध देर तक रहता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी विषैला और घोर विषैला होता है। जैसे भिक्षुओ, वह सर्प होता है विषैला और घोर-विषैला, वैसा ही मै इस आदमीके बारेमे कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे न विषैला और न घोर विषैला होता है? भिक्षुओ, एक आदमी न प्राय क्रोधित होता है और न उसका क्रोध देर तक रहता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी न विषैला होता है और न घोर विषैला होता है। जैसे भिक्षुओ वह सर्प होता है न विषैला और न घोर-विषैला, वैसा ही मै उस आदमीके बारेमे, कहता हूँ। भिक्षुओ, इस ससारमे सापोसे समानता रखने वाले चार प्रकारके लोग है।

(२) केसी वर्ग

उस समय अश्वोका दमन करनेवाले केसी नामका सारथि जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुचा। पहुँचकर भगवान्को अभिवादन कर एक ओर बैठा। एक ओर हुए अश्वोका दमन करने वाले केसी नामके सारथीको भगवानने यह कहा "हे केसी! तू प्रसिद्ध अश्व-दमन-सारथि है। हे केसी तू अश्वोको कैसे साधता है?" "भन्ते! मै अश्वोको कोमलतासे भी साधता हूँ कठोरतासे भी साधता हूँ, कोमलता-कठोरतासे भी साधता हूँ।"

"हे केसी! यदि कोई घोडा कोमलतासे भी काबूमे नही आता, कठोरतासे भी काबूमें नही आता, कोमलता-कठोरतासे भी काबूमें नही आता, तो तुम उस घोडेका क्या करते हो?"

"भन्ते! यदि कोई घोडा कोमलतासे भी काबूमें नहीं आता, कठोरतासे भी काबूमें नही आता, कोमलता-कठोरतासे भी काबूमें नही आता, तो मै उस घोडेको मारता हूँ। यह किस लिये? यह इसी लिये कि मेरी आचार्य-परम्पराकी

वदनामी न हो। लेकिन भन्ते भगवान् आप तो पुरुषोका दमन करने वाले सारथी है। आप पुरुषोका दमन कैसे करते है।"

"केसी! मै कोमलतासे भी पुरुषोका दमन करता हूँ, कठोरतासे भी पुरुषोका दमन करता हूँ, कोमलता-कठोरतासे भी पुरुषोका दमन करता हूँ। केसी! कोमलतासे दमन करने का मतलब है कि मै उन्हे बताता हूँ कि यह शरीर सम्बन्धी सच्चरित्रता है, यह शारीरिक सच्चरित्रता का शुभ परिणाम है, यह वाणीकी सच्चरित्रता है, यह वाणीकी सच्चरित्रता का शुभ परिणाम है, यह मनकी सच्चरित्रता है, यह मनकी सच्चरित्रताका शुभ परिणाम है, ये देव (योनि) है, यह मनुष्य (-योनि) है, और हे केसी! कठोरतासे दमन करनेका मतलव है कि मै उन्हे वताता हूँ कि यह शारीरिक दुश्चरित्रता है, यह शारीरिक दुश्चरित्रताका दुष्परिणाम है, यह वाणीकी दुश्चरित्रता है, यह वाणीकी दुश्चरित्रताका दुष्परिणाम है, यह मनकी दुश्चरित्रता है, यह मनकी दुश्चरित्रताका दुष्परिणाम है, यह नरक है, यह तिरश्चीन (योनि) है, यह प्रेत योनि है। और हे केसी! कोमलता-कठोरतासे दमन करनेका मतलव है कि मै उन्हे वताता हूँ कि यह शारीरिक सच्चरित्रता है, यह शारीरिक सच्चरित्रताका शुभपरिणाम है, यह शारीरिक दुश्चरित्रता है, यह शारीरिक दुश्चरित्रताका दुष्परिणाम है, यह वाणी की सच्चिरत्रता है, यह वाणीकी सच्चरित्रताका शुभपरिणाम है, यह वाणीकी दुश्चरित्रता है, यह वाणीकी दुश्चरित्रताका दुष्परिणाम है, यह मनकी सच्चरित्रता है, यह मनकी सच्चरित्रताका शुभ परिणाम है, यह मनकी दुश्चरित्रता है, यह मनकी दुश्चरित्रताका दुष्परिणाम है, यह देव (योनि) है, यह मनुष्य (योनि) है, यह नरक (योनि) है, यह तिरश्चीन (योनि) है, यह प्रेत (योनि) है।"

"भन्ते! यदि कोई आदमी न कोमलतासे सुधरता है, न कठोरतासे सुधरता है, न कोमलता-कठोरतासे सुधरता है तो भगवान उस आदमीका क्या करते है?"

"केसी! यदि कोई आदमी कोमलतासे भी नही सुधरता, कठोरतासे भी नही सुधरता, कोमलता कठोरतासे भी नही सुधरता तो हे केसी! मै उस आदमीको मारता हूँ।"

"भगवान्! आपके लिये प्राणी -हिंसा करना योग्य नही है और आप कहते है कि मै ऐसे आदमीको मारता हूँ?"

"केसी! यह सच है कि प्राणी-हिंसा करना तथागत के अयोग्य है, किन्तु हे केसी! जो आदमी न कोमलतासे सुधरता है, न कठोरतासे सुधरता है, न कोमलता-कठोरतासे सुधरता है, उसे तथागत इस योग्य नही उ समझते कि उसको उपदेश दिया

जाय, उसका अनुशासन किया जाय और जो उसके विज्ञ साथी है वे भी उसे इस योग्य नही समझते कि उसको उपदेश दिया जाय, उसका अनुसाशान किया जाय ! केसी ! आर्य-विनय (=बुद्धधर्म) के हिसावसे यह आदमीका वध करना ही है कि न तो तथागत उस इस योग्य समझे कि उसे उपदेश दिया जाय और उसका अनुशासन किया जाय और न उसके विज्ञ साथी ही उसे इस योग्य समझे कि उसको उपदेश दिया जाय और उसका अनुशासन किया जाय।"

"भन्ते ! यह उसका सु-बध ही है कि न तथागत ही उसे इस योग्य समझते है कि उसे उपदेश दिया जाय और उसका अनुशासन किया जाय और न उसके विज्ञ साथी ही उसे इस योग्य समझते है कि उसे उपदेश दिया जाय और उसका अनुशासन किया जाय वहुत सुन्दर है भन्ते ! यह वहुत सुन्दर है भन्ते भगवान् मुझे आजसे प्राण रहने तक अपना शरणागत उपासक समझे।"

"भिक्षुओ, राजाके जिस अच्छे घोडेमे ये चार वातें होती है वह राजाके योग्य होता है, राजा का योग्य होता है, वह राजाका एक अग ही गिना जाता है। कौनसी चार बाते ? ऋजु होना, वेग, क्षमा, शुचिता। भिक्षुओ, इन चार बातोंसे युक्त अच्छा घोडा राजाके योग्य होता है, राजाका योग्य होता है, वह राजाका एक अग ही गिना जाता है।

इसी प्रकार चार वातोंसे युक्त भिक्षु आतिथ्य करने योग्य होता है . लोगोके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र होता है। कौन सी चार वातोंसे युक्त ? ऋजुता, गति, क्षमा तथा शुचिता। भिक्षुओ, इन चार वातोंसे युक्त भिक्षु आतिथ्य करने योग्य होता है. . . . . लोगोका अनुपम पुण्य क्षेत्र होता है।

भिक्षुओ, दुनियामे चार प्रकारके अच्छे घोडे विद्यमान् है। कौनसे चार प्रकारके ? भिक्षुओ, एक अच्छा घोडा चावुककी छाया देखकर ही सभल जाता है, भागने लगता है, सोचता है कि क्या सारथी आज मुझे मारेगा, मै इस से वचनेके लिये कुछ करूँ ? भिक्षुओ, ऐसा भी एक अच्छा घोडा होता है। भिक्षुओ, दुनियामें यह प्रथम अच्छा घोडा होता है।

भिक्षुओ, एक दूसरा अच्छा घोडा चावुककी छाया ही देखकर नही सभलता है, किन्तु वालोकी जडोमे बीधे जानेसे सभल जाता है, भागने लगता है, सोचता है कि क्या सारथी आज मुझे मारेगा, मै इससे वचनेके लिये कुछ करूँ ? भिक्षुओ, ऐसा भी एक अच्छा घोडा होता है। भिक्षुओ, दुनियामें यह दूसरा अच्छा घोडा होता है।

भिक्षुओ, एक तीसरा अच्छा घोडा चाबुककी छाया ही देखकर नही सभलता है, न बालोकी जडोमे बीधे जानेसे ही सभलता है, वह चमडीके बीधे जानेसे सभलता है, भागने लगता है, सोचता है कि क्या सारथी आज मुझे मारेगा, मै इससे बचनेके लिये कुछ करूँ? भिक्षुओ, ऐसा भी एक अच्छा घोडा होता है। भिक्षुओ, दुनियामें यह तीसरा अच्छा घोडा होता है।

भिक्षुओ, एक चौथा अच्छा घोडा, चाबुककी छाया ही देखकर सभलता है, न बालोकी जडोमे बीधे जानेसे ही सभलता है, न चमडीके बीधे जानेसे ही सभलता है, वह हड्डीके बीधे जानेसे सभलता है, भागने लगता है, सोचता है कि क्या सारथी आज मुझे मारेगा, मै इससे बचनेके लिये कुछ करूँ? भिक्षुओ, ऐसा भी एक अच्छा घोडा होता है। भिक्षुओ, दुनियामें यह चौथा अच्छा घोडा होता है। भिक्षुओ, दुनिया मे ये चार प्रकारके अच्छे घोडे विद्यमान है।

इसी प्रकार भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकारके अच्छे लोग है। कौनसे चार प्रकारके? भिक्षुओ, एक भला आदमी सुनता है कि अमुक गाँवमे या नियम में एक स्त्री या पुरुप दुखित है या मर गया है। उससे उसे सवेग प्राप्त होता है, वैराग्य प्राप्त होता है, वैराग्य-युक्त चित्त वाला हो वह अच्छी प्रकार प्रयास करता है, प्रयत्न करनेसे वह (चित्त-) कायसे परम् सत्यका साक्षात्कार करता है, प्रज्ञासे बीध कर देखता है। जैसे भिक्षुओ, वह अच्छा घोडा चाबुककी छाया देखकर सभल जाता है, वैसा ही भिक्षुओ, मै इस भद्र आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, ऐसा भी कोई कोई भला आदमी होता है। भिक्षुओ, दुनियामें यह पहला भला आदमी होता है।

फिर भिक्षुओ, एक भला आदमी ऐसा होता है वह यह सुनता नही कि अमुक गाँव या निगममें अमुक स्त्री या पुरुप दुखी है अथवा मर गया है; बल्कि वह स्वय देखता है कि किसी स्त्री या पुरुपको दुखी या मरा हुआ। उससे उसे सवेग प्राप्त होता है, वैराग्य प्राप्त होता है, वैराग्य-युक्त चित्तवाला हो वह अच्छी प्रकार प्रयास करता है, प्रयत्न करनेसे वह (चित्त-) कायसे परम सत्यका साक्षात्कार करता है, प्रज्ञासे बीधकर देखता है। जैसे भिक्षुओ वह अच्छा घोडा जो चाबुककी छाया देखकर तो नही सभलता है, किन्तु बालोकी जडोमें बीधे जानेसे सभल जाता है। वैसा ही भिक्षुओ, मै इस भद्र आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, ऐसा भी कोई कोई भला आदमी होता है। भिक्षुओ, दुनियामें यह दूसरा भला आदमी होता है।

फिर भिक्षुओ, एक भला आदमी ऐसा होता है, वह न यह सुनता है कि अमुक-गाँव या निगममें अमुक स्त्री या पुरुष दुखी है अथवा मर गया है, न वह यह देखता है किसी स्त्री या पुरुषको दुखी अथवा मरा हुआ। उसका रिश्तेदार वा रक्तसम्बन्धी दुखी होता है वा मर गया होता है। वह उससे सवेगको प्राप्त होता है, वैराग्यको प्राप्त होता है, वैराग्य-युक्त चित्त वाला हो वह अच्छी प्रकार प्रयास करता हो, प्रयत्न करनेसे वह (चित्त–) कायसे परम सत्य का साक्षात्कार करता है, प्रज्ञासे बीधकर देखता है। जैसे भिक्षुओ, वह अच्छा घोडा जो न तो चाबुककी छाया देखकर सभलता है, न बालोकी जडोमे बीधे जानेसे सभलता है, किन्तु चमडी बीधे जानेसे सभल जाता है। वैसा ही भिक्षुओ, मै इस भद्र आदमीके बारेमे कहता हूँ। भिक्षुओ, ऐसा भी कोई कोई भला आदमी होता है। भिक्षुओ, दुनियामें यह तीसरा भला आदमी होता है।

फिर भिक्षुओ एक भला आदमी ऐसा होता है वह न यह सुनता है कि अमुक गाँव या निगममे अमुक स्त्री या पुरुष दुखी है अथवा मर गया है, न वह यह स्वय देखता है किसी स्त्री या पुरुषको स्वय मरा हुआ। न उसका कोई रिश्तेदार वा रक्त-सम्वन्धी मरा होता है, बल्कि वह स्वय दु खद तीव्र, चमकने वाली, कटु, अरुचिकर, प्रतिकूल प्राण ले लेने वाली जैसी शारीरिक वेदनाओका अनुभव करता है। वह उससे सवेगको प्राप्त होता है, वैराग्य-युक्त चित्त वाला हो वह अच्छी प्रकार प्रयास करता है, प्रयत्न करनेसे वह (चित्त) काय से परम सत्यका साक्षात्कार करता है, प्रज्ञासे बीधकर देखता है। जैसे भिक्षुओ, वह अच्छा घोडा, जो न तो चाबुककी छाया देखकर सभलता है, न बालोकी जडोमे बीधे जानेसे सभलता है, न चमडी बीधे जानेसे सभलता है, बल्कि हड्डी बीधे जानेसे सभलता है। वैसा ही भिक्षुओ, मै इस भद्र आदमीके बारेमे कहता हूँ। भिक्षुओ, ऐसा भी कोई कोई भला आदमी होता है। भिक्षुओ, दुनियामे यह चौथा भला आदमी होता है। भिक्षुओ, दुनियामे ये चार प्रकारके भले आदमी विद्यमान है।

भिक्षुओ, राजाके जिस हाथीमे ये चार बाते होती है वह राजाके योग्य होता है, राजाका योग्य होता है, वह राजाका एक अग ही गिना जाता है। कौनसी चार बातें? भिक्षुओ, राजाका हाथी श्रोता होता है, मारने वाला होता है, सहन करने वाला होता है, तथा जाने वाला होता है।

भिक्षुओ, राजाका हाथी श्रोता कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाके हाथीको उसका हाथीवान जो कुछ भी करनेको कहता है, चाहे उसने वह बात पहले भी की हो और चाहे न की हो, वह उसे ध्यान देकर मनसे सारी बातको चित्तमें स्थान दे, कान देकर सुनता है। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका हाथी श्रोता होता है।

भिक्षुओ, राजाका हाथी मारने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, सग्राममें जमा हुआ राजाका हाथी, हाथीको भी मारता है, हाथीवानको भी मारता है, घोड़ेको भी मारता है, घुड़सवारको भी मारता है, रथको भी नष्ट करता है, सारथीको भी मारता है, तथा पैदल-सेनाको भी मारता है। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका हाथी मारने वाला होता है।

भिक्षुओ, राजाका हाथी सहन करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, सग्राममे गया हुआ राजाका हाथी शक्तियोंके प्रहारको सहन करने वाला होता है, तीरोके प्रहारको, तलवारोके प्रहारको, कुल्हाड़ियोंके प्रहारको सहन करने वाला होता है। वह ढोल, मृदग, शख, डौण्डी आदिके शब्दोंको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका हाथी सहन करने वाला होता है।

भिक्षुओ, राजाका हाथी जाने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ राजाके हाथीको हथवान् जिस किसी भी दिशामे भेजता है, चाहे वह उस दिशामें पहले गया हो और चाहे न गया हो, वह शीघ्र ही उधर जाने वाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका हाथी जाने वाला होता है। इसी प्रकार भिक्षुओ, राजके जिस हाथीमें ये चार बातें होती है, राजाका वह हाथी राजाके योग्य होता है, राजाका योग्य होता है, वह राजाका एक अग ही गिना जाता है।

उसी प्रकार भिक्षुओ, जो भिक्षु इन चार बातोंसे युक्त होता है, वह आतिथ्य करने योग्य होता है   लोगोंके लिये पुण्यक्षेत्र होता है। कौनसी चार बातोंसे? भिक्षुओ, भिक्षु श्रोता होता है, मारने वाला होता है, सहने वाला होता है तथा जाने वाला होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु श्रोता कैसे होता है? भिक्षुओ, वह भिक्षु जब तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनयका उपदेश किया जाता है उस समय वह उसे ध्यान देकर, मनसे सारी बातको चित्तमे स्थान दे, कान देकर सुनता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु श्रोता होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु मारनेवाला कैसे होता है? भिक्षुओ, वह भिक्षु उत्पन्न हुए काम-वितर्क को सहन नही करता है, त्याग देता है, हटा देता है, दूर कर देता है,

नष्ट कर देता है, उत्पन्न हुए व्यापाद (= द्वेष) वितर्कको उत्पन्न हुए विहिंसा वितर्कको . उत्पन्न पापी अकुशल सकल्पोको सहन नही करता है, त्याग देता है, हरा देता है, दूरकर देता है, नष्ट कर देता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु, मारने वाला होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु सहन करने वाला कैसे होता है ? भिक्षुओ, भिक्षु ठण्डका, गरमीका, भूखका, प्यासका सहन करने वाला होता है। वह डक मारने वाले, मच्छर हवा, धूप तथा रेंगने वाले जानवरोके सम्पर्कको सहन करने वाला होता है। वह दुरुक्त दुर्वचनोको सहन करने वाला होता है। वह ऐसी शारीरिक वेदनाओका—जो दु ख हो, जो तीव्र हो, जो तीक्ष्ण हो, जो कडवी हो, जो प्रतिकूल हो, जो अच्छी न लगती हो, जो प्राण हर लेने वाली हो—सहन करने वाला होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु सहन करने वाला होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु जाने वाला कैसे होता है ? भिक्षुओ, जिस दिशामे भिक्षु पहले नही गया है उस दीर्घ मार्गसे, जो यह सब सस्कारोका शमन है, सब उपाधियोका त्याग है, तृष्णाका क्षय है, वैराग्य है, निरोध है, निर्वाण है, उस तक शीघ्र ही जाने वाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु जाने वाला होता है। भिक्षुओ, इन चार बातोसे उक्त भिक्षु आतिथ्य करने योग्य होता है .लोगोके लिये पुण्य क्षेत्र होता है।

भिक्षुओ, ये चार अवस्थाये होती है। कौनसी चार ? भिक्षुओ, एक ऐसी अवस्था होती है, जब किसी बातका करना अच्छा भी नही लगता और उसके करनेसे अनर्थ भी होता है, एक ऐसी अवस्था होती है जब किसी बातका करना अच्छा नही लगता है किन्तु उसके करनेसे अर्थ (हित) होता है, एक ऐसी अवस्था होती है जब किसी बातका करना अच्छा लगता है किन्तु उसके करनेसे अनर्थ (अहित) होता है, एक ऐसी अवस्था होती है जब किसी बातका करना अच्छा लगता है और उसके करनेसे हित होता है।

भिक्षुओ, जब ऐसी अवस्था हो, जब किसी बातका करना अच्छा भी न लगता हो और उसके करनेसे अनर्थ भी होता हो तब ऐसी बात दोनो कारणोसे न करने योग्य मानी जाती है, क्योकि उसका करना अच्छा नही लगता है, इस कारणसे भी वह अकरणीय मानी जाती है और क्योकि उसके करनेसे अनर्थ होता है इस कारणसे भी वह अकरणीय मानी जाती है। भिक्षुओ, ऐसी बात दोनो कारणोसे न करने योग्य मानी जाती है।

भिक्षुओ, जब ऐसी अवस्था होती है जब किसी बातका करना अच्छा नहीं लगता है, किन्तु उसके करनेसे अर्थ (=हित) होता है, तो ऐसी बातके करने न करनेमे ही मूर्ख तथा पण्डितकी परीक्षा होती है उमकी मामर्थ्यकी, उमके वीर्यकी, उसके पराक्रमकी। भिक्षुओ, जो मूर्ख होता है वह यह विचार नही करता कि यद्यपि इस बातका करना अच्छा नही लगता तो भी इसके करनेसे अर्थ (=हित) होता है। वह वह बात नही करता। उसका उस बातको न करना अनर्थ (=अहित) के लिये होता है किन्तु पण्डित सोचता है कि यद्यपि इस बातका करना अच्छा नही लगता तो भी इसके करनेसे अर्थ (=हित) होता है। वह वह बात करता है। उसका उस बातको करना अर्थ (=हित) के लिये होता है।

भिक्षुओ, जब ऐसी अवस्था होती है जब किसी बातका करना अच्छा लगता है किन्तु उसके करनेसे अनर्थ (=अहित) होता है, तो ऐसी बातके करने न करनेमें ही मूर्ख तथा पण्डितकी परीक्षा होती है, उसके सामर्थ्यकी, उसके वीर्यकी उसके पराक्रमोकी। भिक्षुओ, जो मूर्ख होता है वह यह विचार नही करता कि यद्यपि इस बातका करना अच्छा लगता है तो भी इसके करनेसे अनर्थ (=अहित) होता है। वह वह बात करता है। उसका उम बातको करना अनर्थ (=अहित) के लिये होता है। किन्तु पण्डित सोचता है कि यद्यपि इस बातका करना अच्छा लगता है, तो भी इसके करनेसे अनर्थ (=अहित) होता है। वह वह बात नही करता है। उसका उस बातको न करना अर्थ (=हित) के लिये होता है।

भिक्षुओ, जब ऐसी अवस्था हो, जब किसी बातका करना अच्छा भी लगता हो और उसके करनेसे अर्थ (=हित) भी होता हो तब ऐसी बात दोनो कारणोसे करने योग्य मानी जाती है, क्योकि उसका करना अच्छा लगता है, इम कारणसे भी वह करणीय मानी जाती है और क्योकि उसके करनेसे अर्थ (=हित) होता है, इस कारण से भी वह करणीय मानी जाती है। भिक्षुओ, ऐसी बात दोनो कारणोसे करने योग्य मानी जाती है। भिक्षुओ, ये चार अवस्थाये है।

भिक्षुओ, चार विपयोमें अप्रमाद करना चाहिये? कौनसे चार विपयोमें? भिक्षुओ शारीरिक दुष्चरित्रताको छोडना चाहिये, शारीरिक मुचरित्रताका अभ्यास करना चाहिये, इस विपयमे प्रमाद नही करना चाहिये, भिक्षुओ वाणीकी दुश्चरित्रताको छोडना चाहिये, वाणीकी सुचरित्रताका अभ्यास करना चाहिये, इस विपयमें प्रमाद नही करना चाहिये, भिक्षुओ, मनकी दुश्चरित्रताको छोडना

चाहिये, मनकी सुचरित्रताका अभ्यास करना चाहिये, इस विषयमे प्रमाद नही करना चाहिये, भिक्षुओ, मिथ्या-दृष्टिको छोडना चाहिये, सम्यक्दृष्टिका अभ्यास करना चाहिये, इस विषयमे प्रमाद नही करना चाहिये।

भिक्षुओ, जब भिक्षुकी शारीरिक दुश्चरित्रता परित्यक्त रहती है, उसे शारीरिक सच्चरित्रताका अभ्यास रहता है, वाणीकी दुश्चरित्रता परित्यक्त रहती है, उसे वाणीकी सच्चरित्रताका अभ्यास रहता है, मनकी दुश्चरित्रता परित्यक्त रहती है, उसे मनकी सच्चरित्रताका अभ्यास रहता है, मिथ्या-दृष्टि परित्यक्त रहती है, सम्यक्-दृष्टिका अभ्यास रहता है, वह पारलौकिक (?) मरणसे नही घबराता।

भिक्षुओ, आत्म-हित चाहने वालेको चार विषयोमे अप्रमादकी, चित्तकी, स्मृतिकी रक्षा करनी चाहिये। किन चार विषयोमे? रागके विषयमे मेरा चित्त अनुरक्त न हो—इस विषयमे आत्महित चाहने वालेको अप्रमादकी, चित्तकी, स्मृति की रक्षा करनी चाहिये। द्वेषके विषयमे मेरा चित्त दुष्ट (=क्रोधित) न हो—इस विषयमे आत्म-हित चाहने वालेको अप्रमादकी, चित्तकी, स्मृतिकी रक्षा करनी चाहिये। मोहके विषयोमे मेरा चित्त मूढ न हो—इस विषयमें आत्महित चाहने वालेको अप्रमादकी, चित्तकी, स्मृतिकी रक्षा करनी चाहिये। मदके विषयोमे मेरा चित्त प्रमादी न हो—इस विषयमे आत्म-हित चाहने वालेको अप्रमादकी, चित्तकी, स्मृतिकी रक्षा करनी चाहिये।

भिक्षुओ, क्योकि जब वीत-राग हो जानेके कारण, रागके विषयोमे कोई भिक्षु अनुरक्त नही रहता, वीत-द्वेष हो जानेके कारण द्वेषके विषयोमें कोई भिक्षु द्वेषी नही रहता, वीत-मोह हो जानेके कारण मोहके विषयमे कोई मूढ नही रहता, वीत-मद हो जानेके कारण मदके विषयमे कोई प्रमादी नही रहता तो वह न डरता है, न काँपता है, न अस्थिर होता है, न त्रासको प्राप्त होता है और न किसी भी अपने या पराये श्रमणको उसे कुछ कहनेकी जरूरत रहती है।

भिक्षुओ, श्रद्धावान् कुल पुत्रके लिये ये चार स्थान ऐसे है जो दर्शनीय है और जिनके दर्शनसे सवेग उत्पन्न होता है। कौनसे चार? यहाँ तथागत उत्पन्न हुए—भिक्षुओ, श्रद्धावान् कुल पुत्रके लिये यह दर्शनीय स्थान है और इसके दर्शनसे सवेग उत्पन्न होता है। यहाँ तथागतने अनुपम सम्यक् सम्बोधिको प्राप्त किया—भिक्षुओ श्रद्धावान् कुल पुत्रके लिये यह दर्शनीय स्थान है और इसके दर्शनसे सवेग उत्पन्न होता है। यहाँ तथागतने अनुपम धर्मचक्र प्रवर्तित किया—भिक्षुओ, श्रद्धावान् कुल पुत्रके लिये यह दर्शनीय स्थान है और इसके दर्शनसे सवेग उत्पन्न होता है। यहाँ तथागतने

निरुपाधिशेष निर्वाण-धातुसे परिनिर्वाण प्राप्त किया—भिक्षुओ, श्रद्धावान् कुलपुत्रके लिये यह दर्शनीय स्थान है और इसके दर्शनसे सवेग उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, श्रद्धावान् कुलपुत्रके लिये ये चार स्थान ऐसे है जो दर्शनीय है और जिनके दर्शनसे सवेग उत्पन्न होता है।

भिक्षुओ, ये चार भय हैं। कौनसे चार ? जन्म-भय, जरा-भय, रोग-भय तथा मृत्युका भय। भिक्षुओ, ये चार भय हैं।

भिक्षुओ, ये चार भय हैं। कौनसे चार ? अग्निसे भय, जलसे भय, राज्यसे भय तथा चोरसे भय। भिक्षुओ, ये चार भय हैं।

(३) भय-वर्ग

भिक्षुओ, ये चार भय हैं। कौनसे चार भय ? आत्म-निन्दाका भय, दूसरो द्वारा निन्दित होनेका भय, दण्ड मिलनेका भय, दुर्गतिका भय। भिक्षुओ, आत्म-निन्दाका भय कौनसा होता है ? भिक्षुओ, कोई सोचता है यदि मैं शरीरसे दुश्चरित्रता करूँगा, वाणीसे दुश्चरित्रता करूँगा, मनसे दुश्चरित्रता करूँगा तो हो सकता है कि मेरा अपना-आप शील की दृष्टिसे मेरी गर्हा करे। वह आत्म-निन्दाके भयसे भयभीत होकर शारीरिक दुश्चरित्रता छोड, शारीरिक सुचरित्रताका अभ्यास करता है, वाणीकी दुश्चरित्रता छोड, वाणीकी सच्चरित्रताका अभ्यास करता है, मनकी दुश्चरित्रता छोड, मनकी सच्चरित्रताका अभ्यास करता है, वह अपने आपको परिशुद्ध बनाये रखता है—भिक्षुओ, यह आत्म-निन्दाका भय कहलाता है।

भिक्षुओ, दूसरो द्वारा निन्दित होनेका भय कौनसा होता है ? भिक्षुओ, कोई सोचता है यदि मैं शरीरसे दुश्चरित्रता करूँगा, वाणीसे दुश्चरित्रता करूँगा, मनसे दुश्चरित्रता करूँगा तो हो सकता है कि दूसरे शीलकी दृष्टिसे मेरी गर्हा करे। वह परनिन्दाके भयसे भयभीत होकर शारीरिक दुश्चरित्रता छोड शारीरिक सुचरित्रताका अभ्यास करता है, वाणीकी दुश्चरित्रता छोड वाणीकी सच्चरित्रताका अभ्यास करता है, मनकी दुश्चरित्रता छोड, मनकी सच्चरित्रताका अभ्यास करता है, वह अपने भावको परिशुद्ध बनाये रखता है—भिक्षुओ, यह परनिन्दाका भय कहलाता है।

भिक्षुओ, दण्ड-भय कौनसा होता है ? भिक्षुओ, कोई देखता है कि जो चोर होता है, जो अपराधी होता है उसे राजाके लोग नाना प्रकारके दण्डोंसे दण्डित करते हैं—चाबुकसे भी पीटते है, बेंतसे भी पीटते है, मुग्दरसे भी पीटते है, हाथ भी छेद देते है, पांव भी छेद देते हैं, हाथ-पांव भी छेद देते है, कान भी छेद देते हैं, नाक भी छेद देते हैं, कान-नाक भी छेद देते है, खोपडी निकालकर उसमें गर्म लोहा भी डाल

देते है, बालो सहित सिरकी चमडी उखाडकर खोपडीसे ककरोको भी रगडते है, सडासीसे मुँह खोलकर उसमें दीपक भी जला देते है, सारे शरीरपर तेल-बत्ती लपेटकर उसमे आग भी लगा देते है, हाथपर तेल-बत्ती लपेटकर उसमें आग भी लगा देते है, गलेसे गिट्टे तककी चमडी भी उतार देते है, गलेसे कटि-प्रदेश तककी चमडी और कटि-प्रदेशसे गिट्टे तक की चमडी भी उतार देते है, दोनो कोहँनियो तथा दोनो घुटनोमे मेखें ठोककर जमीनपर भी लिटा देते है, उभय-मुख काँटे गाड-गाडकर चमडी, माँस तथा नसे भी नचोट लेते है, सारे शरीरकी चमडीको कार्षापण कार्षापण भर काट डालते है, शरीरको जहाँ-तहाँ शस्त्रोसे पीटकर उसपर कधी भी फेरते है, एक करवट लिटाकर कानमेंसे मेख भी गाड देते है, चमडीको बिना हानि पहुँचाये अन्दर-अन्दर हड्डी भी पीस डालते है, उबलता-उबलता तेल भी डाल देते है, कुत्तोंसे भी कटवाते है, जीते जी सूलीपर भी लटकाते है तथा तलवारसे सिर भी काट डालते है।

उसके मनमे ऐसा होता है कि जिस तरहके पाप कर्मके करनेसे चोरको, अपराधीको, राजके लोग नाना प्रकारके दण्ड देते है, चाबुकसे भी पीटते है तलवार से भी सिर काट डालते है, यदि मै ऐसा पाप कर्म करूँगा तो मुझे भी राजाके आदमी पकडकर इसी प्रकारके नाना तरहके दण्ड देंगे, चाबुकसे भी पीटेंगे, बेंतसे भी पीटेंगे, मुग्दरसे भी पीटेंगे, हाथ भी छेद देंगे, पाँव भी छेद देंगे, हाथ-पाँव भी छेद देंगे, कान भी छेद देंगे, नाक भी छेद देंगे, कान-नाक भी छेद देंगे, खोपडी निकालकर उसमे गर्म लोहा भी डाल देंगे, बालो सहित सिरकी चमडी उखाडकर खोपडीको ककडोंसे भी रगडेंगे, सण्डासीसे मुँह खोलकर उसमे दीपक भी जला देंगे, सारे शरीरपर तेल-बत्ती लपेटकर उसमें आग भी लगा देंगे, हाथपर तेल-बत्ती लपेटकर उसमे आग भी लगा देंगे, गलेसे गिट्टे तककी चमडी भी उतार देंगे, दोनो कोहनियो तथा दोनो घुटनोमे मेखें ठोककर जमीनपर भी लिटा देंगे, उभय-मुख काटे गाड-गाड कर चमडी, मास तथा नसे भी नचोट लेंगे, सारे शरीरकी चमडीको कार्षापण कार्षापण भर काट डालेंगे, शरीरको जहाँ तहाँसे पीटकर उसपर कघी भी करेंगे, एक करवट लिटाकर कानमें मेख भी गाड देंगे, चमडीको बिना हानि पहुँचाये अन्दर अन्दर हड्डी भी पीस डालेंगे, उबलता उबलता तेल भी डाल देंगे, कुत्तोंसे भी कटवा देंगे, जीते जी सूलीपर लटकाएँगे तथा तलवारसे सिर भी काट डालेंगे।

वह दण्ड-भयसे दूसरोकी चीजें लूटता हुआ नही घूमता है। भिक्षुओ, इसे दण्ड-भय कहते है।

भिक्षुओ, दुर्गतिमय कौनसा होता है ? भिक्षुओ, कोई सोचता है कि शारीरिक दुष्कर्मका परलोकमें बुरा दुष्परिणाम होता है, वाणीके दुष्कर्मका परलोकमें बडा दुष्परिणाम होता है, मनके दुष्कर्मका परलोकमें बडा दुष्परिणाम होता है। यदि मैं शरीर, वाणी तथा मनसे दुष्कर्म करूँगा तो यह होगा कि मैं शरीर छूटनेपर, मरनेके अनन्तर नरकमें उत्पन्न होऊँ, दुर्गतिको प्राप्त होऊँ। वह दुर्गतिके भयसे शारीरिक दुश्चरित्रताको छोड शारीरिक सुचरित्रताका अभ्यास करता है, वाणीकी दुश्चरित्रताको छोड वाणीकी सुचरित्रताका अभ्यास करता है, मनकी दुश्चरित्रताको छोड मनकी सुचरित्रताका अभ्यास करता है, वह अपने आपको परिशुद्ध बनाये रखता है। भिक्षुओ, इसे दुर्गति-भय कहते हैं। भिक्षुओ, ये चार भय हैं।

भिक्षुओ, जो कोई भी पानीमें उतरे, उसके सामने ये चार भय होते हैं। कौनसे चार ? लहरोका भय, मगर-मच्छका भय, भँवरका भय और महामच्छका भय। भिक्षुओ, जो कोई पानीमें उतरता है उसे इन चारो भयोका सामना करना पडता है। इसी प्रकार भिक्षुओ, श्रद्धा पूर्वक घरसे बेघर हुए प्रव्रजित भिक्षुको भी इन चार भयोका सामना करना पडता है। कौनसे चार भयोका ? लहरोके भयका, मगर-मच्छके भयका, भँवरके भयका, महामच्छके भयका।

भिक्षुओ, लहरोका भय कौनसा होता है ? भिक्षुओ, श्रद्धापूर्वक घरसे बेघर प्रव्राजित हुआ एक भिक्षु सोचता है मैं जन्म, जरामरणसे घिरा हूँ, शोकसे रोने-पीटनेसे दुःखसे, दौर्मनस्यसे, पश्चातापसे घिरा हूँ, दुःखमें फँसा हूँ, दुःखमें लिपटा हूँ। क्या अच्छा हो कि इस समस्त दुःखका अन्त कर सकूँ। उसको इस प्रकार प्रव्रजित हुए को उसके साथी भिक्षु उपदेश देते है, अनुशासन करते हैं—इस प्रकार तुझे आना-जाना करना चाहिये इस प्रकार तुझे देखना-भालना करना चाहिये, इस प्रकार तुझे सिकुडना चाहिये, इस प्रकार तुझे फैलाना चाहिये तथा इस प्रकार तुझे सघाटी, पात्र, चीवरको धारण करना चाहिये। उसके मनमें होता है कि घरपर रहते समय हम ही दूसरोको उपदेश देते थे, अनुशासन करते थे, अब ये हमको उपदेश देने योग्य अनुशासन करने योग्य समझते हैं। मानो हम इनके पुत्र हो, हम इनके नाती हो, वह क्रोधित हो, असतुष्ठ हो, (बुद्ध) शिक्षाको छोड, हीन-मार्गी हो जाता हैं। यह कहलाता है भिक्षुओ, भिक्षुका लहरोसे भय-भीत हो शिक्षाका त्यागकर हीन-मार्गी हो जाना। भिक्षुओ लहरोका भय यह क्रोध-पश्चातापका ही पर्याय है। भिक्षुओ, यही लहरोका भय कहलाता है।

भिक्षुओ, मगर-मच्छका भय कौनसा होता है ? भिक्षुओ, श्रद्धापूर्वक घरसे बेघर प्रव्रजित हुआ एक भिक्षु सोचता है मैं जन्म, जरामरणसे घिरा हूँ, शोकसे

रोने-पीटनेसे दु खसे, दौर्मनस्यसे, पश्चातापसे घिरा हूँ, दु खमे फसा हूँ, दु खमे लिपटा हूँ। क्या अच्छा हो कि इस समस्त दु खका अन्तकर सकूँ ? उसको इस प्रकार प्रव्रजित हुए को, उसके साथी भिक्षु उपदेश देते है, अनुशासन करते है—यह तुझे खाना चाहिये, यह तुझे न खाना चाहिये, यह तुझे भोजन करना चाहिये, यह तुझे भोजन न करना चाहिये, यह तुझे चखना चाहिये, ये तुझे न चखना चाहिये, यह तुझे पीना चाहिये, यह तुझे न पीना चाहिये, विहित ही तुझे खाना चाहिये, अविहित नही खाना चाहिये, विहित ही तुझे भोजन करना चाहिये, अविहित तुझे भोजन न करना चाहिये, विहित ही तुझे चाटना चाहिये, अविहित तुझे न चाटना चाहिये, विहित ही तुझे पीना चाहिये, अविहित तुझे न पीना चाहिये, समय पर तुझे पीना चाहिये, असमय तुझे न पीना चाहिये, समय पर तुझे खाना चाहिये, असमय तुझे न खाना चाहिये, समयपर तुझे भोजन करना चाहिये, असमयपर तुझे भोजन न करना चाहिये, समय पर तुझे चाटना चाहिये, असमय पर न चाटना चाहिये। उसके मनमे होता है, कि हम पहले घरपर रहते समय जो चाहते थे खाते थे, जो नही चाहते थे नही खाते थे; जो चाहते थे भोजन करते थे, जो नही चाहते थे नही करते थे, जो चाहते थे चखते थे, जो नही चाहते थे, नही चखते थे, जो चाहते थे पीते थे, जो नही चाहते थे, नही पीये थे, विहित भी खाते थे, अविहित भी खाते थे, विहित भी भोजन करते थे, अविहित भी भोजन करते थे, विहित भी चखते थे, अविहित भी चखते थे, विहित भी पीते थे, अविहित भी पीते थे, समय पर भी खाते थे, असमयपर भी खाते थे, समयपर भी भोजन करते थे, असमयपर भी भोजन करते थे, समयपर भी चखते थे, असमयपर भी चखते थे, समयपर भी पीते थे, असमयपर भी पीते थे, श्रद्धावान गृहस्थ लोग हमे दिनमे असमयपर जो कुछ भी प्रणीत आहार देते है, ऐसे लगता है कि उसके विषयमे भी यह हमारे मुँहपर पट्टी वाधना चाहते है। यह सोच वह क्रोधित होता है, असन्तुष्ट होता है और शिक्षाका त्यागकर हीन-मार्गी हो जाता है। भिक्षुओ, इसे कहते है मगरमच्छ भयसे भयभीत होकर शिक्षाका त्यागकर हीन-मार्गी हो जाना। भिक्षुओ, मगर-मच्छ भय यह पेटुपनका ही पर्याय है। भिक्षुओ, यही मगर-मच्छ भय कहलाता है।

भिक्षुओ, भवर-भय कौनसा होता है ? भिक्षुओ, श्रद्धापूर्वक घरसे वेघर प्रव्रजित हुआ एक भिक्षु सोचता है—मै जन्म-जरामरणसे घिरा हूँ, शोकसे रोने-पीटनेसे, दु खसे दौर्मनस्यसे, पश्चातापसे घिरा हूँ, दु खमे फँसा हूँ, दु खमे घिरा हूँ। क्या अच्छा हो कि उस दु खका अन्त कर सकूँ। इस प्रकार प्रव्रजित हुआ हुआ वह पूर्वान्ह

समय पहन कर, पचि-चीवर ले, गाँव या निगममें भिक्षार्थ प्रवेश करता है—असयत शरीरसे, असयत वाणीसे तथा असयत चित्तसे युक्त होकर उसकी स्मृति अनुपस्थित रहती है और इन्द्रियाँ असयत। वह वहाँ किसी गृहस्थ या गृहस्थ-पुत्रको देखता है पाचो-इद्रियोके विषयोसे युक्त, समर्पित, घिरा हुआ। उसके मनमे होता है कि पहले गृहस्थ रहते समय पाचो इन्द्रियोके विषयोंसे युक्त रहे, समर्पित रहे, घिरे रहे। मेरे घरपर काम-भोगोको भोगनेके साधन है। मै भोगोको भोगते हुए तथा पुण्यकर्म करते हुए रह सकता हूँ। क्यो न मै शिक्षाको छोड हीन मार्गी वन भोगोको भोगूं और पुण्य करू? वह शिक्षा को छोड हीन मार्गी हो जाता है। भिक्षुओ, यह कहलाता है भिक्षुका भँवर-भयसे भयभीत होकर शिक्षाका त्यागकर हीन-मार्गी हो जाना। भिक्षुओ, भंवर-भय पाँचो इन्द्रियोके विषयोका ही पर्याय है। भिक्षुओ, यह भवर, भय कहलाता है।

भिक्षुओ, महा-मच्छ का भय कौनसा होता है? भिक्षुओ, श्रद्धापूर्वक घरसे वेघर प्रप्रजित हुआ एक भिक्षु सोचता है—मै जन्म जरामरणसे घिरा हूँ, शोकसे, रोने-पीटनेसे, दु खसे, दौर्मनस्यसे, पश्चातापसे घिरा हूँ, दु खमें फसा हूँ दु खमें घिरा हूँ। क्या अच्छा हो कि उस दु खका अन्त कर सकूं! इस प्रकार प्रव्रजित हुआ हुआ वह पूर्वाह्ण समय पहनकर पात्र चीवर ले, गाँव या निगममें भिक्षार्थ प्रवेश करता है—असयत शरीरसे असयत वाणी से तथा असयत चित्तसे युक्त होकर। उसकी स्मृति अनुपस्थित रहती है और इन्द्रियाँ असयत। वह वहाँ किसी स्त्रीको देखता है जो निर्वस्त्र सी है, ठीकसे ढके नही है। उस निर्वस्त्र सी, उस ठीकसे वस्त्र न पहने हुई स्त्रीको देखकर उस भिक्षुके मनमें राग घर कर लेता है। रागके वशीभूत चित्तसे युक्त होकर वह शिक्षा को छोड हीन-मार्गी हो जाता है। भिक्षुओ, यह है भिक्षुका महामच्छ-भयसे भयभीत होकर शिक्षाका त्याग कर हीन-मार्गी हो जाना। भिक्षुओ, महामच्छ-भय यह स्त्रीका ही पर्याय है। भिक्षुओ, यह कहलाता है महामच्छ भय। भिक्षुओ, ये चार भय है जिनका श्रद्धापूर्वक घरसे वेघर हुए प्रव्रजित भिक्षुको सामना करना पडता है।

भिक्षुओ, इस लोकमें चार प्रकारके आदमी विद्यमान है। कौनसे चार प्रकारके? भिक्षुओ, एक आदमी काम-भोगोसे रहित, अकुशल धर्मोसे रहित प्रथम ध्यान को प्राप्त हो विहार करता है जो वितर्क-विचार युक्त होता है, जो विवेकोत्पन्न होता है तथा जिसमे प्रीति-सुख विद्यमान रहता है। वह उसका मजा लेता है। वह उसम रमण करता है। वह उससे तृप्ति प्राप्त करता है। वह उस ध्यानमें स्थित रहकर उसीमे निमग्न रहकर उसी का प्राय अभ्यास करने वाला होकर उसी ध्यानसे युक्त

रहकर यदि मृत्युको प्राप्त होता है तो वह ब्रह्मकायिक देवलोकमें जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, ब्रह्मकायिक देवताओकी कल्प भरकी आयु होती है। जो पृथक-जन (= सामान्य जन) होता है वह आयुभर वहाँ रहकर जितनी उन देवताओकी आयु होती है उतनी आयु नही बिताकर नरक लोकमे भी जाता है, तिरश्चीन-योनिमे भी उत्पन्न होता है, प्रेतयोनिमे भी जन्म ग्रहण करता है। किन्तु जो भगवान (बुद्ध) का श्रावक होता है वह आयुभर वहाँ रहकर, जितनी उन देवताओकी आयु होती है, वह सब वहाँ बिता कर वही से परिनिर्वृत्त हो जाता है। भिक्षुओ अश्रुत पृथक्-जन तथा धर्म-श्रुत आर्य श्रावक का यही अन्तर है, यही भेद है, यही विशेषता है जो कि गतिके सम्बन्धमे, उत्पत्तिके सम्बन्धमें।

फिर भिक्षुओ, एक आदमी वितर्क और विचारोके उपशमनसे उत्पन्न अन्दरकी प्रसन्नता और एकाग्रता रूपी द्वितीय-ध्यानको प्राप्त हो विहार करता है, जिसमे न वितर्क होते है, न विचार , जो समाधि से उत्पन्न होता है और जिसमें प्रीति तथा सुख रहते हैं। वह उसका मजा लेता है। वह उसमे रमण करता है। वह उसमें तृप्ति प्राप्त करता है। वह उस ध्यानमें स्थित रहकर, उसीमे निमग्न रहकर, उसीका प्राय अभ्यास करने वाला होकर उसी ध्यानसे युक्त रहकर यदि मृत्युको प्राप्त होता है तो वह आभस्वर देवलोकमें जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, आमस्वरमे देवताओकी दो कल्पकी आयु होती है। जो पृथक जन (=सामान्य जन) होता है वह आयु भर वहाँ रहकर, जितनी उन देवताओकी आयु होती है उतनी आयु वही बिताकर नरक लोकमें जाता है, तिरश्चीन-योनिमें भी उत्पन्न होता है, प्रेत-योनि में भी जन्म ग्रहण करता है। किन्तु जो भगवान (बुद्ध) का श्रावक होता है, वह आयु भर वहाँ रहकर, जितनी उन देवताओकी आयु होती है, वह सब वहाँ बिताकर वही से परिनिवृत्त हो जाता है। भिक्षुओ अश्रुत पृथक जन तथा (धर्म-) श्रुत आर्य-श्रावक का यही अन्तर है, यही भेद है, यही विशेषता है, जो कि यह गतिके सम्बन्धमें, उत्पत्तिके सम्बन्धमे।

फिर भिक्षुओ, एक आदमी प्रीतिसे भी विरक्त हो उपेक्षावान् बन विचरता है। वह स्मृतिमान् ज्ञानवान् होता है और (चित्त–) कायसे सुखका अनुमव करता है। वह तृतीय-ध्यानको प्राप्त करता है, जिसे पडित जन 'उपेक्षावान्' स्मृतिवान् सुखपूर्वक विहार करनेवाला कहते है। वह उसका मजा लेता है। वह उसमे रमण करता है। वह उसमे तृप्ति प्राप्त करता है। वह उस ध्यानमे स्थित रहकर, उसीमे

निमग्न रहकर, उसीका प्राय अभ्यास करने वाला होकर, उसी ध्यान से युक्त रहकर यदि मृत्युको प्राप्त होता है तो वह शुभ-कृष्ण देवताओमें जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, शुभ-कृष्ण देवताओकी चार कल्पकी आयु होती है। जो पृथक जन (= सामान्य जन) होता है वह आयु भर वहाँ रहकर, जितनी भी उन देवताओकी आयु होती है उतनी आयु वही विताकर नरक लोकमे जाता है, तिरश्चीन-योनिमें भी उत्पन्न होता है, प्रेत-योनिमें भी जन्म-ग्रहण करता है। किन्तु जो भगवान (वुद्ध) का श्रावक होता है, वह आयुभर वही रहकर, जितनी उन देवताओकी आयु होती है, वह सव वहाँ विताकर वहीसे परिनिर्वृत्त हो जाता है। भिक्षुओ, अश्रुत पृथक जन तथा (धर्म-) श्रुत आर्य-श्रावकका यही अन्तर है, यही भेद है, यही विशेपता है, जो कि यह गतिके सम्वन्धमे, उत्पत्तिके सम्बन्धमे। और फिर भिक्षुओ, एक आदमी सुख और दुख दोनोके प्रहाणसे, सौमनस्य और दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हुए रहनेसे (उत्पन्न) चतुर्थ ध्यानको प्राप्त करता है, जिसमे न दुख होता है, न सुख, और होती है (केवल) उपेक्षा तथा स्मृतिकी परिशुद्धि। वह उसका मजा लेता है। वह उसमे रमण करता है। वह उसमे तृप्ति प्राप्त करता है। वह उस ध्यानमें स्थित रहकर, उसीमे निमग्न रहकर, उसीका प्राय अभ्यास करने वाला होकर, उसी ध्यानसे युक्त रहकर यदि मृत्युको प्राप्त होता है तो वह वेहप्फल देवताओमें जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, वेहप्फल देवताओकी पाँच कल्पकी आयु होती है। जो पृथक जन (= सामान्य जन) होता है वह आयु भर वहाँ रहकर, जितनी भी उन देवताओकी आयु होती है, उतनी आयु वही विताकर नरक लोकमे जाता है, तिरश्चीन-योनिमें भी उत्पन्न होता है, प्रेत योनिमें भी जन्म ग्रहण करता है। किन्तु जो भगवान् (वुद्ध) का श्रावक है, वह आयु भर वही रहकर, जितनी उन देवताओकी आयु होती है, वह सव वही विताकर वहीसे परिनिर्वृत्त हो जाता है। भिक्षुओ, अश्रुत पृथक-जन तथा (धर्म-) श्रुत आर्य श्रावकका यही अन्तर है, यही भेद है, यही विशेपता है, जो कि यह गतिके सम्वन्धमें, उत्पत्तिके सप्म्वन्धमें। भिक्षुओ, लोकमें ये चार प्रकारके आदमी विद्यमान है।

भिक्षुओ, दुनियामे चार प्रकारके लोग विद्यमान है। कौनसे चार प्रकारके ? भिक्षुओ, एक आदमी काम भोगोसे पृथक प्रथम ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है। यह जो कुछ भी रूप-मात्र है, वेदना-मात्र है, सज्ञा-मात्र है, सस्कार-मात्र है, विज्ञान-मात्र है, उन सभीको अनित्य-स्वरूप, दुख-स्वरूप, रोग-स्वरूप, फोडे-स्वरूप, शल्य-स्वरूप, पीडा-स्वरूप, वीमारी-स्वरूप, पर-स्वरूप, न्हास-स्वरूप, शून्य-स्वरूप तथा अनातम-स्वरूप देखता है। वह शरीरके न रहनेपर, मरनेपर, सुद्धावास

देव लोकमें उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, यह पृथक जनो (=सामान्य जनो) की अपेक्षा विशेष उत्पत्ति है।

भिक्षुओ, फिर एक आदमी वितर्क-विचारोका उपशमन कर .. द्वितीय ध्यान . तृतीय ध्यान चतुर्थ ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है। वह जो कुछ भी रूप-मात्र है, वेदना-मात्र है, सज्ञा-मात्र है, सस्कार-मात्र है, विज्ञान-मात्र है, इन सभीको अनित्य-स्वरूप, दु ख-स्वरूप, रोग-स्वरूप-, फोडे-स्वरूप, शल्य-स्वरूप, पीडा-स्वरूप, बीमारी-स्वरूप, पर-स्वरूप, न्हास, स्वरूप, शून्य-स्वरूप तथा अनात्म-स्वरूप देखता है। वह शरीरके न रहनेपर, मरनेपर, सुद्धावास देव लोकमे उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, यह पृथक जनो (=सामान्य जनो) की अपेक्षा विशेष उत्पत्ति है। भिक्षुओ, दुनियामे ये चार प्रकारके लोग विद्यमान है।

भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकारके लोग विद्यमान है। कौनसे चार प्रकारके? भिक्षुओ, एक आदमी मैत्री युक्त चित्तसे एक दिशाको स्पर्श करता हुआ विहार करता है वैसे ही दूसरी वैसे ही तीसरी वैसे ही चौथी। वह ऊपर, नीचे तिर्यक दिशामें, सर्वत्र, सबके लिये, समस्त लोक को ऐसे चित्तसे स्पर्श करता हुआ विहार करता है, जो मैत्री युक्त होता है, विशाल होता है, महान होता है, अप्रमाण होता है, वैर-रहित होता, है, द्वेष-रहित होता है। वह उसका मजा लेता है। वह उसमे रमण करता है। वह उसमे तृप्ति प्राप्त करता है। वह उस भावनामे स्थित रहकर, उसीमें निमग्न रहकर, उसीका प्राय अभ्यास करनेवाला होकर, उसी भावनासे युक्त रहकर यदि मृत्युको प्राप्त होता है तो वह ब्रह्म-कायिक देवताओमे जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, ब्रह्म कायिक देवताओकी आयु कल्प भर की होती है। जो पृथक जन (=सामान्य जन) होता है वह आयुभर वहाँ रहकर, जितनी भी उन देवताओकी आयु होती है, उतनी आयु वही विताकर नरक लोकमे जाता है, तिरश्चीन-योनिमे भी उत्पन्न होता है, प्रेत योनिमे भी जन्म ग्रहण करता है। किन्तु जो भगवान (वुद्ध) का श्रावक है वह आयु भर वही रहकर, जितनी उन देवताओकी आयु होती है, वह सब वही विताकर वहीसे परिनिर्वृत्त हो जाता है। भिक्षुओ, अश्रुत पृथक जन तथा (धर्म–) श्रुत आर्य-श्रावकका यही अन्तर है, यही भेद है, यही विशेषता है जो कि यह गतिके सम्वन्धमे, उत्पत्तिके सम्वन्धमे।

फिर भिक्षुओ, एक आदमी करुणा युक्त चितसे मुदिता युक्त चित्तसे ... उपेक्षायुक्त चित्तसे एक दिशाको स्पर्श करता हुआ विहार करता है वैसे ही दूसरी वैसे ही तीसरी वैसे ही चौथी। वह ऊपर, नीचे, तिर्यक् दिशामें

सर्वत्र सबके लिये, समस्त लोकको ऐसे चित्तसे स्पर्श करता हुआ विहार करता है जो मैत्री-युक्त होता है, विशाल होता, महान् होता है, अप्रमाण होता है, वैर-रहित होता है, द्वेष-रहित होता है। वह उसका मजा लेता है। वह उसमे रमण करता है। वह उसमे तृप्ति प्राप्त करता है। वह उस भावनामे स्थित रहकर, उसीमें निमग्न रहकर, उसीका प्राय अभ्यास करने वाला होकर, उसी भावनासे युक्त रहकर यदि मृत्यु को प्राप्त होता है तो वह आभस्वर देवताओमे जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, आभस्वर देवताओकी आयु दो कल्प भरकी होती है . शुभ कृष्ण देवताओमें जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, शुभ कृष्ण देवताओकी आयु चार कल्पकी होती है . वेहप्फल देवताओमे जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, वेहप्फल देवताओकी आयु पाँच सौ कल्प होती है। जो पृथक जन (= सामान्य जन) होता है वह आयुभर वहाँ रहकर, जितनी भी उन देवताओकी आयु होती है, उतनी आयु वही विताकर नरक लोकमे जाता है, तिरश्चीन योनिमे भी उत्पन्न होता है, प्रेत योनिमे भी जन्म ग्रहण करता है। किन्तु जो भगवान (बुद्ध) का श्रावक है वह आयु भर वही रहकर जितनी उन देवताओकी आयु होती है, वह सब वही विताकर वहींसे निर्वृत हो जाता है, भिक्षुओ, अश्रुत पृथक-जन तथा (धर्म-) श्रुत आर्य श्रावकका यही अन्तर है, यही भेद है, यही विशेषता है जो कि यह गतिके सम्बन्धमे, उत्पत्तिके सम्बन्धमे। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोक विद्यमान है।

भिक्षुओ, दुनियामे ये चार तरहके लोग विद्यमान है। कौनसे चार तरहके? भिक्षुओ, एक आदमी मैत्री-युक्त चित्तसे एक दिशाको स्पर्श करता हुआ विहार करता है—वैसे ही दूसरी, वैसे ही तीसरी वैसे ही चौथी। वह ऊपर, नीचे, तिर्यक् दिशामें, सर्वत्र, सबके लिये, समस्त लोकको ऐसे चित्तसे स्पर्श करता हुआ विहार करता है जो मैत्री-युक्त होता है, विशाल होता है, महान् होता है, असीम होता है, वैर-रहित होता है, द्वेष-रहित होता है। वह जो कुछ भी रूप-मात्र है, वेदना-मात्र है, सज्ञा-मात्र है, सस्कार-मात्र है, विज्ञान-मात्र है, इन सभीको अनित्य-स्वरूप, दु ख-स्वरूप, रोग-स्वरूप, फोडे-स्वरूप, शल्य-स्वरूप, पीडा-स्वरूप, बीमारी-स्वरूप, पर-स्वरूप, ह्रास-स्वरूप, शून्य-स्वरूप तथा अनात्म-स्वरूप देखता है। वह शरीरके, न रहनेपर, मरनेपर, सुद्धावास देव-लोकमे उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, यह पृथक जनोकी अपेक्षा विशेप उत्पत्ति है।

फिर भिक्षुओ, एक आदमी करुणा-युक्त चित्तसे मुदिता युक्त चित्तसे उपेक्षा युक्त चित्तसे एक दिशाको स्पर्श करता हुआ विहार करता है वैसे

ही दूसरी वैसे ही तीसरी वैसे ही चौथी। वह ऊपर, नीचे, तिर्यक् दिशामे, सर्वत्र, सबके लिये समस्त लोकको ऐसे चित्तसे स्पर्श करता हुआ विहार करता है जो मैत्री-युक्त होता है, विशाल होता है, महान होता है, असीम होता है, वैर-रहित होता है, द्वेष-रहित होता है। वह जो कुछ भी रूप-मात्र है, वेदना-मात्र है, सज्ञा-मात्र है, सस्कार-मात्र है, विज्ञान-मात्र है, इन सभीको अनित्य-स्वरूप, दु ख-स्वरूप, रोग-स्वरूप, फोडे-स्वरूप, शल्य-स्वरूप, पीडा-स्वरूप, बीमारी-स्वरूप, ह्रास-स्वरूप, शून्य-स्वरूप तथा अनात्म-स्वरूप देखता है। वह शरीरके न रहनेपर, मरनेपर, सुद्धावास देवलोकमे उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, यह पृथक-जनोकी अपेक्षा विशेष उत्पत्ति है। भिक्षुओ, दुनियामे ये चार प्रकारके लोग विद्यमान है।

भिक्षुओ, जब तथागत अर्हत् सम्यक्सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होता है तो उस समय चार आश्चर्यंकर अद्भुत घटनायें घटती है। कौन-सी चार? भिक्षुओ, जब बोधिसत्व तुषित-लोकसे च्युत होकर स्मृति-सम्प्रजन्य सहित माताकी कोखमे गर्भ धारण करते है, उस समय सदेव समार लोकमे, ब्रह्म-लोकमे, श्रमण-ब्राह्मणो सहित देव-मनुष्योमे, असीम विशाल प्रकाश प्रकट होता है, देवताओके देवतानुभावसे भी विशिष्ट, जो वह (चक्रवाल) लोकोके बीचकी अन्धेरी होती है, असवृत, अन्धकारपूर्ण, घोर अन्धकार पूर्ण, जहाँ उतने ऋद्धिमान्, इतने तेजस्वी चाँद सूर्य तकका प्रकाश नही पहुँचता वहाँ भी असीम विशाल प्रकाश प्रकट होता है, देवताओके देवताअनुभावसे भी विशिष्ट। जो दूसरे भी प्राणी उस समय उत्पन्न होते है वे भी परस्पर एक दूसरेको जान लेते है कि और भी प्राणी उत्पन्न हुए है। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर यह पहली आश्चर्यंकर अद्भुत-घटना है जो घटती है।

फिर भिक्षुओ, जब बोधिसत्व स्मृति-सम्प्रजन्य युक्त माताकी कोखसे बाहर आते है, उस समय सदेव समार लोकमे, ब्रह्म लोकमे, श्रमण-ब्राह्मणो सहित देव-मनुष्योमे, असीम विशाल प्रकाश प्रकट होता है, देवताओके देवतानुभावसे भी विशिष्ट जो वह, (चक्रवाल--) लोकोके बीचकी अन्धेरी होती है, असस्कृत, अन्धकार-पूर्ण, घोर अन्धकार पूर्ण, जहाँ उतने ऋद्धिमान, उतने तेजस्वी चन्द्र सूर्य तकका प्रकाश नही पहुँचता, वहाँ भी असीम विशाल प्रकाश प्रकट होता है, देवताओके देवतानुभावसे भी विशिष्ट। जो दूसरे भी प्राणी उस समय उत्पन्न होते है वे भी परस्पर एक दूसरेको जान लेते है कि और भी प्राणी उत्पन्न हुये है। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक्सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर यह दूसरी आश्चर्यंकर अद्भुत घटना है, जो घटती है।

फिर भिक्षुओ, जब तथागत अनुपम सम्यक् सम्बोधिको प्राप्त होते है, उस समय सदेव समार लोकमें ब्रह्म-लोकमें श्रमण-ब्राह्मणो सहित देव-मनुष्योंमें, असीम विशाल प्रकाश होता है, देवताओके देवतानुभावसे भी विशिष्ट, जो (चक्रवाल) लोकोके बीचकी अन्धेरी होती है, असस्कृत, अन्धकार पूर्ण, घोर अन्धकार पूर्ण, जहाँ उतने ऋद्धिमान्, उतने तेजस्वी चन्द्र सूर्य तकका प्रकाश नही पहुँचता, वहाँ भी असीम विशाल प्रकाश प्रकट होता है, देवताओके देवतानुभावसे भी विशिष्टा। जो दूसरे भी प्राणी उस समय उत्पन्न होते हैं वे भी परस्पर एक दूसरेको जान लेते हैं कि और भी प्राणी उत्पन्न हुए है। भिक्षुओ, तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर यह तीसरी आश्चर्यकर अद्भुत घटना है, जो घटती है।

फिर भिक्षुओ, जब तथागत अनुपम धर्मचक्र प्रवर्तित करते है, उस समय सदेव समार लोकमे, ब्रह्म लोकमे, श्रमण-ब्राह्मणो सहित देव मनुष्योमे असीम विशाल प्रकाश प्रकट होता है, देवताओके देवतानुभावसे भी विशिष्ट जो वह (चक्रवाल) लोकोंके बीचकी अन्धेरी होती है असस्कृत, अन्धकार पूर्ण, घोर अन्धकार पूर्ण, जहाँ उतन ऋद्धिमान्, उतने तेजस्वी चन्द्र सूर्य तकका प्रकाश नही पहुँचता, वहाँ भी असीम विशाल प्रकाश प्रकट होता है, देवताओके देवतानुभावसे भी विशिष्ट। जो दूसरे भी प्राणी उस समय उत्पन्न होते हैं वे भी परस्पर एक दूसरेको जान लेते हैं कि और भी प्राणी उत्पन्न हुये हैं। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर यह चौथी आश्चर्य-कर अद्भुत घटना है जो घटती है। भिक्षुओ, जब तथागत अर्हत, सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होता है तो उस समय ये चार आश्चर्यकर अद्भुत घटनायें घटती हैं।

भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर चार आश्चर्यकर अद्भुत घटनायें घटती हैं। कौनसी चार? भिक्षुओ, यह प्रजा आसक्तिमें रमण करने वाली है, आसक्तिमें रत रहने वाली है, आसक्तिसे उत्तेजित होने वाली है। ऐसी प्रजा तथागतके अनासक्तिका धर्म देशना करनेपर उस धर्मको सुनती है, ध्यान देती है, चित्तको ज्ञान प्राप्तिकी ओर झुकाती है। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर यह पहली आश्चर्यकर अद्भुत घटना घटती है।

भिक्षुओ, यह प्रजा अभिमानमें रमरण करने वाली है, अभिमानमें रमण रहने वाली है, अभिमानसे उत्तेजित होने वाली है। ऐसी प्रजा तथागतके द्वारा अभिमानको जीतनेके लिये धर्मोपदेश दिये जानेपर उस धर्मको सुनती है, ध्यान देती है, चित्तको ज्ञान प्राप्तिकी ओर झुकाती है। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर यह दूसरी आश्चर्यकर अद्भुत घटना घटती है।

भिक्षुओ, यह प्रजा अशान्तिमें रमण करने वाली है, अशान्तिमे रमण रहने वाली है, अशान्तिसे उत्तेजित होने वाली है, ऐसी प्रजा तथागतके द्वारा शान्तिका धर्म उपदिष्ट किये जानेपर उस धर्मको सुनती है, ध्यान देती है, चित्तको ज्ञान प्राप्तिकी ओर झुकाती है। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर यह तीसरी आश्चर्यकर अद्भुत घटना घटती है।

भिक्षुओ, यह प्रजा अविद्यासे ग्रसी हुई है, अविद्या रूपी अण्डेमे वद है, अविद्यासे चारो ओरसे घिरी है। ऐसी प्रजा तथागतके द्वारा अविद्याको जीत लेनेका धर्म उपदिष्ट किये जानेपर उस धर्मको सुनती है, ध्यान देती है, चित्तको ज्ञान-प्राप्तिकी ओर झुकाती है। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्वुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर यह चौथी आश्चर्यकर अद्भुत घटना घटती है। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्वुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर ये चार आश्चर्यकर अद्भुत घटनाये घटती है।

भिक्षुओ, आनन्दमें ये चार आश्चर्यकर अद्भुत वाते है। कौन-सी चार? भिक्षुओ, यदि भिक्षु-परिषद् आनन्दका दर्शन करनेके लिये जाती है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि आनन्द धर्मका उपदेश करता है तो वह आनन्दके उपदेशसे भी सन्तुष्ट होती है। भिक्षुओ, भिक्षु-परिपद् अतृप्त ही रह जाती है और आनन्द चुप हो जाता है। भिक्षुओ, यदि भिक्षुणी-परिषद आनन्दका दर्शन करनेके लिये जाती है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि आनन्द धर्मका उपदेश करता है तो वह आनन्दके उपदेशसे भी सन्तुष्ट होती है। भिक्षुओ, भिक्षुणी-परिषद अतृप्त ही रह जाती है और आनन्द चुप हो जाता है।

भिक्षुओ, यदि उपासक परिषद आनन्दका दर्शन करनेके लिये जाती है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि आनन्द धर्मका उपदेश करता है तो वह आनन्दके उपदेशसे भी सन्तुष्ट होती है। भिक्षुओ, उपासक-परिषद अतृप्त ही रह जाती है और आनन्द चुप हो जाता है। भिक्षुओ, यदि उपासिका-परिषद आनन्दका दर्शन करनेके लिये जाती है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि आनन्द धर्मका उपदेश करता है तो वह आनन्दके उपदेशसे भी सन्तुष्ट होती है। भिक्षुओ, उपासिका-परिषद् अतृप्त ही रह जाती है और आनन्द चुप हो जाता है। भिक्षुओ, आनन्दमे ये चार आश्चर्यकर अद्भुत वाते है।

भिक्षुओ, चक्रवर्ती राजामे ये चार आश्चर्यकर अद्भुत वाते होती है। कौनसी चार? भिक्षुओ, यदि क्षत्रिय-परिषद चक्रवर्ती राजाके दर्शनके लिये जाती

है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि चक्रवर्ती राजा बोलता है तो वह उसके भाषणसे भी सन्तुष्ट हो जाती है। भिक्षुओ, क्षत्रिय-परिषद् अतृप्त ही रह जाती है और चक्रवर्ती राजा चुप हो जाता है।

भिक्षुओ, यदि ब्राह्मण-परिषद् चक्रवर्ती राजाके दर्शनके लिये जाती है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि चक्रवर्ती राजा बोलता है तो वह उसके भाषणसे भी सन्तुष्ट हो जाती है। भिक्षुओ, ब्राह्मण-परिषद अतृप्त ही रह जाता है और चक्रवर्ती राजा चुप हो जाती है।

भिक्षुओ, यदि गृहपति-परिषद् चक्रवर्ती राजाके दर्शनके लिये जाती है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि चक्रवर्ती राजा बोलता है तो वह उसके भाषणसे भी सन्तुष्ट हो जाती है। भिक्षुओ, गृहपति-परिषद् अतृप्त ही रह जाती है और चक्रवर्ती राजा चुप हो जाता है।

भिक्षुओ, यदि श्रमण-परिषद् चक्रवर्ती राजाके दर्शनके लिये जाती है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि चक्रवर्ती राजा बोलता है तो वह उस भाषणसे भी सन्तुष्ट हो जाती है। भिक्षुओ, श्रमण परिषद अतृप्त ही रह जाती है और चक्रवर्ती राजा चुप हो जाता है। भिक्षुओ, चक्रवर्ती राजामे ये चार आश्चर्यकर अद्भुत बातें हैं।

इसी प्रकार भिक्षुओ, आनन्दमे भी चार आश्चर्यकर अद्भुत बाते है। कौन-सी चार? भिक्षुओ, यदि भिक्षु परिषद आनन्दके दर्शनके लिये जाती है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि आनन्द धर्मोपदेश देता है तो वह उसके धर्मोपदेशसे भी सन्तुष्ट हो जाती है। भिक्षुओ, भिक्षु परिषद अतृप्त ही रह जाती है और आनन्द चुप हो जाता है। भिक्षुओ, यदि भिक्षुणी-परिषद भिक्षुओ, यदि उपासक-परिषद् भिक्षुओ, यदि उपासिका-परिषद आनन्दके दर्शनके लिये जाती है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि आनन्द धर्मोपदेश देता है तो वह उसके धर्मोपदेशसे भी सन्तुष्ट हो जाती है। भिक्षुओ, उपासिका परिषद अतृप्त ही रह जाती है और आनन्द चुप हो जाता है। भिक्षुओ, आनन्द मे ये चार आश्चर्यकर अद्भुत बातें है।

(४) पुद्गल-वर्ग

भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके लोग विद्यमान है। कौनसे चार तरहके? भिक्षुओ, एक आदमीके न तो निम्न-स्तरके काम-लोक सम्बन्धी सयोजन प्रहीण हुए रहते हैं, न उत्पत्ति-जनक सयोजन प्रहीण हुए रहते है और न भव-जनक सयोजन प्रहीण हुए रहते हैं।

भिक्षुओ, एक आदमीके निम्न-स्तरके काम-लोक सम्वन्धी सयोजन प्रहीण हुए रहते है, किन्तु न उत्पत्ति-जनक सयोजन प्रहीण हुये रहते है और न भव-जनक सयोजन प्रहीण हुये रहते है।

भिक्षुओ, एक आदमीके निम्न-स्तरके काम-लोक सम्वन्धी सयोजन प्रहीण हुए रहते है, उत्पत्ति-जनक सयोजन प्रहीण हुए रहते है, किन्तु भव-जनक सयोजन प्रहीण हुए नही रहते।

भिक्षुओ, एक आदमीके निम्न-स्तरके काम-लोक सम्वन्धी सयोजन प्रहीण हुए रहते है, उत्पत्ति-जनक सयोजन प्रहीण हुये रहते है तथा भव-जनक सयोजन भी प्रहीण हुए रहते है।

भिक्षुओ, किस आदमीके न तो निम्न-स्तरके कामलोक सम्वन्धी सयोजन प्रहीण हुए रहते है, न उत्पत्ति-जनक सयोजन प्रहीण हुए रहते है और न भव-जनक सयोजन प्रहीण हुए रहते है? सकृदागामीके। भिक्षुओ, इस आदमीके न तो निम्नस्तरके काम-लोक सम्वन्धी सयोजन प्रहीण हुए रहते है, न उत्पत्तिजनक सयोजन प्रहीण हुए रहते है और न भवजनक सयोजन प्रहीण हुए रहते है।

भिक्षुओ, किस आदमीके निम्न-स्तरके कामलोक सम्वन्धी सयोजन प्रहीण हुए रहते है, किन्तु न उत्पत्ति-जनक सयोजन प्रहीण हुये रहते है और न भव-जनक सयोजन प्रहीण हुए रहते है? जो ऊर्ध्व-स्रोत वाला होता है, जो ज्येष्ठतम देवताओ-के पास पहुँचने वाला होता है। भिक्षुओ, इस आदमीके निम्न-स्तरके काम-लोक सम्वन्धी सयोजन प्रहीण हुए रहते है, किन्तु न उत्पत्तिजनक सयोजन प्रहीण हुए रहते है और न भवजनक सयोजन प्रहीण हुए रहते है।

भिक्षुओ, किस आदमीके निम्न-स्तरके काम लोक-सम्वन्धी सयोजन प्रहीण हुए रहते है, उत्पत्ति-जनक सयोगन प्रहीण हुए रहते है, किन्तु भव-जनक सयोजन हुए नही रहते? बीचमें ही परिनिर्वाणको प्राप्त करनेवाले अनागामीके। भिक्षओ, इस आदमीके निम्न-स्तरके काम-लोक सम्वन्धी सयोजन प्रहीण हुए रहते है, उत्पत्ति-जनक सयोजन प्रहीण हुए रहते है, किन्तु भव-जनक सयोजन प्रहीण हुए नही रहते।

भिक्षुओ, किस आदमीके निम्नस्तरके काम-लोक सम्वन्धी सयोजन भी प्रहीण हुए रहते है, उत्पत्ति-जनक सयोजन भी प्रहीण हुए रहते है, भव जनक सयोजन भी प्रहीण हुए रहते है? अर्हतके। भिक्षुओ, इस आदमीके निम्नस्तरके काम-लोक सम्वन्धी सयोजन भी प्रहीण हुए रहते है, उत्पत्ति-जनक सयोजन भी प्रहीण हुये रहते है, भव-जनक सयोजन भी प्रहीण हुये रहते है। भिक्षुओ, दुनियामे ये चार तरहके लोग है।

भिक्षुओ, इस दुनियामे चार प्रकारके लोग विद्यमान है। कौनसे चार प्रकारके? ठीक उत्तर दे सकने वाला, किन्तु शीघ्र उत्तर दे सकने वाला नही, शीघ्र उत्तर दे सकने वाला, किन्तु ठीक उत्तर दे सकने वाला नही, ठीक उत्तर दे सकने वाला और शीघ्र उत्तर दे सकने वाला, न ठीक उत्तर दे सकने वाला और न शीघ्र उत्तर दे सकने वाला। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग है।

भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकारके लोग है। कौनसे चार प्रकारके? उपदेश देते ही अर्थको जान लेने वाला, विस्तारसे धर्मोपदेश देनेपर धर्मको जान सकने वाला, क्रमश धर्मको जान सकने वाला, जन्मभर भी धर्मका उपदेश सुननेको मिले तव भी न जान सकने वाला। भिक्षुओ, दुनियामे ये चार तरहके लोग है।

भिक्षुओ, दुनियामे चार प्रकारके लोग विद्यमान है। कौनसे चार प्रकारके? प्रयासके फलपर निर्भर किन्तु कर्मके फलपर निर्भर नही, कर्मके फलपर निर्भर किन्तु प्रयासके फलपर निर्भर नही, प्रयास तथा कर्म दोनोके फल पर निर्भर, न प्रयासके फलपर निर्भर और न कर्म के फलपर निर्भर। भिक्षुओ, दुनियामे ये चार तरहके लोग है।

भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके लोग विद्यमान है। कौन-से चार तरहके? सदोप, दोप-बहुल, अल्प-दोपी, निर्दोप।

भिक्षुओ, सदोप व्यक्ति कौन-सा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी सदोप शारीरिक कर्मसे युक्त होता है, सदोप वाणीके कर्मसे युक्त होता है, सदोप मनके कर्मसे युक्त होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी सदोप होता है।

भिक्षुओ, दोप-बहुल व्यक्ति कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी अधिकतर सदोप शारीरिक कर्मसे युक्त होता है, अल्पतर निर्दोप शारीरिक कर्मसे, अधिकतर सदोप वाणीके कर्मसे युक्त होता है, अल्पतर निर्दोप वाणीके कर्मसे, अधिकतर सदोप मनके कर्मसे युक्त होता है, अल्पतर निर्दोप मनके कर्मसे, इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी दोप-बहुल होता है।

भिक्षुओ, आदमी अल्प-दोपी कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी अधिकतर निर्दोप शारीरिक कर्मसे युक्त होता है, अल्पतर सदोप शारीरिक कर्मसे, अधिकतर निर्दोप वाणीके कर्मसे युक्त होता है, अल्पतर सदोप वाणीके कर्मसे; अधिकतर निर्दोप मनके कर्मसे युक्त होता है, अल्पतर सदोप मनके कर्मसे, इस प्रकार, भिक्षुओ, आदमी अल्प-दोपी होता है।

भिक्षुओ, आदमी किस प्रकार निर्दोष होता है? भिक्षुओ, एक आदमी निर्दोष शारीरिक-कर्मसे युक्त होता है, निर्दोष वाणीके कर्मसे युक्त होता है, निर्दोष मनके कर्मसे युक्त होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी निर्दोष होता है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग हैं।

भिक्षुओ, दुनियामे ये चार तरहके लोग है। कौनसे चार तरहके? भिक्षुओ एक आदमी का न शील सम्पूर्ण होता है, न समाधि सम्पूर्ण होती है, न प्रज्ञा सम्पूर्ण होती है। भिक्षुओ, एक आदमी का शील सम्पूर्ण होता है, किन्तु न समाधि सम्पूर्ण होती है, न प्रज्ञा सम्पूर्ण होती है। भिक्षुओ, एक आदमीका शील सम्पूर्ण होता है, समाधि सम्पूर्ण होती है, किन्तु प्रजा सम्पूर्ण नही होती। भिक्षुओ, एक आदमी का शील भी सम्पूर्ण होता है, समाधि भी सम्पूर्ण होती है, प्रज्ञा भी सम्पूर्ण होती है। भिक्षुओ, दुनियामे ये चार प्रकारके आदमी विद्यमान है।

भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग है। कौनसे चार तरहके? भिक्षुओ, एक आदमी न शीलको महत्वपूर्ण स्थान देनेवाला होता है और न उसका शील पर आधिपत्य होता है, न समाधिको महत्व पूर्ण स्थान देनेवाला होता है, न समाधिपर अधिपत्य होता है, न प्रज्ञाको महत्व पूर्ण स्थान देनेवाला होता है, न प्रज्ञापर आधिपत्य होता है।

भिक्षुओ, एक आदमी शीलको महत्वपूर्ण स्थान देने वाला होता है, उसका शील पर आधिपत्य होता है, किन्तु वह न समाधिको महत्वपूर्ण स्थान देने वाला होता है, न समाधि पर उसका आधिपत्य होता है, न प्रज्ञाको महत्वपूर्ण स्थान देने वाला होता है, न प्रज्ञा पर उसका आधिपत्य ही होता है।

भिक्षुओ, एक आदमी शीलको महत्वपूर्ण स्थान देने वाला होता है, शीलपर भी उसका आधिपत्य होता है, समाधिको महत्वपूर्ण स्थान देने वाला होता है, समाधिपर उसका आधिपत्य भी होता है, किन्तु न प्रज्ञाको महत्वपूर्ण स्थान देने वाला होता है और न प्रज्ञा पर उसका आधिपत्य भी होता है।

भिक्षुओ, एक आदमी शीलको महत्वपूर्ण स्थान देने वाला होता है, शीलपर भी उसका आधिपत्य होता है, समाधिको महत्वपूर्ण स्थान देने वाला होता है, समाधि-पर उसका आधिपत्य होता है, प्रज्ञाको यह महत्वपूर्ण स्थान देने वाला होता है, प्रज्ञापर उसका आधिपत्य होता है। भिक्षुओ, दुनियामे ये चार तरहके लोग है।

भिक्षुओ, दुनियामे चार तरहके लोग विद्यमान है। कौनसे चार तरहके? नकृष्ठकाय अनिकृष्ठचित्त, अनिकृष्ठकाय, निकृष्ठचित्त, अनिकृष्ठकाय अनिकृष्ठ चित्त;

तथा निकृष्ठकाय निकृष्ठचित्त। भिक्षुओ, आदमी कैसे निकृष्ठकाय अनिकृष्ठ चित्त होता है? भिक्षुओ, एक आदमी जगलमें एकान्त शयनासनका सेवन करता है। वह काम-भोग सम्वन्धी सकल्प-विकल्पोको भी मनमें जगह देता है, द्वेप-सम्वन्धी सकल्प-विकल्पोको भी मनमें जगह देता है, विहिंसा-सम्वन्धी सकल्प-विकल्पोको भी मनमें जगह देता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी निकृष्ठकाय होता है, किन्तु अनिकृष्ठ चित्त।

भिक्षुओ, आदमी कैसे अनिकृष्ठकाय निकृष्ठचित्त होता है? भिक्षुओ, एक आदमी जगलमें एकान्त शयनासनका सेवन नही करता है, किन्तु वह नैष्क्रम्य-सम्वन्धी सकल्प-विकल्पोंको भी मनमें जगह देता है, अद्वेप-सम्वन्धी सकल्प विकल्पोको भी मनमें जगह देता है, अविहिंसा-सम्वन्धी सकल्प विकल्पोको भी मनमें जगह देता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी अनिकृष्ठकाय निकृष्ठचित्त होता है।

भिक्षुओ, आदमी कैसे अनिकृष्ठकाय अनिकृष्ठचित्त होता है? भिक्षुओ एक आदमी न जगलमें एकान्त शयनासनका सेवन करता है, वह काम-भोग सम्वन्धी सकल्प-विकल्पोको भी मनमें जगह देता है, द्वेप-सम्वन्धी सकल्प विकल्पोको भी मनमें जगह देता है, विहिंसा-सम्वन्धी सकल्प-विकल्पोको भी मनमे जगह देता है। इम प्रकार भिक्षुओ, आदमी अनिकृष्ठकाय अनिकृष्ठ चित्त होता है।

भिक्षुओ, आदमी कैसे निकृष्ठकाय निकृष्ठचित्त होता है? भिक्षुओ, एक आदमी जगलमें एकान्त शयनासनका सेवन करता है, वह नैष्क्रम्य-सम्वन्धी सकल्प-विकल्पोको भी मनमें जगह देता है, अद्वेप-सम्वन्धी सपकल्प-विकल्पोको भी मनमें जगह देता है, अविहिंसा सम्वन्धी सकल्प विकल्पोको भी मनमें जगह देता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी निकृष्ठ-काय निकृष्ठ-चित्त होता है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग विद्यमान है।

भिक्षुओ, ये चार धर्म-कथिक होते हैं। कौनसे चार प्रकारके? भिक्षुओ, एक धर्म-कथिक थोडा उपदेश देता है, किन्तु अर्थ हीन। परिषद् सार्थक-निरर्थकका भेद समझनेमें कुशल नही होती। भिक्षुओ ऐसा धर्म-कथिक ऐसी परिषद् द्वारा धर्म-कथिक ही गिना जाता है।

भिक्षुओ, एक धर्म-कथिक थोडा उपदेश देता है, किन्तु सार्थक। परिषद सार्थक निरर्थकका भेद समझनेमें कुशल होती है। भिक्षुओ, ऐसा धर्म-कथिक ऐसी परिषद द्वारा धर्म-कथिक ही गिना जाता है।

भिक्षुओ, एक धर्म-कथिक बहुत उपदेश देता है, किन्तु निरर्थक। परिषद सार्थक निरर्थकका भेद समझनेमें कुशल नही होती। ऐसा धर्म-कथिक ऐसी परिषद् द्वारा धर्म-कथिक ही गिना जाता है।

भिक्षुओ, एक धर्म-कथिक बहुत उपदेश देता है, किन्तु सार्थक। परिषद् सार्थक-निरर्थकका भेद समझनेमें कुशल होती है। ऐसा धर्म-कथिक ऐसी परिषद् द्वारा धर्म-कथिक ही गिना जाता है। भिक्षुओ, ये चार प्रकारके धर्म-कथिक होते है।

भिक्षुओ, वादी चार प्रकारके होते है। भिक्षुओ, एक वादी होता है जो अर्थोपर समाप्त हो जाता है, शब्दोपर नही, भिक्षुओ, एक वादी होता है जो शब्दोपर समाप्त हो जाता है, अर्थोपर नही, भिक्षुओ, एक वादी होता है जो अर्थ और शब्द दोनौपर समाप्त हो जाता है, भिक्षुओ एक वादी होता है जो न अर्थपर समाप्त होता है, न शब्दपर। भिक्षुओ, इसके लिये कोई स्थान नही, इसकी कोई गुँजायश नही कि चार पटिसम्भिदा ज्ञानोसे युक्त अर्थोपर वा शब्दोपर समाप्त हो जाय।

(५) आभा वर्ग।

भिक्षुओ, चार प्रकारकी आभा होती है। कौन-सी चार प्रकारकी? चन्द्रमाकी आभा, सूर्यकी आभा, अग्निकी आभा तथा प्रज्ञाकी आभा।

भिक्षुओ, इन चारो प्रकारकी आभाओमे यही श्रेष्ठ, यह जो प्रज्ञाकी आभा है।

भिक्षुओ, चार प्रकारकी प्रभा होती है। कौनसे चार प्रकारकी? चन्द्रमा-की आभा प्रभा, सूर्यकी प्रभा, अग्निकी प्रभा तथा प्रज्ञाकी प्रभा। भिक्षुओ, इन चारो प्रकारकी प्रभाओमें यही श्रेष्ठ है, यह जो प्रज्ञाकी प्रभा है।

भिक्षुओ, चार प्रकारके आलोक है। कौनसे चार प्रकारके? चन्द्रमाका आलोक, सूर्यका आलोक, अग्निका आलोक तथा प्रज्ञाका आलोक। भिक्षुओ, इन चारो प्रकारके आलोकोमे यही श्रेष्ठ है, यह जो प्रज्ञाका आलोक है।

भिक्षुओ, चार प्रकारके प्रकाश है। कौनसे चार प्रकारके? चन्द्रमाका प्रकाश, सूर्यका प्रकाश, अग्निका प्रकाश, तथा प्रज्ञाका प्रकाश। भिक्षुओ, इन चारो प्रकारके प्रकाशोमे यही श्रेष्ठ है, यह जो प्रज्ञाका प्रकाश है।

भिक्षुओ, चार प्रकारकी ज्योतियाँ है। कौन-सी चार प्रकार की? चन्द्रमा की ज्योति, सूर्यकी ज्योति, अग्निकी ज्योति तथा प्रज्ञाकी ज्योति। भिक्षुओ, इन चारो प्रकारकी ज्योतियोमे यही श्रेष्ठ है, यह जो प्रज्ञाकी ज्योति।

भिक्षुओ, ये चार समय होते है। कौनसे चार ? समयसे धर्म-श्रवण, समयसे धर्म-चर्चा, समयसे शमथ-भावना तथा समयसे विदर्शना-भावना। भिक्षुओ, ये चार समय होते है।

भिक्षुओ, इन चार समयोपर यदि सम्यक् प्रकार अभ्यास किया जाय पुन पुन अभ्यास किया जाय तो क्रमश आस्रवोका क्षय हो जाता है। कौनसे चार समयोपर ? समयपर धर्म-श्रवण, समयपर धर्म-चर्चा, समयपर शमथ-भावना, समयपर विदर्शना-भावना। भिक्षुओ, इन चार समयोपर यदि सम्यक् प्रकार अभ्यास किया जाय, पुन पुन अभ्यास किया जाय तो क्रमश आस्रवोका क्षय हो जाता है।

भिक्षुओ, जैसे पर्वतके ऊपर जोरकी वर्षा होनेसे वर्षाकी समाप्तिपर नीचे वहता हुआ पानी पर्वतोकी कन्दराओ दरारो आदिको भर देता है, कन्दराये दरारे आदिके भर जानेपर छोटे-मोटे तालाव भर जाते है, छोटे-मोटे तालाव भर जानेपर वडे-वडे तालाव भर जाते है, वडे वडे तालाव भर जानेपर छोटी-छोटी नदियाँ भर जाती है, छोटी-छोटी नदियाँ भर जानेपर वडी-वडी नदियाँ भर जाती है, वडी-वडी नदियाँ भर जानेपर समुद्र सागर भर जाते है। इसी प्रकार भिक्षुओ, इन चार समयोपर यदि सम्यक् प्रकार अभ्यास किया जाय, पुन-पुन अभ्यास किया जाय तो क्रमश आस्रवोका क्षय हो जाता है।

भिक्षुओ, ये चार वाणीके दुश्चरित्र है। कौनसे चार ? झूठ वोलना, चुगली खाना, कठोर वोलना तथा वेकार वोलना। भिक्षुओ, ये चार वाणीके सुचरित्र है। कौनसे चार ? सत्य वोलना, चुगली न खाना, मीठा वोलना, व्यर्थ न वोलना। भिक्षुओ, ये चार वाणीके सुचरित्र है।

भिक्षुओ, ये चार सार-वस्तुये है। कौन-सी चार ? शील सार-वस्तु है, समाधि सार वस्तु है, प्रज्ञा सार वस्तु है, विमुक्ति सार-वस्तु है। भिक्षुओ, ये चार सार-वस्तुये है।

तृतीय पण्णासक।

(१) इन्द्रिय वर्ग

भिक्षुओ, ये चार इन्द्रियाँ है। कौन सी चार ? श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्यइन्द्रिय स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय। भिक्षुओ, ये चार इन्द्रियाँ है।

भिक्षुओ, ये चार वल है। कौनसे चार ? श्रद्धा-वल, वीर्य-वल, स्मृति-वल समाधि-वल। भिक्षुओ, ये चार वल है।

भिक्षुओ, ये चार वल है। कौनसे चार ? प्रज्ञा-वल, वीर्य-वल निर्दोपता-वल, सग्रह-वल। भिक्षुओ, ये चार वल है।

भिक्षुओ, ये चार वल है। कौनसे चार? स्मृति-बल, समाधि-वल, निर्दोषता-वल, सग्रह वल। भिक्षुओ ये चार वल है।

भिक्षुओ, ये चार बल है। कौनसे चार? ज्ञान-वल, भावना-बल, निर्दोषता-वल, सग्रह-वल। भिक्षुओ, ये चार बल है।

भिक्षुओ, कल्पोके ये चार असखेय है। कौनसे चार? भिक्षुओ, जव कल्प का विकास होता है तो यह कहना आसान नही कि इतने वर्पमे होता है, इतने सौ वर्षमें होता है, इतने हजार वर्षमे होता है अथवा इतने लाख वर्पमे होता है।

भिक्षुओ, जव कल्प विकसित हुआ हुआ स्थित रहता है तो यह कहना आसान नही कि इतने वर्ष, इतने सौ वर्प, इतने हजार वर्ष अथवा इतने लाख वर्प स्थित रहता है।

भिक्षुओ, जव कल्पका विनाश होता है तो यह कहना आसान नही कि इतने वर्षमे होता है, इतने सौ वर्षमे होता है, इतने हजार वर्षमे होता है, अथवा इतने लाख वर्पमे होता है।

भिक्षुओ, जव कल्प विनष्ट होता हुआ स्थित रहता है तो यह कहना आसान नही कि इतने वर्ष, इतने सौ वर्ष, इतने हजार वर्प अथवा इतने लाख वर्ष स्थित रहता है। भिक्षुओ, कल्पोके ये चार असखेय है।

भिक्षुओ, दो प्रकारके रोग है। कौनसे दो? शारीरिक रोग तथा मानसिक रोग। भिक्षुओ ऐसे प्राणी दिखाई देते है जो कहते है कि हम वर्ष भर शारीरिक रोगसे निरोग रहे, दो वर्प निरोग रहे, तीन वर्ष निरोग रहे, चार वर्ष निरोग रहे, पाँच वर्ष निरोग रहे, दस वर्ष निरोग रहे, वीस वर्ष निरोग रहे, तीस वर्ष निरोग रहे, चालीस वर्ष निरोग रहे, पचास वर्ष निरोग रहे, सौ वर्ष और उससे भी अधिक निरोग रहे। किन्तु भिक्षुओ, क्षीणास्त्रवोके अतिरिक्त ऐसे प्राणी दुर्लभ है जो कह सके कि हम मानसिक रोगसे एक क्षण भरके लिये भी निरोग रहे।

भिक्षुओ, प्रव्रजितके ये चार रोग है। कौनसे चार? भिक्षुओ, एक भिक्षु महेच्छ होता है, दु खी रहने वाला होता है, असन्तुप्ट होता है जैसे—तैसे चीवर-पिण्डपात (=भिक्षा) शयनासन तथा रोगीकी दवाई आदिकी आवश्यकताओके वारेमे। वह महेच्छ होनेके कारण, दु खी रहनेके कारण, असन्तुष्ट रहनेके कारण जैसे-तैसे चीवर-पिण्डपात (=भिक्षा) शयनासन तथा रोगीकी दवाई आदिकी आवश्यकताके वारेमें, पाप-पूर्ण इच्छाकी पूर्तिके लिये प्रयास करता है। वह प्रयास करता है लाभ-सत्कार प्रशसाको प्राप्त करनेके लिये। वह उत्साह दिखाता है, कोशिश करता

है, प्रयत्न करता है .को प्राप्त करनेके लिये, लाभ-सत्कार प्रशंसाके प्राप्त करनेके लिये। वह आत्मज्ञापनके लिये (गृहस्थ) कुलोंके पास जाता है, उसीके लिये उनके पास बैठता है, उसीके लिये धर्मोपदेश देता है, उसीके लिये मल-मूत्र तकको रोके रखता है। भिक्षुओ, प्रव्रजितके ये चार रोग हैं।

इसलिये, भिक्षुओ, यह सीखना चाहिये कि हम महेच्छ नहीं बनेंगे, दुःखी रहने वाले नही होंगे, असन्तुष्ट नही रहेंगे जैसे-तैसे चीवर, पिण्डपात (= भिक्षा) शयनासन तथा रोगीकी दवाई आदिकी आवश्यकताओंके बारेंमें। हम पापपूर्ण इच्छा की पूर्तिके लिये प्रयान नही करेंगे। हम प्रयास नहीं करेंगे को प्राप्त करनेके लिये; लाभ-सत्कार-प्रशंसाको प्राप्त करनेके लिये। हम ठण्ड, गर्मी, भूख, प्यास, डास, मच्छर, हवा-धूप तथा रेंगने वाले जानवरोंके स्पर्शको सहन करने वाले होंगे, दुर्वचनोंके सहन करने वाले होंगे, दुःखपूर्ण, तीव्र, प्रखर, कटु, प्रतिकूल, बुरी, प्राणहर शारीरिक वेदनाओंके सहन करने वाले होंगे। भिक्षुओ, इसी प्रकार सीखना चाहिये।

उस समय आयुष्मान सारिपुत्र ने भिक्षुओंको सम्बोधित किया—"आयुष्मान भिक्षुओ।" उन भिक्षुओंने आयुष्मान सारिपुत्र को प्रतिवचन दिया—"आयुष्मान।" आयुष्मान सारिपुत्रने यह कहा "भिक्षुओ, जो कोई भी भिक्षु या भिक्षुणी ये चार बातें अपनेमे देखे उसे यह निश्चित ही समझ लेना चाहिये कि कुशल-धर्मों (= शुभ कर्मों) से मेरा ह्रास होगा। भगवानने इसे (कुशल-धर्मोंसे) पतित होना ही कहा है। कौन सी चार बातोंसे? रागकी अधिकता होनेसे, द्वेषकी अधिकता होनेसे, मोहकी अधिकता होनेसे, और गम्भीर-विषयोंमें प्रज्ञा रूपी चक्षुकी गति न होनेसे। भिक्षुओ, जो कोई भी भिक्षु या भिक्षुणी ये चार बाते अपनेमे देखे, उसे यह निश्चित ही समझ लेना चाहिये कि कुशल-धर्मो (= शुभ-कर्मो) से मेरा ह्रास होगा। भगवान्ने इसे (कुशल—धर्मों) से पतित होना ही कहा है। भिक्षुओ, जो कोई भी भिक्षु या भिक्षुणी ये चार बातें अपनेमे देखे उसे यह निश्चित ही समझ लेना चाहिये कि कुशल धर्मों (= शुभ कर्मों) से मेरा ह्रास न होगा, भगवानने इसे कुशल-धर्मोंसे पतित न होना ही कहा है। कौन सी चार बातोंसे? रागकी क्षीणता होनेसे, द्वेषकी क्षीणता होनेसे, मोहकी क्षीणता होनेसे, गम्भीर विषयोमे प्रज्ञा रूपी चक्षुकी गति होनेसे। भिक्षुओ, जो कोई भी भिक्षु या भिक्षुणी ये चार बाते अपनेमे देखे उसे यह निश्चित ही समझ लेना चाहिये कि कुशल धर्मोंसे मेरा ह्रास न होगा। भगवान्ने उसे कुशल-धर्मोंसे पतित न होना ही कहा है।"

एक समय आनन्द कौसाम्बीके घोषितारामभे विहार कर रहे थे। तव एक भिक्षुणीने एक आदमीको बुलाया और कहा—"हे आदमी! जहाँ आर्य आनन्द हैं, वहाँ जाकर मेरा नाम ले, आर्य आनन्दके चरणोमे सिरसे प्रणाम कर और कह कि अमुक नामकी भिक्षुणी वहुत रोगिणी है। वह आर्य आनन्दके चरणोमें सिरसे नमस्कार करती है और कहती है कि अच्छा होगा यदि आर्य आनन्द जहाँ भिक्षुणियो का विहार है, जहाँ वह भिक्षुणी रहती है, वहाँ कृपाकर पधारें।" उस आदमीने उस भिक्षुणीको "अच्छा आर्ये" कहा और जहाँ आयुष्मान् आनन्द थे वहाँ पहुँचा। पहुँचकर आयुष्मान् आनन्दको प्रणाम कर एक ओर बैठा। एक ओर बैठे हुए उस आदमीने आयुष्मान आनन्दसे इस प्रकार निवेदन किया—"भन्ते! अमुक नामकी भिक्षुणी रोगिणी है, दुःखी, अत्यन्त पीडित है। वह आयुष्मान् आनन्दके चरणोमें सिरसे नमस्कार करती है और कहती है कि अच्छा होगा यदि आयुष्मान् आनन्द जहाँ भिक्षुणियोका विहार है, जहाँ वह भिक्षुणी रहती है वहाँ कृपा कर पधारे।" आयुष्मान् आनन्दने चुप रहकर स्वीकार किया।

तव आयुष्मान् आनन्द पहनकर पात्र चीवर ले, जहाँ भिक्षुणियोका विहार (उपाश्रय) था, वहाँ गये। उस भिक्षुणीने आयुष्मान् आनन्दको दूरसे आते हुए देखा। सिर तक अपनेको ढककर चारपाई पर लेट रही। तव आनन्द जहाँ वह भिक्षुणी थी, वहाँ पहुँचे। पहुँचकर विछे आसनपर बैठे। वैठकर आयुष्मान् आनन्दने उस भिक्षुणीको इस प्रकार कहा—"वहन! यह शरीर आहारसे उत्पन्न है। आहारके आश्रयसे है। आहार (की तृष्णा) का त्याग करना चाहिये। वहन! यह शरीर तृष्णासे उत्पन्न है। तृष्णाके आश्रयसे है। तृष्णाका त्याग करना चाहिये। वहन! यह शरीर अभिमानसे उत्पन्न है। अभिमानके आश्रयसे है। अभिमानका त्याग करना चाहिये। वहन! यह शरीर मैथुनसे उत्पन्न है। भगवानने कहा है कि मैथुन-कर्म सेतुके विनाशके समान है। वहन! यह जो कहा गया है कि यह शरीर आहारसे उत्पन्न है, आहारके आश्रयसे है, आहार (की तृष्णा) का त्याग करना चाहिये, यह किस आशयसे कहा गया? वहन! भिक्षु सोच विचार कर ठीक तरहसे आहार ग्रहण करता है, न विनोदके लिये, न मदके लिये, न सजावटके लिये, वल्कि जवतक इस शरीरकी स्थिति है तव तक इसे वनाये रखनेके लिये, विहिंसाको दूर करनेके लिये, ब्रह्मचर्य (=श्रेष्ठ जीवन) की सहायताके लिये। मै पुरानी वेदनाका क्षय कर दूंगा और नई वेदना न उत्पन्न होने दूंगा। मेरी (जीवन) यात्रा निर्दोप होगी और मेरा जीवन) विहरण सुखपूर्वक चलेगा। वह आगे चलकर आहारके आश्रयसे

(उत्पन्न होनेवाली) आहार (की तृष्णा) का त्याग करता है। वहन! 'यह शरीर आहारसे सुमुत्पन्न है, आहाराश्रित है, आहार (की तृष्णा) का त्याग करना चाहिये'—यह जो कहा गया, यह इसी लिये कहा गया।

"वहन! यह जो कहा गया है कि यह शरीर तृष्णासे उत्पन्न है, तृष्णाके आश्रयसे है, तृष्णाका त्याग करना चाहिये, यह किस आशयसे कहा गया? वहन! एक भिक्षु सुनता है कि अमुक नामके भिक्षुने आस्रवोका क्षय कर दिया है। वह अनास्रव चित्तकी विमुक्ति, प्रज्ञाकी विमुक्तिको इसी शरीरमें स्वय जानकर, साक्षात्कर, प्राप्त कर विहार करता है। उसके मनमे होता है कि कभी मै भी आस्रवोका क्षयकर साक्षात् कर, प्राप्तकर विहार करूँगा। वह आगे चलकर, तृष्णासे उत्पन्न होने वाली तृष्णाका त्याग करता है। वहन! 'यह शरीर तृष्णासे उत्पन्न है। तृष्णाके आश्रयसे है। तृष्णाका त्याग करना चाहिये, यह जो कहा गया है, इसी आशयसे कहा गया है।

"वहन! यह जो कहा गया है कि यह शरीर अभिमानसे उत्पन्न है, अभिमानके आश्रयसे है, अभिमानका त्याग करना चाहिये, यह किस आशयसे कहा गया? वहन! एक भिक्षु सुनता है कि अमुक नामके भिक्षुने आस्रवोका क्षयकर दिया है। वह अनास्रव चित्त की विमुक्ति, प्रज्ञाकी विमुक्तिको इसी शरीरमे स्वय जानकर साक्षात्कर, प्राप्त कर विहार करता है। उसके मनमे होता है उस आयुष्मान् ने आस्रवोका क्षय कर दिया है। वह अनास्रव चित्तकी विमुक्ति, प्रज्ञाकी विमुक्तिको इसी शरीरमें स्वय जानकर साक्षात्कर प्राप्तकर विहार करता है। तो मै भी क्यो न करूँ? वह आगे चलकर मानसे उत्पन्न होने वाले अभिमानका त्याग करता है। वहन! 'यह शरीर अभिमानसे उत्पन्न है, अभिमानके आश्रयसे है, अभिमानका त्याग करना चाहिये' यह जो कहा गया है, इसी आशयसे कहा गया है।

"वहन! यह शरीर मैथुनसे उत्पन्न है और मैथुनको भगवान्ने मर्यादा (=सेतु) का भग करना कहा है।"

तव वह भिक्षुणी चारपाईसे उठी, उत्तरीय-चीवरको एक कधे पर ओढा, आयुष्मान आनन्दके चरणोपर सिर रख आयुष्मान् आनन्दसे वोली—"भन्ते! मेरे अपराधको क्षमा करे, जैसे किसी अज्ञके, जैसे किमी मूर्खके, जैसे किसी अकुशल करने वालेके। मैने ऐसा किया। भन्ते! आर्य आनन्द मेरे अपराधको अपराध करके स्वीकार करे, भविष्यमे सयत रहुँगी।" "वहन! तूने यह अपराध किया, जैसे किसी अज्ञने जैसे किमी मुर्खने, जैसे किसी अकुशल करने वालेने। तूने ऐसा किया। क्योकि वहन

तू अपराधको अपराध मान धर्मानुसार स्वीकार करती है, हम तेरी इस स्वीकृतिको स्वीकार करते हैं। बहन! आर्य-विनय (बुद्धधर्म) मे इसे उन्नतिका ही कारण माना जाता है, यह जो अपराधको अपराध मान लेना और भविष्यमे सयमसे काम लेना।"

भिक्षुओ, दुनियामे सुगत रहे अथवा सुगत-विनय (=बौद्धधर्म) रहे, वह बहुत जनोके हित, बहुत जनोके सुखके लिये, लोगोपर अनुकम्पा करनेके लिये, देवता तथा मनुष्योके अर्थ (=लाभ) के लिये, हितके लिये तथा सुखके लिये होगा। भिक्षओ! सुगत कौन है? भिक्षुओ, तथागत दुनियामे उत्पन्न होते है, अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध, विद्या तथा आचरणसे युक्त, सुगत, लोकके जानकार, अनुपम, पुरुषो को दमन करने वाले सारथी तथा देव-मनुष्योके शास्ता बुद्ध भगवान् है।

भिक्षुओ, सुगत-विनय कौन सी है? वे भगवान् बुद्ध धर्मोपदेश करते है आदिमे कल्याणकारक, मध्यमे कल्याणकारक, अन्तमे कल्याणकारक, सार्थक सव्यञ्जन परिशुद्ध ब्रह्मचर्य (=श्रेष्ठ जीवन) का प्रकाश करते है। भिक्षुओ, इसे सुगत-विनय कहते है। इस प्रकार भिक्षुओ, दुनियामें सुगत रहे अथवा सुगत विनय रहे, वह बहुत जनोके हित, बहुत जनोके सुखके लिये, लोगोपर अनुकम्पा करनेके लिये, देवता तथा मनुष्योके अर्थ (=लाभ) के लिये, हितके लिये, तथा सुखके लिये होगा।

भिक्षुओ, ये चार बाते सद्धर्मके नष्ट होनेका, अन्तर्धान होनेका कारण होती है। कौन सी चार बातें? भिक्षुओ, भिक्षु अनुचित शब्दोसे मिश्रित दुर्गृहीत सूक्तोका पाठ करते है। भिक्षुओ, अनुचित शब्दो वाले सूक्तका अर्थ भी गलत होता है। भिक्षुओ, यह पहली बात है जो सद्धर्मके नष्ट होनेका, अन्तर्धान होनेका कारण होती है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु दुर्वचनीय होते है, दुर्वचनीय स्वभावसे युक्त, असमर्थ, अनुशासनको ठीकसे ग्रहण न कर सकने वाले। भिक्षुओ, यह दूसरी बात है जो सद्धर्म के नष्ट होनेका, अन्तर्धान होनेका कारण होती है।

फिर भिक्षुओ, जो भिक्षु बहुश्रुत होते है, आगमके जानकार होते है, धर्म-धर होते है, विनय-धर होते है, मातृका-धर होते है वे दूसरोको ठीकसे याद नही कराते है। उनके मरनेपर सूक्तोका क्रम नष्ट हो जाता है, अशरण हो जाता है,। भिक्षुओ, यह तीसरी बात है जो सद्धर्मके नष्ट होनेका, अन्तर्धान होनेका कारण होती है।

फिर भिक्षुओ, स्थविर भिक्षु बहुत जोड़ू-बटोरू हो जाते है, शिथिल हो जाते है, पतनकी ओर पूर्वगामी हो जाते है, धर्मके विषयमे ढीले-ढीले हो जाते है। वे अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये, जो हस्तगत नही है, उसे हस्तगत करनेके लिये, जो

साक्षात् नही है, उसे साक्षात करनेके लिये प्रयास नही करते। उनके पीछे आने वाले लोग उनका अनुकरण करते हैं। वे भी वहुत जोड़ू-वटोरू हो जाते है, शिथिल हो जाते हैं, पतनकी ओर पूर्वगामी हो जाते हैं, धर्मके विषयमे ढीले-ढाले हो जाते है। वे अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये, जो हस्तगत नही है उसे हस्तगत करनेके लिये, जो साक्षात नही हैं, उसे साक्षात करनेके लिये प्रयास नही करते। भिक्षुओ, यह चौथी वात है जो सद्धर्मके नष्ट होनेका, अर्न्तधान होनेका कारण होती है।

भिक्षुओ, ये चार वातें सद्धर्मके नष्ट न होनेका, अन्तर्धान न होनेका कारण होती है। कौनसी चार वाते? भिक्षुओ, भिक्षु उचित शब्दोंसे मिश्रित सुगृहीत सूक्तोका पाठ करते हैं। भिक्षुओ, उचित शब्दो वाले सूक्तका अर्थ भी ठीक होता है। भिक्षुओ, यह पहली वात है जो सद्धर्मके नष्ट न होनेका, अन्तर्धान न होनेका कारण होती है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु सुवच होते हैं, सुवच-स्वभावसे युक्त, समर्थ, अनुशासनको ठीकसे ग्रहण कर सकने वाले। भिक्षुओ, यह दूसरी वात है जो सद्धर्मके नष्ट न होनेका अन्तर्धान न होनेका, कारण होती है।

फिर भिक्षुओ, जो भिक्षु वहुश्रुत होते हैं, आगमके जानकार होते हैं, धर्म-धर होते हैं, विनयधर होते हैं, मातृका-धर होते है, वे दूसरोको ठीकसे याद कराते है। उनके मरनेपर सूक्तोकी परम्परा चालू रहती है, प्रतिष्ठित रहती है। भिक्षुओ, यह तीसरी वात है जो सद्धर्मके नष्ट न होनेका, अन्तर्धान न होनेका कारण होती है।

फिर भिक्षुओ, स्थविर भिक्षु वहुत जोड़ू-वटोरू नही होते है, शिथिल नही होते है, पतन की ओर पूर्वगामी नही होते है, धर्मके विषयमें ढीले-ढाले नही होते है। वे अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये, जो हस्तगत नही है, उसे हस्तगत करनेके लिये, जो साक्षात नही है, उसे साक्षात् करनेके लिये प्रयास करते है। उनके पीछे जानेवाले लोग उनका अनुकरण करते है। वे भी वहुत जोड़ू-वटोरू नही होते हैं, शिथिल नही होते है, पतनकी ओर पूर्वगामी नही होते ह, धर्मके विषयमें ढीले-ढाले नही होते हैं। वे अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये, जो हस्तगत नही है उसे हस्तगत करनेके लिये, जो साक्षात् नही है उसे साक्षात करनेके लिये प्रयास करते है। भिक्षुओ, यह चौथी वात है जो सद्धर्मके नष्ट न होनेका, अन्तर्धान न होनेका कारण होती है।

(२) प्रतिपदा वर्ग

भिक्षुओ, ये चार प्रतिपदा हैं। कौनसी चार? दु ख पूर्ण-साधना विलम्वित उद्देश्य-सिद्धि, दु ख-पूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि, सुखपूर्ण-साधना विलम्वित सिद्धि, सुखपूर्ण-साधना क्षिप्र-सिद्धि। भिक्षुओ, ये चार प्रतिपदा ह।

भिक्षुओ, ये चार प्रतिपदा है। कौनसी चार? दु खपूर्ण-साधना विलम्वित उद्देश्य-सिद्धि, दु खपूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि, सुख पूर्ण साधना विलम्वित-सिद्धि, सुखपूर्ण साधना-क्षिप्र सिद्धि। भिक्षुओ दु खपूर्ण साधना विलम्वित-सिद्धि किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वभावसे ही तीव्र राग-सम्पन्न होता है। वह प्रतिक्षण रागसे उत्पन्न होने वाले दु ख दौर्मनस्यका अनुभव करता है। स्वभावसे ही तीव्र द्वेष-सम्पन्न होता है। वह प्रतिक्षण द्वेपसे उत्पन्न होने वाले दु ख दौर्मनस्यका अनुभव करता है। स्वभावसे ही तीव्र मोह-सम्पन्न होता है। वह प्रतिक्षण मोहसे उत्पन्न होने वाले दु ख दौर्मनस्यका अनुभव करता है। उसकी पाँचो इद्रियाँभी दुर्वल होती हैं—श्रद्धा-इद्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। इन इन्द्रियोके दुर्वल होनेके कारण वह आस्रव-क्षयकी अवस्थाको विलम्वसे प्राप्त होता है। भिक्षुओ, इसे कहते है दु ख पूर्ण साधना विलम्वित उद्देश्य-सिद्धि।

भिक्षुओ, दु खपूर्ण साधना क्षिप्र-सद्धि किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वभावसे ही तीव्र राग-सम्पन्न होता है। वह प्रतिक्षण रागसे उत्पन्न होने वाले दु ख दौर्मनस्यका अनुभव करता है। स्वभावसे ही तीव्र द्वेप-सम्पन्न होता है। वह प्रतिक्षण द्वेषसे उत्पन्न होने वाले दु ख दौर्मनस्यका अनुभव करता है। स्वभावसे ही मोह-सम्पन्न होता है। वह प्रतिक्षण मोहसे उत्पन्न होनेवाले दु ख दौर्मनस्यका अनुभव करता है। उसकी पाचो इन्द्रियाँ सवल होती हो है—श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। इन इन्द्रियोंके सवल होनेके कारण वह आस्रव क्षयकी अवस्था को शीघ्र प्राप्त करता है। भिक्षुओ, इसे कहते है दु ख-पूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि।

भिक्षुओ, सुखपूर्ण-साधना विलम्वित-सिद्धि किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वभावसे ही तीव्र राग-सम्पन्न नही होता। वह प्रतिक्षण रागसे उत्पन्न होने वाले दु ख दौर्मनस्यका अनुभव नही करता। स्वभावसे ही तीव्र द्वेप-सम्पन्न नही होता। वह प्रतिक्षण द्वेषसे उत्पन्न होनेवाले दु ख दौर्मनस्यका अनुभव नही करता है। स्वभावसे ही तीव्र मोह-सम्पन्न नही होता है। वह प्रगिक्षण मोहसे उत्पन्न होने वाले दु ख दौर्मनस्यका अनुभव नही करता। उमकी पाँचो इन्द्रियाँ दुर्वल होती है—श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। इन इन्द्रियोके दुर्वल होनेके कारण वह आस्रव-क्षयकी अवस्थाको विलम्वसे प्राप्त होता है। भिक्षुओ, इसे कहते है, सुखपूर्ण साधना विलम्वित-सिद्धि।

भिक्षुओ, सुख पूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि किसे कहते हैं ? भिक्षुओ, एक आदमी स्वभावसे ही तीव्र राग सम्पन्न नही होता वह प्रतिक्षण रागसे उत्पन्न होने दुःख दौर्मनस्यका अनुभव नही करता। स्वभावसे ही तीव्र द्वेष सम्पन्न नहीं होता। वह प्रतिक्षण द्वेपसे उत्पन्न होनेवाले दुःख दौर्मनस्यको अनुभव नही करता। स्वभावसे ही तीव्र मोह सम्पन्न नही होता। वह प्रतिक्षण मोहसे उत्पन्न होने वाले दुःख दौर्मनस्य का अनुभव नहीं करता। उसकी पाचो इन्द्रियां सवल होती हैं—श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। इन इन्द्रियोंके सबल होनेके कारण वह आस्रव-क्षय की अवस्थाको शीघ्र प्राप्त करता है। भिक्षुओ, इसे कहते हैं सुखपूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि।

भिक्षुओ, ये चार प्रतिपदा हैं। कौन सी चार ? दुःख पूर्ण साधना विलम्बित उद्देश्य-सिद्धि, दुःखपूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि, सुखपूर्ण साधना विलम्बित-सिद्धि, सुखपूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि। भिक्षुओ, दुःखपूर्ण साधना, विलम्बित-सिद्धि किसे कहते हैं ? भिक्षुओ, भिक्षु शरीरके प्रति अशुभ-भावना (जिगुप्सा-भावना) करता है, आहारके प्रति प्रतिकूल (जिगुप्सा) सज्ञा, सभी लोकोंके प्रति अनासक्त-भाव, सभी सस्कारोंको अनित्य मानने वाला, उसके मनमें मृत्यु-अनुस्मरण सुप्रतिष्ठित होता है। वह इन पाच शैक्ष-वलोंसे युक्त हो विहार करता है—श्रद्धा-बल, लज्जा-बल (पाप-) भीरुता वल, वीर्य-वल, तथा प्रज्ञा-वल। उसकी ये पाच इन्द्रियाँ दुर्वल होती है—श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। वह इन पाचो इन्द्रियोंके दुर्वल होनेके कारण आस्रव-क्षयकी अवस्थाको विलम्बसे प्राप्त करता है। भिक्षुओ, इसे कहते हैं दुःखपूर्ण साधना विलम्बित सिद्धि।

भिक्षुओ, दुःखपूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि किसे कहते हैं ? भिक्षुओ, भिक्षु शरीरके प्रति अशुभ भावना (= जिगुप्सा भावना) करता है और आहारके प्रति प्रतिकूल (= जिगुप्सा) सज्ञा। सभी लोगोंके प्रति अनासक्त भाव, सभी सस्कारोको अनित्य मानने वाला। उसके मनमें मृत्यु-अनुस्मरण सुप्रतिष्ठित होता है। वह इन पांच शैक्ष-वलोंसे युक्त हो विहार करता है—श्रद्धावल, लज्जा-बल (पाप-) भीरुता वल, वीर्य-बल तथा प्रज्ञावल। उसकी ये पाँच इन्द्रियाँ सवल होती हैं—श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। वह इन पाँचो इन्द्रियोके सवल होनेके कारण आस्रव-क्षयकी अवस्थाको शीघ्र प्राप्त करता है। भिक्षुओ, इसे कहते हैं दुःखपूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि।

भिक्षुओ, सुखपूर्ण साधना विलम्बित सिद्धि किसे कहते हैं? भिक्षुओ, भिक्षु काम-वितर्कोंसे रहित हो, बुरे विचारोसे रहित हो, प्रथम-ध्यानको प्राप्त कर, विचरता है, जिसमे वितर्क और विचार रहता है, जो एकान्त-वाससे उत्पन्न होता है, जिसमे प्रीति और सुख रहते हैं। वह वितर्क और विचारोके उपशमनसे अन्दरकी प्रसन्नता और एकाग्रता रूपी द्वितीय-ध्यानको प्राप्त कर विचरता है, जिसमे न वितर्क होते हैं, न विचार, जो समाधिसे उत्पन्न होता है और जिसमे प्रीति तथा सुख रहते है। वह प्रीतिसे विरक्त हो, उपेक्षावान् बन विचरता है। वह स्मृतिमान् ज्ञानवान् होता है और (चित्त-) कायसे सुखका अनुभव करता है। वह तृतीय-ध्यानको प्राप्तकर विचरता है, जिसे पडित जन 'उपेक्षावान्, स्मृतिवान्, सुखपूर्वक विहार करनेवाला' कहते हैं। वह सुख और दु ख—दोनोके प्रहाणसे सौमनस्य और दौर्मनस्यके पहले ही अस्त हुए रहनेसे (उत्पन्न) चतुर्थ-ध्यानको प्राप्त हो विचरता है, जिसमे न दु ख होता है, न सुख और होती है (केवल) उपेक्षा तथा स्मृतिकी परिशुद्धि। वह इन पाँच शैक्ष-बलोसे युक्त हो विहार करता है—श्रद्धा-बल, लज्जा-वल (पाप-) भीरुतावल, वीर्य-वल तथा प्रज्ञा-बल। उसकी ये पाँच इन्द्रियाँ दुर्वल होती है—श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। वह इन पाँचो इन्द्रियोके दुर्वल होनेके कारण, आस्रव-क्षयकी अवस्थाको विलम्बसे प्राप्त करता है। भिक्षुओ, इसे कहते हैं सुखपूर्ण साधना विलम्बित सिद्धि।

भिक्षुओ, सुख पूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि किसे कहते है? भिक्षुओ, भिक्षु काम-वितर्कोंसे रहित हो, बुरे विचारोंसे रहित हो प्रथम-ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है, जिसमे वितर्क और विचार रहता है जो एकान्त-वाससे उत्पन्न होता है, जिसमे प्रीति और सुख रहते हैं . . द्वितीय-ध्यानको . . तृतीय-ध्यानको . . . चतुर्थ-ध्यानको . । वह इन पाँच शैक्ष-वलोंसे युक्त हो विहार करता है—श्रद्धावल, लज्जा-वल, (पाप-) भीरुता-वल, वीर्य-वल, तथा प्रज्ञा-वल। उसकी ये पाँच इन्द्रियाँ सवल होती है—श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। वह इन पाचो इन्द्रियोके सवल होनेके कारण आस्रव-क्षयकी अवस्थाको शीघ्र प्राप्त करता है। भिक्षुओ, इसे कहते है सुखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि। भिक्षुओ, ये चार प्रतिपदा है।

भिक्षुओ, ये चार प्रतिपदा (=जीवन विधियाँ) है। कौन-सी चार? अक्षमा-प्रतिपदा, क्षमा-प्रतिपदा, दमन-प्रतिपदा तथा शमन प्रतपिदा। भिक्षुओ,

एक आदमी गाली देनेवालेको गाली देता है, क्रोध प्रकट करनेवालेके प्रति क्रोध प्रकट करता है, झगडने वालेके साथ झगडता है। भिक्षुओ, यह अक्षमा-प्रतिपदा है।

भिक्षुओ, क्षमा-प्रतिपदा किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी गाली देनेवालेको गाली नही देता, क्रोध प्रकट करने वालेके प्रति क्रोध प्रकट नही करता, झगडने वालेके साथ झगडा नही करता। भिक्षुओ, यह क्षमा-प्रतिपदा है।

भिक्षुओ, दमन-प्रतिपदा क्या है? भिक्षुओ, भिक्षु अपनी आँखसे किसी सुन्दर रूपको देखता है। वह उसमें न आँख गडाता है, न मजा लेता है, क्योकि कहीं चक्षुके असयमसे लोभ-द्वेष आदि अकुशल पापमय ख्याल घर न कर लें। उन पापमय ख्यालोको दूर रखनेके लिये प्रयत्न करता है, अपनी आँख को काबूमे रखता है, अपनी आँखपर सयम रखता है। वह अपने कानसे शब्द सुनता है . नासिकासे सुगन्धि सूंघता है जिह्वासे रस चखता है शरीरसे स्पर्श करता है मनसे सोचता है (लेकिन) उसमें न मन गडाता है, न मजा लेता है, क्योकि कही मनके असयमसे लोभ-द्वेप आदि अकुशल पापमय ख्याल घर न कर लें। उन पापमय ख्यालोको दूर रखनेके लिये प्रयत्न करता है, अपने मनको काबूमें रखता है, अपने मन पर सयम रखता है। भिक्षुओ, यह दमन-प्रतिपदा है।

भिक्षुओ, शमन-प्रतिपदा क्या है? भिक्षुओ, भिक्षुके मनमे जो काम-वितर्क उत्पन्न हुआ है उसे वह जगह नही देता, छोड देता है, नष्ट कर देता है, मिटा देता है, जो क्रोध उत्पन्न हुआ है उसे वह जगह नही देता, छोड देता है, नष्ट कर देता है, मिटा देता है, जो हिंसक विचार उत्पन्न हुआ है उसे वह जगह नही देता है, छोड देता है, नष्ट कर देता है, मिटा देता है। भिक्षुओ, यह शमन-प्रतिपदा है। भिक्षुओ, ये चार प्रतिपदा है।

भिक्षुओ, ये चार प्रतिपदा है। कौन-सी चार? अक्षमा-प्रतिपदा, क्षमा-प्रतिपदा,दमन-प्रतिपदा तथा शमन-प्रतिपदा। भिक्षुओ, अक्षमाप्रतिपदा किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी शीत, उष्ण, भूख, प्यास, डक मारने वाले जीव, मच्छर, हवा, धूप, रेंगनेवाले जीवोके आघात, दुरुक्त, दुरागत वचनो तथा दुख-दायी, तीव्र, कटु, प्रतिकूल, अरुचिकर, प्राण हर शारीरिक पीडाओको सहन कर सकनेवाला नही होता। भिक्षुओ, इसे अक्षमा-प्रतिपदा कहते है।

भिक्षुओ, क्षमा-प्रतिपदा किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी शीत, उष्ण सहन कर सकने वाला होता है। भिक्षुओ, इसे क्षमा-प्रतिपदा कहते है।

भिक्षुओ, दमन-प्रतिपदा किसे कहते है? भिक्षुओ, एक भिक्षु अपनी आँखसे किसी रूपको देखकर कानसे शब्दको सुनकर . नासिकासे सुगन्धि सूंघकर जिह्वासे रस चखता है शरीरसे स्पर्श करता है.... मनसे सोचता है (लेकिन) उसमे न मन गडाता है, न मजा लेता है, क्योकि कही मनके असयमसे लोभ-द्वेष आदि अकुशल पापमय खयाल घर न कर ले। उन पापमय, ख्यालोको दूर रखनेके लिये प्रयत्न करता है, अपने मनको कावूमे रखता है, अपने मनपर सयम रखता है। भिक्षुओ, यह दमन-प्रतिपदा है।

भिक्षुओ, ये चार प्रतिपदा है। कौनसी चार? दु ख-पूर्ण साधना विलम्बित उद्देश्य-सिद्धि, दु खपूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि, सुखपूर्ण साधना विलम्बित-सिद्धि, सुखपूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि।

भिक्षुओ, इन प्रतिपदाओमे जो यह दु खपूर्ण साधना विलम्बित-सिद्धि है, यह दोनो दृष्टियोसे हीन है, क्योकि यह दु ख पूर्ण है, इसलिये भी यह हीन कहलाती है और क्योकि सिद्धि विलम्बसे होती है इसलिये भी हीन कहलाती है। भिक्षुओ, यह प्रतिपदा दोनो दृष्टियोसे हीन कहलाती है। भिक्षुओ, जो यह प्रतिपदा दु खपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि है, भिक्षुओ यह प्रतिपदा दु खपूर्ण होनेसे हीन कहलाती है। भिक्षुओ जो यह प्रतिपदा सुखपूर्ण साधना विलम्बित सिद्धि, यह विलम्बसे सिद्धि प्राप्त होनेके कारण हीन कहलाती है। भिक्षुओ, जो यह प्रतिपदा सुखपूर्ण साधना क्षिप्रसिद्धि है, वह दोनो दृष्टियोसे श्रेष्ठ कहलाती है। क्योकि यह सुखपूर्ण है, इसलिये भी यह श्रेष्ठ कहलाती है और क्योकि सिद्धि क्षिप्र होती है, इसलिये भी यह श्रेष्ठ कहलाती है। भिक्षुओ, यह प्रतिपदा दोनो दृष्टियोसे प्रणीत कहलाती है। भिक्षुओ ये चार प्रतिपदा है।

उस समय आयुष्मान सारिपुत्र जहाँ आयुष्मान मौद्गल्यायन थे, वहाँ पहुँचे। पहुँचकर आयुष्मान महामौद्गल्यायनके साथ कुशल-क्षेमकी वातचीत की। कुशल-क्षेम-पूछ चुकनेपर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे आयुष्मान सारिपुत्रने आयुष्मान् महामौद्गल्यायनसे यह पूछा—"आयुष्मान! ये चार प्रतिपदा है। कौनसी चार? दु खपूर्ण साधना विलम्बित सिद्धि, दु खपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि, सुखपूर्ण साधना विलम्बित सिद्धि, सुखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि। आयुष्मान्! ये चार प्रतिपदा है। आयुष्मान्! इन चारो प्रतिपदाओमे किस प्रतिपदाके अनुसार जीवन यापन करनेसे आपका चित्त आस्रवोसे मुक्त हुआ?," "आयुष्मान् सारिपुत्र! ये चार प्रतिपदा है। कौनसी चार? दु ख पूर्ण साधना विलम्बसे सिद्धि, दु खपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि, सुखपूर्ण साधना विलम्बसे सिद्धि, सुखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि।

आयुष्मान् ये चार प्रतिपदायें हैं। इन चारों प्रतिपदाओंमें जो यह सुखपूर्ण-साधना क्षिप्र-सिद्धि वाली प्रतिपदा है, इसीके अनुसार जीवन यापन करते हुए मेरा चित्त आस्रवोंसे मुक्त हुआ।

उस समय आयुष्मान् महामोग्गल्लान जहाँ आयुष्मान् सारिपुत्र थे, वहाँ गये। जाकर आयुष्मान् सारिपुत्रके साथ कुशल क्षेमकी बातचीत की। कुशल-क्षेम पूछ चुकनेके अनन्तर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे आयुष्मान् महामोग्गल्लानने आयुष्मान् सारिपुत्रसे यह पूछा—"आयुष्मान् सारिपुत्र! ये चार प्रतिपदायें हैं। कौनसी चार? दुःखपूर्ण साधना चिरकालमें सिद्धि, दुःखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि, सुखपूर्ण साधना चिरकालमें सिद्धि, सुखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि। आयुष्मान् सारिपुत्र! ये चार प्रतिपदायें हैं। इन चारों प्रतिपदाओंमें किस प्रतिपदाके अनुसार जीवन-यापन करनेसे आपका चित्त विमुक्त हुआ?" "आयुष्मान् मोग्गल्लान! चार प्रतिपदायें हैं। कौनसी चार? दुःखपूर्ण साधना, चिरकालमें सिद्धि, दुःखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि, सुखपूर्ण साधना चिरकालमें सिद्धि, सुखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि। आयुष्मान् ये चार प्रतिपदायें हैं। इनमें से जो यह सुखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि प्रतिपदा है उसीके अनुसार जीवन यापन करनेसे मेरा चित्त आस्रवोंसे मुक्त हुआ।

भिक्षुओ, दुनियामें चार प्रकारके आदमी विद्यमान हैं। कौनसे चार? भिक्षुओ, एक आदमी इसी जन्ममें ससंस्कार परिनिर्वाण प्राप्त होता है। भिक्षुओ, एक आदमी मरनेपर ससंस्कार परिनिर्वाण प्राप्त होता है। भिक्षुओ, एक आदमी इसी जन्ममें असंस्कार परिनिर्वाण-प्राप्त होता है। भिक्षुओ, एक आदमी मरनेपर असंस्कार परिनिर्वाण प्राप्त होता है। भिक्षुओ, आदमी शरीर रहते ही कैसे ससंस्कार परिनिर्वाण प्राप्त होता है? भिक्षुओ, भिक्षु शरीरके प्रति अशुभ-भावना (=जिगुप्सा भावना) करता है, और आहारके प्रति प्रतिकूल (=जिगुप्सा) रखता। सभी लोकोंके प्रति अनासक्त रहता। सभी संस्कारोंको अनित्य मानने वाला। उसके मनमें मृत्यु-अनुस्मरण सुप्रतिष्ठित होता है। वह इन पाच शैक्ष-बलोंसे युक्त हो विहार करता है—श्रद्धा-बल, लज्जा-बल (पाप-) भीरुता बल, वीर्य-बल तथा प्रज्ञा-बल। उसकी ये पाच इन्द्रिया सबल होती है—श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। वह इन पाचो इन्द्रियोके सबल होने के कारण इसी शरीरसे ससंस्कार परिनिर्वाण प्राप्त होता है। भिक्षुओ, आदमी मरनेपर कैसे ससंस्कार परिनिर्वाण प्राप्त होता है? भिक्षुओ, भिक्षु शरीरके प्रति अशुभ-भावना (जिगुप्सा भावना) करता है और आहारके

प्रति प्रतिकूल (= जिगुप्सा) सज्ञा। सभी लोकोंके प्रति अनासक्त भाव। सभी संस्कारोको अनित्य मानने वाला। उसके मनमे मृत्यु-अनुस्मरण सुप्रतिष्ठित होता है। वह इन पाँच शैक्षवलोंसे युक्त हो विहार करता है—श्रद्धावल, लज्जा वल, (पाप-), भीरुता वल, वीर्य-वल, तथा प्रज्ञा-वल। उसकी ये पाच इन्द्रियाँ दुर्वल होती है। वह इन इन्द्रियोंके मृदु (दुर्वल) होनेके कारण, शरीरके छुटनेपर ससस्कार परिनिर्वाण प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, आदमी इसी शरीरमे कैसे असस्कार-परिनिर्वाण-प्राप्त होता है? भिक्षुओ, भिक्षु कामवितर्कोसे पृथक हो चतुर्थ-ध्यानको प्राप्त हो विहार करता है। वह इन पांच शैक्ष-वलोसे युक्त हो विहार करता है—श्रद्धा-वल, लज्जा-वल, (पाप-)भीरुता वल, वीर्य-वल तथा प्रज्ञा-वलसे। उसकी ये पाच इन्द्रियाँ सवल होती है—श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। वह इन पाँचो इन्द्रियोके सवल होनेके कारण इसी शरीरमे असंस्कार-परिनिर्वाण प्राप्त होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी इसी शरीरमे असस्कार-परिनिर्वाण-प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, आदमी कैसे शरीरके छूटनेपर असस्कार परिनिर्वाण-प्राप्त होता है? भिक्षुओ, काम-वितर्कोसे पृथक हो चतुर्थ ध्यान को प्राप्त हो विहार करता है। वह इन पाँच शैक्ष-वलोंसे युक्त हो विहार करता है—श्रद्धा-वल, लज्जा-वल, (पाप–) भीरुता-वल, वीर्य-वल तथा प्रज्ञा-वलसे। उसकी ये पाच इन्द्रियाँ दुर्वल होती है। श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति,-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। वह इन पाँचो इन्द्रियोके दुर्वल होनेके कारण शरीर छुटनेपर असस्कार परिनिर्वाण प्राप्त होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी शरीर छुटनेपर असस्कार परिनिर्वाण-प्राप्त होता है।

एक समय आयुष्मान् आनन्द कोसम्वीमें विहार करते थे घोपितारामसे। वहाँ आयुष्मान् आनन्दने भिक्षुओको निमत्रित किया—"आयुष्मानो!" भिक्षुओने प्रत्युत्तर दिया—"आयुष्मान"। आयुष्मान् आनन्दने यह कहा—"आयुष्मानो! जो भी कोई भिक्षु वा भिक्षुणी मेरे पास आकर अर्हत्व-प्राप्तिकी वात करते है, वे सव चारो मार्गोसे अथवा इन चारो मार्गोमेंसे किसी एक मार्गसे ही अर्हत्व प्राप्त होते है। कौनसे चार मार्गोसे? आयुष्मानो! एक भिक्षु पहले शमथ की भावना करके विदर्शना-भावनाका अभ्यास करता है। जव वह शमथपूर्वक विदर्शना भावनाका अभ्यास करता है तो उसे मार्ग प्रकट होता है, वह उस मार्गपर चलता है,

उसका बहुत बहुत अभ्यास करता है। जब वह उस मार्गका बहुत बहुत अभ्यास करता है। उसके 'सयोजन' 'प्रहीण होते है, अनुशय नष्ट होते हैं।

फिर आयुष्मानो! भिक्षु पहले विदर्शना-भावनाका अभ्यासकर शमथ-भावनाका अभ्यास करता है। जब वह विदर्शनापूर्वक शमथ भावनाका अभ्यास करता है तो उसे मार्ग प्रकट होता है, वह उस मार्ग पर चलता है, उसका बहुत बहुत अभ्यास करता है,। जब वह उस मार्गका बहुत बहुत अभ्यास करता है, तो उसके सयोजन प्रहीण होते है, अनुशय नष्ट होते है।

फिर आयुष्मानो, भिक्षु शमथ-भावना तथा विपश्यना भावनाका एक साथ अभ्यास करता है। जब वह शमथ-भावना तथा विपश्यना-भावनाका एक साथ अभ्यास करता है तो उसे मार्ग प्रकट होता है। वह उस मार्गपर चलता है, उसका बहुत बहुत अभ्यास करता है। जब वह उस मार्गका बहुत बहुत अभ्यास करता है तो उसके सयोजन प्रहीण होते है, अनुशय नष्ट होते है।

फिर आयुष्मानो, एक भिक्षुके मनमें शमथ और विदर्शना भावनासे उत्पन्न हुआ हुआ मान रह जाता है। वह समय आता है कि ऐसा चित्त स्वय ही स्थिर हो जाता है, शान्त हो जाता है, एकाग्र हो जाता है, समाधिस्थ हो जाता है। उसे मार्ग प्रकट होता है। वह उस मार्गपर चलता है। उसका बहुत बहुत अभ्यास करता है। जब वह उस मार्गका बहुत बहुत अभ्यास करता है तो उसके सयोजन प्रहीण होते है, अनुशय नष्ट होते है। आयुष्मानो! जो भी कोई भिक्षु या भिक्षणी मेरे पास आकर अर्हत्व-प्राप्ति की बात करते है, वे सब चारो मार्गोंसे अथवा इन चारो मार्गोंमेंसे किसी एक मार्गसे ही अर्हत्वको प्राप्त होते है।

(३) सञ्चेतना-वर्ग

भिक्षुओ, शरीरके रहनेपर शारीरिक-चेतनाके कारण आदमी अन्दरूनी सुख-दु खको प्राप्त होता है, वाणीके रहनेपर वाणी-सम्बन्धी सचेतनाके कारण आदमी अन्दरूनी सुख-दु खको प्राप्त होता है, मनके रहनेपर मन-सम्बन्धी सचेतनाके कारण आदमी अन्दरूनी सुख-दु खको प्राप्त होता है। ये सब अविद्याके मूलहेतु होनेके कारण भिक्षुओ, आदमी या तो स्वय ही ऐसा शारीरिक-कर्म करता है जिसके परिणाम-स्वरूप उसे सुख-दु ख भुगतना पडता है, अथवा किसी दूसरेकी प्रेरणासे ऐसा शारीरिक कर्म करता है जिसके परिणाम-स्वरूप उसे सुख-दु ख भुगतना पडता है। जान-बूझकर ऐसा शारीरिक-कर्म करता है जिसके परिणाम-स्वरूप उसे सुख-दु ख भुगतना होता है, विना जाने विना बूझे ऐसा शारीरिक कर्म करता है जिसके

परिणाम-स्वरूप उसे सुख-दु ख भुगतना पडता है। भिक्षुओ, आदमी या तो स्वय ही वाणीका कर्म करता है जिसके परिणाम स्वरूप उसे सुख-दु ख भुगतना पडता है, अथवा किसी दूसरेकी प्रेरणासे ऐसा वाणीका कार्य करता है, जिसके परिणाम-स्वरूप उसे सुख-दु ख भुगतना पडता है। जानबूझकर ऐसा वाणीका कार्य करता है जिसके परिणाम-स्वरूप उसे सुख-दु ख भुगतना होता है। विना जाने—विना बूझे ऐसा वाणी का कर्म करता है जिसके परिणाम-स्वरूप उसे सुख-दु ख भुगतना पडता है। भिक्षुओ आदमी या तो स्वय ही मानसिक कर्म करता है जिसके परिणाम स्वरूप उसे सुख-दु ख भुगतना पडता है, अथवा किसी दूसरेकी प्रेरणासे ऐसा मानसिक कर्म करता है, जिसके परिणाम स्वरूप उसे सुख-दु ख भुगतना पडता है। जान बूझकर ऐसा मानसिक कर्म करता है जिसके परिणाम-स्वरूप उसे सुख-दु ख भुगतना पडता है। विना जाने बूझे ऐसा मानसिक कर्म करता है जिसके परिणाम-स्वरूप उसे सुख-दु ख भुगतना पड़ता है।

भिक्षुओ, इन सब कार्योमे अविद्याका ही हाथ रहता है। अविद्याका मूलोच्छेद हो जानेसे वह शरीर नही रहता जिसके कारण सुख-दु खकी अनुभूति होती है, वह वाणी नही रहती जिसके कारण सुख-दु ख की अनुभूति होती है, वह मन नही रहता जिसके कारण सुख-दु खकी अनुभूति होती है। वह क्षेत्र नही होता, वह इन्द्रियाँ (= वस्तु) नही होती, वे (छ) आयतन नही होते, वे आधार (= अधिकरण) नही होते जिनके कारण सुख–दु ख की अनुभूति होती है।

भिक्षुओ, चार प्रकारकी योनियाँ (= आत्मभाव-प्रतिलाभ) है ? कौनसे चार ? भिक्षुओ, एक ऐसी योनि है, जिसमें आत्म-सचेतना व्यवहारमे आती है, परसचेतना नही, एक ऐसी योनि है, जिसमे परसचेतना व्यवहारमें आती है आत्म-सचेतना नही, एक ऐसी योनि है, जिसमें आत्म-सचेतना तथा परसचेतना दोनो लागू होती हैं, एक ऐसी योनि है, जिसमे न आत्म-सचेना लागू होती है, न परसचेतना। भिक्षुओ, ये चार योनियाँ (= आत्म-प्रतिलाभ) है।

ऐसा कहनेपर आयुष्मान सारिपुत्रने भगवानूको यह कहा——भन्ते ! भगवान् द्वारा सक्षिप्त रूपसे दिये गये इस उपदेशका मै इस प्रकार विस्तारसे अर्थ ग्रहण करता हूँ। भन्ते ! जो यह वह योनि है जिसमे आत्म-सचेतना लागू होती है, पर सचेतना नहीं, आत्म-सचेतनाके ही हेतुसे उन प्राणियोकी उन उन योनिमे से 'च्युति' होती है। भन्ते ! जो यह वह योनि है जिसमे परसचेतना लागू होती है, आत्म-सचेतना नही, पर-सचेतनाके ही हेतुसे उन उन प्राणियोकी उस उस योनिमेंसे 'च्युति' होती है।

भन्ते! जो यह वह योनि है जिसमें आत्म-सचेतना भी लागू होती है, परसंचेतना भी लागू होती है, आत्म-सचेतना तथा परसचेतनाके ही हेतुसे उन इन प्राणियोंकी उस उस योनिमेंसे 'च्युति' होती है। भन्ते! जो यह वह योनि है जिसमे न आत्म-सचेतना लागू होती है, न परसचेतना, उस योनिमें हमें किन देवताओंको देखना चाहिये?

"सारिपुत्र! वहाँ हमें न सञ्ञानासञ्ञा-यतनके देवताओंको देखना चाहिये।"

"भन्ते! इसका क्या हेतु है, इसका क्या कारण है, कि उस कायासे च्युत होनेपर कुछ प्राणी आगामी होते हैं, इस लोकमें उनका आगमन होता है, इसका क्या हेतु है, इसका क्या कारण है कि उस कायासे च्युत होनेपर कुछ प्राणी अनागामी होते हैं, इस लोकमें उनका आगमन नही होता?" "सारिपुत्र! एक आदमीके नीचेकी ओर खीचने वाले सयोजन प्रहीण नही हो गये रहते हैं। वह इसी शरीरमें न सञ्ञान सञ्ञायतनको प्राप्त कर विहार करता है। वह उसमें मजा लेता है, उसीमे आनन्द मनाता है, उसीमें सतुष्ठ रहता है। वह वही स्थित रहकर, उसीमें लगा रहकर, उसीका अभ्यासी बनकर, उसी अवस्थामे शरीर त्यागकर देनेसे न सञ्ञानासञ्ञायतन के देवलोकमे जन्मग्रहण करता है। वहाँसे च्युत होनेपर वह आगामी होता है, फिर इस लोकमें जन्ग्रहण करने वाला। सारीपुत्र! एक आदमीके नीचेकी ओर खीचने वाले सयोजन प्रहीण हो गये रहते है। वह इसी शरीरमें न सञ्ञानासञ्ञ-यतनको प्राप्त कर विहार करता है। वह उसमे मजा लेता है, उसीमें आनन्द मनाता है, उसीमें सतुष्ठ रहता है। वह वही स्थित रहकर, उसीमें लगा रहकर, उसीका अभ्यासी बनकर, उसी अवस्थामें शरीर त्याग कर देनेसे न सञ्ञानासञ्ञयतनके देवलोकमें जन्म ग्रहण करता है। वहाँसे च्युत होनेपर वह अनागामी होता है, फिर इस लोकमें जन्म नही ग्रहण करने वाला। सारीपुत्र! यह हेतु है, यह कारण है, जिससे कुछ प्राणी उस कायासे च्युत होनेपर अनागामी हो जाते है, फिर इस लोकमें नही आने वाल।"

उस समय आयुष्मान सारिपुत्रने भिक्षुओंको निमन्त्रित किया—"आयुष्मान भिक्षुओ।" उन भिक्षुओने आयुष्मान सारिपुत्रको उत्तर दिया—"आयुष्मान्।" आयुष्मान् सारिपुत्रने यह कहा—"आयुष्मानो! मुझे उपसम्पन्न हुए आधा महीना ही हुआ है। मैंने अर्थ (-ज्ञान) प्राप्त कर लिया है, साथ साथ शब्द-ज्ञान भी। उसे मैं नाना तरहसे कहता हूँ, देशना करता हूँ, प्रकट करता हूँ, प्रस्थापित करता हूँ, उघाडता हूँ, विश्लेपण करता हूँ, तथा स्पष्ट करता हूँ। जिसको इस विषयमे कोई शका हो,

सदेह हो वह मुझसे प्रश्न पूछ ले। मैं उसका निराकरण करूँगा। हमारे सामने हमारे शास्ता है जो धर्मोंके विषयमे भली भाँति दक्ष है।

"आयुष्मानो! मुझे उपसम्पन्न हुए आधा महीना ही हुआ। मैने धर्म-ज्ञान प्राप्त कर लिया ही, साथ साथ शब्द ज्ञान भी। उसे मै नाना तरहसे कहता हूँ, देशना करता हूँ, प्रकट करता हूँ, प्रस्थापित करता हूँ, उघाडता हूँ, विश्लेषण करता हूँ तथा स्पष्ट करता हूँ। जिसको इस विषयमे कोई शका हो, सदेह हो वह मुझसे प्रश्न पूछ ले। मै उसका निराकरण करूँगा। हमारे सामने हमारे शास्ता है जो धर्मोंके विषयमे भली-भाँति दक्ष है।

"आयुष्मानो! मुझे उपसम्पन्नता हुए आधा महीना ही हुआ है। मैने निरुक्ति (-ज्ञान) प्राप्त कर लिया है, साथ साथ शब्द-ज्ञान भी। उसे मै नाना तरहसे कहता हूँ, देशना करता हूँ, प्रकट करता हूँ, प्रस्थापति करता हूँ, उघाडता हूँ, विश्लेषण करता हूँ तथा स्पष्ट करता हूँ। जिसको इस विषयमे कोई शका हो, सदेह हो वह मुझसे प्रश्न पूछ ले। मै उसका निराकरण करूगा। हमारे सामने हमारे शास्ता है जो धर्मोंके विषयमे भली-भाँति दक्ष है।

"आयुष्मानो! मुझे उपसम्पन्न हुए आधा महीना ही हुआ है। मैने प्रतिभा (ज्ञान) प्राप्त कर लिया है, साथ साथ शब्द-ज्ञान भी। उसे मै नाना तरहसे कहता हूँ, देशना करता हूँ, प्रकट करता हूँ, प्रस्थापित करता हूँ, उघाडता हूँ, विश्लेषण करता हूँ तथा स्पष्ट करता हूँ। जिसको इस विषयमे कोई शका हो, सदेह हो वह मुझसे प्रश्न पूछ ले। मै उसका निराकरण करूँगा। हमारे सामने हमारे शास्ता है जो धर्मोंके विषयमे भलि प्रकार दक्ष है।

"तब आयुष्मान महाकोटिठ्त जहाँ आयुष्मान् सारिपुत्र थे वहाँ गये। जाकर आयुश्मान् सारिपुत्रके साथ कुशल क्षेमकी बातचीत की। कुशल-क्षेम पूछ चुकनेपर एक ओर बैठकर आयुष्मान कोटिठ्तने आयुष्मान सारिपुत्रसे कहा--आयुष्मान्! क्या छ स्पर्शायतनोका नि शेष वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष रहता है!

"आयुष्मान्! ऐसा मत कहो।"

"आयुष्मान! तो क्या छह स्पर्शायतनोका नि शेष वैराग्य, निरोध होने जानेपर कुछ शेष नही रहता है?"

"आयुष्मान्! ऐसा मत कहो।"

"आयुष्मान्! तो क्या छह स्पर्शायतनोका नि शेष वैराग्य, निरोध होनेपर कुछ शेष रहता भी है और नही भी रहता है?"

"आयुष्मान् ऐसा मत कहो।"

"आयुष्मान्! तो क्या छह स्पर्शायतनोका नि शेष वैराग्य, निरोध होनेपर कुछ शेप रहता नही भी है और न नही भी रहता है?"

"आयुष्मान्! ऐसा मत कहो।"

"आयुष्मान्! छह स्पर्शायतनोका नि शेप वैराग्य, निरोध हो जानेपर भी अन्य कुछ शेप रहता है' कहनेपर भी आप कहते है, 'आयुष्मान्! ऐसा मत कहो', छह स्पर्शायतनोका नि शेप वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेप नही रहता है, कहनेपर भी आप कहते है, 'आयुष्मान्! ऐसा मत कहो,' छह स्पर्शायतनोका नि शेप वैराग्य-निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेप रहता भी है और नही भी रहता है कहने पर भी आप कहते है 'आयुष्मान्! ऐसा मत कहो, छह स्पर्शायतनोका नि शेप वैराग्य-निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेप नही रहता है और नही नही रहता है, कहनेपर भी आप कहते है,'आयुष्मान्! ऐसा मत कहो,' तो आयुष्मान्! आपके इस कथनका क्या अर्थ समझा जाय?" "आयुष्मान्! छह स्पर्शायतनोका नि शेप वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेप रहता है, कहना भी जो अकथ्य है उसका कहना है, छह स्पर्शायतनोका नि शेप वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेप नही रहता है, कहना भी जो अकथ्य है उसका कहना है, छह स्पर्शायतनोका नि शेप वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेप रहता भी है और नही भी रहता है, कहना भी जो अकथ्य है उसका कहना है, छह स्पर्शायतनोका नि शेप वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ न शेप रहता है और न नही रहता है, कहना भी जो अकथ्य है उसका कहना है। आयुष्मान् जहाँतक छह स्पर्शायतनो की सीमा है वही तक (वाणीके) प्रपचकी सीमा है, जहाँ तक (वाणीके) प्रपचकी सीमा है वही तक छह स्पर्शायतनोकी सीमा है। आयुष्मान्! छह स्पर्शायतनोका नि शेप वैराग्य, निरोध हो जानेसे (वाणी) के प्रपचका निरोध हो जाता है। (वाणीके) प्रपचका निरोध हो जानेसे प्रपचका उपशमन हो जाता है।

तव आयुष्मान् आनन्द जहाँ आयुष्मान महाकोट्ठित थे, वहाँ पहुँचे। पास जाकर आयुष्मान् महा-कोट्ठितसे कुशल-क्षेमकी वातचीत की। कुशल-क्षेमकी वातचीत समाप्त होनेपर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे हुए आयुष्मान् आनन्दने

आयुष्मान् महाकोट्ठितको यह कहा—"आयुष्मान्! क्या छह स्पर्शायतनोका नि शेष वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष रहता है?"

"आयुष्मान्! ऐसा मत कहो।"

"आयुष्मान्! तो क्या छ स्पर्शायतनोका नि शेप वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष नही रहता है?"

"आयुष्मान्! ऐसा मत कहो।"

"आयुष्मान्! तो क्या छ स्पर्शायतनोका नि शेप वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ रहता भी है और नही भी रहता है?"

"आयुष्मान्! ऐसा मत कहो।"

"आयुष्मान्! तो क्या छ स्पर्शायतनोका नि शेप वैराग्य हो जानेपर अन्य कुछ न शेष रहता है और न नही रहता है?"

"आयुष्मान्! ऐसा मत कहो।"

"आयुष्मान्! छ स्पर्शायतनोका नि शेष वैराग्य निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष रहता है, कहनेपर भी आप कहते है, 'आयुष्मान्! ऐसा मत कहो,' छ स्पर्शायतनोका नि शेप वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष नही रहता है, कहनेपर भी आप कहते है, 'आयुष्मान् ऐसा मत कहो,' छ स्पर्शायतनोका नि शेष वैराग्य निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष रहता भी है और नही भी रहता है, कहनेपर भी आप कहते है 'आयुष्मान्! ऐसा मत कहो,' छ स्पर्शायतनोका नि.शेष वैराग्य निरोध हो जानेपर अन्य कुछ न शेष रहता है और न नही रहता है, कहनेपर भी आप कहते है, 'आयुष्मान्! ऐसा मत कहो,' तो आयुष्मान् आपके इस कथनका क्या अर्थ समझा जाय?"

"आयुष्मान्! छ स्पर्शायतनोका नि शेप वैराग्य निरोध हो जाने पर अन्य कुछ शेप रहता है, कहना भी जो अकथ्य है, उसका कहना है, छ स्पर्शायतनोका नि शेष वैराग्य, निरोध हो जाने पर अन्य कुछ शेष नही रहता है, कहना भी जो अकथ्य है, उसका कहना है, छ स्पर्शायतनोका नि शेष वैराग्य निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष रहता भी है और नही भी रहता है, कहना भी जो अकथ्य है, उसका कहना है; छ स्पर्शायतनोका नि शेष वैराग्य-निरोध हो जानेपर अन्य कुछ न शेष रहता है और न नही रहता है, कहना भी जो अकथ्य है, उसका कहना है। आयुष्मान्! जहाँ तक छ स्पर्शायतनोकी सीमा है, वही तक (वाणीके) प्रपचकी सीमा है। जहाँ तक (वाणीके) प्रपचकी सीमा है, वही तक छ स्पर्शायतनोकी सीमा है। आयुष्मान्! छ

स्पर्शायतनोका नि शेप वैराग्य, निरोध हो जानेसे (वाणीके) प्रपचका निरोध हो जाता है। (वाणीके) प्रपचका निरोध हो जानेमे प्रपचका शमन हो जाता है।

उस समय आयुष्मान् उपवान जहाँ आयुष्मान सारिपुत्र थे, वहाँ गये। जाकर आयुष्मान् सारिपुत्रके साथ कुशल-क्षेमकी वार्ता की। कुशल-क्षेमकी वातचीत समाप्त होनेपर एक ओर बैठे, आयुष्मान् उपवानने आयुष्मान सारिपुत्रसे यह कहा—'आयुष्मान सारिपुत्र ! क्या 'विद्या' से दु खका मूलोच्छेद सम्भव है ?'

"आयुष्मान् ! नही।"

"आयुष्मान सारिपुत्र ! तो क्या 'आचरण' से दु ख का मूलोच्छेद सम्भव है ?

"आयुष्मान् ! नही।"

"आयुष्मान सारिपुत्र ! तो क्या विद्या तथा आचरणसे दु खका मूलोच्छेद सम्भव है ?"

"आयुष्मान् ! नही।"

"आयुष्मान् सारिपुत्र ! तो क्या विना विद्या तथा आचरण से दु खका मूलोच्छेद सम्भव है ?"

"आयुष्मान् ! नही।"

"आयुष्मान सारिपुत्र ! यह क्या है कि यह पूछने पर कि क्या विद्यासे दु खका मूलोच्छेद होता है, आप कहते हैं, 'आयुष्मान् नही,' यह पूछनेपर भी कि क्या आचरणसे दु खका मूलोच्छेद होता है, आप कहते है, 'आयुष्मान् ! नही', यह पूछनेपर भी कि क्या विद्या तथा आचरणसे दु खका मूलोच्छेद होता है, आप कहते है, 'आयुष्मान् नही,' यह पूछने पर भी कि क्या विना विद्या और आचरणके दु खका मूलोच्छेद होता है, आप कहते हैं, 'आयुष्मान् ! नही' तो फिर आयुष्मान् ! दु खका मूलोच्छेद कैसे होता है ?

'आयुष्मान् ! यदि विद्यासे दु खका मूलोच्छेद सम्भव माना जाय, तो उपादान-स्कन्धोके रहते भी दु खका मलोच्छेद सम्भव होगा, यदि आचरणसे दु खका मूलोच्छेद सम्भव माना जाय, तो उपादान-स्कधोंके रहते भी दु खका मूलोच्छेद सम्भव होगा, यदि विद्या तथा आचरणसे दु खका मूलोच्छेद सम्भव माना जाय, तो उपादान स्कन्धोके रहते भी दु खका मूलोच्छेद सम्भव होगा, यदि विना विद्या और आचरणके दु खका मूलोच्छेद सम्भव माना जाय, तो पृथक-जन द्वारा भी दु खका अन्त सम्भव माना जायेगा। आयुष्मान् ! पृथक-जन विना विद्याचरणके आचरण-रहित होता

है। वह यथार्थ बातको न जानता है, न देखता है। जो आचरण-सम्पन्न होता है वही जानकर, बूझकर दु खका अन्त करने वाला होता है।

भिक्षुओ, श्रद्धावान् भिक्षुको यदि आकाक्षा करनी हो तो यही आकाक्षा करनी चाहिये कि मै ऐसा बनूं जैसे सारिपुत्र-मौद्गल्यायन। भिक्षुओ, यही तुला है, यही माप है मेरे श्रावकोके लिये ये जो सारिपुत्र-मौद्गल्यायन है। भिक्षुओ, श्रद्धावान भिक्षुणीको यदि आकाक्षा करनी हो तो यही आकाक्षा करनी चाहिये कि मैं ऐसी बनूं जैसी खेमा (= क्षेमा) तथा उत्पल वर्णा। भिक्षुओ, यही तुला है, यही माप है, मेरी श्राविकाओके लिये ये जो क्षेमा तथा उत्पल-वर्णा है। भिक्षुओ, श्रद्धावान् उपासक को यदि आकाक्षा करनी हो तो यही आकाक्षा करनी चाहिये कि मै ऐसा बनूं जैसा चित्र गृहपति अथवा हत्थक आलवक। भिक्षुओ, यही तुला है, यही माप है मेरे श्रावक उपासकोके लिये ये जो चित्त गृहपति अथवा अत्थक आलवक। भिक्षुओ, श्रद्धालु उपासिका को यदि आकाक्षा करनी ही तो यही आकाक्षा करनी चाहिये कि मै ऐसी बनूं जैसी खज्जुतरा उपासिका अथवा वेलुकण्टकी नन्द माता। भिक्षुओ, मेरी श्राविका उपासिकाओके लिये यह तुला है, यह भाव है, ये जो खज्जुत्तरा उपासिका अथवा वेलु-कण्टकी नन्दमाता।

उस समय आयुष्मान् राहुल जहाँ भगवान थे, वहाँ गये। पास जाकर भगवान् को प्रणाम कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे आयुष्मान् राहुलको भगवान्ने यह कहा—राहुल! जो यह अपने भीतरकी पृथ्वी-धातु है, यह पृथ्वी-धातु ही है। उसके बारेमे यथार्थ रूपसे जानकर यही समझना चाहिये कि न तो वह मेरी है, न मैं वह हूँ, न वह मेरी 'आत्मा' है। इस प्रकार उसे सम्यक् प्रकारसे समझ लेनेपर पृथ्वी-धातुसे निर्वेद प्राप्त होता है, पृथ्वी-धातुसे चित्त विरक्त होता है। राहुल! जो यह अपने भीतरकी अप्-धातु है और यह जो बाहर की अप्-धातु है, यह अप् धातु ही है। उसके बारेमे यथार्थ रूपसे जानकर यही समझना चाहिये कि न तो वह मेरी है, न मैं वह हूँ, न वह मेरी 'आत्मा' है। इस प्रकार उसे सम्यक्-प्रकारसे समझ लेनेपर अप्-धातुसे निर्वेद प्राप्त होता है, अप्-धातुसे चित्त विरक्त होता है। राहुल! जो यह अपने भीतरकी तेज-धातु है, और यह जो बाहरकी तेज-धातु है, यह तेज-धातु ही है। उसके बारेमें यथार्थ रूपसे जानकर यही समझना चाहिये कि न तो वह मेरी है, न मैं वह हूँ, न वह मेरी 'आत्मा' है। इस प्रकार इसे सम्यक् प्रकारसे समझ लेनेपर तेज-धातुसे निर्वेद प्राप्त होता है, तेज-धातुसे चित्त-वैराग्य प्राप्त होता है। राहुल! जो यह अपने भीतरकी वायु-धातु है, और यह जो बाहरकी वायु-धातु है, यह वायु-धातु ही

है। उसके बारेमें यथार्थ रूपसे जानकर यही समझना चाहिये कि न तो वह मेरी है, न मैं वह हूँ और न वह मेरी 'आत्मा' है। इस प्रकार उसे सम्यक् प्रकार से समझ लेनेपर वायु-धातुसे निर्वेद प्राप्त होता है, वायु-धातुसे चित्त-वैराग्य प्राप्त होता है। राहुल! जब भिक्षु इन चारो धातुओको न अपना करके और न अपनेमें करके देखता है तो राहुल यही कहलाता है भिक्षुकी तृष्णाको छेद डालना, सयोजनको पार कर जाना, अभिमानका सम्यक् प्रकार मर्दन कर, दु खका अन्त कर डालना।

भिक्षुओ, दुनियामे चार तरहके आदमी विद्यमान है। कौनसे चार? भिक्षुओ, एक भिक्षु चित्तकी एक शान्त विमुक्तिको प्राप्त कर विहार करता है। वह सत्काय-निरोध (= निर्वाण को मनमें स्थान देता है। सत्काय-निरोध (= निर्वाण) को मनमें स्थान देनेपर उसका चित्त उसमे रमण नही करता, प्रसन्न नही होता, स्थिर नही होता, आर्कषित नही होता। भिक्षुओ, इसकी आशा नही करनी चाहिये कि उस भिक्षुको निर्वाण लाभ होगा। भिक्षुओ, जैसे कोई आदमी चिपचिपे हाथोंसे पेडकी शाखाको ग्रहण करे। उसका वह हाथ चिपट भी जायगा, ग्रहण भी कर लिया जायगा, धर भी लिया जायगा। इसी प्रकार भिक्षुओ, एक भिक्षु चित्तकी एक शान्त विमुक्तिको प्राप्त कर विहार करता है। वह सत्काय निरोध (= निर्वाण) को मनमें स्थान देता है। सत्काय-निरोध (= निर्वाण) को मनमें स्थान देने पर उसका चित्त उसमे रमण नही करता, प्रसन्न नही होता, स्थिर नही होता, आर्कपित नही होता। भिक्षुओ, इसकी आशा नही करनी चाहिये कि उसभि क्षुको निर्वाण लाभ होगा।

भिक्षुओ, एक भिक्षु चित्तकी एक शान्त विमुक्तिको प्राप्तकर विहार करता है। वह सत्काय निरोध (= निर्वाण) को मनमें स्थान देता है। सत्काय-निरोध (= निर्वाण) को मनमें स्थान देनेपर उसका चित्त उसमें रमण करता है, प्रसन्न होता है, स्थिर होता है, आर्कपित होता है। भिक्षुओ, इसकी आशा करनी चाहिये कि उस भिक्षुको निर्वाण लाभ होगा। भिक्षुओ, जैसे कोई आदमी स्वच्छ हाथोसे पेड की शाखाको ग्रहण करे। उसका वह हाथ न चिपटेगा, न ग्रहण किया जायगा, न धर लिया जायगा। इसी प्रकार भिक्षुओ एक भिक्षु चित्तकी एक शान्त विमुक्तिको प्राप्त कर विहार करता है। वह सत्काय निरोध (= निर्वाण) को मनमे स्थान देता है। सत्काय निरोध (= निर्वाण) को मनमें स्थान देने पर उसका चित्त उसमें रमण करता है, प्रसन्न होता है, स्थिर होता है, आर्कपित होता है। भिक्षुओ, इसकी आशा करनी चाहिये कि उस भिक्षुको निर्वाण लाभ होगा।

भिक्षुओ, एक भिक्षु चित्तकी एक शान्त विमुक्तिको प्राप्त कर विहार करता है। वह अविद्याके उच्छेद (=अर्हत्व) को मनमे स्थान देता है। अविद्याके उच्छेद (=अर्हत्व) को मनमे स्थान देने पर उसका चित्त उसमे रमण नही करता, प्रसन्न नही होता, स्थिर नही होता, आर्कपित नही होता। भिक्षुओ, इसकी आशा नही करनी चाहिये कि उस भिक्षुको अविद्याका उच्छेद (=अर्हत्व) प्राप्त होगा। भिक्षुओ, जैसे कोई अनेक वर्ष पुराना तालाव हो और एक आदमी उसमे पानी आनेके जो रास्ते है उन्हे तो वन्द कर दे, किन्तु जो पानी जानेके रास्ते है उन्हे खोल दे। देव भली प्रकार वरसे। तव भी भिक्षुओ, यह आशा नही करनी चाहिये कि उस तालावका वाँध टूट जायगा। इसी प्रकार भिक्षुओ, एक भिक्षु चित्तकी एक शान्त विमुक्तिको प्राप्तकर विहार करता है। वह अविद्याके उच्छेद (=अर्हत्व) को मनमें स्थान देता है। अविद्याके उच्छेद (=अर्हत्व) को मनमे स्थान देने पर उसका चित्त उसमे रमण नही करता, प्रसन्न नही होता, स्थिर नही होता आर्कपित नही होता। भिक्षुओ, इसकी आशा नही करनी चाहिये कि उस भिक्षुको अविद्याका उच्छेद (=अर्हत्व) प्राप्त होगा।

भिक्षुओ, एक भिक्षु चित्तकी एक शान्त विमुक्तिको प्राप्त कर विहार करता है। वह अविद्याके उच्छेद (=अर्हत्व) को मनमे स्थान देता है। अविद्याके उच्छेद (=अर्हत्व) को मनमें स्थान देनेपर उसका चित्त उसमे रमण करता है, प्रसन्न होता है, स्थिर होता है, आर्कषित होता है। भिक्षुओ, इसकी आशा करनी चाहिये कि उस भिक्षुको अविद्याका उच्छेद (=अर्हत्व) प्राप्त होगा। भिक्षुओ, जैसे कोई अनेक वर्ष पुराना तालाव हो और एक आदमी उसमे पानी आनेके जो रास्ते है उन्हे तो खोल दे, किन्तु जो पानी जानेके रास्ते है उन्हे वन्दकर दे। देव भली प्रकार वरसे। तव भिक्षुओ, यह आशा करनी चाहिये कि उस तालावका वाध टूट जायगा। इसी प्रकार भिक्षुओ, एक भिक्षु चित्तकी एक शान्त विमुक्तिको प्राप्त कर विहार करता है। वह अविद्याके उच्छेद (=अर्हत्व) को मनमे स्थान देता है। अविद्याके उच्छेद (=अर्हत्व) को मनमे स्थान देनेपर उसका चित्त उसमे रमण करता है, प्रसन्न होता है, स्थिर होता है, आकोर्पित होता है। भिक्षुओ इसकी आशा करनी चाहिये कि उस भिक्षुको अविद्याका उच्छेद (=अर्हत्व) प्राप्त होगा। भिक्षुओ, दुनियामे ये चार प्रकारके लोग विद्यमान है।

तव आयुष्यमान् आनन्द जहाँ आयुष्यमान् सारिपुत्र थे, वहाँ गये। जाकर आयुष्यमान् सारिपुत्रके साथ कुशल-क्षेम वार्ता की। कुशल-क्षेम पूछ चुकनेपर एक ओर वैठे। एक ओर वैठे आयुष्यमान् आनन्दने आयुष्यमान् सारिपुत्रसे यह पूछा—

"आयुष्यमान् सारिपुत्र! इसका क्या हेतु है, क्या कारण है, जिससे कुछ प्राणी इसी शरीरके रहते परिनिर्वाणको नही प्राप्त होते है?" "आयुष्मान् आनन्द! प्राणी (अविद्या) की कमी करने वाली प्रज्ञाको यथार्थ रूपसे नही जानते, (विद्याको) स्थिर करने वाली प्रज्ञाको यथार्थ रूपसे नही जानते, विशेष (ज्ञान) की ओर ले जाने वाली प्रज्ञाको यथार्थ रूपसे नही जानते, (विपयको) वीधने वाली प्रज्ञाको यथार्थ रूपसे नही जानते। आनन्द! यही हेतु है, यही कारण है, जिससे कुछ प्राणी इसी शरीरके रहते परिनिर्वाणको नही प्राप्त होते है।"

"आयुष्मान् सारिपुत्र! इसका क्या हेतु है, क्या कारण है, जिससे कुछ प्राणी इसी शरीरके रहते परिनिर्वाणको प्राप्त होते है?"

"आयुष्मान् आनन्द! प्राणी (अविद्याकी) कमी करने वाली प्रज्ञाको यथार्थ रूपसे जानते है, (विद्याको) स्थिर करने वाली प्रज्ञाको यथार्थ रूपसे जानते है, विशेप ज्ञानकी ओर ले जाने वाली प्रज्ञाको यथार्थ रूपसे जानते, है (विपयको) वीधने वाली प्रज्ञाको यथार्थ रूपसे जानते है। आनन्द! यही हेतु है, यही कारण है, जिससे कुछ प्राणी इसी शरीरके रहते परिनिर्वाणको प्राप्त होते है।"

एक समय भगवान (बुद्ध) भोग नगरके आनन्द-चैत्यमें विहार कर रहे थे। वहाँ भगवान्ने भिक्षुओको आमन्त्रित किया। उन भिक्षुओने भगवान्को "भदन्त" कहकर प्रति-वचन दिया। भगवान्ने यह कहा—"भिक्षुओ, चार महत्व-पूर्ण उपदेश दे रहा हूँ। उन्हें सुनो। अच्छी प्रकार मनमें धारण करो। कहता हूँ।" उन भिक्षुओने उन्हे प्रतिवचन दिया—"भन्ते! वहुत अच्छा।" तव भगवान्ने ऐसा कहा—"भिक्षुओ! चार महत्वपूर्ण उपदेश कौनसे है? भिक्षुओ, यदि कोई मित्र ऐसा कहे कि आयुष्मानो मैंने स्वय भगवानके मुँहसे ऐसा सुना, भगवानके मुंहसे ग्रहण किया कि यह धर्म है, यह विपय है, यह शास्ताका शासन है। भिक्षुओ, उस भिक्षुके कथनका न अभिनन्दन करना चाहिये और न खण्डन करना चाहिये। विना अभि-नन्दन किये, विना खण्डन किये (उसके) उन शब्दोको अच्छी तरह ग्रहण कर, सूत्रोंसे मिलाना चाहिये, विनयसे मिलाकर देखना चाहिये। यदि सूत्रोंसे मिलाये जानेपर, विनयसे मिलाकर देखे जानेपर वे न सूत्रोंसे मेल खाते हो और न (उनका) विनयसे मेल वैठता हो, तो यह निश्चित रूपसे मान लेना चाहिये कि यह भगवान् अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका वचन नही है। यह इस भिक्षुका ही दुर्ग्रहीत है। भिक्षुओ, ऐसे वचनको त्याग देना चाहिये। भिक्षुओ! यदि कोई भिक्षु ऐसा कहे कि आयुष्मानो मैंने स्वय भगवान्से ऐसा सुना, भगवान्से ग्रहण किया कि यह धर्म है, यह विनय है, यह शास्ताका

शासन है। भिक्षुओ, उस भिक्षुके कथनका न अभिनन्दन करना चाहिये और न खण्डन करना चाहिये। बिना अभिनन्दन किये, विना खण्डन किये (उसके) उन शव्दोको अच्छी तरह ग्रहण कर सूत्रोंसे मिलाना चाहिये, विनयसे मिलाकर देखना चाहिये। यदि सूत्रोसे मिलाये जानेपर, विनयसे मिलाकर देखे जानेपर (वे) सूत्रोसे मेल खाते है और (उनका) विनयसे मेल बैठता है, तो यह निश्चित रूपसे मान लेना चाहिये कि यह भगवान् अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका वचन है। इस भिक्षुने इसे अच्छी तरह ग्रहण किया है। भिक्षुओ, यह पहला महत्वपूर्ण उपदेश ग्रहण करो।

"भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु ऐसा कहे कि अमुक आवासमे स्थविरो सहित, प्रमुख भिक्षुओ सहित सघ निवास करता है। मैने उस सघके मुँहसे ऐसा सुना, सघके मुँहसे ग्रहण किया, यह धर्म है, यह विनय है, यह शास्ताका शासन है। भिक्षुओ, उस भिक्षुके कथनका न अभिनन्दन करना चाहिये और न खण्डन करना चाहिये। बिना अभिनन्दन किये, बिना खण्डन किये (उसके) उन शव्दोको अच्छी तरह ग्रहण कर सूत्रोसे मिलाना चाहिये, विनयसे मिलाकर देखना चाहिये। यदि सूत्रोसे मिलाये जानेपर, विनयसे मिलाकर देखे जानेपर (वे) न सूत्रोसे मेल खाते हो और न (उनका) विनयसे मेल वैठता हो, तो यह निश्चित रूपसे मान लेना चाहिये कि यह भगवान् अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका वचन नही है। यह उस सघका ही दुर्गृहीत है। भिक्षुओ, ऐसे वचनको त्याग देना चाहिये। भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु ऐसा कहे कि अमुक आवासमे स्थविरो सहित, प्रमुख भिक्षुओ सहित सघ निवास करता है। मैने उस सघसे ऐसा सुना, सघसे ग्रहण किया, यह धर्म है, यह विनय है, यह शास्ताका शासन है। भिक्षुओ, उस भिक्षुके कथनका न अभिनन्दन करना चाहिये और न खण्डन करना चाहिये। विना अभिनन्दन किये, विना खण्डन किये (उसके) उन शव्दोको अच्छी तरह ग्रहण कर सूत्रोसे मिलाना चाहिये, विनयसे मिलाकर देखना चाहिये। यदि सूत्रोसे मिलाये जानेपर, विनयसे मिलाकर देखे जानेपर (वे) सूत्रोसे मेल खाते है, (उनका) विनयसे मेल बैठता है, तो यह निश्चित रूपसे मान लेना चाहिये कि यह भगवान् अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका वचन है। यह सघने अच्छी तरह ग्रहण किया है। भिक्षुओ, यह दूसरा महत्वपूर्ण उपदेश ग्रहण करो।

भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु ऐसा कहे कि अमुक आवासमे वहुतसे स्थविर भिक्षु विहार करते है। वे बहुश्रुत है, आगमके जानकार है, धर्म-धर तथा विनय-धर है, मातृका-धर है। मैने उन स्थविरोके मुँहसे सुना है, मुँहसे ग्रहण किया है, यह धर्म

है, यह विनय है, यह शास्ताका शासन है। भिक्षुओ, उस भिक्षुके कथनका न अभिनन्दन करना चाहिये और न खण्डन करना चाहिये। बिना अभिनन्दन किये, बिना खण्डन किये (उसके) उन शब्दोको अच्छी तरह ग्रहण कर सूत्रोंसे मिलाना चाहिये। विनयसे मिलाकर देखना चाहिये। यदि सूत्रोंसे मिलाये जानेपर, विनयसे मिलाकर देखे जानेपर (वे) न सूत्रोंसे मेल खाते है और न (उनका) विनय से मेल बैठता है, तो यह निश्चित रूपसे मान लेना चाहिये कि यह भगवान अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका वचन नही है। यह उन स्थविरोका ही दुर्गृहीत है। भिक्षुओ, ऐसे वचनको त्याग देना चाहिये। भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु ऐसा कहे कि अमुक आवासमें बहुतसे स्थविर भिक्षु, विहार करते है। वे बहुश्रुत है, आगमके जानकार है, धर्म-धर है, विनय-धर है, मातृका-धर है। मैने उन स्थविरोंके मुंहसे सुना है, मुंहसे ग्रहण किया है, यह धर्म है, यह विनय है, यह शास्ताका शासन है। भिक्षुओ, उस भिक्षुके कथनका न अभिनन्दन करना चाहिये और न खण्डन करना चाहिये। बिना अभिनन्दन किये, बिना खण्डन किये (उसके) उन शब्दोको अच्छी तरह ग्रहण कर सूत्रोंसे मिलाना चाहिये। विनयसे मिलाकर देखना चाहिये। यदि सूत्रोंसे मिलाये जानेपर, विनयसे मिलाकर देखे जानेपर (वे) सूत्रोसे मेल खाते है और (उनका) विनयसे मेल बैठता है, तो यह निश्चित रूपसे मान लेना चाहिये कि यह भगवान् अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका वचन है। उन स्थविरोने यह अच्छी तरह ग्रहण किया है। भिक्षुओ, यह तीसरा महत्वपूर्ण उपदेश ग्रहण करो।

भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु ऐसा कहे कि अमुक आवासमें एक स्थविर भिक्षु रहते है। वे बहु-श्रुत है, आगमके जानकार है, धर्म-धर है, विनय-धर है, मातृका-धर है। मैंने उन स्थविरके मुंहसे सुना है, मुंहसे ग्रहण किया है, यह धर्म है, यह विनय है, यह शास्ताका शासन है। भिक्षुओ, उस भिक्षुके कथनका न अभिनन्दन करना चाहिये और न खण्डन करना चाहिये। विना अभिनन्दन किये, बिना खण्डन किये (उसके) उन शब्दोको अच्छी तरह ग्रहण कर सूत्रोंसे मिलाना चाहिये, विनयसे मिलाकर देखना चाहिये। यदि सूत्रोंसे मिलाये जानेपर, विनयसे मिलाकर देखे जानेपर (वे) न सूत्रोंसे मेल खाते है और न (उनका) विनय से मेल बैठना है, तो यह निश्चित रूपसे मान लेना चाहिये कि यह भगवान् अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका वचन नही है। यह उन स्थविरका ही दुर्गृहीत है। भिक्षुओ, ऐसे वचन को त्याग देना चाहिये। भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु ऐसा कहे कि अमुक आवासमे एक स्थविर भिक्षु, रहते है। वे वहुश्रुत है, आगमके जानकार है, धर्म-धर है, विनय-धर है, मातृका-

धर है। मैंने उन स्थविरोके मुँहसे सुना है, मुँहसे ग्रहण किया है, यह धर्म है, यह विनय है, यह शास्ताका शासन है। भिक्षुओ, उस भिक्षुके कथनका न अभिनन्दन करना चाहिये और न खण्डन करना चाहिये। विना अभिनन्दन किये, विना खण्डन किये (उसके) उन शब्दोको अच्छी तरह ग्रहण कर सूत्रोंसे मिलाना चाहिये, विनयसे मिलाकर देखना चाहिये। यदि सूत्रोसे मिलाये जानेपर, विनयसे मिलाकर देखे जानेपर (वे) सूत्रोसे मेल खाते हैं और (उनका) विनय से मेल वैठता है, तो यह निश्चित रूपसे मान लेना चाहिये कि यह भगवान् अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका वचन है। उन स्थविरने यह अच्छी तरह ग्रहण किया है। भिक्षुओ, यह चौथा महत्वपूर्ण उपदेश ग्रहण करो। भिक्षुओ, ये चार महत्वपूर्ण उपदेश है।

भिक्षुओ, चार अगोसे युक्त योद्धा राजाके योग्य होता है, राजाका भोग्य होता है, राजाका अग ही माना जाता है। कौनसे चार अगोसे? स्थान-कुशल होता है, दूर (तक तीर) गिरानेवाला होता है, तुरन्त (तीर) मारनेवाला होता है तथा वडी-वडी चीजोको बीध देनेवाला होता है। भिक्षुओ, इन चार वातोसे युक्त योद्धा राजाके योग्य होता है, राजाका भोग्य होता है, राजाका अग ही माना जाता है।

(४) योद्धाजीव-वर्ग

इसी प्रकार भिक्षुओ, चार वातोंसे युक्त भिक्षु स्वागतार्ह होता है . . . लोगोंके लिये अनुपम पुण्यक्षेत्र होता है। कौन-सी चार वातोसे? भिक्षुओ, भिक्षु स्थान-कुशल होता है, दूर तक गिराने वाला होता है, तुरन्त बीधने वाला होता है और वड़ी-वडी चीजोको बीध देने वाला होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु स्थान-कुशल कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु सदाचारी होता है . . . शिक्षाओको सम्यक् प्रकार ग्रहण करता है। भिक्षुओ, भिक्षु इस प्रकार स्थान-कुशल होता है। भिक्षुओ, भिक्षु दूर तक गिराने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु जितना भी रूप है—चाहे भूत कालका हो, चाहे वर्तमानका, चाहे भविष्यत्का, चाहे अपने अन्दरका हो, अथवा वाहरका, चाहे स्थूल हो अथवा सूक्ष्म, चाहे वुरा हो अथवा भला, चाहे दूर हो अथवा समीप—उसके वारेमे सोचता है कि न वह मेरा है, न वह मै हूँ और न वह मेरी आत्मा है। वह इसी प्रकार यथार्थ रूपसे अच्छी तरह जानकर विचार करता है। वह जितनी भी वेदना है . . . सज्ञा है . . . सस्कार है . . . विज्ञान है—चाहे भूतकालका हो, चाहे वर्तमानका, चाहे भविष्यत्का, चाहे अपने अन्दरका हो, अथवा वाहरका, चाहे स्थूल हो अथवा सूक्ष्म, चाहे वुरा हो अथवा भला, चाहे दूर हो अथवा समीप, उसके वारेमे सोचता है कि न

वह मेरा है, न वह मैं हूँ, और न वह मेरा 'आत्मा' है। वह इसी प्रकार यथार्थ रूपसे अच्छी तरह जानकर विचार करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु दूर तक गिराने वाला होता है है। भिक्षुओ, भिक्षु तुरन्त बीधने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है यह दुःख निरोधगामिनी-प्रतिपदा है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। भिक्षुओ, भिक्षु इस प्रकार तुरन्त बीधने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु कैसे बडी बडी चीजोंको बींधने वाला होता है? भिक्षुओ भिक्षु महान् अविद्या-स्कन्धको बींधने वाला होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षुओ बडी-बडी चीजोको बीधने वाला होता है। भिक्षुओ, इन चार बातोंसे युक्त भिक्षु, स्वागतार्ह होता है लोगोंके लिये अनुपम पुण्यक्षेत्र होता है।

भिक्षुओ चार बातोंके विषयोंमें कोई जिम्मेदारी नही ले सकता, न कोई श्रमण, न कोई ब्राह्मण, न कोई देव, न मार, न ब्रह्मा और न दुनियामे अन्य कोई। किन चार बातोंके विषयमें? जराको प्राप्त होनेवाले जराको प्राप्त न हो—इसके विषयमें कोई जिम्मेदारी नही हो ले सकता, न कोई श्रमण, न कोई ब्राह्मण, न कोई देव, न मार, न ब्रह्मा, और न दुनियामें अन्य कोई। व्याधिको प्राप्त होने वाले व्याधिको प्राप्त न हो—इसके विषयमे कोई जिम्मेदारी नही ले सकता, न कोई श्रमण, न कोई देव, न मार, न ब्रह्मा और न दुनियामें अन्य कोई। मृत्युको प्राप्त होने वाले मृत्युको प्राप्त न हो—इसके विषयमें कोई जिम्मेदारी नही ले सकता, न कोई श्रमण, न कोई देव, न मार, न ब्रह्मा और न दुनियामे अन्य कोई। जो पाप-कर्म है, जो क्लिष्ट-कर्म हैं, जो पुनर्भवके कारण होते हैं, जो दुःखद होते हैं, जिनका बुरा फल होता है, जो भविष्यमे भी जरा-मरणके कारण होते है, उनका फल न हो—इसके विषयमे कोई जिम्मेदारी नही ले सकता, न कोई श्रमण, न कोई देव, न मार, न ब्रह्मा और न दुनिया मे अन्य कोई। भिक्षुओ, इन चार बातोंके विषयमें कोई जिम्मेदारी नही ले सकता, न कोई श्रमण, न कोई ब्राह्मण, न कोई देव, न मार, न ब्रह्मा और न दुनियामें अन्य कोई।

एक समय भगवान् राजगृहमे विहार करते थे। वेळुवनके कलन्दक-निवापमें। उस समय मगधका महामात्य वर्षकार ब्राह्मण जहाँ भगवान थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवान्के साथ कुशल-क्षेमकी बातचीत की। कुशल-क्षेम पूछ चुकनेपर मगधके महामात्य वर्षकार ब्राह्मणने भगवानसे यह कहा—हे गौतम! मेरा यह मत है, यह दृष्टि है कि जो कोई अपनी देखी हुई बात कहता है कि मैंने ऐसा देखा तो इसमें कोई दोष नही, जो कोई अपनी सुनी हुई बात कहता है कि मैंने ऐसा सुना तो उसमें कोई दोष नही, जो कोई अपनी चखी हुई, अपनी सूँघी हुई, अपनी स्पर्शकी हुई चीजके

चारेमे कहता हूँ कि मैं ने उसे चखा, उसे सूँघा, उसे स्पर्श किया तो इसमे कोई दोप नही। जो कोई अपनी जानी हुई वातके विषयमे कहता है कि मैंने ऐसा जाना तो उसमे कोई दोष नही। (भगवान्ने कहा)— "ब्राह्मण! जो देखा जाय वह सब कहा ही जाय, मैं यह भी नही कहता, वह सव नही ही कहा जाय, मैं यह भी नही कहता। ब्राह्मण! जो सुना जाय वह सब कहा ही जाय, मैं यह भी नही कहता, वह सब नही ही कहा जाय, मैं यह भी नही कहता। ब्राह्मण! जो चखा जाय, जो सूँघा जाय, जो छुआ जाय वह सब कहा ही जाय, मैं यह भी नही कहता, वह सब नही ही कहा जाय, मैं यह भी नही कहता। ब्राह्मण! जो जाना जाय, वह सव कहा ही जाय, मैं यह भी न कहता, वह सब नही ही कहा जाय, मैं यह भी नही कहता। ब्राह्मण! जिस देखी हुई वातके कहनेसे अशुभ-वातोमे वृद्धि हो, शुभ-वातोकी हानि हो, ऐसी देखी हुई बात नही कही जानी चाहिये—यह कहता हूँ। जिस देखी हुई वातके कहनेसे अशुभ-वातोकी हानि हो, शुभ-वातोकी वृद्धि हो, ऐसी देखी हुई बात कही ही जानी चाहिये—यह कहता हूँ। ब्राह्मण! जिस सुनी हुई वातके कहनेसे अशुभ-वातोमे वृद्धि हो, शुभ-वातोकी हानि हो, ऐसी सुनी हुई वात नही कही जानी चाहिये—यह कहता हूँ। जिस सुनी हुई वातके कहे जानेसे अशुभ-वातोकी हानि हो, शुभ-वातोकी वृद्धि हो, ऐसी सुनी हुई वात कही ही जानी चाहिये—यह कहता हूँ। ब्राह्मण! जिस चखी, सूँघी छुई वातके कहनेसे अशुभ वातोमें वृद्धि हो, शुभ-वातोकी हानि हो, ऐसी चखी, सूँघी, छुई बात नही ही कहनी चाहिये—यह कहता हूँ। जिस चखी, सूँघी, छुई वातके कहनेसे अशुभ-वातोकी हानि हो, शुभ-वातोमे वृद्धि हो ऐसी चखी, सूँघी, छुई वात नही ही कहनी चाहिये—यह कहता हूँ। ब्राह्मण! जिस ज्ञात वातके कहनेसे अशुभ-वातोमे वृद्धि हो, शुभ वातोकी हानि हो—ऐसी जानी हुई वात नही ही कही जानी चाहिये—यह कहता हूँ। जिस ज्ञात वातके कहनेसे, अशुभ-वातोकी हानि हो, शुभ-वातोकी वृद्धि हो—ऐसी ज्ञात वात कही ही जानी चाहिये—यह कहता हूँ। तव मगधका महामात्य वर्षकार ब्राह्मण भगवानके कथनका अभिनन्दनकर उठकर चला गया।

तव जानुश्रोणी ब्राह्मण जहाँ भगवान थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवानके साथ कुशल-क्षेम सम्वन्धी वार्ता की। कुशल-क्षेम पूछ चुकनेपर जानु-श्रोणी ब्राह्मणने भगवान्को यह कहा—"हे गौतम! मेरा यह मत है, मेरी यह दृष्टि है कि ऐसा कोई मरण-धर्मी नही है जो मरनेसे भयभीत न होता हो, मरनेसे सत्रस्त न होता हो।" "ब्राह्मण! ऐसा भी आदमी होता है जो मरण-धर्मी होता हुआ मरनेसे डरता है,

मरनेसे सत्रस्त होता है। ब्राह्मण ! ऐसा भी आदमी होता है जो मरण-धर्मी होता हुआ मरनेसे नही डरता है, मरनेसे सत्रस्त नही होता है। ब्राह्मण ! वह कौन-सा आदमी होता है, जो मरण-धर्मी होता हुआ मरनेसे डरता है, मरनेसे सत्रस्त होता है ? ब्राह्मण ! एक आदमी होता है जो काम-भोगोके प्रति वीत-राग नही होता, वीत-छन्द नही होता, वीत-प्रेम नही होता, वीत-पिपासा नही होता, वीत-परिदाह नही होता, वीत-तृष्णा नही होता। उसको कोई भयानक रोग हो जाता है। भयानक बीमारीकी अवस्थामें उसके मनमे होता है—'मेरे प्रिय काम-भोग मुझे छोड देगे। मुझे अपने प्रिय काम-भोगोको छोड देना होगा।' वह चिन्ता करता है, क्लेशको प्राप्त होता है, रोता पीटता है, छाती पीटता है, बेहोश हो जाता है। ब्राह्मण ! ऐसा आदमी मरण-धर्मी होता हुआ मरनेसे डरता है, मरनेसे सत्रस्त होता है।

"ब्राह्मण ! एक आदमी होता है जो शरीरके प्रति वीत-राग नही होता, वीत-छन्द नही होता, वीत-प्रेम नही होता, वीत-पिपासा नही होता, वीत-परिदाह नही होता, वीत-तृष्णा नही होता। उसको कोई भयानक रोग हो जाता है। भयानक बीमारीकी अवस्थामें उसके मनमे होता है—'मेरा प्रिय शरीर मुझे छोड देगा। मुझे अपने प्रिय शरीरको छोड देना होगा।' वह चिन्ता करता है, क्लेशको प्राप्त होता है, रोता पीटता है, छाती पीटता है, बेहोश हो जाता है। ब्राह्मण ! ऐसा आदमी मरण-धर्मी होता हुआ मरनेसे डरता है, मरनेसे सत्रस्त होता है।

फिर ब्राह्मण ! एक आदमी होता है जिसने कल्याण-कर्म नही किया रहता, कुशल-कर्म नही किया रहता, भयभीतोका त्राण (=शुभ-कर्म) नही किया रहता, पाप कर्म किया रहता है, रौद्र कर्म किया रहता है, अपराध किया रहता है। उसको कोई भयानक रोग हो जाता है। भयानक बीमारीकी अवस्थामे उसके मनमे होता है—मैंने कल्याण-कर्म नही किया, कुशल-कर्म नही किया, भय-भीतोका त्राण (=शुभ-कर्म) नही किया, पाप-कर्म किया, रौद्र-कर्म किया, अपराध किया। कल्याण-कर्म नही करने वालोकी, कुशल-कर्म नही करने वालोकी, भयभीतोका त्राण नही करने वालोकी, पाप कर्म करने वालोकी, रौद्र कर्म करने वालोकी, अपराध करने वालोकी जो दुर्गति होती है, मैं भी मरनेपर उस दुर्गतिको प्राप्त होऊँगा। वह चिन्ता करता है, क्लेशको प्राप्त होता है, रोता-पीटता है, छाती पीटता है, बेहोश हो जाता है। ब्राह्मण ! ऐसा आदमी मरण धर्मी होता हुआ, मरनेसे डरता है, मरनेसे सत्रस्त होता है।

फिर ब्राह्मण ! एक आदमी शका-शील होता है, विचिकित्सा-युक्त होता है, सद्धर्मके बारेमें सन्देह-युक्त। उसको कोई भयानक रोग होता है। भयानक

बीमारीकी अवस्थामे उसके मनमे होता है, मै शकाशील हूँ, विचिकित्सा-युक्त हूँ और सद्धर्मके बारेमे सदिग्ध हूँ। वह चिन्ता करता है, क्लेशको प्राप्त होता है, रोता-पीटता है, छाती पीटता है, बेहोश हो जाता है। ब्राह्मण! ऐसा आदमी मरण-धर्मी होता हुआ मरनेसे डरता है, मरनेसे सत्रस्त होता है। ब्राह्मण! ये चार प्रकारके प्राणी है जो मरण-धर्मी होते हुये, मरनेसे डरते है, मरनेसे सत्रस्त होते है।

ब्राह्मण! वह कौन-सा आदमी होता है, जो मरण-धर्मी होता हुआ मरनेसे नही डरता, मरनेसे सत्रस्त नही होता है? ब्राह्मण! एक आदमी होता है जो काम-भोगोके प्रति वीत-राग होता है, वीत-छन्द होता है, वीत-प्रेम होता है, वीत-पिपासा होता है, वीत-परिदाह होता है, वीत-तृष्णा होता है। उसको कोई भयानक रोग हो जाता है। भयानक बीमारीकी अवस्थामे उसके मनमे यह नही होता है—'मेरे प्रिय काम-भोग मुझे छोड देगे। मुझे अपने प्रिय काम-भोगोको छोड देना होगा।' वह न चिन्ता करता है, न क्लेशको प्राप्त होता है, न रोता-पीटता है, न छाती पीटता है, न बेहोश होता है। ब्राह्मण! ऐसा आदमी मरण-धर्मी होता हुआ भी, न मरनेसे डरता है, न मरनेसे सत्रस्त होता है।

ब्राह्मण! एक आदमी होता है जो शरीरके प्रति वीत-राग होता है, वीत-छन्द होता है, वीत-प्रेम होता है, वीत-पिपासा होता है, वीत-परिदाह होता है, वीत-तृष्णा होता है। उसको कोई भयानक रोग हो जाता है। भयानक बीमारीकी अवस्थामे उसके मनमें यह नही होता 'मेरा प्रिय शरीर मुझे छोड देगा। मुझे अपने प्रिय शरीरको छोड देना होगा।' वह न चिन्ता करता है, न क्लेशको प्राप्त होता है, न रोता-पीटता है, न छाती पीटता है, न बेहोश होता है। ब्राह्मण! ऐसा आदमी मरण-धर्मी होता हुआ भी न मरनेमे डरता है, न मरनेसे सत्रस्त होता है।

फिर ब्राह्मण! एक आदमी होता है, जिसने कल्याण-धर्म किया रहता है, कुशल-धर्म किया रहता है, भय-भीतोका त्राण (=शुभ कर्म) किया रहता है, पाप-कर्म नही किया रहता, रौद्र कर्म नही किया रहता, अपराध नही किया रहता। उसको कोई भयानक रोग हो जाता है। भयानक बीमारीकी अवस्थामे उसके मनमे होता है—'मैंने कल्याण कर्म किया, कुशल-कर्म किया, भयभीतोका त्राण (=शुभ-कर्म) किया, पाप-कर्म नही किया, रौद्र-कर्म नही किया, अपराध नही किया।' कल्याण-कर्म करने वालोकी कुशल-कर्म करने वालोकी, भयभीतोका त्राण (=शुभ-कर्म) करने वालोकी, पाप कर्म न करने वालोकी, रौद्र कर्म न करने वालोकी, अपराध न करने वालोकी जो सद्गति होती है, मै भी मरनेपर उस सद्गतिको प्राप्त होऊँगा।'

वह न चिन्ता करता है, न क्लेशको प्राप्त होता है, न रोता पीटता है, न छाती-पीटता है, न वेहोश हो जाता है। ब्राह्मण! ऐसा आदमी मरण-धर्मी होता हुआ न मरनेसे डरता है, न मरनेसे सत्रस्त होता है।

फिर ब्राह्मण! एक आदमी शका-शील नही होता है, विचिकित्सा-युक्त नही होता है, सद्धर्मके बारेमें सन्दिग्ध नही होता है। उसको कोई भयानक रोग हो जाता है। भयानक बीमारीकी अवस्थामे उसके मनमें होता है—मै शका-शील नही हूँ, विचिकित्सा-रहित हूँ और सद्धर्मके बारेमें असदिग्ध हूँ। वह न चिन्ता करता है, न क्लेशको प्राप्त होता है, न रोता-पीटता है, न छाती-पीटता है, न वेहोश हो जाता है। ब्राह्मण! ऐसा आदमी मरण-धर्मी होता हुआ न मरनेसे डरता है, न मरनेसे सत्रस्त होता है। ब्राह्मण! ये चार प्रकारके प्राणी है जो मरण-धर्मी होते हुए न मरनेसे डरते है, न मरनेसे सत्रस्त होते है।" "गौतम! बहुत सुन्दर है आप गौतम प्राण रहने तक मुझे अपना शरणागत उपासक शिष्य समझें।"

एक समय भगवान राजगृहमें गृध्रकूट पर्वतपर विहार कर रहे थे। उस समय बहुतसे प्रसिद्ध प्रसिद्ध परिव्राजक सर्पिनिकाके तटपर स्थित परिव्राजकाराममें निवास करते थे, जैसे अन्नभार, वरधर तथा सकलुदायि परिव्राजक। और भी प्रसिद्ध प्रसिद्ध परिव्राजक।

तव भगवान् शामके समय ध्यान-मग्न रहनेके अनन्तर जहाँ सर्पिनिकाके तटपर परिव्राजकाराम था, वहाँ पहुँचे। उस समय वहाँ इकट्ठे हुए उन अन्यमताव-लम्वी परिव्राजकोमें यह बातचीत चली—ये ब्राह्मण-सत्य है, ये ब्राह्मण-सत्य है। तव भगवान् जहाँ वे परिव्राजक थे, वहाँ पहुँचे। जाकर विछे आसनपर बैठे। बैठकर भगवान्ने उन परिव्राजकोसे पूछा—"परिव्राजको! इस समय बैठे क्या बातचीत कर रहे थे? इस समय तुम्हारी क्या बातचीत चल रही थी?" "हे गौतम! हम जो यहाँ इकट्ठे हुए है, एकत्रित हुए है, हमारे बीच यह कथा उत्पन्न हुई है, यह बात-चीत चली है—'ये ब्राह्मण-सत्य है, ये ब्राह्मण-सत्य है।" "ब्राह्मण! ये चार ब्राह्मण-सत्य है जिनको मैंने स्वय जानकर साक्षात्कर घोपित किया है। कौनसे चार? हे परिव्राजको! ब्राह्मणने कहा है—सभी प्राणी अवध्य है। ऐसा कहते हुए ब्राह्मणने सत्य कहा है। झूठ नही कहा है। ऐसा कहनेके कारण उसके मनमे न अपने 'श्रमण' होनेका मान है, न 'ब्राह्मण' होनेका मान है, न (किसीसे) श्रेष्ठ होनेका मान है, न (किसीके) सदृश होनेका मान है, न (किसीसे) हीन होनेका मान है। केवल जो यथार्थ है उसे जानकर वह प्राणियोंके प्रति दया, अनुकम्पा करता है।

फिर परिव्राजको! ब्राह्मणने ऐसा कहा है—सभी काम-भोग अनित्य है, दुःख है, परिवर्तन-शील है। ऐसा कहते हुए ब्राह्मणने सत्य कहा है। झूठ नही कहा है। ऐसा कहनेके कारण उसके मनमे न अपने 'श्रमण' होनेका मान है, न 'ब्राह्मण' होनेका मान है, न (किसीसे) श्रेष्ठ होनेका मान है, न (किसीके) सदृश होनेका मान है, न (किसीसे) हीन होनेका मान है। केवल जो यथार्थ है, उसे जानकर वह काम-भोगोंके निर्वेद, वैराग्य तथा निरोधमे प्रतिपन्न होता है।

फिर परिव्राजको! ब्राह्मणने ऐसा कहा है—सभी भव अनित्य है, दुःख है, परिवर्तन-शील है। ऐसा कहते हुए ब्राह्मणने सत्य कहा है। झूठ नही कहा है। ऐसा कहनेके कारण उसके मनमे न अपने 'श्रमण' होनेका मान है, न 'ब्राह्मण' होनेका मान है, न (किसीसे) श्रेष्ठ होनेका मान है, न (किसीके) सदृश होनेका मान है। केवल जो यथार्थ है उसे जानकर वह भवोके निर्वेद, वैराग्य तथा निरोध मे प्रतिपन्न होता है।

फिर परिव्राजको! ब्राह्मणने ऐसा कहा है—न तो मै कही, किसीका, किसीमे हूँ और न मेरा कोई कही, कुछ है। ऐसा कहते हुए ब्राह्मणने सत्य कहा है, झूठ नही कहा है। ऐसा कहनेके कारण उसके मनमे न अपने 'श्रमण' होनेका मान है, न 'ब्राह्मण' होनेका मान है, न (किसीसे) श्रेष्ठ होनेका मान है, न (किसीके) सदृश होनेका मान है। केवल जो यथार्थ है उसे जानकर वह अकिंचनताके मार्गपर ही प्रतिपन्न होता है। हे परिव्राजको! ये चार ब्राह्मण सत्य है, जिन्हे मैने स्वयं जानकर साक्षात्कार घोषित किया है।

तब एक भिक्षु जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवान्को प्रणाम कर एक ओर बैठा। एक ओर बैठे हुए उस भिक्षुने भगवान्से पूछा—"भन्ते! यह संसार किसके द्वारा ले जाया जाता है? किसके द्वारा घसीटा जाता है? किसके उत्पन्न होनेपर (उसके) वशीभूत हो जाता है?" भिक्षु! यह संसार चित्तके द्वारा ले जाया जाता है। चित्तके द्वारा घसीटा जाता है, चित्तके उत्पन्न होनेपर उसके वशीभूत हो जाता है। 'भन्ते! ठीक है' कह उस भिक्षुने भगवान्के कथनका अभिनन्दन कर, अनुमोदन कर आगे फिर पूछा—"भन्ते! बहु-श्रुत धर्म-धर, बहु-श्रुत धर्म-धर कहा जाता है। कौनसे गुण होनेसे कोई बहु-श्रुत धर्म-धर होता है?"

"भिक्षु। बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। तेरी जिज्ञासा ठीक है। तेरी सूझ अच्छी है। तेरा प्रश्न कल्याणकर है। तू यही पूछता है न कि भन्ते! बहु-श्रुत धर्म-धर बहु-श्रुत धर्मधर कहा जाता है। कौन-से गुण होनेसे कोई बहु-श्रुत धर्म-धर होता

है ? भिक्षु ! मैंने बहुतसे धर्मोका उपदेश दिया है—सूत्रोंका, गेय्योंका, वैयाकरणोंका, गाथाओका, उदानोंका, इति-उक्तोंका, जातकोंका, अद्भुत-धर्मोका तथा वेदल्लोंका। यदि भिक्षु चार पदवाली किसी गाथाके भी अर्थको जानकर, धर्मको समझकर, धर्मानुसार आचरण करने वाला होता है तो वह बहु-श्रुत धर्मधर कहलानेके योग्य है।" 'भन्ते ! ठीक है', कह उस भिक्षुने भगवान्के कथनका अभिनन्दन कर, अनुमोदन कर, आगे फिर पूछा—'श्रुतवान् बीधनेवाली प्रज्ञा वाला, श्रुतवान् बीधनेवाली प्रज्ञा वाला कहा जाता है। कौनसे गुण होनेसे कोई श्रुतवान् बीधने वाली प्रज्ञा वाला कहा जाता है ?" "भिक्षु ! बहुत अच्छा बहुत अच्छा। तेरी जिज्ञासा ठीक है। तेरी सूझ अच्छी है। तेरा प्रश्न कल्याणकर है। तू यही पूछता है न कि भन्ते ! श्रुतवान् बीधनेवाली प्रज्ञा वाला, श्रुतवान् बीधनेवाली प्रज्ञावाला कहा जाता है। कौन से गुण होनेसे कोई श्रुतवान् बीधनेवाली प्रज्ञा वाला होता है ? भिक्षु ! एक भिक्षुने यह सुना होता है कि यह दुःख है, वह प्रज्ञासे इस कथनके अर्थको गहराईके साथ समझता है, यह सुना होता है कि यह दुःखका समुदय है, वह प्रज्ञासे इस कथनके अर्थको गहराईके साथ समझता है, यह सुना होता है कि यह दुःख निरोध है, वह प्रज्ञासे इस कथनके अर्थको गहराईके साथ समझता है, यह सुना होता है कि यह दुःख निरोध की ओर ले जाने वाला मार्ग है, वह प्रज्ञासे इस कथनके अर्थको गहराईके साथ समझता है। इस प्रकार भिक्षु श्रुतवान् बीधनेवाली प्रज्ञावाला होता है।" 'भन्ते ! ठीक है', कह उस भिक्षुने भगवान्के कथनका अभिनन्दन कर, अनुमोदन कर आगे फिर पूछा—"भन्ते ! पण्डित महाप्रज्ञावान पण्डित महाप्रज्ञावान् कहा जाता है। कौनसे गुण होनेसे कोई पण्डित महा प्रज्ञावान कहलाता है ?" "भिक्षु ! बहुत अच्छा ! बहुत अच्छा ! तेरी जिज्ञासा ठीक है। तेरी सूझ अच्छी है। तेरा प्रश्न कल्याणकर है। तू यही पूछता है न कि भन्ते ! पण्डित महाप्रज्ञावान् पण्डित महाप्रज्ञावान् कहा जाता है। कौनसे गुण होनेसे कोई पण्डित महाप्रज्ञावान होता है ? भिक्षु ! जो पण्डित महाप्रज्ञावान् होता है वह कोई ऐसी बात नही सोचता जो उसके लिये अहितकर हो, वह कोई ऐसी बात नही सोचता जो दूसरेके लिये अहितकर हो, वह कोई ऐसी बात नही सोचता जो दोनोके लिये अहितकर हो। वह जब सोचता है तो आत्म-हित, परहित, दोनोका हित, सभी लोगोका हित ही सोचता है। भिक्षु ! इस प्रकार पण्डित महाप्रज्ञावान् होता है।

एक समय भगवान् राजगृहके वेळुवनमे कलन्दनिवापमें विहार करते थे। उस समय मगध महामात्य वर्षकार ब्राह्मण जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर

भगवान्का कुशल-क्षेम पूछा। कुशल-क्षेमकी वातचीत समाप्त हो चकनेपर एक ओर बैठा। एक और बैठे हुए मगध महामात्य वर्षकार ब्राह्मणने भगवान्को यह कहा— "हे गौतम! क्या एक असत्पुरुष दूसरे असत्पुरुपको पहचान सकता है कि यह असत्पुरुष है?" "ब्राह्मण! इसकी सम्भावना नही है, इसके लिये कोई अवकाश नही है कि एक असत्पुरुष दूसरे असत्पुरुपको पहचान ले कि यह असत्पुरुप है।" "हे गौतम! तो क्या एक असत्पुरुष दूमरे सत्पुरुषको पहचान सकता है कि यह सत्पुरुप है?" "ब्राह्मण! इसकी सम्भावना नही है, इसके लिये कोई अवकाग नही है कि एक असत्पुरुष दूसरे सत्पुरुषको पहचाना ले कि यह सत्पुरुप है।" "हे गौतम! तो क्या एक सत्पुरुष दूसरे सत्पुरुषको पहचान सकता है कि यह सत्पुरुष है?" "ब्राह्मण! इसकी सम्भावना है, इसके लिये अवकाग है कि एक सत्पुरुष दूसरे सत्पुरुषको पहचान ले कि यह सत्पुरुप है।" "हे गौतम! तो क्या एक सत्पुरुष दूसरे असत्पुरुपको पहचान सकता है, कि यह असत्पुरुष है?" "ब्राह्मण! इसकी सम्भावना है, इसके लिये अवकाश है कि एक सत्पुरुष दूसरे असत्पुरुषको पहचान ले कि यह असत्पुरुष है।" "भो गौतम! आश्चर्यकर है। भो गौतम! अद्भुत है आपका यह कहना कि ब्राह्मण! इसकी सम्भावना नही है, इसके लिये कोई अवकाश नही है कि एक असत्पुरुष दूसरे असत्पुरुपको पहचान ले कि यह असत्पुरुप है, और हे ब्राह्मण इसकी भी सम्भावना नही है, इसके लिये भी अवकाश नही है कि एक असत्पुरुष दूसरे सत्पुरुपको पहचान ले कि यह असत्पुरुप है, और हे ब्राह्मण! इसकी सम्भावना है कि एक सत्पुरुष दूसरे सत्पुरुषको पहचान ले कि यह सत्पुरुष है, और हे ब्राह्मण! इसकी भी सम्भावना है कि एक सत्पुरुष दूसरे असत्पुरुषको पहचान ले कि यह असत्पुरुप है।"

हे गौतम! एक वार तोदेय्य ब्राह्मणकी परिषद् परनिन्दामें लगी हुई थी—यह राजा मूर्ख है, यह राजा एळेय्य (भेड) है, जो श्रमण रामपुत्रके प्रति श्रद्धावान है। यह श्रमण रामपुत्रके प्रति ऐसा विनम्रताका वर्ताव करता है—अभिवादन करता है, प्रत्युपस्थान करता है, हाथ जोडता है तथा समीचीन कर्म करता है। ये एळेय्य राजाके सेवक भी मूर्ख है, ये यमळ, मोग्गल्ल, उग्ग, नाविन्दकी, गन्धव्व तथा अग्गिवेस। ये भी श्रमण रामपुत्रके प्रति श्रद्धावान है। ये श्रमण रामपुत्रके प्रति ऐसा विनम्रताका वर्ताव करते है—अभिवादन करते है, प्रत्युपस्थान करते है, हाथ जोडना करते है, समीचीन कर्म करते है। तव अपनी परिषदके लोगोको तोदेय्य ब्राह्मणने इस प्रकार समझाया—"आप लोग क्या मानते है कि एळेय्य राजा, जो करनीय है, जो कथनीय है, उसका अर्थ जाननेमे पडित है?" "हाँ, हम जानते है कि एळेय्य राजा, जो करणीय

है, जो कथनीय है उसका अर्थ जाननेमें पण्डित है। क्योकि श्रमण रामपुत्र, जो करनीय है तथा जो कथनीय है, उसके विषयमें पण्डित एळेय्य राजाकी अपेक्षा अधिक पण्डित है, इसीलिये एळेय्य राजा श्रमण पुत्रके प्रति श्रद्धावान् है, इसीलिये वह श्रमण राम-पुत्रके प्रति ऐसा विनम्रताका वर्ताव करता है—अभिवादन करता है, प्रत्युपस्थान करता है, हाथ जोडता है, तथा समीचीन कर्म करता है।" "आप लोग क्या मानते है कि एळेय्य राजाके जो सेवक है, जो करनीय है, जो कथनीय है उसका अर्थ जाननेमे पण्डित है ?" "हाँ, हम मानते है कि एळेय्य राजाके जो सेवक है यमक, मोग्गल्ल, उग्ग, नाविन्दकी, गन्धब्ब, अग्गिवेस्स जो करनीय है, जो कथनीय है उसका अर्थ जाननेमें पण्डित है। क्योकि श्रमण रामपुत्र, जो करनीय है तथा जो कथनीय है उसके विषयमें पण्डित एळेय्य राजाके सेवकोकी अपेक्षा अधिक पण्डित है, इसीलिये वे सेवक श्रमण रामपुत्रके प्रति ऐसा विनम्रताका वर्ताव करते है—अभिवादन करते है, प्रत्युपस्थान करते है, हाथ जोडते है तथा समीचीन कर्म करते है।" हे गौतम ! आश्चर्यकर है। हे गौतम। अद्भुत है आपका यह कहना कि ब्राह्मण ! इसकी सम्भावना नही है, इसके लिये कोई अवकाश नही है कि एक असत्पुरुष दूसरे असत्पुरुषको पहचान ले कि यह असत्पुरुष है, और हे ब्राह्मण ! इसकी भी सम्भावना नहीं है, इसके लिये भी अवकाश नही है कि एक असत्पुरुष दूसरे सत्पुरुषको पहचान ले कि यह सत्पुरुष है; और हे ब्राह्मण ! इसकी सम्भावना है कि एक सत्पुरुष दूसरे सत्पुरुष-को पहचान ले कि यह सत्पुरुष है, और हे ब्राह्मण ! इसकी भी सम्भावना है कि एक सत्पुरुष दूसरे असत्पुरुषको पहचान ले कि यह असत्पुरुष है। अच्छा गौतम ! अव हमें अनुमति दे, हमें बहुतसे काम है, बहुतसे कृत्य है। "ब्राह्मण ! अव तू जिसका समय समझे।" तब मगधका महामात्य वर्षकार ब्राह्मण भगवान्के भाषणका अभिनन्दन कर, समर्थन कर, उठकर चला गया।

एक समय भगवान राजगृहमें गृध्रकूट पर्वतपर विहार कर रहे थे। तव मिण्डिका-पुत्र उपक जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवान्को प्रणाम कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए मिण्डिका-पुत्र उपकने भगवान्से यह कहा "भन्ते ! मेरा यह मत है, मेरी यह दृष्टि है कि जो दूसरोको दोषी ठहराता है, वह दूसरोको दोषी ठहराता हुआ स्वय सर्वथा निर्दोष नही ठहरता, निर्दोष न होता हुआ निन्दनीय होता है, दोषका भाजन होता है।"

"उपक ! यदि यह तेरा मत है, यदि तेरी यह दृष्टि है कि जो दूसरोको दोषी ठहराता है, वह दूसरोको दोषी ठहराता हुआ स्वय सर्वथा निर्दोष नही ठहरता,

निर्दोष न होता हुआ निन्दनीय होता है, दोषका भाजन होता है। उपक! यदि तू कहता है कि जो दूसरोको दोषी ठहराता है, वह दूसरोको दोषी ठहराता हुआ स्वय सर्वथा निर्दोष नही ठहरता, निर्दोष न होता हुआ निन्दनीय होता है, दोषका भाजन होता ह, तो उपक! तू स्वय दूसरोको दोषी ठहराता है, इसलिये दूसरोको दोषी ठहराता हुआ तू स्वय सर्वथा निर्दोष नही ठहरता, निर्दोष न होता हुआ तू निन्दनीय होता है। दोषका भाजन होता है।"

"भन्ते! जैसे किसी डूबने वालेके सिर निकालते ही उसे वडे वन्धनमे वाँध दिया जाय, भन्ते! ठीक इसी तरह आपने सिर निकालते ही मुझे वडे वाद-वन्धनसे वाँध दिया।"

"उपक! मैंने यह अकुशल है, इसकी देशना की है, इसमें असीम पद है, असीम अक्षर हैं और असीम है तथागत की धर्म-देशना। मैंने इस अकुशलका त्याग करना चाहिये, इसकी देशना की है, इसमें असीम पद है, असीम अक्षर है और असीम है तथागतकी धर्म-देशना, मैंने यह कुशल है, इसकी देशना की है, इसमे असीम पदहैं असीम अक्षर है और असीम है, तथागत की धर्म-देशना, मैंने यह कुशल है, इसका अभ्यास करना चाहिये, इसकी देशना की है, इसमें असीम पद है, असीम अक्षर है और असीम है तथागतकी धर्म-देशना।

तव मिण्डिका-पुत्र उपक भगवान्‌केभाषण का अभिनन्दन कर, अनुमोदन कर, आसनसे उठकर भगवान्‌को अभिवादन तथा प्रदक्षिणा कर जहाँ वेदेहिपुत्र मगध-नरेश अजातशत्रु था, वहाँ पहुँचा। जाकर भगवान्‌के साथ जितनी भी वातचीत हुई थी वह सव वेदेहिपुत्र मगध-नरेश, अजातशत्रुको सुना दी। ऐसा कहनेपर वेदेहिपुत्र मगध-नरेश अजातशत्रु क्रोधित हुआ, असन्तुष्ट हुआ—'यह लोणियोंके गाँवमें रहने वाला लडका गुणोका ध्वस करने वाला है, यह मुखर है, यह प्रगल्भ है, यह उन अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध से वाद करना चाहता है। उपक! तू जा। मेरी आँखसे ओझल हो जा।'

भिक्षुओ, ये चार साक्षात् करणीय धर्म है। कौनसे चार? भिक्षुओ, एक तो 'धर्म' ऐसा है जिसका (चित्त-) शरीरसे साक्षात् किया जाता है, दूसरा धर्म-ऐसा है जिसका स्मृतिसे साक्षात् किया जाता है, तीसरा धर्म' ऐसा है जिसका (दिव्य-) चक्षुसे साक्षात् किया जाता है और चौथा 'धर्म' ऐसा है जिसका प्रज्ञासे साक्षात् किया जाता है। भिक्षुओ, कौनसे धर्म है जो (चित्त-) शरीरसे साक्षात् किये जाते है? भिक्षुओ, आठ प्रकारके विमोक्ष है जो (चित्त-) शरीरसे साक्षात् किये जाते है।

'भिक्षुओ, कौनसे धर्म' हैं जो स्मृतिसे साक्षात् किये जाते हैं। भिक्षुओ, पूर्वजन्म-अनुस्मृति स्मृतिसे साक्षात् की जाती है। भिक्षुओ, कौनसे 'धर्म' हैं जो (दिव्य-) चक्षुसे साक्षात किये जाते हैं? भिक्षुओ, प्राणियोकी उत्पत्ति-मरण (दिव्य-) चक्षुसे साक्षात् की जाती है। भिक्षुओ, कौनमे 'धर्म' है जो 'प्रज्ञा' से साक्षात् किये जाते ह? भिक्षुओ, आस्रवोका क्षय प्रज्ञासे साक्षात् किया जाता है।

एक समय भगवान् श्रावस्तीके मिगारमाताप्रासाद पूर्वराममे विहार करते थे। उस समय उपोसथका दिन होनेसे भगवान् भिक्षु-सघमे घिरे हुए बैठे थे। तब भगवान्ने भिक्षु-सघको चुप-चाप बैठे देख भिक्षुओको आमन्त्रित किया—भिक्षुओ, यह परिषद नि शब्द है, भिक्षुओ, यह परिषद शान्त है, यह शुद्ध है, यह (शील रूपी) वैसे सारमे प्रतिष्ठित है। भिक्षुओ, यह भिक्षुसघ वैमी परिषद् है जैमी परिषद्का वैसी दुनियामे दिखाई देना दुर्लभ है। भिक्षुओ, यह भिक्षु-सघ वैसी परिषद् है जो कि पूज्य है, स्वागतार्ह है, दक्षिणा देने योग्य है, हाथ जोडने योग्य है, लोगोके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र है। भिक्षुओ, यह भिक्षु-सघ भी वैसा है और यह परिषद् भी वैसी है जैसी परिषद् को थोडा देनेसे भी वहुत (फल) होता है और अधिक देनेसे अधिकतर होता है। भिक्षुओ, यह भिक्षु-सघ भी वैसा है और यह परिषद् भी वैसी है जैसी परिषद्का दर्शन करनेके लिये पाथेय लेकर कई योजन तक चलकर जाना पडे, तो भी योग्य है। भिक्षुओ, ऐसा है यह भिक्षु सघ! भिक्षुओ, इस भिक्षु सघमे देवत्व-प्राप्त भिक्षु है। भिक्षुओ, इस भिक्षु सघमे ब्रह्म-प्राप्त भिक्षु है। भिक्षुओ, इस भिक्षु सघमें स्थिरता-प्राप्त भिक्षु है। भिक्षुओ, इस भिक्षु-सघमे आर्यत्व-प्राप्त भिक्षु है। भिक्षुओ, भिक्षु देवत्व-प्राप्त कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु काम-वितर्कसे रहित हो प्रथम-ध्यान प्राप्त कर विहार करता है दूसरा ध्यान तीसरा ध्यान चौथा ध्यान प्राप्त कर विहार करता है। भिक्षुओ, भिक्षु इस प्रकार देवत्व-प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु ब्रह्म-प्राप्त कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु मैत्री-युक्त चित्तसे एक दिशाको व्याप्त कर विहार करता है, दूसरी दिशा वैसे ही तीसरी दिशा वैसे ही चौथी दिशा। वह ऊपर, नीचे, तिर्छे, हर जगह, हर प्रकारसे सारेके सारे लोकिके प्रति, विपुल, महान सीमा-रहित, निर्वैर, निष्क्रोध मैत्री-चित्त वाला हो विहार करता है। वह करुणा-पूर्ण चित्त वाला- मुदिता युक्त चित्त वाला, उपेक्षायुक्त चित्त वाला हो एक दिशाको व्याप्त कर विहार करता है, दूसरी दिशा वैसे ही तीसरी दिशा वैसे ही चौथी दिशा। वह ऊपर, नीचे, तिर्छे, हर जगह, हर प्रकारसे, सारेके सारे लोकके प्रति, विपुल, महान्, सीमा-

रहित, निर्वैर, निष्क्रोध, उपेक्षायुक्त चित्तसे विहार करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु ब्रह्म-प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु स्थिरता-प्राप्त कैसे होता है ? भिक्षुओ, सब रूप-सज्ञाओको पार कर प्रतिघ-सज्ञाओको अस्त कर, नानात्व सज्ञाको मनसे निकाल 'आकाश अनन्त है' करके आकाशानन्त्यायतनको प्राप्त हो विचरता है। आकाशानन्त्यायतनको पार कर 'विज्ञान अनन्त है' करके विज्ञानन्त्यायतनको प्राप्त हो विहार करता है। 'विज्ञान-न्त्यायतनको पार कर 'कुछ नही है' करके आकिञ्चनन्यायतनको प्राप्त हो विहार करता है। आकिंचन्यायतनको पारकर 'न सज्ञा और न असज्ञा आयतन' को प्राप्त कर विहार करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार, भिक्षु स्थिरता-प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु किस प्रकार आर्यत्व-प्राप्त होता है ? भिक्षुओ, भिक्षु यह दु ख है इसे भली प्रकार जानता है यह दु खनिरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, इसे भली प्रकार जानता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु आर्यत्व-प्राप्त होता है।

(५) महावर्ग

भिक्षुओ, जो धर्म कानसे सुने जाते हैं, वाणीसे सुपरिचित किये जाते हैं, मनसे सुविचारित रहते हैं तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये जाते हैं उससे चार शुभ परिणामोकी आशा की जा सकती है। कौनसे चार ? भिक्षुओ, एक भिक्षु धर्मका पाठ करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेयाकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्‌भुत धर्मका तथा वेदल्लका। उसके द्वारा वे धर्म कानसे सुने जाते ह, वाणीको सुपरिचित रहते हैं, मनसे सुविचारित रहते हैं तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये रहते है। वह मूढ-स्मृति हो शरीर त्याग करता है तो किसी देव-योगिनमे जन्म ग्रहण करता है,। वहाँ रहते हुए सुख-पूर्वक धर्म-वचन प्रकट होते है। बुद्धवचनानु-स्मृतिकी उत्पत्ति बहुत बडी बात है। भिक्षुओ, वह भिक्षु शीघ्र ही विशेष (= निर्वाण) को प्राप्त करने वाला होता है। भिक्षुओ, जो धर्म कानसे सुने जाते है, वाणीसे सुपरिचित किये जाते है, मनसे सुविचारित रहते है तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये जाते है उससे इस प्रथम शुभ-परिणामकी आशा की जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, धर्मका पाठ करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्‌भुत धर्मका तथा वेदल्लका। उसके द्वारा वे धर्म कानसे सुने जाते है, वाणीको सुपरिचित रहते है, मनसे सुविचारित रहते है तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये रहते है। वह मूढ-स्मृति हो शरीर त्याग करता है तो किसी-न-किसी देवयोनिमें जन्म ग्रहण करता है। वहाँ रहते हुए सुविधा-

पूर्वक धर्म-वचन प्रकट नही होते है। किन्तु वह भिक्षु ऋद्धिमान होनेके कारण, चित्त-वशी होनेके कारण देव-परिपद्मे धर्मकी देशना करता है। उसको ध्यान आता है कि यह वही धर्म-विनय (वुद्ध देशना) है जिसके अनुसार मैंने पहले श्रेप्ठ जीवन व्यतीत किया। भिक्षुओ, वुद्ध वचनानुस्मृतिकी उत्पत्ति वडी वात है। भिक्षुओ, वह भिक्षु शीघ्र ही विशेष (= निर्वाण) को प्राप्त करने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे कोई आदमी भेरी-शव्दसे सुपरिचित हो। रास्ते चलता हुआ वह ढोलका शव्द सुने। उसके मनमे यह भेरी शव्द है अथवा नही है, इसके विपयमें कुछ भी शका या सन्देह न हो। वह निश्चयपूर्वक यह समझ ले कि यह भेरी शव्द ही है। इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु धर्मका पाठ करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्भुत धर्मका तथा वेदल्लका। उसके द्वारा वे धर्म कानसे सुने जाते है, वाणीको सुपरिचित रहते हैं, मनसे सुविचारित रहते है, तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये रहते है। वह मूढ स्मृति हो शरीर त्याग करता है तो किसी-न-किसी देव-योनिमें जन्म ग्रहण करता है। वहाँ रहते हुए सुविधा-पूर्वक धर्म-वचन प्रकट नही होते है। किन्तु वह भिक्षु ऋद्धिमान् होनेके कारण, चित्त-वशी होनेके कारण देव-परिषद्में धर्मकी देशना करता है। उसको ध्यान आता है कि यह वही धर्म-विनय (वुद्ध-देशना) है जिसके अनुसार मैंने पहले श्रेप्ठ जीवन व्यतीत किया है। भिक्षुओ, वुद्धवचानुस्मृतिकी उत्पत्ति वडी वात है। भिक्षुओ, वह भिक्षु शीघ्र ही विशेष (= निर्वाण) को प्राप्त करने वाला होता है। भिक्षुओ, जो धर्म कानसे सुने जाते है, वाणीसे सुपरिचित किये जाते है, मनसे सुविचारित रहते हैं तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये जाते है उससे इस दूसरे शुभ-परिणामकी आशा की जा सकती है।

फिर, भिक्षुओ, भिक्षु धर्मका पाठ करता है, सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्भुत धर्मका तथा वेदल्लका। उसके द्वारा वे धर्म कानसे सुने जाते है, वाणीको सुपरिचित रहते है, मनसे सुविचारित रहते हैं तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये रहते है। वह मूढ-स्मृति हो, शरीर त्याग करता है तो किसी न किसी देव-योनिमें जन्म ग्रहण करता है। उसके वहाँ सुविधापूर्वक रहते सयम न तो धर्म-वचन प्रकट होते है, न वह भिक्षु ऋद्धिमान वा चित्त-वशी होनेके कारण देव-परिषद्मे धर्मकी देशना ही करता है, किन्तु देव-पुत्र देव परिपद्में धर्मकी देशना करता है। उसको ध्यान आता है कि यह वही धर्म-विनय (= वुद्ध देशना) है जिसके अनुसार मैंने पहले श्रेष्ठ जीवन व्यतीत किया है। भिक्षुओ, वुद्ध वचनानु-

स्मृतिकी उत्पत्ति वडी बात है। भिक्षुओ, वह भिक्षु शीघ्र ही विशेष (= निर्वाण) को प्राप्त करने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे कोई आदमी शख-शब्दसे सुपरिचित हो। रास्ते चलता हुआ वह शखका शब्द सुने। उसके मनमे यह शख-शब्द है अथवा नही है, इसके विषयमे कुछ भी शका या सन्देह न हो। वह निश्चय पूर्वक यह समझ ले कि यह शख शब्द ही है। इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु धर्मका पाठ करता है सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका अद्भुत-धर्मका तथा वेदल्लका। उसके द्वारा वे धर्म कानसे सुने जाते है, वाणीको सुपरिचित रहते है, मनसे सुविचारित रहते है तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये रहते है। वह मूढ-स्मृति हो शरीर त्याग करता है, तो किसी-न-किसी देव-योनिमें जन्म ग्रहण करता है। उसके वहाँ रहते समय न तो सुविधा पूर्वक धर्म-वचन प्रकट होते है, न वह भिक्षु ऋद्धिमान तथा चित्त-वशी होनेके कारण देव-परिषद्मे धर्मकी देशना ही करता है, किन्तु देव-पुत्र देव-परिषद्मे धर्मकी देशना करता है। उसको ध्यान आता है कि यह वही धर्म-विनय (= बुद्धदेशना) है जिसके अनुसार मैंने पहले श्रेप्ठ जीवन व्यतीत किया है। भिक्षुओ, वुद्धवचनानुस्मृतिकी उत्पत्ति वडी वात है। भिक्षुओ, वह भिक्षु शीघ्र ही विशेष (= निर्वाण) प्राप्त करनेवाला होता है। भिक्षुओ, जो धर्म कानसे सुने जाते हैं, वाणीसे सुपरिचित किये जाते है, मनसे सुविचारित रहते हैं तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये जाते है, उससे इस तीसरे शुभ-परिणामकी आशा की जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु धर्मका पाठ करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्भुत-धर्मका, तथा वेदल्लका। उसके द्वारा वे धर्म कानसे सुने जाते है, वाणीको सुपरिचित रहते है, मनसे सुविचारित रहते है, तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये रहते है। वह मूढ-स्मृति हो शरीर त्याग करता है तो किसी न किसी देव-योनिमे जन्म ग्रहण करता है। उसके वहाँ मुविधा पूर्वक रहते समय न तो धर्म-वचन प्रकट होते है, न वह भिक्षु ऋद्धिमान वा चित्त-वशी होनेके कारण देव-परिषद्मे धर्मकी देशना ही करता है, न देव-पुत्र देव-परिपद्मे धर्मकी देशना करता है, किन्तु विना माता-पिताके उत्पन्न ओपपातिक प्राणी दूसरे ओपपातिक प्राणीको याद दिलाता है—मित्र याद है कि हमने पहले किस जगहपर श्रेप्ठ जीवन व्यतीत किया था? उसने उत्तर दिया—मित्र! याद है, मित्र याद है। भिक्षुओ, वुद्ध वचनानुस्मृतिकी उत्पत्ति वडी वात है। भिक्षुओ, वह भिक्षु शीघ्र ही विशेप-

(= निर्वाण) को प्राप्त करने वाला होता है। जैसे भिक्षुओ, दो लंगोटिये यार कही एक दूसरेसे मिले। तब एक मित्र दूसरेसे पूछे—मित्र! क्या यह भी याद है? मित्र! क्या यह भी याद है? वह उत्तर दे—मित्र! याद है। मित्र! याद है। इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु धर्मका पाठ करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्भुत-धर्मका तथा वेदल्लका। उसके द्वारा वे धर्म कानसे सुने जाते है, वाणीको सुपरिचित रहते है, मनसे सुविचारित रहते है तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये रहते है। वह मूढ़-स्मृति हो शरीर त्याग करता है, तो किसी न किसी देव-योनिमे जन्म ग्रहण करता है। उसके वहाँ सुखिधापूर्वक रहते समय न तो धर्म-वचन प्रकट होते है, न वह भिक्षु ऋद्धिमान वा चित्त-वशी होनेके कारण देव-परिषद्में धर्मकी देशना ही करता है, न देव-पुत्र देव-परिषदमें धर्मकी देशना करता है, किन्तु बिना माता-पिताके उत्पन्न औपपातिक प्राणी दूसरे औपपातिक प्राणीको याद दिलाता है—मित्र याद है कि हमने पहले किस जगह पर श्रेष्ठ जीवन व्यतीत किया था? उसने उत्तर दिया, मित्र! याद है। मित्र! याद है। भिक्षुओ, बुद्धवचनानुस्मृतिकी उत्पत्ति बडी बात है। भिक्षुओ, वह भिक्षु शीघ्र ही विशेष (= निर्वाण) को प्राप्त करने वाला होता है। भिक्षुओ, जो धर्म कानसे सुने जाते है, वाणीसे सुपरिचित किये जाते है, मनसे सुविचारित रहते है तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये जाते है, उससे इस चौथे शुभ-परिणामकी आशा की जा सकती है। भिक्षुओ, जो धर्म कानसे सुने जाते है, वाणीको सुपरिचित रहते है, तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये जाते है उससे चार शुभ-परिणामोकी आशा की जा सकती है।

भिक्षुओ, ये चार बातें चार बातोंसे जानी जा सकती है। कौन-सी चार? भिक्षुओ, साथ रहनेसे ही किसीका शील जाना जा सकता है, वह भी अधिक समय तक साथ रहनेसे, थोडे समय साथ रहनेसे नही, विचार करनेसे, बिना विचार किये नही, प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नही। भिक्षुओ, व्यवहारसे ही किसी आदमीकी शुचिता जानी जा सकती है, वह भी अधिक समय व्यवहार करनेसे, थोडे समय व्यवहार करनेसे नही, विचार करनेसे बिना विचार किये नही, प्रज्ञावान् आदमी द्वारा अप्रज्ञावान द्वारा नही। भिक्षुओ, आपत्तियाँ आनेपर सहनशीलता जानी जा सकती है, वह भी अधिक समय तक आपत्तियाँ सहन कर सकनेसे, थोडे समय सहन कर सकनेसे नही, विचार करनेसे, बिना विचार किये नही, प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नही। भिक्षुओ, चर्चा करनेसे प्रज्ञा जानी जा सकती है, वह भी अधिक समय तक चर्चा करनेसे, थोडे समय तक चर्चा करनेसे नही, विचार करनेसे, बिना विचार किये नही, प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नही।

भिक्षुओ, यह जो कहा गया कि साथ ही रहनेसे ही किसीका शील जाना जा सकता है, वह भी अधिक समय तक साथ रहनेसे, थोडा समय तक साथ रहनेसे नही; विचार करनेसे, बिना विचार किये नही, प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नही—यह किस आशयसे कहा गया? भिक्षुओ, एक आदमी दूसरे आदमीके साथ रहता हुआ यह जानता है कि दीर्घ कालसे इस आदमीका शील सछिद्र है, धब्बेदार है, मलिन है, यह निरन्तर शीलका ध्यान रखने वाला नही है, यह दुःशील है, यह शीलवान् नही है। भिक्षुओ, एक आदमी दूसरे आदमीके साथ रहता हुआ यह जानता है कि दीर्घकालसे इस आदमीका शील खण्डित नही है, सछिद्र नही है, धब्बेदार नही है, मलिन नही है, यह शीलवान् है, यह दुःशील नही है। भिक्षुओ, साथ ही रहनेसे किसीका शील जाना जा सकता है, वह भी अधिक समय तक साथ रहनेसे, थोड़े समय तक साथ रहनेसे नही, विचार करनेसे, बिना विचार किये नही; प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नही—यह जो कहा गया, यह इसी आशयसे कहा गया।

भिक्षुओ, व्यवहारसे ही किसी आदमीकी शुचिता जानी जा सकती है, वह भी अधिक समय व्यवहार करनेसे, थोडे समय व्यवहार करनेसे नही, विचार करनेसे, बिना विचार किये नही, प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नही—यह किस आशयसे कहा गया? भिक्षुओ, एक आदमी दूसरे आदमीके साथ व्यवहार करके यह जानता है कि यह आयुष्मान् एक आदमीके साथ एक तरह व्यवहार करता है, दो के साथ और तरहसे, तीनके साथ और तरहसे, बहुतोंके साथ और तरहसे, इसके पहलेके व्यवहारसे पीछेका व्यवहार मेल नही खाता, यह आयुष्मान् अशुद्ध व्यवहार वाला है, यह आयुष्मान् शुद्ध व्यवहार वाला नही। भिक्षुओ, एक आदमी दूसरे आदमीके साथ व्यवहार करके यह जानता है कि यह आयुष्मान् जैसे एक आदमीके साथ व्यवहार करता है, वैसा ही दो के साथ, वैसा ही तीन के साथ, वैसा ही बहुतोके साथ। इसके पहलेके व्यवहारसे पीछेका व्यवहार मेल खाता है। यह आयुष्मान् शुद्ध-व्यवहार वाला है, यह आयुष्मान् अशुद्ध-व्यवहार वाला नही। भिक्षुओ, व्यवहार करनेसे ही किसी आदमीकी शुचिता जानी जा सकती है, वह भी अधिक समय व्यवहार करनेसे, थोडे समय व्यवहार करनेसे नही, विचार करनेसे, बिना विचार किये नही, प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नही—यह जो कहा गया, यह इसी आशयसे कहा गया।

भिक्षुओ, विपत्तियाँ आनेपर ही सहनशीलता जानी जा सकती है, वह भी अधिक समय तक आपत्तियाँ सहन कर सकनेसे, थोडे समय सहन कर सकनेसे नही;

विचार करनेसे, विना विचार किये नही, प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नही—यह किस आशयसे कहा गया ? भिक्षुओ, एक आदमी ज्ञाति (के अभाव) के दु खसे स्पृष्ट होनेपर, भोग-सामग्री (के नाश) के दु खसे स्पृष्ट होनेपर, रोग-दु ख से स्पृष्ट होनेपर, यह विचार नही करता कि यह ससार ऐसा ही है; और यह जन्म ग्रहण करना भी ऐसा ही है, जैसे ससारमे जैसा जन्म ग्रहण करनेपर आठ लोक-धर्म लोकको घेर लेते है अथवा लोक आठ लोक-धर्मो द्वारा घिरा रहता है—लाभ, अलाभ, यश, अपयश, निन्दा, प्रशसा तथा सुख और दु ख। वह ज्ञातिके दु खमे स्पृष्ट होनेपर, भोग (सामग्रीके नाशके) दु खसे स्पृष्ट होनेपर सोचता है, क्लेश पाता है, रोता है, छाती पीटता है तथा वेहोश हो जाता है। भिक्षुओ, एक आदमी ज्ञाति (के अभावके) दु खसे स्पृष्ट होनेपर, भोग-सामग्रीके नाशके दु खसे स्पृष्ट होनेपर, रोग-दु खसे स्पृष्ट होनेपर यह विचार करता है कि यह ससार ऐमा ही है; और यह जन्म ग्रहण करना भी ऐसा ही है जैसे ससारमे, जैसा जन्म ग्रहण करनेपर आठ लोक-धर्म लोकको घेर लेते है अथवा लोक आठ लोक-धर्मो द्वारा घिरा रहता है—लाभ, अलाभ, यश, अपयश, निन्दा, प्रशसा तथा सुख और दु ख। वह ज्ञातिके दु खसे स्पृष्ट होनेपर, भोग (सामग्रीके नाशके) दु खसे स्पृष्ट होनेपर, न सोचता है, न क्लेश पाता है, न रोता है, न छाती पीटता है और न वेहोश हो जाता है। भिक्षुओ, विपत्तियाँ आनेपर ही सहनशीलता जानी जा सकती है, वह भी अधिक समय तक आपत्तियाँ सहन करनेसे, थोडे समय कर सकनेमे नही, विचार करनेसे, विना विचार करनेसे नही, प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नही—यह जो कहा गया, यह इही आशयसे कहा गया।

भिक्षुओ, चर्चा करनेसे प्रज्ञा जानी जा सकती है, वह भी अधिक समय तक चर्चा करनेसे, थोडे समय तक चर्चा करनेसे नही, विचार करनेसे, विना विचार किये नही, प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नही—यह जो कहा गया, यह किस आशयसे कहा गया ? भिक्षुओ, एक आदमी दूसरेसे चर्चा करके यह जानता है कि इस आयुष्मान्का जैसा (गलत) रास्ता है, जैसा व्यवहार है, जैसे यह प्रश्नोको विर्सजित करता है, उससे पता लगता है कि यह आयुष्मान् प्रज्ञा-विहीन है, प्रज्ञावान् नही है। ऐसा क्यो ? इसलिये कि यह आयुष्मान् कोई गम्भीर वात नही कहता, जो शान्त हो, प्रणीत हो, तर्कसे अगोचर हो, निपुण हो, पण्डितो द्वारा ही जानी जा सकने वाली हो। यह आयुष्मान् जिस धर्मको कहता है उसका सक्षेप या विस्तारसे अर्थ कह सकनेमें, देशना कर सकनेमे, प्रज्ञापन कर सकनेमे, स्थापित कर सकनेमें,

खोलकर दिखा सकनेमें, विभाजन कर सकनेमें तथा स्पष्ट कर सकनेमे असमर्थ है। यह आयुष्मान् प्रज्ञा-हीन है, यह आयुष्मान् प्रज्ञावान् नही है। भिक्षुओ, जैसे कोई आँख वाला आदमी पानीके तालावके तटपर खडा होकर देखे किसी छोटे मच्छको, ऊपर-नीचे जाते हुए। उसके मनमे हो कि जैसी इस मच्छकी ऊपर-नीचे आने-जानेकी गति है, जैसा लहरोका घात है, जैसा वेग है, उसे देखनेसे यही मालूम होता है कि यह छोटा मच्छ है, यह वडा मच्छ नही। इसी प्रकार भिक्षुओ, एक आदमी दूसरेसे चर्चा करके यह जानता है कि इस आयुष्मान्‌का जैसा (गलत) रास्ता है, जैसा व्यवहार है, जैसे यह प्रश्नोको विसर्जित करता है, उससे पता लगता है कि यह आयुष्मान् प्रज्ञा-विहीन है, प्रज्ञावान् नही है। ऐसा क्यो ? इसलिये कि यह आयुष्मान् कोई गम्भीर बात नही कहता, जो शान्त हो, प्रणीत हो, तर्कसे अगोचर हो, निपुण हो, पण्डितो द्वारा ही जानी जा सकने वाली हो। यह आयुष्मान् जिस धर्मको कहता है, उसका सक्षेप या विस्तारसे अर्थ कह सकनेमें, देशना कर सकनेमें, प्रज्ञापन कर सकनेमे, स्थापित कर सकनेमें, खोलकर दिखा सकनेमें, विभाजन कर सकनेमें तथा स्पष्ट कर सकनेमें असमर्थ है। यह आयुष्यमान् प्रज्ञाहीन है, यह आयुष्मान् प्रज्ञावान् नही है। भिक्षुओ, एक आदमी दूसरेसे चर्चा करके यह जानता है कि इस आयुष्मान्‌का जैसा (ठीक) रास्ता है, जैसा व्यवहार है, जैसे यह प्रश्नोको विसर्जित करता है, उससे पता लगता है कि यह आयुष्मान् प्रज्ञा-विहीन नही है, प्रज्ञावान् है। ऐसा क्यो ? इसलिये कि यह आयुष्मान् ऐसी गम्भीर वात कहता है, जो शान्त होती है, प्रणीत होती है, तर्कसे अगोचर होती है, निपुण होती है, पण्डितो द्वारा ही जानी जा सकने वाली होती है। यह आयुष्मान् जिस धर्मको कहता है, उसका सक्षेप या विस्तारसे अर्थ कह सकनेमें, देशना कर सकनेमे, प्रज्ञापन कर सकनेमे, स्थापित कर सकनेमे, खोलकर दिखा सकनेमें, विभाजन कर सकनेमे तथा स्पष्ट कर सकनेमे समर्थ है। यह आयुष्मान् प्रज्ञावान् है, यह आयुष्मान् प्रज्ञाहीन नही है। भिक्षुओ, जैसे कोई आदमी पानीके तालावके तटपर खडा होकर देखे किसी वडे मच्छको—ऊपर-नीचे जाते हुए। उसके मनमें हो कि जैसी इस मच्छकी ऊपर-नीचे आने-जानेकी गति है, जैसा लहरोका घात है, जैसा वेग है, उसे देखनेसे यही मालूम होता है कि यह वडा मच्छ है, यह छोटा मच्छ नही। इसी प्रकार भिक्षुओ, एक आदमी दूसरेसे चर्चा करके यह जानता है कि इस आयुष्मान्‌का जैसा (ठीक) रास्ता है, जैसा व्यवहार है, जैसे यह प्रश्नोको विसर्जित करता है, उससे पता लगता है कि यह आयुष्मान् प्रज्ञा-विहीन नही है, प्रज्ञावान् है। ऐसा किसलिये ? इसलिये कि यह आयुष्मान् ऐसी गम्भीर वात कहता है, जो शान्त होती

हैं, प्रणीत होती है, तर्कसे अगोचर होती है, निपुण होती है, पण्डितो द्वारा ही जानी जा सकने वाली होती है। यह आयुष्मान् जिस धर्मको कहता है, उसका संक्षेप या विस्तारसे अर्थ कह सकनेमें, देशना कर सकनेमें, प्रज्ञापन कर सकनेमें, स्थापित कर सकनेमें, खोल कर दिखा सकनेमें, विभाजन कर सकनेमें तथा स्पष्ट कर सकनेमें समर्थ है। यह आयुष्मान् प्रज्ञावान् है, यह आयुष्मान् प्रज्ञा-विहीन नही है। भिक्षुओ, चर्चा करनेसे प्रज्ञा जानी जा सकती है, वह भी अधिक समय तक चर्चा करनेसे, थोडे समय तक चर्चा करनेसे नही, विचार करनेसे, विना विचार किये नही, प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नही—यह जो कहा गया, यह इसी आशयसे कहा गया। भिक्षुओ, ये चार वाते चार वातोंसे जानी जा सकती है।

एक समय भगवान् वैशालीके महावनमें कूटागार शालामे विहार करते थे। तव भद्दिय लिच्छवी जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवान्को नमस्कार कर एक ओर वैठा। एक ओर वैठे हुए भद्दिय लिच्छीने भगवान्से यह कहा—"भन्ते! मैंने सुना है कि श्रमण गौतम मायावी (=जादूगर) है, वशीकरण-मन्त्र जानता है, जिससे दूसरे तैर्थिकोके श्रावकोको अपनी ओर खीच लेता है। भन्ते! जो लोग ऐसा कहते है कि श्रमण गौतम मायावी (जादूगर) है, वशीकरण-मन्त्र जानता है, जिससे दूसरे तैर्थिको (मतावलम्बिमो) के श्रावकोको अपनी ओर आकर्पित कर लेता है। भन्ते! क्या वे लोग यथार्थ-भाषी है, भगवान्पर झूठा आरोप तो नही लगाते? धर्मकी वात ही कहते है? इससे कोई अपनी वात निग्रह-स्थानपर तो नही पहुँच जाती? भन्ते! हम भगवान्पर कोई दोष नही लगाना चाहते।"

"भद्दिय! तुम आओ। तुम किसी वातको केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह वात अनु-श्रुत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह वात उसी प्रकार कही गई है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे धर्म-ग्रन्थ (पिटक) के अनुकूल है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह तर्क-सम्मत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह न्याय (-शास्त्र) सम्मत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि आकार-प्रकार सुन्दर है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे मतके अनुकूल है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि कहने वालेका व्यक्तित्व आकर्षक है,, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि कहने वाला श्रमण हमारा 'पूज्य' है। हे भद्दिय! जव तुम आत्मानुभवसे अपने आप यह जान लो कि ये वातें अकुशल है, ये वातें सदोष है, ये वातें विज्ञ पुरुषो द्वारा निन्दित है, इन वातोंके अनुसार चलनेसे अहित होता है, दुःख होता है—तो हे भद्दिय! तुम इन वातोको छोड दो।

"तो भद्दिय! क्या मानते हो, पुरुषके अन्दर जो लोभ उत्पन्न होता है, वह उसके हितके लिये होता है वा अहितके लिये?"

"भन्ते! अहितके लिये।"

"हे भद्दिय! जो लोभी है, जो लोभसे अभिभूत है, जो असयत है, वह प्राणी-हत्या भी करता है, चोरी भी करता है, परस्त्री-गमन भी करता है, झूठ भी बोलता है, दूसरोको भी वैसी प्रेरणा देता है, जो कि दीर्घकाल तक उसके अहित तथा दु:खका कारण होती है।"

"भन्ते! ऐसा ही है।"

"तो हे भद्दिय! क्या मानते हो, पुरुष के अन्दर जो द्वेष उत्पन्न होता है, जो मोह (मूढता) उत्पन्न होता है, जो सारम्भ (क्रोध) उत्पन्न होता है, वह उस के हित के लिये होता है या अहित के लिये?"

"भन्ते! अहित के लिये।"

"हे भद्दिय! जो क्रोधी है, जो क्रोध से अभिभूत है, जो असयत है, वह प्राणी-हत्या भी करता है, चोरी भी करता है, परस्त्री-गमन भी करता है, झूठ भी बोलता है दुसरोको भी वैसी प्रेरणा देता है, जो कि दीर्घकाल तक उसके अहित तथा दु:ख का कारण होती है।"

"भन्ते! ऐसा ही है।"

"तो भद्दिय! क्या मानते हो, ये धर्म कुशल है वा अकुशल?"

"भन्ते! अकुशल है।"

"सदोष है वा निर्दोष?"

"भन्ते! सदोष है।"

"विज्ञ पुरुषो द्वारा निन्दित है, वा प्रशसित है?"

"भन्ते! विज्ञ पुरुषो द्वारा निन्दित है!"

"परिपूर्ण करने पर, आचरण करने पर, अहित के लिये, दु:ख के लिये होते हैं, अथवा नही होते? इस विषय में तुम्हे कैसा लगता है?"

"भन्ते! परिपूर्ण करनेपर, आचरण करने पर, अहितके लिये, दु:खके लिये होते है। इस विषयमे हमें ऐसा ही लगता है।"

"तो हे भद्दिय! यह जो कहा है—हे भद्दिय! आओ। तुम किसी वातको केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह वात अनुश्रुत है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि यह वात परम्परागत है ... ये धर्म अकुशल है, ये धर्म सदोष है, ये धर्म-विज्ञ-पुरुषो द्वारा

निन्दित है, ये धर्म परिपूर्ण करनेपर, आचरण करने पर, अहित के लिये, दु ख के लिये होते है। तो हे भद्दिय ! तुम इनधर्मों को छोड दो। यह जो कहा गया, यह इसी आशय से कहा गया।

"भद्दिय! तुम किसी वात को केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह वात अनुश्रुत है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि यह वात परम्परागत है, इसलिये मत स्वीकार करो कि यह वात इसी प्रकार कही गई है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे पिटक (धर्म ग्रन्थ) के अनुकूल है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह तर्क-सम्मत है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि यह न्याय (–शास्त्र) सम्मत है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि आकार-प्रकार सुन्दर है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे मतके अनुकूल है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि कहने वालेका व्यक्तित्व आकर्पक है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि कहने वाला श्रमण हमारा 'पूज्य' है। हे भद्दिय ! जव तुम आत्मानुभवसे अपने आप यह जान लो कि ये वाते कुशल है, ये वातें निर्दोप है, ये वातें विज्ञ-पुरुषपो द्वारा प्रशसित है, ये वातें परिपूर्ण करनेपर, आचारण करनेपर, हित के लिये, सुखके लिये होती है, तो हे भद्दिय ! तुम इन वातोको ग्रहण कर विचरो।

"तो भद्दिय ! क्या मानते हो, पुरुपके अन्दर जो अलोभ उत्पन्न होता है, वह उसके हितके लिये होता है वा अहितके लिये ?"

"भन्ते ! हितके लिये।"

"हे भद्दिय ! जो अलोभी है, जो लोभसे अभिभूत नही है, जो असयत नही है, वह प्राणी-हत्या भी नही करता, चोरी भी नही करता, पर-स्त्री-गमन भी नही करता, झूठ भी नही बोलता, दूसरोको भी वैसी प्रेरणा नही करता, जो कि दीर्घकाल तक उसके हित तथा सुखका कारण होती है।"

"भन्ते ! ऐसा ही है।"

"हे भद्दिय ! क्या मानते हो, पुरुपके अन्दर जो अद्वेष उत्पन्न होता है, व अमोह उत्पन्न होता है असारम्भ (= अक्रोध) उत्पन्न होता है, वह उसके हितके लिये होता है वा अहितके लिये ?"

"भन्ते ! हितके लिये।"

"हे भद्दिय ! जो अक्रोधी है, जो क्रोधसे अभिभूत नही है, जो असयत नहीं है, वह प्राणी-हत्या भी नही करता, चोरी भी नही करता, पर-स्त्री-गमन भी नही करता, झूठ भी नही वोलता, दूसरोको भी वैसी प्रेरणा नही करता, जो कि दीर्घ कालतक उसके हित तथा सुखका कारण होती है।"

"भन्ते। ऐसा ही है।"

"तो भद्दिय ! क्या मानते हो, ये धर्म कुशल है वा अकुशल ?"

"भन्ते ! कुशल है।"

"सदोष है वा निर्दोष।"

"भन्ते ! निर्दोप है।"

"विज्ञ पुरुषो द्वारा निन्दित है वा प्रशसित ?"

"भन्ते ! विज्ञ पुरुषो द्वारा प्रशसित है।"

"परिपूर्ण करनेपर, आचरण करनेपर सुखके लिये होते है, अथवा नही होते ? इस विपयमें तुम्हे कैसा लगता है ?"

"भन्ते ! परिपूर्ण करनेपर, आचारण करनेपर, हितके लिये, सुखके लिये होते है। इस विषयमें हमे ऐसा लगता है।"

"तो हे भद्दिय ! यह जो कहा है—'हे भद्दिय ! आओ। तुम किसी वातको केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह बात अनुश्रुत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह बात परम्परागत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह बात इसी प्रकार कही गई है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे पिटक (= धर्म-ग्रन्थ) के अनुकूल है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह तर्क-सम्मत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह न्याय (–शास्त्र) सम्मत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि आकार-प्रकार सुन्दर है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे मतके अनुकूल है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि कहने वालेका व्यक्तित्व आकर्पक है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि कहने वाला श्रमण हमारा 'पूज्य' है। हे भद्दिय ! जब तुम आत्मानुभवसे अपने आप यह जान लो कि ये वाते कुशल है, ये वाते निर्दोष है, ये बाते विज्ञ पुरुषो द्वारा प्रशसित है, ये वातें परिपूर्ण करनेपर, आचरण करनेपर, हितके लिये, सुखके लिये होती है। तो हे भद्दिय ! तुम इन वातोको ग्रहण कर तदनुसार आचरण करो।' यह जो कहा गया, यह इसी उद्देश्यसे कहा गया।

"भद्दिय ! दुनियामे जितने भी सत्पुरुष है वे अपने शिष्योको यही शिक्षा देते है—हे पुरुष ! तू आ, लोभको वशमें रख-रखकर विचर, लोभको वशमें रख-रखकर विहार करनेसे शरीर, वाणी या मनसे कोई भी लोभोत्पन्न कर्म नही करेगा, द्वेपको वशमे रख रखकर विचर, द्वेषको वशमे रख रखकर विहार करनेसे शरीर, वाणी या मनसे कोई भी द्वेष-जन्य कर्म नही होगा, मोह (= मूढता) को वशमे रखकर विचर, मोहको वशमें रख रखकर विहार करनेसे शरीर, वाणी या मनसे

कोई भी मोह-जन्य कर्म नही होगा, समारम्भ (= क्रोध) को वशमें रखरखकर विचर, समारम्भको वशमे रख रखकर विचरनेसे शरीर, वाणी या मनसे कोई भी समारम्भ-जन्य कर्म न होगा।"

ऐसा कहनेपर भद्दिय लिच्छवीने भगवान्‌से कहा—भन्ते! सुन्दर है। आजसे प्राण रहने तक भन्ते! आप मुझे अपना शरणागत उपासक समझें।"

"हे भद्दिय! मैंने तुझे यह तो नही कहा कि हे भद्दिय! तू आकर मेरा शिष्य बन, मैं तेरा शास्ता बनूंगा?"

"भन्ते! नही।"

"भद्दिय! मैं जो ऐसा मत रखने वाला हूँ, मुझे कुछ श्रमण-ब्राह्मण झूठ मूठ कहते हैं कि श्रमण गौतम मायावी (= जादूगर) है, वह वशीकरण मन्त्र जानता है, जिससे दूसरे तैर्थिको (= मतावलम्बी) के श्रवकोको अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।"

"भन्ते! आपकी यह माया अच्छी है, आपकी यह माया कल्याणकारिणी है। भन्ते! यदि मेरे रक्त-सम्बन्धी इस मायाके वशीभूत हो जायें तो यह मेरे लिये कितना प्रियकर हो, यह मेरे रक्त-सबन्धियोंके दीर्घकालीन हित और सुखके लिये हो। भन्ते! यदि सभी क्षत्रिय इस मायाके वशीभूत हो जायें तो यह मेरे लिये कितना प्रियकर हो, और यह सभी क्षत्रियोंके लिये दीर्घकालीन हित और सुखके लिये हो। भन्ते! यदि सभी ब्राम्हण .वैश्य ..शूद्र इस मायाके वशीभूत हो जायें, तो यह सभी शूद्रोंके दीर्घकालीन हित और सुखके लिये हो।"

"भद्दिय! यह ऐसा ही है। भद्दिय! यह ऐसा ही है। भद्दिय! यदि सभी क्षत्रिय इस मायाके वशीभूत हो जायें—अकुशलका त्याग करनेके लिये तथा कुशलका सम्पादन करनेके लिये—तो यह सभी क्षत्रियोंके दीर्घकालीन हित और सुखके लिये हो। भद्दिय! यदि सभी ब्राम्हण ..वैश्य शूद्र इस मायाके वशीभूत हो जायें—अकुशल का त्याग करनेके लिये तथा कुशलका सम्पादन करनेके लिये—तो यह सभी शूद्रोंके दीर्घकालीन हित और सुखके लिये हो। भद्दिय! यदि सदेव, समार, सब्रम्ह लोक देव-ब्राम्हण प्रजा सहित सारे देवता-मनुष्य इस मायाके वशीभूत हो जायें—अकुशल का त्याग करनेके लिये तथा कुशलका सम्पादन करनेके लिये—तो यह सदेव, समार सब्रम्ह लोक, देव-ब्राम्हण प्रजा सहित सारे देवता मनुष्योंके दीर्घकालीन हित और सुखके लिये हो। भद्दिय! ये महत्वशाली भी यदि इस मायाके वशीभूत हो जायें, तो यह इन सबके दीर्घकालीन हित और सुखके लिये हो—तब (सामान्य) जनोका तो कहना ही क्या!

एक समय आयुष्मान आनन्द कोळिय जनपदमें सापुगन नामके कोळियोंके निगममें विहार करते थे। तब बहुतसे सापुग-निवासी कोळिय पुत्र जहा आयुष्मान आनन्द थे वहा पहुँचे, पास जाकर आयुष्मान आनन्दको अभिवादन कर एक और बैठ गये। एक और बैठे सापुग-निवासी कोळिय-पुत्रोको आयुष्मान आनन्दने यह कहा—हे व्यग्घपज्झो! उन भगवान जानकार, दर्शी, अर्हत्, सम्यक् सम्बुद्धने प्राणियोकी विशुद्धि के लिये, शोक-अनुतापके नाशके लिये, दु ख-दौर्मनस्योको अस्त करनेके लिये, ज्ञान की प्राप्तिके लिये तथा निर्वाणको साक्षात् करनेके लिये चार परिशुद्धि-प्रयत्नके अग सम्यक् प्रकारसे कहे हैं। कौनसे चार? शील-परिशुद्धि-प्रयत्न-अग, चित्त परि-शुद्धि प्रयत्न-अग, दृष्टि-परिशुद्धि-प्रयत्न अग, विमुक्ति-परिशुद्धि-प्रयत्न-अग। व्यग्घ-पज्झो! शील-परिशुद्धि-प्रयत्न अग किसे कहते हैं। हे व्यग्घपज्झो! भिक्षु शीलवान् होता है शिक्षापदोको सम्यक् ग्रहण कर उनका अभ्यास करता है, व्यग्घपज्झो! यह शील-परिशुद्धि कही जाती है। जब कोई इस प्रकारकी शील-परिशुद्धिमे कमी रहनेपर, उसे पूरा करता है अथवा पूर्ति हुई रहनेपर प्रज्ञासे उसीपर अनुग्रह करते रहने-का संकल्प करता है, उसके लिये जो उसका प्रयत्न होता है, व्यायाम होता है, उत्साह होता है, मनोयोग होता है, कोशिश होती है, स्मृति होती है, सम्प्रजन्य (= चैतन्यता) होती है—व्यग्घपज्झ! इसे कहते हैं शील-परिशुद्धि प्रयत्न अग।

"व्यग्घपज्झ! चित्त परिशुद्धि-प्रयत्न-अग किसे कहते है? व्यग्घपज्झ!" भिक्षु कामभोगोसे रहित हो चतुर्थ-ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है। व्यग्घपज्झ! इसे कहते हैं चित्त-परिशुद्धि। जब कोई इस प्रकारकी चित्त-परिशुद्धिमें कमी रहनेपर उसे पूरा करता है, अथवा पूर्ति हुई रहनेपर प्रज्ञासे उसी पर अनुग्रह करते रहनेका सकल्प करता है, उसके लिये जो उसका प्रयत्न होता है, व्यायाम होता है, उत्साह होता है, मनोयोग होता है, कोशिश होती है, स्मृति होती है, सम्प्रजन्य (= चैतन्यता) होती है—व्यग्घपज्झ! इस कहते हैं चित्त-परिशुद्ध-प्रयत्न-अग।

"व्यग्घपज्झ! दृष्टि-परिशुद्धि-प्रयत्न-अग किसे कहते है?"

"व्यग्घपज्झ! भिक्षु यह दु ख है, इसे यथार्थ रूपसे जानता है यह दु ख निरोधगामिनी प्रतिपदा है, इसे यथार्थ रूपसे जानता है। व्यग्घपज्झ! इसे कहते है दृष्टि-परिशुद्धि। जब कोई इस प्रकारकी दृष्टि-परिशुद्धिमे कमी रहनेपर उसे पूरा करता है, अथवा पूर्ति हुई रहनेपर प्रज्ञासे उसीपर अनुग्रह करते रहनेका सकल्प करता है, उसके लिये जो उसका प्रयत्न होता है, व्यायाम होता है, उत्साह होता है,

मनोयोग होता है, कोशिश होती है, स्मृति होती है, सम्प्रजन्य (=चैतन्यता) होती है—व्यग्घपज्ज! इसे कहते है दृष्टि-परिशुद्धि प्रयत्न-अग।

"व्यग्घपज्ज! विमुक्ति-परिशुद्धि-प्रयत्न-अग किसे कहते हैं?

"व्यग्घपज्ज! वह आर्य-श्रावक इस शील-परिशुद्धि-प्रयत्न-अगसे युक्त होता है, इस चित्त-परिशुद्धि-प्रयत्न-अगसे युक्त होता है, तथा इस दृष्टि-परिशुद्धि-प्रयत्न-अगसे युक्त होता है और वह जिन विषयोमें अनुरक्त होता है, उनसे विरक्त होता है, जिन विषयोंसे विमुक्ति लाभ करना उचित है, उनसे विमुक्ति लाभ करता है। वह जिन विषयोमें अनुरक्त होता है उनसे विरक्त हो, जिन विषयोंसे विमुक्ति लाभ करना उचित है, उनसे विमुक्ति लाभकर विमुक्तिका सम्यक् प्रकारसे स्पर्श (=अनुभव) करता है। व्यग्घपज्ज! इसे कहते है विमुक्ति-परिशुद्धि। जब कोई इस प्रकारकी विमुक्ति-परिशुद्धिमे कमी रहनेपर उसे पूरा करता है, अथवा पूर्ति हुई रहनेपर प्रज्ञासे उसीपर अनुग्रह करते रहनेका सकल्प करता है, उसके लिये जो उसका प्रयत्न होता है, व्यायाम होता है, उत्साह होता है, मनोयोग होता है, कोशिश होती है, स्मृति होती है, सप्रजन्य (=चैतन्यता) होती है—व्यग्घपज्ज! इसे कहते है विमुक्ति-परिशुद्धि-प्रयत्न-अग। हे व्यग्घपज्ज! उन भगवान्, जानकार, दर्शी, अर्हत, सम्यक्, सम्बुद्धने प्राणियोकी विशुद्धिके लिये, शोक अनुतापके नाशके लिये, दु ख-दौर्मनस्योको अस्त करनेके लिये, ज्ञानकी प्राप्तिके लिये तथा निर्वाणको साक्षात् करनेके लिये चार परिशुद्धि-प्रयत्नके अग सम्यक्-प्रकारसे कहे है।

एक समय भगवान् शाक्य जनपदमें कपिलवस्तुके न्यग्रोधाराममें विहार करते थे। उस समय निगण्ठनाथ पुत्रका श्रावक वप्प जहाँ आयुष्मान् महामौद्गल्यायन थे, वहाँ गया। पास पहुँच, आयुष्मान् महामौद्गल्यायनको अभिवादन कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए निगण्ठनाथ श्रावक वप्पको महामौद्गल्यायनने यह कहा—वप्प! एक आदमी शरीर, वाणी तथा मनसे सयत हो, वह अविद्यासे विरक्त हो और विद्यालाभी हो। वप्प! क्या तुझे इसकी सम्भावना दिखाई देती है कि उस पुरुषको पूर्व-जन्मके दु खद आस्रवोकी प्राप्ति हो?

"भन्ते! मै इसकी सम्भावना देखता हूँ कि आदमीने पूर्व जन्ममे पाप-कर्म किया हो, किन्तु उस पाप-कर्मका फल न भुगता हो, तो ऐसी हालतमे उस पुरुषको पूर्व-जन्मके दु खद आस्रवोकी प्राप्ति हो।"

आयुष्मान मौद्गल्यायनके साथ निगण्ठनाथ श्रावक वप्प शाक्यकी यह बात-चीत हुई। तब भगवान् शामके समय ध्यानसे उठ, जहाँ उपस्थान-शाला थी, वहाँ

पहुँचे। पहुँचकर बिछे आसनपर बैठे। बैठकर भगवान्‌ने आयुष्मान् मौद्गल्यायनसे पूछा—"मौद्गल्यायन ! इस समय बैठे क्या बातचीत कर रहे थे ? इस समय क्या बात-चीत चालू थी?" "भन्ते ! मैंने निगण्ठानाथ श्रावक वप्प शाक्यको यह कहा—वप्प ! एक आदमी शरीर, वाणी तथा मनसे सयत हो, वह अविद्यासे विरक्त हो और विद्यालाभी हो। वप्प ! क्या तुझे इसकी सम्भावना दिखाई देती है कि उस पुरुषको पूर्व जन्मके दु खद आस्रवोकी प्राप्ति हो ? भन्ते ! ऐसा कहनेपर निगण्ठ श्रावक वप्प शाक्यने मुझे ऐसा कहा, 'भन्ते ! मैं इसकी सम्भावना देखता हूँ कि आदमीने पूर्वजन्ममे पाप-कर्म किया हो, किन्तु उस पाप-कर्मका फल न भुगता हो, तो ऐसी हालतमें उस पुरषको पूर्व-जन्मके दु खद आस्रवोकी प्राप्ति हो।' भन्ते ! निगण्ठनाथ श्रावक वप्प शाक्यके साथ मेरी यह बातचीत चल रही थी कि भगवान् आ पहुँचे।

तब भगवान्‌ने निगण्ठ-श्रावक वप्प शाक्यसे कहा—वप्प ! जो बात तुझे मान्य हो, उसे मानना, जो बात स्वीकार करने योग्य न जचे, उसे स्वीकार मत करना। यदि मेरी कोई बात समझमें न आये तो मुझसे ही उसका अर्थ पूछ लेना कि भन्ते ! इसका क्या मतलब है ? अब हम दोनोकी बातचीत हो।

"भन्ते ! भगवानकी जो बात मुझे मान्य होगी, उसे मानूँगा, जो बात स्वीकार करने योग्य न जँचेगी उसे स्वीकार नही करूँगा। यदि कोई बात मेरी समझमें न आयेगी तो मैं भगवानसे ही उसका अर्थ पूछ लूँगा कि भन्ते ! इसका क्या मतलब है ? हम दोनोकी बात-चीत हो।"

"वप्प ! तो क्या मानते हो शारीरिक-क्रियाओके परिणामस्वरूप जो दु खद आस्रव उत्पन्न होते हैं, शारीरिक-क्रियाओंसे विरत रहनेसे दु खद आस्रव उत्पन्न नही होते ? वह नया-कर्म नही करता। पुराने कर्मको भुगत-भुगतकर क्षीण कर देता है—यह क्षीणकरने वाली क्रिया सादृष्टिक है, निर्जरा (= क्षयी) है, अकालिक है, इसके बारेमे कहा जा सकता है, आओ और स्वय देख लो, लेजाने वाली है, प्रत्येक विज्ञ पुरुष द्वारा जानी जा सकती है। वप्प ! क्या तुझे इसकी सम्भावना दिखाई देती है कि उस पुरुषको पूर्वजन्मके दु खद आस्रवोकी प्राप्ति हो ?

"भन्ते ! नही।"

"वप्प ! तो क्या मानते हो वाणीकी क्रियाओंके परिणाम स्वरूप जोदु खद आस्रव उत्पन्न होते हैं, वाणीकी क्रियाओंसे विरत रहनेसे वे दु खद आस्रव उत्पन्न नही होते ? वह नया-कर्म नही करता। पुराने कर्मको भुगत भुगत कर क्षीण कर देता है,—यह क्षीण करनेवाली क्रिया सादृष्टिक है, निर्जरा (= क्षमी) है, अकालिक

है, इसके बारेमे कहा जा सकता है आओ और स्वय देख लो, ले जाने वाली है, प्रत्येक विज्ञ पुरुष द्वारा जानी जा सकती है। वप्प ! क्या तुझे इसकी सम्भावना दिखाई देती है कि उस पुरुषको पूर्व-जन्मके दु खद आस्रवोकी प्राप्ति हो ?"

"भन्ते ! नही।"

"वप्प ! तो क्या मानते हो मनकी क्रियाओंके परिणाम-स्वरूप जो दु खद आस्रव उत्पन्न होते है, मनकी क्रियाओंसे विरत रहनेसे वे दु खद आस्रव उत्पन्न नही होते ? वह नया कर्म नही करता। पुराने कर्मको भुगत भुगत कर क्षीण कर देता है—यह क्षीण करनेवाली क्रिया सादृष्टिक है, निर्जरा (=क्षयी) है, अकालिक है, इसके बारेमें कहा जा सकता है 'आओ और स्वय देख लो', ले जाने वाली है, प्रत्येक विज्ञ पुरुष द्वारा जानी जा सकती है। वप्प ! क्या तुझे इसकी सम्भावना दिखाई देती है कि उस पुरुषको पूर्व जन्मके दु खद आस्रवोकी प्राप्ति हो ?"

"भन्ते ! नही।"

"वप्प ! तो क्या मानते हो अविद्याके परिणाम-स्वरूप जो दु खद आस्रव उत्पन्न होते है, अविद्याके विनष्ट हो जानेसे, विद्या के उत्पन्न हो जानेसे वे दु खद आस्रव उत्पन्न नही होते ? वह नया-कर्म नही करता। पुराने कर्मको भुगत-भुगतकर क्षीण कर देता है—यह क्षीण करनेवाली क्रिया सादृष्टिक है, निर्जरा (=क्षयी) है, अकालिक है, इसके बारेमें कहा जा सकता है, 'आओ और स्वय देख लो', (निर्वाणकी ओर) ले जाने वाली है, प्रत्येक विज्ञ पुरुष द्वारा जानी जा सकती है। वप्प ! क्या तुझे इसकी सम्भावना दिखाई देती है, कि उस पुरुषको पूर्व जन्मके दु खद आस्रवो की प्राप्ति हो ?"

"भन्ते ! नही।"

"वप्प ! इस प्रकार जो भिक्षु सम्यक् रीतिसे विमुक्त चित्त हो गया है, उसे छह शान्त-विहरण सिद्ध होते हैं। वह आँखसे रूप देखनेपर न प्रसन्न होता है, न अप्रसन्न होता है, वह उपेक्षा-युक्त रहता है, स्मृतिमान् तथा ज्ञानी। कानसे शब्द सुनकर नाकसे गन्ध सूँघकर जिह्वासे रस चखकर कायसे स्पृष्टव्यका स्पर्श करके तथा मनसे धर्म (=मनके विषयो) को जानकर न प्रसन्न होता है, न अप्रसन्न होता है, वह उपेक्षायुक्त रहता है, स्मृतिमान् तथा ज्ञानी। वह जब तक पचेन्द्रियोंसे अनुभवकी जानेवाली सुख-दु खमय वेदनाओका अनुभव करता है, तब तक यह जानता है कि मै पचेन्द्रियोंसे अनुभवकी जाने वाली सुख-दु खमय वेदनाओका अनुभव कर रहा हूँ। वह जब तक जीवन पर्यंत मनेन्द्रियसे अनुभवकी जाने वाली वेदनाओका अनुभव करता है, तब तक यह जानता है कि मै मनेन्द्रियसे अनुभवकी

जाने वाली वेदनाओका अनुभव करता हूँ। वह यह भी जानता है कि शरीरके न रहनेपर, जीवनकी समाप्ति हो जानेपर सभी वेदनाये, सभी अच्छी-बुरी लगने वाली अनुभूतियाँ यही ठण्डी पड जायेगी। वप्प ! जैसे खम्भे के होनेसे उसकी प्रतिच्छाया दिखाई देती है। अव एक आदमी कुदाल और टोकरी लेकर आये। वह उस खम्भेको जडसे काट दे, जडसे काटकर उसे खने, उसे खनकर जडें उखाड दे, यहाँ तककी खसकी जड जैसी पह पतली पतली जड़े भी। फिर वह आदमी उस खम्भेके टुकडे टुकडे करके उन्हे फाड डाले, फाड डालकर उसके छिलटे छिलटे कर दे, उसके छिलटे छिलटे करके उसे हवा-धूपमे सुखा डाले, हवा-धूपमें सुखाकर आगसे जला डाले, आगसे जलाकर राख कर दे, राख करके या तो हवामे उडादे अथवा नदीके शीघ्र-गामी स्रोतमें वहा दे। इस प्रकार वप्प ! जो उस खम्भेके होनेसे प्रतिच्छाया थी उसकी जड जाती रहेगी, वह कटे वृक्षकी सी हो जायगी, वह लुप्त हो जायगी, वह फिर भविष्यमें प्रकट न होगी। इसी प्रकार वप्प ! जो भिक्षु सम्यक् रीतिसे विमुक्त-चित्त हो गया है, उसे छ शान्त-विहरण सिद्ध होते हैं। वह आँखसे रूप देखनेपर न प्रसन्न होता है, न अप्रसन्न होता है, वह उपेक्षा-युक्त रहता है, स्मृतिमान् तथा ज्ञानी। कानसे शब्द सुनकर नाकसे गन्ध सूंघकर जिह्वासे रस चखकर कायसे स्पृष्टव्यका स्पर्श करके तथा मनसे धर्म (=मनके विषयो) को जानकर न प्रसन्न होता है, न अप्रसन्न होता है, वह उपेक्षायुक्त रहता है, स्मृतिमय तथा ज्ञानी। वह जव तक पचेन्द्रियोसे अनुभवकी जाने वाली सुख-दुखमय वेदनाओका अनुभव करता है तव तक यह जानता है कि मैं पचेन्द्रियसे अनुभव की जाने वाली सुख-दुखमय वेदनाओका अनुभव कर रहा हूँ। वह जव तक जीवन पर्यंत मनेन्द्रियसे अनुभवकी जाने वाली वेदनाओका अनुभव करता है, तव तक यह जानता है कि मैं मनेन्द्रियसे अनुभव की जानवाली वेदनाओका अनुभव कर रहा हूँ। वह यह भी जानता है कि शरीरके न रहनेपर, जीवनकी समाप्ति हो जानेपर, सभी वेदनाये, सभी अच्छी बुरी लगने वाली अनुभूतियाँ यही ठण्डी पड जायेगी।"

ऐसा कहने पर निगण्ठ-श्रावक वप्प शाक्यने भगवान्से यह कहा—"भन्ते ! जैसे कोई आदमी हो, वह अपने धनकी वृद्धि चाहता हो, वह वछेरोका पालन-पोषण करे। उसके धनकी वृद्धि तो न हो, वल्कि वह क्लेश तथा हैरानी को ही प्राप्त हो। इसी प्रकार भन्ते ! मैंने अभिवृद्धि की कामनासे मूर्ख निगण्ठोकी सगतिकी। मेरी अभिवृद्धि तो नही ही हुई, प्रत्युत मैं क्लेश और हैरानी का भागीदार हो गया। इसलिये भन्ते ! अव आजके वादसे निगण्ठोके प्रति जो भी मेरी श्रद्धा रही उसे मैं या तो

हवामें उडा देता हूँ अथवा तीव्रगामी नदीके स्रोतमे वहा देता हूँ। भन्ते! वहुत सुन्दर है भन्ते! भगवान् मेरे प्राण रहने तक मुझे अपना उपासक स्वीकार करें।"

एक समय भगवान् वैशालीकी कुटागार शालामें विहार करते थे। तत्र साळ्ह लिच्छवी तथा अभय लिच्छवी जहाँ भगवान् थे वहाँ गये। पास जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर वैठे गये। एक ओर वैठे हुए साळ्ह लिच्छवियोने भगवान् से यह कहा—"भन्ते! कुछ श्रमण-ब्राह्मण ऐसे है जिनका कहना है कि दो वातें होनेसे (ससार रूपी) वाढसे निस्तार होता है—एक तो शील-विशुद्धि होनी चाहिये। दूसरे तप-जुगुप्सा होनी चाहिये। भगवान् इस विपयमे क्या कहते है?"

"हे साळ्हो! शील विशुद्धिको तो मैं श्रमणत्वका एक अग कहता हूँ। किन्तु हे साळ्हो! जो श्रमण-ब्राह्मण 'तप' के नामपर काय-क्लेश तथा 'पाप-जुगुप्सा' की वात करते हैं, उसीमें सार समझते है उसीमे अनुरक्त रहकर विहार करते है वे (ससार-रूपी) वाढसे निस्तार पानेके अयोग्य हैं। और जिन श्रमण-ब्राह्मणोके शारीरिक-कर्म अशुद्ध होते हैं, वाणीके कर्म अशुद्ध होते है, मनके कर्म अशुद्ध होते हैं, जीविका अशुद्ध होती है वे ज्ञान-दर्शनके लिये, अनुपम सम्वोधि-प्राप्तिके लिये अयोग्य ठहरते हैं। हे साळ्हो! जैसे कोई आदमी नदीके उस पार जाना चाहता हो, वह तेज कुल्हाडी लेकर वनमे प्रवेश करे। वहाँ उसे शालका वडा वृक्ष दिखाई दे, नवीन, अकौकृत्य-युक्त। वह आदमी उसे जडसे काटे। जडसे काटकर अगले हिस्सेको काटे। अगले हिस्सेको काटकर शाखा-पत्तोको अच्छी तरह छाँटे। शाखा-पत्तोको छाँटकर कुल्हाडीसे छीले, कुल्हाडीसे छीलकर वसूलेसे छीले, वसूलेसे छीलकर लेखनी (?) से लिखे, लेखनीसे लिखकर पत्थरके वट्टेसे रगडे और पत्थरके वट्टेसे रगडकर नदीमें उतार दे। तो हे साळ्हो! क्या मानते हो, क्या वह आदमी नदी पारकर सकेगा?"

"भन्ते! नही!"

"यह किस लिये!"

"भन्ते! यद्यपि शालकी लकडी वाहरसे छील-छालकर साफ कर दी गई है, किन्तु अन्दरसे साफ नही की गई है। इसलिये इसीकी आशा की जानी चाहिये कि शालकी लकडी डूव जायेगी और वह आदमी विपत्तिमें पड जायेगा।"

"इसी प्रकार हे साळ्हो! जो श्रमण-ब्राह्मण 'तप' के नामपर काय-क्लेश तथा पाप-जुगुप्साकी वात करते हैं, उसीमें सार समझते हैं, उसीमें अनुरक्त रह-रहकर विहार करते है, वे (ससार रूपी) वाढसे निस्तार पानेके अयोग्य हैं। और

जिन श्रमण ब्राह्मणोके शारीरिक कर्म अशुद्ध होते है, वाणीके कर्म अशुद्ध होते है, मनके कर्म अशुद्ध होते है, जीविका अशुद्ध होती है, वे ज्ञान-दर्शनके लिये, अनुपम सम्वोधि प्राप्तिके लिये अयोग्य ठहरते है। हे साळहो! जो श्रमण-ब्राह्मण 'तप' के नामपर 'कायक्लेश' तथा (पाप-) जुगुप्सा' की वात नही करते है, उसीमे सार नही समझते है, उसीमें अनुरक्त रहकर विहार नही करते है, वे (ससार रूपी) वाढसे निस्तार पानेके योग्य है। जिन श्रमण-ब्राह्मणोके शारीरिक कर्म शुद्ध होते है, वाणीके कर्म शुद्ध होते है, मनके कर्म शुद्ध होते है, जीविका शुद्ध होती है, वे ज्ञान-दर्शनके लिये, अनुपम सम्वोधि-प्राप्तिके लिये योग्य ठहरते है। हे साळहो! जैसे कोई आदमी नदीके उस पार जाना चाहता हो, वह तेज कुल्हाडी लेकर वनमे प्रवेश करे। वहाँ उसे शालका वडा वृक्ष दिखाई दे, नवीन, अकौकृत्य-युक्त। वह आदमी उसे जडसे काटे। जडसे काटकर अगले हिस्सेको काटे। अगले हिस्सेको काटकर, शाखा-पत्तोको अच्छी तरह छाँटे। शाखा-पत्तोको अच्छी तरह छाँटकर, कुल्हाडीसे छीले, कुल्हाडीसे छीलकर वसूलेसे छीले, वसूलेसे छीलकर, अन्दरसे कुरेदनेका औजार ले, अन्दरसे उसे अच्छी तरह साफ करे, अन्दरसे अच्छी तरह साफ करके लेखनीसे लकीरें खीचे, लेखनीसे लकीरे खीचकर पत्थरके वट्टेसे रगडे, पत्थरके वट्टेसे रगडकर नौका वनाये। यह सव हो चुकनेपर डाण्डा और पाल वाँधे। डाण्डा और पाल वाँधकर नौकाको नदीमे उतार दे। तो हे साळहो! क्या मानते हो, क्या वह आदमी नदी पार कर सकेगा?"

"भन्ते! हाँ।"

"यह किस लिये?"

"भन्ते! शालकी लकडी वाहरसे छील-छालकर साफ कर दी गई है और अन्दरसे भी एक दम साफ है, उसमें डाण्डा और पाल वाँध दी गई है। इस लिये आशा करनी चाहिये कि नौका नही डूवेगी और आदमी सकुशल उस पार चला जायगा।"

इसी प्रकार हे साळहो! जो श्रमण-ब्राह्मण 'तप' के नामपर काय-क्लेश तथा (पाप-) जुगुप्साकी बात नही करते है, उसीमें सार नही समझते है, उसीमे अनुरक्त रहकर विहार नही करते है, वे (ससार रूपी) वाढसे निस्तार पानेके योग्य है। जिन श्रमण-ब्राह्मणोके शारीरिक-कर्म शुद्ध होते हैं, वाणीके कर्म शुद्ध होते है, मनके कर्म शुद्ध होते है, जीविका शुद्ध होती है, वे ज्ञान-दर्शनके लिये, अनुपम सम्वोधि प्राप्तिके लिये योग्य ठहरते हैं।

"हे साळ्हो! जैसे कोई योद्धा हो और वह तीर के बहुतसे कमाल (= विचित्र विचित्र बाते) जानता हो, वह तीन बाते होनेसे राजाके योग्य होता है, राजा का भोग्य होता है तथा राजाका अग ही माना जाता है। कौन सी तीन बातोंके होनेंमे ? वह दूर तक तीर गिराने वाला होता है, तुरन्त निशाना लगाने वाला होता है तथा बडी बडी चीजोको छेद डालने वाला होता है। हे साळ्हो! जैसे योद्धा दूरतक तीर गिराने वाला होता है, उसी तरह आर्य-श्रावक सम्यक्-समाधि युक्त होता है। हे साळ्हो! जो आर्य-श्रावक सम्यक्-समाधिसे युक्त होता है, वह यह अच्छी प्रकार समझकर यथार्थ रूपसे ग्रहण किये रहता है कि यह जितना भी 'रूप' है, जितनी भी 'वेदना' है, जितनी भी 'सज्ञा' है, जितने भी 'सस्कार' है, जितना भी 'विज्ञान' है—चाहे भूत-कालका हो, चाहे वर्तमानका, चाहे भविष्यत्का, चाहे अपने अन्दरका हो, अथवा बाहरका, चाहे स्थूल हो, अथवा सूक्ष्म, चाहे बुरा हो अथवा भला, चाहे दूर हो अथवा समीप—वह न मेरा है, न वह मैं हूँ और न वह मेरी आत्मा है।

जैसे हे साळ्हो! योद्धा तुरन्त निशाना लगाने वाला होता है, वैसे ही आर्य श्रावक (सम्यक्) दृष्टि प्राप्त होता है। हे साळ्हो! जो आर्य-श्रावक सम्यक्-दृष्टि होता है, वह यह दु ख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है यह दु ख निरोधगामी मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे जानता है।

"हे साळ्हो! जैसे योद्धा बडी-बडी चीजोको बीध डालता है, उसी प्रकार हे साळ्हो! आर्यश्रावक सम्यक्-विमुक्त होता है। हे साळ्हो! जो आर्य श्रावक सम्यक्-विमुक्त होता है, वह बडे भारी अविद्या-स्कन्धको छेद डालता है।

एक समय भगवान् श्रावस्तीमे अनाथपिण्डिकके जेतवनाराममें विहार कर रहे थे। तब मल्लिका देवी जहाँ भगवान् थे, वहाँ गई। पास जाकर भगवान्को अभिवादन कर एक ओर बैठ गई। एक ओर बैठी हुई मल्लिका देवी भगवान् से यह बोली—"भन्ते! इसका क्या कारण है, क्या हेतु है कि कोई-कोई स्त्री दुर्वर्ण होती है, कुरूप होती है, बदशक्ल होती है, दरिद्र होती है, उसकी अपनी कही जा सकने लायक वस्तुये उसके पास नही होती, अल्प भोग्य सामग्री वाली होती है, सगे सम्बन्धी भी अधिक नही होते? भन्ते! इसका क्या कारण है, क्या हेतु है कि कोई-कोई स्त्री दुर्वर्ण होती है, कुरूप होती है, बदशक्ल होती है, किन्तु धनी होती है, महान् सम्पत्ति शालिनी होती है, बहुत भोग्य-सामग्री वाली होती है तथा उसके सगे सम्बन्धी भी अधिक होते है? भन्ते! इसका क्या कारण है, क्या हेतु है कि कोई-कोई स्त्री सुन्दर

होती है, दर्शनीय होती है, वडे ही आकर्पक वर्णसे युक्त होती है, किन्तु दरिद्र होती है, उसकी अपनी कही जा सकने लायक वस्तुये उसके पास नही होती, अल्प भोग्य-सामग्री वाली होती है, सगे-सम्वन्धी भी अधिक नही होते ? भन्ते ! इसका क्या कारण है, क्या हेतु है कि कोई-कोई स्त्री सुन्दर होती है, दर्शनीय होती है, वडे ही आकर्पक वर्णसे युक्त होती है, साथ ही धनी होती है, महान् सम्पत्ति शालिनी होती है, वहुत भोग्य-सामग्री वाली होती है तथा उसके सगे-सम्वन्धी भी अधिक होते ह। ?"

"मल्लिके ! कोई कोई स्त्री क्रोधी-स्वभावकी होती है, अशान्त-स्वभावकी होती है, थोडी वात भी लग जाती है, कुपित हो जाती है, विगड खडी होती है, कठोर हो जाती है, वह कोप, द्वेष तथा असन्तोप प्रकट करती है। वह किसी श्रमण वा ब्राह्मणको अन्न, पान, वस्त्र, यान, माला-गन्ध-विलेपन, शयन, आवास तथा प्रदीपके देने वाली नही होती। वह ईर्षालु होती है, दूसरोको मिलने वाले लाभ-सत्कार-गौरव-मान्यता-वन्दना तथा पूजा आदिके विषयमे। वह जलती है, डाह करती है, वद्ध-वैरिणी हो जाती है। यदि वह वहाँसे च्युत होकर स्त्रीका जन्म ग्रहण करती है तो, वह जहाँ जहाँ भी जन्म ग्रहण करती है, दुर्वर्ण होती है, कुरूप होती है, वदशक्ल होती है, दरिद्र होती है, उसकी अपनी कही जा सकने लायक वस्तुये उसके पास नही होती, अल्प-भोग्य-सामग्री वाली होती है, सगे-सम्वन्धी भी अधिक नही होते।

"मल्लिके ! कोई कोई स्त्री क्रोधी-स्वभावकी होती है, अशान्त स्वभावकी होती है, थोडी वात भी लग जाती है, कुपित हो जाती है, विगड खडी होती है, कठोर हो जाती है, वह कोप-क्रोध-द्वेष तथा असन्तोप प्रकट करती है। किन्तु वह किसी श्रमण वा ब्राह्मणको अन्न, पान, वस्त्र, यान, माला-गन्ध-विलेपन, शयन, आवास (निवासस्थान) तथा प्रदीपके देनेवाली होती है। वह ईर्षालु नही होती, दूसरोको मिलने वाले लाभ-सत्कार गौरव-मान्यता-वन्दना तथा पूजा आदिके विपयमे। वह न जलती है, न डाह करती है, न वद्ध-वैरिणी होती है। यदि वह यहाँसे च्युत होकर स्त्रीका जन्म ग्रहण करती है, तो वह जहाँ जहाँ भी जन्म ग्रहण करती है, दुर्वर्ण होती है, कुरूप होती है, वदशक्ल होती है, किन्तु धनी होती है, महान् सम्पत्तिशालिनी होती है, वहुत भोग्य-सामग्रीवाली होती है तथा उसके सगे-सम्वन्धी भी अधिक होते है।

"मल्लिके ! कोई-कोई स्त्री क्रोधी-स्वभावकी नही होती है, शान्त स्वभावकी होती है, वहुत वात कहनेपर भी उसे नही लगती, कुपित नही होती, विगड खडी नही होती, कठोर नही होती, वह कोप-द्वेष तथा असन्तोष प्रकट नही करती। किन्तु वह

किसी श्रमण वा ब्राह्मणको अन्न, पान, वस्त्र, यान, माला-गन्ध-विलेपन, शयन, आवास (=निवासस्थान) तथा प्रदीप (सामग्री) के देनेवाली नही होती। वह ईर्षालु होती है, दूसरोको मिलने वाले लाभ-सत्कार-गौरव-मान्यता-वन्दना तथा पूजा आदिके विषयमें। वह जलती है, डाह करती है, वद्ध-वैरिणी होती है,। यदि वह यहांसे च्युत होकर स्त्रीका भी जन्म ग्रहण करती है तो वह जहां जहां भी जन्म ग्रहण करती है, सुन्दर होती है, दर्शनीय होती है, वडे ही आकर्षक वर्णसे युक्त होती है, किन्तु दरिद्र होती है, उसकी अपनी कही जा सकने लायक वस्तुयें उसके पास नही होती, अल्प-भोग्य-सामग्री वाली होती है, सगे-सम्बन्धी भी अधिक नही होते।

"मल्लिके! कोई-कोई स्त्री क्रोधी स्वभावकी नही होती है, शान्त स्वभावकी होती है, वहुत बात कहने पर भी उसे नही लगती, कुपित नही होती, विगड खडी नही होती, कठोर नही होती ; वह कोप द्वेष तथा असन्तोष प्रगट नही करती। साथ ही वह किसी श्रमण वा ब्राह्मणको अन्न, पान, वस्त्र, यान, माला-गन्ध-विलेपन, शयन, आवास (=निवासस्थान) तथा प्रदीप (-सामग्री) के देनेवाली होती है। वह ईर्षालु नही होती, दूसरोको मिलने वाले लाभ-सत्कार-गौरव-मान्यता-वन्दना तथा पूजा आदि के विषयमें। वह न जलती है, न डाह करती है, न वद्ध-वैरिणी होती है। यदि वह यहांसे च्युत होकर स्त्रीका जन्म ग्रहण करती है तो वह जहां जहां भी जन्म ग्रहण करती है, सुन्दर होती है, दर्शनीय होती है, वडे ही आकर्षक वर्णसे युक्त होती है, साथ ही वह धनी होती है, महान् सम्पत्ति-शालिनी होती है, वहुत भोग्य-सामग्री वाली होती है तथा उसके सगे-सम्बन्धी भी अधिक होते है।

"मल्लिके! इसका यही कारण है, यही हेतु है कि कोई कोई स्त्री दुर्वर्ण होती है, कुरूप होती है, व वदशक्ल होती है, दरिद्र होती है, उसकी अपनी कही जा सकने लायक वस्तुयें उसके पास नही होती, अल्प-भोग्य-सामग्री वाली होती है, सगे-सम्बन्धी भी अधिक नही होते। मल्लिके! इसका यही कारण है, यही हेतु है कि कोई कोई स्त्री दुर्वर्ण होती है, कुरूप होती है, वदशक्ल होती है, किन्तु धनी होती है; महान् सम्पत्तिशालिनी होती है, वहुत भोग्य सामग्री वाली होती है तथा उसके सगे-सम्वन्धी भी अधिक होते है। मल्लिके! इसका यही कारण है, यही हेतु है कि कोई कोई स्त्री सुन्दर होती है, दर्शनीय होती है, वडे ही आकर्षक वर्णसे युक्त होती है, किन्तु दरिद्र होती है, उसकी अपनी कही जा सकने लायक वस्तुयें उसके पास नही होती, अल्प-भोग्य-सामग्री वाली होती है, सगे-सम्वन्धी भी अधिक नही होते। मल्लिके! इसका यही कारण है, यही हेतु है कि कोई कोई स्त्री सुन्दर होती है, दर्शनीय होती है,

वडे ही आकर्षक वर्णसे युक्त होती है, साथ ही धनी होती है, महान् सम्पत्तिशालिनी होती है, वहुत भोग्य-सामग्री वाली होती है तथा उसके सगे सम्बन्धी भी अधिक होते है।"

भगवान्‌के ऐसा कहनेपर मल्लिका देवीने भगवान्‌को यह कहा—"भन्ते! क्योकि मै पूर्व जन्मम‍े क्रोधी-स्वभावकी थी, अशान्त-स्वभावकी थी, थोडी वात भी लग जाती थी, कुपित हो जाती थी, विगड खडी होती थी, कठोर हो जाती थी; मै कोप, द्वेष तथा असन्तोष प्रकट करती थी, इसीलिये मै अव दुर्वर्ण हूँ, कुरूप हूँ, वदशक्ल हूँ। भन्ते! क्योकि मैने पूर्व जन्ममें श्रमण अथवा ब्राह्मणको अन्न, पान, वस्त्र, यान, मालागन्ध-विलेपन, शयन, आवास (=निवासस्थान) तथा प्रदीप (—सामग्री) दी, इसीलिये मै अव धनी हूँ, महान् सम्पत्तिशालिनी हूँ, वहुत भोग्य-सामग्री वाली हूँ। भन्ते! क्योकि मै ईर्षालु नही थी, दूसरोको मिलने वाले लाभ-सत्कार-गौरव-मान्यता-वन्दना तथा पूजा आदिके विषयमे न मै जलती थी, न डाह करती थी, न वद्धवैरिणी होती थी। इसीलिये अव वहुतसे सगे-सम्बन्धी है। भन्ते इस राज-कुलमे क्षत्रिय-कन्याये भी है, ब्राह्मण-कन्याये भी है, गृहपति-कन्यायें (वैश्य-कन्यायें) भी है। मै उन पर ऐश्वर्य-अधिपत्य करती हूँ। भन्ते! मै अव आजके वाद क्रोध-रहित होकर रहूँगी, शान्त होकर रहूँगी, वहुत वात कही जानेपर भी मुझे न लगेगी, कुपित नही होऊँगी, विगड नही खडी होऊँगी, न कठोर होऊगी, मै कोप-द्वेष तथा असन्तोष प्रकट नही करूँगी। मै श्रमण-ब्राह्मणको अन्न-पान, वस्त्र, यान, माला-गन्ध-विलेपन, शैय्या, आवास (=निवासस्थान) तथा प्रदीप (सामग्री) दूंगी। मै ईर्षालु नही होऊँगी, दूसरोको मिलने वाले लाभ-सत्कार-गौरव-मान्यता-वन्दना तथा पूजा आदिके विषयमें। न जलूंगी, न डाह करूँगी और न वद्ध-वैरिणी वनूंगी। भन्ते वहुत सुन्दर, भन्ते! वहुत सुन्दर भन्ते! आजसे प्राण रहने तक आप मुझे अपनी शरणागत उपासिका माने।"

भिक्षुओ! दुनियामे चार तरहके लोग विद्यमान् है। कौनसे चार तरहके? 'भिक्षुओ, एक आदमी अपने को तपाने वाला होता है, अपनेको कष्ट देनेमे ही लगा हुआ, भिक्षुओ, एक आदमी दूसरोको तपाने वाला होता है, दूसरोको कष्ट देनेमें ही लगा हुआ, भिक्षुओ, एक आदमी अपने को तपाने वाला, अपनेको कष्ट देनेमे ही लगा हुआ है तथा दूसरोको भी तपाने वाला, दूसरोको कष्ट देनेमे ही लगा हुआ होता है; भिक्षुओ एक आदमी न अपनेको तपाने वाला, न अपनेको कष्ट देनेमे ही लगा होता है और न दूसरोको तपाने वाला, दूसरोको कष्ट देनेमे ही लगा होता है। जो न अपनेको

अनुतप्त करने वाला होता है, न दूसरेको अनुतप्त करने वाला होता है, वह इसी शरीरमे तृष्णा-विहीन होकर, निर्वृत होकर, शान्तभावको प्राप्त होकर, सुखका अनुभव करता हुआ, श्रेष्ठ-जीवन व्यतीत करता है।

"भिक्षुओ, एक आदमी अपनेको तपाने वाला, अपनेको कष्ट देनेमे ही लगा रहने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी नग्न होता है, शिष्टाचार-शून्य, हाथ चाटने वाला, 'भदन्त आये' कहनेपर न आनेवाला, 'भदन्त खडे रहे' कहनेपर खडा न रहने वाला, लाया हुआ न खाने वाला, उद्देश्यसे बनाया हुआ न खाने वाला और निमत्रण भी न स्वीकार करने वाला होता है। वह न घडेमेंसे दिया हुआ लेता है, न ऊखलमेंसे दिया हुआ लेता है, न किवाडकी ओटसे दिया हुआ लेता है, न मोढेके बीचमें आ जानेसे दिया हुआ, न डण्डेके बीचमे पड जानेसे लेता है, न मूसलके बीचमे आ जानेसे लेता है। वह दो जने खाते हो, उनमेंसे एक उठकर देनेपर नही लेता है, न गर्भिणीका दिया लेता है, न बच्चेको दूध पिलाती हुई का दिया लेता है, न पुरुषके पास गई हुई का दिया लेता है, न सग्रह किये हुए अन्नमेंसे पकाया हुआ लेता है, न जहाँ कुत्ता खडा हो वहांसे लेता है, न जहाँ मक्खिया उडती हो वहाँसे लेता है, वह न मछली खाता है, न मांस खाता है, न सुरा पीता है, न मेरय पीता है, न चावलका पानी पीता है। वह या तो एक ही घरमे लेकर खाने वाला होता है, या एक ही कौर खाने वाला, दो घरसे लेकर खाने वाला होता है वा दो ही कौर खाने वाला, सात घरोसे लेकर खाने वाला होता है या सात कौर खाने वाला।

वह एक ही छोटी-तश्तरीसे भी गुजारा करनेवाला होता है। वह दिनमे एक बार भी खानेवाला होता है, दो दिनमे एक बार भी खाने वाला होता है. सात दिनमें एक बार भी खाने वाला होता है , इस प्रकार वह पन्द्रह दिनमे एक बार खाकर भी रहता है। वह शाक खाने वाला भी होता है, स्यामाक (?) खाने वाला भी होता है, नीवार (धान) खाने वाला भी होता है, ददल (धान) खाने वाला भी होता है, हट (शाक) खानेवाला भी होता है, कणाज-भात खाने वाला भी होता है। वह आचाम खाने वाला भी होता है, खली खाने वाला भी होता है, तिनके (घास) खाने वाला भी होता है, गोबर खानेवाला भी होता है, जगलके पेडोसे गिरे फल-मूलको खाने वाला भी होता है।

वह सनके कपडे भी धारण करता है, सन-मिश्रित कपडे भी धारण करता है, शव-वस्त्र (कफन) भी पहनता है, फेंके हुए वस्त्र भी पहनता है, वृक्ष-विशेषकी छालके कपडे भी पहनता है, अजिन (-मृग) की खाल भी पहनता है, अजिन (-मृग)

की चमडीसे बनी पट्टियोंसे बुना वस्त्र भी पहनता है, कुशका बना वस्त्र भी पहनता है, छाल (वाक) का वस्त्र भी पहनता है, कलक (छाल) का वस्त्र भी पहनता है, केशोसे बना कम्बल भी पहनता है, पूँछके बालोका बना कम्बल भी पहनता है, उल्लुके परोका बना वस्त्र भी पहनता है।

वह केश-दाढीका लुँचन करने वाला भी होता है। वह बैठनेका त्याग कर, निरन्तर खडा ही रहने वाला भी होता है। वह उकडू बैठकर प्रयत्न करने वाला भी होता है, वह काँटोकी शैय्या पर सोने वाला भी होता है। प्रात, मध्याह्न, साय-दिनमे तीन बार पानीमे जाने वाला होता है। इस तरह वह नाना प्रकारसे शरीरको कष्ट-पीडा पहुँचाता हुआ विहार करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार एक आदमी अपनेको तपाने वाला, अपनेको कष्ट देनेमे ही लगा रहने वाला होता है।

भिक्षुओ, आदमी दूसरेको तपाने वाला, दूसरेको कष्ट देनेमे ही लगा रहने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी भेडोको मारने वाला होता है, सूअरोको मारने वाला होता है, पक्षियोको मारने वाला होता है, मृगोको मारने वाला होता है, क्रूर होता है, मछलियोको मारने वाला होता है, चोर होता है, जल्लाद होता है, जेलर होता है तथा और भी जो जो क्रूर कर्म करने वाले है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी दूसरेको तपाने वाला, दूसरे को कष्ट देनेमे ही लगा रहने वाला होता है।

भिक्षुओ, आदमी कैसे अपनेको तपानेवाला, अपनेको कष्ट देनेमे ही लगा रहने वाला तथा दूसरेको तपाने वाला, दूसरेको कष्ट देनेमे ही लगा रहने वाला होता है? भिक्षुओ, एक आदमी या तो मुकुटधारी क्षत्रिय राजा होता है या सम्पत्तिशाली ब्राह्मण होता है। वह नगरके पूर्वकी ओर तथा नया सभा-भवन (= सन्थागार) बनवाता है। वह शिर दाढी मुडवाकर, मृग-छाल पहन, मक्खन-तेल शरीरपर मल, हिरणके सीगसे पीठको खुजलाते हुए, रानी और ब्राह्मण-पुरोहितके साथ सभा भवनमे प्रवेश करता है। वहाँ दूब बिखेरी हुई वा गोबर लिपि हुई नगी धरतीपर लेट जाता है। तब अपने रग जैसे बछडे वाली गौके एक स्तनमें जितना दूध होता है, वह राजा पीता है, जो दूसरे स्तनका दूध होता है, वह रानी पीती है, जो तीसरे स्तनका दूध होता है उसे ब्राह्मण-पुरोहित पीता है और जो चौथे स्तनका दूध होता है, उससे अग्नि-होम किया जाता है। शेष दूधको बछडा पीता है। वह (राजा) कहता है कि यज्ञके लिये इतने वृषभ मारे जाये, यज्ञके लिये इतने बछडे मारे जाये, यज्ञके लिये इतनी बछडियाँ मारी जाये, यज्ञ (-स्तूप) के लिये इतने पेड काटे जाये, यज्ञकी घासके लिये इतनी दूब (-घास) छीली जाय। उसके लिये जितने भी दास होते है,

जितने भी सन्देश-वाहक होते हैं, जितने भी कर्मकार होते हैं, वे सभी दण्डसे तर्जित होनेके कारण, भयसे भयभीत होनेके कारण आँसू बहाते हुए, रोते-पीटते उन उन कामोको करते है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी अपनेको तपाने वाला, अपनेको कष्ट देनेमें ही लगा रहने वाला तथा दूसरेको तपाने वाला, दूसरेको कष्ट देनेमे ही लगा रहने वाला होता है।

भिक्षुओ, आदमी न अपने को तपाने वाला, न अपनेको कष्ट देनेमे लगा रहने वाला, न दूसरोको तपाने वाला, न दूसरोको कष्ट देनेमें लगा रहने वाला कैसे होता है? जो न अपनेको अनुतप्त करने वाला होता है, वह इसी शरीरमें तृष्णा-विहीन होकर निर्वृत्त होकर, शान्त भावको प्राप्त होकर, सुखका अनुभव करता हुआ, श्रेष्ठ-जीवब व्यतीत करता है।

भिक्षुओ, तथागत लोकमे उत्पन्न होते है, अर्हत, सम्यक्-सम्वुद्ध, विद्या तथा आचरणसे युक्त, सुगति प्राप्त, लोकके जानकार, अनुपम, (अविनीत) पुरुषोका दमन करने वाले सारथी, देवताओ तथा मनुष्योके शास्ता वुद्ध भगवान। वह देव-मार-ब्रह्म-सहित लोकको, श्रमण-ब्राह्मणोसे युक्त जनता को, देवताओ तथा मनुष्योको स्वय जानकर साक्षात् कर (धर्मकी) घोपणा करते है। वह ऐसे धर्मका उपदेश करते है जो आदिमें कल्याणकारक है, मध्यमें कल्याणकारक है, अन्तमे कल्याणकारक है। वह शब्दो और उनके अर्थ सहित सम्पूर्ण रूपसे परिशुद्ध ब्रह्मचर्यका प्रकाश करते है। उस धर्मको कोई गृहपति अथवा गृहपति-पुत्र सुनता है, अथवा अन्य किसी कुलमें उत्पन्न हुआ कोई सुनता है। उस अर्थको सुनकर वह तथागतके प्रति श्रद्धावान् हो जाता है। उस श्रद्धा से युक्त होनेपर वह सोचता है—गृहस्थीमें वडी बाधाये है, यह धूल-पथ है, प्रव्रज्या खुला आकाश है। घरमे रहते हुए सम्पूर्ण रूपसे शखके समान परिशुद्ध श्रेष्ठ जीवन व्यतीत करना आसान नही। मैं क्यो न केश-मूंछ मुडाकर, कापाय वस्त्र पहनकर, घरसे वेघर हो प्रव्रजित हो जाऊ? वह आगे चलकर थोडी धन-सम्पत्ति को छोड अथवा वहुत धन-सम्पत्तिको छोड, थोड सगे-सम्वोन्धियोको छोड अथवा वहुतसे सगे-सम्वन्धियोको छोड केश-मुंछ मुडा, कापाय वस्त्र पहन घरसे वेघर हो प्रव्रजित हो जाता है। इस प्रकार प्रव्रजित हो वह भिक्षुओकी शिक्षा और जीवनका अभ्यासी वन प्राणी-हिंसाको छोड जीव-हिंसासे विरत होता है—दण्ड त्यागी, शस्त्र-त्यागी, लज्जाशील, दयावान्, सभी प्राणियोका हित चाहने वाला, उनपर अनुकम्पा करने वाला। वह चोरी करना छोड, चोरी करनेसे विरत हो विहार करता है, वह कोई चीज दी जानेपर ही लेने वाला, दी जाने वाली चीज की ही आकाक्षा करने

वाला, चौर्य-रहित पवित्र जीवन व्यतीत करने वाला। वह अब्रह्मचर्यको छोड ब्रह्मचारी हो विहार करता है, (दुश्शीलतासे) दूर रहने वाला, ग्राम्य मैथुन-धर्मसे विरत। मृषावादको छोड मृषावादसे रहित हो विहार करता है, सत्यवादी, विश्वसनीय, यथार्थवादी, यकीन करने योग्य, लोकमे झूठा व्यवहार न करने वाला। वह चुगली खाना छोड, चुगली खानेसे विरत हो विहार करता है, वह यहाँ सुनकर वहाँ नही कहता कि यहाँ वालो मे भेद पैदा हो जाय, वहाँ सुनकर यहाँ नही कहता कि वहाँ वालोमे भेद पैदा हो जाय। वह विछुडे हुओको मिलाने वाला होता है, मिले हुओका मेल वढाने वाला होता है। वह एकताको प्यार करने वाला, एकतामे रत रहने वाला, एकतामे आनन्द मनाने वाला, एकतामे वृद्धि लाने वाली वातका ही वोलने वाला होता है। वह कठोर वोलना छोडकर कठोर-वोलनेसे विरत होता है। जो वाणी मधुर होती है, कर्ण-सुख होती है, प्रेम भरी होती है, हृदयको अच्छी लगने वाली होती है, विनम्र होती है, वहुत जनोको सुन्दर लगने वाली होती है, वहुत जनोको अच्छी लगने वाली होती है—वैसी वाणी वोलने वाला होता है। वह बेकार वोलना छोड, बेकार वातचीतसे विरत हो विहार करता है—समयोचित वोलने वाला, सत्य वोलने वाला, हितकर वात वोलने वाला, धर्मकी वात वोलने वाला, विनयकी वात वोलने वाला, निधि सदृश वचन मुँहसे निकालने वाला होता है। वह समय पर वोलता है, तर्कानुकूल वोलता है, सीमित वोलता है तथा प्रयोजनकी वात वोलता है। वह वीजो और वनस्पतियोको नष्ट करनेसे विरत होता है। वह एक वार भोजन करने वाला होता है, रात्रिके भोजनको त्यागे हुए, विकाल भोजनसे विरत रहने वाला। वह नाच-गान-वाजा-तमाशा देखने आदिसे विरत रहने वाला होता है। वह माला, सुगन्धियो-लेपो तथा अन्य शारीरिक सजावटोमे विरत रहने वाला होता है। वह ऊँची शैय्याओंसे ऊँचे ऊँचे पलगोसे विरत रहने वाला होता है। वह सोने-चादीको स्वीकार नही करने वाला होता है। वह कच्चे अनाजोको अस्वीकार करने वाला होता है। वह कच्चे मासको अस्वीकार करने वाला होता है। वह स्त्रियो तथा कुमारियोको अस्वीकार करने वाला होता है। वह दास-दासियोको अस्वीकार करने वाला होता है। वह वकरी-भेडोको अस्वीकार करने वाला होता है। वह मुर्गी सूअरोको अस्वीकार करने वाला होता है। वह हाथी-वैल-घोडे घोडियोको अस्वीकार करने वाला होता है। वह खेत-पुष्करिणी आदिको अस्वीकार करने वाला होता है। वह सदेशवाहक दूत आदिका काम न करने वाला होता है। वह क्रय-विक्रयसे विरत रहने वाला होता है। वह तराजू सम्वन्धी वचना, सोनेकी थालीको लेकर वचना,

तथा घी-तेल आदि मापोको लेकर वचना करनेसे विरत होता है। उक्कोटन आदि नाना प्रकार की ठगियोंसे विरत रहता है। वह काटना, मारना, बाँधना, लूटना तथा डाका डालना आदि दुस्साहसिक क्रियाओंसे विरत होता है।

वह शरीरके आधार चीवर तथा पेटके आधार भिक्षापात्रमे सतुष्ट होता है। वह जहाँ जहाँ भी जाता है अपने चीवर तथा भिक्षापात्रको साथ लेकर ही जाता है। जैसे एक पक्षी जहाँ जहाँ भी उडकर जाता है अपने पखो के बलपर ही उडकर जाता है, इसी प्रकार वह भिक्षु शरीरके आधार चीवर तथा पेटके आधार भिक्षा-पात्रसे सतुष्ट होता है। वह जहाँ जहाँ भी जाता है अपने चीवर तथा भिक्षापात्रको साथ लेकर ही जाता है। वह इस आर्य-शीलसे युक्त होनेके कारण अपने भीतर निर्दोपता सुखका अनुभव करता है।

वह चक्षुसे 'रूप' को देखकर न उसके आकर-प्रकारको सपूर्ण रूपसे ग्रहण करता है और न उसके ब्योरेमे जाता है। क्योकि कही चक्षुके असयमसे लोभ-द्वेप आदि अकुशल पाप-मय ख्याल घर न कर ले। उन पापमय विचारोको दूर रखनेके लिये प्रयत्न करता है, अपनी आँखोको काबूमे रखता है, अपनी आँखपर सयम रखता है। वह अपने कानसे सुन्दर शब्द सुनता है नासिकासे सुगन्धि सूँघता है, जिह्वासे रस चखता है शरीरसे स्पर्श करता है मनसे सोचता है अपने मनको काबूमें रखता है, अपने मन पर सयम रखता है। वह इस आर्य इन्द्रिय-सयमसे युक्त होनेके कारण अपने भीतर निर्मलता-सुखका अनुभव करता है। वह भिक्षु जानते हुए आता-जाता है, , जानते हुए देखता-भालता है, जानते हुए सिकोडता-फैलाता है, जानते हुए सघाटी-पात्र-चीवरको धारण करता है, जानते हुए असन, पान, स्वादन, आस्वादन करता है, जानते हुए पाखाना-पेशाब करता है, जानते हुए चलता, खडा रहता, बैठता, सोता, जागता, बोलता, चुप रहता है।

वह इस आर्य शील-स्कन्धसे युक्त होकर, इस आर्य इन्द्रिय-सयमसे युक्त होकर तथा इस आर्य स्मृति-सम्प्रजन्मसे युक्त होकर एकान्त शयनासन ग्रहण करता है,- जैसे आरण्य, वृक्षकी छाया, पर्वत, कदरा, गुफा, श्मशान, जगल, खुला आकाश तथा पुवालका ढेर। वह पिण्ड-पातसे लौट, भोजन कर चुकनेपर पालथी मार, शरीरको सीधा रख स्मृतिको सामने कर बैठता है।

वह सासारिक लोभोको छोड लोभ-रहित चित्त वाला हो विचरता है। चित्तसे लोभको दूर करता है। वह क्रोधको छोड, क्रोध-रहित चित्त वाला हो, सभी प्राणियोपर दया करता हुआ विचरता है। चित्तसे क्रोध को दूर करता

है। वह आलस्यको छोड, आलस्यसे रहित हो, रोशन-दिमाग (=आलोक सञी)-स्मृति तथा ज्ञानसे युक्त हो विचरता है। वह चित्तसे आलस्यको दूर करता है। वह उद्धतपने तथा पछतावेको छोड उद्धतता रहित शान्त-चित्त हो विचरता है। चित्तसे उद्धतताको दूर करता है। वह सशय को छोड सशय-रहित हो विचरता है। वह अच्छी बातो (=कुशल-धर्मों) के विषयमे सदेह-रहित होता है। चित्तसे सन्देहको दूर करता है।

वह भिक्षु चित्तके उपक्लेश, प्रज्ञाको दुर्बल करने वाले, पाँच बधनोको छोड काम-वितर्कसे रहित हो . चतुर्थ-ध्यानको प्राप्तकर विहार करता है।

जब भिक्षुका चित्त इस प्रकार एकाग्र हो जाता है, परिशुद्ध हो जाता है, निर्मल हो जाता है, निर्दोष हो जाता है, उपक्लेशोसे रहित हो जाता है, कोमल हो जाता है, कमनीय हो जाता है तथा स्थिर हो जाता है तो वह अपने चित्तको पूर्व जन्मानु-स्मृति ज्ञानकी ओर प्राणियोके जन्म-मरण सम्बन्धी ज्ञानके लिये आस्रवोके क्षय ज्ञानकी ओर मोडता है। 'यह दु ख है' इसे वह यथार्थ रूपसे जानता है। 'यह दु ख समुदय है' इसे वह यथार्थ रूपसे जानता है। 'यह दु ख निरोध है' इसे वह यथार्थ रूपसे जानता है। 'यह दु ख निरोध-गामिनी-प्रतिपदा है' इसे वह यथार्थ रूपसे जानता है। 'ये आस्रव है' इसे वह यथार्थ रूपसे जानता है। 'ये आस्रव समुदय है' इसे वह यथार्थ रूपसे जानता है। 'ये आस्रव निरोध है', इसे वह यथार्थ रूपसे जानता है। 'ये आस्रव-निरोध-गामिनी-प्रतिपदा है' इसे वह यथार्थ रूपसे जानता है। उसको ऐसी दृष्टि प्राप्त हो जानेपर वह कामास्रवोसे मुक्त हो जाता है, भवास्रवोंसे मुक्त हो जाता है, अविद्यास्रवोसे मुक्त हो जाता है। मुक्त होनेपर मुक्त होनेका ज्ञान हो जाता है। वह यह जान जाता है कि अब जन्मोका ग्रहण करना क्षीण हो गया, श्रेष्ठ-जीवन-वास पूरा हो गया, जो करणीय था वह कृत हो गया अब फिर इस जन्म-मरणके चक्करमे पडनेकी गुँजायश नही रही। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी न अपनेको तपाने वाला, न अपनेको कष्ट देनेमें लगा रहने वाला, न दूसरोको तपाने वाला, न दूसरोको कष्ट देनेमें लगा रहने वाला होता है। जो न अपनेको अनुतप्त करने वाला होता है, वह इसी शरीरमें तृष्णा-विहीन होकर, निर्वृत्त होकर, शान्त भावको प्राप्त होकर, सुखका अनुभव करता हुआ श्रेष्ठ-जीवन व्यतीत करता है। भिक्षुओ, दुनियामे ये चार तरहके लोग विद्यमान है।

भिक्षुओ, मैं तृष्णाके बारेमे कहता हू, जो जाल-रूप है, जो स्रोत-रूप है, जो फैली हुई है, जो आसक्ति-रूप है। यह लोक इस तृष्णा के कारण ध्वस्त है, चारो ओरसे

जकडा हुआ है, तात की तरह उलझा हुआ है, धागेके गोले की तरह उलझा हुआ है, मूंज या वव्वड के तिनको की तरह उलझा हुआ है और इसी लिये यह अपाय, दुर्गति, पतन तथा जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त नही होता। यह सुनो। भगवान ने (आगे) यह कहा, भिक्षुओ, कौनसी है वह तृष्णा जो जाल-रूप है, जो स्रोत-रूप है, जो फैली हुई है, जो आसक्ति-रूप है और जिसके कारण यह लोक ध्वस्त है, चारो ओरसे जकडा हुआ है, तातकी तरह उलझा हुआ है, धागेके गोलेकी तरह उलझा हुआ है, मूंज या वव्वडके तिनकोकी तरह उलझा हुआ है और इसीलिये यह अपाय, दुर्गति, पतन तथा जन्म-मरणके चक्करसे मुक्त नही होता?

भिक्षुओ, तृष्णाके अठारह विचरण अपने भीतरी जीवन पर आश्रित है और तृष्णा के अठराह विचरण अपने से वाहरी वातो पर आश्रित है। भिक्षुओ अपने भीतरी जीवन पर आश्रित रहने वाले तृष्णा के अठारह विचरण कौन से है? मै हूँ— यह तृष्णा का एकरूप है। मै ऐसा हूँ— यह तृष्णा का दुसरा रूप है। मै वैसा हूँ— यह तृष्णा का तीसरा रूप है। मै दूसरी प्रकार का हूँ—यह तृष्णा का चौथा रूप है। मै वना रहने वाला हूँ—यह तृष्णा का पाचवां रूप है। मै समाप्त हो जाने वाला हूँ—यह तृष्णा का छठा रूप है। क्या मै हूँ?—यह तृष्णाका सातवां रूप है। क्या मै ऐसा हूँ?—यह तृष्णाका आठवां रूप है। क्या मैं वैसा हूँ?—यह तृष्णाका नौवां रूप है। क्या मै दूसरी प्रकारका हूँ?—यह तृष्णाका दसवां रूप है। कही मै होता—यह तृष्णाका ग्यारहवां रूप है। कही मै होता! कही मै ऐसा होता!—यह तृष्णाका वारहवां रूप है। क्या मै वैसा ऐसा होता—यह तृष्णाका तेरहवां रूप है। कही मै दूसरी तरहसे होता—यह तृष्णाका चौदहवां रूप है। मै होऊँगा—यह तृष्णाका पन्द्रहवां रूप है—मै ऐसा होऊँगा—यह तृष्णाका सोलहवां रूप है। मै वैसा होऊँगा—यह तृष्णाका सत्रहवां रूप है। मै दूसरी प्रकारका होऊँगा—यह तृष्णाका अठारहवां रूप है। भिक्षुओ, ये तृष्णाके अठारह विचरण है, जो अपने भीतरी जीवनपर आश्रित है। भिक्षुओ, तृष्णाके अठारह विचरण कौनसे है जो अपनेसे वाहरी वातोपर आश्रित है? इससे मै हूँ—यह तृष्णाका एक रूप है। इससे ऐसा होता है—यह तृष्णाका दूसरा रूप है। इससे वैसा होता है—यह तृष्णाका तीसरा रूप है। इससे दूसरी प्रकारका होता है—यह तृष्णाका चौथा रूप है। यह वना रहने वाला है—यह तृष्णाका पांचवां रूप है। यह समाप्त हो जाने वाला है—यह तृष्णाका छठा रूप है। क्या यह है?—यह तृष्णाका सातवां रूप है। क्या यह ऐसा है?—यह तृष्णाका आठवां रूप है। क्या यह वैसा है?—यह तृष्णाका नौवां रूप है।

क्या यह दूसरी प्रकारका है?—यह तृष्णाका दसवाँ रूप है। कही यह होता—यह तृष्णाका ग्यारहवाँ रूप है। कही यह ऐसा होता—यह तृष्णाका वारहवाँ रूप है। कही यह वैसा होता—यह तृष्णाका तेरहवाँ रूप है। कही यह दूसरी प्रकारका होता —यह तृष्णाका चौदहवाँ रूप है। यह होता—यह तृष्णाका पन्द्रहवाँ रूप है। यह ऐसा होगा—यह तृष्णाका सोलहवाँ रूप है। यह वैसा होगा—यह तृष्णाका सत्रहवाँ रूप है। यह दूसरी प्रकारका होगा—यह तृष्णाका अट्ठारहवाँ रूप है। भिक्षुओ, ये तृष्णाके अट्ठारह विचरण हैं जो अपनेसे वाहरी वातोपर आश्रित हैं। इस प्रकार ये अट्ठारह विचरण तो ऐसे है जो अपने भीतरी वातोपर आश्रित हैं और दूसरे अट्ठारह विचरण ऐसे हैं जो अपनेसे वाहरी वातोपर आश्रित है। भिक्षुओ, ये तृष्णाके छत्तीस विचरण कहलाते हैं। इस प्रकार ये अतीत, अनागत तथा वर्तमान भेदसे ३६×३=१०८ एक सौ आठ तृष्णा-विचरण होते हैं। भिक्षुओ, यही है वह तृष्णा जो जालरूप है, जो स्रोतरूप है, जो फैली हुई है, जो आसक्ति-रूप है और जिसके कारण ये लोक ध्वस्त है, चारो ओरसे जकडा हुआ है, ताँतकी तरह उलझा हुआ है, धागेके गोलेकी तरह उलझा हुआ है, मूंज या वव्वडके तिनकोकी तरह उलझा हुआ है, और इसीलिये यह अपाय, दुर्गति, पतन तथा जन्म-मरणके चक्करसे मुक्त नही होता।

भिक्षुओ, ये चार उत्पन्न होते हैं। कौनसे चार? प्रेमसे प्रेम होता है, प्रेमसे द्वेष उत्पन्न होता है, द्वेषसे प्रेम होता है तथा द्वेष-से-द्वेप उत्पन्न होता है। भिक्षुओ प्रेमसे प्रेम कैसे पैदा होता है? भिक्षुओ, एक आदमीको दूसरा आदमी इष्ट होता है, प्रिय होता है, अच्छा लगने वाला होता है। दूसरे आदमी भी उसे चाहते हैं, उससे, प्रेम करते हैं, उससे अच्छा व्यवहार करते हैं। उस आदमीको होता है कि जो आदमी मुझे इष्ट है, प्रिय है, अच्छा लगता है, दूसरे भी उसे चाहते है, उससे प्रेम करते है, तथा उससे अच्छा व्यवहार करते है। वह उन आदमियोको प्रेम करने लग जाता है। भिक्षुओ इस प्रकार प्रेमसे प्रेम उत्पन्न होता है।

भिक्षुओ, प्रेमसे द्वेष कैसे पैदा होता है? भिक्षुओ, एक आदमीको दूसरा आदमी इष्ट होता है, प्रिय होता है, अच्छा लगनेवाला होता है। दूसरे आदमी न उसे चाहते है, न उससे प्रेम करते है और न उससे अच्छा व्यवहार करते है। उस आदमीको होता है कि जो आदमी मुझे इष्ट है, प्रिय है, अच्छा लगता है, दूसरे न उसे चाहते है, न उससे प्रेम करते है और न उससे अच्छा व्यवहार करते है। वह उन आदमियोंसे द्वेष करने लग जाता है। भिक्षुओ, इस प्रकार प्रेमसे द्वेष उत्पन्न होता है।

भिक्षुओ, द्वेपसे प्रेम कैसे पैदा होता है? एक आदमी दूसरेको न चाहता है, न उससे प्रेम करता है, न उससे अच्छा व्यवहार करता है। दूसरे भी उस आदमीको न चाहते हैं, न उससे प्रेम करते है और न उससे अच्छा व्यवहार करते है। उस आदमीको होता है कि जिस आदमीको न मै चाहता हूँ, न उससे प्रेम करता हूँ और न उससे अच्छा व्यवहार करता हूँ, दूसरे भी उस आदमीको न चाहते हैं, न उससे प्रेम करते हैं और न उससे अच्छा व्यवहार करते हैं। वह उन आदमियोंसे प्रेम करने लग जाता है। भिक्षुओ, इस प्रकार द्वेपसे प्रेम होता है।

भिक्षुओ, द्वेषसे द्वेप कैसे पैदा होता है? एक आदमी दूसरेको न चाहता है, न उससे प्रेम करता है, न उससे अच्छा व्यवहार करता है। किन्तु दूसरे उस आदमीको चाहते है, उससे प्रेम करते है और उससे अच्छा व्यवहार करते हैं। उस आदमीको होता है कि जिस आदमीको न मै चाहता हूँ, न उससे प्रेम करता हूँ और न उससे अच्छा व्यवहार करता हूँ, दूसरे उस आदमीको चाहते है, उससे प्रेम करते हैं और उससे अच्छा व्यवहार करते है। वह उन आदमियोंसे द्वेप करने लग जाता है। भिक्षुओ, इस प्रकार द्वेपसे द्वेप उत्पन्न हो जाता है। भिक्षुओ, ये चार उत्पन्न होते है।

भिक्षुओ, जिस समय भिक्षु काम-भोगोंसे रहित हो . प्रथम-ध्यानको प्राप्त करता है, तो जो प्रेमसे प्रेम पैदा होता है, वह भी उस समय नही होता, जो प्रेमसे द्वेप पैदा होता है वह भी उस समय नही होता, जो द्वेपसे प्रेम पैदा होता है वह भी उस समय नही होता, जो द्वेपसे द्वेप पैदा होता है, वह भी उस समय नही होता। भिक्षुओ, जिस समय भिक्षु वितर्क-विचारोका उपशमन होनेपर द्वितीय-ध्यान तृतीय-ध्यान चतुर्थ-ध्यान प्राप्त कर विहार करता है तो जो प्रेमसे प्रेम पैदा होता है वह भी उस समय नही होता, जो प्रेमसे द्वेप पैदा होता है वह भी उस समय नही होता, जो द्वेपसे प्रेम पैदा होता है वह भी उस समय नही होता, जो द्वेपसे द्वेष पैदा होता है वह भी उस समय नही होता। भिक्षुओ, जिस समय भिक्षु आस्रवोका क्षय कर, अनास्रव चित्त-विमुक्ति प्रज्ञा-विमुक्ति इसी जन्ममे स्वय जानकर साक्षात् कर विहार करता है तो जो प्रेमसे प्रेम पैदा होता है वह उस समय प्रहीण हुआ रहता है, जडसे खुदा रहता है, कटे ताड वृक्षके समान हुआ रहता है, अभाव प्राप्त हुआ रहता है, भविष्यमे इसकी उत्पत्तिकी कोई सम्भावना नही रहती, जो प्रेमसे द्वेष पैदा होता है वह भी प्रहीण हुआ रहता है, जडसे खुदा रहता है, कटे ताड वृक्षके समान हुआ रहता है, अभाव-प्राप्त हुआ रहता है, भविष्यमें इसकी उत्पत्तिकी कोई सम्भावना नही रहती, जो द्वेपसे प्रेम पैदा होता है वह भी प्रहीण हुआ रहता है,

जडसे खुदा रहता है, कटे ताड वृक्षके समान हुआ रहता है, अभाव-प्राप्त हुआ रहता है, भविष्यमे इसकी उत्पत्तिकी कोई सम्भावना नही रहती, जो द्वेपसे द्वेप पैदा होता है, वह भी प्रहीण हुआ रहता है, जडसे खुदा रहता है, कटे ताड-वृक्षके समान हुआ रहता है, अभाव-प्राप्त हुआ रहता है।

भिक्षुओ, ऐसे ही भिक्षुके वारेमे कहा जाता है कि वह न प्रेम करता है, न घृणा करता है, न धुँआ छोडता है, न प्रज्वलित होता है और न चिन्ता करता रहता है।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे प्रेम करता है? भिक्षुओ, भिक्षु 'रूप' को अपना आप करके देखता है अथवा अपने आपको रूप-वाला समझता है, अपने आपमे 'रूप' समझता है, अथवा अपने आपको रूपमे समझता है, वेदनाको अपना-आप करके देखता है, अथवा अपने-आपको वेदना-वाला करके समझता है, अपने आपमे वेदना समझता है, अथवा अपने आपको वेदनामे समझता है, सज्ञाको अपना-आप करके देखता है, अथवा अपने-आपको सज्ञा-वाला करके देखता है, अपने-आपमे सज्ञा समझता है, अथवा अपने-आपको सज्ञामे समझता है, सस्कारोको अपना-आप करके देखता है, अथवा अपने-आपको सस्कारो वाला करके देखता है, अपने-आपमे सस्कारोको समझता है, अथवा अपने आपको सस्कारोमे समझता है, विज्ञानको अपना-आप करके देखता है अथवा अपने-आपको विज्ञान-वाला करके देखता है, अपने-आपमें विज्ञानको देखता है अथवा अपने आपको विज्ञानमे देखता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु प्रेम करता है।

भिक्षुओ, भिक्षु प्रेम नही कैसे करता है? भिक्षुओ, भिक्षु 'रूप' को अपना-आप करके नही देखता है अथवा अपने आपको रूप-वाला नही समझता है, अपने आपमें रूप नही समझता है, अथवा अपने-आपको रूपमें नही समझता है, वेदनाको अपना-आप करके नही देखता है, अथवा अपने आपको वेदना-वाला नही समझता है, अपने-आपमे वेदना नही समझता है, अथवा अपने आपको वेदनामे नही समझता है, सज्ञाको अपना-आप करके नही देखता है, अथवा अपने आपको सज्ञा वाला नही समझता है, अपने-आपमे सज्ञा नही समझता है, अथवा अपने-आपको सज्ञामे नही समझता है, सस्कारोको अपना आप करके नही देखता है, अथवा अपने-आपको सस्कार वाला करके नही देखता है, अपने आपमे सस्कारोको नही समझता है अथवा अपने आपको सस्कारोमे नही समझता है, विज्ञानको अपना-आप करके नही देखता है, अथवा अपने-आपको विज्ञान-वाला करके नही देखता है, अपने आपमे विज्ञान नही

समझता है अथवा अपने आपको विज्ञानमे नही समझता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु प्रेम नही करता है।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे घृणा करता है? भिक्षुओ, भिक्षु गाली देने वालेको गाली देता है, गुस्से होने वालेसे गुस्सा होता है, झगडा करने वालेसे झगडा करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु घृणा करता है।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे घृणा नही करता है? भिक्षुओ, भिक्षु गाली देने वालेको गाली नही देता है, गुस्से होने वालेसे गुस्से नही होता है, झगडा करने वालेसे झगडा नही करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु, घृणा नही करता है।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे धुआँ छोडता है? भिक्षुओ, उसे होता है 'मै हूँ', उसे होता है मै ऐसा हूँ उसे होता है, दूसरी प्रकारके होगे। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु धुआँ छोडता है। भिक्षुओ, भिक्षु कैसे धुआँ नही छोडता है? भिक्षुओ, उसे नही होता है, 'मै हूँ', उसे नही होता है, मै ऐसा हूँ उसे नही होता है दूसरी प्रकारके होगे। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु धुआँ नही छोडता है।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे प्रज्वलित होता है? भिक्षुओ, उसे होता है 'इससे मै हूँ', उसे होता है 'इससे ऐसा होता है उसे होता है, इससे दूसरी प्रकारके होगे। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु प्रज्वलित होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे प्रज्वलित नही होता है? भिक्षुओ, उसे नही होता है, 'इससे मैं हूँ', उसे नही होता है, 'इससे ऐसा होता है' उसे नही होता है 'इससे दूसरी प्रकारके होगे।' भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु प्रज्वलित नही होता।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे चिन्ता करता रहता है? भिक्षुओ, भिक्षुका अहकार प्रहीण हुआ नही रहता, . . . इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु चिन्ता करता रहता है। भिक्षुओ, भिक्षु कैसे चिन्ता नही करता रहता है? भिक्षुओ, भिक्षुका अहकार प्रहीण हुआ करता है, जडसे खुदा रहता है, कटे ताडके वृक्षके समान हुआ रहता है, अभाव-प्राप्त हुआ रहता है, भविष्यमें पुनरुत्पत्तिकी कोई सम्भावना नही रहती, भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु चिन्ता नही करता।

भिक्षुओ, असत्पुरुषके बारेमें देशना करता हूँ तथा असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर के बारेमे। सत्पुरुषके बारेमें देशना करता हूँ, वैसे ही सत्पुरुषसे सत्पुरुषतरके बारेमें।

भिक्षुओ, सुनो। ध्यान दो। मैं कहता हूँ। भिक्षुओने 'बहुत अच्छा' कहकर भगवान् बुद्धको प्रतिवचन दिया। भगवान्ने इस प्रकार कहा—'भिक्षुओ, असत्पुरुष किसे कहते हैं?' भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, व्यभिचार करने वाला होता है, झूठ बोलने वाला होता है तथा सुरा-मेरय आदि नशीली चीजें ग्रहण करने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुष कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय प्राणी-हिंसा करने वाला होता है तथा दूसरोको प्राणी-हिंसाकी प्रेरणा करता है, अपने चोरी करने वाला होता है तथा दूसरोको चोरी करनेकी प्रेरणा करने-वाला होता है,अपने व्यभिचारी होती है तथा दूसरोको व्यभिचारकी प्रेरणा करने वाला होता है,अपने झूठ बोलने वाला होता है तथा दूसरोको झूठ बोलनेकी प्रेरणा करने वाला होता है, अपने सुरा-मेरय आदि नशीली चीजें ग्रहण करने वाला होता है तथा दूसरोको सुरा-मेरय आदि नशीली चीजें ग्रहण करनेकी प्रेरणा करने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर होता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुष किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसासे विरत रहता है, चोरीसे विरत रहता है, व्यभिचारसे विरत रहता है, झूठ बोलनेसे विरत रहता है तथा सुरा-मेरय आदि नशीली चीजें ग्रहण करनेसे विरत रहता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुष कहलाता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुषसे सत्पुरुषतर किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय प्रांणी-हिंसासे विरत रहता है, तथा दूसरोको प्राणी-हिंसासे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वय चोरी करनेसे विरत रहता है तथा दूसरोको चोरी करनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वय व्यभिचार करनेसे विरत रहता है तथा दूसरोको व्यभिचार करनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा देता है, स्वय झूठ बोलनेसे विरत रहता है तथा दूसरोको झूठ बोलनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा देता है, स्वय सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोको ग्रहण करनेसे विरत रहता है तथा दूसरोको सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोको ग्रहण करनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुषसे सत्पुरुपतर कहलाता है?

भिक्षुओ, असत्पुरुषके बारेमें देशना करता हूँ तथा असत्पुरुषसे असत्पुरुपतर के बारेमे। सत्पुरुषके बारेमें देशना करता हूँ, वैसे ही सत्पुरुपमे सत्पुरुपतरके बारेमे।

भिक्षुओ, सुनो भिक्षुओ, असत्पुरुष किसे कहते है ? भिक्षुओ, एक आदमी अश्रद्धावान् होता है, निर्लज्ज होता है, (पाप–) भीरु नही होता, अनुत्साही होता है, आलसी होता है, मूढ-स्मृति होता है, दुष्प्रज्ञ होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुष कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर किसे कहते है ?

भिक्षुओ, एक आदमी स्वय अश्रद्धावान् होता है तथा दूसरोको अश्रद्धाकी ओर प्रेरित करता है, स्वय निर्लज्ज होता है तथा दूसरोको निर्लज्जपनकी ओर प्रेरित करता है, स्वय (पाप –) भीरु नही होता तथा दूसरोको (पाप–) भीरु न होनेकी प्रेरणा करता है, स्वय अनुत्साही होता है तथा दूसरोको अनुत्साहकी ओर प्रेरणा करता है, स्वय आलसी होता है तथा दूसरोको आलसी वने रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वय मूढ-स्मृति होता है तथा दूसरोको मूढ-स्मृति वने रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वय दुष्प्रज्ञ होता है तथा दूसरोको दुष्प्रज्ञ वने रहनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर कहलाता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुष किसे कहते है ? भिक्षुओ, एक आदमी श्रद्धावान् होता है, लज्जाशील होता है, (पाप–) भीरु होता है, वहुश्रुत होता है, अप्रमादी होता है, स्मृतिमान होता है, तथा प्रज्ञावान् होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुप होता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुपसे सत्पुरुषतर किसे कहते हैं ? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय श्रद्धावान् होता है तथा दूसरोको श्रद्धाकी ओर प्रेरित करता है, स्वय लज्जा-शील होता है तथा दूसरोको लज्जाकी ओर प्रेरित करता है, स्वय (पाप–) भीरु होता है तथा दूसरोको (पाप–) भीरुताकी ओर प्रेरित करता है, स्वय वहुश्रुत होता है तथा दूसरोको वहुश्रुत वननेकी ओर प्रेरित करता है। स्वय अप्रमादी होता है तथा दूसरोको अप्रमादकी ओर प्रेरित करता है, स्वय स्मृतिमान् होता है तथा दूसरोको स्मृतिमान होनेकी ओर प्रेरित करता है, स्वय प्रज्ञावान् होता है तथा दूसरोको प्रज्ञावान् होनेकी ओर प्रेरित करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुपसे सत्पुरुषतर कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरुषके वारेमे देशना करता हूँ तथा असत्पुरुषसे असत्पुरुपतरके वारेमें। सत्पुरुषके वारेमें देशना करता हूँ, वैसे ही सत्पुरुपसे सत्पुरुषतरके वारेमें। भिक्षुओ, सुनो भिक्षुओ, असत्पुरुष किसे कहते है ? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणीहिंसा करने वाला होता ह, चोरी करने वाला होता है, व्यभिचारी होता है,

झूठ बोलने वाला होता है, चुगली खाने वाला होता है, कठोर बोलने वाला होता है तथा व्यर्थ बोलने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुष कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरुषसे असत्पुरुपतर किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, तथा दूसरोको प्राणीहिंसा की प्रेरणा करताहै, स्वय चोरी करने वाला होता है तथा दूसरोको चोरी करनेकी प्रेरणा करता है, स्वय व्यभिचारी होता है तथा दूसरोको व्यभिचारकी प्रेरणा करने वाला होता है, स्वय झूठ बोलता है तथा दूसरोको झूठ बोलनेकी प्रेरणा करता है, स्वय चुगली खाने वाला होता है तथा दूसरोको चुगली खानेकी प्रेरणा करने वाला होता है, स्वय कठोर बोलने वाला होता है तथा दूसरोको कठोर बोलनेकी प्रेरणा करने वाला होता है, स्वय व्यर्थ बोलने वाला होता है तथा दूसरोको व्यर्थ बोलनेकी प्रेरणा करने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर कहलाता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुष किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसासे विरत होता है, चोरीसे विरत होता है, व्यभिचारसे विरत होता है, झूठ बोलनेसे विरत होता है, चुगली खानेसे विरत होता है, कठोर बोलनेसे विरत होता है तथा व्यर्थ बोलनेसे विरत होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुष कहलाता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुषसे सत्पुरुषतर किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय प्राणी-हिंसासे विरत रहता है तथा दूसरोको प्राणी-हिंसासे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वय चोरीसे विरत रहता है तथा दूसरोको चोरीसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है स्वय चुगली खानेसे विरत होता है तथा दूसरोको चुगली खानेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वय कठोर बोलनेसे विरत होता है तथा दूसरोको कठोर बोलनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वय व्यर्थ बोलनेसे विरत रहता है तथा दूसरोको व्यर्थ बोलनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुपसे सत्पुरुषतर कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरुपके वारेमे देशना करता हूँ तथा असत्पुरुषसे असत्पुरुषतरके वारेमे। सत्पुरुषके वारेमे देशना करता हूँ, वैस ही सत्पुरुपसे सत्पुरुपतरके वारेमे। भिक्षुओ, सुनो भिक्षुओ, असत्पुरुष किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसा करता है लोभी होता है, क्रोधी होता है तथा मिथ्या-दृष्टि होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुप कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरुषसे असत्पुरुपतर किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय हिंसा करने वाला होता है तथा दूसरोको हिंसा की प्रेरणा करने वाला होता है ...

स्वय लोभी होता है तथा दूसरोको लोभकी प्रेरणा करने वाला होता है, स्वय क्रोधी होता है तथा दूसरोको क्रोधकी प्रेरणा करने वाला होता है। स्वय मिथ्या-दृष्टि होना है तथा दूसरोको मिथ्या-दृष्टिकी प्रेरणा करने वाला होना है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुपसे असत्पुरुपतर कहलाता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुप किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसामे विरत होता है . निर्लोभी होता है, अक्रोधी होता है तथा सम्यक्-दृष्टि होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुप कहलाता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुपसे सत्पुरुपतर किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय प्राणी-हिंसासे विरत होता है तथा दूसरोको प्राणी-हिंसासे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है स्वय निर्लोभी होती है तथा दूसरोको निर्लोभी बने रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वय क्रोध-रहित होता है तथा दूसरोको क्रोध-रहित बने रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वय सम्यक्-दृष्टि होता है तथा दूसरोको सम्यक्-दृष्टिकी ओर अग्रसर होनेकी प्रेरणा देता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुपसे सत्पुरुपतर कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरुपके बारेमे देशना करता हूँ तथा असत्पुरुपसे असत्पुरुपतरके बारेमें। सत्पुरुपके बारेमें देशना करता हूँ, वैसे ही सत्पुरुपसे सत्पुरुपतरके बारेमें। भिक्षुओ, सुनो . . भिक्षुओ, असत्पुरुप किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी मिथ्या-दृष्टि वाला होता है, मिथ्या-सकल्प वाला होता है, मिथ्या-वाणी वाला होता है, मिथ्या-कर्मान्त वाला होता है, मिथ्या-आजीविका वाला होता है, मिथ्या-व्यायाम (= प्रयत्न) वाला होता है, मिथ्या-स्मृति वाला होता है तथा मिथ्या-समाधि वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुप कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरुपसे असत्पुरुपतर किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय मिथ्या-दृष्टि युक्त होता है तथा वह दूसरोको मिथ्या-दृष्टिकी ओर प्रेरित करता है, स्वय मिथ्या-सकल्प युक्त होता है तथा दूसरोको मिथ्या-सकल्पकी ओर प्रेरित करता है, स्वय मिथ्या-भाषी होता है तथा दूसरोको मिथ्या-वाचाकी ओर प्रेरित करता है, स्वय मिथ्या-कर्मान्त-युक्त होता है, तथा दूसरोको मिथ्या-कर्मान्तकी ओर प्रेरित करता है, स्वय मिथ्या-आजीविका-युक्त होता है तथा दूसरोको मिथ्या-आजीविकाकी ओर अग्रसर करने वाला होता है, स्वय मिथ्या-व्यायाम (= प्रयत्न) करने वाला होता है तथा दूसरोको मिथ्या-व्यायामकी ओर प्रेरित करने वाला होता है, स्वय मिथ्या-स्मृति-युक्त होता है तथा, दूसरोको मिथ्या-स्मृतिकी प्रेरणा देने वाला होता है, स्वय

मिथ्या-समाधि युक्त होता है तथा दूसरोको मिथ्या-समाधिकी प्रेरणा देने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर कहलाता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुष किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी सम्यक्-दृष्टी वाला होता है, सम्यक्-सकल्प वाला होता है, सम्यक-वाणीवाला होता है, सम्यक्-आजीवीका वाला होता है, सम्यक्-व्यायाम (= प्रयत्न) वाला होता है, सम्यक्-स्मृति वाला होता है तथा सम्यक्-समाधी वाला होता है। भिक्षुओ ऐसा आदमी सत्पुरूष कहलाता है।

भिक्षुओ, सत्पुरूषसे सत्पुरूषतर किसे कस्हते है? भिक्षुओ, एक आदमी सम्यक्-दृष्टि वाला होता है तथा दूसरोको सम्यक-दृष्टिकी ओर प्रेरित करता है, स्वय सम्यक-सकल्प वाला होता है तथा दूसरोको सम्यक्-सकल्पकी ओर प्रेरित करता है, स्वय सम्यक्-वाणी वाला होता है तथा दूसरोको सम्यक्-वाणीकी ओर प्रेरित करता है, स्वय सम्यक्-कर्मांत वाला होता है तथा दूसरोको सम्यक्-कर्मांतकी ओर प्रेरित करता है, स्वय सम्यक्-आजीवीका वाला होता है तथा दूसरोको सम्यक्-आजीविकाकी ओर प्रेरित करता है, स्वय सम्यक्-व्यायाम (= प्रयत्न) वाला होता है तथा दूसरोको सम्यक्-व्यायामकी ओर प्रेरित करता है, स्वय सम्यक्-स्मृति वाला होता है तथा दूसरोको सम्यक्-स्मृतिकी ओर प्रेरित करता है, स्वय सम्यक्-समाधि-युक्त होता है तथा दूसरोको सम्यक्-समाधिकी ओर प्रेरित करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरूषसे सत्पुरूषतर कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरूषके वारेमें देशना करता हूँ तथा असत्पुरुषसे असत्पुरुषके वारेमे। सत्पुरूषके वारेमे देशना करता हूँ, वैसे ही सत्पुरूषसे सत्पुरूपतरके वारेमें। भिक्षुओ, सुनो भिक्षुओ, असत्पुरूष किसे कहते है? भिक्षुओ एक आदमी मिथ्या-दृष्टि होता है मिथ्या-ज्ञानी होता है तथा मिथ्या-विमुक्ति वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुप कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरूषसे असत्पुरूषतर किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय मिथ्या-दृष्टि होता है तथा दूसरोको मिथ्या-दृष्टिकी प्रेरणा करता है, स्वय मिथ्या-ज्ञानी होता है दूसरोको मिथ्या-ज्ञानी होनेकी प्रेरणा करता है, स्वयं मिथ्या-विमुक्ति वाला होता है तथा दूसरोको मिथ्या-विमुक्ति वाला होनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पूरूपसे असत्पूरूपतर कहलाता है?

भिक्षुओ, सत्पुरुष किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी सम्यक्-दृष्टि होता है . सम्यक्-ज्ञानी होता है तथा सम्यक् विमुक्ति होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुष कहलाता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुषसे सत्पुरुषतर किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय सम्यक्-दृष्टि होता है तथा दूसरोको सम्यक्-दृष्टिकी प्रेरणा करता है, स्वय सम्यक्-ज्ञानी होता है तथा दूसरोको सम्यक्-ज्ञानी होनेकी प्रेरणा करता है, स्वय सम्यक्-विमुक्त होता है तथा दूसरोको सम्यक्-विमुक्त होनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुपसे सत्पुरुषतर कहलाता है।

भिक्षुओ, पापीके बारेमें देशना करता हूँ, तथा पापीसे भी अधिकतर पापीके बारेमें। पुण्यात्मा (= कल्याण मार्गी) के बारेमे देशना करता हूँ, वैसे ही पुण्यात्मासे भी अधिक तर पुण्यात्माके बारेमे। भिक्षुओ, सुनो भगवान्‌ने यह कहा। भिक्षुओ, पापी किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसा करने वाला होता है मिथ्या-दृष्टि होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पापी कहलाता है। भिक्षुओ, पापीसे भी अधिकतर पापी किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय प्राणी-हिंसा करने वाला होता है तथा दूसरोको प्राणी-हिंसाकी प्रेरणा करता है, स्वय मिथ्या-दृष्टि होता है तथा दूसरोको मिथ्या-दृष्टि की प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पापीसे भी अधिक तर पापी कहलाता है।

भिक्षुओ, पुण्यात्मा किसे कहते है? एक आदमी प्राणी-हिंसासे विरत रहता है मिथ्या-दृष्टिसे विरत रहता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी 'पुण्यात्मा' कहलाता है। भिक्षुओ, पुण्यात्मासे भी अधिकतर पुण्यात्मा किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय प्राणी-हिंसासे विरत होता है तथा दूसरोको प्राणी-हिंसासे विरत रहने की प्रेरणा करता है, स्वय सम्यक्-दृष्टि होता है तथा दूसरोको सम्यक् दृष्टि होनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पुण्यात्मासे अधिक पुण्यात्मा कहलाता है।

भिक्षुओ, पापीके बारेमें देशना करता हूँ तथा पापीसे भी अधिकतर पापीके बारेमें। पुण्यात्मा (= कल्याणमार्गी) के बारेमें देशना करता हूँ वैसे ही पुण्यात्मासे भी अधिकतर पुण्यात्माके बारेमे। भिक्षुओ, सुनो भगवान्‌ने यह कहा। भिक्षुओ, पापी किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक भिक्षु मिथ्या-दृष्टि होता है मिथ्या-ज्ञानी होता है, मिथ्या-विमुक्त होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी 'पापी' कहलाता है।

भिक्षुओ, पापीसे भी अधिकतर पापी किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय मिथ्या-दृष्टि होता है तथा दूसरोको मिथ्या-दृष्टिकी प्रेरणा करता है .

स्वय मिथ्या-ज्ञानी होता है, दूसरोको मिथ्या-ज्ञानकी ओर प्रेरित करता है, स्वय मिथ्या-विमुक्त होता है, दूसरोको मिथ्या-विमुक्तिकी ओर अग्रसर करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पापीसे भी अधिकतर पापी कहलाता है।

भिक्षुओ, पुण्यात्मा किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी सम्यक्-दृष्टि होता है सम्यक्-ज्ञानी होता है सम्यक्-विमुक्ति वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पुण्यात्मा कहलाता है।

भिक्षुओ, पुण्यात्मासे अधिकतर पुण्यात्मा किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय सम्यक्-दृष्टि होता है तथा दूसरोको सम्यक्-दृष्टि होनेकी प्रेरणा करता है, स्वय सम्यक् ज्ञानी होता है तथा दूसरोको सम्यक् ज्ञानकी प्रेरणा करता है, स्वय सम्यक् विमुक्त होता है तथा दूसरोको सम्यक्-विमुक्त होनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पुण्यात्मासे अधिकतर पुण्यात्मा कहलाता है।

भिक्षुओ पाप-धर्मीके बारेमे देशना करता हूँ तथा पाप-कर्मीसे भी अधिकतर पाप-धर्मीके बारेमे। पुण्य-धर्मीके बारेमे देशना करता हूँ वैसे ही पुण्य-धर्मीसे भी अधिकतरके बारेमे। भिक्षुओ सुनो भिक्षुओ पाप-धर्मी किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसा करने वाला होता है मिथ्या-दृष्टि होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पाप-धर्मी कहलाता है। भिक्षुओ, पाप-धर्मीसे भी अधिकतर पाप-धर्मी किसे कहते हैं? भिक्षुओ एक आदमी स्वय प्राणी-हिंसा करता है तथा दूसरोको प्राणी-हिंसाकी प्रेरणा देता है स्वय मिथ्या-दृष्टि होता है, दूसरोको भी मिथ्या-दृष्टिकी ओर अग्रसर करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पाप-धर्मीसे भी अधिकतर पाप-धर्मी कहलाता है। भिक्षुओ, पुण्य-धर्मी किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसासे विरत होता है सम्यक्-दृष्टि होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पुण्य-धर्मी कहलाता है। भिक्षुओ, आदमी कैसे पुण्य-धर्मीसे भी अधिक पुण्यधर्मी होता है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय प्राणी-हिंसासे विरत होता है तथा दूसरोको प्राणी-हिंसासे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है। स्वय सम्यक्-दृष्टि होता है तथा दूसरोको सम्यक्-दृष्टिकी ओर अग्रसर करता है। भिक्षुओ, ऐमा आदमी पुण्य-धर्मीसे भी अधिकतर पुण्यधर्मी कहलाता है।

भिक्षुओ, पाप-धर्मीके बारेमे देशना करता हूँ तथा पाप-धर्मीसे भी अधिकतर पाप-धर्मीके बारेमे। पुण्य-धर्मीके बारेमें देशना करता हूँ, वैसे ही पुण्य-धर्मीसे भी अधिकतर पुण्य-धर्मीके बारेमे। भिक्षुओ, सुनो । भिक्षुओ, पाप-धर्मी किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी मिथ्या-दृष्टि होता है मिथ्या-ज्ञानी होता है, मिथ्या-विमुक्ति होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पाप-धर्मी कहलाता है। भिक्षुओ, पाप-धर्मीसे अधिकतर पाप-धर्मी किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय मिथ्या-दृष्टि होता है, दूसरोको भी मिथ्या-दृष्टिकी ओर प्रेरित करता है स्वय मिथ्या-

ज्ञानी होता है, दूसरोको भी मिथ्या-ज्ञानकी ओर अग्रसर करता है, स्वय मिथ्या-विमुक्त होता है तथा दूसरोको भी मिथ्या-विमुक्तिकी ओर अग्रसर करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पाप-धर्मी से भी अधिकतर पाप-धर्मी कहलाता है।

भिक्षुओ, पुण्य-धर्मी किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी सम्यक्-दृष्टि होता है सम्यक्-ज्ञानी होता है, सम्यक्-विमुक्ति वालाहोता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पुण्यधर्मी कहलाता है। भिक्षुओ, पुण्यधर्मीसे भी अधिकतर पुण्य-धर्मी किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय सम्यक्-दृष्टि होता है तथा दूसरोको सम्यक्-दृष्टिकी ओर अग्रसर करता है स्वय सम्यक्ज्ञानी होता है तथा दूसरोको सम्यक्-ज्ञानी वनाता है, स्वय सम्यक्-विमुक्त होता है तथा दूसरोको सम्यक्-विमुक्तिकी ओर अग्रसर करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पुण्य-धर्मी से भी अधिकतर पुण्य-धर्मी कहलाता है।

(२) भूषण-वर्ग

भिक्षुओ, ये चार परिपदके दूषण है! कौनसे चार? भिक्षुओ, जो पापी दुराचारी भिक्षु होता है वह परिपदका दूषण होता है, जो पापी दुराचारिणी भिक्षुणी होती है वह भी परिपदका दूषण होती है, जो उपासक पापी दुराचारी होता है वह भी परिषद का दूषण होता है, जो उपासिका पापी दुराचारिणी होती है, वह भी परिपदका दूषण होती है। भिक्षुओ, ये चार परिषदके दूषण है।

भिक्षुओ, ये चार परिपदके भूषण है। कौनसे चार? भिक्षुओ, जो भिक्षु शुभ कर्म करने वाला है, सदाचारी है, ऐसा भिक्षु परिपदका भूषण है, जो भिक्षुणी शुभ-कर्म करने वाली है, सदाचारिणी है, ऐसी भिक्षुणी परिषदका भूषण है, जो उपासक शुभ कर्म करने वाला है, सदाचारी है, ऐसा उपासक परिषदका भूषण है, जो उपासिका शुभ कर्म करने वाली है, सदाचारिणी है, ऐसी उपासिका परिपदका भूषण है। भिक्षुओ, ये चार परिपदके भूषण है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार वातें होती है वह नरकमे ही लाकर डाल दिये गये के समान होता है। कौनसी चार वातें? कायदुश्चरित्रता, वाणीकी दुश्चरित्रता, मनकी दुश्चरित्रता तथा मिथ्या-दृष्टि। भिक्षुओ, जिसमें ये चार वाते होती है वह नरकमें लाकर डाल दिये गये के समान होता है।

भिक्षुओ, जिसमे ये चार वाते होती है, वह स्वर्गमे ही लाकर डाल दिये गये के समान होता है। कौन सी चार वातें? शारीरिक सच्चरित्रता, वाणीकी सच्चरित्रता, मनकी सच्चरित्रता तथा सम्यक्-दृष्टि। भिक्षुओ, जिसमें ये चार वातें होती है, वह स्वर्गमें ही लाकर डाल दिये गये के समान होता है।

भिक्षुओ, जिसमे ये चार बातें होती है, वह नरकमे ही लाकर डाल दिये गयेके समान होता है। कौनसी चार बाते? काय-दुश्चरित्रता, वाणीकी दुश्चरित्रता, मनकी दुश्चरित्रता तथा अकृतज्ञता, कृतोपकारको न जानना। भिक्षुओ, जिसमे ये चार बाते होती है वह, नरकमे ही लाकर डाल दिये गयेके समान होता है।

भिक्षुओ, जिसमे ये चार बातें होती है, वह स्वर्गमे ही लाकर डाल दिये गये के समान होता है। कौन सी चार बाते? शारीरिक सच्चरित्रता, वाणीकी सच्चरित्रता, मनकी सच्चरित्रता तथा कृतज्ञता, कृतोपकारको जानना। भिक्षुओ, जिसमे ये चार बातें होती है, वह स्वर्गमे ही लाकर डाल दिये गयेके समान होता है।

भिक्षुओ, जिसमे ये चार बाते प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, व्यभिचार करने वाला होता है, झूठ बोलने वाला होता है . भिक्षुओ, जिसमे ये चार बाते होती है प्राणी-हिंसासे विरत रहने वाला होता है, चोरीसे विरत रहनेवाला होता है, व्यभिचारसे विरत रहने वाला होता है, झूठ बोलनेसे विरत रहने वाला होता है।

भिक्षुओ, जिसमे ये चार बाते मिथ्या-दृष्टि होती है, मिथ्या-सकल्पी होता है, मिथ्या-वाणी वाला होता है तथा मिथ्या-कर्मान्त वाला होता ह . भिक्षुओ, जिसमे ये चार बाते सम्यक्-दृष्टि होता है, सम्यक्-सकल्पी होता है, सम्यक् वाणी वाला होता है तथा सम्यक्-कर्मान्त करनेवाला होता है।

भिक्षुओ, जिसमे ये चार बाते मिथ्याजीवी होता है, मिथ्या-व्यायाम (=प्रयत्न) वाला होता है, मिथ्या-स्मृति होता है तथा मिथ्या-समाधि होता है। भिक्षुओ, जिसमे ये चार बाते सम्यक् आजीविका वाला होता है, सम्यक्-व्यायाम (=प्रयत्न) करने वाला होता है, सम्यक्-स्मृति वाला होता है तथा सम्यक् समाधि वाला होता है।

भिक्षुओ, जिसमे ये चार बाते अनदेखेको देखा कहने वाला होता है, अनसुनेको सुना कहने वाला होता है, विना सूंघें-चखे-स्पर्श किये आदिको सूंघा-चखा, स्पर्श किया कहने वाला होता है, अनजानेको जाना कहनेवाला होता है। भिक्षुओ, जिसमे ये चार बाते विना देखेको विना देखा कहने वाला होता है, विना सुनेको विना सुना कहने वाला होता है, विना सूंघे, चखे, स्पर्श किये आदिको विना चखा, सूंघा, स्पर्श किया कहने वाला होता है, विना जानेको विना जाना कहने वाला होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें देखेको अनदेखा कहने वाला होता है, सुनेको अनसुना कहने वाला होता है, चखे, सूंघे, स्पर्श कियेको नही चखा, सूंघ, स्पर्श किया कहने वाला होता है, जानेको अजाना कहने वाला होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें देखेको देखा कहने वाला होता है, सुनेको सुना कहने वाला होता है, सूंघे, चखे, स्पर्श कियेको सूंघा, चखा, स्पर्श किया कहने वाला होता है, जानेको जाना कहने वाला होता है।

भिक्षुओ, जिसमे ये चार बाते . अश्रद्धावान् होता है, दुराचारी होता है, लज्जा-रहित होता है (पाप-) भय रहित होता है भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें . श्रद्धावान् होता है, सदाचारी होता है, लज्जा युक्त होता है, (पाप-) भीरू होता है भिक्षुओ, जिसमें ये चार बाते है अश्रद्धावान् होता है, दुराचारी होता है, आलसी होता है तथा दुष्प्रज्ञ होता है। भिक्षुओ जिसमें ये चार बातें होती है, वह लाकर नरकमें डाल दिये गये के ही समान होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती है वह लाकर स्वर्गमें ही डाल दिये गये के समान होता है। कौनसी चार बातें ? श्रद्धावान् होता है, सदाचारी होता है, प्रयत्न-वान् होता है तथा प्रज्ञावान् होता है। भिक्षुओ, जिसमे ये चार बातें होती है वह लाकर स्वर्गमे डाल दिये गयेके समान होता है ।

(३) सुचरित्र वर्ग

भिक्षुओ, ये चार वाणीके दुश्चरित्र है। कौनसे चार ? झूठ बोलना, चुगली खाना, कठोर बोलना तथा बेकार बोलना—भिक्षुओ, ये चार वाणीके दुश्चरित्र है।

भिक्षुओ, ये चार वाणीके सुचरित्र है। कौनसे चार ? सत्य बोलना, चुगली न खाना, मृदु-भाषण तथा नपा-तुला बोलना।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती है वैसा मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुष अपनी कबर आप खोदता है, विज्ञोकी दृष्टिमें छोटे-बडे दोष करने वाला होता है तथा बहुत अपुण्य-लाभ करता है। कौन सी चार बातें ? शरीर सम्बन्धी दुश्चरित्रता, वाणीकी दुश्चरित्रता, मनकी दुश्चरित्रता तथा मिथ्या-दृष्टि। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती है वैसा मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुष, अपनी कबर आप खोदता है, विज्ञोकी दृष्टिमें छोटे-बडे दोष करने वाला होता है तथा बहुत अपुण्य-लाभ करता है। कौनसी चार बाते ?

भिक्षुओ, जिसमे ये चार बातें होती हैं, वैसा बुद्धिमान्, पण्डित, सत्पुरुष अपनी कबर आप नही खोदता, विज्ञोकी दृष्टिमें छोटे-बडे दोष करने वाला नही होता

तथा पुण्य लाभ करता है। कौनसी चार बाते ? शरीर सम्बन्धी सच्चरित्रता, वाणीकी सच्चरित्रता, मनकी सच्चरित्रता तथा सम्यक्-दृष्टि। भिक्षुओ, जिसमे ये चार बातें होती है, वैसा बुद्धिमान्, पडित, सत्पुरुष अपनी कबर आप नही खोदता, विज्ञोकी दृष्टिमे छोटे-बडे दोष करने वाला नही होता तथा बहुत पुण्य लाभ करता है।

भिक्षुओ, जिसमे ये चार बातें होती है वैसा मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुष, अपनी कबर आप खोदता है, विज्ञोकी दृष्टिमे छोटे-बडे दोष करने वाला होता है तथा बहुत अपुण्य लाभ करता है, । कौनसी चार ? शरीरकी दुश्चरित्रता, वाणीकी दुश्चरित्रता, मनकी दुश्चरित्रता तथा अकृतज्ञ होना, कृतोपकारको न जानना . शरीरकी सुचरित्रता, वाणीकी सुचरित्रता, मनकी सुचरित्रता तथा कृतज्ञ होना, कृतोपकारको जानना प्राणी-हिंसक होना, चोरी करने वाला होना, व्यभिचारी होना, झुठ बोलने वाला होना प्राणी-हिंसासे विरत होना, चोरी करने वाला न होना, व्यभिचारी न होना, झूठ बोलने वाला न होना मिथ्या-दृष्टि वाला होना, मिथ्या-सकल्प वाला होना, मिथ्या-वाचा वाला होना, मिथ्या-कर्मान्त वाला होना सम्यक्-दृष्टि होना, सम्यक्-सकल्प वाला होना, सम्यक्-वाचा वाला होना तथा सम्यक्-कर्मान्त वाला होना मिथ्या-जीविका वाला होना, मिथ्या-व्यायाम (= प्रयत्न) वाला होना, मिथ्या-स्मृति वाला होना तथा मिथ्या-समाधि होना सम्यक् जीविका वाला होना, सम्यक् व्यायाम (= प्रयत्न)वाला होना, सम्यक्-स्मृति वाला होना तथा सम्यक् समाधि वाला होना अनदेखेको देखा कहने वाला होता है, अनसुनेको सुना कहने वाला होता है, विना सूंघे, चखे, स्पर्श किये आदिको सूंघा, चखा, स्पर्श किया आदि कहने वाला होता है, अनजानेको जाना कहने वाला होता है बिना देखेको विना देखा कहने वाला होता है, विना सुनेको विना सुना कहने वाला होता है, बिना सूंघे चखे, स्पर्श कियेको बिना सूंघा-चखा-स्पर्श किया कहने वाला होता है, बिना जानेको बिना जाना कहने वाला होता है देखेको अनदेखा कहने वाला होता है, सुनेको अनसुना कहने वाला होता है, सूंघे-चखे-स्पर्श कियेको नही सूंघा-चखा-स्पर्श किया कहने वाला होता है, जानेको अनजाना कहने वाला होता है देखेको देखा कहने वाला होता है, सुनेको सुना कहने वाला होता है, सूंघे-चखे-स्पर्ग कियेको सूंघा-चखा-स्पर्श किया कहने वाला होता है, जानेको जाना कहने वाला होता है अश्रद्धावान् होता है, दुराचारी होता है, लज्जा-रहित होता है। (पाप–) भय रहित होता है, . . . श्रद्धावान् होता है, सदाचारी होता है, लज्जायुक्त होता है, (पाप–) भय-युक्त होता है अश्रद्धावान् होता है, दुराचारी होता है, आलसी होता है, दुष्प्रज्ञ

होता है . श्रद्धावान् होता है, सदाचारी होता है, प्रयत्नवान् होता है तथा प्रज्ञावान् होता है। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती है वैसा बुद्धिमान्-पण्डित, सत्पुरुष अपनी कबर आप नही खोदता, विज्ञोकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोष करने वाला नहीं होता तथा बहुत पुण्य लाभ करता है।

भिक्षुओ, कवि चार प्रकारके होते है। कौनसे चार प्रकारके? चिन्तन-कवि, (विचारकर काव्य रचना करने वाला), श्रुत-कवि (सुनकर काव्य रचना करने वाला), अर्थ-कवि (एक ही अर्थको लेकर काव्य रचना करने वाला) तथा प्रतिभावान् कवि (तुरन्त काव्यकी रचना करने वाला)। भिक्षुओ, ये चार प्रकारके कवि होते है।

(४) कर्म वर्ग

भिक्षुओ, कर्मोके चार प्रकार है, जिन्हे मैने स्वय जानकर, अनुभव कर प्रकट किया है। कौनसे चार प्रकार? भिक्षुओ, अकुशल विपाक देने वाला अकुशल कर्म होता है, कुशल विपाक देने वाला कुशल कर्म होता है, अकुशल-कुशल विपाक देनेवाला अकुशल-कुशल कर्म होता है तथा भिक्षुओ नअकुशल-नकुशल विपाक देने वाला न अकुशल-न कुशल कर्म होता है, जो कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है। भिक्षुओ ये चार प्रकारके कर्म है जिन्हे मैने स्वय जानकर, अनुभव कर प्रकट किया है।

भिक्षुओ, कर्मोके चार प्रकार है, जिन्हे मैने, स्वय जानकर, अनुभवकर प्रकट किया है। कौनसे चार प्रकार? भिक्षुओ, अकुशल विपाक देने वाला अकुशल कर्म होता है, कुशल विपाक देने वाला कुशल कर्म होता है, अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म होता है तथा भिक्षुओ, न अकुशल-न कुशल विपाक देने वाला न अकुशल-न कुशल कर्म होता है, जो कर्म-क्षयका निमित्त-कारण होता है। भिक्षुओ, अकुशल-विपाक अकुशल-कर्म कैसा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी सक्रोध शारीरिक-कर्म प्रकट करता है, सक्रोध वाणीका कर्म प्रकट करता है, सक्रोध मनो-कर्म प्रकट करता है, वह सक्रोध शारीरिक-कर्म प्रकट करके, सक्रोध वाणीका कर्म प्रकट करके, सक्रोध मनोकर्म प्रकट करके, सक्रोध लोकमें जन्म ग्रहण करता है, सक्रोध लोकमें जन्म ग्रहण कर लेनेपर उसे सक्रोध-स्पर्शोका स्पर्श होता है, सक्रोध स्पर्शोका स्पर्श होने पर सक्रोध वेदनाओकी अनुभूति होती है—अत्यन्त दु खद मानो नरकगामी प्राणियोका दु ख हो। भिक्षुओ, ऐसा कर्म अकुशल-विपाक अकुशल-कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, कुशल-विपाक कुशल कर्म कैसा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध-रहित शारीरिक कर्म प्रकट करता है, क्रोध-रहित वाणीका कर्म प्रकट करता है, क्रोध-रहित मनोकर्म प्रकट करता है, वह क्रोध-रहित शारीरिक कर्म प्रकट करके, क्रोध रहित वाणीका

कर्म प्रकट करके, क्रोध-रहित मनोकर्म प्रकट करके, क्रोध-रहित लोकमे जन्म ग्रहण करता है, क्रोध-रहित लोकमे जन्म ग्रहण कर लेने पर उसे क्रोध-रहित स्पर्शोका स्पर्श होता है, क्रोध-रहित स्पर्शोका स्पर्श होनेपर क्रोध-रहित वेदनाओकी अनुभूति होती है—अत्यन्त सुखद, मानो वह शुभचिन्ह देवलोकमें हो। भिक्षुओ, ऐसा कर्म कुशल-विपाक कुशल-कर्म कहलाता है।

भिक्षुओ, अकुशल-कुशल विपाक अकुशल-कुशल कर्म कैसा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित शारीरिक कर्मको प्रकट करता है, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित वाणीके कर्मको प्रकट करता है, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित मनो-कर्मको प्रकट करता है। वह क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित शारीरिक कर्मको प्रकट कर, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित वाणीके कर्मको प्रकट कर, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित मनोकर्माको प्रकट कर, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित लोकमें उत्पन्न होता है। क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित लोकमे जन्म ग्रहण कर लेनेपर उसे क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित स्पर्शोका स्पर्श होता है। क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित स्पर्शोका स्पर्श होनेपर क्रोध-रहित तथा-क्रोध सहित वेदनाओकी अनुभूति होती है—मिले जुले सुख-दुख वाली—जैसे मनुष्योकी, कुछ देवताओकी तथा कुछ नरकगामी प्राणियोकी, भिक्षुओ, ऐसा कर्म अकुशल-कुशल विपाक अकुशल कुशल कर्म कहलाता है।

भिक्षुओ, न अकुशल न-कुशल विपाक देने वाला न-अकुशल न-कुशल-कर्म जो कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है कैसा होता है? भिक्षुओ, यह जो अकुशल विपाक अकुशल-कर्म होता है उसका प्रहाण करनेकी जो चेतना (=नीयत), यह जो कुशल विपाक कुशल-कर्म होता है उसका प्रहाण करनेकी जो चेतना (=नीयत) तथा यह जो अकुशल कुशल विपाक अकुशल कुशल-कर्म होता है उसका प्रहाण करनेकी जो चेतना (=नीयत)—भिक्षुओ यह चेतना ही न अकुशल न कुशल विपाक न अकुशल न कुशल-कर्म कहलाती है और यह कर्म ही कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है। भिक्षुओ, कर्मोके ये चार प्रकार है, जिन्हे मैने जानकर, अनुभव कर, प्रकट किया है।

उस समय सिखा नामका मौद्गल्यायन ब्राह्मण जहाँ भगवान थे वहाँ पहुँचा। पहुँचकर भगवानके साथ कुशल-क्षेमकी बातचीत की। कुशल-क्षेमकी बात समाप्त हो चुकनेपर एक ओर बैठा। एक ओर बैठे हुए सिखा मौद्गल्यायन ब्राह्मणने भगवान्से यह कहा—"हे गौतम! कुछ दिन बीते सोणकायन ब्रह्मचारी मेरे पास आया, आकर

मुझसे बोला—'श्रमण गौतम सभी कर्मोंके अक्रिया-पनका उपदेश देता है, सभी कर्मोंका अकर्तृत्व प्रकट करते हुए लोकके मूलोच्छेदकी घोषणा करता है—यह लोक कर्म-सत्यपर आश्रित है, यह लोक कर्म-प्रयासपर निर्भर करता है।"

"हे ब्राह्मण! मुझे याद नही आता कि मैंने सोणकायन ब्राह्मणको कहीं देखा भी हो, ऐसी बातचीत तो कहाँ! ब्राह्मण! कर्मोंके चार प्रकार हैं, जिन्हे मैंने स्वयं जानकर, अनुभव कर, प्रकट किया है। कौनसे चार प्रकार? ब्राह्मण! अकुशल-विपाक देने वाला अकुशल-कर्म होता है, कुशल विपाक देनेवाला कुशल-कर्म होता है, अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म होता है तथा ब्राह्मण! न अकुशल न कुशल विपाक देने वाला न अकुशल न कुशल कर्म होता है, जो कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है। ब्राह्मण! अकुशल विपाक अकुशल-कर्म कैसा होता है? ब्राह्मण! एक आदमी सक्रोध शारीरिक कर्म प्रकट करता है, सक्रोध वाणीका कर्म प्रकट करता है, सक्रोध मनो-कर्म प्रकट करता है, वह सक्रोध शारीरिक कर्म प्रकट करके, सक्रोध वाणीका कर्म प्रकट करके, सक्रोध मनोकर्म प्रकट करके, सक्रोध लोकमे जन्म ग्रहण करता है, सक्रोध लोकमे जन्म ग्रहण कर लेने पर उसे सक्रोध स्पर्शोंका स्पर्श होता है, सक्रोध स्पर्शोंका स्पर्श होनेपर सक्रोध वेदनाओंकी अनुभूति होती है—अत्यन्त दुखद, मानो नरकगामी प्राणियोका दुःख हो। ब्राह्मण! ऐसाकर्म अकुशल विपाक अकुशल-कर्म कहलाता है।

ब्राह्मण! कुशल विपाक कुशल-कर्म कैसा होता है? ब्राह्मण! एक आदमी क्रोध रहित शारीरिक-कर्म प्रकट करता है, क्रोध रहित वाणीका कर्म प्रकट करता है, क्रोध रहित मनोकर्म प्रकट करता है, वह क्रोध-रहित शारीरिक कर्म प्रकट करके, क्रोध-रहित वाणीका कर्म प्रकट करके, क्रोध-रहित मनो-कर्म प्रकट करके, क्रोध-रहित लोकमें जन्म ग्रहण करता है, क्रोध-रहित लोकमे जन्म ग्रहण कर लेनेपर उसे क्रोध-रहित स्पर्शोंका स्पर्श होता है, क्रोध-रहित स्पर्शोंका स्पर्श होनेपर क्रोध-रहित वेदनाओकी अनुभूति होती है—अत्यन्त सुखद, मानो वह शुभ-चिन्ह देव लोकमें हो। ब्राह्मण! ऐसा कर्म कुशल-विपाक कुशल-कर्म कहलाता है।

ब्राह्मण, अकुशल-कुशल विपाक अकुशल-कुशल कर्म कैसा होता है? ब्राह्मण! एक आदमी क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित शारीरिक कर्मको प्रकट करता है, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित वाणीके कर्मको प्रकट करता है, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित मनोकर्मको प्रकट करता है। वह क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित शारीरिक कर्मको प्रकट कर, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित वाणीके कर्मको प्रकट कर, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित मनो-कर्मको प्रकट कर, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित लोकमे उत्पन्न

होता है। क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित लोकमे जन्म ग्रहण कर लेनेपर उसे क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित स्पर्शोका स्पर्श होता है। क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित स्पर्शोका स्पर्श होने पर क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित वेदनाओकी अनुभूति होती है—मिले जुले सुख-दु ख वाली—जैसे मनुष्योकी, कुछ देवताओकी तथा कुछ नरक-गामी प्राणियो की। ब्राह्मण ! ऐसा कर्म अकुशल-कुशल विपाक अकुशल कुशल-कर्म कहलाता है।

ब्राह्मण ! न अकुशल न कुशल विपाक देने वाला न अकुशल न कुशल-कर्म, जो कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है, कैसा होता है ? ब्राह्मण ! यह जो अकुशल विपाक अकुशल-कर्म होता है उसको प्रहाण करनेकी जो चेतना (—नीयत) है, यह जो कुशल विपाक कुशल कर्म होता है, उसका प्रहाण करनेकी जो चेतना (—नीयत) है तथा यह जो अकुशल कुशल विपाक अकुशल कुशल-कर्म होता है, उसका प्रहाण करनेकी जो चेतना (नीयत) है—ब्राह्मण ! यह चेतना ही न-अकुशल न-कुशल विपाक न-अकुशल न-कुशल कर्म कहलाती है और यह कर्म ही कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है। ब्राह्मण ! कर्मोके ये चार प्रकार है, जिन्हे मैने जानकर अनुभव कर, प्रकट किया है।

भिक्षुओ, कर्मोके चार प्रकार है, जिन्हे मैने स्वय जानकर, अनुभव कर प्रकट किया है। कौनसे चार प्रकार ? भिक्षुओ, अकुशल विपाक देने वाला अकुशल-कर्म, कुशल विपाक देने वाला कुशल-कर्म, अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल कुशल-कर्म तथा न अकुशल न कुशल विपाक देनेवला न अकुशल न कुशल-कर्म। भिक्षुओ, यह चौथा कर्म कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है।

भिक्षुओ, अकुशल विपाक देने वाला अकुशल कर्म कौनसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, व्यभिचारी होता है, झूठ बोलने वाला होता है, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजे ग्रहण करने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा कर्म अकुशल-विपाक अकुशल-कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, कुगल विपाक देनेवाला कुशल कर्म कौनसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसासे विरत रहता है, चोरीसे विरत रहता है, व्यभिचारसे विरत रहता है, झूठ बोलनेसे विरत रहता है, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजें ग्रहण करनेसे विरत रहता है। भिक्षुओ, ऐसा कर्म कुशल-विपाक देने वाला कुशल-कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, अकुशल कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म कैसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध-सहित तथा क्रोध-रहित शारीरिक क्रिया प्रकट करता है भिक्षुओ, ऐसा कर्म अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म कहलाता है। भिक्षुओ,

न-अकुशल न कुशल विपाक देने वाला न अकुशल न कुशल-कर्म कैसा होता है, जो कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है ? भिक्षुओ, यह जो अकुशल विपाक अकुशल-कर्म है . . भिक्षुओ, यह न अकुशल न कुशल-विपाक देने वाला न अकुशल न कुशल-कर्म कहलाता है, जो कर्म-क्षय का निमित्त कारण होता है। भिक्षुओ, कर्मोके ये चार प्रकार है, जिन्हे मैंने स्वय जानकर, अनुभव कर प्रकट किया है।

भिक्षुओ, कर्मोके ये चार प्रकार है, जिन्हे मैंने स्वय जानकर, अनुभव कर प्रकट किया है। कौनसे चार ? भिक्षुओ, अकुशल विपाक देनेवाला अकुशल-कर्म, कुशल विपाक देनेवाला कुशल-कर्म, अकुशल-कुशल विपाक देनेवाला अकुशल-कुशल कर्म तथा न-अकुशल न-कुशल विपाक देने वाला, न-अकुशल न-कुशल कर्म। भिक्षुओ, यह चौथा कर्म कर्म-क्षयका निमित्त-कारण होता है। भिक्षुओ, अकुशल विपाक देने वाला अकुशल-कर्म कौनसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमीने मातृ-हत्याकी होती है, पितृ-हत्या की होती है, अर्हत्की हत्याकी होती है, द्वेषपूर्ण चित्तसे तथागतके शरीरसे रक्त बहाया होता है तथा सघमे भेद (=कलह) पैदा किया होता है। भिक्षुओ, ऐसा कर्म अकुशल-विपाक अकुशल-कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, कुशल-विपाक कुशल-कर्म कौनसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसासे विरत होता है, चोरीसे विरत होता है, व्यभिचारसे विरत होता है, झूठ बोलनेसे विरत होता है, चुगल-खोरीसे विरत होता है, कठोर बोलनेसे विरत होता है, व्यर्थ बोलनेसे विरत होता है, निर्लोभ होता है, क्रोध-रहित होता है तथा सम्यक्-दृष्टि होता है। भिक्षुओ, ऐसा कर्म कुशल विपाक देने वाला कुशल-कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म कौनसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध-सहित तथा क्रोध-रहित शारीरिक क्रिया प्रकट करता है . भिक्षुओ, ऐसा कर्म अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, न-अकुशल न-कुशल विपाक देने वाला न-अकुशल न-कुशल कर्म कैसा होता है, जो कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है ? भिक्षुओ, यह जो अकुशल विपाक अकुशल कर्म है . . . भिक्षुओ, यह न अकुशल न कुशल विपाक देने वाला न-अकुशल न कुशल-कर्म कहलाता है, जो कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है। भिक्षुओ, कर्मोके ये चार प्रकार है, जिन्हे मैंने स्वय जानकर, अनुभव कर प्रकट किया है।

भिक्षुओ, कर्मोके ये चार प्रकार है, जिन्हे मैंने स्वय जानकर, अनुभव कर प्रकट किया है। कौनसे चार ? भिक्षुओ, अकुशल विपाक देने वाला अकुशल-कर्म, कुशल विपाक देने वाला कुशल-कर्म, अकुशल-कुशल विपाक देनेवाला अकुशल कुशल

कर्म, अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म तथा न-अकुशल विपाक देने वाला न-अकुशल न-कुशल कर्म , जो कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है। भिक्षुओ, अकुशल विपाक देनेवाला अकुशल-कर्म कौन सा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध सहित शारीरिक क्रिया प्रकट करता है भिक्षुओ, ऐसा कर्म अकुशल विपाक देने वाला अकुशल-कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, कुशल विपाक देने वाला कुशल कर्म कौनसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध रहित शारीरिक क्रिया प्रकट करता है . भिक्षुओ, ऐसा कर्म कुशल-विपाक देनेवाला कुशल कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, अकुशल-कुशल विपाक देनेवाला अकुशल-कुशल कर्म कौनसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध-सहित तथा क्रोध-रहित शारीरिक क्रिया प्रकट करता है भिक्षुओ ऐसा कर्म अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, न अकुशल न कुशल विपाक देने वाला न-अकुशल न-कुशल कर्म, जो कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है, कौन सा होता है ? सम्यक् दृष्टि सम्यक् समाधि। भिक्षुओ, ऐसा कर्म न-अकुशल न-कुशल विपाक देने वाला अकुशल न कुशल कर्म कहलाता है, जो कर्म क्षयका निमित्त कारण होता है, कहलाता है। भिक्षुओ, कर्मोंके ये चार प्रकार है, जिन्हे मैंने स्वय जानकर, अनुभव कर प्रकट किया है।

भिक्षुओ, कर्मोंकि ये चार प्रकार है, जिन्हे मैंने स्वय जानकर, अनुभव कर प्रकट किया है। कौनसे चार ? भिक्षुओ, अकुशल विपाक देने वाला अकुशल कर्म, कुशल विपाक देनेवाला कुशल कर्म, अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म तथा न-अकुशल न कुशल विपाक देने वाला न-अकुशल न-कुशल कर्म, जो कर्म-क्षयका निमित्त-कारण होता है। भिक्षुओ, अकुशल विपाक देनेवाला अकुशल-कर्म कौनसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध सहित शारीरिक क्रिया प्रकट करता है . भिक्षुओ, ऐसा कर्म अकुशल विपाक देने वाला अकुशल-कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, कुशल विपाक देने वाला कुशल-कर्म कौनसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध सहित शारीरिक क्रिया प्रकट करता है. . भिक्षुओ, ऐसा कर्म कुशल विपाक देने वाला कुशल कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म कौनसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध सहित तथा क्रोध रहित शारीरिक क्रिया प्रकट करता है . भिक्षुओ, ऐसा कर्म अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, न-अकुशल न-

कुशल विपाक देने वाला न-अकुशल न-कुशल कर्म, जो कर्म-क्षयका निमित्त-कारण होता है, कौनसा होता है ? स्मृति सम्बोधि-अग, धर्म-विचय सम्बोधि अग, वीर्य सम्बोधि-अग, प्रीति सम्बोधि-अग, प्रश्रब्धि सम्बोधि-अग, समाधि सम्बोधि-अग, उपेक्षा सम्बोधि-अग। भिक्षुओ, ऐसा कर्म न-अकुशल न-कुशल विपाक देने वाला न-अकुशल न-कुशल कर्म, जो कर्म-क्षयका कारण होता है, कहलाता है। भिक्षुओ, कर्मोके ये चार प्रकार है, जिन्हे मैने स्वय जानकर अनुभव कर प्रकट किया है।

भिक्षुओ, जिसमे ये चार बाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर नरकमे डाल दिया गया हो। कौनसी चार बाते ? सदोष शारीरिक कर्म, सदोष वाणी के कर्म, सदोष मनोकर्म तथा सदोष दृष्टि। भिक्षुओ, जिसमे ये चार बाते होती है, वह ऐसा ही होता है, जैसे लाकर नरकमे डाल दिया गया हो। भिक्षुओ, जिसमे ये चार बाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो। कौनसी चार बातें ? निर्दोष शारीरिक कर्म, निर्दोष वाणीके कर्म, निर्दोष मानसिक कर्म तथा निर्दोष दृष्टि। भिक्षुओ, जिसमे ये चार बाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर नरकमें डाल दिया गया हो। कौनसी चार बाते ? क्रोध-युक्त शारीरिक कर्म, क्रोध-युक्त वाणीके कर्म, क्रोध-युक्त मनो-कर्म तथा क्रोधयुक्त-दृष्टि। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर नरकमें डाल दिया गया हो। भिक्षुओ, जिसमे ये चार बाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर स्वर्गमे डाल दिया गया हो। कौनसी चार बाते ? क्रोध-रहित शारीरिक-कर्म, क्रोधरहित वाणीके कर्म, क्रोध-रहित मनोकर्म तथा क्रोध-रहित दृष्टि। भिक्षुओ, जिसमे ये चार बाते होती है, वह ऐसा ही होता है, जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, (प्रथम) श्रमण भी इसी (बुद्ध) शासन में ही उपलब्ध है, द्वितीय श्रमण भी इसी (बुद्ध) शासनमे ही उपलब्ध है, तृतीय श्रमण भी इसी (बुद्ध) शासनमे ही उपलब्ध हैं और चतुर्थ श्रमण भी इसी (बुद्ध) शासनमें ही उपलब्ध है। दूसरी मत-परम्पराये ऐसे श्रमणोंसे शून्य है। भिक्षुओ, इस सिंह-गर्जनाकी अच्छी तरह घोषणा करो। भिक्षुओ, (प्रथम) श्रमण किसे कहते है ? भिक्षुओ, एक भिक्षु प्रथम तीन सयोजनोका क्षय कर स्रोतापन्न हो जाता है, उसके पतनकी सम्भावना नही रहती, उसका सम्बोधि-लाभ निश्चित हो जाता है। भिक्षुओ, यह (प्रथम) श्रमण कहलाता है। भिक्षुओ, द्वितीय श्रमण किसे कहते है ? भिक्षुओ, भिक्षु तीनो सयोजनोका

क्षय कर, रागद्वेष तथा मोहको भी दुर्वल वना सकृदागामी होता है। वह केवल एक ही वार और इस लोकमें जन्म ग्रहण कर दु खका अन्त करता है। भिक्षुओ, यह द्वितीय श्रमण कहलाता है। भिक्षुओ, तृतीय श्रमण किसे कहते है ? भिक्षुओ, भिक्षु निम्नमुख पाचो सयोजनोंका क्षय कर अनागामी (= ओपपातिक) होता है, वही (ब्रह्म-लोक) से परिनिर्वृत्त हो जाने वाला, वहाँसे फिर इस लोकमें नही आने वाला। भिक्षुओ, यह तृतीय श्रमण कहलाता है। भिक्षुओ, चतुर्थ श्रमण किसे कहते हैं ? भिक्षुओ, एक भिक्षु आस्रवोका क्षय कर अनास्रव चित्त-विमुक्ति, प्रज्ञा-विमुक्तिको इसी शरीरमे स्वय साक्षात् कर, प्राप्त कर विचरता है। भिक्षुओ, यह चतुर्थ श्रमण कहलाता है। भिक्षुओ, (प्रथम) श्रमण भी इसी (बुद्ध) शासनमे ही उपलव्ध हैं, द्वितीय श्रमण भी इसी (बुद्ध) शासनमे ही उपलव्ध है, तृतीय श्रमण भी इसी (वुद्ध) शासनमें ही उपलव्ध है और चतुर्थ श्रमण भी इसी (वुद्ध) शासनमें ही उपलव्ध है। दूसरी मत-परम्परायें ऐसे श्रमणोसे शून्य है। भिक्षुओ, इस सिंह-गर्जनाकी अच्छी तरह घोपणा करो।

भिक्षुओ, सत्पुरुषकी सगतिसे चार वातोकी आशा करनी चाहिये। कौनसी चार ? आर्य-शीलमें वृद्धि होती है, आर्य-समाधिमें वृद्धि होती है, आर्य प्रज्ञामे वृद्धि होती है तथा आर्य-विमुक्ति मे वृद्धि होती है। भिक्षुओ, सत्पुरुपकी सगतिसे इन चार वातोकी आशा करनी चाहिये।

(५) आपत्ति-भय वर्ग

एक समय भगवान् कोसम्वी (कौशाम्वी) के घोपितारामसे विहार कर रहे थे। उस समय आयुष्मान् आनन्द जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचे और पहुँचकर भगवान् को प्रणाम कर एक ओर वैठे। एक ओर वैठे हुए आयुष्मान् आनन्दसे भगवान्ने यह पूछा—

"आनन्द ! क्या वह झगडा शान्त हो गया ?"

"भन्ते ! वह झगडा कैसे शान्त होगा ? भन्ते आयुष्मान् अनुरुद्धका वाहिय नामका साथी सारे के सारे सघमे मतभेद पैदा कर देनेपर तुला हुआ है। उसे आयुष्मान अनुरुद्ध एक शव्द भी नही कहना चाहते है।"

"आनन्द ! अनुरुद्ध कवसे सघके झगडोमें दिलचस्पी लेने लगे। क्या आनन्द ऐसा नही है कि जितने भी विवाद खडे हो उनको तुम लोग तथा सारिपुत्र और मौद्गल्यायन ही समाप्त करो ? आनन्द, चार कारणोसे पापी-भिक्षु सघमे मतभेद पैदा होने पर प्रसन्न होते है। कौनसे चार कारणोंसे ? आनन्द ! एक पापी भिक्षु दुश्शील होता है, दुराचारी होता है, वदचलन होता है, छिपकर पाप कर्म करने

वाला होता है, कहनेके लिये श्रमण किन्तु अश्रमण होता है, कहनेके लिये ब्रह्मचारी किन्तु अब्रह्मचारी होता है, अन्दरसे सडा होता है, अनेक छिद्रोंसे युक्त होता है तथा गन्दगी-पूर्ण होता है। उसके मनमे होता है कि यदि भिक्षु यह जान जायेंगे कि मैं पापी हूँ, दुश्शील हूँ, दुराचारी हूँ, वदचलन हूँ, छिपकर पाप कर्म करने वाला हूँ, कहने के लिये श्रमण किन्तु अश्रमण हूँ, कहनेके लिये ब्रह्मचारी किन्तु अब्रह्मचारी हूँ, अन्दर से सडा हुआ हूँ, अनेक छिद्रोसे युक्त हूँ तथा गन्दगीपूर्ण हूँ और उनमें एकता रहेगी तो वह मिलकर मुझे सघसे निकाल वाहर करेंगे, मुझे भिक्षु नही रहने देंगे, किन्तु यदि उनमे दलवन्दी रहेगी तो वह मुझे भिक्षु वना रहने देंगे। आनन्द! यह पहला कारण है, जिससे पापी भिक्षु सघमें मतभेद पैदा होने पर प्रसन्न होते है।

फिर आनन्द! पापी भिक्षु मिथ्या-दृष्टि होता है, सिरेकी वातो (—काम-भोग अथवा कायक्लेश) को मानने वाला। उसके मनमे होता है यदि भिक्षु जान लेंगे कि यह मिथ्या-दृष्टि है, सिरेकी वातोको मानने वाला है और उनमें एकता होगी तो वह मुझे भिक्षु नही रहने देंगे, यदि उनमें दलवन्दी होगी तो वह मुझे भिक्षु वना रहने देंगे। आनन्द! यह दूसरा कारण है कि जिससे पापी भिक्षु सघमें मतभेद पैदा होनेपर प्रसन्न होते है। फिर आनन्द! पापी भिक्षु मिथ्या-आजीविका वाला होता है। उसके मनमें होता है, यदि भिक्षु जान लेंगे कि यह मिथ्या-आजीविका वाला है और उनमें एकता होगी तो वह मुझे भिक्षु नही रहने देंगे, यदि उनमें दलवन्दी होगी तो वह मुझे भिक्षु वना रहने देंगे। आनन्द! यह तीसरा कारण है जिससे पापी भिक्षु सघमे मतभेद पैदा होनेपर प्रसन्न होते है।

फिर आनन्द! पापी भिक्षु लाभकी इच्छा वाला होता है, सत्कारकी इच्छा वाला होता है, तथा प्रसिद्धिकी इच्छा वाला। उसके मनमे होता है, यदि भिक्षु जान लेंगे कि यह लाभ की इच्छा वाला है, सत्कारकी इच्छा वाला है तथा प्रसिद्धिकी इच्छा वाला है और उनमे एकता होगी तो वह मुझे भिक्षु नही रहने देंगे, यदि उनमे दलवन्दी होगी तो वह मुझे भिक्षु वना रहने देंगे। आनन्द! यह चौथा कारण है जिससे पापी भिक्षु सघमें मतभेद पैदा होनेपर प्रसन्न होते है। आनन्द! ये चार कारण है जिनसे पापी भिक्षु सघमे मतभेद पैदा होने पर प्रसन्न होते है।

भिक्षुओ, ये चार विपत्ति-भय वा दोष-भय है। कौनसे चार? भिक्षुओ, जैसे कोई चोर हो, अपराधी हो। लोग उसे पकड कर राजाके पास ले जाये—देव! यह चोर है। अपराधी है। इसे दण्ड दें। उन लोगोको राजा कहे—"आप लोग इसे ले जाओ और इसकी वाहोको पीछे करके उन्हे कसकर वाध दो। फिर इसका

सिर उस्तरेसे मूण्डकर, कर्णकटु, भेरी-बादन करते हुए, इसे एक सडकसे दूसरी सड़क, एक चौरस्तेसे दूसरे चौरस्ते ले जाकर, (नगरके) दक्षिण-द्वारसे निकाल, नगरके दक्षिणकी ओर ही इसका सिर काट डालो।" तब उस राजाके आदमी उसे ले जाये, उसकी बाहोको पीछे करके उन्हे कसकर बाध दे, उसका सिर उस्तरेसे मूंड दे, कर्ण-कटु भेरी-वादन करते हुए, उसे एक सडकसे दूसरी सडक, एक चौरस्तेसे दूसरे चौरस्ते ले जायें, (नगरके) दक्षिण-द्वारसे निकाल, नगरके दक्षिणकी ओर ही उसका सिरकाट दे। तब एक ओर खडे हुए किसी आदमीके मनमे यह हो—इस आदमीने बुरा काम किया, निन्दनीय, सिर काट डालने योग्य। इसीसे राजाके आदमियोने इसे ले जाकर, उसकी बाहोको पीछे करके उन्हे कसकर बाधा, उसका सिर उस्तरेसे मूंडा, कर्णकटु, भेरी-वादन करते हुए उसे एक सडक से दूसरी सडक, एक चौरस्तेसे दूसरे चौरस्ते ले जाकर, (नगरके) दक्षिण द्वारसे निकाल, नगरके दक्षिणकी ओर ही उसका सिर काट दिया। इससे डर कर वह आदमी ऐसा बुरा काम, निन्दनीय काम, सिर काट डालने लायक काम न करे। इसी प्रकार भिक्षुओ किसी भिक्षु या भिक्षुणीके मनमें तीव्र भयकी भावना हो सकती है (चार) पाराजिकाओके बारेमे। उससे यह आशा की जा सकती है कि यदि उनसे पाराजिका-अपराधका दोष नही हुआ है तो वे उस दोष को न होने देगे, यदि हो गया है तो धर्मानुसार योग्य प्रतिकार करेंगे।

भिक्षुओ, जैसे कोई आदमी काले वस्त्र पहन, बालोको बिखेरे हुए, कन्धेपर मूसल रखकर लोगोंके समूहके बीच जाय और कहे—"स्वामियो! मैंने बुरा काम किया है, निन्दनीय, मूसलसे मार डालने योग्य! अब मेरे जो कुछ करनेसे आप लोग सन्तुष्ट हो, मै वही कर्म करूँ।" तब एक ओर खडे हुए किसी आदमीके मनमे हो—इस आदमीने बुरा काम किया, निन्दनीय, मूलससे मार डालने योग्य। इसी लिये यह आदमी काले वस्त्र पहन, बालोको बिखेरे हुए, कन्धे पर मूसल रखे हुए, लोगोके समूहके बीच जाता है और कहता है—'स्वामियो! मैंने बुरा काम किया है, निन्दनीय, मूसलसे मार डालने योग्य। अब मेरे जो कुछ करनेसे आप लोग सन्तुष्ट हो, मै वही कर्म करूँ।' इससे डरकर वह आदमी ऐसा बुरा काम, निन्दनीय काम, मूसलसे मार डालने योग्य काम न करे। इसी प्रकार भिक्षुओ किसी भिक्षु या भिक्षुणीके मनमें तीव्र भयकी भावना हो सकती है (तेरह) सघादिसेस-अपराधोके बारेमे। उनसे यह आशा की जा सकती है कि यदि उनसे सघादिसेस-अपराधोका दोष नही हुआ है, तो वे उस दोषको न होने देगे, यदि हो गया है तो धर्मानुसार योग्य प्रतिकार करेगे।

भिक्षुओ, जैसे कोई आदमी काले वस्त्र पहन, बालोंको बिखेर कर, कन्धेपर राखका बोरा रख कर लोगोंके समूहके बीच जाय और कहे—'स्वामियो! मैंने बुरा काम किया है, निन्दनीय, राज्यके दोषके योग्य। अब मेरे जो कुछ करनेसे आप लोग सन्तुष्ट हों, मैं वही करूँ।" तब एक ओर खड़े हुए किसी आदमीके मनमें हो—इस आदमीने बुरा काम किया, निन्दनीय, राज्यके दोषके योग्य। इसीलिये यह आदमी काले वस्त्र पहने, बालोंको बिखेरे हुए, कन्धेपर राखका बोरा रखे हुए लोगोंके समूहके बीच जाता है और कहता है—"स्वामियो! मैंने बुरा काम किया है, निन्दनीय, राज्यके दोषके योग्य। अब मेरे जो कुछ करनेसे आप लोग सन्तुष्ट हों, मैं वही कर्म करूँ।' इससे डरकर वह आदमी ऐसा बुरा कर्म, निन्दनीय कर्म, राज्यके दोषके योग्य काम न करे। इसी प्रकार भिक्षुओ, किसी भिक्षु या भिक्षुणीके मनमें तीव्र भयकी भावना हो सकती है, पाचित्तिय-अपराधोंके बारेमें। उनसे यह आशा की जा सकती है कि यदि उनसे पाचित्तिय-अपराधोंका दोष नहीं हुआ है, तो वे उन दोषोंको न होने देंगे, यदि हो गया है तो धर्मानुसार योग्य प्रतिकार करेंगे।

भिक्षुओ, जैसे कोई आदमी काले वस्त्र पहन, बालोंको बिखेर कर, लोगोंके समूहके बीच जाय और कहे—'स्वामियो! मैंने बुरा काम किया है, निन्दनीय, दोष देने योग्य। अब मेरे जो कुछ करनेसे आप लोग सन्तुष्ट हों, मैं वही कर्म करूँ।" तब एक ओर खडे हुए किसी आदमीके मनमें हो—इस आदमीने बुरा काम किया, निन्दनीय, दोष देने योग्य। इसीलिये यह आदमी काले वस्त्र पहने, बालोंको बिखेरे हुए, लोगोंके समूहके बीच जाता है और कहता है—'स्वामियो! मैंने बुरा काम किया है, निन्दनीय, दोष देने योग्य। अब मेरे जो कुछ करनेसे आप लोग सन्तुष्ट हों, वही मैं कर्म करूँ।' उससे डरकर वह आदमी ऐसा बुरा कर्म, निन्दनीय कर्म, दोष देने योग्य कर्म न करे। इसी प्रकार भिक्षुओ, किसी भिक्षु या भिक्षुणीके मनमें तीव्र भयकी भावना हो सकती है, प्रति-देशना करने योग्य अपराधोंके बारेमें। उनसे यह आशा की जा सकती है कि यदि उनसे प्रति-देशना करने योग्य अपराधोंका दोष नहीं हुआ है तो वे उन दोषोंको न होने देंगे, यदि हो गया है तो धर्मानुसार योग्य प्रतिकार करेंगे।

भिक्षुओ, यह जो श्रेष्ठ-जीवन व्यतीत किया जाता है इसका फल है शिक्षाओंके अनुसार जीवन व्यतीत करना, प्रज्ञाकी प्राप्ति, विमुक्ति रूपी सार तथा स्मृतिकी प्रधानता। भिक्षुओ, शिक्षाओंके अनुसार जीवन व्यतीत करना कैसे होता है? भिक्षुओ, मैंने श्रावकोंको सुन्दर आचार सम्बन्धी शिक्षा दी है, जो अश्रद्धालुओंको श्रद्धालु बनाने वाली है, श्रद्धालुओंको अधिक श्रद्धालु बनाने वाली है। भिक्षु उस

शिक्षाके अनुसार सम्पूर्ण रूपसे आचरण करने वाला होता है, अन्यून रूपसे आचरण करने वाला होता है, विना धब्बा लगने दिये आचरण करने वाला होता है, निर्दोष रूपसे आचरण करने वाला होता है, सम्यक्-रूपसे शिक्षाओको ग्रहण कर तदनुसार आचरण करने वाला होता है। फिर भिक्षुओ, मैंने श्रावकोको आरम्भिक श्रेष्ठ जीवन सम्बन्धी शिक्षाये दी है, मूलरूपसे दु खका क्षय करनेके लिये। भिक्षुओ, जैसे-जैसे मैंने श्रावकोको आरम्भिक श्रेष्ठ जीवन सम्बन्धी शिक्षाये दी है, मूलभूरूपसे दु ख का क्षय करनेके लिये, वैसे वैसे वह उन शिक्षाओके अनुसार सम्पूर्ण रूपसे आचरण करने वाला होता है, अन्यून रूपसे आचरण करने वाला होता है, विना धब्बा लगने दिये आचरण करने वाला होता है, सम्यक्-रूपसे शिक्षाओको ग्रहण कर तदनुसार आचरण करने वाला होता है, भिक्षुओ, इस प्रकार शिक्षाओके अनुसार जीवन व्यतीत किया जाता है।

भिक्षुओ, प्रज्ञाकी प्राप्ति कैसे होती है ? भिक्षुओ, मैंने श्रावकोको धर्मोपदेश दिया है सम्पूर्ण रूपसे, सम्यक् प्रकारसे दु खक्षयके लिये। भिक्षुओ, जैसे-जैसे मैंने श्रावकोको धर्मोपदेश दिया है सम्पूर्ण रूपसे, सम्यक् प्रकारसे दु खक्षयके लिये, वैसे वैसे उसके द्वारा वे धर्म प्रज्ञासे हृदयङ्गम किये रहते हैं। इस प्रकार भिक्षुओ, प्रज्ञाकी प्राप्ति होती है।

भिक्षुओ, विमुक्ति-रूप-सारकी प्राप्ति कैसे होती है ? भिक्षुओ, मैंन श्रावकोको धर्मोपदेश दिया है सम्पूर्ण रूपसे, सम्यक् प्रकारसे दु खक्षयके लिये। भिक्षुओ जैसे-जैसे मैंने श्रावकोको धर्मोपदेश दिया है सम्पूर्ण रूपसे, सम्यक् प्रकारसे दु ख क्षयके लिये, वैसे-वैसे उसके द्वारा वे विमुक्ति (= रूपी) धर्म (प्रज्ञासे) स्पर्श किये जाते हैं। भिक्षुओ, इस प्रकार विमुक्ति-सारकी प्राप्ति होती है।

भिक्षुओ, स्मृतिकी प्रधानता कैसे होती है ? वह सोचता है असम्पूर्ण सुन्दर आचार सम्बन्धी शिक्षाको सम्पूर्ण करूँगा, परिपूर्ण सुन्दर आचार सम्बन्धी शिक्षाको प्रज्ञासे अनुग्रहीत करूँगा, इस प्रकार उसकी स्मृति उपस्थित होती है। वह सोचता है असम्पूर्ण आरम्भिक श्रेष्ठ जीवन सम्बन्धी शिक्षाओको सम्पूर्ण करूँगा, परिपूर्ण आरम्भिक श्रेष्ठ जीवन सम्बन्धी शिक्षाओ को प्रज्ञासे अनुग्रहीत करूँगा—इस प्रकार उसकी स्मृति उपस्थित होती है। वह सोचता है अविचारित धर्मोंपर प्रज्ञासे विचार करूँगा, विचारित धर्मोंको प्रज्ञासे अनुग्रहीत करूँगा—इस प्रकार उसकी स्मृति उपस्थित होती है। वह सोचता है अस्पर्श किये गये धर्मोंको स्पर्श करूँगा, स्पर्श किये गये धर्मोंको प्रज्ञासे अनुग्रहीत करूगा—इस प्रकार उसकी स्मृति उपस्थित होती है।

भिक्षुओ, इस प्रकार स्मृतिकी प्रधानता होती है। भिक्षुओ, यह जो कहा गया कि जो यह श्रेष्ठ-जीवन व्यतीत किया जाता है इसका फल है शिक्षाओंके अनुसार जीवन व्यतीत करना, प्रज्ञाकी प्राप्ति, विमुक्ति रूपी सार तथा स्मृतिकी प्रधानता, यह इसी आशयसे कहा गया।

भिक्षुओ शैय्याओ (= सोनेके ढग) के ये चार प्रकार है। कौनसे चार? प्रेत-शैय्या, कामभोगी-शैय्या, सिह-शैय्या तथा तथागत-शैय्या। भिक्षुओ, प्रेत-शैय्या कैसी होती है। भिक्षुओ, बहुत करके प्रेत आकाशकी ओर मुंह करके सोते है। भिक्षुओ, यह प्रेत-शैय्या कहलाती है। भिक्षुओ, काम-भोगी शैय्या कैसी होती है? भिक्षुओ, बहुत करके काम-भोगी बायी करवट सोते है। भिक्षुओ, यह काम-भोगी शय्या कहलाती है। भिक्षुओ, सिह-शैय्या कैसी होती है? भिक्षुओ, मृगराज सिह दक्षिण करवट लेटता है, पांवके ऊपर पांव रखकर, जांघोके बीचमें बिना उगली डाले। वह जागकर, बदनके अगले हिस्सेको सीधा कर, पिछले हिस्सेको देखता है कि उसके शरीरका कोई हिस्सा बिखरा हुआ है या ढीला है तो वह उससे असन्तुष्ट होता है। भिक्षुओ, यदि मृगराज सिह देखता है कि उसके शरीरका कोई हिस्सा बिखरा हुआ या ढीला नही है तो वह उससे सन्तुष्ट होता है। भिक्षुओ, यह सिह-शैय्या कहलाती है। भिक्षुओ, तथागत-शैय्या कैसी होती है? भिक्षुओ, तथागत काम-वितर्कोसे पृथक . चतुर्थ-ध्यानको प्राप्त कर विहार करते है। भिक्षुओ, यह तथागत-शैय्या कहलाती है। भिक्षुओ, शैय्याओंके ये चार प्रकार है।

भिक्षुओ, ये चार इस योग्य होते है कि इनका शरीरान्त होनेपर उनके स्तूप बनाये जाये। कौन चार? तथागत अर्हत् सम्यक्सम्बुद्ध, स्तूप बनानेके योग्य होते है, प्रत्येक-बुद्ध स्तूप बनानेके योग्य होते है, तथागत-श्रावक स्तूप बनानेके योग्य होते है तथा चक्रवर्ती राजा स्तूप बनानेके योग्य होता है। भिक्षुओ, ये चार इस योग्य होते है कि इनका शरीरान्त होनेपर इनके स्तूप बनाये जायें।

भिक्षुओ, ये चार बाते प्रज्ञाकी वृद्धिका कारण बनती है। कौन-सी चार? सत्पुरुषोकी सेवा, सद्धर्मका सुनना, उचित ढगसे विचार करना तथा धर्मानुसार प्रतिपत्ति (= आचरण)। भिक्षुओ, ये चार बाते प्रज्ञाकी वृद्धिका कारण बनती है।

भिक्षुओ, ये चार बातें मनुष्यके लिये बहुत उपकारी होती है। कौन-सी चार बाते? सत्पुरुषोकी सेवा करना, सद्धर्मका श्रवण, ठीक ढँगसे विचार करना, धर्मानुसार आचरण। भिक्षुओ, ये चार बातें मनुष्यके लिये बहुत उपकारी होती है।

भिक्षुओ, ये चार अनार्य-व्यवहार हैं। कौनसे चार? अदृष्टको दृष्ट कहना, अश्रुतको श्रुत कहना, जो न सूँघा हो, न चखा हो, जो न स्पर्श किया गया हो उसे सूँघा हुआ, चखा हुआ, स्पर्श किया हुआ कहना, जो न जाना गया हो, उसे जाना गया कहना—भिक्षुओ, ये चार अनार्य-व्यवहार हैं।

भिक्षुओ, ये चार आर्य-व्यवहार हैं। कौनसे चार? अदृष्ट को अदृष्ट कहना, अश्रुतको अश्रुत कहना, जो न सूँघा हो, न चखा हो, न स्पर्ग किया गया हो उसे न सूँघा हुआ, न चखा हुआ, न स्पर्श किया गया कहना, जो न जाना गया हो, उसे न जाना गया कहना—भिक्षुओ, ये चार आर्य-व्यवहार हैं।

भिक्षुओ, ये चार अनार्य-व्यवहार हैं। कौनसे चार? दृष्टको अदृष्ट कहना, श्रुतको अश्रुत कहना, जो सूँघा हो, जो चखा हो, जो स्पर्श किया गया हो, उसे न सूँघा हुआ, न चखा हुआ, न स्पर्श किया गया कहना, जो ज्ञात हो, उसे अज्ञात कहना—भिक्षुओ, ये चार अनार्य-व्यवहार हैं।

भिक्षुओ, ये चार आर्य-व्यवहार हैं। कौनसे चार? दृष्टको दृष्ट कहना; श्रुतको श्रुत कहना, जो सूँघा हो, जो चखा हो, जो स्पर्श किया गया हो, उसे सूँघा हुआ, चखा हुआ, स्पर्श किया हुआ कहना, जो ज्ञात हो, उसे ज्ञात कहना—भिक्षुओ ये, चार आर्य-व्यवहार हैं।

(६) अभिज्ञा वर्ग

भिक्षुओ चार प्रकारके धर्म (=अस्तित्व) हैं। कौनसे चार प्रकारके? भिक्षुओ, ऐसे धर्म हैं, जिनका अभिज्ञा द्वारा ज्ञान प्राप्त करना होता है, भिक्षुओ, ऐसे धर्म हैं जिनका अभिज्ञा द्वारा प्रहाण करना होता है, भिक्षुओ, ऐसे धर्म हैं, जिनका अभिज्ञा द्वारा अभ्यास करना होता है तथा भिक्षुओ, ऐसे धर्म हैं जिनका अभिज्ञा द्वारा साक्षात् करना होता है।

भिक्षुओ, ऐसे कौनसे धर्म हैं, जिनका अभिज्ञा द्वारा ज्ञान प्राप्त करना होता है? पाँच उपादान स्कन्ध—भिक्षुओ, ये धर्म अभिज्ञा द्वारा ज्ञान प्राप्त किये जाने योग्य कहलाते हैं। भिक्षुओ, ऐसे कौनसे धर्म हैं जिनका अभिज्ञा द्वारा प्रहाण करना होता है? अविद्या तथा भव-तृष्णा—भिक्षुओ, ये धर्म अभिज्ञा द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य कहलाते हैं। भिक्षुओ, ऐसे कौनसे धर्म हैं, जिनका अभिज्ञा द्वारा अभ्यास करना होता है? शमथ-भावना तथा विदर्शना-भावना—भिक्षुओ, ये धर्म अभिज्ञा द्वारा अभ्यास किये जाने योग्य हैं। भिक्षुओ, ऐसे कौनसे धर्म हैं, जिनका अभिज्ञा द्वारा साक्षात् करना होता है? विद्या तथा विमुक्ति—भिक्षुओ, ये धर्म अभिज्ञा द्वारा साक्षात् किये जाने योग्य कहलाते हैं। भिक्षुओ, ये चार प्रकारके धर्म हैं।

भिक्षुओ, ये चार अनार्य-पर्येपण है। कौनसे चार ? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय जरा-धर्मी होनेके बावजूद जराको प्राप्त होनेवाले पदार्थोंकी ही खोजमें लगा रहता है, स्वय व्याधी-धर्मी होनेके बावजूद व्याधिके वशीभूतोंकी ही खोजमें लगा रहता है, स्वय मरण-धर्मी होकर मरण-स्वभाव पदार्थोंकी ही खोजमें लगा रहता है, स्वय सक्लेश (= चित्त-मुलो) से सयुक्त होनेके बावजूद सक्लिष्ट-धर्मोंकी ही खोजमें लगा रहाता है। भिक्षुओ, ये चार अनार्य-पर्येपण है।

भिक्षुओ, ये चार आर्य-पर्येपण है। कौनसे चार ? भिक्षुओ, एक आदमी स्वय जरा-धर्मी होता हुआ, जराके दुष्परिणामोंसे परिचित हो, अजर अनुपम, योगक्षेम (= कल्याण) निर्वाणको खोजता है, स्वय व्याधि धर्मी होकर, व्याधिके दुष्परिणामोंसे परिचित हो व्याधि-रहित, अनुपम, योगक्षेम निर्वाणको खोजता है, स्वय मरण-धर्मी होकर मरणके दुष्परिणामोंसे परिचित हो अमर, अनुपम, योगक्षेम निर्वाणको खोजता है। स्वय सक्लिष्ट (=चित्त मलोंसे युक्त होकर) सक्लेशोंके दुष्परिणामसे परिचित हो निर्मल, अनुपम, योगक्षेम निर्वाणको खोजता है। भिक्षुओ, ये चार आर्य-पर्येपण है।

भिक्षुओ, ये चार (लोक-) सग्रह वस्तुये है। कौन-सी चार ? दान, प्रिय-वचन, उपकार, समताका व्यवहार। भिक्षुओ, ये चार (लोक-) सग्रह वस्तुये है।

तब आयुष्मान् मालुङ्क्यपुत्र जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचे। पास जाकर भगवान्को नमस्कार कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठकर आयुष्मान् मालुङ्क्य पुत्रने भगवान्से निवेदन किया—"अच्छा हो भगवान् ! यदि आप मुझे सक्षेपमे धर्मोपदेश दें, भगवान्के जिस धर्मको सुनकर मै एकनिष्ठासे, प्रयत्न कर, प्रमाद-रहित हो, प्रयत्न-शील हो विचरण करू।" "हे मालुण्डक्य पुत्र ! मै बच्चोको क्या कहूँगा, जब कि तू आयु-प्राप्त होनेपर भी, वृद्ध होने पर भी, तथागतसे सक्षित ही धर्म-देशना सुनना चाहता है।"

"भगवान् ! मुझे सक्षेपमे ही धर्मका उपदेश करें। सुगत ! मुझे सक्षेपमें ही धर्मका उपदेश करें। अच्छा होगा कि मै भगवान्के भाषणका अर्थ जान लूं। अच्छा होगा यदि मै भगवान्के भाषणका उत्तराधिकारी हो जाऊँ।"

"मालुंक्यपुत्र ! ये चार तृष्णाकी उत्पत्तिके निमित्त-कारण है, जिनमे भिक्षुकी उत्पन्न होने वाली तृष्णा उत्पन्न होती है। कौनसे चार ? मालुंक्यपुत्र ! भिक्षुकी उत्पन्न होने वाली तृष्णा या तो चीवरके प्रति उत्पन्न होती है, या मालुंक्यपुत्र ! भिक्षुकी उत्पन्न होनेवाली तृष्णा पिण्डपात (= भोजन)के प्रति उत्पन्न होती है, या

मालुँक्यपुत्र ! भिक्षु, की उत्पन्न होने वाली तृष्णा शयनामनके प्रति उत्पन्न होती है, और या मालुँक्यपुत्र ! भिक्षुकी उत्पन्न होने वाली तृष्णा जहा-कही पैदा होनेके प्रति उत्पन्न होती है। मालुँक्य पुत्र ! ये चार तृष्णाकी उत्पत्तिके निमित्त-कारण है, जिनमे भिक्षुकी उत्पन्न होनेवाली तृष्णा उत्पन्न होती है।

"हे मालुँक्य पुत्र ! जब भिक्षुकी तृष्णा प्रहीण हो जाती है, जडसे जाती रहती है, कटे ताड वृक्षके समान होती है, अभाव-प्राप्त हो जाती है, पुनरुत्पत्तिकी सभावना नही रहती है, तो यह कहा जाता है कि भिक्षुने तृष्णाको छिन्न-भिन्न कर दिया, सयोजनोकी सीमाको लाघ गया। अहकारका पूर्ण रूपसे शमन कर दु खका अन्त कर दिया।" भगवान् द्वारा इस प्रकार उपदेश दिये जानेपर आयुष्मान् मालुक्य पुत्रने भगवान्को अभिवादन किया, प्रदक्षिणा की ओर चले गये। तब आयुष्मान् मालुक्य पुत्रने एकान्तवास ग्रहण कर, अप्रमादी हो, प्रयत्नवान् हो, कोशिश करते हुए विहार करके जिस उद्देश्यकी सिद्धिके लिये कल-पुत्र घरसे बे-घर होते है उस ब्रह्मचर्य-शिखर अनुत्तर पदको थोडे ही समयमे, इसी शरीरमे साक्षात् कर लिया। उसकी पुनर्जन्मकी सम्भावना क्षीण हो गई, जो करणीय था कर लिया, अब इससे आगे कुछ नही करना है—इसका ज्ञान प्राप्त कर लिया। आयुष्मान् मालुक्य एक अर्हत् हुए।

भिक्षुओ, जितने भी कुल ऐश्वर्यके शिखरपर चढकर चिरस्थायी नही रहते, वे या तो इन चारो कारणोसे, अथवा इनमेसे किसी एक कारण से। कौनसे चार कारणोंसे? वे जो नष्ट हो गया, उसकी खोज नही करते, जो टूट फूट गया हो, उसकी मरम्मत नही करते, वे बेहिसाब खाने-पीने वाले होते है तथा किसी दुश्शील स्त्री या पुरुषको अधिपति बना देते है। भिक्षुओ, जितने भी कुल ऐश्वर्यके शिखरपर चढकर चिरस्थायी नही रहते, वे या तो इन चार कारणोंसे अथवा इनमेंसे किसी एक कारणसे।

भिक्षुओ, जितने भी कुल ऐश्वर्यके शिखरपर चढकर चिर स्थायी रहते है, वे या तो इन चार कारणोसे अथवा इनमेसे किसी एक कारणसे। कौनसे चार कारणोसे? वे जो नष्ट हो गया, उसकी खोज करते है, जो टूट-फूट गया उसकी मरम्मत करते है, हिसाबसे खाने-पीने वाले होते है तथा सुशील स्त्री वा पुरुषको अधिपति बनाते है। भिक्षुओ, जितने भी कुल ऐश्वर्यके शिखरपर चढकर, चिरस्थायी रहते है, वे या तो इन चार कारणोंसे अथवा इनमेसे किसी एक कारणसे।

भिक्षुओ, जिस श्रेष्ठ घोडेमे ये चारो बाते होती है वह राजाके योग्य होता है, राजाका भोग्य होता है, तथा राजाका अग ही समझा जाता है। कौन-सी चार

वातें ? भिक्षुओ, श्रेष्ठ घोडा वर्ण-युक्त होता है, वलयुक्त होता है, गति-युक्त होता है, चढनेके लिये लम्बे-चौडे शरीरवाला होता है। भिक्षुओ, जिस श्रेष्ठ घोडेमें ये चारो बाते होती है, वह राजाके योग्य होता है, राजाका भोग्य होता है तथा राजाका अग ही समझा जाता है। इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये चार वाते होती है वह सत्कार करने योग्य होता है लोगोंके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र होता है। कौन-सी चार वातें ? भिक्षुओ, वह भिक्षु वर्ण-युक्त होता है, वल-युक्त होता है गति-युक्त होता है तथा चढनेके लिये लम्बे चौडे शरीर वाला होता है। भिक्षुओ भिक्षु वर्ण-युक्त कैसे होता है ? भिक्षुओ, वह भिक्षु शीलवान् होता है शिक्षाओ को सम्यक् प्रकार ग्रहण करता है। भिक्षुओ, भिक्षु वल-युक्त कैसे होता है ? भिक्षुओ, भिक्षु अकुशल-धर्मोका प्रहाण करनेके लिये और कुशल-धर्मोको प्राप्त करनेके लिये प्रयत्नवान् होता है। वह शक्तिशाली होता है, दृढ-पराक्रमी होता है, कुशल-धर्मोकी प्राप्तिके प्रति दृढ-निश्चयी होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु वल-युक्त होता है। भिक्षुओ, भिक्षु गति-युक्त कैसे होता है ? भिक्षुओ, भिक्षु यह दुःख है, इसे यथार्थ रूप से जानता है, यह दुःख-समुदय है, इसे यथार्थ रूपसे जानता है, यह दुःख-निरोध है, इसे यथार्थ रूपसे जानता है, यह निरोधकी ओरसे ले जाने वाला मार्ग है, इसे यथार्थ रूपसे जानता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु, गति-युक्त होता है। भिक्षुओ, भिक्षु कैसे चढनेके लिये लम्वे चौडे शरीर वाला होता है ? भिक्षुओ, भिक्षु चीवर-भोजन-शयनासन-रोगीके प्रयत्नोको प्राप्त करने वाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु चढनेके लिये लम्वे-चौडे शरीर वाला होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये चार वातें होती है, वह सत्कार करने योग्य होता है। लोगोके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र होता है।

भिक्षुओ, जिस श्रेष्ठ घोडेमे ये चारो वातें होती है वह राजाके योग्य होता है, राजाका भोग्य होता है, तथा राजाका अग ही समझा जाता है। कौन-सी चार वातें ? भिक्षुओ, श्रेष्ठ घोडा वर्ण-युक्त होता है, वल-युक्त होता है, गति-युक्त होता है, चढनेके लिये लम्वे-चौडे शरीर वाला होता है। भिक्षुओ, जिस श्रेष्ठ घोडेमे ये चारो वाते होती है, वह राजाके योग्य होता है, राजाका भोग्य होता है तथा राजाका अग ही समझा जाता है। इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये चार वाते होती है, वह सत्कार करने योग्य होता है लोगोके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र होता है। कौन-सी चार वाते ? भिक्षुओ, वह भिक्षु, वर्ण-युक्त होता है, वल-युक्त होता है, गति-युक्त होता है तथा चढनेके लिये लम्वे-चौडे शरीर वाला होता है। भिक्षुओ,

भिक्षु वर्ण-युक्त कैसे होता है ? भिक्षुओ, वह भिक्षु, शीलवान् होता है . . . शिक्षाओको सम्यक् प्रकार ग्रहण करता है। भिक्षुओ, भिक्षु वल-युक्त कैसे होता है ? भिक्षुओ, भिक्षु अकुशल-धर्मोका प्रहाण करनेके लिये और कुशल-धर्मोको प्राप्त करनेके लिये प्रयत्नवान् होता है। वह शक्ति-शाली होता है, दृढ-पराक्रमी होता है, कुशल-धर्मोकी प्राप्तिके प्रति दृढ-निश्चयी होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु वल-युक्त होता है। भिक्षुओ, भिक्षु गति-युक्त कैसे होता है ? भिक्षुओ, भिक्षु आस्रवोका क्षय कर. साक्षात् कर विहार करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु गति-युक्त होता है। भिक्षुओ, भिक्षु कैसे चढनेके लिये लम्वे-चौडे शरीर वाला होता है ? भिक्षुओ, भिक्षु चीवर-पिण्डपात-शयनासन तथा रोगीके प्रत्ययोका प्राप्त करने-वाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु चढनेके लिये लम्वे-चौडे शरीर वाला होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये चार वाते होती है, वह सत्कार करने योग्य होता है. . . . .लोगोके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र होता है।

भिक्षुओ, ये चार वल है। कौनसे चार ? वीर्य-वल, स्मृति-वल, श्रद्धा-वल तथा प्रज्ञा-वल। भिक्षुओ, ये चार वल है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये चार वाते होती है, वह जगलमे अकेला रहनेके योग्य नही है। कौन-सी चार वाते ? काम-वितर्क, क्रोध-वितर्क, विहिंसा-वितर्क तथा जडता। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये चार वाते होती है, वह जगलमे अकेला रहनेके योग्य नही।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये चार वाते होती है वह जगलमें अकेला रहनेके योग्य होता है। कौन-सी चार वाते ? नैष्कर्म्य-वितर्क, अक्रोध-वितर्क, अविहिंसा-वितर्क तथा जडताका न होना। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये चार वाते होती है, वह जगलमे अकेला रहनेके योग्य है।

भिक्षुओ, इन चार वातोसे युक्त मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुप, आप अपनी हानि करता है, विज्ञोकी दृष्टिमे छोटे-वडे दोष करने वाला होता है और वहुत अपुण्य प्राप्त करता है। कौन-सी चार वातोसे ? सदोप शारीरिक कर्म, सदोष वाणीके कर्म, सदोष मनके कर्म तथा सदोष दृष्टि। भिक्षुओ, इन चार वातोसे युक्त मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुष, आप अपनी हानि करता है, विज्ञोकी दृष्टिमे छोटे-वडे दोप करनेवाला होता है और वहुत अपुण्य लाभ करता है।

भिक्षुओ, इन चार वातोसे युक्त वुद्धिमान, पण्डित, सत्पुरुष आप अपनी हानि नही करता है, विज्ञोकी दृष्टिमे छोटे-वडे दोष करने वाला नही होता है, और

बहुत पुण्य लाभ करता है। कौन-सी चार बातोंसे? निर्दोष शारिरीक कर्म, निर्दोष वाणीके कर्म, निर्दोष मनके कर्म तथा निर्दोष दृष्टि। भिक्षुओ, इन चार बातोंसे युक्त, बुद्धिमान, पण्डित, सत्पुरुष, आप अपनी हानि नही करता है, विज्ञोकी दृष्टिमें छोटे-बडे दोष करने वाला नही होता है और बहुत पुण्य लाभ करता है।

(७) कर्मपथ-वर्ग

भिक्षुओ, जिसमे ये चार बाते होती है वह लाकर नरकमे डाल दिये गयेके समान होता है। कौन-सी चार बाते? स्वय प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, दूसरेको प्राणी-हिंसाकी प्रेरणा करता है, प्राणी-हिंसाका समर्थन करता है तथा प्राणी-हिंसाकी प्रशसा करता है। भिक्षुओ, जिसमे ये चार बातें होती है वह लाकर नरकमे डाल दिये गये के समान होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती है वह लाकर स्वर्गमें डाल दिये गये के समान होता है। कौन-सी चार बातें? स्वय प्राणी-हिंसासे विरत रहने वाला होता है, दूसरेको प्राणी-हिंसाकी प्रेरणा नही करता, प्राणी-हिंसाका समर्थन नही करता तथा प्राणी-हिंसाकी प्रशसा नही करता है। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं वह लाकर स्वर्गमें डाल दिये गयेके समान होता है।

भिक्षुओ, जिसमे ये चार बाते होती है वह लाकर नरकमे डाल दिये गयेके समान होता है। कौन-सी चार बातें? स्वय चोरी करने वाला होता है, दूसरेको चोरी करनेकी प्रेरणा करता है, चोरीका समर्थन करने वाला होता है, तथा चोरीकी प्रशसा करता है   जिसमे ये   स्वय चोरी करनेसे विरत होता है, दूसरेको चोरी करनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, चोरी करनेसे विरत रहनेका समर्थन करता है, तथा चोरी करनेसे विरत रहनेकी प्रशसा करता है,   . जिसमें ये   स्वयं व्यभिचार करने वाला होता है, दूसरेको व्यभिचारकी प्रेरणा करता है, व्यभिचारका समर्थन करता है तथा व्यभिचार करनेकी प्रशसा करता है   . जिसमे ये   व्यभिचार करनेसे विरत होता है, दूसरेको व्यभिचार करनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, व्यभिचार करनेसे विरत रहनेका समर्थन करता है तथा व्यभिचार करनेसे विरत रहनेकी प्रशसा करता है   जिसमे ये   स्वय झूठ बोलने वाला होता है, दूसरेको झूठ बोलनेकी प्रेरणा करता है, झूठ बोलनेका समर्थन करता है तथा झूठ बोलनेकी प्रशसा करता है,   जिसमें ये   . झूठ बोलनेसे विरत रहता है, दूसरोको झूठ बोलनेकी प्रेरणा करता है, झूठ बोलनेका समर्थन करता है तथा झूठ बोलनेकी प्रशसा करता है   जिसमें ये   स्वय चुगली खाने वाला होता है,

दूसरोको चुगली खानेकी प्रेरणा करता है, चुगली खानेका समर्थन करता है तथा चुगली खानेकी प्रशसा करता है . जिसमे ये . स्वय चुगली खानेसे विरत रहता है, दूसरोको चुगली खानेसे विरत रहनेका समर्थन करता है तथा चुगली खानेसे विरत रहनेकी प्रशसा करता है जिसमें ये स्वय कठोर बोलने वाला होता है, दूसरोको कठोर बोलनेकी प्रेरणा करता है, कठोर बोलनेका समर्थन करता है तथा कठोर बोलनेकी प्रशसा करता है जिसमे ये . स्वय कठोर बोलनेसे विरत रहता है, दूसरोको कठोर बोलनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, कठोर बोलनेसे विरत .रहनेका समर्थन करता है तथा कठोर बोलनेसे विरत रहनेकी प्रशसा करता है जिसमे ये स्वय बेकार बातचीत करने वाला होता है, दूसरोको व्यर्थ बातचीत करनेकी प्रेरणा करता है, व्यर्थ वातचीत करनेका समर्थन करता है, व्यर्थ बातचीत करनेकी प्रशसा करता है . जिसमे ये स्वय बेकार बातचीतसे विरत रहता है, दूसरोको व्यर्थ बातचीतसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, व्यर्थ बात चीतसे विरत रहनेका समर्थन करता है, व्यर्थ बातचीतसे विरत रहनेकी प्रशसा करता है . जिसमें ये स्वय लोभी होता है, दूसरेको लोभकी प्रेरणा देता है, लोभ करनेका समर्थन करता है तथा लोभ करनेकी प्रशसा करता है जिसमे ये . . स्वय लोभसे विरत रहता है दूसरेको लोभसे विरत रहनेकी प्रेरणा देता है, लोभसे विरता रहनेका समर्थन करता है, तथा लोभसे विरत रहनेकी प्रशसा करता है जिसमे ये . स्वय क्रोध-चित्त वाला होता है, दूसरोको क्रोधकी प्रेरणा करता है, क्रोधका समर्थन करता है तथा क्रोधकी प्रशसा करता है . जिसमे ये स्वय क्रोधसे विरत रहता है, दूसरोको क्रोधसे विरत रहने के लिये प्रेरित करता है, क्रोधसे विरत रहनेका समर्थन करता है तथा क्रोधसे विरत रहनेकी प्रशसा करता है जिसमे ये स्वय मिथ्या-दृष्टि होता है, दूसरोको मिथ्या-दृष्टिकी प्रेरणा करता है, मिथ्या-दृष्टिका समर्थन करता है तथा मिथ्या-दृष्टिकी प्रशसा करता है जिसमें ये सम्यक्-दृष्टि होता है, दूसरोको सम्यक् दृष्टिकी प्रेरणा करता है, सम्यक्-दृष्टिका समर्थन करता है तथा सम्यक्-दृष्टिकी प्रशसा करता है। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती है वह लाकर स्वर्गमें डाल दिये गये के समान होता है।

भिक्षुओ, रागके नष्ट करनेके लिये चारो स्मृतियो (= धर्मो) की भावना (= अभ्यास) करनी चाहिये। कौन-सी चार ? भिक्षुओ, एक भिक्षु शरीरके प्रति जागरूक रहकर विहार करता है, प्रयत्न-शील, जानकार, स्मृतिमान् तथा ससारके

राग-द्वेपको जीतकर, वेदनाओके प्रति . चित्तके प्रति . धर्मों (= चित्तके विपयो) के प्रति जागरूक रहकर विहार करता है, प्रयत्न-शील, जानकार, स्मृति-मान् तथा ससारके राग-द्वेपको जीतकर। भिक्षुओ, रागको नष्ट करनेके लिये इन चारो धर्मोकी भावना करनी चाहिये।

भिक्षुओ, रागके नष्ट करनेके लिये, चारो धर्मोकी भावना करनी चाहिये, कौनसे चारो धर्मोकी? भिक्षुओ, भिक्षु जो दोप, जो अकुशल-धर्म, अभी उत्पन्न नही हुए है उनकी अनुत्पत्तिके लिये सकल्प करता है, प्रयास करता है, प्रयत्न करता है, चित्तको उस ओर झुकाता है, विशेप प्रयत्न करता है, जो दोप, जो अकुशल-धर्म उत्पन्न हो गये है, उनको दूर करनेके लिये जो कुशल धर्म अभी उत्पन्न नही हुए है उनकी उत्पत्तिके लिये , जो कुशल-धर्म उत्पन्न हो गये है उनको स्थिर बनाये रखनेके लिये, उन्हे लुप्त न होने देनेके लिये, उनकी वृद्धिके लिये, उनकी विपुलताके लिये, उन्हे सम्पूर्णता तक पहुँचा देनेके लिये सकल्प करता है, प्रयास करता है, प्रयत्न करता है, चित्तको उधर झुकाता है, विशेप प्रयत्न करता है। भिक्षुओ, रागका नाश करनेके लिये इन चारो धर्मोका अभ्यास करना चाहिये।

भिक्षुओ रागका नाश करनेके लिये इन चारो धर्मोकी भावना करनी चाहिये। कौनसे चार धर्मोकी? भिक्षुओ, भिक्षु, छन्द-समाधि-प्रयत्न युक्त ऋद्धिका अभ्यास करता है, वीर्य-समाधि चित्त-समाधि . विमर्पण समाधि प्रयत्न-युक्त ऋद्धिका अभ्यास करता है। भिक्षुओ, रागका नाश करनेके लिये इन चारो धर्मोकी भावना करनी चाहिये।

भिक्षुओ, रागके नाशके लिये, क्षयके लिये, प्रहाणके लिये, नष्ट करनेके लिये विरागके लिये, निरोधके लिये, त्यागके लिये, परित्यागके लिये इन चारो धर्मोकी भावना करनी चाहिये. . द्वेपके मोहके क्रोधके . वैर (= उपनाह) के ढोग (भ्रक्ष) के लिये . निर्दयता (= प्लास) के .. ईर्पाके . मात्सर्यके मायाके शठताके . . कठोरताके कलह (= सारभ) के मानके मदके प्रमादके नाश-के लिये, क्षयके लिये, प्रहाणके लिये, नष्ट करनेके लिये, विरागके लिये, निरोधके लिये, त्यागके लिये, परि-त्यागके लिये इन चारो धर्मोकी भावना करनी चाहिये।

पाँचवाँ निपात

(१) शैक्ष-बल वर्ग

ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान् श्रावस्तीमे अनाथपिण्डिकके जेत-वनाराममे विहार करते थे। वहाँ भगवान्ने 'भिक्षुओ' कहकर भिक्षुओको सम्बोधित किया। उन भिक्षुओने भगवान्को प्रति-वचन दिया—'भदन्त।' तब भगवान्ने इस प्रकार कहा—भिक्षुओ, ये पाँच शैक्ष-बल है। कौनसे पाँच? श्रद्धा-बल, लज्जा-बल, (पाप-) भीरुता-बल, वीर्य-बल तथा प्रज्ञा-बल। भिक्षुओ, ये पाँच शैक्ष-बल है।

इसलिये भिक्षुओ, ऐसा सीखना चाहिये कि कि हम शैक्ष-बल श्रद्धा-बलसे युक्त होगे, हम शैक्ष-बल लज्जा-बलसे युक्त होगे, हम शैक्ष-बल (पाप-) भीरुता-बलसे युक्त होगे, हम शैक्ष-बल वीर्य-बलसे युक्त होगे तथा हम शैक्ष-बल प्रज्ञा-बलसे युक्त होगे। भिक्षुओ, इसी प्रकार सीखना चाहिये।

भिक्षुओ, ये पाँच शैक्ष-बल है। कौनसे पाँच? श्रद्धाबल, लज्जा-बल, (पाप-) भीरुता-बल, वीर्य-बल तथा प्रज्ञा-बल। भिक्षुओ, श्रद्धा-बल किसे कहते हैं? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक श्रद्धावान् होता है, वह तथागत की 'बोधि' के प्रति श्रद्धा रखता है, 'वह भगवान अर्हत् है, सम्यक् सम्बुद्ध है, विद्या तथा आचरणसे युक्त है, सुगत है, लोकके जानकार है, अनुपम हैं, दुर्दमनीय पुरुषोको दमन करनेवाले सारथी हैं, देवताओ तथा मनुष्योके शास्ता है, बुद्ध भगवान् है।' भिक्षुओ, इसे श्रद्धा-बल कहते है। भिक्षुओ, लज्जा-बल किसे कहते है? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक लज्जा-शील होता है, वह शारीरिक दुश्चरित्रता, वाणीकी दुश्चरित्रता तथा मनकी दुश्चरित्रताके प्रति लज्जा-युक्त होता है और लज्जा युक्त होता है पापी अकुशल-कर्म करनेसे।

भिक्षुओ, इसे लज्जा-बल कहते है। भिक्षुओ, (पाप–) भीरुता-बल किसे कहते है ? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक भय-युक्त होता है, वह शारीरिक-दुश्चरित्रता, वाणीकी दुश्चरित्रता तथा मनकी दुश्चरित्रताके प्रति भय-युक्त होता है और भय-युक्त होता है पापी अकुशल-कर्म करनेसे। भिक्षुओ, इसे (पाप–) भीरुता बल कहते है। भिक्षुओ, वीर्य-बल किसे कहते है। भिक्षुओ, आर्य श्रावक दृढ सकल्प होता है अकुशल-धर्मोका प्रहाण करनेके लिये, कुशल-धर्मोंकी प्राप्तिके लिये, सामर्थ्यवान् होता है, दृढ-पराक्रमी होता है, कुशल-धर्मोंकी प्राप्तिके विषयमें उसकी हिम्मत बधी रहती है। भिक्षुओ, वीर्य-बल इसे कहते है। भिक्षुओ, प्रज्ञा-बल किसे कहते है ? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक प्रज्ञावान् होता है, उत्पत्ति-विनाश सम्बन्धी प्रज्ञासे समन्वित, आर्य-प्रज्ञासे युक्त, बीधने वाली प्रज्ञासे युक्त, सम्यक् रूपसे दु ख-क्षयकी ओर ले जाने वाली प्रज्ञासे युक्त। भिक्षुओ इसे प्रज्ञा-बल कहते है। भिक्षुओ, ये पाँच शैक्ष-बल है। इसलिये भिक्षुओ, ऐसा सीखना चाहिये कि हम शैक्ष-बल श्रद्धा-बलसे युक्त होगे, हम शैक्ष-बल लज्जा-बलसे युक्त होगे, हम शैक्ष-बल (पाप–) भीरुता बलसे युक्त होगे, हम शैक्ष-बल वीर्य-बलसे युक्त होगे तथा हम शैक्ष-बल प्रज्ञा-बलसे युक्त होगे। भिक्षुओ, ऐसा ही सीखना चाहिये।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते होती है वह इसी लोकमे दुखी होता है, परेशान होता है, पश्चातापको प्राप्त होता है, जलनको प्राप्त होता है और यह मान लेना चाहिये कि शरीर छूटनेपर, मृत्युको प्राप्त होनेपर उसकी दुर्गति होती है। कौनसी पाँच बाते ? भिक्षुओ, भिक्षु अश्रद्धालु होता है, निर्लज्ज होता है, (पाप–) भीरुता रहित होता है, आलसी होता है तथा प्रज्ञाविहीन होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बाते होती है वह इसी लोकमे दुखी होता है, परेशान होता है, पश्चातापको प्राप्त होता है, जलनको प्राप्त होता है और यह मान लेना चाहिये कि शरीर छूटनेपर, मृत्यूको प्राप्त होनेपर उसकी दुर्गति होती है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बाते होती है, वह इसी लोकमें सुखी होता है, परेशान नही होता है, पश्चातापको प्राप्त नही होता है, जलनको प्राप्त नही होता है और यह मान लेना चाहिये कि शरीर छूटनेपर, मृत्युको प्राप्त होनेपर उसकी सद्गति होती है। कौनसी पाँच बातें ? भिक्षुओ, भिक्षु श्रद्धावान् होता है, लज्जा-शील होता है, (पाप–) भीरू होता है, प्रयत्नवान् होता है तथा प्रज्ञावान् होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाच बातें होती हैं, वह इसी लोकमें सुखी होता है, परेशान नही होता है, पश्चातापको प्राप्त नही होता है, जलनको प्राप्त नही होता है, और यह मान लेना चाहिये कि शरीर छूटनेपर, मृत्यूको प्राप्त होनेपर उसकी सद्गति होती है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाच बाते होती है वह लाकर नरकमे डाल दिये गये के समान होता है। कौनसी पाँच बातें? भिक्षुओ, भिक्षु अश्रद्धावान् होता है, लज्जा-रहित होता है, (पाप–) भीरूता-रहित होता है, आलसी होता है तथा प्रज्ञा-रहित होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाच बाते होती है वह लाकर नरकमे डाल दिये गयेके समान होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है वह लाकर स्वर्गमे डाल दिये गये के समान होता है। कौनसी पाच वाते? भिक्षुओ, भिक्षु श्रद्धावान् होता है, लज्जा-युक्त होता है, (पाप–) भीरु होता है, अप्रमादी होता है तथा प्रज्ञावान् होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाच बातें होती है, वह लाकर स्वर्गमे डाल दिये गये के समान होता है।

भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु अथवा भिक्षुणी शिक्षाका त्यागकर अभिक्षुपन वा अभिक्षुणीपनके हीन-मार्गकी अनुगामिनी हो जाती है, तो उसकी इसी जन्ममें पाँच प्रकारसे धर्मानुसार निन्दा होने लगती है। कौनसे पाँच प्रकारसे? कुशल-धर्मोमे तुम्हारी श्रद्धा नही थी, कुशल-धर्मोके प्रति तुम सलग्न भी नही थे, कुशल-धर्मोके प्रति तुम पाप-भीरू भी नही थे, कुशल धर्मोके प्रति तुम वीर्यवान् भी नही थे तथा तुम कुशल धर्मोके प्रति प्रज्ञावान् भी नही थे। भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु अथवा भिक्षुणी शिक्षाका त्याग कर अभिक्षुपन वा अभिक्षुणीपनके हीन-मार्गकी अनुगामिनी हो जाती है, तो उसकी इसी जन्मने इन पाच प्रकारसे धर्मानुसार निन्दा होती है। भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु वा भिक्षुणी दु खके साथ भी, दौर्मनस्यके साथ भी, अश्रुमुख रो-रो कर भी परिशुद्ध श्रेष्ठ जीवनका पालन करती है तो उसकी इसी जन्ममे पाच प्रकारसे धर्मानुसार प्रशसा होती है। कौनसे पाँच प्रकारसे? कुशल-धर्मोमे तुम्हारी श्रद्धा थी, कुशल धर्मोके प्रति तुममें लज्जा थी, कुशल-धर्मोके प्रति (पाप–) भीरू थे, कुशल-धर्मोके प्रति वीर्यवान् थे, तथा कुशल-धर्मोके प्रति प्रज्ञावान् थे। भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु वा भिक्षुणी शिक्षाका त्यागकर अभिक्षुपन वा अभिक्षुणीपनके हीन-मार्गकी अनुगामिनी होती है तो उसकी इसी जन्ममे पाँच प्रकारसे प्रशसा होती है। भिक्षुओ, जवतक कुशल-धर्मोके प्रति श्रद्धा वनी रहती है तवतक अकुशल-धर्मोका आगमन नही होता, किन्तु भिक्षुओ जव श्रद्धाका अन्तर्धान हो जाता है, अश्रद्धाका प्रादुर्भाव हो जाता है तव अकुशल-धर्मोका आगमन होता है। भिक्षुओ, जव तक अकुशल-धर्मोके सम्बन्धमे लज्जा वनी रहती है तव तक अकुशल-धर्मोका आगमन नही होता। जव भिक्षुओ, लज्जाका अन्तर्धान हो जाता है, निर्लज्जपनका प्रादुर्भाव हो जाता है, तव अकुशल-धर्मोका आगमन होता है। भिक्षुओ, जवतक अकुशल-धर्मोके प्रति (पाप–) भीरुताका

भाव बना रहता है, तब तक अकुशल-धर्मोंका आगमन नही होता, किन्तु भिक्षुओ, जब (पाप--) भीरुताके भावका अन्तर्धान हो जाता है, (पाप--) भीरुताका अभाव प्रकट होता है, तब अकुशल-धर्मोंका आगमन होता है। भिक्षुओ, जब तक कुशल-धर्मोंके प्रति वीर्य-भाव बना रहता है, तब तक अकुशल-धर्मोंका आगमन नही होता। भिक्षुओ, जब वीर्य-भावका अन्तर्धान हो जाता है तथा आलस्यका प्रादुर्भाव हो जाता है, तब अकुशल-धर्मोंका आगमन होता है। भिक्षुओ, जब तक कुशल-धर्मोंका, प्रज्ञाका भाव बना रहता है, तबतक अकुशल-धर्मोंका आगमन नही होता। जब भिक्षुओ, प्रज्ञाका अन्तर्धान हो जाता है, दुष्टप्रज्ञाका प्रादुर्भाव होता है, तब अकुशल-धर्मोंका आगमन होता है।

भिक्षुओ, अधिकाश प्राणी काम-भोगोंमें आसक्त होते है। भिक्षुओ, एक कुल-पुत्र काल-वर्ण बँहगीको छोडकर घरसे बे-घर हो प्रव्रजित होता है। श्रद्धासे प्रव्रजित होनेके कारण उसे कुछ कहने-सुननेकी आवश्यकता नही होती। ऐसा क्यो? भिक्षुओ यौवनावस्थामे कामभोग प्राप्त होते है। वे ऐसे-वैसे सभी तरहके होते हैं। भिक्षुओ, जो हीन, मध्यम, प्रणीत काम-भोग होते है, सभी काम-भोग ही कहे जाते है। भिक्षुओ, जैसे कोई चित लेटा हुआ छोटा बच्चा हो। वह दाईकी असावधानीसे काठ या ढेलेका कोई टुकडा मुँहमे डाल ले। वह दाई जल्दी ही उसकी ओर ध्यान दे। जल्दी ही ध्यान दे, उसे जल्दी ही मुंहसे निकाल दे। यदि जल्दी ही उसे मुंहसे न निकाल सके तो बायें हाथसे सिर पकडकर, दाहिने हाथसे टेढी अंगुली करके, रक्त-सहित भी बाहर निकाल डाले। ऐसा क्यो? इससे कुमारको कष्ट तो होगा ही, नही होगा, ऐसा नही है। उस, दाईका, जो उस कुमारकी हित-चिन्तक है, हितैषी है, दयालु है तथा अनुकम्पा करने वाली है, यह कर्तव्य है। किन्तु जब वह कुमार बडा हो जाता है, समझदार हो जाता है, तब वह दायी उस कुमारकी ओरसे उपेक्षावान् हो जाती है। वह सोचती है कि अब कुमार अपनी सभाल आप रखने लायक हो गया है। अब वह प्रमाद नही कर सकता। इसी प्रकार भिक्षुओ, जब तक भिक्षु कुशल-धर्मोंमें श्रद्धावान् नही होता, कुशल-धर्मोंमे सलग्न नही होता, कुशल-धर्मोंमे (पाप-) भीरु नही होता, कुशल-धर्मोंमे वीर्यवान् नही होता तथा कुशल-धर्मोंमें प्रज्ञावान् नही होता तब तक भिक्षुओ, उस भिक्षुकी सभाल रखनी होती है। किन्तु जब भिक्षुओ भिक्षु कुशल-धर्मोंमें श्रद्धावान् होता है, कुशल-धर्मोंमें सलग्न होता है, कुशल-धर्मोंमें (पाप--) भीरु होता है, कुशल-धर्मोंमे वीर्यवान् होता है, कुशल-धर्मोंमें प्रज्ञावान् होता है, तो हे भिक्षुओ, ऐसे भिक्षुके प्रति मै उपेक्षावान् हो जाता हूँ। वह भिक्षु आप अपनेको सभाल सकता है। अब वह प्रमाद नही कर सकता।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाच वाते होती है, उसका पतन होता है, वह सद्धर्মमे प्रतिष्ठित नही होता। कौनसी पाच वाते? भिक्षुओ, जो भिक्षु अश्रद्धावान् होता है, उसका पतन होता है, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित नही होता। भिक्षुओ, जो निर्लज्ज होता है, उसका पतन होता है, वह सद्धर्ममे प्रतिष्ठित नही होता। भिक्षुओ, जो भिक्षु (पाप-) भीरू नही होता है, उसका पतन होता है, वह सद्धर्ममे प्रतिष्ठित नही होता। भिक्षुओ, जो भिक्षु आलसी होता है, उसका पतन होता है, वह सद्धर्ममे प्रतिष्ठित नही होता। भिक्षुओ, जो भिक्षु दुष्ट-प्रज्ञ होता है, उसका पतन होता है, वह सद्धर्म मे प्रतिष्ठित नही होता। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाच बातें होती है, उसका पतन होता है, वह सद्धर्ममे प्रतिष्ठित नही होता।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है, उसका पतन नही होता, वह सद्धर्ममे प्रतिष्ठित होता है। कौनसी पाच वाते? भिक्षुओ, जो भिक्षु श्रद्धावान् होता है, उसका पतन नही होता, वह सद्धर्ममे प्रतिष्ठित होता है। भिक्षुओ, जो भिक्षु सलग्न होता है, उसका पतन नही होता, वह सद्धर्ममे प्रतिष्ठित होता है। भिक्षुओ, जो भिक्षु (पाप–) भीरू होता है, उसका पतन नही होता, वह सद्धर्ममे प्रतिष्ठित होता है। भिक्षुओ, जो भिक्षु प्रयत्नवान् होता है उसका पतन नही होता, वह सद्धर्ममे प्रतिष्ठित होता है। भिक्षुओ, जो भिक्षु प्रज्ञावान् होता है, उसका पतन नही होता, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाच बातें होती है, उसका पतन नही होता, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित होता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाच वाते होती है, वह सगौरव नही होता, वह सप्रतिष्ठा नही होता, उसका पतन होता है, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित नही होता। कौनसी पाच वाते? भिक्षुओ, जो भिक्षु अश्रद्धावान् होता है, वह सगौरव नही होता, वह सप्रतिष्ठा नही होता, उसका पतन होता है, वह सद्धर्ममे प्रतिष्ठित नही होता। भिक्षुओ, जो भिक्षु निर्लज्ज होता है जो भिक्षु (पाप-) भीरू नही होता है . जो भिक्षु आलसी होता है . जो भिक्षु प्रज्ञा-विहीन होता है, वह सगौरव नही होता, वह सप्रतिष्ठा नही होता, उसका पतन होता है, वह सद्धर्ममे प्रतिष्ठित नही होता।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाच वाते होती है, वह सगौरव होता है, वह सप्रतिष्ठा होता है, उसका पतन नही होता है, वह सद्धर्ममे प्रतिष्ठित होता है। कौनसी पाच वाते? भिक्षुओ, जो भिक्षु श्रद्धावान् होता है, वह सगौरव होता है, वह सप्रतिष्ठा होता है, उसका पतन नही होता है, वह सद्धर्ममे प्रतिष्ठित होता है। भिक्षुओ, जो

भिक्षु लज्जा-शील होता है . जो भिक्षु (पाप–) भीरु होता है . जो भिक्षु अप्रमादी होता है .. जो भिक्षु प्रज्ञावान् होता है, वह सगौरव होता है, वह सप्रतिष्ठा होता है, उसका पतन नही होता है, वह सद्धर्ममे प्रतिष्ठित होता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाच बातें होती है, जो सगौरव नही होता है, जो सप्रतिष्ठा नही होता है, वह इस धर्ममें उन्नति, वृद्धि, विपुलता प्राप्त करनेके अयोग्य होता है। कौनसी पाच बातें ? भिक्षुओ, जो भिक्षु अश्रद्धावान् होता है, जो सगौरव नही होता है, सप्रतिष्ठा नही होता है, वह इस धर्म-विनयमे उन्नति, वृद्धि, विपुलता प्राप्त करनेके अयोग्य होता है। भिक्षुओ जो भिक्षु निर्लज्ज होता है जो भिक्षु (पाप–) भीरु नही होता है जो भिक्षु आलसी होता है . जो भिक्षु प्रज्ञाविहीन होता है, वह सगौरव नही होता है, वह सप्रतिष्ठा नही होता है, वह इस धर्म-विनयमें उन्नति, वृद्धि, विपुलता, प्राप्त करनेके अयोग्य होता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाच बातें होती है वह सगौरव होता है, वह सप्रतिष्ठा होता है, वह इस धर्म-विनयमे उन्नति, वृद्धि, विपुलता प्राप्त करनेके योग्य होता है। कौनसी पाच बाते ? भिक्षुओ, जो भिक्षु श्रद्धावान् होता है, जो सगौरव होता है, जो सप्रतिष्ठा होता है, वह इस धर्म-विनयमें उन्नति, वृद्धि, विपुलता प्राप्त करनेके योग्य होता है। भिक्षुओ, जो भिक्षु लज्जाशील होता है जो भिक्षु (पाप–) भीरू होता है . जो भिक्षु अप्रमादी होता है . जो भिक्षु प्रज्ञावान् होता है, वह सगौरव होता है, वह सप्रतिष्ठा होता है, वह इस धर्म-विनयमें उन्नति, वृद्धि, विपुलता प्राप्त करनेके योग्य होता है।

(२) बल-वर्ग

भिक्षुओ, मेरी घोषणा है कि मैंने अश्रुत-पूर्व धर्मोमें प्रज्ञाकी पराकाष्ठा प्राप्त की है। भिक्षुओ, तथागतके ये पाच तथागत-बल है, जिनके होनेसे तथागत प्रथम (=वृषभ)स्थानके अधिकारी है, परिषदमे सिंह-गर्जना करते है और ब्रह्म(= धर्म) चक्र प्रवर्तित करते हैं। कौनसे पाच ? श्रद्धा-बल, लज्जाबल, (पाप–) भीरुता-बल, वीर्य-बल, तथा प्रज्ञा-बल। भिक्षुओ, ये पाच तथागतके तथागत-बल है, जिन बलोसे युक्त होनेके कारण तथागत प्रथम स्थानके अधिकारी है, परिषदमें सिंह-गर्जन करते है और ब्रह्म (= धर्म) चक्र प्रवर्तित करते है।

भिक्षुओ, ये पाच शैक्ष-बल है। कौनसे पाच ? श्रद्धा-बल, लज्जा-बल, (पाप–) भीरुता-बल, वीर्य-बल, तथा प्रज्ञा-बल। भिक्षुओ, ये पाच शैक्ष-बल है। भिक्षुओ, इन पाचो शैक्ष-बलोमे यह जो प्रज्ञा-बल है, यही श्रेष्ठ है, यही सग्रह करने

वाला है, यही एकत्र करने वाला है। भिक्षुओ, जैसे शिखर-वाले भवनमे शिखर ही प्रधान होता है, सग्रह करने वाला होता है, एकत्र करने वाला होता है, इसी प्रकार भिक्षुओ इन पाचो शैक्ष-वलोमे यह जो प्रज्ञा-वल है, यही श्रेष्ठ है, यही सग्रह करने वाला है, यही एकत्र करने वाला है। इसलिये भिक्षुओ, यही सीखना चाहिये कि हम शैक्ष-वल श्रद्धावलसे युक्त होगे, लज्जा वल (पाप–) भीरुता-बल वीर्य-वल शैक्ष-वल प्रज्ञा-वलसे युक्त होगे। भिक्षुओ, इसी प्रकार सीखना चाहिये।

भिक्षुओ, ये पाँच वल है। कौनसे पाँच ? श्रद्धा-वल-वीर्य-वल, स्मृति-वल समाधि-बल तथा प्रज्ञा-वल। भिक्षुओ, ये पाँच बल है।

भिक्षुओ, ये पाँच-वल है। कौनसे पाँच ? श्रद्धा-वल, वीर्य-वल, स्मृति-वल, समाधि-वल तथा प्रज्ञा-वल। भिक्षुओ, श्रद्धा-वल किसे कहते है ? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक श्रद्धावान् होता है, वह तथागतकी बोधिके प्रति श्रद्धा रखता है, 'वे भगवान् . देवताओ तथा मनुष्योके शास्ता है।' भिक्षुओ, यह श्रद्धा-वल कहलाता है। भिक्षुओ, वीर्य-वल किसे कहते है ? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक दृढ-सकल्प होता है, अकुशल धर्मोंका प्रहाण करनेके लिये, कुशल-धर्मोंकी प्राप्तिके लिये, सामर्थ्यवान् होता है, दृढ-पराक्रमी होता है, कुशल-धर्मोंकी प्राप्तिके विषयमें। उसकी हिम्मत वधी रहती है। भिक्षुओ, यह वीर्य-वल कहलाता है। भिक्षुओ, स्मृति-वल किसे कहते है ? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक स्मृतिमान् होता है, पर स्मृति-प्रज्ञासे युक्त होता है, चिरकाल पूर्वक की गई, कही गई, वातको याद रखने वाला, अनुस्मरण करने वाला होता है। भिक्षुओ, यह स्मृति-वल कहलाता है। भिक्षुओ, समाधि-वल किसे कहते है ? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक् काम-वितर्कोसे पृथक हो चौथे-ध्यानको प्राप्त हो विहार करता है। भिक्षुओ, इसे समाधि-वल कहते है। भिक्षुओ, प्रज्ञा-वल किसे कहते है ? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक् प्रज्ञावान् होता है, उत्पत्ति-विनाश सम्वन्धी प्रज्ञासे समन्वित, आर्य-प्रज्ञासे युक्त, बीधने वाली प्रज्ञासे युक्त, सम्यक्‌रूपसे दु ख-क्षयकी ओर ले जाने वाली प्रज्ञासे युक्त। भिक्षुओ, इसे प्रज्ञा-वल कहते है। भिक्षुओ, ये पाँच वल है।

भिक्षुओ, ये पाच वल है। कौनसे पाच ? श्रद्धा-वल, वीर्य-वल, स्मृति-वल, समाधि-वल तथा प्रज्ञा-वल। भिक्षुओ, श्रद्धावलको कहाँ देखना चाहिये ? चार स्रोतापत्ति अगोमे श्रद्धा-वलको देखना चाहिये। भिक्षुओ, वीर्य-वल कहाँ देखना चाहिये ? चारो सम्यक् प्रधानो (= प्रयत्नो)मे वीर्य-वलको देखना चाहिये। भिक्षुओ स्मति-वल कहाँ देखना चाहिये ? चारो स्मृति-उपस्थानोमे स्मृति-वलको देखना

चाहिये। भिक्षुओ, समाधि-बल कहाँ देखना चाहिये ? चारो ध्यानोमें समाधि-बल देखना चाहिये। भिक्षुओ, प्रज्ञा-बल कहाँ देखना चाहिये ? चारो आर्य-सत्योमें प्रज्ञा-बल देखना चाहिये। भिक्षुओ, ये पाच बल है।

भिक्षुओ, ये पाच बल है। कौनसे पाच ? श्रद्धा-बल, वीर्य-बल, स्मृति-बल, समाधि-बल तथा प्रज्ञा-बल। भिक्षुओ, ये पाच बल है। भिक्षुओ, इन पाचो बलोमें यह जो प्रज्ञा-बल है यही श्रेष्ठ है, यही सग्रह करने वाला है, यही एकत्र करने वाला है। भिक्षुओ, जैसे शिखर वाले भवनमे शिखर ही प्रधान होता है, सग्रह करने वाला होता है, एकत्र करने वाला होता है, उसी प्रकार भिक्षुओ, इन पाचो बलोमे यह प्रज्ञा-बल है, यही श्रेष्ठ है, यही सग्रह करने वाला है, यही एकत्र करने वाला है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाच बाते होती है, वह आत्म-हित करनेमे लगा होता है, किन्तु पर-हित करनेमें नही। कौनसी पाच बाते ? भिक्षुओ, एक भिक्षु स्वय शीलवान् होता है, किन्तु दूसरोको शील-सम्पत्तिसे युक्त होनेकी प्रेरणा नही करता, स्वय समाधिसे युक्त होता है, किन्तु दूसरोको समाधिसे युक्त होनेकी प्ररणा नही करता, स्वय प्रज्ञावान् होता है, किन्तु दूसरोको प्रज्ञासे युक्त होनकी प्रेरणा नही करता, स्वय विमुक्ति-सम्पत्तिसे युक्त होता है, किन्तु दूसरोको विमुक्तिसे युक्त होनेकी प्रेरणा नही करता, स्वय विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनसे युक्त होता है, किन्तु दूसरोको विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनसे युक्त होनेकी प्रेरणा नही करता। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाच बाते होती है, वह आत्म-हित करनेमे लगा होता है, किन्तु पर-हित करनेमें नही।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाच बाते होती है, वह पर-हित करनेमे लगा होता है, किन्तु आत्म-हित करनेमे नही। कौनसी पाच बातें ? भिक्षुओ, एक भिक्षु स्वयं शीलवान् नही होता है, किन्तु दूसरोको शील-सम्पत्तिसे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है; स्वय समाधिसे युक्त नही होता है, किन्तु दूसरोको समाधिसे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है, स्वय प्रज्ञावान् नही होता है, किन्तु दूसरोको प्रज्ञासे युक्त होनेकी प्रेरण करता है, , स्वय विमुक्ति-सम्पत्तिसे युक्त नही होता है, किन्तु दूसरोको विमुक्ति-सम्पत्तिसे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है, स्वय विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनसे युक्त नही होता है, किन्तु दूसरोको विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनसे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाच बाते होती है, वह परहित करनेमें लगा होता है, किन्तु आत्म-हित करनेमें नही।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाच बाते होती है, वह न आत्म-हित करनेम लगा होता है, न परहित करनेमें। कौन सी पाच बाते ? एक भिक्षु न स्वय शीलवान्

होता है, न दूसरोको शील-सम्पत्तिसे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है, न स्वय समाधिसे युक्त होता है, न दूसरोको समाधिसे युक्त होने की प्रेरणा करता है, न स्वय प्रज्ञा-युक्त होता है, न दूसरो को प्रज्ञासे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है, न स्वय विमुक्ति-सम्पत्तिसे युक्त होता है, न दूसरोको विमुक्ति-सम्पत्तिसे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है, न स्वय विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन युक्त होता है, न दूसरोको विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनसे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाच बाते होती है, वह न आत्म-हित करनेमे लगा होता है, न पर-हित करनेमे लगा होता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाच बाते होती है, वह आत्म-हित करनेमे लगा होता है, तथा परहित करनेमे लगा होता है। कौनसी पाच बाते ? एक भिक्षु स्वयं शीलवान् होता है तथा दूसरोको शील-सम्पत्तिसे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है; स्वय समाधिसे युक्त होता है तथा दूसरोको समाधिसे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है; स्वय प्रज्ञासे युक्त होता है तथा दूसरोको प्रज्ञासे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है, स्वयं विमुक्ति-युक्त होता है तथा दूसरोको विमुक्ति-युक्त होनेकी प्रेरणा करता हूँ, स्वयं विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन युक्त होता है तथा दूसरोको विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन-युक्त होनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाच बाते होती है, वह आत्म-हित करनेमें लगा होता है तथा परहित करनेमे लगा होता है।

(३) पंचङ्गिक वर्ग

भिक्षुओ, इसकी सम्भावना नही है कि जो भिक्षु गौरवके भावसे रिक्त है, प्रतिष्ठाके भावसे रिक्त है, जिसकी विसदृश चर्या है, वह अपने सब्रह्मचरियोके प्रति योग्य-व्यवहार(=आभिसमाचारिक शील) करेगा। इसकी सम्भावना नही है कि जो अपने सब्रह्मचारियोके प्रति योग्य-व्यवहार नही करता, वह शैक्ष-धर्मका पालन करेगा। इसकी सम्भावना नही है कि जो शैक्ष-धर्मका पालन नही करता, वह शीलोका पालन करेगा। इसकी सम्भावना नही है कि जो शीलोका पालन नही करता वह सम्यक् दृष्टिका लाभ करेगा। इसकी सम्भावना नही है कि जो सम्यक्-दृष्टि-प्राप्त नही है वह सम्यक्-समाधि लाभ करेगा। भिक्षुओ, इसकी सम्भावना है कि जो भिक्षु गौरवके भावसे युक्त है, प्रतिष्ठाके भावसे युक्त है, जिसकी सदृश चर्या है, वह अपने सब्रह्मचारियो के प्रति योग्य-व्यवहार करेगा। इसकी सम्भावना है कि जो अपने सब्रह्मचारियोके प्रति योग्य व्यवहार करता है, वह शैक्ष-धर्मका पालन करेगा। इसकी सम्भावना है कि जो शैक्ष-धर्मका पालन करता है, वह शीलोका पालन करेगा। इसकी सम्भावना

है कि जो शीलोका पालन करता है, वह सम्यक्-दृष्टिका लाभ करेगा। इसकी सम्भावना है कि जिसे सम्यक्-दृष्टि प्राप्त है, वह सम्यक्-समाधिका लाभ करेगा।

भिक्षुओ, इसकी सम्भावना नही है कि जो भिक्षु गौरवके भावसे रिक्त है, प्रतिष्ठाके भावसे रिक्त है, जिसकी विसदृश चर्या है, वह अपने सब्रह्मचारित्योके प्रति योग्य-व्यवहार (= अभिसमाचारिक शील) करेगा। इसकी सम्भावना नही है कि जो अपने सब्रह्मचारित्योके प्रति योग्य-व्यवहार (= अभिसमाचारिक सील) नही करता वह शैक्ष-धर्म की पूर्ति करेगा। इसकी सम्भावना नही है कि जो शैक्ष-धर्मकी पूर्ति नही करता, वह शील-स्कन्धकी पूर्ति करेगा। इसकी सम्भावना नही है कि जो शील-स्कन्धकी पूर्ति नही करता, वह समाधि-स्कन्धकी पूर्ति करेगा। इसकी सम्भावना नही है कि जो समाधि-स्कन्धकी पूर्ति नही करता, वह प्रज्ञा-स्कन्धकी पूर्ति करेगा। भिक्षुओ, इसकी सम्भावना है कि जो भिक्षु गौरवके भावसे युक्त है, प्रतिष्ठाके भावसे युक्त है, जिसकी सदृश (= अनुकूल) चर्या है वह अपने सब्रह्मचारित्योके प्रति योग्य व्यवहार (= आभिसमाचारिक शील) करेगा। इसकी सम्भावना है कि जो अपने सब्रह्मचारियोंके प्रति योग्य-व्यवहार करता है, वह शैक्ष-धर्मकी पूर्ति करेगा। इसकी सम्भावना है कि जो शैक्ष धर्मकी पूर्ति करता है, वह शील-स्कन्धकी पूर्ति करेगा। इसकी सम्भावना है कि जो शील-स्कन्धकी पूर्ति करता है, वह समाधि-स्कन्धकी पूर्ति करेगा। इसकी सम्भावना है कि जो समाधि-स्कन्धकी पूर्ति करता है, वह प्रज्ञा-स्कन्धकी पूर्ति करेगा।

भिक्षुओ, ये पाँच सोनेकी मिलावटे (= उपक्लेश) है, जिन मिलावटोके कारण सोना न कोमल होता है, न कमाया जा सकने वाला होता है, न प्रभास्वर होता है, टूटने वाला होता है, और न ठीकसे काममें आने लायक होता है। कौनसी पाच? अयम् (ताम्बा), लोहा, जस्त, रागा तथा चादी। भिक्षुओ, ये पाच सोनेकी मिलावटें है, जिन मिलावटोके कारण सोना न कोमल होता है, न कमाया जा सकने वाला होता है, न प्रभास्वर होता है, टूटने वाला होता है और न ठीकसे काममें आने लायक होता है। किन्तु भिक्षुओ, जव सोना इन मिलावटोसे रहित होता है, तो वह सोना कोमल होता है, कमाया जा सकने वाला होता है, प्रभास्वर होता है, न टूटने वाला होता है और ठीकसे काममे लाया जा सकने वाला होता है। जिस-जिस गहनेके निर्माण की आकाक्षा होती है चाहे अगूठी हो, चाहे कुडल हो, चाहे कठी हो, चाहे सोनेकी माला हो, वह सोना इनके निर्माणमे समर्थ होता है। इसी प्रकार भिक्षुओ, ये पाच चित्तके मैल है, जिन मैलोसे मलिन होनेके कारण चित्त न कोमल होता है, न कमाया जा सकने वाला

होता है, न प्रभास्वर होता है, टूटने वाला होता है और न आस्रवोके क्षयके लिये सम्यक् प्रकारसे समाहित होता है। कौनसे पाच ? काम-छन्द, व्यापाद (=क्रोध), आलस्य, उद्धतपन-कौकृत्य तथा विचिकित्सा। भिक्षुओ, ये पाच चित्तके मैल है, जिन मैलोसे मलिन होनेके कारण चित्त न कोमल होता है, न कमाया जा सकने वाला होता है, न प्रभास्वर होता है, टूटने वाला होता है और न आस्रवोके क्षयके लिये सम्यक्-प्रकारसे समाहित होता है। भिक्षुओ, जब चित्त इन चित्त मलोसे युक्त होता है, तो चित्त कोमल होता है, कमाया जा सकने वाला होता है, प्रभास्वर होता है, न टूटने वाला होता है और आस्रवोके क्षयके लिये सम्यक् प्रकारसे समाहित होता है। वह अभिज्ञा द्वारा साक्षात् किये जा सकने वाले जिस-जिस धर्मको साक्षात् (=प्रत्यक्ष) करनेके लिये चित्तको उस ओर नियुक्त करता है, वह वही उस उस आयतन में सफलताको प्राप्त होता है। यदि वह यह आकाक्षा करता है कि अनेक प्रकारकी ऋद्धिया प्राप्त करे जैसे एकसे अनेक हो सके ब्रह्मलोक तक उसके शरीरकी गति हो, वह वही उस उस आयतनमे सफलताको प्राप्त होता है। यदि वह आकाक्षा करता है कि दिव्य, अमानुषी श्रोत्र-धातुसे दिव्य तथा मानुष दोनो प्रकारके शब्दोको सुने—दूरके भी तथा समीपके भी—वह वही उस उस आयतनमे सफलताको प्राप्त होता है। यदि वह आकाक्षा करता है कि दूसरे प्राणियोके दूसरे व्यक्तियोके चित्तको अपने चित्तसे जान ले-सराग चित्त हो तो यह जान ले कि सराग चित्त है, विमुक्त चित्त हो तो यह जान ले कि विमुक्त चित्त है—तो वह वही उस उस आयतनमें सफलताको प्राप्त होता है। यदि वह आकाक्षा करता है कि अनेक पूर्वजन्मोकी बातोको याद कर लूं—एक जन्मकी बात, दो जन्मोकी बात इस प्रकार आकार-सहित, उद्देश्य-सहित पूर्व जन्मोका स्मरण कर लूं, तो वह वही वही उस उस आयतनमे सफलताको प्राप्त होता है। यदि वह आकाक्षा करता है कि दिव्य, अमानुषी चक्षु धातुसे कर्मानुसार उत्पन्न प्राणियोको जान लूं, तो वह वही उस आयतनमे सफलताको प्राप्त होता है। यदि आकाक्षा करता है आस्रवोका क्षय कर साक्षात्कर, प्राप्तकर विहार करे, तो वह वही उस उस आयतनमे सफलताको प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, जो दु शील होता है, जो शीलवान् नही होता है, उसका सम्यक् समाधि का आधार जाता रहता है, सम्यक् समाधिके न रहनेपर, सम्यक् समाधिसे रहित होनेपर यथार्थ-ज्ञान-दर्शनका आधार जाता रहता है, यथार्थ-ज्ञान-दर्शनके न रहनेपर, यथार्थ-ज्ञान-दर्शन से रहित होनेपर निर्वेद-वैराग्य का आधार जाता रहता है, निर्वेद वैराग्य के न रहने पर, निर्वेद वैराग्यसे रहित हो जानेपर विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनका

-आधार जाता रहता है। जैसे भिक्षुओ, यदि वृक्षकी शाखाये और पत्ते न हो तो उसकी पपडी भी पूर्णताको प्राप्त नही होती, उसकी छाल भी पूर्णताको प्राप्त नही होती, फेग्गु (?) भी पूर्णताको प्राप्त नही होती, सार भी पूर्णताको प्राप्त नही होता, इसी प्रकार भिक्षुओ, जो दु शील होता है, जो शीलवान् नही होता है उसका विमुक्ति ज्ञान-दर्शनका आधार जाता रहता है। भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो शीलवान् होता है, उसका सम्यक् समाधिका आधार वना रहता है, सम्यक् समाधिके रहनेपर, सम्यक् समाधिसे युक्त होनेपर, यथार्थ-ज्ञान-दर्शनका आधार वना रहता है, यथार्थ-ज्ञान-दर्शनके रहनेपर, यथार्थ-ज्ञान-दर्शनसे युक्त होनेपर, निर्वेद-वैराग्यका आधार -वना रहता है।

निर्देव-वैराग्यके रहनेपर, निर्वेद-वैराग्यसे युक्त होनेपर, विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनका आधार वना रहता है। जैसे भिक्षुओ, यदि वृक्षकी शाखाये और पत्ते हो तो उसकी पपडी भी पूर्णताको प्राप्त होती है, उसकी छाल भी पूर्णताको प्राप्त होती है, फेग्गु भी पूर्णताको होती है, सार भी पूर्णताको प्राप्त होता है। इसी प्रकार भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो शीलवान् होता है विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनका आधार वना रहता है।

भिक्षुओ, जो सम्यक्-दृष्टि इन पाँच वातोंसे अनुगृहीत (= युक्त) होती है, उसका फल चित्तकी विमुक्ति होता है, उसका शुभ-परिणाम चित्तकी विमुक्ति होता है, उसका फल प्रज्ञाकी विमुक्ति होता है, उसका शुभ-परिणाम प्रज्ञाकी विमुक्ति होता है। कौन-सी पाँच वातोंसे? भिक्षुओ, सम्यक्-दृष्टि शीलसे अनुगृहीत होती है, श्रुत (= ज्ञान) से अनुगृहीत होती है, साकच्छा (= धर्म-चर्चा) से अनुगृहीत होती है, शमथ (= चित्तकी भावना) से अनुगृहीत होती है तथा विदर्शना (= प्रज्ञाकी भावना) से अनुगृहीत होती है। भिक्षुओ, इन पाँच वातोंसे अनुगृहीत सम्यक्-दृष्टिका फल होता है चित्तकी विमुक्ति, शुभ-परिणाम होता है चित्तकी विमुक्ति, फल होता है प्रज्ञाकी विमुक्ति; शुभ-परिणाम होता है प्रज्ञाकी विमुक्ति।

भिक्षुओ, ये पाँच विमुक्ति-क्षेत्र (= आयतन) है, यदि भिक्षु इन पाँच विमुक्ति-क्षेत्रोमें अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, साधना करता हुआ विहार करता है तो यदि उसका चित्त अ-विमुक्त होता है तो विमक्त हो जाता है, यदि आस्रव क्षीण न हुए हो तो क्षयको प्राप्त हो जाते है, यदि अनुपम योग-क्षेम (= निर्वाण) अनुत्पन्न हो तो उसकी प्राप्ति हो जाती है। कौनसे पांच? भिक्षुओ, एक भिक्षुको या तो स्वय शास्ता अथवा अन्य कोई गौरव-भाजन सब्रह्मचारी उपदेश देते हैं। जैसे-जैसे उसे वह उपदेश दिया-जाता है वैसे-वैसे वह उसके अर्थोंका तथा उसके अन्तर्निहित

धर्मका ज्ञान प्राप्त करता है। उससे वह मोदको प्राप्त होता है। प्रमुदित हो आनन्दको प्राप्त होता है। आनन्दित होनेसे (नाम–) कायको शान्ति प्राप्त होती है। शान्ति होनेसे सुखकी प्राप्ति होती है। सुखी होनेसे चित्त समाहित होता है। भिक्षुओ, यह पहला विमुक्ति-क्षेत्र है, जिसमे यदि भिक्षु अप्रमादी हो, प्रयत्न-शील हो, कोशिश करता हुआ विहार करता है तो यदि उसका चित्त अ-विमुक्त होता है, तो वह विमुक्त हो जाता है, यदि आस्रव क्षीण न हुए हो, तो क्षयको प्राप्त हो जाते है, यदि अनुपम योग-क्षेम (= निर्वाण) अनुत्पन्न हो तो उसकी प्राप्ति हो जाती है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षुको न तो स्वय शास्ता, न अन्य कोई गौरव-भाजन सब्रह्मचारी ही उपदेश देते है, बल्कि वह यथा-श्रुत, यथा-स्मृत विधिसे दूसरोंको धर्मोपदेश देता है। जैसे-जैसे वह उपदेश देता है वैसे-वैसे वह उसके अर्थों तथा उसके अन्तर्निहित धर्मका ज्ञान प्राप्त करता है। उससे वह मोद को प्राप्त होता है। प्रमुदित हो आनन्दको प्राप्त होता है। आननदित होनेसे (नाम–) कायको शान्ति प्राप्त होती है। शान्ति होनेसे सुखकी प्राप्ति होती है। सुखी होनेसे चित्त समाहित होता है। भिक्षुओ, यह दूसरा विमुक्ति-क्षेत्र है जिसमे यदि भिक्षु, अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, साधना करता हुआ विहार करता है तो यदि उसका चित्त अविमुक्त होता है तो वह विमुक्त हो जाता है, यदि आस्रव क्षीण न हुए हो तो क्षयको प्राप्त हो जाते है, यदि अनुपम योग-क्षेम (= निर्वाण) अनुत्पन्न हो तो उसकी प्राप्ति हो जाती है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षुको न तो स्वय शास्ता, न अन्य कोई गौरव-भाजन सब्रह्मचारी ही उपदेश देते है, न वह यथा-श्रुत यथा-स्मृत विधिसे दूसरोको विस्तार-पूर्वक उपदेश ही देता है, बल्कि वह यथा-श्रुत यथा-स्मृत विधिसे दूसरोके साथ मिलकर धर्मका पाठ (= सज्झायन) ही करता है। भिक्षुओ, जैसे-जैसे वह भिक्षु यथा-श्रुत तथा यथा-स्मृत विधिसे दूसरोके साथ मिलकर धर्मका पाठ करता है, वैसे-वैसे वह उसके अर्थों तथा उसके अन्तर्निहित धर्मका ज्ञान प्राप्त करता है। उससे वह मोदको प्राप्त होता है। प्रमुदित हो, आनन्दको प्राप्त होता है। आनन्दित होनेसे (नाम–) कायको शान्ति प्राप्ति होती है। शान्ति-लाभ होनेसे सुखकी प्राप्ति होती है। सुखी होनेसे चित्त समाहित होता है। भिक्षुओ, यह तीसरा विमुक्ति-क्षेत्र है, जिसमे यदि भिक्षु अप्रमादी हो, प्रयत्न-शील हो, साधना करता हुआ विहार करता है तो यदि उसका चित्त अविमुक्त होता है तो वह विमुक्त हो जाता है, यदि आस्रव क्षीण न हुए हो तो क्षयको प्राप्त हो जाते है, यदि अनुपम योग-क्षेम (= निर्वाण) अनुत्पन्न हो तो उसकी प्राप्ति हो जाती है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षुको न तो स्वय शास्ता, न अन्य कोई गौरव-भाजन सब्रह्मचारी ही उपदेश देते है, न वह 'यथा-श्रुत यथा-स्मृत' विधिसे दूसरोको उपदेश ही देता है, न वह 'यथा-श्रुत यथा-स्मृत' विधिसे दूसरोके साथ मिलकर धर्मका पाठही करता है, बल्कि 'यथा-श्रुत यथा-स्मृत' धर्मके बारेमें चित्तसे विचार करता है, मनन करता है, परीक्षण करता है। भिक्षुओ, जैसे-जैसे वह भिक्षु 'यथा-श्रुत यथा-स्मृत' धर्मके बारेमें चित्तसे विचार करता है, मनन करता है, परीक्षण करता है, वैसे-वैसे वह उसके अर्थों तथा उसके अन्तर्निहित धर्मका ज्ञान प्राप्त करता है। उससे वह मोदको प्राप्त होता है। प्रमुदित हो आनन्दको प्राप्त होता है। आनन्दित होनेसे (नाम-) कायको शान्ति प्राप्त होती है। शान्ति-लाभ होनेसे सुखकी प्राप्ति होती है। सुखी होनेसे चित्त समाहित होता है। भिक्षुओ, यह चौथा विमुक्ति-क्षेत्र है जिससे यदि भिक्षु अप्रमादी हो, प्रयत्न-शील हो, साधना करता हुआ विहार करता है तो यदि उसका चित्त अविमुक्त होता है तो वह विमुक्त हो जाता है, यदि आस्रव क्षीण न हुए हो तो क्षयको प्राप्त हो जाते है, यदि अनुपम योग-क्षेम (= निर्वाण) अनुत्पन्न हो तो उसकी प्राप्ति हो जाती है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षुको न तो स्वय शास्ता, न अन्य कोई गौरव-भाजन सब्रह्मचारी ही उपदेश देते है, न वह 'यथा-श्रुत यथा-स्मृत' विधिसे दूसरोको उपदेश ही देता है, न वह 'यथा-श्रुत यथा-स्मृत' विधिसे दूसरोके साथ मिलकर धर्मका पाठ ही करता है, न वह 'यथा-श्रुत यथा-स्मृत' धर्मके बारेमें चित्तसे विचार ही करता है, मनन ही करता है, परीक्षण ही करता है, बल्कि उसने किसी न किसी समाधि-निमित्तको सम्यक् प्रकार ग्रहण किया होता है, सम्यक् प्रकार मनमे किया होता है, सम्यक् प्रकार धारण किया होता है, सम्यक् प्रकार प्रज्ञासे बीधा हुआ होता है। भिक्षुओ, जैसे जैसे वह भिक्षु किसी न किसी समाधि-निमित्तको सम्यक् प्रकार ग्रहण करता है, सम्यक् प्रकार मनमें करता है, सम्यक् प्रकार धारण करता है तथा सम्यक् प्रकार प्रज्ञासे बीधता है, वैसे वैसे वह उसके अर्थों तथा उसके अन्तर्निहित धर्मका ज्ञान प्राप्त करता है। उससे वह मोदको प्राप्त होता है। प्रमुदित हो आनन्दको प्राप्त होता है। आनन्दित होनेसे (नाम-) कायको शान्तिकी प्राप्ति होती है। शान्तिकी प्राप्ति होनेसे सुखकी प्राप्ति होती है। सुखी होनेसे चित्त समाहित होता है। भिक्षुओ, यह पाँचवाँ विमुक्ति-क्षेत्र है, जिसमें यदि भिक्षु अप्रमादी हो, प्रयत्न-शील हो साधना करता हुआ विहार करता है तो यदि उसका चित्त अविमुक्त होता है वह विमुक्त हो जाता है, यदि आस्रव क्षीण न हुए हो तो क्षयको प्राप्त हो जाते है, यदि अनुपम योग-क्षेम

(= निर्वाण) अनुत्पन्न हो तो उसकी प्राप्ति हो जाती है। भिक्षुओ, ये पाँच विमुक्ति क्षेत्र है, यदि भिक्षु इन पाँच विमुक्ति-क्षेत्रोमे अप्रमादी हो, प्रयत्न-शील हो, साधना करता हुआ विहार करता है, तो यदि उसका चित्त अविमुक्त होता है तो विमुक्त हो जाता है, यदि आस्रव क्षीण न हुए हो तो क्षयको प्राप्त हो जाते है, यदि अनुपम योग-क्षेम (= निर्वाण) अनुत्पन्न हो तो उसकी प्राप्ति हो जाती है।

भिक्षुओ, असीम, सम्पूर्ण, स्मृतियुक्त, समाधिकी भावना (= अभ्यास) करो। भिक्षुओ, असीम, सम्पूर्ण, स्मृतियुक्त, समाधिकी भावना करनेसे व्यक्तिगत रूपसे पाँच ज्ञानोकी प्राप्ति होती है। कौनसे पाँच? यह समाधि वर्तमानमे भी सुखद है और भविष्यमे भी सुख देनेवाली है, व्यक्तिगत रूपसे इस ज्ञानकी प्राप्ति होती है। यह समाधि आर्य-समाधि है, अ-भौतिक है, व्यक्तिगत रूपसे उस ज्ञानकी प्राप्ति होती है। यह समाधि श्रेष्ठ-पुरुष-सेवित है, व्यक्तिगत रूपसे इस ज्ञानकी प्राप्ति होती है। यह समाधि शान्त है, प्रणीत है, शमन-प्राप्त है, एकाग्रता-प्राप्त है तथा सास्रव-समाधिकी तरहसे सस्कारोका निग्रह करने मात्रसे अप्राप्त है, व्यक्तिगत रूपसे इस ज्ञानकी प्राप्ति होती है। मै स्मृतिमान होकर इस समाधि-अवस्थाको प्राप्त होता हूँ, स्मृतिमान् होकर इस समाधि-अवस्थासे उठता हूँ, व्यक्तिगत रूपसे इस ज्ञानकी प्राप्ति होती है।

भिक्षुओ, असीम, सम्पूर्ण, स्मृतिमुक्त समाधिकी भावना (= अभ्यास) करो। भिक्षुओ, असीम, सम्पूर्ण, स्मृतियुक्त समाधिकी भावना करनेसे व्यक्तिगत रूपसे पाँच ज्ञानोकी प्राप्ति होती है।

भिक्षुओ, मै पाँच अगोवाली आर्य सम्यक् समाधिकी देशना करता हूँ। इसे सुनो। अच्छी प्रकार मनमे धारण करो। कहता हूँ। इन भिक्षुओने भगवान्-को प्रत्युत्तर दिया—"भन्ते! बहुत अच्छा।" भगवान्ने इस प्रकार कहा—भिक्षुओ, पाँच अगो वाली आर्य सम्यक् समाधिकी भावना (= अभ्यास) कौन-सी है? भिक्षुओ, भिक्षु काम-भोगोसे पृथक हो, अकुशल-धर्मोसे पृथक हो, प्रथम-ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है। वह इस कायको एकान्त-वाससे उत्पन्न प्रीति-सुखमे सिक्त कर लेता है, अच्छी तरह सिक्त कर लेता है, भर लेता है, भरपूर कर लेता है, उसके सारे शरीरका कोई भी हिस्सा एकान्त-जन्य प्रीति-सुखसे अस्पृष्ट नही रहता।

भिक्षुओ, जैसे कोई होशियार नाई (= नहलाने वाला) हो वा उसका शिष्य हो और वह कांसेके थालमे स्नान-चूर्ण डालकर, पानी मिला मिलाकर उसे साने। वह स्नान-पिण्डी जलमे सानी जानेके कारण, जलसे सिक्त होनेके कारण, भीतर-बाहर

पानीसे स्निग्ध होनेके कारण इधर-उधर चूती नही है। इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु इस कायको एकान्त-वाससे उत्पन्न प्रीति-सुखमे सिक्त कर लेता है, अच्छी तरह सिक्त कर लेता है, भर लेता है, भरपूर कर लेता है, उसके सारे शरीरका कोई भी हिस्सा एकान्त-जन्य प्रीति-सुखसे अस्पृष्ट नही होता। भिक्षुओ, पाँच-अग वाली आर्य-सम्यक् समाधिकी यह प्रथम भावना है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु वितर्क-विचारोका उपशमन कर दूसरे ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है। वह इस कायको समाधिसे उत्पन्न प्रीति-सुखमे सिक्त कर लेता है, अच्छी तरह सिक्त कर लेता है, भर लेता है, भरपूर कर लेता है, उसके सारे शरीरका कोई भी हिस्सा समाधि-जन्य प्रीति-सुखसे अस्पृष्ट नही रहता।

भिक्षुओ, जैसे पानीका तालाब हो, जिसके अन्दर ही पानीका सोता हो, उसमे न पूर्व दिशासे पानीके आनेका रास्ता हो, न पश्चिम दिशासे पानीके आनेका रास्ता हो, न उत्तर दिशासे पानीके आनेका रास्ता हो तथा न दक्षिण दिशासे पानीके आनेका रास्ता हो, और देव अच्छी तरहसे समय समयपर बरसे। उस तालावमेंसे पैदा होने वाली शीतल-जल धारा उसी तालावको शीतल जलसे सिक्त कर दे, भर दे, भरपूर कर दे, उस तालावका कोई भी हिस्सा शीतल-जलसे अस्पृष्ट न रहे। इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु इस कायको समाधिसे उत्पन्न प्रीति-सुखसे सिक्त कर लेता है, अच्छी तरह सिक्त कर लेता है, भर लेता है, भरपूर कर लेता है, उसके सारे शरीरका कोई भी हिस्सा समाधि-जन्य प्रीति-सुखसे अस्पृष्ट नही रहता। भिक्षुओ, पाँच अग वाली आर्य सम्यक् समाधिकी यह दूसरी भावना है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु प्रीतिसे भी वैराग्य प्राप्त कर तीसरे ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है। वह इस कायको प्रीति-रहित सुखसे सिक्त कर लेता है, अच्छी तरह सिक्त कर लेता है, भर लेता है, भरपूर कर लेता है, उसके शरीर का कोई भी हिस्सा प्रीति-रहित सुखसे अस्पृष्ट नही होता।

भिक्षुओ, जैसे उत्पल हो, पद्म हो वा पुण्डरीक हो और वह पानीमे उत्पन्न हुआ हो, पानीमें बढा हो, पानीसे बाहर न निकला हो, अन्दर ही अन्दर पोषित हुआ हो, वह सिरसे पाँव तक, शीतल जलसे सिक्त हो, परिसिक्त हो, भरपूर हो, परिपूर्ण हो, उस उत्पल, पद्म वा पुण्डरीकका कोई हिस्सा ऐसा न हो जो शीतल जलसे अस्पृष्ट हो; इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु इस कायको प्रीति-रहित सुखसे सिक्त कर लेता है, अच्छी तरह सिक्त कर लेता है, भर लेता है, भरपूर कर लेता है, उसके शरीरका कोई भी

हिस्सा प्रीति-रहित सुखसे अस्पृष्ट नही होता। भिक्षुओ, पाँच अग वाली आर्य सम्यक् समाधिकी यह तीसरी भावना है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु सुखका प्रहाण कर चतुर्थ-ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है। वह इस कायको स्वच्छ, परिशुद्ध चित्तसे युक्त कर वैठा हुआ होता है। उसके शरीरका कोई भी हिस्सा स्वच्छ, परिशुद्ध चित्तसे अस्पृष्ट नही होता।

भिक्षुओ, जैसे कोई आदमी स्वच्छ वस्त्रसे सिर ढके वैठा हो। उसके शरीरका कोई हिस्सा ऐसा न हो जो स्वच्छ, परिशुद्ध वस्त्रसे ढका न हो। इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु इस कायको स्वच्छ, परिशुद्ध चित्तसे युक्त कर वैठा हुआ होता है। उसके शरीरका कोई भी हिस्सा स्वच्छ, परिशुद्ध चित्तसे अस्पृष्ट नही होता है। भिक्षुओ, पाँच अग वाली आर्य-सम्यक् समाधिकी यह चौथी भावना है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु द्वारा प्रत्येवक्षण-निमित्त सुगृहीत होता है, भली प्रकार मनमे स्थिर किया होता है, भली प्रकार धारणा किया हुआ होता है—प्रज्ञा द्वारा बीधा हुआ। जैसे कोई एक किसी दूसरेकी प्रत्यवेक्षणा करे, खडा हुआ आदमी वैठे हुए आदमीकी प्रत्यवेक्षणा (=देख-भाल) करे, अथवा वैठा हुआ आदमी लेटे हुए आदमीकी प्रत्यवेक्षणा करे। इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु द्वारा प्रत्यवेक्षण-निमित्त सुगृहीत होता है, भली प्रकार मनमें स्थिर किया होता है, भली प्रकार धारण किया हुआ होता है, प्रज्ञा द्वारा बीधा हुआ। भिक्षुओ, पाँच अग वाली आर्य सम्यक्-समाधिकी यह पाँचवी भावना है।

भिक्षुओ, इस प्रकार पाँच अगो वाली आर्य सम्यक्-समाधिकी भावना (=अभ्यास) करनेसे, इस प्रकार अभ्यास वढानेसे, वह अभिज्ञा द्वारा साक्षात् किये जा सकने वाले जिस जिस धर्मको साक्षात् (=प्रत्यक्ष) करनेके लिये चित्तको उस ओर नियुक्त करता है, वह वही उस उस आयतनमे सफलताको प्राप्त होता है। भिक्षुओ, जैसे कोई पानीकी चाटी किसी आधारपर रखी हो; पानीसे भरी हुई, किनारे तक भरी हुई, लवालव भरी हुई। उस चाटीको एक वलवान आदमी किसी भी ओरसे झुकाये, उसमेंसे पानी आ जाय। "भन्ते! ऐसा ही है।" इसी प्रकार भिक्षुओ, इस तरह पाँचो अगो वाली आर्य सम्यक्-समाधिकी भावना (=अभ्यास) करनेसे, इस प्रकार अभ्यास वढानेसे, वह अभिज्ञा द्वारा साक्षात् किये जा सकने वाले जिस जिस धर्मको साक्षात् (=प्रत्यक्ष) करनेके लिये चित्तको उस ओर नियुक्त करता है, वह

वही उस उस आयतनमें सफलता को प्राप्त होता है। भिक्षुओ, जैसे समतलपर कोई चतुष्कोण पुष्कारिणी हो, उसके चारो ओर बाध बधा हो। वह पानीसे भरी हो, किनारे तक भरी हो, लबालब भरी हो। तब कोई बलवान् आदमी, जहाँ जहाँसे भी बांधको तोडे, वही वहीसे पानी आ जाय। "भन्ते! ऐसा ही है।" इसी प्रकार भिक्षुओ, इस तरह पांचो अगो वाली आर्य सम्यक्-समाधिकी भावना (=अभ्यास) करनेसे, इस प्रकार अभ्यास बढानेसे, अभिज्ञा द्वारा साक्षात् किये जा सकने वाले जिस जिस धर्मको साक्षात् (=प्रत्यक्ष) करनेके लिये चित्तको उस ओर नियुक्त करता है, वह वही उस उस आयतनमें सफलताको प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, जैसे अच्छी भूमिपर, चौरस्तेपर श्रेष्ठ रथ खडा हो, जुता हुआ हो, घोडोंसे युक्त हो, चाबुक सहित हो। उस रथपर दक्ष रथवान्, अश्वोंका दमन करने वाला सारथी सवार हो। वह बायें हाथमें घोडोकी लगाम ले और दाहिने हाथमें चाबुक ले, घोडोको जिधर चाहे, जैसी गतिसे ले जाये और रोके। इसी प्रकार भिक्षुओ, इस तरह पांचो अगो वाली आर्य सम्यक्-समाधिकी भावना (=अभ्यास) करनेसे, इस प्रकार अभ्यास बढानेसे अभिज्ञा द्वारा साक्षात् किये जा सकने वाले जिस-जिस धर्मको साक्षात् (=प्रत्यक्ष) करनेके लिये चित्तको उस ओर नियुक्त करता है, वह वही उस उस आयतनमे सफलताको प्राप्त होता है। यदि वह यह आकाक्षा करता है कि अनेक प्रकारकी ऋद्धियाँ प्राप्त करे जैसे एक से अनेक हो सके . ब्रह्म-लोक तक उसके शरीरकी गति हो, वह वही उस आयतनमे सफलताको प्राप्त होता है। यदि वह यह आकाक्षा करता है कि दिव्य, अमानुषी श्रोत-धातुसे दिव्य तथा मानुष दोनो प्रकारके शब्दोको सुने—दूरके भी तथा समीपके भी—वह वही उस उस आयतनमें, सफलताको प्राप्त होता है। यदि वह यह आकाक्षा करता है कि दूसरे प्राणियोंके, दूसरे व्यक्तियोके चित्तको अपने चित्तसे जान ले—सराग चित्त हो तो यह जान ले कि सराग चित्त है, विमुक्त-चित्त हो, तो यह जान ले कि विमुक्त-चित्त है—तो वह वही उस उस आयतनमें सफलताको प्राप्त होता है। यदि वह यह आकाक्षा करता है कि अनेक पूर्व जन्मोकी बातको याद कर लूं—एक जन्मकी बात, दो जन्मोकी बात, इस प्रकार आकार-सहित, उद्देश्य-सहित पूर्व जन्मोका स्मरण कर लूं, तो वह वही उस उस आयतनमें सफलताको प्राप्त करता है। यदि वह यह आकाक्षा करता है कि दिव्य, अमानुषी चक्षु धातुसे कर्मानुसार उत्पन्न प्राणियोको जान लूं, तो वह वही उस उस आयतनमे सफलताको प्राप्त होता है। यदि आकाक्षा करता है, आस्रवोका क्षय कर साक्षात् कर, प्राप्त कर, विहार करे, तो वह वही उस उस आयतनमें सफलताको प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, चक्रमण (=घूमते हुए भावना) करनेके पाँच शुभ-परिणाम होते है। कौनसे पाँच ? रास्ता चलनेमे समर्थ होता है, प्रधान (=प्रयत्न) करनेमें समर्थ होता है, निरोगी शरीर वाला होता है, चखा, खाया, पिया, स्वाद लया—सब भली प्रकार हजम हो जाता है, चक्रमण करते हुए प्राप्त चित्तकी एकाग्रता चिरस्थायी होती है। भिक्षुओ, चक्रमण करनेके पाँच शुभ-परिणाम होते है।

एक समय महान् भिक्षु सघके साथ भगवान् कोशल जनपदमे चारिका करते समय, जहाँ इच्छानगल नामका कोशल जनपद वासियोका ब्राह्मण-ग्राम था, वहाँ पहुँचे। वहाँ भगवान् इच्छानगलमे, इच्छानगलके वन-खण्डमे विहार करते थे। इच्छानगलके ब्राह्मण-गृहपतियोने सुना—शाक्यकुल-प्रव्रजित शाक्यपुत्र श्रमण गौतम इच्छानगल पधारे है, इच्छानगलके वन-खण्डमे। उन भगवान् गौतमका यश, कीर्ति सुनी जाती है कि वह भगवान् अर्हत् है, सम्यक् सम्बुद्ध है, विद्या तथा आचरणसे युक्त है, सुगत है, लोकके जानकार है, अनुपम है, (दुष्ट-) पुरुषोका दमन करने वाले सारथी है, देवताओ तथा मनुष्योके शास्ता है। वह वुद्ध भगवान् है। वे देव-सहित मार-सहित ब्रह्मा-सहित इस लोकको, श्रमणो—ब्राह्मणो सहित तथा देवताओ और (अन्य) मनुष्यो सहित इस जनताको स्वय जानकर, साक्षात् परिचय प्राप्त कर, उपदेश देते है। वे आदिमे कल्याणकारक, मध्यमे कल्याणकारक, अन्तमे कल्याणकारक, अर्थ-सहित व्यजन-सहित (=शब्दो सहित) सम्पूर्ण रूपसे परिशुद्ध ब्रह्मचर्य (= श्रेष्ठ जीवन) का उपदेश करते है। इस प्रकारके अर्हतोका दर्शन करना वडा अच्छा होता है।

तब इच्छानगलके वे ब्राह्मण-गृहपति उस रात्रिका अन्त होनेपर खाने-पीनेकी वहुत-सी सामग्री ले जहाँ इच्छानगल वन-खण्ड था, वहाँ पहुँचे। वहाँ पहुँच कर वे द्वारकोष्ठ (?) से वाहर ठहरे। वे वहुत जोर-शोरसे हल्ला मचा रहे थे।

उस समय आयुष्मान् नागित भगवान् वुद्धके उपस्थापक थे। भगवान्ने आयुष्मान् नागितको सम्वोधित किया—"नागित! ये कौन है जो इतना हल्ला मचा रहे है, मानो मछुवे मच्छी वेच रहे हो ?" "भन्ते! ये इच्छानगलके ब्राह्मण गृहपति है। ये भिक्षु-सघ तथा आपके लिये ही वहुत सी खाद्य-भोज्य सामग्रीके लेकर द्वारा-कोष्ठसे वाहर खडे है।"

"नागित! मुझे यश (=ऐश्वर्य) की अपेक्षा नही। नागित! मुझे ऐश्वर्य नही चाहिये। नागित! इस अशुद्धि-पूर्ण सुख, इस आलस्य पूर्ण सुख, इस लाभ-सत्कार-प्रशसा सुखकी उसीको इच्छा हो जिसे यह नैष्क्रम्य-सुख, एकान्त-वास-सुख, उपशमन-सुख तथा सम्वोधि-सुखका विना कष्टके लाभ न हो, विना दु खके लाभ

न हो, जिस नैष्क्रम्य-सुख, एकान्त-वास सुख, उपशमन-सुख तथा सम्बोधि-सुखका मुझे विना कष्टके, विना कठिनाईके, विना दुःखके लाभ है।"

"भन्ते! भगवान्! इसे स्वीकार करें। सुगत! इसे स्वीकार करें। यह स्वीकार करनेका समय है। जहाँ जहाँ अब भन्ते भगवान् जायेंगे, उधर उधर ही अब ब्राह्मण-गृहपति, निगमके लोग तथा जनपदके लोग झुक जायेंगे। भन्ते! जैसे जोरकी वर्षा होनेपर जिधर जिधर ढलवान होता है, उधर उधर ही पानी जाता है, उसी प्रकार भन्ते! जहाँ जहाँ भी अब भगवान् जायेंगे, उधर-उधर ही अब ब्राह्मण-गृहपति, निगमके लोग तथा जनपदके लोग झुक जायेंगे। ऐसा क्यो? भगवान्के शील तथा प्रज्ञाकी ऐसी ही ख्याति है।"

"नागित! मुझे यश (=ऐश्वर्य) की अपेक्षा नही। नागित! मुझे ऐश्वर्य नही चाहिये। नागित! इस अशुचि-पूर्ण सुख, इस आलस्य-पूर्ण सुख, इस लाभ-सत्कार-प्रशसा सुखकी उसीको इच्छा हो जिसे यह नैष्क्रम्य-सुख, एकान्त-वास सुख, उपशमन-सुख तथा सम्बोधि-सुखका विना कष्टके लाभ न हो, विना कठिनाईके लाभ न हो, विना दुःखके लाभ न हो, जिस नैष्क्रम्य-सुख, एकान्त-वास-सुख, उपशमन-सुख तथा सम्बोधि-सुखका मुझे विना कष्टके, विना कठिनाईके, विना दुःखके लाभ है। नागित! जो चखा जाता है, जो खाया जाता है, जो पिया जाता है, जिसका स्वाद लिया जाता है उसका मल-मूत्र ही बन जाता है, यही उसकी निष्पत्ति है। नागित! प्रियोका अन्यथात्व हो जाता है और उससे शोक, रोने-पीटने, दुःख, दौर्मनस्यकी उत्पत्ति होती है, यही उसकी निष्पत्ति है। नागित! जो अशुभ-निमित्तकी भावना में लगा होता है, उसकी राग उत्पन्न करने वाले वाछित विषयोंके प्रति अरुचि हो जाती है—यही उसकी निष्पत्ति है। नागित! छह आयतनोंके विषयोंके प्रति अनित्य भावना करनेसे, उनके प्रति प्रतिकूल भावना पैदा हो जाती है—यही उसकी निष्पत्ति है। नागित! पाँचो उपादान स्कन्धोकी उत्पत्ति और विनाश पर विचार करते रहनेसे उपादान-स्कन्धोंके प्रति प्रतिकूल भावकी उत्पत्ति हो जाती है—यही उसकी निष्पत्ति है।

(४) सुमना-वर्ग

एक समय भगवान् श्रावस्तीमें अनाथपिण्डिकके जेतवनाराममें विहार करते थे। उस समय पाँच सौ रथो और पाँच सौ राजकुमारियोंसे घिरी हुई सुमना राजकुमारी जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँची। पहुँचकर, भगवान्को अभिवादन कर एक ओर बैठी। एक ओर बैठी हुई सुमना राजकुमारीने भगवान्से यह प्रश्न

पूछा—"भगवान्‌के दो श्रावक हो, जिनकी श्रद्धा वरावर हो, शील वरावर हो, प्रज्ञा बरावर हो, किन्तु दोनोमेंसे एक दाता हो और दूसरा दाता न हो, शरीर छूटनेपर, मरने पर वे दोनो स्वर्ग-लोकमे देवता होकर उत्पन्न हो। भन्ते! उन दोनोमे एक दूसरेकी अपेक्षासे कुछ विशेषता, कुछ भेद होगा वा नही ?"

"विशेषता होगी," भगवान् ने कहा, "सुमने! जो दाता होता है, देवता होनेपर वह अदाताकी अपेक्षा पाँच वातोमे विशिष्ट होता है—दिव्य-आयुकी दृष्टिसे, दिव्य-वर्णकी दृष्टिसे, दिव्य-सुखकी दृष्टिसे, दिव्य-यशकी दृष्टिसे तथा दिव्य-आधिपत्यकी दृष्टिसे। सुमने! जो दाता होता है, देवता होनेपर वह अदाताकी अनेक्षा इन पाँचो वातोमे विशिष्ट होता है।"

"भन्ते! यदि वे देव-योनिसे च्युत होकर इस मर्त्य-लोकमे जन्म ग्रहण करे तो मनुष्य होनेपर भी उन दोनोमें एक दूसरेकी अपेक्षासे कुछ विशेषता होगी, कुछ भेद होगा या नही ?"

"विशेषता होगी," भगवान्‌ने कहा," सुमने! जो दाता होता है, मनुष्य होनेपर वह अदाताकी अपेक्षा पाँच वातोमे विशिष्ट होता है—मानुषी-आयुकी दृष्टिसे, मानुषी-वर्णकी दृष्टिसे, मानुषी-सुखकी दृष्टिसे, मानुषी-यशकी दृष्टिसे तथा मानुषी-आधिपत्यकी दृष्टिसे। सुमने! जो दाता होता है, मनुष्य होनेपर वह अदाताकी अपेक्षा इन पांच वातोमे विशिष्ट होता है।

"भन्ते! यदि वे दोनो घरसे वे-घर हो, प्रव्रजित हो जाये, तो प्रव्रजित होनेपर भी उन दोनोमे एक दूसरेकी अपेक्षासे कुछ विशेषता होगी, कुछ भेद होगा, या नही ?"

"विशेषता होगी" भगवानने कहा, "सुमने! जो दाता होगा, प्रव्रजित होनेपर, वह अदाताकी अपेक्षा पांच वातोमे विशिष्ट होगा—अधिक करके वह प्रार्थना किये जानेपर ही चीवरका उपभोग करेगा, विना प्रार्थनाके कम ही, अधिक करके वह प्रार्थना किये जानेपर ही पिण्डपात (=भिक्षा) का उपभोग करेगा, विना प्रार्थनाके कम ही, अधिक करके वह प्रार्थना किये जानेपर ही शयनासनका उपभोग करेगा, विना प्रार्थनाके कम ही, अधिक करके वह प्रार्थना किये जानेपर ही रोगीकी आवश्यक्ताओ-भैषज्य-पीरष्कारका उपभोग करेगा, विना प्रार्थनाके कम ही, जिन सहब्रह्म-चारियोके साथ वह रहता है वह अधिकतया उसके अनुकूल ही शारीरिक-व्यवहार करते है, प्रतिकूल कम ही, अधिकतया उसके अनुकूल ही वाणीका व्यवहार करते है,

प्रतिकूल कम ही; अधिकतया उसके अनुकूल मानसिक व्यवहार करते हैं, प्रतिकूल कम ही, अधिकतया अच्छे ही उपहार लाते हैं, बुरे कम ही। सुमने! जो दाना होता है, प्रव्रजित होनेपर, वह अदाताकी अपेक्षा पाँच बातोंमें विशिष्ट होता है।"

"भन्ते! यदि वे दोनो अर्हत्व लाभकर ले, तो अर्हत् होनेपर भी उन दोनोमें एक दूसरेकी अपेक्षासे कुछ विशेषता होगी, कुछ भेद होगा या नही?"

"सुमने! इस स्थितिमे उन दोनोमे कोई भेद रहता है, मै नहीं कहता, एक की विमुक्ति तथा दूसरेकी विमुक्तिकी स्थितिमे।"

"भन्ते! यह आश्चर्यकर है। भन्ते! यह अद्भुत है। दान देना योग्य ही है, पुण्य करना योग्य ही है, क्योकि देवयोनि प्राप्त होनेपर भी पुण्य उपकारक होते हैं तथा प्रव्रजित होनेपर भी पुण्य उपकारक होते है।"

"सुमने! ऐसा ही है। सुमने! ऐसा ही है। दान देना योग्य ही है पुण्य करना योग्य ही है, क्योकि देव-योनि प्राप्त होनेपर भी पुण्य उपकारक होते है, मनुष्य-योनि प्राप्त होनेपर भी पुण्य उपकारक होते है तथा प्रव्रजित होनेपर भी पुण्य उपकारक होते है।"

शास्ताने यह कहकर, आगे यह कहा—

यथापि चन्दो विमलो गच्छं आकासधातुया,
सव्वे तारागणे लोके आभाय अतिरोचति॥
तथेव सीलसम्पन्नो सद्धो पुरिसपुग्गलो,
सव्वे मच्छरिनो लोके चागेन अतिरोचति॥
यथापि मेघो थनयं विज्जुमाली सतक्ककु,
थलं निन्नं च पूरेति अभिवस्सं वसुन्धरं॥
एवं दस्सनसम्पन्नो सम्मासम्बुद्धसावको,
मच्छरिं अधिगण्हाति पञ्चठानेहि पण्डितो॥
आयुना, यससा चेव वण्णेन च सुखेन च,
सचे भोगपरिब्बुळहो पेच्च सग्गे च मोदति॥

[जिस प्रकार आकाश-धातुमें जाता हुआ चन्द्रमा अपनी आभासे सभी तारा-गणोको आभा-हीन कर देता है, उसी प्रकार शीलवान् तथा श्रद्धावान् आदमी अपने त्यागसे सभी कंजूस लोगोको आभा-हीन कर देता है।

जिस प्रकार बिजली-सहित चारो दिशाओमें फैला हुआ, गरजना करने वाला बादल पृथ्वीपर बरसता हुआ तमाम नीची जगहोको भर देता है, उसी प्रकार सम्यक्-

दृष्टि वाला सम्यक्सम्बुद्ध-श्रावक पाँच बातोको लेकर कजूस आदमीसे वढ जाता है—आयुको लेकर, यशको लेकर, वर्णको लेकर, सुखको लेकर तथा आधिपत्यको लेकर। वह स्वर्गमे आनन्दित होता है ।]

एक समय भगवान राजगृहमेंके वेळुवनके कलन्दक निवाप (= गिलहरियोके निवास स्थान) में विहार करते थे। तव पाँच सौ रथो तथा पाँच सौ कुमारियोसे घिरी हुई चुन्दी राजकुमारी जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँच, भगवान्को प्रणाम कर एक ओर बैठी। एक ओर बैठी हुई चुन्दी राजकुमारीने भगवान्से पूछा—

"भन्ते! हमारे चुन्द राजकुमारका यह कहना है जो कोई स्त्री हो अथवा पुरुष यदि बुद्धकी शरण ग्रहण करता है, धर्मकी शरण ग्रहण करता है, सघकी शरण ग्रहण करता है, प्राणी-हिंसासे विरत रहता है, चोरी करनेसे विरत रहता है, व्यभिचारसे विरत रहता है, झूठ बोलनेसे विरत रहता है, तथा सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोको ग्रहण करनेसे विरत रहता है, उसे शरीर छूटनेपर सुगति ही प्राप्त होती है, दुर्गति नही। सो भन्ते! मैं भगवान्से पूछती हूँ कि वह कैसे शास्तामें श्रद्धावान् होनेसे सुगतिको ही प्राप्त होता है, दुर्गतिको नही, कैसे धर्मके प्रति श्रद्धावान् होनेसे कैसे सघके प्रति श्रद्धावान् होनेसे कैसे कुशल-धर्मोका सम्पूर्ण रूपसे आचरण करनेसे शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर सुगतिको ही प्राप्त होता है, दुर्गतिको नही ?"

"चुन्दी! जितने भी प्राणी है—चाहे वे विना पाँवके हो, चाहे दो पाँव वाले हो, चाहे चतुष्पाद हो, चाहे वहुतसे पाँव वाले हो, चाहे रूपी हो, चाहे अरूपी हो चाहे सज्ञी हो, चाहे असज्ञी हो, चाहे नसज्ञी-न-असज्ञी हो—अर्हत सम्यक्सम्बुद्ध तथागत उनमे श्रेष्ठतम माने जाते है। चुन्दी! जो बुद्धके प्रति प्रसन्न (= श्रद्धावान्) होते है, वह श्रेष्ठतम (= अग्र) के प्रति श्रद्धावान् होते है, जो श्रेष्ठतम (= अग्र) के प्रति श्रद्धावान् होते है, उन्हे श्रेष्ठतम (= अग्र) फलकी प्राप्ति होती है।

"चुन्दी! जितने भी सस्कृत वा असस्कृत धर्म है, वैराग्य उन सभीमे अग्र कहा जाता है, यह जो मदका मर्दन करना है, यह जो प्यासको नष्ट करना है, यह जो आसक्तिका मूलोच्छेद करना है, वस्तुओकी कामना का मूलोच्छेद, तृष्णाका क्षय, वैराग्य, निरोध तथा निर्वाण। चुन्दी! जो विराग (= निर्वाण) धर्मके प्रति श्रद्धावान् होते है, वे अग्रके प्रति श्रद्धावान् होते है, जो अग्रके प्रति श्रद्धावान् होते है उन्हे अग्र-फलकी प्राप्ति होती है।

"चुन्दी! जितने भी सघ या गण है, तथागतका श्रावक-सघ उनमे श्रेष्ठ कहलाता है, जो कि यह चार पुरुषोंके जोडे है, जो कि यह आठ पुरुष-पुद्गल है, यही

भगवान्‌का श्रावक-संघ है, आदर करने योग्य, आतिथ्य करने योग्य, दक्षिणा देने योग्य, हाथ जोडकर नमस्कार करने योग्य, लोगोंके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र। चुन्दी! जो कोई संघके प्रति प्रसन्न होता है वह अग्रके प्रति श्रद्धावान् होता है, जो अग्रके प्रति श्रद्धावान् होता है उसे अग्रफलकी प्राप्ति होती है।

"चुन्दी! जितने भी शील है, उनमें आर्य (= श्रेष्ठ) शील ही अग्र कहलाता है, जो कि यह अखण्डित-शील, छिद्र-रहित शील, बिना धब्बेका शील, निर्मल-शील, स्वाधीन-शील, विज्ञ पुरुषो द्वारा प्रशंसित शील, अकलुषित शील तथा समाधि लाभमें सहायक-शील। चुन्दी! जो लोग आर्य (= श्रेष्ठ) शीलको सम्पूर्ण रूपसे पालन करने वाले है, वे अग्र (= श्रेष्ठतम) की पूर्ति करने वाले है और उन्हे अग्र-फलकी ही प्राप्ति होती है।

अग्गतो वे पसन्नान अग्ग धम्म विजानत
अग्गे बुद्धे पसन्नान दक्खिणेय्ये अनुत्तरे।
अग्गे धम्मे पसन्नान विरागुपसमे सुखे,
अग्गे सघे पसन्नान पुञ्ञक्खेत्ते अनुत्तरे॥
अग्गस्मि दान ददत अग्गपुञ्ञ पवड्ढति,
अग्ग आयुञ्च वण्णोच यसो कित्ति सुख बल॥
अग्गस्स दाता मेधावी अग्गधम्मसमाहितो,
देवभूतो मनुस्सो वा अग्गप्पत्तो पमोदति॥

[जो अग्रके प्रति श्रद्धावान् है, जो अग्र (= श्रेष्ठ) धर्मके जानकार है, जो अनुपम दक्षिणा-पात्र है, जो वैराग्य-स्वरूप, उपशमन-स्वरूप, सुख-स्वरूप निर्वाणके प्रति श्रद्धावान् है, जो अनुपम पुण्य-क्षेत्र श्रेष्ठ संघके प्रति श्रद्धावान् है, ऐसे लोग जब अग्र (= श्रेष्ठतम) को दान देते है, तो अग्र (= श्रेष्ठ) पुण्यकी वृद्धि होती है। उन्हे श्रेष्ठ आयु, वर्ण, यश, कीर्ति, सुख तथा बलकी प्राप्ति होती है। जो मेधावी अग्र (= श्रेष्ठ) बुद्ध तथा संघको दान देता है, जो अग्र (= श्रेष्ठ) धर्मसे युक्त होता है, वह चाहे देव-योनिमे जन्म ग्रहण करे और चाहे मनुष्य-योनिमे जन्म ग्रहण करे, अग्र (= श्रेष्ठ) फलको प्राप्त कर आनन्दित होता है।]

एक समय भगवान् भद्दियमे जातिय-वनमे विहार करते थे। तब मेण्डक-नाती उग्गह जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवान्‌को नमस्कार कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए मेण्डक-नाती उग्गहने भगवान्‌को यह कहा—"भन्ते! अन्य तीन जनोंके साथ आप कलके लिये मेरा निमन्त्रण स्वीकार करें।"

भगवान्‌ने मौन रहकर स्वीकार किया। तब मेण्डक-नाती उग्गह भगवान्‌की स्वीकृति जान, आसनसे उठ, भगवान्‌को नमस्कार कर, प्रदक्षिणाकर, उठकर चला गया।

तब भगवान् उस रात्रिके बीतनेपर, पूर्वाह्ण समय, पहन कर, पात्र-चीवर ले, जहाँ मेण्डक-नाती उग्गहका घर था, वहाँ पधारे। वहाँ बिछे आसनपर बैठे। तब मेण्डक-नाती उग्गहने भगवान्‌को अपने हाथसे बढिया भोजन कराया। जब भगवान् भोजनकर चुके और उन्होंने अपना हाथ खीच लिया तो मेण्डक-नाती उग्गह एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए मेण्डक-नाती उग्गहने भगवान्‌से यह निवेदन किया—"भन्ते! मेरी यह लडकियाँ पतिके कुल जायेगी। भगवान् इन्हे उपदेश दे। भगवान् इनका अनुशासन करे, जो दीर्घ कालतक इनके हित तथा सुखका कारण हो।" तब भगवान्‌ने कुमारियोको इस प्रकार उपदेश दिया—

"इसलिये कुमारियो! इस प्रकार सीखना चाहिये कि तुम्हारा कल्याण चाहने वाले, तुम्हारा हित चाहने वाले, तुमपर अनुकम्पा करने वाले माता-पिता तुमपर अनुकम्पा करके तुम्हे जिस किसी भी पतिको सौपे, हम उससे पहले (सोकर) उठने वाली होगी, उससे पीछे सोने वाली होगी, आज्ञामे रहने वाली होगी, अनुकूल बरताव करने वाली होगी तथा प्रिय-वादिनी होगी। इसी प्रकार कुमारियो सीखना चाहिये।

"इसलिये कुमारियो! इस प्रकार सीखना चाहिये कि तुम्हारे पतिके जो भी गौरव-भाजन होगे, चाहे माता हो, चाहे पिता हो, चाहे श्रमण-ब्राह्मण हो, हम उनका सत्कार करेंगी, उनका गौरव करेंगी, उनको मानेंगी, उन्हे पूजेगी तथा अतिथि आनेपर उन्हे आसन तथा जल देगी। इसी प्रकार कुमारियो! सीखना चाहिये।

"इसलिये कुमारियो! इस प्रकार सीखना चाहिये कि जो स्वामीके शिल्प (=कर्मान्त) होगे, चाहे ऊनका काम हो, चाहे कपासका काम हो, उसमे दक्ष होगी, आलस्य-रहति होगी, उसमे यथोचित उपाय तथा विचार करने वाली, उसे करनेमे, उसकी व्यवस्था करनेमे समर्थ। इसी प्रकार कुमारियो सीखना चाहिये।

"इसलिये! कुमारियो इस प्रकार सीखना चाहिये कि स्वामीके घरके भीतरके जो जन होगे—चाहे दास हो, चाहे दूत हो, चाहे नौकर-चाकर हो—उनके द्वारा किये गये तथा न किये गये कामकी जानकारी रखेगी, रोगियोके बलाबलकी जानकारी रखेगी, और उनको खाना-पीना उसी हिसाबसे बाँट कर देगी। इसी प्रकार कुमारियो! सीखना चाहिये।

"इसलिये कुमारियो ! उस प्रकार सीखना चाहिये कि स्वामी जो भी धन-धान्य, चाँदी अथवा सोना लायेगा उसकी सुरक्षा, हिफाजत करेंगी। उसके प्रति धूर्त नही होगी, उसे चुराने वाली नही होगी, उसमे सुरा आदि पीने वाली नही होगी तथा उसे नष्ट करने वाली नही होगी। इसी प्रकार कुमारियो सीखना चाहिये।

"हे कुमारियो ! जिस स्त्रीमे ये पाच गुण होते है वह शरीर छूटने पर, मरनेके अनन्तर मनाप-कायिक देवताओंके साथ जन्म ग्रहण करती है।

यो न भरति सब्बदा निच्चं आतापि उस्सुको,
सब्बकामहरं पोसं भत्तारं नातिमञ्ञति।
न चापि सोत्थि भत्तारं इस्साचारेन रोसये,
भत्तु च गरुनो सब्बे पटिपूजेति पण्डिता ॥
उट्ठाहिका अनलसा सगहीतपरिज्जना,
भत्तुमनापा चरति सम्भतं अनुरक्खति ॥
या एवं वत्तती नारी भत्तुछन्दवसानूगा,
मनापानाम ते देवा यत्थ सा उप्पज्जति ॥"

[जो प्रयत्नवान्, उत्साहपूर्ण स्त्री अपनी सब कामनायें पूरी करने वाले पुरुषका, पतिका नित्य पोषण करती है और उसकी अवहेलना नही करती; जो अपने स्वैरी भावसे पतिको रुष्ट नही करती, जो विदुषी अपने पतिके सभी गौरव-भाजन व्यक्तियोकी पूजा करती है, जो अप्रमाद-युक्त होती है, जो आलस्य-रहित होती है, जो परिजनोका प्रिय वचन आदिसे संग्रह करने वाली होती है, जो पतिके अनुकूल आचरण करती है, जो पतिके कमाये धनकी रक्षा करती है, जो इस प्रकार स्वामीकी इच्छाके अनुकूल वरताव करती है, वह मनाप-देवताओंके साथ उत्पत्ति ग्रहण करती है।]

एक समय भगवान् वैशालीके महावनमें कूटागार शालामे विहार करते थे। तव सिंह सेनापति जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचा। पास जाकर भगवान्‌का अभिवादनकर एक ओर वैठा। एक ओर वैठे हुए सिंह सेनापतिने भगवान्‌से यह कहा—"भन्ते ! क्या दानका इह-लौकिक (=सादृष्टिक) फल वताया जा सकता है ?" 'सिंह ! वताया जा सकता है", भगवान् ने कहा।

"सिंह जो दायक होता है, दानपति होता है वह वहुत लोगोका प्यारा होता है, वहुत लोगोको अच्छा लगने वाला। सिंह ! यह जो दायक, दानपति, वहुत जनोका प्रिय होता है, वहुत जनोको अच्छा लगने वाला होता है, यह भी दानका इह-लौकिक (=सादृष्टिक) फल है।

"फिर सिंह ! जो दायक होता है, दानपति होता है, सन्त-पुरुष सज्जन गण उसकी सगति करते हैं। सिंह ! यह जो दायक होता है, दानपति होता है, सन्त-पुरुष सज्जन-गण उसकी सगति करते है, यह भी दानका इह-लौकिक (= सादृष्टिक) फल है।

"फिर सिंह ! जो दायक होता है, दानपति होता है, उसका यश, उसकी कीर्ति फैलती है। सिंह ! यह जो दायक होता है, दानपति होता है, उसका यश, उसकी कीर्ति फैलती है, यह भी दानका इह-लौकिक (सादृष्टिक) फल है। फिर सिंह ! जो दायक होता है, दान-पति होता है, वह जिस किसी परिषदमे भी जाता है, चाहे क्षत्रियोकी परिषद हो, चाहे ब्राह्मणोकी परिषद हो, चाहे गृहपतियो (= वैश्यो) की परिषद् हो, चाहे श्रमण-परिषद हो, उसकी नजर ऊँची ही रहती है, उसे सिर नीचा नही करना होता। सिंह ! यह जो दायक होता है, दानपति होता है, वह जिस किसी परिषद्में भी जाता है, चाहे क्षत्रियोकी परिषद् हो, चाहे ब्राह्मणोकी परिषद् हो, चाहे गृहपतियोकी परिषद् हो, चाहे श्रमण-परिषद् हो, उसकी नजर ऊँची ही रहती है, उसे सिर नीचा नही करना होता, यह भी दानका इह-लौकिक (= सादृष्टिक फल) है।

"फिर सिंह ! जो दायक होता है, जो दानपति होता है, वह शरीरके छूटने पर, मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्गलोकमे उत्पन्न होता है। सिंह ! जो दायक होता है, जो दानपति होता है, वह शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्ग लोकमे उत्पन्न होता है, यह दानका पार-लौकिक (सम्परायिक) फल है।"

ऐसा कहनेपर सिंह सेनापतिने भगवान्से कहा—"भन्ते ! आपने जो चार साद्दष्टिक-फल कहे, उन्हे मैं भगवान् के प्रति श्रद्धा होनेके कारण स्वीकार नही करता, मैं स्वय उन्हे जानता हूँ। भन्ते ! मैं दायक हूँ, मै दानपति हूँ, मैं वहुतसे लोगोका प्रिय हूँ, वहुतसे लोगोको अच्छा लगने वाला हूँ। भन्ते ! मैं दायक हूँ, मै दान-पति हूँ, सत्पुरुष सज्जन-गण मेरी सगति करते है। भन्ते ! मै दायक हूँ, मै दानपति हूँ, इस लिये मेरा यश, मेरी कीर्ति फैलती है कि सिंह-सेनापति दायक है, (कुशल) करने वाला है तथा सघकी सेवा करने वाला है। भन्ते ! चाहे कोई भी परिषद् हो, चाहे क्षत्रिय-परिषद् हो, चाहे ब्राह्मण-परिषद् हो, चाहे गृहपति-परिषद् हो, चाहे श्रमण परिषद् हो, मैं जिस किसी भी परिषद्मे जाता हूँ, मेरी नजर ऊँची ही रहती है, सिर नीचा नही रहता। भन्ते ! भगवान्ने यह जो चार सादृष्टिक फल कहे, मैं इन्हे भगवान्के प्रति श्रद्धा होनेके कारण ही स्वीकार नही करता हूँ, मैं भी

'इन्हे जानता हूँ। लेकिन भन्ते ! भगवान् ने मुझे जो यह कहा कि सिंह ! जो दायक होता है, जो दानपति होता है वह शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर, सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्ग-लोकमे जन्म ग्रहण करता है—इसे मै नही जानता, इसे मैं भगवान्‌के प्रति श्रद्धा होनेके कारण ही स्वीकार करता हूँ। "सिंह ! ऐसा ही है, सिंह ! ऐसा ही है, जो दायक होता है, जो दानपति होता है, वह शरीर छूटनेपर मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्ग-लोकमें जन्म ग्रहण करता है।"

दद पियो होति भजन्ति न वहु
 कित्तिञ्च पप्पोति, यसो च वड्ढति।
अमकुभूतो परिस विगाहति,
 विसारदो होति नरो अमच्छरि॥
तस्मा हि दानानि ददन्ति पण्डिता
 विनेय्य मच्छेरमल सुखेसिनो,
ते दीघरत्त तिदिवे पतिट्ठिता,
 देवान सहव्यत गता रमन्ति
कतावकासा कुसला ततो चुता
 सयपभा अनुविचरन्ति नन्दन,
ते तत्थ नन्दन्ति रमन्ति मोदरे
 समप्पिता कामगुणेहि पञ्चहि
कत्वान वाक्य असितस्स तादिनो
रमन्ति सग्ग सुगतस्स सावका॥

[जो दाता होता है, वह जन-प्रिय होता है, वहुत लोग उसकी सगति करते है, वह कीर्तिको प्राप्त होता है, उसका यश वढता है। वह विना सकोच किसी भी परिषद्में सम्मिलित होता है। वह निर्लोभी आदमी विशारद होता है। इसी-लिये सुखकी कामना करने वाले पण्डित जन लोभ-लालचका दमन कर दान देते हैं। वैसे जन दीर्घकाल तक स्वर्गलोकमे प्रतिष्ठित हो देवताओके साथ सानन्द रहते हैं। वे कुशल-कर्मी जन वहाँसे च्युत होनेपर स्वय-प्रभ स्वरूपसे नन्दन-वनमे रमण करते है। वे वहाँ पाँचो इन्द्रियोके भोगोको भोगते हुए, प्रमुदित मनसे प्रीतियुक्त रहते है। स्थिरमति असित (= तथागत) के उपदेशानुसार आचरणकर सुगतके श्रावक स्वर्गमे निवास करते है।]

भिक्षुओ, दानके ये पाच शुभ-परिणाम होते हैं। कौनसे पाच ? (दाता) बहुत जनोका प्रिय होता है, अच्छा लगने वाला होता है, सन्तपुरूष सज्जनो की सगति रहती है, यश-कीर्तिकी वृद्धि होती है, गृहस्थ-धर्म (= पच शीलो) के पालन करने वाला होता है तथा शरीर छुटने पर, मरने पर सुगतिको प्राप्त होता है तथा स्वर्ग मे उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, दान के ये पाँच शुभ-परिणाम है।

ददमानो पियो होति सत धम्म अनुक्कम,
सन्तो भजन्ति सप्पुरिसा सञ्ञता ब्रह्मचारयो ।।
ते तस्स धम्म देसेन्ति सव्बदुक्खा पनूदन
य सो धम्म इधञ्ञाय परिनिव्वाति अनासवो ।।

[दानी जन-प्रिय होता है, वह सत्पुरूषोके धर्मका अनुगमन करने वाला होता है, सज्जन सत्पुरूष,सयत ब्रह्मचारी-जन उसकी सगति करते है। वे सत्पुरुप उसे सभी दु खोका नाश करने वाले धर्मका उपदेश देते है। उस धर्मको जानकर, वह आसवोका क्षयकर, परिनिर्वाण (= रागादि अग्निकी शान्ति) को प्राप्त होता है।]

भिक्षुओ, ये पाँच समयोचित दान है। कौनसे पाँच ? आनेवाले अतिथिको दान देना, जाने वाले पथिक को दान देना, रोगीको दान देना, दरिद्रको दान देना तथा जो नई उपज हो वा नये फल हो वे पहले शीलवानोकी सेवामे उपस्थित करना। भिक्षुओ, ये पाँच समयोचित दान है।

काले ददन्ति सप्पञ्ञा वदञ्ञू वीतमच्छरा,
कालेन दिन्न अरियेसु उजुभूतेसु तादिमु ।।
विप्पसन्नमना तस्स विपुला होति दक्खिणा,
ये तत्थ अनुमोदन्ति वेय्यावच्च करोन्ति वा ।।
न तेन दक्खिणा ऊना तेपि पुञ्ञस्स भागिनो,
तस्मा ददेव अप्पटिवानचित्तो यत्थदिन्न महप्फल ।।
पुञ्ञानि परलोकस्मि पतिट्ठा होन्ति पाणिन ।।

[प्रज्ञावान, पन्डित-जन, निर्लोभी भावसे समयोचित दान देते है। जो आर्यजन है, जो ऋजु-चरित है, जो स्थिरमति है, ऐसे श्रेष्ठजनो को प्रसन्न मनमे जो दान दिया जाता है, वह महादान होता है। जो उस दानका अनुमोदन करते है, अथवा काम-काज करके सहायक होते है, उससे वह 'महादान' किसी भी प्रकार छोटा दान नही होता, वे भी 'पुण्य'के भागी होते है। इसलिये अनुत्कण्ठित चित्तसे वहाँ दान दे,

जहाँ दान देनेका महान् फल होता है। 'पुण्य' ही परलोकमे प्राणियोंके सहायक सिद्ध होते है।]

भिक्षुओ, जो दाता भिक्षुओंको भोजन कराता है, वह भोजन स्वीकार करने वाले भिक्षुओको पांच चीजोका दान देता है। कौन सी पांच ? आयु देता है, वर्ण देता है, सुख देता, बल देता है तथा प्रतिभा देता है। आयुका दाता होनेसे वह मानुषी या दिव्य आयुका भागी होता है, वर्णका दाता होनेसे वह मानुष वा दिव्य वर्णका भागी होता है, सुखका दाता होनेसे वह मानुष वा दिव्य सुखका भागी होता है, बलका दाता होनेसे वह मानुष वा दिव्य बलका भागी होता है तथा प्रतिभाका दाता होनेसे वह मानुषी वा दिव्य प्रतिभाका भागी होता है। भिक्षुओ, जो दाता भिक्षुओंको भोजन कराता है, वह भोजन स्वीकार करने वाले भिक्षुओको इन पांच चीजोका दान देता है।

आयुदो बलदो धीरो वण्णदो पटिभाणदो,
सुखस्स दाता मेधावी सुख सो अधिगच्छति ।।
आयु दत्वा बल वण्ण सुख च पटिभाणक,
दीघायु यसवा होति यत्थ यत्थुपपज्जति ।।

[जो धैर्यवान् आयु, बल, वर्ण, प्रतिभा तथा सुखका दाता होता है, वह मेधावी पुरुष 'सुख' प्राप्त करता है। जो आयु, बल, वर्ण, सुख तथा प्रतिभाका दाता होता है, वह जहाँ जहाँ उत्पन्न होता है, वहाँ वहाँ दीर्घायुको प्राप्त करता है और यशस्वी होता है।]

भिक्षुओ, श्रद्धावान् कुलपुत्रको पाच लाभ रहते है। कौनसे पाच ? भिक्षुओ, दुनियामें जो सन्तपुरुष, सत्पुरुष होते है, वे जब दयावान् होते है तो पहले श्रद्धावान् पर ही दया दिखाते है अश्रद्धावान् पर नही; जब समीप आते है तो पहले श्रद्धावान्‌के ही समीप आते है अश्रद्धावान्‌के नही, जब स्वागत करते है तो पहले श्रद्धावान्‌का ही स्वागत करते है, अश्रद्धावान्‌का नही , अब धर्मोपदेश देते है तो पहले श्रद्धावान्‌को ही उपदेश देते है, अश्रद्धावान्‌को नही तथा जो श्रद्धावान् होता है वह शरीर छोडनेपर, मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्ग लोकमे उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, श्रद्धावान् कुलपुत्रको ये पाच लाभ रहते है। भिक्षुओ, जैसे किसी चौरस्तेपर सुभूमिमें न्यग्रोधका महान् वृक्ष हो और वह चारो ओरसे आने वाले पक्षियोका शरण-स्थान हो, इसी प्रकार भिक्षुओ जो श्रद्धावान् कुलपुत्र होता है वह बहुत जनोका शरण-स्थान होता है, भिक्षुओका, भिक्षुणियोका, उपासकोका, उपासिकाओका।

साखापत्तफलुपेतो खन्धिया च महादुमो,
मूलवा फलसम्पन्नो पतिट्ठा होति पक्खिन ।।
मनोरमे आयतने सेवन्ति न विहगमा,
छाय छायत्थिनो यन्ति फलत्था फलभोजिनो ।।
तथेव सीलसम्पन्न सद्ध पुरिसपुग्गल,
निवातवुत्ति अत्थद्ध सोरत सखिल मुदु
वीतरागा वीतदोसा वीतमोहा अनासवा,
पुञ्ञक्खेत्तानि लोकस्मि सेवन्ति तादिस नर
ते तस्स धम्म देसेन्ति सब्बदुक्खा पनूदन,
य सो धम्म इधञ्ञाय परिनिब्बाति अनासवो ।।

[जिस महान् वृक्षमे शाखाये होती है, पत्ते होते है, फल होते है ऐसा स्कन्धयुक्त समूल सफल वृक्ष पक्षियोके लिये शरण-स्थान होता है। सुन्दर स्थलपर स्थित उस वृक्षका पक्षी-गण आश्रय ग्रहण करते है—छायार्थी छायाकी अपेक्षासे पास जाते है, फलार्थी फलकी अपेक्षासे। इसी प्रकार जो वीतराग, वीत-द्वेष वीतमोह अनास्रवजन है, जो लोकमें पुण्य-क्षेत्र है, वे वैसे शान्त, अकठोर, सयत, प्रीतियुक्त, मृदु पुरुषका आश्रय ग्रहण करते है। वे सत्पुरुष उसे सभी दु खोका नाश करने वाले धर्मका उपदेश देते है। उस धर्मको जानकर, वह आस्रवोका क्षय कर परिनिर्वाण (= रागादि अग्निकी शान्ति) को प्राप्त होता है।]

भिक्षुओ, पाँच बातोका ख्यालकर माता पिता इस बातकी इच्छा करते है कि उनके कुलमे पुत्र उत्पन्न हो। कौनसी पाच बातोका ? पोषित होकर हमारा पोषण करेगा, हमारा काम-काज करेगा, कुल-परम्परा चिर-स्थायी होगी, उत्तराधिकारी होगा और प्रेतावस्थाको प्राप्त होनेपर, मर जानेपर दक्षिणा (= दान) देगा। भिक्षुओ, इन पाच बातोका ख्याल कर माता-पिता इस बातकी इच्छा करते है कि उनके कुलमें पुत्र उत्पन्न हो।

पच ठानानि सम्पस्स पुत्त इच्छन्ति पण्डिता,
भतो वा नो भरिस्सति किच्च वा नो करिस्सति ।।
कुलवसो चिर ठस्सति दायज्ज पटिपज्जति
अथवा पनपेतान दक्खिण अनुपदस्सति ।।
ठानानेतानि सम्पस्स पुत्त इच्छन्ति पण्डिता,
तस्मा सन्तो सप्पुरिसा कतञ्ञू कतवेदिनो ।।

भरन्ति मातापितरो पुब्बे कतमनुस्सरं,
करोन्ति नेसं किच्चानि यथा तं पुब्बकारिनं ॥
ओवादकारी भतपोसी कुलवंसं अहापयं,
सद्धो सीलेनसम्पन्नो पुत्तो होति पसंसियो ॥

[पण्डित-जन पाँच बातोंका ख्यालकर पुत्रोत्पत्तिकी इच्छा करते हैं—पोषित होकर हमारा पोषण करेगा, हमारा काम-काज करेगा, कुल-परम्परा चिर-स्थायी होगी, उत्तराधिकारी होगा तथा हमारे मरनेपर दक्षिणा (= दान) देगा। इन्ही बातोंका विचार कर पण्डित माता-पिता पुत्रोंकी इच्छा करते हैं। इसलिये जो सज्जन होते हैं, जो सत्पुरुष होते हैं, जो कृतज्ञ होते हैं, जो कृतवेदी होते हैं, वे अपने माता-पिता द्वारा किये गये पूर्व उपकारोंका अनुस्मरण कर, माता-पिताका पोषण करते हैं और उन पूर्व-उपकारियोंके काम आते हैं। जो आज्ञाकारी होता है, जो पोषित होकर पोषण करने वाला होता है, जो अपने-कुल वंशकी परम्पराको बनाये रखता है, ऐसा श्रद्धावान् शीलसम्पन्न पुत्र ही प्रशंसित होता है।]

भिक्षुओ, पर्वतराज हिमालयके कारण शाल (वृक्ष) पाँच प्रकारसे वृद्धिको प्राप्त होते हैं। कौनसे पाँच प्रकारसे? शाखाओं तथा पत्तोंमें वृद्धि होती है, छालमें वृद्धि होती है, पपड़ीमें वृद्धि होती है, सारके ऊपरकी लकड़ीमें वृद्धि होती है, तथा सारमें वृद्धि होती है,। भिक्षुओ, पर्वतराज हिमालयके होनेसे शाल-वृक्ष इन पाँच प्रकारसे वृद्धिको प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार भिक्षुओ, यदि कुल-पति श्रद्धावान् हो, तो उसके कारण उसके आश्रित जनोंमें पाँच बातोंकी वृद्धि होती है। कौनसी पाँच बातोंकी? श्रद्धाकी वृद्धि होती है, शीलकी वृद्धि होती है, श्रुत (= विद्या) की वृद्धि होती है, त्यागकी वृद्धि होती है तथा प्रज्ञाकी वृद्धि होती है। भिक्षुओ, यदि कुल-पति श्रद्धावान् हो तो उसके कारण, उसके आश्रित-जनोंमे पाच बातोंकी वृद्धि होती है।

यथा च पब्बतो सेलो अरञ्जस्मिं ब्रहावने,
तं रुक्खा उपनिस्साय वड्ढन्ते ते वनप्पति ॥
तथेव सीलसम्पन्नं सद्धं कुलपतिं इध,
उपनिस्साय वड्ढन्ति पुत्तदारा च बन्धवा ॥
अमच्चा ञातिसंघा च ये चस्स अनुजीविनो,
त्यस्स सीलवतो सीलं चागं सुचरितानिच ॥
पस्समानुकुब्बन्ति ये भवन्ति विचक्खणा,

इध धम्म चरित्वान मग्ग सुगतिगामिन
नन्दिनो देवलोकास्मि मोदन्ति कामकामिनो ।।

[जैसे किसी बडे वनमें, आरण्यमे, कोई पर्वत-राज शैल हो और उस शैलके कारण उस वनके वृक्ष वृद्धिको प्राप्त होते हो, उसी प्रकार यदि कुलपति सदाचारी तथा श्रद्धासम्पन्न होता है, तो उसके कारण उसके स्त्री-पुत्र तथा अन्य बन्धु-बान्धव उन्नतिको प्राप्त होते है। उसके मित्र, रिश्तेदार और जितने भी उसके आश्रित होते है, वे सभी पण्डित-जन सदाचारी के शील, त्याग तथा सदाचरणको देखते हुए उसका अनुकरण करते है। वे सुगति-गामियोके मार्गपर चलकर, धर्मका अनुसरणकर, देवलोकमे उत्पन्न होते है और वहाँ सभी कामनाओकी पूर्तिका आनन्द उठाते हुए प्रीतिपूर्वक रहते है।]

(५) मुण्डराज-वर्ग

एक समय भगवान् श्रावस्तीमे अनाथपिण्डिकके जेतवनाराममें विहार करते थे। तब अनाथपिण्डिक गृहपति जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवानको नमस्कार कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए अनाथपिण्डिक गृहपतिको भगवान्ने यह कहा—गृहपति! ऐश्वर्यकी प्राप्तिके ये पाच उद्देश्य है। कौनसे पाच? हे गृहपति! आर्यश्रावक ऐसी भोग-सामग्रीसे, जिसे उसने उत्थान-वीर्यसे प्राप्त किया है, बाहु-बलसे प्राप्त किया है, पसीना बहाकर प्राप्त किया है तथा धार्मिक-विधिसे प्राप्त किया है, अपने-आपको सुख पहुँचाता है, प्रमुदित करता है, अच्छी तरहसे सुखी होता है, माता-पिताको सुख पहुँचाता है, प्रमुदित करता है, अच्छी तरहसे सुखी करता है, पुत्र-स्त्री, दास, कर्मकर लोगोको सुख पहुँचाता है, प्रमुदित करता है, अच्छी तरहसे सुखी करता है। यह ऐश्वर्यकी प्राप्तिका पहला उद्देश्य है। फिर गृहपति! आर्य-श्रावक ऐसी भोग-सामग्रीसे जिसे, उसने उत्थान-वीर्यसे प्राप्त किया है, बाहु-बलसे प्राप्त किया है, पसीना बहाकर प्राप्त किया है तथा धार्मिक-विधिसे प्राप्त किया है अपने यार-दोस्तोको सुख पहुँचाता है, प्रमुदित करता है, अच्छी तरहसे सुखी करता है। यह ऐश्वर्यकी प्राप्तिका दूसरा उद्देश्य है। फिर गृहपति! आर्य-श्रावक ऐसी भोगसामग्रीसे, जिसे उसने उत्थान-वीर्यसे प्राप्त किया है, बाहु-बल से प्राप्त किया है, पसीना बहाकर प्राप्त किया है तथा धार्मिक विधिसे प्राप्त किया है, यदि उसपर कोई आपत्ति आती है, चाहे वह आगसे हो, चाहे वह राज्यसे हो, चाहे वह चोरसे हो, चाहे किसी अप्रिय-व्यक्तिसे हो, चाहे उत्तराधिकारीसे हो, तो वैसी आपत्ति

आनेपर वह भोग-सामग्रीसे आत्म-रक्षा करता है, अपने आपको सकुशल बनाये रखता है। यह ऐश्वर्यकी प्राप्तिका तीसरा उद्देश्य है। फिर गृहपति! आर्य-श्रावक ऐसी भोग्य-सामग्रीसे, जिसे उसने उत्थान-वीर्यसे प्राप्त किया है, बाहु-बलसे प्राप्त किया है, पसीना बहाकर प्राप्त किया है तथा धार्मिक-विधिसे प्राप्त किया है पाच बलि-कर्म करने वाला होता है—ज्ञाति-बलि, अतिथि-बलि, पूर्व-प्रेत-बलि, राज-बलि तथा देवता-बलि। यह ऐश्वर्यकी प्राप्ति का चौथा उद्देश्य है। फिर गृहपति! ऐसी भोग-सामग्रीसे, जिसे उसने उत्थान-वीर्यसे प्राप्त किया है, बाहु-बलसे प्राप्त किया है, पसीना बहाकर प्राप्त किया है तथा धार्मिक विधिसे प्राप्त किया है, ऐसे श्रमण-ब्राह्मणो को जो मद-प्रमादसे विरत हो, जो क्षमा तथा विनम्रतासे युक्त हो, जो अकेले ही अपना दमन करने वाले हो, अकेले ही अपना शमन करने वाले हो, अकेले ही अपने आपको परिनिर्वृत्त करने वाले हो, वैसे श्रमण-ब्राह्मणोको ऊचे उठाने वाला दान (=दक्षिणा) देता है, जो स्वर्गकी ओर ले जाने वाला होता है, जो सुख-फल-दायी होता है, जो स्वर्गलाभ कराने वाला होता है। यह ऐश्वर्यकी प्राप्तिका पाँचवाँ उद्देश्य है। गृहपति! ऐश्वर्यके की प्राप्तिके ये पाँच उद्देश्य है। गृहपति! यदि आर्य-श्रावक द्वारा इन पाँचो उद्देश्योकी पूर्तिके प्रयाससे उसके ऐश्वर्यकी हानि हो जाती है, तो वह सोचता है, ऐश्वर्यकी प्राप्तिके जो उद्देश्य है, मै उन की पूर्ति करता हूँ, ऐसा करते समय मेरा ऐश्वर्य क्षीण होता जाता है। उसे किसी प्रकारका अफसोस नही होता। गृहपति! यदि-आर्य-श्रावक द्वारा इन पाचो उद्देश्योकी पूर्तिके प्रयासमे लगे रहते समय उसके ऐश्वर्यकी वृद्धि हो जाती है, तो वह सोचता है, ऐश्वर्यकी प्राप्तिके जो उद्देश्य है, मै उनकी पूर्ति करता हूँ, ऐसा करते समय मेरे ऐश्वर्य की वृद्धि होती जाती है। दोनो स्थितियोमें उसे अफसोस नही होता।

मुत्ता भोगा भता भच्चा वितिण्णा आपदासु मे,
उद्धग्गा दक्खिणा दिन्ना अथो पचबलीकता।।
उपट्ठिता सीलवन्तो सञ्ञता ब्रह्मचारयो,
यदत्थ भोग इच्छेय्य पण्डितो घरमावस।।
सो मे अत्थो अनुपत्तो कत अननुतापिय,
एत अनुस्सर मच्चो अरियधम्मे ठितो नरो,
इधेव न पससन्ति पेच्च सग्गे च मोदति।।

[मैंने ऐश्वर्यको भोगा, (माता पिता आदिका) पोषण किया, आपत्तियोंसे रक्षा की, ऊँचे उठानेवाली दक्षिणा दी, पाँच बलि-कर्म किये, शीलवान्, सयत,

ब्रह्मचारियोकी सेवामे रहा। इस प्रकार कोई भी गृहस्थ जिस उद्देश्यकी पूर्तिके लिये ऐश्वर्यकी कामना कर सकता है, मैंने उस उद्देश्यकी पूर्तिकी। मुझे किसी तरहका अफसोस नही है। जो आदमी इस प्रकार सोचता हुआ आर्य-धर्ममें स्थिर रहता है, यहाँ इस लोकमे भी उसकी प्रशसा होती है, तथा मरनेपर स्वर्ग-लाभकर आनन्दित होता है।]

भिक्षुओ, सत्पुरुष यदि किसी कुलमे जन्म ग्रहण करता है, तो वह जनोंके अर्थके लिये, हितके लिये, सुखके लिये होता है, माता पिताके अर्थ, हित, सुखके लिये होता है; स्त्री-पुत्रके अर्थ, हित, सुखके लिये होता है, दास-कर्मकर लोगोके अर्थ, हित, सुख के लिये होता है, यार-दोस्तोके अर्थ, हित, सुखके लिये होता है, श्रमण ब्राह्मणोके अर्थ, हित, सुखके लिये होता है। भिक्षुओ, जैसे महामेघ सभी प्रकारकी खेतीको उत्पन्न करता हुआ बहुत जनोके अर्थ, सुख, हितके लिये होता है। इसी प्रकार भिक्षुओ, सत्पुरुष यदि किसी कुलमे जन्म ग्रहण करता है, तो वह बहुत जनोके अर्थके लिये, हितके लिये, सुखके लिये होता है, माता पिताके अर्थ, हित, सुखके लिये होता है; स्त्री-पुत्रके अर्थ, हित, सुखके लिये होता है, दास-कर्मकर लोगोके अर्थ, हित, सुखके लिये होता है, यार-दोस्तोके अर्थ, हित, सुखके लिये होता है, श्रमण-ब्राह्मणोके अर्थ, हित, सुखके लिये होता है।

हितो बहुन्न पटिपज्ज भोगे त देवता रक्खति धम्मगुत्त
बहुस्सुत सीलवतुपपन्न धम्मे ठित न विजहाति कित्ति॥
धम्मट्ठ सीलसम्पन्न सच्चवादी हिरीमत,
नेक्खजम्बोनदस्सेव को त निन्दितुमरहित,
देवापि न पससति ब्रह्मुनापि पससितो॥

[जो बहुतोका हित करनेमे लगा रहता है, उस धर्म-रक्षितकी देवता रक्षा करता है। जो बहुश्रुत होता है, सदाचारी होता है, धर्मस्थित होता है, कीर्ति उस आदमीका त्याग नही करती है। जो धर्म-स्थित होता है, जो सदाचारी होता है, जो सत्यवादी होता है, जो लज्जायुक्त होता है, उस खरे सोनेके समान सत्पुरुपकी कौन निन्दाकर सकता है? देवता भी उसकी प्रशसा करते है तथा ब्रह्मा द्वारा भी वह प्रशसित होता है।]

तब अनाथपिण्डिका गृहपति जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवान्को अभिवादनकर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए अनाथपिण्डिक गृहपतिको भगवान् ने यह कहा 'गृहपति! पाच बाते ऐसी है जो अच्छी लगने वाली है, सुन्दर है, श्रेष्ठ है, किन्तु इस लोकमे दुर्लभ है। कौनसी पाँच बातें? गृहपति!

आयु अच्छी लगने वाली है, सुन्दर है, श्रेष्ठ है, किन्तु इस लोकमें दुर्लभ है, वर्ण अच्छा लगने वाला है, सुन्दर है, श्रेष्ठ है, किन्तु इस लोकमें दुर्लभ है, सुख अच्छा लगने वाला है, सुन्दर है, श्रेष्ठ है, किन्तु इस लोकमें दुर्लभ है, यश अच्छा लगने वाला है, सुन्दर है, श्रेष्ठ है, किन्तु इस लोकमें दुर्लभ है तथा स्वर्ग अच्छे लगने वाले है, सुन्दर है, श्रेष्ठ है, किन्तु इस लोकमें दुर्लभ है। गृहपति! ये पाँच बाते ऐसी है जो अच्छी लगने वाली है, सुन्दर है, श्रेष्ठ है, किन्तु इस लोकमे दुर्लभ है। गृहपति! ये जो पाँच बातें अच्छी लगने वाली है, सुन्दर है, श्रेष्ठ है, इनकी प्राप्ति याचना करनेसे, या प्रार्थना करनेसे होती है, ऐसा मै नही कहता हूँ। गृहपति! यदि इन पाँच चीजो (=धर्मो) की जो अच्छी लगने वाली है, सुन्दर है, श्रेष्ठ है, प्राप्ति याचना करनेसे या प्रार्थना करनेसे हो सकती तो कौन किससे वचित रहता? गृहपति! जो आर्य-श्रावक आयुकी कामना करता है, उसके लिये यह योग्य नही है कि वह आयुके लिये याचना करे, आयुका अभिनन्दन करता रहे, आयुके लिये ईर्षा करता रहे। गृहपति! जो आर्य-श्रावक आयुकी कामना करता है, उसे ऐसे मार्गका अनुसरण करना चाहिये, जिससे आयुकी प्राप्ति हो, जब वह आयु-प्राप्तिके मार्गका अनुसरण करता है तो उसे आयुकी प्राप्ति होती है। वह दिव्य अथवा मानुषी आयुका प्राप्त करने वाला होता है।

"गृहपति! जो आर्य-श्रावक वर्णकी कामना करता है, उसके लिये यह योग्य नही है कि वह वर्णके लिये याचना करे, वर्णका अभिनन्दन करता रहे, वर्णके लिये ईर्षा करता रहे। गृहपति! जो आर्य-श्रावक वर्णकी कामना करता है, उसे ऐसे मार्गका अनुसरण करना चाहिये, जिससे वर्णकी प्राप्ति हो, जब वह वर्ण-प्राप्तिके मार्गका अनुसरण करता है, तो उसे वर्णकी प्राप्ति होती है। वह दिव्य अथवा मानुषी वर्णका प्राप्त करने वाला होता है।

"गृहपति! जो आर्य-श्रावक सुखकी कामना करता है, उसके लिये योग्य नही है कि वह सुखके लिये याचना करे, सुखका अभिनन्दन करता रहे, सुखके लिये ईर्षा करता रहे। गृहपति! जो आर्य-श्रावक सुखकी कामना करता है, उसे ऐसे मार्गका अनुसरण करना चाहिये जिससे सुखकी प्राप्ति हो, जब वह सुख प्राप्तिके मार्गका अनुसरण करता है, तो उसे सुखकी प्राप्ति होती है। वह दिव्य अथवा मानुषी सुखका प्राप्त करने वाला होता है।

"गृहपति! जो आर्य-श्रावक यशकी कामना करता है, उसके लिये यह योग्य नही है कि वह यश के लिये याचना करे, यशका अभिनन्दन करता रहे, यशके लिये ईर्षा करता रहे। गृहपति! जो आर्य-श्रावक यशकी कामना करता है, उसे ऐसे मार्गका

अनुसरण करना चाहिये जिससे यशकी प्राप्ति हो, जब वह यश-प्राप्ति के मार्गका अनुसरण करता है, तो उसे यशकी प्राप्ति होती है। वह दिव्य अथवा मानपी सुखका प्राप्त करने वाला होता है।

"गृहपति! जो आर्य-श्रावक स्वर्गकी कामना करता है, उसके लिये यह योग्य नहीं है कि वह स्वर्गके लिये याचना करे, स्वर्गका अभिनन्दन करता रहे, स्वर्गके लिये ईर्षा करता रहे। गृहपति! जो आर्य-श्रावक स्वर्गकी कामना करता है, उसे ऐसे मार्गका अनुसरण रकरना चाहिये जिससे स्वर्गकी प्राप्ति हो, जब वह स्वर्ग-प्राप्तिके मार्गका अनुसरण करता है, तो उसे स्वर्गकी प्राप्ति होती है; वह स्वर्गोका प्राप्त करने वाला होता है।

आयु वण्णयस किंत्ति सग्ग उच्चाकुलीनत
रतियो पत्थयानेन उळारा अपरापर॥
अप्पमाद पससन्ति पुञ्ञकिरियासु पण्डिता,
अप्पमत्तो उभो अत्थे अधिगण्हाति पण्डितो,
दिट्ठेव धम्मे यो अत्थो यो च अत्थो सम्परायिको,
अत्थाभिसमया धीरो पण्डितोति पवुच्चति॥

[जो आयु, वर्ण, यश, कीर्ति, स्वर्ग तथा ऊँचे कुलमे जन्म ग्रहण करने सदृश इह-लोक तथा पर-लोक सम्वन्धी इच्छा करता हो, ऐसे आदमीके लिये, पण्डित-जन पुण्य-क्रियाओमे अप्रमादी होनेकी प्रशसा करते है। अप्रमादी पण्डित इस-लोक तथा पर-लोक सम्वन्धी दोनो अर्थोंको ग्रहण करता है। वह सादृष्टिक तथा सम्परायिक दोनो अर्थोंकी प्राप्ति करनेसे 'पण्डित' कहलाता है।]

एक समय भगवान् वैशालीके महावनकी कूटागार शालामे विहार करते थे। तव भगवान् पूर्वाह्न समय पहन कर, पात्र चीवर लेकर, जहाँ वैशालीके उग्र गृहपतिका घर था, वहाँ गये। जाकर बिछे आसनपर वैठ गये। तव वैशालीका उग्र गृहपति जहाँ भगवान थे, वहाँ आया। पास आकर भगवान्को अभिवादन कर एक ओर वैठ गया। एक ओर वैठे हुए वैशालीके उग्र गृहपतिने भगवान्को यह कहा—"भन्ते! मैंने भगवान्के मुंहसे सुना है, भगवान्के मुंहसे ग्रहण किया है कि अच्छा दान करने वाले को, अच्छी प्राप्ति होती है। भन्ते! यह शाल-पुप्पक वहुत वढिया भोजन है। भगवान् मुझपर कृपा कर इसे ग्रहण करे।" भगवान् ने कृपा कर स्वीकार किया। "भन्ते! मैंने भगवान्के मुंहसे सुना है, भगवान्के मुंहसे ग्रहण किया है कि अच्छा दान करने वालेको अच्छी प्राप्ति

होती है। भन्ते! यह तैयार किया हुआ कोलक (?) और यह तैयार किया हुआ सूअरका मास बढ़िया है। भगवान् मुझ पर कृपाकर इसे ग्रहण करें।" भगवान्ने कृपाकर स्वीकार किया।" "भन्ते! मैंने भगवान्के मुंहसे सुना है, भगवान्के मुंहसे ग्रहण किया है कि अच्छा दान करने वालेको अच्छी प्राप्ति होती है। भन्ते! यह तेल-युक्त नाली-शाक बढ़िया है। भगवान् मुझपर कृपाकर इसे ग्रहण करें।" भगवान्ने कृपाकर स्वीकार किया। "भन्ते! मैंने भगवान्के मुंहसे सुना है, भगवान्के मुंह से ग्रहण किया है कि अच्छा दान देने वालेको अच्छी प्राप्ति होती है। भन्ते! काले धानसे विहित शालीका यह भात, जिसके साथ अनेक प्रकारके सूप तथा अनेक प्रकारके व्यजन है, बढ़िया है। भगवान्! मुझपर कृपाकर इसे ग्रहण करें।" भगवान्ने कृपाकर स्वीकार किया। "भन्ते! मैंने भगवान्के मुंहसे सुना है, भगवान् के मुंहसे ग्रहण किया है कि अच्छा दान देने वालेको अच्छी प्राप्ति होती है। भन्ते! यह काशीके वस्त्र बढ़िया है।" भगवान्ने कृपाकर स्वीकार किया।" भन्ते! मैंने भगवान्के मुंहसे सुना है, भगवान्के मुंहसे ग्रहण किया है कि अच्छा दान देने वालेको अच्छी प्राप्ति होती है। भन्ते! यह पलग बढ़िया है। इस पर बड़े बड़े बालो वाला ऊनी बिछौना है। बेल-बूटो वाला ऊनी बिछौना है। कदली-मृगका श्रेष्ठ प्रत्यास्तरण है। साथ ऊपरका कपडा है। दोनो ओर लाल लाल तकिये है। भन्ते! हम यह भी जानते है कि यह भगवान्के लिये अयोग्य है। भन्ते! यह चन्दनका फलक है। इसका मूल्य हजारसे अधिक है। भगवान्! मुझपर कृपाकर, इसे स्वीकार करें।" भगवान् ने कृपाकर स्वीकार किया। तब भगवान्ने वैशालीके उग्र गृहपतिके दानका इस अनुमोदन-गाथासे अनुमोदन किया—

मनापदायी लभते मनाप यो उज्जुभूतेसु ददाति छन्दसा,
अच्छादन सयनमथन्नपान नानप्पकारानि च पच्चयानि,
चत्तञ्च मुत्तञ्च अनुग्गहीत खेत्तूपमे अरहन्ते विदित्वा,
सो दुच्चज सप्पुरिसो चजित्वा मनापदायी लभते मनाप॥

[जो इच्छा करके सीधा-सच्चा जीवन व्यतीत करने वालोको अच्छा दान देता है, उसे अच्छी प्राप्ति होती है। जो वस्त्रका दान करता है, शयनासनका दान करता है, तथा नाना प्रकारके प्रत्ययोका दान करता है, जिसके द्वारा जो त्यक्त होता है, परित्यक्त होता है, अनुग्रहीत होता है, जो अरहन्तोको पुण्य-क्षेत्र जानता है, जो सत्पुरुष बडी कठिनाईसे त्याग की जा सकने वाली वस्तुओका त्याग करके अच्छा दान देता है, उसे अच्छी प्राप्ति होती है।]

तब भगवान् वैशालीके उग्र ग्रहपतिके दानका इस प्रकार अनुमोदन कर चुकनेके अनन्तर आसनसे उठकर चले गये।

तब समय बीतनेपर वैशालीके उग्र गृहपतिका शरीरान्त हो गया। मरनेपर वैशालीके उग्र गृहपतिने एक मनोमय शरीर धारण किया। उस समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथपिण्डिकके जेतवनाराममे विहार कर रहे थे। तब उग्र गृहपति देव-पुत्र प्रभा-पूर्ण रात्रिमे प्रभापूर्ण वर्ण-युक्त हो, सारेके सारे जेतवनको प्रकाशित करता हुआ, जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचा। पास जाकर भगवान् को नमस्कार कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए उग्र देव पुत्रको भगवानने यह कहा—"उग्र! जैसे तू चाहता था, वैसा है न?" "भन्ते भगवान्! हाँ मैं जैसा चाहता था वैसा हूँ।" तब भगवान् ने उग्र देवपुत्रको गाथाओसे सम्वोधित किया—

मनापदायी लभते मनाप अग्गस्स दाता लभते पुनग्ग,
वरस्स दाता वरलाभी होति सेट्ठ ददो सेट्ठमुपेति ठान,
यो अग्गदायी वरदायी सेटठदायी च यो नरो,
दीघायु यसवा होति यत्थ यत्थुपपज्जति॥

[जो अच्छा दान करता है, उसे अच्छी प्राप्ति होती है। जो उग्रका दान करता है, उसे उग्रकी प्राप्ति होती है। जो वर (उत्तम) का दान करता है, उसे उत्तम प्राप्ति होती है। जो श्रेष्ठका दाता होता है, श्रेष्ठकी प्राप्ति होती है। जो नर अग्र, वर तथा श्रेष्ठ वस्तुओका दान करने वाला होता है, वह जहाँ भी उत्पन्न होता है, दीर्घायु तथा यशस्वी होता है।]

भिक्षुओ, ये पाँच वाते पुण्य-प्रसविनी है, कुशल-प्रसविनी है, सुख-दायिका हैं, स्वर्गीय है, सुखद है, स्वर्गकी ओर ले जाने वाली है, इष्टकर है, अच्छी है, हितकर है, सुखके लिये है। कौनसी पाँच वाते?

भिक्षुओ, भिक्षु जिस किसी दायकके दिये गये चीवरका उपभोग करते हुए असीम चित्त-समाधीको प्राप्त कर विहार करता है, उस दायकके लिये यह (वात) पुण्य-प्रसविनी है, कुशल-प्रसविनी है, सुख-दायिका है, स्वर्गीय है, सुखद है, स्वर्गाकी ओर ले जाने वाली है, इष्टकर है, अच्छी है, हितकर है; सुखके लिये है। भिक्षुओ, भिक्षु जिस किसी दायकका दिया हुआ पिण्डपात (=भोजन) उपभोग करते हुए ...... दिया गया विहार उपभोग करते हुए ...... मच-पीठ उपभोग करते हुए ...... गिलान-प्रत्यय भैषज्य परिष्कार उपभोग करते हुए, असीम चित्त-समाधीको प्राप्त कर विहार करता है, उस दायकके लिये यह (वात) पुण्य-प्रसविनी है, कुशल-

प्रसविनी है, सुखदायिका है, स्वर्गीय है, सुखद है, स्वर्गकी ओर ले जाने वाली है, इष्टकर है, अच्छी है, हितकर है, सुखके लिये है। भिक्षुओ, ये पाँच बातें पुण्य-प्रसविनी है, कुशल-प्रसविनी है, सुख-दायिका है, स्वर्गीय है, सुखद है, स्वर्गकी ओर ले जाने वाली है, इष्टकर है, अच्छी है, हितकर है, सुखके लिये है। भिक्षुओ, जो आर्य-श्रावक, इन पाँच पुण्य-प्रसविनी कुशल-प्रसविनी बातोंसे युक्त होता है, उसके पुण्यकी मात्राका अदाजा लगाना आसान नही कि वह इतनी सुख-दायिका है, इतनी स्वर्गीय है, इतनी सुखद है, इतनी स्वर्गकी ओर ले जाने वाली है, इतनी इष्टकर है, इतनी अच्छी है, इतनी हितकर है, इतनी सुखके लिये है। यही कहा जायगा कि वह असख्य अप्रमेय महापुण्यको प्राप्त होता है। भिक्षुओ, जैसे महासमुद्रके पानीकी मात्राका अन्दाजा लगाना आसान नही कि उसमे इतने आढक जल है, अथवा इतने सौ आढक जल है, अथवा इतने हजार आढक जल है, अथवा इतने लाख आढक जल है, यही कहा जायगा कि महासमुद्रका जल असख्य अप्रमेय है। इसी प्रकार भिक्षुओ, जो आर्य-श्रावक इन पाँच पुण्य-प्रसविनी कुशल-प्रसविनी बातोंसे युक्त होता है, उसके पुण्यकी मात्राका अदाजा लगाना आसान नही कि वह इतनी सुख-दायिका है, इतनी स्वर्गीय है, इतनी सुखद है, इतनी स्वर्गकी ओर ले जाने वाली है, इतनी इष्टकर है, इतनी अच्छी है, इतनी हितकर है, इतनी सुखके लिये है। यही कहा जायगा कि वह असख्य अप्रमेय महापुण्यको प्राप्त होता है।

महोदधिं अपरिमित महासर
वहुभेरव रतनगणानमालय
नज्जो यथा नरगणसघसेविता
पुथू सवन्ति उपयन्ति सागर,

एव नर अन्नदपान वत्थद
सेय्यानिसज्जरत्थरणस्स दायक,
पुञ्ञस्स धारा उपयन्ति पण्डित
नज्जो यथा वारिवहाव सागर॥

[जिस प्रकार मनुष्य-गणोंके समूहोंसे सेवित वहुत सी नदियाँ असीम महासर महोदधिको प्राप्त होती है, जो वहु भय-भैरव युक्त तथा रतनोंके समूहका आलय होता है, उसी प्रकार जो आदमी अन्न, पेय्य-पदार्थ, वस्त्र, शयन, आसन तथा आम्तरणका दायक होता है, उस पण्डितके प्रति पुण्य-धारायें वहकर आती है। कैसे ? जैसे पानी वहाकर ले जाने वाली नदियाँ सागरको प्राप्त होती है।]

भिक्षुओ, ये पाँच सम्पत्तियाँ हैं ? कौनसी पाँच ? श्रद्धा-सम्पदा, शील-सम्पदा, श्रुत-सम्पदा, त्याग-सम्पदा तथा प्रज्ञा-सम्पदा। भिक्षुओ, ये पाँच सम्पत्तियाँ हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच धन हैं। कौनसे पाँच ? श्रद्धा-धन, शील-धन, श्रुत-धन, त्याग-धन तथा प्रज्ञा-धन। भिक्षुओ, श्रद्धाधन किहेसे कहते हैं ? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक श्रद्धावान् होता है, तथागतकी बोधिमे श्रद्धा रखता है,—वह भगवान् है देव-मनुष्योके शास्ता बुद्ध भगवान् है। भिक्षुओ, यह श्रद्धा-धन कहलाता है।

भिक्षुओ, शील-धन किसे कहते हैं ? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक प्राणी-हिंसासे विरत होता है . सुरा-मेरय आदि नशीली-चीजोके ग्रहणसे विरत होता है। भिक्षुओ, यह शील-धन कहलाता है।

भिक्षुओ, श्रुत-धन किसे कहते हैं ? भिक्षुओ-आर्य-श्रावक बहुश्रुत होता है . (सम्यक्-) दृष्टिसे बीधने वाला। भिक्षुओ, यह श्रुत-धन कहलाता है।

भिक्षुओ, त्याग-धन किसे कहते हैं ? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक मात्सर्य रूपी मैलसे मुक्त हो कर घरपर रहता है, त्याग-शील, खुले-हाथ, दान-शील, परित्याग-शील तथा बाटने वाला। भिक्षुओ, यह त्याग-धन कहलाता है।

भिक्षुओ, प्रज्ञा-धन किसे कहते हैं ? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक प्रज्ञावान होता है, (वस्तुओके) उदय और अस्तको जानने वाली प्रज्ञासे युक्त होता है, आर्य-प्रज्ञासे युक्त होता है, बीधने वाली प्रज्ञा से युक्त होता है, तथा सम्यक् प्रकारसे दु ख-क्षयकी ओर ले जाने वाली प्रज्ञासे युक्त होता है। भिक्षुओ, यह प्रज्ञा-धन कहलाता है। भिक्षुओ, ये पाँच धन हैं।

यस्स सद्धा तथागते अचला सुप्पतिट्ठिता,
सीलच यस्स कल्याण अरियकत पससित ॥
सवे पसादो यस्सत्थि उजुभूतञ्च दस्सन,
अदलिद्दोति त आहु अमोघ तस्स जीवित ॥
तस्मा सद्धञ्च सीलच पसाद धम्मदस्सन,
अनुयुञ्जेथ मेधावी सर बुद्धानसासन ॥

[जिसकी तथागतके प्रति अचल श्रद्धा सुप्रतिष्ठित होती है, जिसका आर्य-सौन्दर्य युक्त शील प्रशसित होता है, जो सघके प्रति प्रसाद-युक्त होता है, जिसे सम्यक्-दृष्टि प्राप्त होती है, ऐसे आदमीके बारेमे कहा जाता है कि उसका जीवन 'दरिद्र' नही है, उसका जीवन सुफल है। इसलिये मेधावी आदमीको चाहिये कि बुद्धोंके अनुशासनका स्मरण कर श्रद्धा, शील, प्रसाद तथा धर्म-दर्शन की प्राप्तिमे लगे।]

भिक्षुओ, ये पाँच बातें ऐसी है, जो न किसी श्रमण को प्राप्य है, न किसी ब्राह्मणको प्राप्य है, न किसी देवताको प्राप्य है, न किसी मारको प्राप्य है, न किसी ब्रह्माको प्राप्य है और न इस लोकमे अन्य किसीको प्राप्य है। कौनसी पाँच बातें ? जरा-धर्मी जराको प्राप्य न हो—यह एक ऐसी बात है जो न किसी श्रमण को प्राप्य है, न किसी ब्राह्मणको प्राप्य है, न किसी देवताको प्राप्य है, न किसी मारको प्राप्य है, न किसी ब्रह्मा को प्राप्य है, और न इस लोकमे अन्य किसीको प्राप्य है। रोग-धर्मी रोगको प्राप्त न हो मरण-धर्मी मृत्युको प्राप्त न हो क्षय-धर्मी क्षयको प्राप्त न हो नष्ट-धर्मी नाशको प्राप्त न हो—यह एक ऐसी बात है, जो न किसी श्रमणको प्राप्य है, न किसी ब्राह्मणको प्राप्य है, न किसी देवताको प्राप्य है, न किसी मारको प्राप्य है, न किसी ब्रह्माको प्राप्य है और न इस लोकमें अन्य किसीको प्राप्य है।

भिक्षुओ, जो अज्ञानी है, जो पृथकजन, है वह जरा (= बुढापे) को प्राप्त होता है। जराको प्राप्त होनेपर वह यह नही विचार करता कि यह बुढापा अकेले मुझे ही प्राप्त नही हुआ है, यह तो जितने भी प्राणी पैदा होने वाले है, मरने वाले है, उन सभी जरा-धर्मी प्राणियोको प्राप्त होता है। यदि मै जराको प्राप्त होनेपर सोच करू, दुःखी होऊँ, रोऊँ, छाती पीटूं, मूर्छित होऊँ तो भात भी अच्छा नही लगेगा, शरीर दुर्वर्ण हो जायेगा, काम-काज भी नही किया जा सकेगा, शत्रुओकी प्रसन्नताका कारण बनूंगा, तथा मित्रोकी चिन्ता का कारण बनूंगा। वह बुढापेके प्राप्त होनेपर सोच करता है, दुःखी होता है, रोता है, छाती पीटता है तथा मूर्छित हो जाता है। भिक्षुओ, इसे ही कहते है कि अज्ञानी, पृथक-जन विषमे बुझे शोक-शल्यने दग्ध हुआ है, वह अपने आपको ही तपाता है।

फिर भिक्षुओ, जो अज्ञानी है, जो पृथक-जन है, जो रोग-धर्मी है उसे रोग प्राप्त होता है जो मरण-धर्मी है उसे मरण-धर्म प्राप्त होता है जो क्षय-धर्मी है वह क्षयको प्राप्त होता है जो नष्ट होने वाला है, नाशको प्राप्त होता है। नाशको प्राप्त होनेपर वह यह नही विचार करता कि यह नाश-धर्म अकेला मुझे ही प्राप्त नही हुआ है, यह तो जितने भी प्राणी पैदा होने वाले है, मरने वाले है, उन सभी नष्ट होनेके स्वभाव वाले प्राणियोको नाश-धर्म प्राप्त होता है। यदि मै नाश-धर्मके प्राप्त होनेपर सोच करूँ, दुःखी होऊँ, रोऊँ, छाती पीटूं, मूर्छित होऊँ, तो भात भी अच्छा नही लगेगा, शरीर दुर्वर्ण हो जायगा, कामकाज भी नही किया जा सकेगा, . शत्रुओकी प्रसन्नताका कारण बनूंगा तथा मित्रोकी चिन्ताका

कारण बनूंगा। वह नाश-धर्मके प्राप्त होनेपर सोच करता है, दु खी होता है, रोता है, छाती पीटता है तथा मूर्छित हो जाता है। भिक्षुओ, इसे ही कहते हैं कि अज्ञानी, पृथक-जन, विषसे बुझे शोक-शल्यसे दग्ध हुआ है, वह अपने आपको ही तपाता है।

भिक्षुओ, जो ज्ञानी है, जो आर्य-श्रावक है, वह जरा (=बुढापे) को प्राप्त होता है। जराको प्राप्त होने पर वह यह विचार करता है कि यह बुढापा अकेले मुझे ही प्राप्त नही हुआ है, यह तो जितने भी प्राणी पैदा होने वाले हैं, मरने वाले हैं उन सभी जरा-धर्मी प्राणियोको प्राप्त होता है। यदि मैं जराको प्राप्त होनेपर सोच करूँ, दु खी होऊँ, रोऊँ, छाती पीटूं, मूर्छित होऊँ तो भात भी अच्छा नही लगेगा, शरीर दुर्वर्ण हो जायगा, काम-काज भी नही किया जा सकेगा, शत्रुओकी प्रसन्नता का कारण बनूंगा तथा मित्रोकी चिन्ताका कारण बनूंगा। वह बुढापेके प्राप्त होनेपर न सोच करता है, न दु खी होता है, न रोता है, न छाती पीटता है, और न मूर्छित होता है। भिक्षुओ, इसे ही कहते है कि ज्ञानी आर्य-श्रावकने विष-बुझे उस शोक-शल्यको निकाल बाहर किया, जिससे बिंधकर अज्ञानी पृथक-जन अपने आपको ही तपाता है। आर्य-श्रावक शोक-रहित हो, शल्य-रहित हो अपने आपको (दुखसे) परिनिर्वृत्त करता है।

फिर भिक्षुओ, जो ज्ञानी है; जो आर्य-श्रावक है, जो रोग-धर्मी है, उसे रोग प्राप्त होता है जो मरण-धर्मी है, उसे मरण-धर्म प्राप्त होता है जो क्षय-धर्मी है, वह क्षयको प्राप्त होता है जो नष्ट होने वाला है, वह नाशको प्राप्त होता है। नष्ट होने वाली वस्तुओके नाशको प्राप्त होनेपर वह यह विचार करता है कि यह नाश-धर्म अकेले मुझे ही प्राप्त नही हुआ है, यह तो जितने भी प्राणी पैदा होने वाले हैं, मरने वाले हैं, उन सभी नाश होनेके स्वभाव वाले प्राणियोको प्राप्त होता है। यदि मैं नाश-धर्मके प्राप्त होनेपर सोच करूँ, दु खी होऊँ, छाती पीटूं, मूर्छित होऊँ, तो भात भी अच्छा नही लगेगा, शरीर दुर्वर्ण हो जायेगा, काम-काज भी नही किया जा सकेगा, शत्रुओकी प्रसन्नताका कारण बनूंगा तथा मित्रोकी चिन्ता का कारण बनूंगा। वह नाश-धर्मके प्राप्त होने पर न सोच करता है, न दु खी होता है, न रोता है, न छाती पीटता है और न मूर्छित होता है। भिक्षुओ, इसे ही कहते है कि ज्ञानी आर्य-श्रावकने विष-बुझे शोक-शल्यको निकाल बाहर किया, जिससे बिंधकर अज्ञानी, पृथक-जन अपने आपको तपाता है। आर्य-श्रावक शोक-रहित हो, शल्य-रहित हो, अपने आपको दु खसे परिनिर्वृत्त करता है। भिक्षुओ, ये पांच बातें ऐसी हैं जो न किसी श्रमणको प्राप्य हैं, न किसी ब्राह्मणको प्राप्य हैं, न किसी देवताको

प्राप्य है, न किसी मारको प्राप्य है, न किसी ब्रह्माको प्राप्य है और न इस लोकमें अन्य किसीको प्राप्य है।

न सोचनाय परिदेवनाय अत्थो अनप्पो अपि अप्पकोपि,
सोचन्तमेन दुखित विदित्वा पच्चत्थिका अत्तमना भवन्ति ॥
यतो च खो पण्डितो आपदासु न वेधति अत्थविनिच्छयञ्ञू
पच्चत्थिकास्स दुखिता भवन्ति दिस्वा मुख अविकार पुराण ॥
जप्पेन मन्तेन सुभासितेन अनुप्पदानेन पवेणिया वा,
यथा यथा यत्थ लभेथ तथा तथा तत्थ परक्कमेय्य ॥
सचे पजानेय्य अलब्भनेय्यो मयाच अञ्ञेन वा एस अत्थो,
असोचमानो अधिवासयेय्य कम्म दळ्हं किन्ति करोमीदानि ॥

[चिन्ता करनेसे, रोने-पीटनेसे अल्पमात्रभी अर्थकी सिद्धि नही होती। शत्रुओको जब पता लगता है कि अमुक आदमी दुःखी होता है, तो वे प्रसन्न होते है। अर्थ-अनर्थका जानकार पण्डित जब विपत्ति पडनेपर कांपता नही है तो उसकी पूर्ववत् ही अविकृत मुखाकृतिको देखकर उसके शत्रु दुखी होते है। जाप करनेसे, मन्त्र-बलसे, सुभाषाका उपयोग करनेसे, कुछ लेने-देनेसे, वश-परम्पराकी बात करनेसे जैसे भी अर्थ की सिद्धि होती हो, वैसेही अर्थकी सिद्धिका प्रयास करे[1]। यदि यह मालूम हो जाय कि मै या कोई दूसरा भी इस अर्थको किसी भी तरह प्राप्त नही कर सकता तो यह सोचकर कि यह कठिन कार्य है, अब मै क्या करूँ, विना चिन्तित हुये उसे सहन करे।]

एक समय भगवान् श्रावस्तीमे अनाथपिण्डिकके जेतवनाराममें विहार करते थे। तब कोशल-नरेश प्रसेनजित जहाँ भगवान् थे वहाँ पहुचा। पास जाकर भगवान्को नमस्कार कर एक ओर बैठ गया। तब एक आदमी जहाँ कोशल-नरेश प्रसेनजित बैठा था वहाँ आया। पास आकर उसने कोशल नरेश प्रसेनजितके कानमें कहा—"देव ! मल्लिका देवीका शरीरात हो गया।" ऐसा कहे जानेपर कोशल-नरेश प्रसेनजित दुःखी हो गया, उसका मन खराब हो गया, उसका शरीर ढीला पड गया, उसका मुँह लटक गया, वह कुछ सोचता हुआ निस्तेज हो गया। तब भगवान्ने कोशल-नरेश प्रसेनजितको दुखी, मन-खराब, ढीला-शरीर, लटका-मुँह, सोचता हुआ, निस्तेज जान यह कहा—"महाराज ! ये पाँच बाते ऐसी है विना चिन्तित हुए उसे सहन करे।"

---

१ यह उन गाथाओमे से एक है जिनका बुद्ध-वचन होना एकदम चिन्त्य है।

एक समय आयुष्मान् नारद पाटलिपुत्रके कुक्कुटाराममे विहार करते थे। उस समय राजा मुण्ड की भद्रा नामकी देवी मर गई थी। वह राजाकी बडी प्रिया थी, उसे अच्छी लगने वाली। उस प्रिया, अच्छी लगने वाली भद्रा देवीके मरनेके बादमे राजा न स्नान करता था, न (चन्दन आदिका) लेप करता था, न भोजन करता था, न कामकाज देखता था, रातदिन भद्रादेवीके शरीरको ही लेकर मूर्छित रहता था। तब मुण्डक राजाने पियक नामके कोषाध्यक्ष[२] को बुलवाया—"सभ्य ! भद्रादेवीके शरीरको तेल भरी लोहेकी द्रोणीमे रख, दूसरी लोहेकी द्रोणीसे उसे ढक दे, जिससे हम भद्रादेवीके शरीरको बहुत समय तक देखते रह सके।" 'देव ! बहुत अच्छा' कह पियक कोषाध्यक्षने राजा मुण्ड की बात मान, भद्रा देवीका शरीर तेलभरी लोहेकी द्रोणीमे रख, दूसरी लोहे-की द्रोणीसे ढक दिया। तब पियक कोषाध्यक्षके मनमे यह हुआ कि इस राजा मुण्ड की भद्रा नामकी देवी मर गई है। वह राजाकी बडी प्रिया थी, अच्छी लगने वाली थी। उस प्रिया, अच्छी लगने वाली भद्रादेवीके मरनेके बादसे राजा न स्नान करता है, न लेप करता है, न भोजन करता है, न काम-काज करता है, रात-दिन भद्रा देवीके शरीरको लेकर ही मूर्छित रहता है। यह राजा मुण्ड किस श्रमण या ब्राह्मणकी सगति करे जिसका धर्मोपदेश सुनकर यह शोकरूपी शल्यसे मुक्त हो ?

तब पियक कोषाध्यक्षके मनमें यह विचार पैदा हुआ कि पाटलिपुत्रके कुक्कुटाराममे आयुष्मान् नारद विहार करते हैं। उन आयुष्मान् नारद की ऐसी अच्छी कीर्ति है कि वे पण्डित है, व्यक्त है, मेधावी है, बहुश्रुत है, सुवक्ता है, कल्याणकर प्रतिभासे युक्त है, महास्थविर (= वृद्ध) है तथा अर्हत् हैं। यदि राजा मुण्ड आयुष्मान् नारदकी सगति करे, तो यह हो सकता है कि राजा मुण्ड आयुष्मान् नारदका धर्मोपदेश सुन शोक रूपी शल्यसे मुक्त हो जाय।

तब पियक कोषाध्यक्ष राजा मुण्डके पास गया। पास जाकर उसने राजा मुण्डसे कहा—"देव ! पाटलिपुत्रके कुक्कुटाराममें आयुष्मान् नारद विहार करते हैं। उन आयुष्मान् नारदकी ऐसी अच्छी कीर्ति है कि वे पण्डित है, व्यक्त है, मेधावी हैं, बहुश्रुत है, सुवक्ता है, कल्याणकर-प्रतिभासे युक्त है, महास्थविर (= वृद्ध) हैं तथा अर्हत् हैं। देव ! सम्भव है यदि आप आयुष्मान् नारदकी सगति करे तो आयुष्मान् नारदका धर्मोपदेश सुन आप शोक-सल्यसे मुक्त हो जाये।"

---

२ कोषाध्यक्ष (= कोषारक्षक)

"तो सौम्य पियक! आयुष्मान् नारदको पूर्व-सूचना भिजवाओ। यह कैसे सम्भव है कि मेरे जैसा आदमी अपने राज्यमे रहने वाले श्रमण या ब्राह्मणके पास विना पूर्व-सूचनाके जाय।"

"देव! वहुत अच्छा।"

इतना कह, राजा मुण्ड को प्रतिवचन दे, पियक कोपाध्यक्ष जहाँ आयुष्मान् नारद थे, वहाँ पहुँचा। पास जाकर आयुष्मान् नारदको प्रणामकर एक ओर वैठ गया। एक ओर वैठे हुए पियक कोपाध्यक्षने आयुष्मान् नारदसे कहा—"भन्ते! इस राजा मुण्ड की भद्रा नामकी देवी मर गई है। वह राजाकी वडी प्रिया थी, अच्छी लगने वाली थी। उस प्रिया, अच्छी लगने वाली भद्रा देवीके मरनेके वादमे राजा न स्नान करता है, न लेप करता है, न भोजन करता है, न काम-काज देखता है, रात-दिन भद्रा देवीके शरीरको लेकर ही मूर्छित रहता है। भन्ते! अच्छा होगा कि आयुष्मान् नारद राजा मुण्डको वैसा उपदेश करे कि राजा मुण्ड आयुष्मान् नारदका धर्मोपदेश सुनकर शोक-शाल्यसे मुक्त हो।" (आयुष्मान् नारद वोले)—"पियक! राजा जिस काम का योग्य समय समझे।"

तव पियक कोपाध्यक्षने आसनसे उठ आयुष्मान् नारदको नमस्कार किया, प्रदक्षिणाकी और वह जहाँ राजा मुण्ड था वहाँ आया। पास जाकर मुण्ड राजासे यह कहा—"देव! आयुष्मान् नारदने अनुज्ञा दे दी है। अव देव जिस कामका योग्य समय समझे।"

तव राजा मुण्ड अच्छे रथोपर सवार हो, जहाँ कुक्कुटाराम था वहाँ गया, वडे राजसी ठाट-वाटके साथ आयुष्मान् नारदके दर्शनार्थ। जहाँ तक रथ से जाना था, वहाँ तक रथसे जाकर, आगे रथ से उतरकर पैदल ही कुक्कुटाराममे प्रविष्ट हुआ। तव राजा मुण्ड जहाँ आयुष्मान् नारद थे, वहाँ पहुँचा। पास जाकर आयुष्मान् नारदका अभिवादन कर, एक ओर वैठा। एक ओर वैठे राजा मुण्डको आयुष्मान् नारदने यह कहा—

"महाराज! ये पाँच वाते ऐसी है जो न किसी श्रमणको प्राप्य है, न किसी ब्राह्मणको प्राप्य है, न किसी देवताको प्राप्य है, न किसी मारको प्राप्य है,न किसी ब्रह्मा को प्राप्य है। कौनसी पांच वातें? जरा-धर्मी जराको प्राप्त न हो—यह एक ऐसी वात है जो न किसी श्रमणको प्राप्य है, न किसी ब्राह्मणको प्राप्य है, न किसी देवताको प्राप्य है, न किसी मारको प्राप्य है, न किसी-ब्रह्माको प्राप्य है और न इस लोकमें अन्य किसीको प्राप्य है। रोग-धर्मी रोगको प्राप्त न हो . मरण-धर्मी

मृत्युको प्राप्त न हो   क्षय-धर्मी क्षयको प्राप्त न हो .   नष्ट-धर्मी नाशको प्राप्त न हो—यह एक ऐसी बात है, जो न किसी श्रमणको प्राप्य है, न किसी ब्राह्मणको प्राप्य है, न किसी देवताको प्राप्य है, न किसी मारको प्राप्य है, न किसी ब्रह्माको प्राप्य है और न इस लोकमे अन्य किसीको प्राप्य है।

महाराज! जो अज्ञानी है, जो पृथकजन है वह जरा (=बुढापे) को प्राप्त होता है, पर वह यह नही विचार करता कि यह बुढापा अकेले मुझे ही प्राप्त नही हुआ है, यह तो जितने भी प्राणी पैदा होने वाले है, मरने वाले है, उन सभी जरा-धर्मी प्राणियोको बुढापा प्राप्त होता है। यदि मै जराको प्राप्त होनेपर सोच करू, दुखी होऊ, रोऊ, छाती पीटूं, मूर्छित होऊ तो भात भी अच्छा नही लगेगा, शरीर दुर्वर्ण हो जायेगा, काम-काज भी नही किया जा सकेगा, शत्रुओकी प्रसन्नताका कारण बनूंगा तथा मित्रोकी चिन्ताका कारण बनूंगा। वह बुढापेके प्राप्त होनेपर सोच करता है, दुखी होता है, रोता है, छाती पीटता है तथा मूर्छित हो जाता है। महराज! इसे ही कहते है कि अज्ञानी, पृथक-जन विपसे मुझे शोक-शल्यसे दग्ध हुआ है, वह अपने आपको ही तपाता है।

फिर महाराज! जो अज्ञानी है, जो पृथक-जन है, जो रोग-धर्मी है, उसे रोग प्राप्त होता है   . जो मरण-धर्मी है, उसे मरण-धर्म प्राप्त होता है   जो क्षय-धर्मी है, वह क्षयको प्राप्त होता है . जो नष्ट होनेवाला है वह नाशको प्राप्त होता है। नाशको प्राप्त होनेपर वह यह नही विचार करता कि यह नाश-धर्म अकेला मुझे ही प्राप्त नही हुआ है, यह तो जितने भी प्राणी पैदा होने वाले है, मरने वाले है, उन सभी नष्ट होनेके स्वभाव वाले प्राणियोको प्राप्त होता है। यदि मै नाश-धर्मके प्राप्त होनेपर सोच करूँ, दुखी होऊँ, रोऊँ, छाती पीटूं, मूर्छित होऊ तो भोजन भी अच्छा नही लगेगा, शरीर दुर्वर्ण हो जायेगा, काम-काज भी नही किया जा सकेगा, शत्रुओकी प्रसनन्ताका कारण बनूंगा तथा मित्रोकी चिन्ताका कारण बनूंगा। वह नाश-धर्मके प्राप्त होनेपर, सोच करता है, दुखी होता है, रोता है, छाती पीटता है तथा मूर्छीत हो जाता है। महाराज् इसे ही कहते है कि अज्ञानी, पृथक-जन विपमे वुझे शोक-शल्यसे दग्ध हुआ है, वह अपने आपको ही तपता है।

महाराज! जो ज्ञानी है, जो आर्य-श्रावक है, वह जरा (=वुढापे) को प्राप्त होता है। जराको प्राप्त होनेपर वह यह विचार करता है कि यह बुढापा अकेले मुझे ही प्राप्त नही हुआ है, यह तो जितने भी प्राणी पैदा होने वाले है, मरने वाले है,

उन सभी जरा-धर्मी प्राणियोंको बुढ़ापा प्राप्त होता है, यदि मैं बुढ़ापेके प्राप्त होनेपर सोच करूँ, दुखी होऊँ, रोऊँ, छाती पीटूँ, मूर्छित होऊँ, तो भोजन भी अच्छा नहीं लगेगा, शरीर दुर्वर्ण हो जायगा, काम-काज भी नहीं किया जा सकेगा, शत्रुओंकी प्रसन्नताका कारण बनूँगा, तथा मित्रोंकी चिन्ताका कारण बनूँगा। वह बुढ़ापेके प्राप्त होनेपर न सोच करता है, न दुखी होता है, न रोता है, न छाती पीटता है, और न मूर्छित होता है। महाराज! इसे ही कहते हैं कि ज्ञानी आर्य-श्रावकने विष-बुझे शोक-शल्यको निकाल बाहर किया, जिससे बिंधकर अज्ञानी पृथक्-जन अपने आपको तपाता है। आर्य-श्रावक शोक-रहित हो, शल्य-रहित हो अपने आपको (दुःखसे) परिनिर्वृत्त करता है।

फिर महाराज! जो ज्ञानी है, जो आर्य-श्रावक है, जो रोग-धर्मी है उसे रोग प्राप्त होता है जो मरण-धर्मी है उसे मरण-धर्म प्राप्त होता है जो क्षय-धर्मी है वह क्षयको प्राप्त होता है जो नष्ट होने वाला है, नाशको प्राप्त होता है। नष्ट होने वाली वस्तुओंके नाशको प्राप्त होने पर वह यह विचार करता है कि यह नाश-धर्म अकेले मुझे ही प्राप्त नहीं हुआ है, यह तो जितने भी प्राणी पैदा होने वाले हैं, मरने वाले हैं, उन सभी नाश होनेके स्वभाव वाले प्राणियोंको नाश-धर्म प्राप्त होता है। यदि मैं नाश-धर्मके प्राप्त होनेपर सोच करूँ, दुखी होऊँ, छाती पीटूँ, मूर्छित होऊँ, तो भोजन भी अच्छा नहीं लगेगा, शरीर दुर्वर्ण हो जायेगा, काम-काज भी नहीं किया जा सकेगा, शत्रुओंकी प्रसन्नताका कारण बनूँगा तथा मित्रोंकी चिन्ता का कारण बनूँगा। वह नाश-धर्मके प्राप्त होनेपर, न सोच करता है, न दुखी होता है, न रोता है, न छाती पीटता है और न मूर्छित होता है। महाराज! इसे ही कहते हैं कि ज्ञानी आर्य-श्रावकने विष-बुझे शोक-शल्यको निकाल बाहर किया, जिससे बिंधकर अज्ञानी, पृथक्-जन अपने आपको ही तपाता है। आर्य-श्रावक शोक-रहित हो, शल्य-रहित हो अपने आपको (दुःखसे) परिनिर्वृत्त करता है। महाराज! ये पाच बातें ऐसी है, जो न किसी श्रमण को प्राप्य है, न किसी ब्राह्मण को प्राप्य है, न किसी देवताको प्राप्य है, न किसी मारको प्राप्य है, न किसी ब्रह्माको प्राप्य है और न इस लोकमे अन्य किसी को प्राप्य है।

न सोचनाय परिदेवनाय अत्थो अलब्भो अपि अप्पकोपि,
सोचन्तमेन दुखित विदित्वा पच्चत्थिका अत्तमना भवन्ति॥
यतो च खो पण्डितो आपदासु न वेधति अत्थविनिच्छयञ्ञू
पच्चत्थिका दुखिता भवन्ति दिस्वा मुख अविकार पुराण॥

जप्पेन मन्तेन सुभासितेन अनुप्पदानेन पवेणिया वा,
यथा यथा यत्थ लभेथ अत्थ तथा तथा तत्थ परक्कमेय्य ।।
सचे पजानेय्य अलब्भनेय्यो मया च अञ्ञेन वा एस अत्थो,
असोचमानो अधिवासयेय्य कम्म दळह किन्ति करोमीदानि ।।

[अर्थ ऊपर आ गया है—अनु]

ऐसा कहनेपर राजा मुण्डने आयुष्मान् नारदको यह कहा—"भन्ते ! यह कौनसा धर्म-परियाय है ?" "महाराज ! इस धर्म-परियायका नाम शोक-शल्य-हरण धर्म-परियाय है।" "भन्ते ! यह निश्चयसे शोक-शल्य-हरण है। भन्ते ! यह निश्चय से शोक-शल्य-हरण है। भन्ते ! इस धर्म-परियायको सुनकर मेरा शोक-शल्य जाता रहा।"

तब राजा मुण्डने पियक कोषाध्यक्षको सम्बोधित किया—"सौम्य ! तो अब भद्रादेवीके शरीरकी दाह-क्रिया करो। इस पर स्तूप बनवाओ। आजसे हम स्नान करेंगे, लेप करेंगे, भोजन करेंगे तथा काम-काज देखेंगे।"

(१) नीवरण वर्ग

एक समय भगवान् श्रावस्तीमे अनाथपिण्डकके जेतवनाराममे विहार करते थे। भगवानने भिक्षुओको सम्बोधित किया—"भिक्षुओ।" उन भिक्षुओने भगवान् को प्रतिवचन दिया—"भदन्त"। भगवान् ने यह कहा—"भिक्षुओ ! ये पाच आवरण है, नीवरण है, जो चित्तमे ही उत्पन्न होते है,किन्तु प्रज्ञाको दुर्वल करते है। कौनसे पाँच ? भिक्षुओ काम-चेतना (=कामच्छन्दो) आवरण है, नीवरण है, जो चित्तमे ही उत्पन्न होती है, और प्रज्ञाकी दुर्वलताका कारण है। भिक्षुओ क्रोध (=व्यापाद) आवरण है, नीवरण है, जो चित्तमे ही उत्पन्न होता है और जो प्रज्ञाकी दुर्वलताका कारण है। भिक्षुओ, आलस्य (=थीनमिद्ध) आवरण है, नीवरण है, जो चित्तमे ही उत्पन्न होता है और जो प्रज्ञाकी दुर्वलताका कारण है। भिक्षुओ, उद्धत्य-कौकृत्य आवरण है, नीवरण है, जो चित्तमे ही उत्पन्न होता है और जो प्रज्ञाकी दुर्वलता का कारण है, भिक्षुओ, सशयालुपन (=विचिकित्सा) आवरण है, नीवरण है, जो चित्तमे ही उत्पन्न होता है और जो प्रज्ञा की दुर्वलताका कारण है। भिक्षुओ, ये पाच-आवरण है, नीवरण है, जो चित्तमे ही उत्पन्न होते है, किन्तु जो प्रज्ञाको दुर्वल करते है।

"भिक्षुओ, इसकी सभावना नही है कि कोई भिक्षु विना इन आवरणो, इन नीवरणोका त्याग किये, जो प्रज्ञाको दुर्वल बनाने वाले है, अपनी अबल-प्रज्ञाने,

अपनी दुर्बल प्रज्ञासे आत्म-हितकी बात जान सकेगा, पर-हितकी बात जान सकेगा, दोनोके हितकी बात जान सकेगा अथवा सामान्य मनुष्योके ज्ञानसे बढ कर आर्य-ज्ञान-दर्शन-विशेषका साक्षात् कर सकेगा। भिक्षुओ, जैसे पर्वतमे बहकर आने वाली कोई नदी हो, शीघ्रगामी हो, सब कुछ बहाकर ले जाने वाली हो। एक आदमी उस नदीमेंमे दोनो ओर पानी जानेके रास्ते खोल दे। इस प्रकार भिक्षुओ, मध्यमे ही उस नदीके स्रोतमे विक्षेप पड जाय, वह विस्तृत हो जाय, वह गडबडा जाय तो वह नदी न दूर दूर तक जा सकने वाली रहेगी, न शीघ्रगामी रहेगी और न सब कुछ बहाकर ले जा सकने वाली रहेगी। इसी प्रकार भिक्षुओ, इसकी सभावना नही है कि कोई भिक्षु बिना इन आवरणो, इन नीवरणोका त्याग किये, जो प्रज्ञाको दुर्बल बनाने वाले है, अपनी अबल-प्रज्ञासे, अपनी दुर्बल-प्रज्ञासे आत्म-हितकी बात जान सकेगा, परहितकी बात जान सकेगा, दोनोके हितकी बात जान सकेगा अथवा सामान्य मनुष्योंके ज्ञानसे बढकर आर्य-ज्ञान-दर्शन विशेषका साक्षातकार सकेगा। भिक्षुओ, इसकी सभावना है कि वह भिक्षु इन आवरणो, इन नीवरणोका त्याग करके, जो प्रज्ञाको दुर्बल बनाने वाले है, अपनी बलवती प्रज्ञासे आत्महितकी बात जान सकेगा, परहितकी बात जान सकेगा, दोनोके हितकी बात जान सकेगा अथवा सामान्य मनुष्योके ज्ञानसे बढकर आर्य-ज्ञान-दर्शन-विशेषका साक्षातकार कर सकेगा। भिक्षुओ, जैसे पर्वतसे बहकर आने वाली कोई नदी है, शीघ्रगामी हो, सब कुछ बहाकर ले जाने वाली हो। एक आदमी उस नदीके दोनो ओर पानी जानेके रास्ते बद कर दे। इस प्रकार भिक्षुओ, मध्यमे उस नदीका स्रोत अविक्षिप्त हो जाय, अविस्तृत हो जाय, अविच्छिन्न हो जाय, तो वह नदी दूर तक जा सकने वाली रहेगी, शीघ्रगामी रहेगी, सब कुछ बहाकर ले जा सकने वाली रहेगी। इसी प्रकार भिक्षुओ, इसकी सभावना है कि वह भिक्षु इन आवरणो, इन नीवरणोका त्याग करके, जो प्रज्ञाको दुर्बल बनाने वाले है, अपनी बलवती प्रज्ञासे आत्म-हितकी बात जान सकेगा, परहितकी बात जान सकेगा, दोनोंके हितकी बात जान सकेगा अथवा सामान्य मनुष्योके ज्ञानसे बढकर आर्य-ज्ञान-दर्शन-विशेषका साक्षातकार कर सकेगा।

भिक्षुओ, यदि किसीको अकुशल -राशीका सम्यक्-प्रकारसे परिचय देना हो तो वह इन पाँच नीवरणोकी ही बात करेगा। भिक्षुओ, ये पाँच नीवरण अकुशल-राशी के अतिरिक्त और कुछ नही है। कौनसे पाँच ? काम-छन्द नीवरण, व्यापाद-नीवरण, थीन-मिद्ध नीवरण, उद्धच्चकुक्कुच्च-नीवरण तथा विचिकिच्छा-नीवरण। भिक्षुओ, यदि किसीको अकुशल-राशीका सम्यक् प्रकारसे परिचय देना हो तो वह

इन पाँच नीवरणोकी ही बात करेगा। भिक्षुओ, ये पाँच नीवरण अकुशल-राशीके अतिरिक्त और कुछ नही है।

भिक्षुओ, योगाभ्यास (=प्रधान) के ये पाँच अग है। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, भिक्षु श्रद्धावान् होता है, वह तथागतके बुद्धत्वमे श्रद्धा रखता है कि वह भगवान् अर्हत है, सम्यक् सम्बुद्ध है, विद्या तथा आचरणसे युक्त है, सुगत है, लोकके जानकार है, अनुपम है, (दुर्दमनीय) पुरुषोके सारथी है, देव-मनुष्योके शास्ता है, बुद्ध भगवान् है।

वह निरोग होता है, दु ख-विहीन होता है, समान शीतोष्ण प्रकृतिसे युक्त होता है—न अति ऊष्ण और न अति शीत। वह योगाभ्यासके अनुकूल मध्यम-प्रकृतिसे युक्त होता है।

वह न शठ होता है, न मायावी होता है। वह शास्ता अथवा अपने विज्ञ सब्रह्मचारियोके सम्मुख अपनी यथार्थ स्थितिको प्रकट कर सकने वाला होता है।

वह अकुशल-धर्मोका नाश करनेके लिये तथा कुशल-धर्मोकी प्राप्तिके लिये प्रयत्नशील रहता है, शक्तिसम्पन्न होता है, दृढ-पराक्रमी है, कुशल-धर्मोको लेकर कन्धा गिराने वाला नही होता।

वह (वस्तुओकी) उत्पत्ति और विनाश सम्वन्धी प्रज्ञासे युक्त होता है, आर्य-प्रज्ञासे, वीधनेवाली प्रज्ञासे, दु खका सम्यक् प्रकार क्षय कर सकने वाली प्रज्ञासे। भिक्षुओ, योगाभ्यास (=प्रधान) के ये पाँच अग है।

भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये ये पाँच अनुपयुक्त समय है। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, एक भिक्षु बूढा हो गया रहता है, वृद्धा अवस्थाको प्राप्त। भिक्षुओ, योगाभ्यास के लिये यह पहला अनुपयुक्त समय है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु रोगी होता है, रोगसे ग्रस्त। भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये यह दूसरा अनुपयुक्त समय है। फिर भिक्षुओ, दुर्भिक्षका समय होता है, दुष्काल होता है, पिण्डपात दुर्लभ होता है, भिक्षाटन द्वारा जीविका चलाना सुकर नही होता। भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये यह तीसरा असमय है। फिर भिक्षुओ, जगली-मनुष्योके क्षोभसे उत्पन्न हुए भयका समय होता है, जब जनपदके लोग (रथोके) चक्कोपर घूमते है। भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये यह चौथा असमय होता है। फिर भिक्षुओ, सघ-भेद-हुआ रहता है, जब परस्पर गाली दी जाती है, जब परस्पर अपमान किया जाता है, जब परस्पर झगडे होते है तथा जब परस्पर एकदूसरेको त्यागा जाता है। ऐसे समय अश्रद्धालु श्रद्धावान् नही होते तथा श्रद्धालुओ-के मन बदले रहते है। भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये यह पाँचवाँ असमय है। भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये ये पाँच असमय है।

भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये ये पाँच उपयुक्त समय हैं। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, भिक्षु तरूण होता है, युवा होता है, अच्छे काले केशो वाला, भद्र यौवनसे युक्त होता है, अपनी चढती जवानीमे होता है। भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये ये पहला उपयुक्त समय है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु निरोग होता है, दु ख-विहीन होता है। समान शीतोष्ण प्रकृतिसे युक्त होता है—न अतिऊष्ण न अतिशीत। वह योगाभ्यासके अनुकूल मध्यम प्रकृतिसे युक्त होता है। भिक्षुओ, योगाभ्यास के लिये यह दूसरा उपयुक्त समय है। फिर भिक्षुओ, सुभिक्षाका समय होता है, सुकाल होता है, पिण्डपात दुर्लभ नही होता है, भिक्षाटन द्वारा जीविका चलाना सुकर होता है। भिक्षुओ, योगाभ्यास के लिये यह तीसरा उपयुक्त समय है। फिर भिक्षुओ, समय होता है जब लोग मिलकर रहते है, मुदित मनसे रहते है, विना विवादके रहते है, दूध-पानीकी तरह मिले रहते है तथा परस्पर एक दूसरेको प्रेम-भरी दृष्टिसे देखते हुए रहते है। भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये यह चौथा उपयुक्त समय है। फिर भिक्षुओ, समय होता है जब सघमें मेल होता है, मिलाप होता है, विवाद नही होता है, उद्देश्यकी समानता रहती है, असुविधा-रहित जीवन रहता है। भिक्षुओ, जब सघमें मेल रहता है तो परस्पर गाली नही दी जाती, परस्पर अपमान नही किया जाता, परस्पर झगडे नही होते है, तथा परस्पर एक दूसरेको त्यागा नही जाता है। ऐसे समय अश्रद्धालु श्रद्धावान् होते है तथा श्रद्धालुओंकी श्रद्धा वलवती होती है। भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये यह पाँचवाँ उपयुक्त समय है। भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये ये पाँच उपयुक्त समय है।

एक समय भगवान् श्रावस्तीमें अनाथपिण्डिकके जेतवनाराममें विहार करते थे। उस समय श्रावस्तीमें माता तथा पुत्र दोनो वर्षावास कर रहे थे। एक भिक्षुणी दूसरा भिक्षु। वे यही चाहते थे कि निरन्तर एक दूसरेको देखते रहे। माता भी यही चाहती थी कि पुत्रको निरन्तर देखती रहे, पुत्र भी यही चाहता था कि माताको निरन्तर देखता रहे। उनके निरन्तर एक दूसरेको देखते रहनेसे उनका मेल-जोल वढ गया। मेल-जोल वढ जानेसे विश्वास वढ गया। विश्वास वढ जानेसे फिसल गये। उन दोनो पतित-चित्तोने विना धर्म-विनय (= शिक्षा) का त्याग किये, विना अपने दौर्वल्य को प्रकट किये मैथुन-धर्मका सेवन किया।

तव वहुतसे भिक्षु जहाँ भगवान् थे, वहाँ गये। पास जाकर भगवान्को नमस्कार कर एक ओर वैठे। एक ओर वैठे हुए उन भिक्षुओने भगवान्से निवेदन किया —भन्ते! श्रावस्तीमें एक माता तथा उसका पुत्र दोनो वर्षावास कर रहे थे, एक भिक्षुणी थी, दूसरा भिक्षु। वे यही चाहते थे कि निरन्तर एक दूसरेको देखते रहे।

माता भी यही चाहती थी कि पुत्रको निरन्तर देखती रहे, पुत्र भी यही चाहता था कि माताको निरन्तर देखता रहे। उनके निरन्तर एक दूसरेको देखते रहनेसे उनका मेल-जोल बढ गया। मेल-जोल बढ जानेसे विश्वास बढ गया। विश्वास बढ जानेसे फिसल गये। उन दोनो पतित-चित्तोने बिना धर्म-विनय (= शिक्षा) का त्याग किये, बिना अपने दौर्बल्यको प्रकट किये मैथुन-धर्मका सेवन किया।"

"भिक्षुओ, क्या वह मूर्ख यह मानता रहा है कि माता पुत्रके प्रति अनुरक्त नही होती है और पुत्र माताके प्रति अनुरक्त नही होता है? भिक्षुओ, मै किसी भी दूसरे ऐसे एक रूपको नही देखता जो स्त्रीके रूपके समान रजन-करने वाला हो, कमनीय हो, मदमस्त कर देने वाला हो, बाधने वाला हो, मूर्छित कर देने वाला हो तथा अनुपम योग-क्षेमकी प्राप्तिमे बाधक हो। भिक्षुओ, जो प्राणी स्त्री-रूपके प्रति अनुरक्त हो जाते है, उसमे ग्रथित हो जाते है, उसमे आसक्त हो जाते है, उससे मूर्छित हो जाते है, उसमे फस जाते है वे स्त्री-रूपके वशीभूत हो जानेके कारण दीर्घ-काल तक सोचमें पडे रहते है। भिक्षुओ, मै किसी भी दूसरे ऐसे एक शब्दको नही देखता. एक गन्धको नही देखना . एक रसको नही देखता एक स्पर्शको नही देखता, जो स्त्रीके स्पर्शके समान रजन करने वाला हो, कमनीय हो, मदमस्त कर देने वाला हो, बाधने वाला हो, मूर्छित कर देने वाला हो तथा अनुपम योगक्षेमकी प्राप्तिमें बाधक हो। भिक्षुओ, जो प्राणी स्त्री-स्पर्शके प्रति अनुरक्त हो जाते है, उसमे ग्रथित हो जाते है, उसमे आसक्त हो जाते है, उससे मूर्छित हो जाते है, उसमें फँस जाते है, वे स्त्री-स्पर्शके वशीभूत हो जानेके कारण, दीर्घ-काल तक सोचमे पडे रहते है। भिक्षुओ, स्त्री चलती है तब भी पुरुषका चित्त उसके प्रति खिचा रहता है, खडी होती है तब भी, बैठती है तब भी, लेटती है तब भी, हँसती है तब भी, बोलती है तब भी, गाती है तब भी, रोती रहती है तब भी, और फूली रहती है तब भी, मरी रहती है तब भी, पुरुषके चित्तको अपने काबूमे लिये रहती है। भिक्षुओ, यदि कोई ठीकसे यह कहना चाहे कि यह मारका सर्वतोमुखी-बधन है तो वह स्त्रीके बारेमे ही यह ठीक-ठीक कहेगा कि यह मारका सर्वतोमुखी बधन है।

सल्लपे असिहत्थेन पिसाचेनपि सल्लपे,
आसीविसम्पि आसीदे येन दट्ठो न जीवति॥
नत्वेव एको एकाय मातुगामेन सल्लपे,
मुट्ठस्सति ता बन्धन्ति पेक्खितेन सितेन च॥

अथोपि दुन्निवत्थेन मञ्जुना भणितेन च,
ने सो जनो यवासीदो अपि उग्घानितो मतो ॥
पञ्चकामगुणा एते इत्थि रूपस्मि दिस्सरे,
रूपा सद्दा रसा गन्धा फोट्ठब्बा च मनोरमा ॥
तेस कामोघवूळहान कामे अपरिजानत,
काल गति भवाभव ससारस्मि पुरक्खता ॥
ये च कामपरिञ्ञाय चरन्ति अकुतोभया,
ते वे पारगता लोके ये पत्ता आसवक्खयन्ति ॥

[जिसके हाथमे तलवार हो, भले ही उससे बात-चीत करे , पिशाचसे भी भले ही बात-चीत करे , आशीविष (सर्प) के पास भी भले ही बैठे, जिसका डसा जीता नही बचता किन्तु भिक्षुको चाहिये कि किसी अकेली स्त्रीसे अकेलेमें कभी बात-चीत न करे। जो मूढ-स्मृति होता है, ऐसे आदमी को वे अपनी नजरसे, अपनी मुस्कराहटसे, अपनी अर्ध-नग्नतासे वा अपनी बात-चीतसे बाध लेती हैं। चाहे फूली हुई मृतावस्थामें ही क्यो न हो, तब भी यह जान ले कि स्त्री अकेलेमें पास बैठने योग्य नही है। रूप, शब्द, रस, गन्ध, स्पर्श—ये जितने मनोरम पाँच काम-गुण हैं सभी स्त्री-रूपमें दिखाई देते हैं। जो काम की बाढमे बहने वाले हैं, जो कामके दुष्परिणाम को नही जानते हैं, ऐसे लोगोका ससारमें ससरण, गति, पुनरुत्पत्ति पूर्व-निश्चित ही है। जो कामके दुष्परिणामको जानकर निर्भय हो, इस लोकमें विचरते हैं, वे ही पार-प्राप्त हैं और उन्होने ही आस्रवोका क्षय किया है।]

एक भिक्षु, जहाँ उसके अपने उपाध्याय थे, वहाँ गया। पास जाकर अपने उपाध्यायसे कहा—"भन्ते ! इस समय मुझे शरीर भारी भारी सा लगता है, मुझे दिशाये भी दिखाई नही देती, मुझे धर्म भी नही सूझता, मेरा चित्त आलस्य-युक्त हो गया है। मैं बे-मनसे श्रेष्ठ-जीवन (= ब्रह्मचर्य) व्यतीत कर रहा हूँ। मेरे मनमें धर्मके प्रति सशय ही सशय भरे पडे हैं।" तब वह (उपाध्याय-) भिक्षु अपने उस शिष्य को ले जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचे। पास जाकर भगवान्को प्रणाम कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे हुए (उपाध्याय) भिक्षुने भगवान्से यह कहा—"भन्ते ! यह भिक्षु ऐसा कहता है, 'इस समय मुझे शरीर भारी भारी सा लगता है, मुझे दिशायें भी दिखाई नही देती, मुझे धर्म भी नही सूझता, मेरा चित्त आलस्य-युक्त हो गया है। मैं बे-मनसे श्रेष्ठ जीवन (= ब्रह्मचर्य) व्यतीत कर रहा हूँ। मेरे मनमें धर्मके प्रति सशय ही सशय भरे पडे है।"

"भिक्षु! जो अपनी इन्द्रियोको सयत नही रखता, जो भोजनमे मात्रज्ञ नही होता, जो जागरूक नही रहता, जो कुशल-धर्मोको, वोधिपक्षीय धर्मोको सदैव देखता नही रहता, जो भावना (=चित्तअभ्यास) करनेमे लगा नही रहता, ऐसे भिक्षुको ऐसा होता ही है कि उसे उसका शरीर भारी भारी सा लगता है, उसे दिशाये भी दिखाई नही देती, उसे धर्म भी नही सूझता, उसका चित्त आलस्य-युक्त हो गया रहता है, वह बे-मनसे श्रेष्ठ-जीवन (=ब्रह्मचर्य) व्यतीत करता है, उसके मनमे धर्मके प्रति सशय ही सशय भरे रहते है। इसलिये हे भिक्षु, तुझे ऐसा सीखना चाहिये कि मै इन्द्रियोको सयत रखूँगा, भोजनके विषयमे मात्रज्ञ होऊँगा, जागरूक रहूँगा, कुशल-धर्मोको, वोधिय-पक्षिय धर्मोको सदैव देखता रहूँगा तथा भावना (=चित्त-अभ्यास) करनेमें लगा रहूँगा। ऐसा ही तुझे हे भिक्षु! सीखना चाहिये।"

तव भगवान् द्वारा इस प्रकार उपदेश दिये जाने पर वह भिक्षु आसनसे उठ, भगवानको नमस्कार कर, प्रदक्षिणा कर चला गया। उस भिक्षुने अकेले सयत अप्रमादी प्रयास-पूर्वक प्रयत्न करते हुए अचिरकालमे ही जिस उद्देश्यकी प्राप्तिके लिये कुल-पुत्र घरसे वे-घर हो प्रव्रजित हो जाते है, उस अनुपम ब्रह्मचर्य-परायण उद्देश्यको इसी शरीरमे स्वय जानकर, साक्षात् कर प्राप्तकर लिया। उसको ज्ञान हो गया कि अव जन्म-मरणका वधन क्षीण हो गया, ब्रह्मचर्य-वास पूरा हो गया, कृत-कार्य हो गया, इससे आगे कुछ भी करणीय शेष नही रहा। वह भिक्षु अर्हतोमेंसे एक हुआ।

तव अर्हत्वकी प्राप्ति होने पर वह भिक्षु अपने उपाध्यायके पास गया। पास जाकर अपने उपाध्यायसे कहा—"भन्ते! अव इस समय मुझे शरीर भारी-भारी सा नही लगता है। मुझे दिशायें दिखाई देती है। मुझे धर्म सूझता है। मेरा चित्त-आलस्य-युक्त नही रहा है। मै मनसे श्रेष्ठ-जीवन (=ब्रह्मचर्य) व्यतीत कर रहा हूँ। मेरे मनमे धर्मके प्रति सशय नही रहे है।"

तव वह उपाध्याय-भिक्षु उस शिष्य भिक्षुको लेकर भगवान्के पास गया। भगवान्को नमस्कार कर एक ओर वैठा। एक ओर वैठे हुए उस भिक्षुने भगवान्‌से यह कहा—"भन्ते! यह भिक्षु ऐसा कहता है, 'भन्ते! अव इस समय मुझे शरीर भी भारी भारी सा नही लगता है। मुझे दिशायें दिखाई देती है। मुझे धर्म सूझता है। मेरा चित्त आलस्य-युक्त नही रहा है। मै मनसे श्रेष्ठ-जीवन (=ब्रह्मचर्य) व्यतीत कर रहा हूँ। मेरे मनमे धर्मके प्रति सशय नही रहे है।"

"भिक्षु! जो अपनी इन्द्रियोको सयत रखता है, जो भोजनमे मात्रज्ञ होता है, जो जागरूक रहता है, जो कुशल-धर्मोको, वोधिपक्षीय-धर्मोको सदैव देखता

रहता है, जो भावना (=चित्त-अभ्यास) करनेमे लगा रहता है, ऐसे भिक्षुको ऐसा होना ही है, कि उसे उसका शरीर भारी भारी सा नही लगता है, उसे दिशाये दिखाई देती है, उसे धर्म सूझता है, उसका चित्त आलस्य-युक्त नही रहता है, वह मनसे श्रेष्ठ जीवन (=ब्रह्मचर्य) व्यतीत करता है, उसके मनमें धर्मके प्रति संशय नही रहते है। इसलिये भिक्षुओ, ऐसा सीखना चाहिये कि हम इन्द्रियोंको संयत रखेंगे, भोजनके विषयमे मात्रज्ञ होंगे, जागरूक रहेंगे, कुशल-धर्मोको बोधिपक्षीय-धर्मोको—सदैव देखते रहेंगे तथा भावना (=चित्त-अभ्यास) करनेमे लगे रहेंगे। ऐसा ही तुम्हे हे भिक्षुओ, सीखना चाहिये।"

भिक्षुओ, चाहे कोई स्त्री हो, वा पुरुष हो, चाहे कोई गृहस्थ हो, वा प्रव्रजित हो, उसे चाहिये कि इन पांच बातो पर निरन्तर विचार करता रहे। कौन सी पाँच बातो पर? चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि मै जरा-धर्मी हूँ, जराके वशीभूत हूँ। चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे उस बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये मै रोग-धर्मी हूँ, रोगके वशीभूत हूँ। चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि मै मरण-धर्मी हूँ, मरणके वशी-भूत हूँ। चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि जितनी भी मेरी प्रिय-वस्तुये है, अच्छी लगने वाली वस्तुये है, उनका सबका नाश वियोग निश्चित है। चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि कर्म मेरा है, कर्म ही उत्तराधिकार है, कर्मसे ही उत्पन्न हुआ हूँ, कर्म ही बन्धु है, कर्म ही शरण-स्थान है, इसलिये जो भी भला-बुरा कर्म करूँगा वह मेरे उत्तराधिकारमे आयेगा।

चाहे स्त्री हो, चाहे पुरुष, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित उसे किन कारणसे इस बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि मै जरा-धर्मा हूँ, जराके वशीभूत हूँ? भिक्षुओ, यौवनावस्थामे प्राणियोमे यौवन-मद होता है, उस मदसे मस्त होकर वे शरीरसे दुष्कर्म करते है, वाणीसे दुष्कर्म करते है, तथा मनसे दुष्कर्म करते है। इस बातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे यौवनावस्थाका जो यौवन-मद होता है, वह या तो सर्वथा नष्ट हो जाता है या बहुत दुर्बल पड़ जाता है। भिक्षुओ, इसी कारणसे चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस

वातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि मैं जरा-धर्मी हूँ, जराके वशीभूत हूँ।

चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो,चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे किस कारणसे हे भिक्षुओ, इस वातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि मैं रोग-धर्मी हूँ, रोगके वशीभूत हूँ? भिक्षुओ, आरोग्यावस्थामे प्राणियोमे आरोग्य-मद होता है, उस मदसे मस्त होकर वे शरीरसे दुष्कर्म करते हैं, वाणीसे दुष्कर्म करते है, तथा मनसे दुष्कर्म करते है। इस वातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे, आरोग्यावस्थाका जो आरोग्य-मद होता है, वह या तो सर्वथा नष्ट हो जाता है, या वहुत दुर्वल पड जाता है। भिक्षुओ, इसी कारणसे चाहे स्त्री हो. चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो, चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस वातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि मै रोग-धर्मी हूँ, रोगके वशीभूत हूँ।

चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे किस कारणसे हे भिक्षुओ, इस वातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि मै मरण-धर्मी हूँ, मरणके वशी-भूत हूँ? भिक्षुओ, जीवित अवस्थामे प्राणियोमे जीवन-मद होता है, उस मदसे मस्त होकर वे शरीरसे दुष्कर्म करते है, वाणीसे दुष्कर्म करते है, तथा मनसे दुष्कर्म करते है। इस वातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे जीवित-अवस्थाका जो जीवन-मद होता है, वह या तो सर्वथा नष्ट हो जाता है या वहुत दुर्वल पड जाता है। भिक्षुओ, इसी कारणसे चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस वातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि मै मरण-धर्मी हूँ, मरणके वशी-भूत हूँ।

चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे किस कारणसे हे भिक्षुओ, इस वात पर विचार करते रहना चाहिये कि जितनी भी मेरी प्रिय-वस्तुये हैं, अच्छी लगने वाली वस्तुये है, उन सवका नाश विनाश निश्चित है? भिक्षुओ, प्राणियोका अपनी प्रिय वस्तुओमे राग होता है, जिस रागसे अनुरक्त होनेके कारण वे शरीरसे दुष्कर्म करते है, वाणीसे दुष्कर्म करते है तथा मनसे दुष्कर्म करते है। इस वातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे प्रिय-वस्तुओंके प्रति जो राग होता है वह या तो सर्वथा नष्ट हो जाता है या वहुत दुर्वल पड जाता है। भिक्षुओ, इसी कारणसे चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस वातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि जितनी भी मेरी प्रिय-वस्तुये हैं, अच्छी लगने वाली वस्तुये है, उन सवका नाश विनाश निश्चित है।

चाहे स्त्री हो चाहे पुरुप हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस कारणसे हे भिक्षुओ, इस वातपर विचार करते रहना चाहिये कि कर्म मेरा है, कर्म ही उत्तराधिकार है, कर्मसे ही उत्पन्न हुआ हूँ, कर्म ही वन्धु है, कर्म ही शरण-स्थान है, इसलिये जो भी भला-बुरा कर्म करूगा वह मेरे उत्तराधिकारमे आयेगा ? भिक्षुओ, प्राणी शरीर से दुष्कर्म करते है, वाणीसे दुष्कर्म करते है, मनसे दुष्कर्म करते है। इस वातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे उनके वे दुष्कर्म या तो सर्वथा छूट जाते है या बहुत दुर्बल पड़ जाते है। भिक्षुओ, इसी कारणसे चाहे स्त्री हो, चाहे पुरुप हो, चाहे गृहस्थ हो, चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस वातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि कर्म मेरा है, कर्म ही उत्तराधिकार है, कर्मसे ही उत्पन्न हुआ हूँ, कर्म ही वन्धु है, कर्म ही शरण-स्थान है, इसलिये जो भी भला-बुरा कर्म करूगा वह मेरे उत्तराधिकारमें आयेगा।

भिक्षुओ, वह आर्य-श्रावक यह सोचता है कि केवल मै ही ऐसा नही हूँ जो जरा-धर्मी होऊँ, जराके वशी-भूत होऊँ, जितने भी प्राणी पैदा होनेवाले है, मरने वाले है, उन सभी जरा-धर्मी प्राणियोंकीको बुढापा व्याप्त होता है। इस वातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे उसे (आर्य-) मार्गकी प्राप्ति हो जाती है। वह उस मार्ग पर चलता है, उसका अभ्यास करता है, अधिकाधिक अभ्यास करता है। जब वह उस मार्गपर चलता है, उसका अभ्यास करता है, अधिकाधिक अभ्यास करता है तो उसके सयोजनोका क्षय होता है तथा अनुशय नष्ट होते है। (वह सोचता है) केवल मै ही ऐसा नही हूँ जो रोग-धर्मी होऊँ, रोगके वशी-भूत होऊँ, जितने भी प्राणी पैदा होने वाले है, मरने वाले है, उन सभी रोग-धर्मी प्राणियोंको रोग-व्याप्त है। इस वातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे उसे (आर्य-) मार्गकी प्राप्ति हो जाती है। वह उस मार्गपर चलता है, उसका अभ्यास करता है, अधिकाधिक अभ्यास करता है तो उसके सयोजनोका क्षय होता है तथा अनुशय नष्ट होते है। (वह सोचता है) केवल मै ही ऐसा नही हूँ, जो मरण-धर्मी होऊँ, मरणके वशी-भूत होऊँ, जितने भी प्राणी पैदा होने वाले है, मरने वाले है, उन सभी मरण-धर्मी प्राणियोंको मरण व्यापता है। इस वातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे उसे (आर्य-) मार्गकी प्राप्ति हो जाती है। वह उस मार्ग पर चलता है, उसका अभ्यास करता है, अधिकाधिक अभ्यास करता है, तो उसके सयोजनोका क्षय होता है, उसके अनुशय नष्ट होते है। (वह सोचता है) केवल मै ही ऐसा नही हूँ कि जिसकी सभी प्रिय-वस्तुयें नष्ट होने-वाली हो, विनष्ट होने-वाली हो, जितने भी प्राणी पैदा होने वाले है, मरने वाले है, उन सभी प्राणियोकी प्रिय-वस्तुये नष्ट होने वाली है, विनष्ट होने वाली है। इस

बातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे उसे (आर्य-) मार्गकी प्राप्ति हो जाती है। वह उस मार्गपर चलता है, उसका अभ्यास करता है, अधिकाधिक अभ्यास करता है तो उसके सयोजनोका क्षय होता है, उसके अनुशय नष्ट होते है। (वह सोचता है) केवल मै ही ऐसा नही हूँ कि कर्म मेरा है, कर्म ही उत्तराधिकार है, कर्मसे ही उत्पन्न हुआ हूँ, कर्म ही बन्धु है, कर्म ही शरण-स्थान है, जितने भी प्राणि पैदा होने वाले है, मरने वाले है वे सभी प्राणी ऐसे है कि कर्म ही उनका है, कर्म ही उत्तराधिकार है, कर्मसे ही उत्पन्न हुए है, कर्म ही बन्धु है, कर्म ही शरण-स्थान है। इस बातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे उसे (आर्य-) मार्गकी प्राप्ति हो जाती है। वह उस मार्गपर चलता है, उसका अभ्यास करता है, तो उसके सयोजनोका क्षय होता है, उसके अनुशय नष्ट होते है।

व्याधिधम्मा जराधम्मा अथो मरणधम्मिनो,
यथाधम्मा तथा सन्ता जिगुच्छन्ति पुथुज्जना ॥
अहचेव जिगुच्छेय्य एव धम्मेसु पाणीसु,
न मेत पतिरूपस्स मम एव विहारिनो ॥
सोह एव विहरन्तो ञत्वा धम्मनिरूपधि,
आरोग्ये योब्बनस्मि च जीवितस्मि च ये मदा ॥
सब्बे मदे अभिभोस्मि नेक्खम्म दटठुखेमतो
तस्स मे अहु उस्साहो निब्बाण अभिपस्सतो ॥
नाह भब्बो एतरहि कामानि पतिसेवितु,
अनिवत्ती भविस्सामि ब्रह्मचरियपरायणो ॥

[पृथक-जन (=सामान्य जन) स्वय रोग-धर्मी, जरा-धर्मी तथा मरण-धर्मी होते हुए भी अपने ही समान रोग-धर्मी, जरा-धर्मी, मरण-धर्मी प्राणियोको घृणाकी दृष्टिसे देखते है। यदि इसी प्रकार विहार करने वाला मै भी इस प्रकारके रोग-धर्मी, जरा-धर्मी, मरण-धर्मी प्राणियोको घृणाकी दृष्टिसे देखूँ तो यह मेरे अनुरूप नही होगा। इसलिये मै इस प्रकार विचार करते हुए जो उपाधि-रहित धर्म है, उनकी जानकारी प्राप्त कर आरोग्य, यौवन तथा जीवनमे जो मद है उन सभी मदोको मर्दित करके रहूँगा, क्योकि आदमीका कल्याण (=क्षेम) निष्क्रमणमे ही है। निर्वाणको देखते हुए मेरे मनमे निर्वाणके प्रति उत्साह पैदा हुआ। मै अब इस स्थितिमे नही हूँ कि मै काम-भोगोका सेवन करू। मै ब्रह्मचर्य्य-परायण रहकर 'न पीछे लौटने वाला' होऊँगा।]

एक समय भगवान् वैशालीके महावनकी कूटागार शालामें विहार करते थे। तब भगवान् पूर्वान्ह समय पहनकर, पात्र चीवर ले, वैशालीमें भिक्षाटनके लिये प्रविष्ट हुए। वैशालीमे भिक्षाटनकर, भिक्षाटनसे लौट, भोजनानन्तर, महावनमें प्रविष्ट हो, एक वृक्षकी छायामें, दिन भर विहार करनेके लिये बैठे।

उस समय धनुष खींचे हुए बहुतसे लिच्छवी कुमारोंने, बहुतसे कुत्तोंकी मण्डली साथ लिये, महावनमें घूमते-घामते देखा कि भगवान् बुद्ध एक वृक्षकी छायाके नीचे दिनमे विहार करनेके लिये विराजमान है। यह देख उन्होंने अपने चढाये धनुष फेंक दिये और कुत्तोको एक ओर कर दिया। तब वे जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचे। पास जाकर भगवान्को अभिवादन कर, चुपचाप हाथ जोडकर भगवान्की सेवामें खडे हो गये।

उस समय महावनमें टहलनेके लिये आये महानाम लिच्छवीने देखा कि वे कुमार चुप-चाप हाथ जोडकर भगवान्की सेवामें खडे है। यह देख वह जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया और भगवान्को प्रणाम कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए महानाम लिच्छवीने उल्लास-वाक्य कहा—"वज्जी (=विजयी) होगे, वज्जी होगे।" भगवान्ने पूछा—"महानाम! ऐसा तू क्यो कह रहा है कि वज्जी होगे, वज्जी होगे!"

"भन्ते! ये लिच्छवी कुमार बडे प्रचण्ड है, बडे कठोर है। जो चीजे भी एक कुलसे दूसरे कुलको भेजी जाती है—चाहे ऊख हो, चाहे बेर हो, चाहे पूए हो, चाहे लड्डू हो, चाहे सकखलिका (?) हो—उन्हे लूटकर खा-जाते है, कुल-स्त्रियोको और कुल-कुमारियोको भी पीछेसे ठोकर मार कर गिरा देते है, वे इस समय चुप-चाप हाथ जोडकर भगवान्की सेवामे खडे है।"

"महानाम! जिस किसी कुल-पुत्रमें भी—चाहे वह अभिषिक्त राजा क्षत्रिय हो, चाहे वह राष्ट्रिक हो, चाहे वह पैतृक-सम्पत्तिवाला हो, चाहे वह सेनाका सेनापति हो, चाहे वह ग्रामका ग्रामणी हो, चाहे वह पूगका ग्रामणी (=मुखिया) हो अथवा जो भी कुलोमे अधिपति होते है—ये पाँच बाते होती है, उसकी उन्नतिकी ही आशा करनी चाहिए, अवनतिकी नही। कौन सी पाँच? महानाम! एक कुलपुत्र परिश्रमसे कमाये हुए, बाहुबलसे कमाये हुए, पसीना बहाकर कमाये हुए, धर्मसे कमाये हुए, भोग्य-पदार्थोंसे माता-पिताका सत्कार करता है, गौरव करता है, (उन्हे) मानता है, पूजता है। उसके द्वारा सत्कृत, गौरव-प्राप्त, सन्मान-प्राप्त, पूजित माता-पिता कल्याण-भावनासे आशीर्वाद देते है—चिरकाल तक जीवित

रहो, दीर्घायु प्राप्त हो। महानाम ! जिस कुल-पुत्रको माता पिताका आशीर्वाद प्राप्त हो, उसकी उन्नतिकी ही आशा करनी चाहिये, अवनतिकी नही।

फिर महानाम ! एक कुलपुत्र परिश्रमसे कमाये हुए, बाहु-बलसे कमाये हुए, पसीना बहाकर कमाये हुए, धर्मसे कमाये हुए भोग्य पदार्थोंसे स्त्री-पुत्र-दास कमकर आदमियोका सत्कार करता है, गौरव करता है, (उन्हे) मानता है, पूजता है। उसके द्वारा सत्कृत गौरव-सम्मान-प्राप्त, पूजित स्त्री-पुत्र, दास कर्मकर आदमी कल्याण-भावनासे आशीर्वाद देते है—चिर कालतक जीवित रहो, दीर्घायु प्राप्त हो। महा-नाम् ! जिस कुल-पुत्रको स्त्री-पुत्र-दास-कर्मकर आदमियोका आशीर्वाद प्राप्त हो, उसकी उन्नतिकी ही आशा करनी चाहिये, अवनतिकी नही।

फिर महानाम् ! एक कुल-पुत्र परिश्रमसे कमाये हुए, बाहुबलसे कमाये हुए, पसीना बहाकर कमाये हुए, धर्मसे कमाये हुए भोग्य-पदार्थोंसे अपनी जमीन जोतने वाले, रस्सी आदिसे नापने-जोखने वाले आदमियोका सत्कार करता है, गौरव करता है, (उन्हे) मानता है, पूजता है। उसके द्वारा सत्कृत, गौरव-प्राप्त, सम्मान-प्राप्त, पूजित, जमीन जोतने वाले, रस्सी आदिसे जमीनकी नाप-जोख करने वाले आदमी कल्याण-भावनासे आशीर्वाद देते है—चिरकाल तक जीवित रहो, दीर्घायु प्राप्त हो। महानाम ! जिस कुल-पुत्रको अपनी जमीन जोतने वाले, रस्मी आदिसे नापने-जोखने वाले आदिमियोका आशीर्वाद प्राप्त हो, उसकी उन्नतिकी ही आशा करनी चाहिये, अवनतिकी नही।

फिर महानाम ! एक कुल-पुत्र परिश्रमसे कमाये हुए, बाहुबलसे कमाये हुए, पसीना बहाकर कमाये हुए, धर्मसे कमाये हुए, भोग्य-पदार्थोंसे जो बलि-ग्राहक देवता होते है, उनका सत्कार करता है, गौरव करता है, (उन्हे) मानता है, पूजता है। उसके द्वारा सत्कृत, गौरव-प्राप्त, सम्मान-प्राप्त, पूजित बलि-ग्राहक देवता कल्याण-भावनासे आशीर्वाद देते है—चिरकाल तक जीवित रहो, दीर्घायु प्राप्त हो। महानाम ! जिस कुलपुत्रको बलि-ग्राहक देवताओका आशीर्वाद प्राप्त हो, उसकी उन्नतिकी ही आशा करनी चाहिये, अवनतिकी नही।

फिर महानाम ! एक कुल-पुत्र परिश्रमसे कमाये हुए, बाहु-बलसे कमाये हुए, पसीना बहाकर कामाये हुए, धर्मसे कमाये हुए, भोग्य पदार्थोंसे श्रमण-ब्राह्मणोका सत्कार करता है, गौरव करता है, (उन्हे) मानता है, पूजता है,। उसके द्वारा सत्कृत, गौरव-प्राप्त, सम्मान-प्राप्त , पूजित श्रमण-ब्राह्मण कल्याण-भावनासे आशीर्वाद देते है—चिरकाल तक जीवित रहो, दीर्घायु प्राप्त हो। महानाम ! जिस कुल-पुत्रको श्रमण-

ब्राह्मणोका आशीर्वाद प्राप्त हो, उसकी उन्नति की ही आशा करनी चाहिये, अवनतिकी नही। महानाम! जिस किसी कुलपुत्रमे भी—चाहे वह अभिषिक्त क्षत्रिय राजा हो, चाहे वह राष्ट्रिक हो, चाहे वह पैतृक्-सम्पत्ति वाला हो, चाहे वह सेनाका सेनापति हो, चाहे वह ग्रामका ग्रामणी हो, चाहे वह पूगका ग्रामणी (=मुखिया) हो अथवा जो भी कुलोमे अधिपति होते हैं—ये पाच बाते होती है, उसकी उन्नतिकी ही आशा करनी चाहिये, अवनतिकी नही।

मातापितु किच्चकरो पुत्तदारहितो सदा
अन्तोजनस्स अत्थाय ये चस्स अनुजीविनो॥
उभिन्न येव अत्थाय वदञ्ञू होति सीलवा,
ञातीन पुब्बपेतान दिट्ठधम्मे च जीविन॥
समणान ब्राह्मणान देवतान च पण्डितो,
वित्तिसजननो होति धम्मेन घरमावस॥
सो करित्वान कल्याण पुज्जो होति पससियो,
इध चेव न पससन्ति पेच्च सग्गे च मोदति॥

[जो पण्डित होता है, वह मात-पिताकी सेवा करने वाला होता है, स्त्री-पुत्रका नित्य हित करने वाला होता है, जो घरके अन्य लोग होते है तथा जो उसके उपजीवी होते हैं उनका भी हितैषी होता है। जो ज्ञानी होता है, जो सदाचारी होता है, वह दोनोके लिये होता है—परलोक गत सम्बन्धियोके लिये तथा वर्तमान जीवित सम्बन्धियोके लिये। जो विज्ञ होता है, वह धर्मसे अर्जित सामग्रीसे श्रमण-ब्राह्मणोको तथा देवताओको सन्तुष्ट करने वाला होता है, वह कल्याण-कारक होनेसे पूजित तथा प्रसशसित होता है। इस लोकमें भी उसकी प्रशसा होती है और परलोकमे भी वह आनन्दित होता है।]

भिक्षुओ, जो वृद्ध होकर प्रव्रजित हुआ रहता है उसमे ये पाँच गुण दुर्लभ होते है कौनसे पाँच? भिक्षुओ, जो वृद्ध होकर प्रव्रजित हुआ रहता है, वह प्राय निपुण (=दक्ष) नही होता, उसकी चर्या प्राय ठीक नही होती, वह प्राय बहुश्रुत नही होता, वह प्राय धर्म-कथिक नही होता, वह प्राय विनय-धर नही होता। भिक्षुओ, जो वृद्ध होकर प्रव्रजित हुआ रहता है उसमे ये पाँच गुण दुर्लभ होते हैं।

भिक्षुओ, जो वृद्ध होकर प्रव्रजित हुआ रहता है, उसमे ये पाँच गुण दुर्लभ होते है। कौनसे पांच? भिक्षुओ, जो वृद्ध होकर प्रव्रजित हुआ रहता है, वह प्राय सुवच नही होता, वह प्राय सुगृहीत को ग्रहण करने वाला नही होता, वह प्राय दक्ष

नही होता, वह प्राय धर्म-कथिक नही होता , वह प्राय विनय-धर नही होता है। भिक्षुओ, जो वृद्ध होकर प्रव्रजित हुआ रहता है, उसमे ये पाँच गुण दुर्लभ होते है।

भिक्षुओ, यदि इन पाँच सज्ञाओकी भावनाकी जाय, अभ्यास किया जाय, तो इसका महान् फल होता है, महान् प्रतिफल होता है, अमृत-फल होता है, अमृत-परिणाम होता है। कौनसी पाच सज्ञाओ की ? अशुभ-सज्ञा की, मरण-सज्ञा की, (दुष्कर्मोका) दुष्परिणाम-सज्ञाकी, आहारके विषयमे प्रतिकूल-सज्ञा की, समस्त लोक के प्रति अनासक्तिकी सज्ञा की। भिक्षुओ, यदि इन पाँच सज्ञाओकी भावनाकी जाय, अभ्यास किया जाय तो उसका महान् फल होता है, महान् प्रतिफल होता है, अमृत-फल होता है, अमृत परिणाम होता है।

भिक्षुओ, यदि इन पाँच सज्ञाओकी भावना की जाय, अभ्यास किया जाय तो इसका महान् फल होता है, महान् प्रतिफल होता है, अमृत-फल होता है, अमृत परिणाम होता है। कौनसी पाँच सज्ञाओकी ? अनित्य-सज्ञा की, अनात्म सज्ञा की, मरण सज्ञाकी, आहारके प्रति प्रतिकूलसज्ञाकी तथा समस्त लोकके प्रति अनासक्तिकी सज्ञाकी। भिक्षुओ यदि इन पाँच सज्ञाओकी भावना की जाय, अभ्यास किया जाय, तो इसका महान् फल होता है, महान् प्रतिफल होता है, अमृत-फल होता है, अमृत-परिणाम होता है।

भिक्षुओ, जिस आर्य-श्रावककी इन पाच विषयो में वृद्धि होती है, उसकी आर्य-वृद्धि होती है , वह शरीर (= धारण करने) का सार ग्रहण कर लेने वाला होता है, श्रेष्ठफल प्राप्त कर लेने वाला होता है। किन पाँच विषयो में श्रद्धाकी वृद्धि, शीलकी वृद्धि, श्रुतकी वृद्धि, त्यागकी वृद्धि तथा प्रज्ञाकी वृद्धि। भिक्षुओ, जिस आर्य-श्रावककी इन पाच विषयो मे वृद्धि होती है, उसकी आर्य-वृद्धि होती है, वह शरीर (= धारण करने) का सार ग्रहण कर लेने वाला होता है, श्रेष्ठ-फल प्राप्त कर लेने वाला होता है।

सद्धाय सीलेन च योध वड्ढति,
पञ्ञाय चागेन सुतेन चूभयं,
सो तादिसो सप्पुरिसो विचक्खणो
आदीयती सारमिधेव अत्तनो ॥

[जो श्रद्धा, शील, प्रज्ञा, त्याग तथा श्रुतमे वृद्धि प्राप्त करता है, वह विलक्षण सत्पुरुष अपने (जीवन) का सार प्राप्त करता है।]

भिक्षुओ, जिस आर्य-श्राविका की इन पाच विषयो म वृद्धि होती है उसकी आर्य-वृद्धि होती है , वह शरीर (= धारण करने) का सार ग्रहण कर लेने वाली होती

है, श्रेष्ठ फल प्राप्त कर लेने वाली होती है। किन पाँच विषयो में? श्रद्धाकी वृद्धि, शीलकी वृद्धि, श्रुतकी वृद्धि, त्यागकी वृद्धि तथा प्रज्ञाकी वृद्धि। भिक्षुओ, जिस आर्य-श्राविकाकी इन पाँच विषयो में वृद्धि होती है, वह शरीर (=धारण करने) का सार ग्रहण कर लेने वाली होती है, श्रेष्ठ-फल प्राप्त कर लेने वाली होती है।

सद्धाय सीलेन च योध वड्ढती
पञ्ञाय चागेन सुतेन चूभय,
सा तादिसी सीलवती उपासिका
आदीयति सारमिधेव अत्तनो॥

[जो श्रद्धा, शील, प्रज्ञा, त्याग तथा श्रुतमें वृद्धि प्राप्त करती है, वह शीलवान् उपासिका अपने (जीवन) का सार प्राप्त करती है।]

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बाते हो, वह इस योग्य होता है कि उसके सब्रह्मचारी भिक्षु उससे धर्म-चर्चा कर सके। कौनसी पांच बातें? भिक्षुओ, भिक्षु स्वय शीलवान् होता है और शीलके प्रकरणमे उत्पन्न हुए प्रश्नका उत्तर दे सकता है, स्वय समाधि-युक्त होता है और समाधिके प्रकरणमे उत्पन्न हुए प्रश्नका उत्तर दे सकता है, स्वय प्रज्ञावान् होता है और प्रज्ञाके प्रकरणमें उत्पन्न हुए प्रश्नका उत्तर दे सकता है, स्वय विमुक्ति-युक्त होता है और विमुक्तिके प्रकरणमे आये प्रश्नका उत्तर दे सकता है, स्वय विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन युक्त होता है और विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनके प्रकरणमे आये प्रश्नका उत्तर दे सकता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाच बातें हो, वह इस योग्य होता है कि उसके सब्रह्मचारी भिक्षु उस भिक्षुसे धर्म-चर्चा कर सके।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हो, वह इस योग्य होता है कि दूसरे सब्रह्मचारी भिक्षुओके साथ रह सके। कौनसी पाच बाते? भिक्षुओ, भिक्षु स्वय शीलवान् होता है और शीलके प्रकरणमे उत्पन्न हुए प्रश्नका उत्तर दे सकता है, स्वय समाधि-युक्त होता है और समाधिके प्रकरणमे उत्पन्न हुए प्रश्नका उत्तर दे सकता है, स्वय प्रज्ञावान् होता है और प्रज्ञाके प्रकरणमें उत्पन्न हुए प्रश्नका उत्तर दे सकता है, स्वय विमुक्ति-युक्त होता है और विमुक्तिके प्रकरणमें आये प्रश्नका उत्तर दे सकता है, स्वय विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन युक्त होता है और विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनके प्रकरणमें आये प्रश्नका उत्तर दे सकता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाच बाते होती है, वह इस योग्य होता है कि दूसरे सब्रह्मचारी भिक्षुओके साथ रह सके।

भिक्षुओ, चाहे भिक्षु हो और चाहे भिक्षुणी हो, जो कोई भी इन पाच बातोका अभ्यास करेगा, अधिकाधिक अभ्यास करेगा, उसे इन दो फलोमेंसे एक फलकी आशा

करनी चाहिये—इसी जन्ममे अर्हत्व (= अञ्ञा) और यदि उपाधि शेष रह जाय तो अनागामी-भाव। कौनसी पाँच? भिक्षुओ, भिक्षु छन्द-समाधि-प्रधान-सस्कार युक्त ऋद्धिका अभ्यास करता है, वीर्य-समाधि चित्त-समाधि वीमसा-समाधि तथा उत्साह-समाधि-प्रधान-सस्कार युक्त ऋद्धिकी भावना करता है। भिक्षुओ, चाहे भिक्षु हो और चाहे भिक्षुणी हो, जो कोई भी इन पाच बातोका अभ्यास करेगा, अधिकाधिक अभ्यास करेगा, उसे इन दो फलोमें से एक फलकी आशा करनी चाहिये इसी जन्ममें अर्हत्व (= अञ्ञा) और, यदि उपाधि शेष रह जाय तो अनागामी-भाव।

भिक्षुओ, बोधि-लाभसे पूर्व, जब मुझे बुद्धत्व प्राप्त नही था, जब मै अभी बोधिसत्व ही था, तो मैंने पाँच बातोका अभ्यास किया, बहुत बहुत अभ्यास किया। कौनसी पाँच बातोका? छन्द-समाधि-प्रधान-सस्कार-युक्त ऋद्धिका अभ्यास किया, वीर्य-समाधि चित्त-समाधि वीमसा-समाधि तथा पाँचवी बात उत्साह-समाधि-प्रधान सस्कार युक्त ऋद्धिका। भिक्षुओ, इन उत्साह-पचम धर्मोका अभ्यास करनेसे, बहुत बहुत अभ्यास करनेसे, अभिज्ञा द्वारा साक्षात् किये जा सकने वाले जिस किसी धर्मको भी अभिज्ञा द्वारा साक्षात् करनेके लिये भी मैंने अपने चित्तको उधर झुकाया, तो उस उस विषयमे, उस उस आयतनमें ही मैंने सफलता प्राप्तकी। यदि मैंने अकाक्षाकी कि अनेक प्रकारकी ऋद्धियोका अनुभव करू .. ब्रह्मलोक तक भी अपने वशमे कर लूं तो उस उस विषयमे, उस उस आयतनमे ही मैंने सफलता प्राप्त की। यदि आकाक्षा की आस्रवोका क्षय कर साक्षात् कर, प्राप्तकर विहार करू तो उस उस विषयमे, उस उस आयतनेमे ही मैंने सफलता प्राप्त की।

भिक्षुओ, इन पाँच बातोका अभ्यास करनेसे, बहुत-बहुत अभ्यास करनेसे, सम्पूर्ण निर्वेद प्राप्त होता है, वैराग्य प्राप्त होता है, निरोध तथा उपशमन प्राप्त होता है, अभिज्ञा प्राप्त होती है, सम्बोधि प्राप्त होती है तथा निर्वाण प्राप्त होता है। कौनसी पाँच बातोका? भिक्षुओ, भिक्षु अशुभानुपश्यी हो विहार करता है, आहारके प्रति प्रति-कूल-सज्ञा लिये हुए, सभी लोकोके प्रति अनासक्ति-भाव युक्त, सभी सस्कारोको अनित्य समझते हुए तथा उसके मनमें मरण-सज्ञा अच्छी तरह सुप्रतिष्ठित होती है। भिक्षुओ, इन पाँच बातोका अभ्यास करनेसे, बहुत-बहुत अभ्यास करनेसे, सम्पूर्ण निर्वेद प्राप्त होता है, वैराग्य प्राप्त होता है, निरोध तथा उपशमन प्राप्त होता है, अभिज्ञा प्राप्त होती है, सम्बोधि प्राप्त होती है तथा निर्वाण प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, इन पाँच बातोका अभ्यास करनेवेसे, वहुत वहुत अभ्यास करनेसे, आस्रवोका क्षय प्राप्त होता है। कौनसी पाँच ? भिक्षुओ, भिक्षु कायके प्रति अशुभ-दर्शी हो विहार करता है, आहारके प्रति प्रतिकूल-सज्ञी, समस्त लोकके प्रति अनासक्ति-भाव युक्त, सभी सस्कारोको अनित्य मानता हुआ, उसके मनमें मरण-सज्ञा भली प्रकार सुप्रतिष्ठित होती है। भिक्षुओ इन पाँच बातोका अभ्यास करनेसे, वहुत वहुत अभ्यास करनेसे, आस्रवोका क्षय होता है।

भिक्षुओ, इन पाँच बातोका अभ्यास करनेसे, वहुत वहुत अभ्यास करनेसे, चित्त-विमुक्ति-फलकी प्राप्ति होती है, चित्त-विमुक्ति-परिणाम होता है, प्रज्ञा-विमुक्ति-फलकी प्राप्ति होती है, प्रज्ञा-विमुक्ति परिणाम होता है। कौनसी पाँच ? भिक्षुओ, भिक्षु कायके प्रति अशुभ-दर्शी हो विहार करता है, आहारके प्रति प्रतिकूल-सज्ञी, समस्त लोकके प्रति अनासक्ति-भाव युक्त, सभी सस्कारोको अनित्य मानता हुआ। उसके मनमे मरण सज्ञा भली प्रकार सुप्रतिष्ठित होती है। भिक्षुओ, इन पाँच बातोका, अभ्यास करनेसे, वहुत वहुत अभ्यास करनेसे, चित्त-विमुक्ति-फलकी प्राप्ति होती है, चित्त-विमुक्ति परिणाम होता है, प्रज्ञा विमुक्ति-फलकी प्राप्ति होती है, प्रज्ञा-विमुक्ति परिणाम होता है।

भिक्षुओ, जब भिक्षु चित्त विमुक्ति-फल तथा प्रज्ञा-विमुक्ति-फलको प्राप्त होता है तब वह कहलाता है, उत्क्षिप्त-परिघ, सकीर्ण-परिख, अब्बूळ्हेसिक, निरर्गल तथा आर्य पतित-ध्वज पतित-भार विसयुक्त।

भिक्षुओ, भिक्षु उत्क्षिप्त-परिघ कैसे होता है ? भिक्षुओ, एक भिक्षुकी अविद्या प्रहीण होती है, जडसे उखड गई होती है, कटे ताड-वृक्षके समान हो गई होती है, अभाव-प्राप्त, फिर उत्पन्न न हो सकने वाली। भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु उत्क्षिप्त-परिघ कहलाता है।

भिक्षुओ, भिक्षु सकीर्ण-परिख कैसे होता है ? भिक्षुओ, एक भिक्षुका पुनरुत्पत्ति वाला जन्म-हेतु सस्कार प्रहीण होता है भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु सकीर्ण-परिख कहलाता है।

भिक्षुओ, भिक्षु अब्बूळ्हेसिक कैसे होता है ? भिक्षुओ, एक भिक्षुकी तृष्णा प्रहीण होती है, जडसे उखड गई होती है, कटे ताड वृक्षके समान हो गई होती है, अभाव-प्राप्त, फिर उत्पन्न न हो सकने वाली। भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु अब्बूळ्हेसिक कहलाता है।

भिक्षुओ, भिक्षु, निरर्गल कैसे होता है ? भिक्षुओ, एक भिक्षुको पतनकी ओर अग्रसर करने वाले पाँच सयोजन प्रहीण होते है, जड़से उखड गये होते है, कटे ताड

वृक्षके समान हो गये होते है, अभाव-प्राप्त, फिर उत्पन्न न हो सकने वाले। भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु निरर्गल कहलाता है।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे आर्य पतित-ध्वज पतित-भार विसयुक्त होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षुका अहकार प्रहीण होता है, जडसे उखड़ गया होता है, कटे ताड वृक्ष के समान हो गया होता है, अभाव-प्राप्त, फिर उत्पन्न न हो सकने वाला। भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु आर्य पतित-ध्वज पतित-भार विसयुक्त कहलाता है।

भिक्षुओ, इन पाँच बातोका अभ्यास करनेसे, बहुत-बहुत अभ्यास करनेसे, चित्त-विमुक्ति-फलकी प्राप्ति होती है, चित्त-विमुक्ति परिणाम होता है, प्रज्ञा-विमुक्ति फलकी प्राप्ति होती है, प्रज्ञा-विमुक्ति परिणाम होता है। कौनसी पाँच? अनित्य सज्ञा, जो अनित्य है उसके प्रति दुखसज्ञा, जो दुख है उसके प्रति अनात्म-सज्ञा, प्रहाण-सज्ञा, वैराग्य-सज्ञा (= निरोध सज्ञा)। भिक्षुओ, इन पाँच बातोका अभ्यास करनेसे, बहुत बहुत अभ्यास करनेसे, चित्त-विमुक्ति-फलकी प्राप्ति होती है, चित्त-विमुक्ति-परिणाम होता है, प्रज्ञा-विमुक्ति-फलकी प्राप्ति होती है, प्रज्ञा-विमुक्ति-परिणाम होता है।

भिक्षुओ, जब भिक्षु चित्त-विमुक्ति-फल तथा प्रज्ञा-विमुक्ति-फलको प्राप्त होता है, तब वह कहलाता है उत्क्षिप्त-परिघ, सकीर्ण-परिख, अब्बुळहेसिक, निरर्गल तथा आर्य पतित-ध्वज पतित-भार-सयुक्त।

भिक्षुओ, भिक्षु उत्क्षिप्र-परिघ कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षुकी अविद्या प्रहीण होती है, जडसे उखड गई होती है, कटे ताड वृक्षके समान होती है, अभाव प्राप्त, फिर उत्पन्न न हो सकने वाली। भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु उत्क्षिप्त-परिघ कहलाता है। भिक्षुओ, भिक्षु सकीर्ण-परिख कैसे होता है? भिक्षुओ, एकभिक्षुका पुनरुत्पत्ति वाला जन्म-सस्कार प्रहीण होता है भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु सकीर्ण-परिख कहलाता है।

भिक्षुओ, भिक्षु अब्बुळहेसिक कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षुकी तृष्णा प्रहीण होती है, जडसे उखड गई होती है, कटे ताड वृक्षके समान हो गई होती है, अभाव-प्राप्त, फिर उत्पन्न न हो सकने वाली। भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु अब्बुळहेसिक कहलाता है।

भिक्षुओ, भिक्षु निरर्गल कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षुको पतनकी ओर अग्रसर करने वाले पाँच सयोजन प्रहीण होते है, जडसे उखड गये होते है, ताड़ वृक्षके समान हो गये होते है, कटे ताड वृक्षके ममान हो गये होते है, अभाव-प्राप्त, फिर उत्पन्न न हो सकने वाले। भिक्षुओ, ऐमा भिक्षु निरर्गल कहलाता है।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे आर्य पतित-ध्वज पतित-भार विसयुक्त होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षुका अहकार प्रहीण होता है, जडसे उखड गया होता है, कटे ताड वृक्षके समान हो गया होता है, अभाव-प्राप्त, फिर उत्पन्न न हो सकने वाला। भिक्षुओ ऐसा भिक्षु आर्य पतित-ध्वज पतित-भार-विसयुक्त कहलाता है।

तव एक भिक्षु जहाँ भगवान् थे वहाँ पहुँचा। पास जाकर भगवान्को अभिवादनकर एक ओर वैठा। एक ओर वैठे हुए उस भिक्षुने भगवान्से यह कहा—"भन्ते! 'धर्म-विहारी', 'धर्म-विहारी' कहा जाता है। क्या होनेसे भिक्षु 'धर्म-विहारी' होता है?"

"हे भिक्षु! एक भिक्ष धर्मको कण्ठस्थ रखनेके लिये उसका पाठ करता है—सुत्तका, गेय्यका, वेय्याकरण, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तका, जातकका, अद्भुत-धर्मका तथा वेदल्लका। वह धर्म-पाठ करते रहकर ही दिन विता देता है, एकान्तकी उपेक्षा करता है, अपने चित्तको शान्त करने के अभ्यासमे नियुक्त नही होता है। भिक्षु! ऐसा भिक्षु 'पाठ-वहुल' भिक्षु कहलाता है, 'धर्म-विहारी' नही कहलाता।

फिर हे भिक्षु, एक भिक्षु यथा-श्रुत, यथा-कण्ठस्थ धर्मका विस्तार पूर्वक दूसरोको उपदेश देता है, वह वैसे धर्म-ज्ञापनमें ही दिन विता देता है, एकान्तकी उपेक्षा करता है, अपने चित्तको शान्त करनेके अभ्यासमें नियुक्त नही होता है। भिक्षु ऐसा भिक्षु 'ज्ञापन-वहुल' भिक्षु कहलाता है, 'धर्म-विहारी' नही कहलाता

फिर हे भिक्षु, एक भिक्षु यथा-श्रुत, यथा-कण्ठस्थ धर्मको विस्तारपूर्वक दुहराता रहता है। वह उस प्रकार धर्मको दुहराते रहकर ही दिन विता देता है, एकान्तकी उपेक्षा करता है, अपने चित्तको शान्त करनेके अभ्यासमें नियुक्त नहीं होता है। भिक्षु! ऐसा भिक्षु 'सज्झाय-वहुल' भिक्षु कहलाता है, 'धर्म-विहारी' नही कहलाता।

फिर हे भिक्षु! एक भिक्षु यथा-श्रुत, यथा-कण्ठस्थ धर्मपर चित्तसे तर्क-वितर्क करता है, विचार करता है, मनसे मनन करता है, वह उन धर्म-वितर्कोंमें ही दिन विता देता है, एकान्तकी उपेक्षा करता है, अपने चित्तको शान्त करनेके अभ्यासमें नियुक्त नही होता है। भिक्षु! ऐसा भिक्षु 'वितर्क-वहुल' भिक्षु कहलाता है, 'धर्म-विहारी' नही कहलाता।

हे भिक्षु! एक भिक्षुधर्मको कण्ठस्थ रखनेके लिये उसका पाठ करता है, सुत्तका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्भुत-धर्मका तथा वेदल्लका। वह उस धर्म-पाठमें ही दिन नही विता देता है, वह एकान्त

की उपेक्षा नही करता है, वह अपने चित्तको शान्त करनेके अभ्यासमे नियुक्त होता है। भिक्षु ! ऐसा भिक्षु ही 'धर्म-विहारी कहलाता है।

हे भिक्षु मैंने 'पाठ-बहुल' भिक्षु बता दिया, मैंने 'ज्ञापन-बहुल' भिक्षु बता दिया, मैंने 'सज्झाय-बहुल' भिक्षु बता दिया, मैंने 'वितर्क-बहुल' भिक्षु बता दिया तथा 'धर्म-विहारी' भिक्षु भी बता दिया। श्रावकोके हितैषी, अनुकम्पक शास्ता द्वारा अनुकम्पा पूर्वक जो कुछ करनेका था, वह मैंने कर दिया। भिक्षु ! ये वृक्षोकी छाया है, ये शून्य-स्थल है ! भिक्षु ! ध्यान लगा। प्रमाद मत कर। बादमे पश्चाताप न करना। यही हमारा अनुशासन है।

तब एक भिक्षु जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचा। पास जाकर भगवान्को अभिवादन कर एक ओर बैठा। एक ओर बैठे हुए उस भिक्षुने भगवान्से यह कहा —"भन्ते ! 'धर्म-विहारी', 'धर्म-विहारी' कहा जाता है। क्या होनेसे भिक्षु 'धर्म-विहारी' होता है ?"

"हे भिक्षु ! एक भिक्षु धर्मको कण्ठस्थ रखनेके लिये उसका पाठ करता है—सुत्तका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तका, जातकका, अद्भुत धर्मका तथा वेदल्लका। किन्तु वह इससे आगे प्रज्ञासे, इसका अर्थ नही जानता। भिक्षु ! ऐसा भिक्षु 'पाठ-बहुल' भिक्षु कहलाता है, 'धर्म-विहारी' नही कहलाता।

फिर हे भिक्षु ! एक भिक्षु यथा-श्रुत यथा-कण्ठस्थ धर्मका दूसरोको विस्तार पूर्वक उपदेश देता है। किन्तु वह इससे आगे प्रज्ञासे इसका अर्थ नही जानता। भिक्षु, ऐसा भिक्षु 'ज्ञापन-बहुल' भिक्षु कहलाता है, 'धर्म-विहारी' नही कहलाता। फिर हे भिक्षु ! एक भिक्षु यथा-श्रुत यथा-कण्ठस्थ धर्मको विस्तारपूर्वक दुहराता रहता है, किन्तु वह इससे आगे प्रज्ञासे इसका अर्थ नही जानता। भिक्षु ! ऐमा भिक्षु 'सज्झाय-बहुल' भिक्षु कहलाता है, 'धर्म-विहारी' नही कहलाता।

फिर हे भिक्षु ! एक भिक्षु यथा-श्रुत यथा-कण्ठस्थ धर्मपर चित्तसे तर्क-वितर्क करता है, विचार करता है, मनसे मनन करता है। किन्तु वह इससे आगे प्रज्ञासे इसका अर्थ नही जानता। भिक्षु ! ऐसा भिक्षु 'वितर्क-बहुल' भिक्षु कहलाता है, 'धर्म-विहारी' नही कहलाता।

हे भिक्षु ! एक भिक्षु धर्मको कण्ठस्थ रखनेके लिये उसका पाठ करता है— सुत्तका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तका, जातकका, अद्भुत-धर्मका तथा वेदल्लका। किन्तु वह इससे आगे प्रज्ञासे इमका अर्थ भी जानता है। भिक्षु ! ऐमा भिक्षु ही 'धर्म-विहारी' कहलाता है।

हे भिक्षु मैंने 'पाठ-बहुल' भिक्षु बता दिया, मैं ने 'ज्ञापन-बहुल' भिक्षु बता दिया, मैंने 'सज्झाय-बहुल' भिक्षु बता दिया, मैंने 'वितर्क-बहुल' भिक्षु बता दिया तथा 'धर्म-विहारी' भिक्षु भी बता दिया। श्रावकोके हितैषी अनुकम्पक शास्ता द्वारा अनुकम्पा पूर्वक जो कुछ करनेका था, वह मैंने कर दिया। भिक्षु! ये वृक्षो की छाया है, ये शून्य-स्थल है। भिक्षु! ध्यान लगा। प्रमाद मत कर।बाद मे पश्चाताप न करना। यही हमारा अनुशासन है।

भिक्षुओ, ससार मे पाँच तरहके योधा है। कौनसे पाँच तरहके? भिक्षुओ, एक योधा तो ऐसा होता है, जो धूली देखकर ही हिम्मत हार देता है,पीछे हट जाता है, खडा नही रह सकता, सग्राम में नही उतर सकता। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी कोई कोई योधा होता है। भिक्षुओ, ससारमें यह पहली तरहका योधा होता है।

फिर भिक्षुओ, एक योधा धूलीसे तो नही घबराता किन्तु (रथों पर लगी) पताकायें देखकर हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, खडा नही रह सकता,सग्राममें नही उतर सकता। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी कोई कोई योधा होता है। भिक्षुओ, ससारमें यह दूसरी तरहका योधा होता है।

फिर भिक्षुओ, एक योधा धूलीसे तो नही घबराता, पताकाओंसे भी नही घबराता, किन्तु (घोडो, रथोआदिकी) ध्वनि सुनकर हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, खडा नही रह सकता, सग्राममें नही उतर सकता। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी कोई कोई योधा होता है। भिक्षुओ, ससारमें यह तीसरी तरहका योधा होता है।

फिर भिक्षुओ, एक योधा धूलीसे नही घबराता,पताकाओंसे भी नही घबराता, ध्वनि सुनकर भी नही घबराता, किन्तु प्रहार मिलने पर हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, खडा नही रह सकता, सग्राममें नही उतर सकता। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी कोई योधा होता है। भिक्षुओ, ससारमें यह चौथी तरहका योधा होता है।

फिर भिक्षुओ, एक न धूलीसे घबराता है,न पताकाओंसे घबराता है,न ध्वनि सुनकर घबराता है, न प्रहार मिलने पर घबराता है, वह उस सग्राममें उतर कर सग्राम-विजयी हो, उसी सग्राम-भूमिके शिखर-स्थान पर रहता है। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी कोई कोई योधा होता है। भिक्षुओ, ससारमें यह पाँचवी तरहका योधा होता है। भिक्षुओ, ससारमें पाँच तरहकाके योधा होते है।

इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षुओमें भी पाँच तरहके लोग होते है, जिनकी उपमा पाँच तरहके योधाओसे दी जा सकती है। कौनसे पाँच तरहके? भिक्षुओ, कोई कोई

भिक्षु धूली देखकर ही हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, रुकता नही है, ब्रह्मचर्य धारण किये नही रह सकता, वह अपनी शिक्षा सम्बन्धी दुर्वलताको प्रकटकर, शिक्षाका त्यागकर पतित हो जाता है। यहाँ धूलीका क्या अर्थ है? भिक्षुओ, एक भिक्षु सुनता है कि अमुक गाँव या निगममे कोई स्त्री है या कुमारी है, जो सुन्दर है,दर्शनीय है, प्रासादिक है, वर्ण और शारीरिक गठनकी दृष्टिसे श्रेष्ठतर है। यह सुनकर वह हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, रुकता नही, ब्रह्मचर्य धारण किये नही रह सकता। वह अपनी शिक्षा सम्वन्धी दुर्वलताको प्रकटकर,शिक्षाका त्यागकर,पतित हो जाता है। यह यहाँ धूलिका अर्थ है। भिक्षुओ, जैसे वह योधा धूली देखकर ही हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, खडा नही रह सकता, सग्राममे नही उतर सकता, वैसा ही भिक्षुओ मैं इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, ऐसा भी कोई कोई आदमी होता है। भिक्षुओ, भिक्षुओमें यह पहली तरहका आदमी होता है, जिसकी उपमा किसी योधासे दी जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, कोई कोई भिक्षु धूली देखकर नही घवराता है, किन्तु ध्वजा, देखकर ही हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, रुकता नही है, ब्रह्मचर्य धारण किये नही रह सकता, वह अपनी शिक्षा सम्वन्धी दुर्वलताको प्रकट कर,शिक्षाका त्यागकर, पतित हो जाता है। यहाँ 'ध्वजा' का क्या अर्थ है? भिक्षुओ, एक भिक्षु यह सुनता ही नही है कि अमुक गाँव या निगममें कोई स्त्री है या कुमारी है, जो सुन्दर है, दर्शनीय है, प्रासादिक है, वर्ण और शरीरकी गठनकी दृष्टिसे श्रेष्ठतर है, वल्कि वह यह स्वय देखता भी है कि अमुक गाँव या निगममे कोई स्त्री है, या कुमारी है,जो सुन्दर है, दर्शनीय है, प्रासादिक है, वर्ण और शरीरकी गठनकी दृष्टिसे श्रेष्ठतर है। वह उसे देखकर हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, रुकता नही, ब्रह्मचर्य धारण किये नही रह सकता। वह अपनी शिक्षा सम्वन्धी दुर्वलताको प्रकटकर, शिक्षाका त्यागकर, पतित हो जाता है। यह यहाँ ध्वजाका अर्थ है। भिक्षुओ, जैसे वह योधा धूली देखकर तो नही घवराता, किन्तु ध्वजा देखकर हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, खडा नही रह सकता, सग्राममें नही उतर सकता, वैसा ही भिक्षुओ! मैं इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, ऐसा भी कोई कोई आदमी होता है। भिक्षुओ, भिक्षुओमे यह दूसरी तरहका आदमी होता है, जिसकी उपमा किसी योधासे दी जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, कोई कोई भिक्षु न धूलि के कार घवराता है, न ध्वजा देखकर घवराता है, किन्तु ध्वनि सुनकर हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, रुकता नही है, ब्रह्मचर्य धारण किये नही रह सकता, वह अपनी शिक्षा सम्वन्धी दुर्वलताको प्रकट कर,

शिक्षाका त्याग कर, पतित हो जाता है। यहाँ 'ध्वनि' का क्या अर्थ है? भिक्षुओ एक भिक्षु आरण्य-वासी होता है,वृक्षकी छायाके नीचे रहने वाला होता है, शून्य-स्थानमें रहने वाला होता है, वहाँ उसके पास कोई स्त्री पहुँचती है,वह उसके साथ हँसी करती है, वातचीत करती है, छेडती है, नपुंसक कहकर चिढाती है। वह स्त्रीके साथ हँसी करता हुआ, वातचीत करता हुआ, छेडखानी करता हुआ, नपुंसक कहकर चिढाया जाता हुआ, हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, रुकता नही, ब्रह्मचर्य धारण किये नही रह सकता। वह अपनी शिक्षा सम्बन्धी दुर्वलताको प्रकट कर, शिक्षाका त्यागकर, पतित हो जाता है। यह यहाँ 'ध्वनि' का अर्थ है। भिक्षुओ, जैसे वह योधा न धूलि देखकर घवराता है,न ध्वजा देखकर घवराता है, किन्तु ध्वनि सुनकर हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, खडा नही रह सकता, सग्राम मे नही उतर सकता , वैसा ही भिक्षुओ, मै इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, ऐसा भी कोई कोई आदमी होता है। भिक्षुओ, भिक्षुओमे यह तीसरी तरहका आदमी होता है, जिसकी उपमा किसी योधासे दी जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, कोई कोई भिक्षु न धूलि देखकर घवराता है, न ध्वजा देखकर घवराता है, न ध्वनि सुनकर घवराता है, किन्तु प्रहार मिलने पर हिम्मत हार देता है। यहाँ 'प्रहार' का क्या अर्थ है? भिक्षुओ, एक भिक्षु आरण्यवासी होता है, वृक्षकी छायाके नीचे रहने वाला होता है, शून्य स्थानमे रहने वाला होता है, वहाँ उसके पास कोई स्त्री पहुँचती है, जो साथ वैठती है, साथ लेटती है, ऊपर लेट जाती है। वह स्त्रीके साथ वैठा हुआ, साथ लेटा हुआ, नीचे लेटा हुआ, विना शिक्षाका त्याग किये, विना अपनी दुर्वलताको प्रकट किये, मैथुन-धर्मका सेवन करता है। यह यहाँ 'प्रहार' का अर्थ है। भिक्षुओ, जैसे वह योधा न धूलि देखकर घवराता है, न ध्वजा देखकर घवराता है,न ध्वनि सुनकर घवराता है, किन्तु प्रहार मिलने पर हिम्मत हार देता है। वैसा ही भिक्षुओ, मै इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, ऐसा भी कोई कोई आदमी होता है। भिक्षुओ, भिक्षुओमें यह चौथी तरहका आदमी होता है, जिसकी उपमा किसी योधासे दी जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, कोई कोई भिक्षु न धूलि देखकर घवराता है, न ध्वजा देखकर घवराता है, न ध्वनि सुनकर घवराता है, न प्रहार मिलने पर घवराता है, वह उस सग्राममें उतरकर सग्राम-विजयीहोके, उसी सग्राम-भूमिके शिखर-स्थान पर रहता है। यहाँ सग्राम-विजयका क्या अर्थ, ? भिक्षुओ, एक भिक्षु आरण्यवासी होता है, वृक्षकी छायाके नीचे रहने वाला होता है, शून्य स्थानमे रहने वाला होता है , वहाँ उसके पास

कोई स्त्री पहुँचती है, जो साथ बैठती है, साथ लेटती है, ऊपर लेट जाती है। वह स्त्रीके साथ बैठा हुआ, साथ लेटा हुआ, नीचे लेटा हुआ अपने आपको उससे छुडा, अपने आपको उससे मुक्त कर जहाँ इच्छा होती है, उधर चल देता है।

वह एकान्त-स्थानमे जाकर रहता है—आरण्यमे, वृक्षकी छाया-तले, पर्वतपर, कदरामें, गुफामे, श्मशानमे, जगलमें, खुले आकाशके नीचे तथा प्रवालके ढेरपर। वह आरण्यमे, वृक्षकी छाया तले एकान्त-स्थानमे, पालथीमार, शरीरको सीधा रख, स्मृतिको सामने कर बैठता है।

वह सासारिक लोभोको छोड लोभ-रहित चित्तवाला हो विचरता है। चित्तसे लोभको दूर करता है। वह क्रोधको छोड क्रोध-रहित चित्तवाला हो, सभी प्राणियोपर दया करता हुआ विचरता है। चित्तसे क्रोधको दूर करता है। वह आलस्यको छोड आलस्य-रहित हो, आलोक-सज्ञी, स्मृति तथा ज्ञानसे युक्त हो विचरता है। वह चित्तसे आलस्यको दूर करता है। वह उद्धतपने तथा पछतावेको छोड उद्धतपन-रहित शान्त-चित्त हो विचरता है। चित्तसे उद्धतपनको दूर करता है। वह सशयको छोड सशय-रहित हो विचरता है। वह कुशल-धर्मोंके विषयमे सदेह-रहित होता है। चित्तसे सन्देह दूर करता है।

वह चित्तके उपक्लेश, प्रज्ञाको दुर्बल करने वाले पाँच बधनो (नीवरणो) को छोड, काम-वितर्कसे रहित चतुर्थ-ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है। जब उसका चित्त इस प्रकार एकाग्र हो जाता है, परिशुद्ध हो जाता है, स्वच्छ हो जाता है, अगण (= मैल) रहित हो जाता है, क्लेश-रहित हो जाता है, मृदु हो जाता है, कमनीय हो जाता है, स्थिर हो जाता है तब वह उस चित्तको आस्रव-क्षय-ज्ञानकी ओर झुका देता है।

वह 'यह दु ख है' इसे यथार्थ रूपसे जानता है, 'यह दु ख-समुदय है' इसे यथार्थ रूपसे जानता है, 'यह दु ख-निरोध है', इसे यथार्थ-रूपमे जानता है, 'यह दु ख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है', इसे यथार्थ-रूप से जानता है।

वह 'ये आस्रव है,' इसे यथार्थ-रूपसे जानता है, यह 'आस्रवो' का समुदय है, इसे यथार्थ-रूपसे जानता है, यह 'आस्रवो' का निरोध है, इसे यथार्थ रूपसे जानता है, यह 'आस्रव-निरोध'की ओर ले जाने वाला मार्ग है, इसे यथार्थ रूपसे जानता है। उसके इस प्रकार जानने, इस प्रकार देखनेके कारण कामास्रव भी चित्तसे दूर हो जाते है, भवास्रव भी चित्तसे दूर हो जाते है, अविद्यास्रव भी चित्तसे दूर हो जाते है। आस्रवोंसे विमुक्त होनेपर विमुक्त होनेका ज्ञान होता है। वह जान लेना है कि जन्म

(= मरण) का बंधन कट गया, ब्रह्मचर्य-वास (का उद्देश्य) पूरा हो गया, जो करना था कर लिया, अब शेष कुछ करणीय नही रहा। यह यहाँ 'संग्राम-विजयी' का अर्थ है।

भिक्षुओ, जैसे वह योधा न धूलीसे घबराता है, न पताकाओंसे घबराता है, न ध्वनि सुनकर घबराता है, न प्रहार मिलनेपर घबराता है, वह उस संग्राममे उतरकर संग्राम-विजयी हो, उसी संग्राम-भूमिके शिखर-स्थानपर पर रहता है। वैसा ही भिक्षुओ मैं इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, ऐसा भी कोई कोई आदमी होता है, जिसकी उपमा किसी योधासे दी जा सकती है। भिक्षुओ, भिक्षुओंमें ये योधाओ के समान पाँच तरहके आदमी विद्यमान है।

भिक्षुओ, संसारमें पाँच प्रकारके योधा विद्यमान है। कौनसे पाँच प्रकारके ? भिक्षुओ, एक आदमी ढाल-तलवार ले, तरकश बाध, घोर संग्राममें उतरता है। वह उस संग्राममें उत्साहसे हिस्सा लेता है, परिश्रम करता है। इस प्रकार उत्साहसे संग्राममे हिस्सा लेने, परिश्रम करने वाले उस आदमीको दूसरे लोग मार डालते है, नष्ट कर डालते है। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी एक योधा होता है। भिक्षुओ, संसारमें यह पहली प्रकारका योधा होता है।

फिर भिक्षुओ, एक आदमी ढाल-तलवार ले, तरकश बाध, घोर-संग्राममें उतरता है। वह उस संग्राममें उत्साहसे हिस्सा लेता है, परिश्रम करता है। इस प्रकार उत्साहसे हिस्सा लेने, परिश्रम करने वाले उस आदमीको दूसरे लोग जख्मी कर डालते है। तब लोग ले जाते है। ले जाते हुए सगे-सम्बन्धियोंके पास ले जाते है। वह सगे-सम्बन्धियोंके पास ले जाये जाते समय, सगे-सम्बन्धियो तक पहुचनेसे पहले ही मर जाता है। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी एक योधा होता है।

फिर भिक्षुओ, एक आदमी ढाल तलवार ले, तरकश बाध, घोर संग्राममे उतरता है। वह उस संग्राममे उत्साहसे हिस्सा लेता है, परिश्रम करता है। इस प्रकार उत्साहसे संग्राममें हिस्सा लेने, परिश्रम करने वाले, उस आदमीको दूसरे लोग जख्मी कर देते है। तब लोग उसे ले जाते है, ले जाते हुए सगे-सम्बन्धियोंके पास ले जाते है। सगे-सम्बन्धी उसकी सेवामे रहते है। उसकी परिचर्या करते है। वह सगे सम्बन्धियो द्वारा सेवा किये जाते समय, परिचर्या किये जाते समय, उसी जख्मके कारण मर जाता है। भिक्षुओ, इस प्रकार का भी एक योधा होता है। भिक्षुओ, संसारमें यह तीसरी प्रकारका योधा होता है।

फिर भिक्षुओ, एक आदमी ढाल-तलवार ले, तरकश बाँध, घोर संग्राममें उतरता है। वह उस संग्राममें उत्साहसे हिस्सा लेता है, परिश्रम करता है। इस

प्रकार उत्साहसे सग्राममे हिस्सा लेने, परिश्रम करने वाले उस आदमीको दूसरे लोग जख्मी कर देते है। तब लोग उसे ले जाते है, ले जाते हुए सगे-सम्बन्धियोके पास ले जाते है। सगे-सम्बन्धी उसकी सेवामें रहते है, उसकी परिचर्या करते है। वह सगे-सम्बन्धियोकी सेवा पाकर, परिचर्या लाभकर, उस कष्टसे मुक्त हो जाता है। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी एक योधा होता है। भिक्षुओ ससारमे यह चौथी प्रकारका योधा होता है।

फिर भिक्षुओ, एक आदमी ढाल-तलवार ले, तरकश बाँध, घोर सग्राममे उतरता है। वह उस सग्रामको जीतकर सग्राम-विजयी हो, सग्राम-भूमिके शिखर-स्थान पर ही रहता है। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी एक योधा होता है। भिक्षुओ, ससारमें यह पाचवी प्रकारका योधा होता है। भिक्षुओ, इस ससारमे ये पाँच प्रकारके योधा होते है।

इसी प्रकार भिक्षुओमे भी ऐसे आदमी होते है जिनकी उपमा पाँच प्रकारके योधाओसे दी जा सकती है। कौनसे पांच प्रकारके ? भिक्षुओ, एक भिक्ष किसी गाँव या निगमके आश्रयसे विहार करता है। वह पूर्वाह्ण समय (पहनकर) पात्र चीवर लेकर उसी गांव या निगममें भिक्षाटनके लिये प्रवेश करता है—उसका शरीर अरक्षित (असयत)होता है, वाणी अरक्षित होती है तथा मन अरक्षित होता है, स्मृति अनुपस्थित होती है, इन्द्रियोपर अधिकार नही होता है। वह वहाँ किसी स्त्रीको देखता है जिसने ढगसे कपडा नही पहना होता या जो अच्छी तरह ढकी नही होती। जिसने ढगसे कपडा नही पहना होता या जो अच्छी तरह ढकी नही होती, उस स्त्रीको देखकर उस भिक्षुके चित्तमे राग प्रविष्ट हो जाता है। चित्त रागके वशीभूत हो जानेके कारण वह विना शिक्षा (= भिक्षु-नियमो) का त्याग किये, विना दौर्बल्य प्रकट किये, मैथुन-धर्मका सेवन करता है। ठीक वैसे ही जैसे भिक्षुओ, एक आदमी ढाल-तलवार ले, तरकश बाध, घोर सग्राममे उतरता है। वह उस सग्राममें उत्साहसे हिस्सा लेता है, परिश्रम करता है। इस प्रकार उत्साहसे सग्राममें हिस्सा लेने वाले, परिश्रम करने वाले उस आदमीको दूसरे लोग मार डालते है, नष्ट कर डालते है। भिक्षुओ, मै ऐसा ही इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, इस तरहका भी कोई कोई आदमी होता है। भिक्षूओ, भिक्षुओमे यह पहला आदमी होता है, जिसकी उपमा योधासे दी जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु किसी गांव या निगमके आश्रयसे विहार करता है। वह पूर्वाह्ण समय (पहनकर) पात्र चीवर लेकर उसी गांव या निगममें भिक्षाटनके

लिये प्रवेश करता है—उसका शरीर अरक्षित (= असयत) होता है, वाणी अरक्षित होती है तथा मन अरक्षित होता है, स्मृति अनुपस्थित होती है, इन्द्रियोपर अधिकार नही होता है। वह वहाँ किसी स्त्रीको देखता है, जिसने ढगसे कपडा नही पहना होता, या जो अच्छी तरह ढकी नही होती। जिसने ढगसे कपडा नही पहना होता या जो अच्छी तरह ढकी नही होती, उस स्त्रीको देखकर उस भिक्षूके चित्तमे राग प्रविष्ट हो जाता है। रागके वशीभूत होनेके कारण उसका शरीर भी जलता है, उसका चित्त भी जलता है। उसके मनमे होता है कि मै विहार जाकर भिक्षुओसे कह दूं कि आयुष्मानो! मै रागके आधीन हू, मै रागके वशीभूत हू, मै ब्रह्मचर्यको धारण किये नही रह सकता। मै शिक्षाका त्यागकर, अपने दौर्वल्यको प्रकट कर, हीन-मार्गपर चलूंगा। वह विहारको जाते समय, विना विहार पहुँचे ही, रास्तेमें ही, शिक्षा-सम्बन्धी अपनी दुर्बलताओको प्रकट कर, शिक्षा (= भिक्षु-नियमो) का त्यागकर, हीन-मार्गी हो जाता है। ठीक वैसे ही जैसे भिक्षुओ, एक आदमी ढाल-तरलवार ले, तरकश बाध, घोर सग्राममें उतरता है। वह उस सग्राममें उत्साहसे हिस्सा लेता है, परिश्रम करता है। इस प्रकार उत्साहसे सग्राममें हिस्सा लेने, परिश्रम करने वाले उस आदमीको दूसरे लोग जखमी कर डालते है। तव लोग उसे ले जाते है। ले जाते हुए सगे-सम्वन्धियो के पास ले जाते हैं। वह सगे-सम्वन्धियोके पास ले जाये जाते समय,सगे-सम्वन्धियोतक पहुचनेसे पहले ही मर-जाता है। भिक्षुओ, मै ऐसा ही उस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, इस तरहका भी कोई कोई आदमी होता है। भिक्षुओ, भिक्षुओमें यह दूसरा आदमी होता है, जिसकी उपमा योधासे दी जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु किसी गाँव या निगमके आश्रयसे विहार करता है। वह पूर्वाह्न समय (पहनकर) पात्र-चीवर लेकर, उसी गाँव या निगममे भिक्षाटनके लिये प्रवेश करता है—उसका शरीर अरक्षित (= असयत) होता है, वाणी अरक्षित होती है तथा मन अरक्षित होता है, स्मृति अनुपस्थित होती है, इन्द्रियोपर अधिकार नही होता है। वह वहाँ किसी स्त्रीको देखता है, जिसने ढगसे कपडा पहना नही होता, या जो अच्छी तरह ढकी नही होती, जिसने ढगसे कपडा नही पहना होता या जो अच्छी तरह ढकी नही होती, उस स्त्रीको देखकर उस भिक्षुके चित्तमे राग प्रविष्ट हो जाता है। रागके वशीभूत होनेके कारण, उसका शरीर भी जलता है, उसका चित्त भी जलता है। उसके मनमें होता है कि मै विहार जाकर भिक्षुओसे कह दूं कि आयुष्मानो, मै रागके आधीन हूँ, मैं रागके वशीभूत हूँ, मै ब्रह्मचर्यको धारण किये नही रह सकता। मै शिक्षाका त्यागकर, अपने दौर्वल्यको प्रकट कर, हीन-मार्गपर चलूंगा। वह विहार

पहुचकर भिक्षुओसे कहता है—आयुष्मानो ! मैं रागके आधीन हूँ, मै रागके वशीभूत हूँ, मै ब्रह्मचर्यको धारण किये नही रह सकता। मै शिक्षाका त्याग कर, अपने दौर्वल्यको प्रकट कर, हीन-मार्गपर चलूंगा। उसे ब्रह्मचारी उपदेश देते है, उसका अनुशासन करते है—'आयुष्मान् ! भगवान्ने काम-भोगोको अल्प-स्वाद वाले कहा है, वहुत दु ख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम वहुत अधिक है, आयुष्मान् भगवान्ने काम-भोगोको अस्थि-ककालके सदृश कहा है, वहुत दु ख देने वाले, वहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक है, आयुष्मान् ! भगवान्ने काम-भोगोको मास-पेशियोके समान कहा है, वहुत दु ख देने वाले, वहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक है, आयुष्मान् ! भगवानने काम-भोगोको तिनकोकी मशालके समान कहा है, वहुत दु ख देने वाले, वहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम वहुत अधिक है, आयुष्मान् ! भगवान्ने काम-भोगोको अँगारोके गढेके समान कहा है, बहुत दु ख देने वाले, वहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम वहुत अधिक है, आयुष्मान् ! भगवान्ने काम-भोगोको स्वप्नके समान कहा है, वहुत दु ख देने वाले, वहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम वहुत अधिक है, आयुष्मान् भगवान्ने काम-भोगोको मागी हुई भीखके समान कहा है, वहुत दु ख देने वाले, वहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम वहुत अधिक है, आयुष्मान् ! भगवान्ने काम-भोगोको वृक्षके फलोके समान कहा है, वहुत दु ख देने वाले, वहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम वहुत अधिक है, आयुष्मान् ! भगवान्ने काम-भोगोको वधिक-गृहके समान कहा है, वहुत दु ख देने वाले, वहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम वहुत अधिक है, आयुष्मान् ! भगवान्ने काम-भोगोको शक्तिके कॉटके समान कहा है, वहुत दु ख देने वाले, वहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम वहुत अधिक है; आयुष्मान् भगवान्ने काम-भोगोको साँपके सिरके समान कहा है, वहुत दु ख देने वाले, वहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम वहुत अधिक है। आयुष्मान् ! ब्रह्मचर्यमें ही रमण करे। आयुष्मान् ! अपने शिक्षा-दौर्बल्यको प्रकट कर, शिक्षाका त्यागकर, हीन-मार्गी न वने।' साथियो द्वारा इस प्रकार उपदेश दिये जाने पर, अनुशासित किये जाने पर उसने कहा—"आयुष्मानो ! भगवानने कितना भी कहा हो कि काम-भोग अल्प-स्वाद वाले होते है, वहुत दु ख देने वाले, वहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम वहुत अधिक है; मै ब्रह्मचर्यको धारण किये नही रह सकता। मै अपने शिक्षा-दौर्वल्यको प्रकट कर, शिक्षाका त्यागकर, हीन-मार्गी वनूंगा।" वह शिक्षा-दौर्वल्यको प्रकट कर, शिक्षाका त्यागकर, हीन-मार्गी वन जाता

है। ठीक वैसे ही जैसे भिक्षुओ, एक आदमी ढाल-तलवार ले, तरकश बांध, घोर-संग्राममें उतरता है। वह उस संग्राममे, उत्साहसे हिस्सा लेता है, परिश्रम करता है। इस प्रकार उत्साहसे, संग्राममे हिस्सा लेने वाले, परिश्रम करने वाले उस आदमीको दूसरे लोग जख्मी कर डालते है। तब लोग उसे ले जाते है। ले जाते हुए सगे-सम्बन्धियोंके पास ले जाते है। उसके सगे-सम्बन्धी उसकी सेवा शुश्रूषा करते है, परिचर्या करते है। सगे-सम्बन्धियो द्वारा सेवा-शुश्रूषा किया जाता हुआ, परिचर्या किया जाता हुआ वह उसी जख्मके कारण मर जाता है। भिक्षुओ, मै ऐसा ही उस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, इस तरहका भी कोई कोई आदमी होता है। भिक्षुओ, भिक्षुओमें यह तीसरा आदमी होता है, जिसकी उपमा योधासे दी जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु किसी गांव या निगमके आश्रयसे विहार करता है। वह पूर्वाह्न समय (पहनकर) पात्र चीवर लेकर, उसी गांव या निगममे भिक्षाटनके लिये प्रवेश करता है—उसका शरीर अरक्षित (= असयत) होता है, वाणी अरक्षित होती है तथा मन अरक्षित होता है, स्मृति अनुपस्थित होती है, इन्द्रियो पर अधिकार नही होता है। वह वहाँ किसी स्त्री को देखता है, जिसने ढगसे कपडा पहना नही होता, या जो अच्छी तरह ढकी नही होती। जिसने ढगसे कपडा पहना नही होता, या जो अच्छी तरह ढकी नही होती, उस स्त्रीको देखकर उस भिक्षुके चित्तमें राग प्रविष्ट हो जाता है। रागके वशीभूत होनेके कारण उसका शरीर भी जलता है, उसका चित्त भी जलता है। उसके मनमे होता है कि मै विहार जाकर भिक्षुओसे कह दूं कि आयुष्मानो! मै रागके आधीन हूँ, मै रागके वशीभूत हूँ, मै ब्रह्मचर्यको धारण किये नही रह सकता। मै शिक्षा-का त्यागकर, अपने दौर्बल्यको प्रकट कर, हीन-मार्गपर चलूंगा। वह विहार जाकर भिक्षुओसे कह देता है—"आयुष्मानो! मै रागके आधीन हूँ, मै रागके वशीभूत हूँ, मै ब्रह्मचर्यको धारण किये नही रह सकता। मै शिक्षा-दौर्बल्यको प्रकट कर, शिक्षाका त्याग कर, हीन-मार्गी बनूंगा।" उसे उसके साथी उपदेश देते है, उसका अनुशासन करते हैं—'आयुष्मान्! भगवान्‌ने काम-भोगोको अल्प-स्वाद वाले कहा है, बहुत दु ख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक है, आयुष्मान्! भगवान्‌ने काम-भोगोको अस्थि-ककालके सदृश कहा है, बहुत दु ख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक है, आयुष्मान्! भगवान्‌ने काम-भोगोको मासकी पेशियोके समान कहा है, बहुत दु ख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक है, आयुष्मान्! भगवान्‌ने काम-भोगोको तिनकोकी मशालके समान कहा . भगवान्‌ने काम-भोगोको अगारोके गढेके

समान कहा है . . . भगवान्‌ने काम-भोगोको स्वप्नके समान कहा है . भग-
वान्‌ने काम भोगोको मागी हुई भीखके समान कहा है . भगवान्‌ने काम भोगोको
वृक्षके फलोके समान कहा है भगवान्‌ने काम भोगोको वधिक-गृहके समान
कहा है . भगवान्‌ने काम-भोगोको शक्तिके काँटेके समान कहा है . .
भगवान्‌ने काम-भोगोको साँपके सिरके समान कहा है, बहुत दुःख देने वाले,
बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक है। आयुष्मान्! ब्रह्मचर्यमे
ही रमण करे। आयुष्मान्! अपने शिक्षा-दौर्बल्यको प्रकटकर, शिक्षाका त्यागकर,
हीन-मार्गी न बने।" साथियो द्वारा इस प्रकार उपदेश दिये जाने पर, अनुशासित
किये जानेपर उसने कहा—"आयुष्मानो! मैं प्रयत्न करूँगा। आयुष्मानो! मैं
धारण करूँगा। आयुष्मानो! मैं रमण करूँगा। आयुष्मानो! मैं अब शिक्षा
दौर्बल्य प्रकट कर, शिक्षाका त्यागकर हीन-मार्गी नही बनूँगा।" ठीक वैसे ही जैसे
भिक्षुओ, एक आदमी ढाल-तलवार ले, तरकश बाँध, घोर सग्राममे उतरता है। वह
इस सग्राममे उत्साहसे हिस्सा लेता है, परिश्रम करता है। इस प्रकार उत्साहसे
सग्राममे हिस्सा लेने, परिश्रम करने वाले उस आदमीको दूसरे लोग जखमी कर
देते है। तब लोग उसे ले जाते है, ले जाते हुए सगे सम्बन्धियोंके पास ले
जाते हैं। सगे-सम्बन्धी उसकी सेवामे रहते है, उसकी परिचर्या करते है। वह
सगे-सम्बन्धियोकी सेवा पाकर, परिचर्या लाभ कर, उस कष्टसे मुक्त हो जाता है।
भिक्षुओ, ऐसा ही इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, इस तरहका भी कोई कोई
आदमी होता है। भिक्षुओ, भिक्षुओमे यह चौथा आदमी होता है, जिसकी उपमा
योधासे दी जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु किसी गाँव या निगमके आश्रयसे विहार करता है।
वह पूर्वाह्न समय (पहनकर) पात्र चीवर लेकर उसी गाँव या निगममे भिक्षाटनके
लिये प्रवेश करता है—उसका शरीर रक्षित (=सयत) होता है, वाणी रक्षित होती
है, मन रक्षित होता है, स्मृति उपस्थित होती है, इन्द्रियोपर अधिकार होता है। वह
अपनी आँखसे किसी सुन्दर रूपको देखता है, (लेकिन) उसमे न आँख गडाता है,
न मजा लेता है। क्योकि कही चक्षुके असयमसे लोभ-द्वेष आदि अकुशल पाप-मय
ख्याल घर न कर ले। उन पाप-मय विचारोको दूर रखनेके लिये प्रयत्न करता है,
अपनी आँखको काबूमे रखता है, अपनी आँखपर सयम रखता है।

वह अपने कानसे सुन्दर शब्द सुनता है . नासिकासे सुगन्धि सूँघता
है, जिह्वासे रस चखता है . . शरीरसे स्पर्श करता है . . मनसे सोचता है

(लेकिन) उसमें न मन गडाता है, न मजा लेता है। क्योंकि कही मनके असयमसे लोभ-द्वेष आदि अकुशल, पापमय विचार घर न कर लें। इन पाप-मय विचारोको दूर रखनेके लिये प्रयत्न करता है, अपने मनको काबूमें रखता है, अपने मनपर सयम रखता है। वह भात ग्रहण कर चुकनेके बाद, पिण्डपातसे वापिस लौट आनेके बाद, एकान्त-स्थानमे रहता है—आरण्य, वृक्षके नीचे, पर्वत पर, कन्दरामें, गिरि-गुफामें, श्मशानमें, वनमें, खुले आकाशके नीचे तथा पुवालके ढेरपर। वह आरण्य-गत होकर, वृक्षकी छायाके नीचे बैठकर, अथवा एकान्त-स्थानमें आसन मारकर, शरीरको सीधा कर, स्मृतिको सामने कर बैठता है। वह सासारिक लोभको छोड, लोभ-रहित चित्त वाला हो, विचरता है। वह चित्तके उपक्लेश, प्रज्ञाको दुर्बल करनेवाले पाँच बन्धनोको छोड, काम-वितर्कसे रहित हो चतुर्थ-ध्यानको प्राप्त करता है।

जब उसका चित्त इस प्रकार समाहित होता है, परिशुद्ध होता है, स्वच्छ होता है, निर्दोष होता है, निर्मल होता है, मृदु हो जाता है, कमनीय हो जाता है, स्थिर हो जाता है, तब वह उसे आस्रवोंके क्षय-ज्ञानकी ओर झुकाता है। यह दुख है, इसे वह यथार्थ रूपसे जानता है उससे आगे पुनरुत्पत्ति नही है, यह जानता है। ठीक वैसे ही जैसे भिक्षुओ, एक आदमी ढाल तलवार ले, तरकश बाँध, घोर सग्राममे उतरता है। वह इस सग्रामको जीतकर, सग्राम विजयी हो, सग्राम-भूमिके शिखर-स्थानपर ही रहता है। भिक्षुओ, वैसा ही मै इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी एक योधा होता है। भिक्षुओ, भिक्षुओमें यह पाँचवाँ आदमी होता है, जिसकी उपमा योधासे दी जा सकती है।

भिक्षुओ, ये पाँच भावी-भय है, जिनको देखते हुए आरण्यक-भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे, अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृतपर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात् करनेके लिये। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, एक आरण्यवासी भिक्षु इस प्रकार विचार करता है—मैं अब अकेला ही जगलमें विचर रहा हूँ। अकेले ही जगलमें विचरते समय मुझे साँप भी डंस ले सकता है, बिच्छु भी डँस ले सकता है, कनखजूरा भी डँस ले सकता है और इनसे मैं मर भी जा सकता हूँ। मुझपर यह विपत्ति आ सकती है। अच्छा हो कि मैं प्रयत्न करू, अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात् करनेके लिये। भिक्षुओ, यह पहला भावी-भय है, जिसको देखते हुए आरण्यक भिक्षुके लिये, यह उचित है कि वह अप्रमादी

हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे, अप्राप्त को प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृतपर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात् करनेके लिये।

फिर भिक्षुओ, एक आरण्यवासी भिक्षु इस प्रकार विचार करता है—मैं अब अकेला ही जगलमे विचर रहा हूँ। अकेले ही जगलमे विचरते समय मैं फिसल कर गिर भी सकता हूँ, खाया-पिया भी प्रतिकूल पड सकता है, मेरा पित्त भी प्रकुप्त हो सकता है, मेरा कफ भी प्रकुप्त हो सकता है, अथवा स्वाँस ली हुई मेरी वायु भी प्रकुप्त हो सकती है और इनसे मैं मर भी जा सकता हूँ। मुझपर यह विपत्ति आ सकती है। अच्छा हो कि मैं प्रयत्न करू, अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात् करनेके लिये। भिक्षुओ, यह दूसरा भावी-भय है जिसको देखते हुए आरण्यक भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृतपर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात् करनेके लिये। भिक्षुओ, यह दूसरा भावी-भय है जिसको देखते हुए आरण्यक भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये,अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात् करनेके लिये।

फिर भिक्षुओ, एक आरण्यवासी भिक्षु इस प्रकार विचार करता है—मैं अब अकेला ही जगलमे विचर रहा हूँ। अकेले ही जगलमे विचरते समय मैं किसी शिकारी जानवरके सामने भी आ सकता हूँ; सिहके सामने भी आ सकता हूँ, व्याघ्रके सामने भी आ सकता हूँ, चीतेके सामने भी आ सकता हूँ, भालूके सामने भी आ सकता हूँ तथा लकड-बग्धेके सामने भी आ सकता हूँ। वे मुझे मार भी डाल सकते है। मुझपर यह विपत्ति आ सकती है। अच्छा हो कि मैं प्रयत्न करू, अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात् करनेके लिये। भिक्षुओ, यह तीसरा भावी-भय है, जिसको देखते हुए आरण्यक भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात करनेके लिय।

फिर भिक्षुओ, एक आरण्यवासी भिक्षु इस प्रकार विचार करता है—मैं अब अकेला ही जगलमे विचर रहा हूँ, अकेले ही जगलमे विचरते समय मेरी किसी चोर या अचोरसे भेट हो जा सकती है। वह मेरी जान भी ले सकता है। उनसे

मेरा मरण भी हो मकता है। मुझपर यह विपत्ति आ मकती है। अच्छा हो कि मै प्रयत्न करू, अप्राप्त को प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृतपर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात करनेके लिये। भिक्षुओ, यह चौथा भावी-भय है जिसको देखते हुए आरण्यक भिक्षुके लिये, यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे, अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षातकृतको साक्षात् करनेके लिये।

फिर भिक्षुओ, एक आरण्यवामी भिक्षु, इस प्रकार विचार करता है—मै अब अकेला ही जगलमे विचर रहा हूँ। जगलमे बहुतसे कष्ट देने वाले अमनुष्य (–प्रेत आदि) रहते है। वे मेरी जान भी ले मकते है। इससे मेरा मरण भी हो सकता है। मुझपर यह विपत्ति आ मकती है। अच्छा हो कि मै प्रयत्न करूँ अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृतपर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृत को साक्षात् करनेके लिये। भिक्षुओ, यह पाँचवाँ भावी-भय है, जिसको देखते हुए आरण्यक भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे अप्राप्त को प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृतपर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्-कृतको साक्षात् करनेके लिये।

भिक्षुओ, ये पाँच भावी-भय है, जिनको देखते हुए भिक्षुओके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये अनधिकृत्पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षत्कृतको साक्षात् करनेके लिये। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, एक भिक्षु इस प्रकार विचार करता है—अभी तो मै कुमार हूँ, तरुण हूँ, एकदम काले बाल है, पूर्वावस्था है, भद्र-यौवनसे युक्त हूँ। लेकिन समय आता है जब इस शरीरको बुढापा व्याप जाता है। बूढे हो जानेपर, जरासे अभिभूत हो जानेपर, बुद्धोंके शासनको मनमें धारण करना आसान नही और एकान्त जगलमे रहना भी आसान नही। आगे मेरी वह अवस्था होनेवाली है, जो अनिष्टकर है, असुन्दर है तथा अच्छी लगनेवाली नही है। मेरे लिये यही अच्छा है कि मै तुरन्त प्रयत्न आरम्भ करू अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये, अनधिकृतपर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्-कृतको साक्षात् करनेके लिये। उस धर्म (=चित्तावस्था)को प्राप्तकर लेनेपर मै बूढा होनेपर भी सुख पूर्वक रहूँगा। भिक्षुओ, यह पहला भावी-भय है, जिसे देखते हुए भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्न-शील हो, कोशिश करे अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात् करनेके लिये।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु इस प्रकार विचार करता है—अभी तो मै निरोग (= अल्पावाधा वाला) हूँ, स्वस्थ हूँ, जठराग्नि-स्थली अच्छी है, न अति-शीत, न अति उष्ण, मध्यम सामर्थ्यसे युक्त। लेकिन समय आता है, जब इस शरीरको रोग लग जाता है। रोगी हो जानेपर, रोग-ग्रस्त हो जानेपर, बुद्धोके शासनको धारण करना आसान नही है और एकान्त जगलमे रहना भी आसान नही है। आगे मेरी वह अवस्था होने वाली है, जो अनिष्टकर है, असुन्दर है तथा अच्छी लगने वाली नही है। मेरे लिये यही अच्छा है कि मै तुरन्त प्रयत्न आरम्भ करूँ अप्राप्त की प्राप्ति के लिये, अनधिकृतपर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्-कृतको साक्षात् करनेके लिये। उस धर्म (= चित्तावस्था) को प्राप्त कर लेनेपर,मै रोगी होनेपर भी सुख पूर्वक रहूँगा। भिक्षुओ, यह दूसरा भावी-भय है जिसे देखदेते हुए भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्न-शील हो, कोशिश करे अप्राप्त को प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनके लिये, असाक्षातकृतको साक्षात् करनके लिये।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु इस प्रकार विचार करता है—अभी तो सुकाल है, अच्छी उपजका समय है, आसानीसे भिक्षा मिल जानेका काल है, आहार एकत्र करके जीना आसान है। लेकिन ऐसा समय होता है जब दुष्काल पड जाता है। अच्छी उपज नही होती, आसानीसे भिक्षा नही मिलती, आहार एकत्र करके जीना आसान नही रहता। जब दुर्भिक्ष पडता है, तो मनुष्य जहाँ दुर्भिक्ष नही होता, वहाँ चले जाते है। वहाँ भीडमे रहना होता है, बहुत लोगोके साथ रहना होता है। लोगोंसे घिरे रहनेपर,बुद्धोके शासनको धारण करना आसान नही है,और एकान्त जगलमे रहना भी आसान नही है। आगे मेरी वह अवस्था होने वाली है, जो अनिष्टकर है, असुन्दर है तथा अच्छी लगने वाली नही है। मेरे लिये यही अच्छा है कि मै तुरन्त प्रयत्न आरम्भ करू, अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये,असाक्षात् कृतको साक्षात् करनेके लिये। इस धर्म (= चित्तावस्था) को प्राप्त कर लेनेपर मै दुर्भिक्ष होनेपर भी सुख-पूर्वक रहूँगा। भिक्षुओ, यह तीसरा भावी-भय है, जिसे देखते हुए भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे अप्राप्तको प्राप्त करनके लिये, अनधिकृतपर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्-कृतको साक्षात् करनके लिये।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु इस प्रकार विचार करता है—इस समय तो मनुष्य इकट्ठे, मिलजुलकर, विना झगडे, दूध-पानी की तरह मिले हुये, एक दूसरेको प्रेम भरी नजरसे देखते हुये रह रहे है। लेकिन ऐसा समय आता है जब भय उत्पन्न होता है, जब

जगली मनुष्य प्रकुप्त हो जाते हैं, जब जनपदके मनुष्योंको रथोंपर चढ़कर इधर उधर भटकना पड़ता है। भय उत्पन्न होनेपर मनुष्य जहाँ निर्भय-स्थान होता है, वहाँ चले जाते है। वहाँ भीड़में रहना होता है, बहुत लोगोंके साथ रहना होता है। लोगोंसे घिरे रहने पर बुद्धोंके शासनको धारण करना आसान नहीं है, और एकान्त जंगलमें रहना भी आसान नही है। आगे मेरी वह अवस्था होने वाली है जो अनिष्टकर है, असुन्दर है तथा अच्छी लगने वाली नही है। मेरे लिये यही अच्छा है कि मैं तुरन्त प्रयत्न आरम्भ करूँ अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्-कृत को साक्षात् करनेके लिये। इस धर्म (= चित्तावस्था) को प्राप्त कर लेने पर मै भयके उत्पन्न होने पर भी सुख पूर्वक रहूँगा। भिक्षुओ, यह चौथा भावी-भय है जिसे देखते हुये भिक्षुके लिये यह उचित है   असाक्षात्-कृतको साक्षात् करनेके लिये।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु इस प्रकार विचार करता है—इस समय तो संघ इकट्ठा, मिलजुलकर, बिना झगड़े, समान उद्देश्यको लेकर सुखपूर्वक विहार कर रहा है। लेकिन ऐसा समय आता है जब संघ-भेद हो जाता है। संघ-भेद हो जाने पर बुद्धोंके शासनको धारण करना आसान नही है और एकान्त जंगलमे रहना भी आसान नही है। आगे मेरी वह अवस्था होने वाली है जो अनिष्टकर है, असुन्दर है तथा अच्छी लगने वाली नही है। मेरे लिये यही अच्छा है कि मैं तुरन्त प्रयत्न आरम्भ करू अप्राप्त की प्राप्तिके लिये लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात् कृत को साक्षात् करनेके लिये। इस धर्म (= चित्तावस्था) को प्राप्त कर लेने पर मैं संघ-भेद हो जाने पर भी सुख पूर्वक रहूँगा। भिक्षुओ, यह पाँचवा भावी-भय है, जिसे देखते हुये भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्-कृत को साक्षात् करनेके लिये। भिक्षुओ, ये पांच भावी-भय है, जिनको देखते हुये भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्-कृतको साक्षात् करने केलिये।

भिक्षुओ, पाँच भावी-भय है जो अभी तो उत्पन्न नहीं हुए है किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होगे। उनको जानना चाहिये। उन्हें जानकर उन्हे रोकनेका प्रयास करना चाहिय। कौनसे पांच ? भिक्षुओ, आगे चलकर ऐसे भिक्षु होगें जिन्होने न शरीरको समत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा,

न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा। वे दूसरोको उपसम्पन्न करेंगे, किन्तु वे उन्हे शील, चित्त और प्रज्ञाके विषयमें शिक्षित न कर सकेगे। इस लिये वे भी ऐसे ही होगे जिन्होने न शरीरको सयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा। फिर वे स्वय ऐसे होकर, जिन्होने न शरीरको सयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा, दूसरोको उपसम्पन्न करेंगे। किन्तु वे उन्हे शील, चित्त और प्रज्ञाके विपयमे शिक्षित न कर सकेगे। इस लिये वे भी ऐसे ही होगे, जिन्होने न शरीरको सयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा। भिक्षुओ, यह धर्मकी मलीनतासे विनय (=आचरण) की मलीनता हूई, आचरणकी मलीनतासे धर्मकी मलीनता। भिक्षुओ, यह पहला भावी-भय है, जो अभी तो उत्पन्न नही हुआ है; किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होगा। उसको जानना चाहिये। उसे जानकर उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

फिर भिक्षुओ, आगे चलकर ऐसे भिक्षु होगे जिन्होन न शरीरको सयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा। वे स्वय ऐसे होते हुए, जिन्होने न शरीर को सयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका का अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्याम किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा, दूसरोको अपने आश्रयमे रखेगे। किन्तु, वे उन्हे शील, चित्त और प्रज्ञाके विषयमे शिक्षित न कर सकेगे। इमलिये वे भी ऐसे ही होगे, जिन्होने न शरीरको सयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्याम किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा। वे स्वय ऐसे होते हुए, जिन्होंने न शरीरको सयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा, दूसरोको अपने आश्रयमे रखेगे। किन्तु, वे उन्हे शील, चित्त और प्रज्ञाके विपयमे शिक्षित न कर सकेगे। इस लिये वे भी ऐसे ही होगे, जिन्होने न शरीरको सयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा। भिक्षुओ, यह धर्मकी मलीनतासे विनय (=आचरण) की मलीनता हुई, विनयकी मलीनतासे धर्मकी

मलीनता। भिक्षुओ, यह दूसरा भावी-भय है, जो अभी तो उत्पन्न नही हुआ है, किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होगा। उसको जानना चाहिये। उसे जानकर, उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

फिर भिक्षुओ, आगे चलकर ऐसे भिक्षु होंगे, जिन्होंने न शरीरको सयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा। वे स्वय ऐसे होते हुए, जिन्होंने न शरीरको सयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा, अभिधर्म-कथा तथा वेदल्ल-कथा (=वैपुल्य कथा) कहते हुए, पाप-मार्गपर आरूढ होते हुए भी वे सावधान नही होंगे। भिक्षुओ, यह धर्मकी मलीनतासे विनय (=आचरण) की मलीनता हुई, विनयकी मलीनतासे धर्मकी मलीनता। भिक्षुओ, यह तीसरा भावी-भय है जो अभी तो तो उत्पन्न नही हुआ है, किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होगा। उसको जानना चाहिये। उसे जानकर उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

फिर भिक्षुओ, आगे चलकर ऐसे भिक्षु होंगे, जिन्होंने न शरीरको सयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा। वे स्वय ऐसे होते हुए, जिन्होंने न शरीरको सयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञा का भ्यास किया होगा, जो तथागत द्वारा भाषित, गम्भीर, गम्भीर अर्थ वाले, लोकुत्तर तथा शुन्यता-प्रतिसंयुक्त सूक्त होंगे उनका उपदेश दिये जानेपर सुनेंगे नही, ध्यान देंगे नही, जाननेके लिये चित्त समाहित नही करेंगे, न उन धर्मोंको सीखने योग्य मानेंगे और न उनको पाठ करने योग्य मानेंगे। लेकिन जो ऐसे सूक्त होंगे जो कविकृत होंगे, जो काव्य-रस युक्त होंगे, जो सुन्दर अक्षरो तथा सुन्दर व्यजनो वाले (=अनुप्रासयुक्त) होंगें, जो बाह्य होंगे, जो श्रावक-भाषित होंगे, ऐसे सूक्तोका उपदेश दिये जानेपर सुनेंगे, ध्यान देंगे, जाननेके लिये चित्त समाहित करेंगे, उन धर्मोंको सीखने योग्य मानेंगे और उनको पाठ करने योग्य मानेंगे। भिक्षुओ, यह धर्मकी मलीनतासे विनयकी मलीनता हुई, विनयकी मलीनतावेसे धर्मकी मलीनता। भिक्षुओ, यह चौथा भावी-भय है जो अभी तो उत्पन्न नही हुआ है, किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होगा। उसको जानना चाहिये। उसे जानकर उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

फिर भिक्षुओ, आगे चलकर ऐसे भिक्षु होगे, जिन्होने न शरीरको सयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा। वे स्वय ऐसे होते हुए जिन्होने न शरीरको सयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाभ्यास किया होगा, स्थविर भिक्षु बहुत चीजोके जोडने बटोरने वाले हो जायेगे, शिथिल-प्रयत्न हो जायेगे, पतनकी ओर अग्रसर होने वाले हो जायेगे, एकान्त जीवनकी ओरसे उदासीन हो जायेगे, वे अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्-कृतका साक्षात् करनेके लिये प्रयत्नशील न होगे। उनका अनुकरण करने वाले लोग भी वैसे ही होगे। वे भी वहुत चीजोके जोडने वटोरने वाले हो जायेगे। शिथिल -प्रयत्न हो जायेग, पतनकी ओर अग्रसर होने वाले हो जायेंगे, एकान्त-जीवनकी ओरसे उदासीन हो जायेंगे, वे अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्-कृतका साक्षात् करनेके लिये प्रयत्न-शील न होगे। भिक्षुओ, यह धर्मकी मलीनतासे विनयकी मलीनता हुई, विनयकी मलीनतासे धर्मकी मलीनता। भिक्षुओ, यह पाँचवा भावी-भय है, जो अभी तो उत्पन्न नही हुआ है, किन्तु भविप्यमे उत्पन्न होगा। उसे जानना चाहिये। उसे जानकर उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये। भिक्षुओ, ये पाँच भावी-भय है, जो अभी तो उत्पन्न नही हुए है, किन्तु भविप्यमे उत्पन्न होगे। उनको जानना चाहिये। उन्हे जानकर उन्हे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

भिक्षुओ, ये पाँच भावी-भय है,जो अभी तो उत्पन्न नही हुए है, किन्तु भविप्यमे उत्पन्न होगे। उनको जानना चाहिये। उन्हे जानकर उन्हे रोकनेका प्रयास करना चाहिये। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, भविष्यमे भिक्षु अच्छे चीवरकी इच्छा करने वाले होगे। वे अच्छे चीवरकी इच्छा करने वाले होनेके कारण पमु-कूल-चीवरोको त्याग देगे, वे वनोके एकान्त शयनासनोको त्याग देगे, वे ग्राम-निगम राजधानियोमें जाकर निवास करेगे, वे चीवरके लिये नाना प्रकारके अकरणीय-परियेषण करेगे। भिक्षुओ, यह पहला भावी-भय है, जो अभी तो उत्पन्न नही हुआ है, किन्तु भविप्यमे उत्पन्न होगा। उसको जानना चाहिय। उसे जानकर उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

फिर भिक्षुओ, भविप्यमे भिक्षु अच्छे भोजनकी इच्छा करने वाले होगे। वे अच्छे भोजनकी इच्छा करने वाले होने के कारण, भिक्षाटनमे विमुख हो जायेंगे, वे वनोके एकान्त शयनासनको त्याग देगे। वे ग्राम-निगम-राजधानियोमें जाकर

निवास करेंगे। वे जिह्वाग्रसे वढिया वढिया रसोकी खोज करते रहेंगे। वे अच्छे भोजनके लिये नाना प्रकारके अकरणीय-पर्येषण करेंगे। भिक्षुओ, यह दूसरा भावी-भय है जो अभी तो उत्पन्न नही हुआ है, किन्तु भविष्यमे उत्पन्न होगा। उसको जानना चाहिये। उसे जानकर उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

फिर भिक्षुओ, भविष्यमे भिक्षु अच्छे शयनासनकी कामना करने वाले होंगे। वे अच्छे शयनासनकी इच्छा करने वाले होनेके कारण, वृक्षोकी छाया-तले रहनेसे विमुख हो जायेंगे। वे वनोंके एकान्त शयनासनको त्याग देंगे। वे ग्राम-निगम-राजधानियोमें जाकर निवास करेंगे। वे (=वढिया) शयनासनके लिये नाना प्रकारके अकरणीय-पर्येषण करेंगे। भिक्षुओ, यह तीसरा भावी-भय है, जो अभी तो उत्पन्न नही हुआ है, किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होगा। उसको जानना चाहिये। उसे जानकर उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

फिर भिक्षुओ, भविष्यमें भिक्षु भिक्षुणियोके साथ, शैक्ष्यमानोके साथ, श्रमणुद्देश्योंके साथ वहुत हिल-मिलकर रहेंगे। भिक्षुओ, जव भिक्षुओका भिक्षुणियोके साथ, शैक्षमानोके साथ, श्रमणुद्देश्योके साथ वहुत हेल-मेल वढ जायगा तो फिर यही आशा करनी चाहिये कि वे वेमनसे ब्रह्मचर्य-वास करेंगे, अथवा चित्त-मैल सम्वन्धी किसी दोषके भागी वनेंगे। अथवा भिक्षु-जीवन (=शिक्षा) का त्याग कर हीन-मार्गी वन जायेंगे। भिक्षुओ, यह चौथा भावी-भय है,जो अभी तो उत्पन्न नही हुआ है, किन्तु भविष्यमे उत्पन्न होगा। उसको जानना चाहिये। उसे जानकर उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

फिर भिक्षुओ, भविष्यमे भिक्षु आरामिक (=विहार-कर्मी) और श्रमणुद्देश्योंके साथ वहुत हिल-मिलकर रहेंगे। भिक्षुओ, आरामिको तथा श्रमणुद्देश्योका ससर्ग हो जाने पर यह आशा करनी चाहिये कि वे नाना प्रकारके सग्रह-परिभोगोंसे युक्त हो विहार करेंगे। वे पृथ्वीपर और हरियावलमें भी वडे-वडे काम-काज करेंगे। भिक्षुओ, यह पाँचवाँ भावी-भय है, जो अभी तो उत्पन्न नही हुआ है, किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होगा। उसको जानना चाहिये। उसे जानकर उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

(९) स्थविर वर्ग

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका अप्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा नही लगता, उनके गौरवका भाजन नही रहता तथा उनके आदरका पात्र नही रहता। कौनसी पाँच वाते ? वह अनुराग के विषयोमें अनुरक्त होता है, द्वेष करनेके विषयोमें द्वेष करता है, मोहके, विषयोमें

मूढताको प्राप्त होता है,कोप करनेके विपयोमे कुपित होता है तथा अहकार (= मद) के विषयोमे अहकारको प्राप्त होता है। भिक्षुओ, जिस स्थाविरमे ये पाँच वाते होती है, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका अप्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा नही लगता,उनके गौरवका भाजन नही रहता तथा उनके आदरका पात्र नही रहता।

भिक्षओ, जिस स्थविर भिक्षुमे ये पाँच वातें होती है, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका प्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन रहता है तथा उनके आदरका पात्र रहता है। कौन सी पाच वाते? वह अनुरागके विपयोमे अनुरक्त नही होता है, द्वेष करनेके विपयोमे द्वेष नही करता है, मोहके विपयोमे मूढताको नही प्राप्त होता है, कोप करनेके विपयोमें कुपित नही होता है तथा अहकार (= मद) के विपयोमे अहकारको नही प्राप्त होता है। भिक्षुओ, जिस स्थविरमे ये पाच वातें होती है, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका प्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन रहता है तथा उनके आदरका पात्र रहता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर-भिक्षुमे ये पाच वाते होती है, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका अप्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा नही लगता, उनके गौरवका भाजन नही रहता, तथा उनके आदरका पात्र नही रहता। कौनसी पाँच वाते? वह वीतराग नही होता, वह वीत-द्वेप नही होता, वह वीत-मोह नही होता, वह ढोगी होता है, वह ईर्षालु होता है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमे ये पाच वाते होती है, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका अप्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा नही लगता, उनके गौरवका भाजन नही रहता तथा उनके आदरका पात्र नही रहता।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुसे ये पाँच वाते होती है, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका प्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है तथा उनके आदरका पात्र होता है। कौनमी पाँच वाते? वह वीत-राग होता है। वह वीत-द्वेप होता है, वह वीत-मोह होता है, वह ढोगी नही होता है तथा वह ईर्षालु नही होता है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका प्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है तथा उनके आदरका पात्र होता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमे ये पाँच वातें होती है, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका अप्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा नही लगता है, उनके गौरवका भाजन नही होता है तथा उनके आदरका पात्र नही होता है। कौनसी पाँच वाते? वह ढोगी होता है, वकवासी होता है, वाह्य-लक्षणोमे उलझ जाने वाला होता है, जादू-टोना

करने वाला होता है, लाभ और अधिक-लाभ खोजने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमे ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका अप्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा नही लगता है, उनके गौरवका भाजन नहीं होता है तथा उनके आदरका पात्र नही होता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमे ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका प्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है, तथा उनके आदरका पात्र होता है। कौनसी पाँच बातें? वह रोगी नहीं होता है, वह बकवासी नहीं होता है, वह बाह्य-लक्षणोमे उलझ जाने वाला नही होता है, वह जादू-टोना करने वाला नही होता है, वह लाभ और अधिक लाभ खोजने वाला नहीं होता है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका प्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है तथा उनके आदरका पात्र होता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका अप्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा नही लगता है, उनके गौरवका भाजन नही होता है तथा उनके आदरका पात्र नही होता है। कौनसी पाँच बातें? वह अश्रद्धावान् होता है, निर्लज्ज होता है, पाप-भीरु नही होता है, आलसी होता है, मूर्ख होता है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका अप्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा नही लगता है, उनके गौरवका भाजन नही होता है तथा उनके आदरका पात्र नही होता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका प्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है तथा उनके आदरका पात्र होता है। कौनसी पाच बातें? वह श्रद्धावान् होता है, लज्जाशील होता है, पाप-भीरु होता है, अप्रमादी होता है, तथा प्रज्ञावान् होता है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका प्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है तथा उनके आदर का पात्र होता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमे ये पाच बातें होती हैं वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका अप्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा नही लगता है, उनके गौरवका भाजन नही होता है तथा उनके आदरका पात्र नही होता है। कौनसी पाच बातें? वह रूपोको सहनेमें समर्थ नही होता, शब्दोको सहनेमें समर्थ नही होता, रसोको सहनेमें समर्थ नही होता, गन्धोको सहनेमें समर्थ नही होता तथा स्पर्शोको सहनेमे समर्थ नही होता। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमे ये पाँच बातें होती हैं वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका अप्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा नही लगता है, उनके गौरव का भाजन नही होता है तथा उनके आदरका पात्र नही होता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमे ये पाच बातें होती है, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका प्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है तथा उनके आदरका पात्र होता है। कौनसी पाच बातें ? वह रूपोके सहनेमें समर्थ होता है, शब्दोके सहनेमे समर्थ होता है, रसोके सहनेमे समर्थ होता है, गन्धोके सहनेमें समर्थ होता है तथा स्पर्शोके सहनेमे समर्थ होता है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमे ये पाँच बाते होती है, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका प्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है, तथा उनके आदरका पात्र होता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बाते होती है, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका प्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है तथा उनके आदरका पात्र होता है। वह अर्थ-अभिज्ञा (= प्रतिसम्भिदा) प्राप्त होता है, धर्म-अभिज्ञा-प्राप्त होता है, निरुक्ति-अभिज्ञा प्राप्त होता है, प्रतिभान-अभिज्ञा प्राप्त होता है। अपने सब्रह्मचारियोंके जो छोटे-बडे काम होते है, उनमे आलस्य-रहित होता है, उनको सम्पन्न करनेमे, उनका सविधान करनेमे, उनके करनेका उपाय सोचनेमें समर्थ होता है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बाते होती है, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका प्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है तथा उनके आदरका पात्र होता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमे ये पांच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका प्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है तथा उनके आदरका पात्र होता है। कौनसी पाँच बाते ? वह शीलवान् होता है, प्रातिमोक्षके नियमोका पालन करने वाला, नैतिक जीवन व्यतीत करने वाला, छोटेसे छोटे दोषके करनेमें भी भयके मानने वाला, शिक्षापदोको अच्छी प्रकार सीखने वाला। वह बहु-श्रुत होता है, श्रुतके धारण करने वाला, श्रुतके साथ रहने वाला। जो ऐसे धर्म (= देशना) होते है जिनका आदि भी कल्याणकारी होता है, मध्य भी कल्याणकारी होता है, अन्त भी कल्याणकारी होता है, जो अर्थ-युक्त और व्यजन-युक्त होते है, जो परिपूर्ण रूप से परिशुद्ध ब्रह्मचर्यकी प्रशसा करते है, उनके द्वारा वैसे धर्म बहुश्रुत होते है, धारण किये गये होते है, वाणी द्वारा परिचित किये गये होते है, मन द्वारा अनु-प्रेक्षित होते है तथा (प्रज्ञा-) दृष्टि द्वारा भली प्रकार हृदयगम किये होते है। उसकी वाणी कल्याणी होती है, वह प्रियकर वाणी बोलने वाला होता है, विश्वस्त-वाणी, निर्दोष तथा अर्थको प्रकट करने वाली। चारो चैतसिक ध्यानोको जो यही इसी शरीरमे सुख देन वाले है, वह अनायास प्रभूत मात्रामे प्राप्त करने वाला होता है। वह आस्रवो का क्षय कर, अनास्रव चित्तकी विमुक्ति, प्रज्ञाकी विमुक्ति को, इसी जन्ममे स्वय जानकर, साक्षात् कर, प्राप्त कर विहार करता है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमे ये पाच बातें होती है, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोका प्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा लगता है, उनके गौरव का भाजन होता है तथा उनके आदरका पात्र होता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमे ये पाँच बाते (एक साथ) होती है वह बहुत जनोके अहितका कारण होता है, बहुत जनोके असुखका कारण होता है, बहुत जनोके अनर्थका कारण होता है, वह देवमनुष्योके अहित और दु खके लिये होता है। कौनसी पाँच बाते? एक स्थविर भिक्षु होता है, दीर्घकालका जानकार, चिरप्रव्रजित, ज्ञात होता है, प्रसिद्ध होता है, गृहस्थ-प्रव्रजितोंसे घिरा हुआ , चीवर पिण्डपात-गिलान-प्रत्यय, भैपज्य आदि भिक्षुओकी आवश्यकताओको प्राप्त करने वाला होता है , बहु-श्रुत होता है, श्रुतके धारण करने वाला, श्रुतके साथ रहने वाला, जो ऐसे धर्म होते है, जिनका आदि भी कल्याकारी होता है, मध्य भी कल्याणकारी होता है, अन्त भी कल्याणकारी होता है, जो अर्थ-युक्त और व्यजन-युक्त होते है, जो परिपूर्णरूपमे परिशुद्ध ब्रह्म चर्यकी प्रशसा करते है, उसके द्वारा वैसे धर्म बहुश्रुत होते है, धारण किये गये होते है, वाणी द्वारा परिचित किये गये होते है, मन द्वारा अनु-प्रेक्षित होते है तथा (प्रज्ञा-) दृष्टि द्वारा भली प्रकार हृदयगम किये गये होते है, तथा मिथ्या-दृष्टि होता है, उलटी-दृष्टि वाला । वह बहुत लोगोको सद्धर्मके मार्गसे विमुखकर असद्धर्ममें लगा देता है। यह स्थविर भिक्षु दीर्घ-कालका जानकार है, चिर-प्रव्रजित है (सोच) बहुत से लोग उसका अनुकरण करने वाले हो जाते है। यह ज्ञात है, प्रसिद्ध है, बहुतसे गृहस्थो तथा प्रव्रजितो द्वारा घिरा रहता है, (सोच) बहुतसे लोग उसका अनुकरण करने वाले हो जाते है। वह चीवर-पिण्डपात- गिलानप्रत्यय-भैपज्य आदि भिक्षुओकी आवश्यकताओको प्राप्त करने वाला है (सोच) बहुतसे लोग उसका अनुकरण करने वाले हो जाते है। वह बहु-श्रुत है, श्रुतके धारण करने वाला है, श्रुतके साथ रहने वाला है (सोच) भी बहुत से लोग उसका अनुकरण करने वाले हो जाते है। भिक्षुओ, जिस स्थविर, भिक्षुमे ये पाँच बाते (एक साथ) होती है, वह बहुत जनोके अहितका कारण होता है, बहुत जनोके असुखका कारण होता है, बहुत जनोके अनर्थका कारण होता है, वह देव-मनुष्योंके अहित और दुःखके लिये होता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें (एकसाथ) होती है वह बहुत जनोंके हितका कारण होता है, बहुत जनोके सुखका कारण होता है, बहुत जनोके अर्थ का कारण होता है, वह देवमनुष्योके हित और सुखके लियें होता है। कौनसी पाँच बाते? एक स्थविर भिक्षु होता है दीर्घकालका जानकार, चिर-प्रव्रजित, ज्ञात होता है, प्रसिद्ध होता है, गृहस्थ-प्रव्रजितोसे घिरा हुआ, चीवर-पिण्डपात-गिलान प्रत्यय, भैपज्य आदि भिक्षुओकी आवश्यकताओको प्राप्त करने वाला होता है, बहुश्रुत होता है, श्रुतके धारण करने वाला, श्रुतके साथ रहने वाला, जो ऐसे धर्म होते

हैं, जिनका आदि भी कल्याणकारी होता है, मध्य भी कल्याणकारी होता है, अन्त भी कल्याणकारी होता है, जो अर्थ-युक्त और व्यजन-युक्त होते है, जो परिपूर्ण रूपसे परिशुद्ध ब्रह्म चर्यकी प्रशसा करते है,उसके द्वारा वैसे धर्म बहु-श्रुत होते है, धारण किये गये होते है, वाणी द्वारा परिचित किये गये होते है, मन द्वारा अनुप्रेक्षित होते है तथा (प्रज्ञा-) दृष्टि द्वारा भली प्रकार हृदयगम किये गये होते है ,, तथा सम्यक्-दृष्टि होता है, सीधी-दृष्टि वाला, वह बहुत लोगोको असद्धर्मके मार्गसे विमुख कर सद्धर्ममें लगा देता है। यह स्थविर भिक्षु दीर्घ-कालका जानकार है चिर-प्रव्रजित है (सोच) भी वहुतसे लोग उसका अनुकरण करने वाले हो जाते है। यह ज्ञात है, प्रसिद्ध है, वहुतसे गृहस्थो तथा प्रव्रजितों द्वारा घिरा रहता है, (सोच) भी वहुतसे लोग उसका अनुकरण करने वाले हो जाते है। वह चीवर-पिण्डपात प्राप्त करने वाला है (सोच) भी वहुतसे लोग उसका अनुकरण करने वाले हो जाते है। वह वहुश्रुत है, श्रुतके धारण करने वाला है, श्रुतके साथ रहने वाला है (सोच) भी वहुतसे लोग उसका अनुकरण करने वाले हो जाते है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमे ये पाँच वाते (एक साथ) होती है, वह वहुत जनोके हितका कारण, होता है, वहुत जनोके सुखका कारण होता है, वहुत जनोके अर्थका कारण होता है, वह देव-मनुष्योके हित और सुखके लिये होता है।

भिक्षुओ, ये पाँच वाते शैक्ष भिक्षुके पतनका कारण होती हैं। कौन-सी पाँच? नये निर्माण-कार्योमे लगे रहना, व्यर्थकी वातचीतमें लगे रहना, निद्रालु होना समूहमे ही रहना तथा अपने चित्तकी विमुक्तिकी मात्रापर विचार नही करना। भिक्षुओ, ये पाँच वाते शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण होती है।

भिक्षुओ, ये पाँच वाते शैक्ष भिक्षुकी हानि न होनेका कारण होती है। कौन-सी पाँच? नये (निर्माण) कार्योमें न लगे रहना, व्यर्थकी वातचीतमें न लगे रहना, निद्रालु न होना, समूहमे ही न रहना तथा अपने चित्तकी विमुक्तिकी मात्रा पर विचार करना है। भिक्षुओ, ये पाँच वाते शैक्ष भिक्षुकी हानि न होनेका कारण होती है।

भिक्षुओ, ये पाँच वाते शैक्षु भिक्षुकी हानिका कारण होती है। कौन-सी पाँच? भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु वहुत काम-काजी होता है, वहुत कार्य करने वाला, नाना प्रकारके काम करनेमे दक्ष। वह ध्यानकी उपेक्षा करता है और अपने चित्तके लिये शमय-प्राप्तिमें नही लगा रहता। भिक्षुओ, यह पहली वात है जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु थोडा-भी काम होनेपर

सारा दिन विता देता है। वह ध्यानकी उपेक्षा करता है और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमे नही लगा रहता। भिक्षुओ, यह दूसरी वात है जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु गृहस्थ-प्रव्रजितोंके साथ अनुचित ससर्ग रखता है। वह ध्यानकी उपेक्षा करता है और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमे नही लगा रहता। भिक्षुओ, यह तीसरी वात है, जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु वहुत सुवह ही (भिक्षाटनके लिये) गाँवमे प्रवेश करता है, मध्यान्होत्तर वहुत देर हो चुकनेपर लौटता है। वह ध्यानकी उपेक्षा करता है और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमें नही लगा रहता है। भिक्षुओ, यह चौथी वात है जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु ऐसी वातचीत—जो श्रेष्ठ जीवनके अनुकूल हो, जो चित्त-वृत्तियोंके लिये पथ्य-सदृश हो—जैसे अल्पेच्छ-कथा, सन्तोप-कथा, एकान्तवास-कथा, असंसर्ग-कथा, वीर्यारम्भ कथा, शील-कथा, समाधि-कथा, प्रज्ञा-कथा, विमुक्ति-कथा, विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन-कथाका अनायास करने वाला नही होता, प्रभूत मात्रामे करने वाला नही होता। वह ध्यानकी उपेक्षा करता है, और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमे नही लगा रहता है। भिक्षुओ, यह पाँचवी वात है जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण होती है। भिक्षुओ, ये पाँच वाते हैं जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण होती है।

भिक्षुओ, ये पाँच वाते शैक्ष भिक्षुकी हानि न होनेका कारण होती है। कौन-सी पाँच? भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु न वहुत काम-काजी होता है, न वहुत कार्य करने वाला, न नाना प्रकारके काम करनेमे दक्ष। वह ध्यानकी उपेक्षा नही करता है और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमे लगा रहता है। भिक्षुओ, यह पहली वात है जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण नही होती है। फिर भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु थोडेसे ही कामके करनेमें सारा दिन नही विता देता है। वह ध्यानकी उपेक्षा नही करता है और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमे लगा रहता है। भिक्षुओ, यह दूसरी वात है जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण नही होती है। फिर भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु गृहस्थ-प्रव्रजितोंके साथ अनुचित ससर्ग नही रखता है। वह ध्यानकी उपेक्षा नही करता है और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमें लगा रहता है। भिक्षुओ, यह तीसरी वात है जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण नही होती है। फिर भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु वहुत सुवह ही (भिक्षाटनके लिये) गाँवमे प्रवेश नही करता है। मध्यान्होत्तर वहुत देर हो जानेपर नही लौटता है। वह ध्यानकी उपेक्षा नही करता है और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमे लगा रहता है। भिक्षुओ, यह चौथी वात

है जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण नही होती है। फिर भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु ऐसी बातचीत—जो श्रेष्ठ जीवनके अनुकूल हो, जो चित्त-वृत्तियोके लिये पथ्य-सदृश हो—जैसे, अल्पेच्छ-कथा, सन्तोष-कथा, एकान्तवास-कथा, असंसर्ग-कथा, वीर्यारम्भ-कथा, शील-कथा, समाधि-कथा, प्रज्ञा-कथा, विमुक्ति-कथा, विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन-कथा का अनायास करने वाला होता है, प्रभूत मात्रामे करने वाला होता है। वह ध्यानकी उपेक्षा करता है और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमे लगा रहता है। भिक्षुओ, यह पाँचवी बात है जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण नही होती है। भिक्षुओ, ये पाँच बाते शैक्ष भिक्षुकी हानिके लिये नही होती।

(१०) ककुध वर्ग

भिक्षुओ, ये पाँच सम्पत्तियाँ है। कौन-सी पाँच ? श्रद्धा-सम्पत्ति, शील-सम्पत्ति, श्रुत-सम्पत्ति, त्याग-सम्पत्ति तथा प्रज्ञा-सम्पत्ति। भिक्षुओ, ये पाँच सम्पत्तियाँ है।

भिक्षुओ, ये पाँच सम्पत्तियाँ है। कौन-सी पाँच ? शील-सम्पत्ति, समाधि-सम्पत्ति, प्रज्ञा-सम्पत्ति, विमुक्ति-सम्पत्ति तथा विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन-सम्पत्ति। भिक्षुओ, ये पाँच सम्पत्तियाँ है।

भिक्षुओ, ये पाँच अर्हत्वकी घोषणाये है। कौन-सी पाँच ? बुद्धिमन्दता तथा मूढताके कारण भी अर्हत्वकी घोषणा की जाती है, बुरी-भावना तथा इच्छाके वशीभूत होकर भी अर्हत्वकी घोषणा की जाती है, उन्माद तथा चित्त-विक्षेपके कारण भी अर्हत्वकी घोषणा की जाती है, अभिमानके कारण भी अर्हत्वकी घोषणा की जाती है, तथा यथार्थ रूपसे भी अर्हत्वकी घोषणा की जाती है। भिक्षुओ, ये पाँच अर्हत्वकी घोषणाये है।

भिक्षुओ, ये पाँच सुख-विहार है। कौनसे पाँच ? भिक्षुओ, एक भिक्षु काम-भोगोसे पृथक, अकुशल-धर्म (=बुराइयो) से पृथक वितर्क-युक्त, विचार-युक्त, एकान्तवाससे उत्पन्न, प्रीति-सुख सहित प्रथम-ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है, वितर्क विचारोका उपशमन हो जानेपर द्वितीय-ध्यान तृतीय-ध्यान चतुर्थ-ध्यान प्राप्त कर विहार करता है तथा आस्रवोका क्षय कर अनास्रव चित्त-विमुक्ति, प्रज्ञा-विमुक्तिको इसी शरीरमे जानकर, साक्षात् कर, प्राप्त कर, विहार करता है। भिक्षुओ, ये पाँच सुख-विहार है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते होती है, वह अचिरकालमे ही अर्हत्वको प्राप्त कर लेता है। भिक्षुओ कौनसी पाँच बाते ? भिक्षुओ, वह भिक्षु अर्थ-प्रति-

सम्भिदा प्राप्त होता है, धर्म-प्रतिसम्भिदा-प्राप्त होता है, निरुक्ति-प्रतिसम्भिदा प्राप्त होता है तथा प्रतिभा-प्रतिसम्भिदा-प्राप्त होता है। वह जैसे जैसे उसका चित्त विमुक्त होता है, वैसे वैसे उसकी प्रत्यवेक्षा करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अचिरकालमें ही अर्हत्वको प्राप्त कर लेता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह आनापान-स्मृतिका अभ्यास करते हुए अचिरकालमें ही अर्हत्वको प्राप्त कर लेता है। कौनसी पाँच बातें? भिक्षुओ, वह भिक्षु अल्पार्थी होता है, अल्प काम-काजी, सुभर (=सुविधासे पोषित किया जा सकने वाला), जीवनकी आवश्यकताओंके विषयमें बहुत सन्तोषी। वह अल्पाहारी होता है, पेटू नहीं होता है। वह तन्द्रालु नहीं होता, जागरूक रहने वाला होता है। वह बहु-श्रुत होता है, श्रुतके धारण करने वाला, श्रुतके साथ रहने वाला। जो ऐसे धर्म होते हैं जिनका आदि भी कल्याणकारी होता है, मध्य भी कल्याणकारी होता है, अन्त भी कल्याणकारी होता है, जो अर्थ-युक्त और व्यजन-युक्त होते हैं, जो परिपूर्ण रूपसे परिशुद्ध ब्रह्मचर्यकी प्रशंसा करते हैं, उसके द्वारा वैसे धर्म बहु-श्रुत होते हैं, धारण किये गये होते हैं, वाणी द्वारा परिचित किये गये होते हैं, मन द्वारा अनुप्रेक्षित होते है तथा (प्रज्ञा—) दृष्टि द्वारा भली प्रकार हृदयगम किये गये होते है तथा वह जैसे-जैसे उसका चित्त विमुक्त होता है वैसे-वैसे उसकी प्रत्यवेक्षा करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बातें होती है, वह आनापान-स्मृतिका अभ्यास करते हुए अचिर-कालमे ही अर्हत्वको प्राप्त कर लेता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती है, वह आनापान स्मृतिका अभ्यास करते हुए अचिरकालमे ही अर्हत्वको प्राप्त कर लेता है। कौन-सी पाँच बाते? भिक्षुओ, वह भिक्षु अल्पार्थी होता है, अल्प काम-काजी, सुभर (=सुविधासे पोषित किया जा सकने वाला) जीवनकी आवश्यकताओंके विषयमे बहुत सतोषी। वह अल्पाहारी होता है, पेटू नही होता है। वह तन्द्रालु नही होता, जागरूक रहने वाला होता है। वह ऐसी बातचीत—जो श्रेष्ठ जीवनके अनुकूल हो, जो चित्त-वृत्तियोंके लिये पथ्य सदृश हो, जैसे अल्पेच्छ-कथा - का अनायास करने वाला होता है, प्रभूत मात्रामे करने वाला होता है। वह जैसे-जैसे उसका चित्त विमुक्त होता है, वैसे-वैसे उसकी प्रत्यवेक्षा करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बाते होती हैं, वह आनापान स्मृतिका अभ्यास करते हुए अचिरकालमें ही अर्हत्वको प्राप्त कर लेता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती है, वह आनापान स्मृतिके अभ्यासको बढाते हुए अचिरकालमें ही अर्हत्वको प्राप्त कर लेता है। कौन-सी पाँच बाते?

भिक्षुओ, वह भिक्षु अल्पार्थी होता है, अल्प काम-काजी, सुभर (= सुविधासे पोषित किया जा सकने वाला) जीवनकी आवश्यकताओंके विषयमे वहुत सन्तोषी। वह अल्पाहारी होता है, पेटू नही होता। वह तन्द्रालु नही होता, जागरूक रहने वाला होता है। वह आरण्यक होता है, एकान्तमे रहने वाला। वह जैसे-जैसे उसका चित्त विमुक्त होता है, वैसे-वैसे उसकी प्रत्यवेक्षा करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है, वह आनापान-स्मृतिके अभ्यासको वढाते हुए, अचिरकालमे ही अर्हत्वको प्राप्त कर लेता है।

भिक्षुओ, मृगराज सिंह शामके समय अपनी माँदसे निकलता है, माँदसे निकलकर जम्हाई लेता है, जम्हाई लेकर चारो ओर देखता है, चारो ओर देखकर तीन बार सिंह-गर्जन करता है, तीन बार सिंह-नाद करके शिकारके लिये जाता है। वह यदि हाथीपर चोट करता है, तो अच्छी तरहसे ही चोट करता है, यूँ ही नही, भैंसेपर भी चोट करता है, तो अच्छी तरहसे ही चोट करता है, यूँ ही नही, बैलपर भी चोट करता है, तो अच्छी तरहसे ही चोट करता है, यूँ ही नही, चीतेपर भी चोट करता है, तो अच्छी तरहसे ही चोट करता है, यूँ ही नही, छोटे प्राणियो, यहाँ तक कि खरगोशो और विल्लोपर भी चोट करता है, तो अच्छी तरहसे ही चोट करता है, यूँ ही नही। ऐसा क्यो? कही मेरा निशाना न चूके।

भिक्षुओ, यहाँ 'सिंह' तथागत अर्हत सम्यक्सम्वुद्धका पर्याय है। भिक्षुओ तथागत (परिषदको) जो धर्मोपदेश देते है, यह उनका 'सिंह-नाद' ही होता है, तथागत भिक्षुओको भी जव धर्मोपदेश देते है, तो अच्छी तरहसे ही धर्मोपदेश देते है, यूँ ही नही, तथागत भिक्षुणियोको भी जव धर्मोपदेश देते है, तो अच्छी तरहसे ही धर्मोपदेश देते है, यूँ ही नही, तथागत उपासकोको भी जव धर्मोपदेश देते है, तो अच्छी तरहसे ही धर्मोपदेश देते है, यूँ ही नही, तथागत उपसिकाओको भी जव धर्मोपदेश देते है, तो अच्छी तरहसे ही धर्मोपदेश देते है, यूँ ही नही, तथागत पृथक-जनो (= सामान्य जनो) यहाँ तक कि अन्न-भार चिड़िमारोको भी जव धर्मोपदेश देते है, तो अच्छी तरह ही धर्मोपदेश देते है, यूँ ही नही। यह किसलिये? भिक्षुओ, तथागत धर्म-गुरु है, धर्मका गौरव करने वाले।

एक समय भगवान् कौशाम्वीके घोपितारामर्मे विहार करते थे। उस समय आयुष्मान् महामौद्ल्यायनके ककुध कोलिय-पुत्र नामक सेवकको मरे थोडा ही समय हुआ था। उसने एक मनोमय शरीर धारण किया था। उसका जन्म ऐसा

था, जैसे मगधके लोगोके दो या तीन ग्राम-क्षेत्र हो। वह अपनी उस योनिमे न अपनेको ही और न अन्य किसीको ही किसी प्रकारका कष्ट देता था।

तब ककुध देवपुत्र जहाँ आयुष्मान् महामौद्‌गल्यायन थे, वहाँ पहुँचा। पहुँचकर आयुष्मान् महामौद्‌गल्यायनको नमस्कार कर एक ओर खडा हो गया। एक ओर खड़े होकर ककुध देव-पुत्रने आयुष्मान् महामौद्‌गल्यायनको यह कहा—"भन्ते! देवदत्तके मनमे यह इच्छा उत्पन्न हुई कि मै भिक्षु-सघका नेतृत्व करू। उसके मनमें इस प्रकारका सकल्प पैदा होते ही उसके ऋद्धि-बलका ह्रास हो गया।" इतना कह आयुष्मान् महामौद्‌गल्यायनको अभिवादन कर, प्रदक्षिणा कर, अन्तर्धान हो गया।

तब आयुष्मान् महामौद्‌गल्यायन जहाँ भगवान थे, वहाँ पहुँचे। पास जाकर भगवानको अभिवादन कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे हुए आय्ष्मान् महामौद्‌गल्यायन-ने भगवान्‌को यह कहा—"भन्ते! ककुध कोलिय-पुत्र नामके मेरे सेवकको मरे बहुत समय नही हुआ। उसने एक मनोमय शरीर धारण किया है। उसका जन्म ऐसा है, जैसे मगधके लोगोंके दो या तीन ग्राम-क्षेत्र हो। वह अपनी उस योनिमे न अपनेको ही और न किसी अन्यको ही किसी प्रकारका कष्ट देता है। तब भन्ते! ककुध देवपुत्र जहाँ मै था, वहाँ आया। पास कर मुझे प्रणाम कर एक ओर बैठ गया। एक ओर खडे हुए ककुध देवपुत्रने मुझे यह कहा—'भन्ते! देवदत्तके मनमे यह इच्छा उत्पन्न हुई कि मैं भिक्षु-सघका नेतृत्व करूँ। उसके मनमे इस प्रकारका सकल्प पैदा होते ही, उसके ऋद्धि-बलका ह्रास हो गया।' भन्ते! ककुध देवपुत्रने ऐसा कहा। यह कहकर, मुझे प्रणाम कर, प्रदक्षिणा कर वही अन्तर्धान हो गया।"

"मौद्‌गल्यायन! क्या तूने अपने चित्तसे ककुध देवपुत्रके चित्तको जान लिया कि जैसा वह कहता है, वैसा ही होता है, अन्यथा नही होता?"

"भन्ते! मैने अपने चित्तसे ककुध देवपुत्रके चित्तको जान लिया है। जैसा ककुध देवपुत्र कहता है, वह वैसा ही होता है, अन्यथा नही होता।"

"मौद्‌गल्यायन! इस कथनको अपने पास सुरक्षित रखा। वह बेकार आदमी (= मोघ पुरुष) स्वय अपने आपको प्रकट करेगा।

"मोद्‌गल्यायन! इस दुनियामें पाँच प्रकारके शास्ता (= नायक) है। कौनसे पाँच? मौद्‌गल्यायन! एक शास्ता ऐसा होता है, जिसका शील शुद्ध नही होता, किन्तु तो भी वह घोषणा करता है कि वह शुद्ध-शील है, स्वच्छ-शील है तथा निर्मल-शील है। उसके श्रावक यह जानते है कि यह जो शास्ता है, उसका शील-शुद्ध नही है, किन्तु तो भी यह घोषणा करता है कि यह शुद्ध-शील है, स्वच्छ शील है तथा निर्मल-शील है।

यदि हम गृहस्थोको यह बात कहे तो यह इसके लिये अच्छा नही होगा। जो इसके लिये अच्छा नही होगा—वैसा हम कैसे करेगे ? यह चीवर-पिण्डपात-शयनासन-ग्लान-प्रत्यय भैषज्यसे सम्मान करता है। जैसा यह करेगा, वैसा स्वय प्रकट हो जायेगा। इस तरहके शास्ताके 'शील' की रक्षा उसके श्रावक करते है। इसतरहका शास्ता अपने शिष्योसे ही यही आशा करता है कि वे उसके 'शील' की रक्षा करेगे।

फिर मौद्गल्यायन! एक शास्ता ऐसा होता है जिसकी 'जीविका' शुद्ध नही होती, किन्तु तो भी वह घोषणा करता है कि वह शुद्ध-जीविका वाला है, स्वच्छ-जीविका वाला है तथा निर्मल-जीविका वाला है। उसके श्रावक यह जानते है कि यह जो शास्ता है, इसकी जीविका शुद्ध नही है, किन्तु तो भी यह घोषणा करता है कि यह शुद्ध-जीविका वाला है, स्वच्छ-जीविका वाला है तथा निर्मल-जीविका वाला है। यदि हम गृहस्थोको यह बात कहे तो यह इसके लिये अच्छा नही होगा। जो इसके लिये अच्छा नही होगा, वैसा हम कैसे करेगे ? यह चीवर-पिण्डपात-शयवासन-ग्लान-प्रत्यय-भैषज्यसे सम्मान करता है। जैसा यह करेगा, वैसा स्वय प्रकट हो जायेगा। उस तरहके शास्ताकी 'जीविका' की रक्षा उसके श्रावक करते है। इस तरहका शास्ता अपने शिष्योसे यही आशा करता है कि वे उसकी 'जीविका' की रक्षा करेगे।

फिर मौद्गल्यायन! एक शास्ता ऐसा होता है जिसकी 'धर्म-देशना' शुद्ध नही होती, किन्तु तो भी वह घोषणा करता है कि वह शुद्ध धर्म-देशना वाला है, स्वच्छ-धर्म-देशना वाला है, निर्मल धर्म-देशना वाला है। उसके श्रावक यह जानते हैं कि यह जो शास्ता है, इसकी धर्म-देशना शुद्ध नही है, किन्तु तो भी यह घोपणा करता है कि यह शुद्ध-धर्म-देशना वाला है, स्वच्छ धर्म-देशना वाला है तथा निर्मल धर्म-देशना वाला है। यदि हम गृहस्थोको यह बात कहे तो यह उसके लिये अच्छा नही होगा। जो इसके लिये अच्छा नही होगा, वैसा हम कैसे करेगे ? यह चीवर-पिण्डपात-शयनासन ग्लान-प्रत्यय-भैपज्यसे सम्मान करता है। जैसा यह करेगा, वैसा स्वयं प्रकट हो जायेगा। इस तरहके शास्ताकी 'धर्म-देशनाकी रक्षा उसके श्रावक करते है। इस तरहका शास्ता अपने शिष्योंसे यही आशा करता है कि वे उसकी 'धर्म-देशना' की रक्षा करेगे।

फिर मौद्गल्यायन! एक शास्ता ऐसा होता है कि जिसकी व्याख्या (=वेय्याकरण) शुद्ध नही होती। किन्तु तो भी वह घोपणा करता है कि वह शुद्ध-व्याख्याता है, स्वच्छ-व्याख्याता है, निर्मल-व्याख्याता है। उसके श्रावक यह जानते है कि यह जो शास्ता है, इसकी धर्म-देशना शुद्ध नही है, किन्तु तो भी यह घोपणा

करता है कि यह शुद्ध व्याख्याता है, स्वच्छ-व्याख्याता है, तथा निर्मल-व्याख्याता है। यदि हम गृहस्थोंको यह बात कहे तो यह उसके लिये अच्छा नही होगा। जो उसके लिये अच्छा नही होगा, वैसा हम कैसे करेंगे? यह चीवर-पिण्डपात-शयनासन ग्लान-प्रत्यय-भैषज्यसे सम्मान करता है। जैसा यह करेगा, वैसा स्वय प्रकट हो जायेगा। इस तरहके शास्ताकी 'व्याख्या' की रक्षा उसके श्रावक करते है। इस तरहका शास्ता अपने शिष्योंसे यही आशा करता है, कि वे उसकी 'व्याख्या' कीरक्षा करेंगे।

फिर मौद्गल्यायन! एक शास्ता ऐसा होता है कि जिसका ज्ञान-दर्शन शुद्ध नही होता। किन्तु, तो भी वह घोषणा करता है कि वह शुद्ध-ज्ञान-दर्शन वाला है, स्वच्छ ज्ञान-दर्शन वाला है, निर्मल-ज्ञान-दर्शन वाला है। उसके श्रावक यह जानते है कि यह जो शास्ता है, इसका ज्ञान-दर्शन शुद्ध नही है, किन्तु तो भी यह घोषणा करता है कि यह शुद्ध-ज्ञानदर्शन वाला है, स्वच्छ-ज्ञानदर्शन वाला है, तथा निर्मल-ज्ञानदर्शन वाला है। यदि हम गृहस्थोंको यह बात कहे तो यह उसके लिये अच्छा नही होगा। जो उसके लिये अच्छा नही होगा, वैसा हम कैसे करेंगे? यह चीवर-पिण्डपात-शयनासन-ग्लान प्रत्यय-भैषज्यसे सम्मान करता है। जैसा यह करेगा, वैसा स्वय प्रकट हो जायेगा। इस तरहके शास्ताके ज्ञान-दर्शनकी रक्षा उसके श्रावक करते है। इस तरहका शास्ता अपने शिष्योसे यही आशा करता है कि वे उसके ज्ञान-दर्शनकी रक्षा करेंगे।

मौद्गल्यायन! दुनियामें पांच प्रकारके शास्ता है। मौद्गल्यायन! मैं परिशुद्ध-शील हूँ और अपने परिशुद्धि-शील होनेकी घोषणा करता हूँ, स्वच्छ-शील होनेकी तथा निर्मल-शील होनेकी। मेरे श्रावक मेरे शीलकी रक्षा नही करते। मैं अपने शिष्योंसे यह आशा नही करता कि ये मेरे शीलकी रक्षा करेंगे। मैं परिशुद्ध-जीविका हूँ और अपने परिशुद्ध-जीविका वाला होनेकी घोषणा करता हूँ, स्वच्छ-जीविका वाला होनेकी तथा निर्मल-जीविका वाला होनेकी। मेरे श्रावक मेरी जीविकाकी रक्षा नही करते। मैं अपने शिष्योंसे यह आशा नही करता कि वे मेरी जीविकाकी रक्षा करेंगे। मैं परिशुद्ध-धर्म देशना वाला हूँ और अपने परिशुद्ध-धर्म-देशना वाला होनेकी घोषणा करता हूँ, स्वच्छ धर्म-देशना वाला होनेकी तथा निर्मल धर्म-देशना वाला होनेकी। मेरे श्रावक मेरी धर्म-देशनाकी रक्षा नही करते। मै अपने शिष्योंसे यह आशा नही करता कि ये मेरी धर्म-देशनाकी रक्षा करेंगे। मै परिशुद्ध-व्याख्याता हूँ और अपने परिशुद्ध-व्याख्याता होनेकी घोषणा करता हूँ, स्वच्छ-व्याख्याता होनेकी तथा निर्मल व्याख्याता होनेकी। मेरे श्रावक मेरी 'व्याख्या' की रक्षा नही करते। मैं अपने शिष्योंसे यह आशा नही करता कि वे मेरी 'व्याख्या' की रक्षा करेंगे।।

मैं परशुद्ध-ज्ञान-दर्शन वाला हूँ और अपने परिशुद्ध ज्ञान-दर्शन होनेकी घोषणा करता हूँ, स्वच्छ-ज्ञान-दर्शन वाला होनेकी तथा निर्मल-ज्ञान-दर्शन वाला होनेकी। मेरे श्रावक मेरे 'ज्ञान-दर्शन' की रक्षा नही करते। मैं अपने शिष्योसे यह आशा नही करता कि वे मेरे 'ज्ञान दर्शन' की रक्षा करेगे।

भिक्षुओ, ये पाँच वाते ऐसी है जो शैक्ष भिक्षुको विशारद वनाने वाली है। कौनसी पाँच ? भिक्षुओ, एक भिक्षु श्रद्धावान् होता है, सदाचारी होता है, वहुश्रुत होता है, प्रयत्नशील होता है तथा प्रज्ञावान् होता है। भिक्षुओ, अश्रद्धावान्के मनमें जैसा द्वेष होता है, श्रद्धावान्के मनमे वैसा द्वेष नही होता, इसलिये भिक्षुओ, यह वात शैक्ष भिक्षुको विशारद वनानेवाली है। भिक्षुओ, दुराचारीके मनमे जैसा द्वेष होता है, सदाचारीके मनमे वैसा द्वेप नही होता, इसलिये भिक्षुओ, यह वात शैक्ष भिक्षुको विशारद वनाने वाली है। भिक्षुओ, अल्प-श्रुतके मनमे जैसा द्वेप होता है, वहुश्रुतके मनमे वैसा द्वेष नही होता, इसलिये भिक्षुओ, यह वात शैक्ष भिक्षुको विशारद वनाने वाली है। भिक्षुओ, प्रयत्न न करने वालेके मनमे जैसा द्वेप होता है, प्रयत्नशीलके मनमे वैसा द्वेष नही होता। इसलिये भिक्षुओ, यह वात शैक्ष भिक्षुको विशारद वनाने वाली है। भिक्षुओ, मूर्खके मनमे जैसा द्वेष होता है, प्रज्ञावान्के मनमे वैसा द्वेप नही होता, इसलिये भिक्षुओ, यह वात शैक्ष भिक्षुको विशारद वनाने वाली है। भिक्षुओ, ये पाँच वाते शैक्ष भिक्षुको विशारद वनाने वाली है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है, वह चाहे क्षीणास्रव (= अर्हत) भी हो तव भी दूसरे उसे शकाकी दृष्टिसे देखते है और सोचने लगते है कि यह पापी भिक्षु है। कौनसी पाँच वाते ? भिक्षुओ, वह भिक्षु वेश्याके यहाँ आने जाने वाला होता है, वह विधवाओके यहाँ आने जाने वाला होता है, वडी आयुकी कुमारियोके पास आने जाने वाला होता है, हिजडोंके पास आने जाने वाला होता है, तथा भिक्षुणियोके पास आने जाने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है, वह चाहे क्षीणास्रव (= अर्हत) भी हो, तव भी दूसरे उसे शकाकी दृष्टिसे देखते है कि यह पापी भिक्षु है।

भिक्षुओ, जिस डाकू (= महाचोर) मे यह पाँच वाते होती है, वह सेंध भी लगाता है, लूटता भी है, डाका भी डालता है तथा रास्ता भी घेरता है। कौनसी पाँच वाते ? वह ऊवड-खावड स्थानोमें रहने वाला होता है, वह घने (जगल) मे रहने वाला होता है, वलवानोका आश्रित रहने वाला होता है, सम्पत्तिका त्याग करने वाला होता है तथा अकेला विचरने वाला होता है।

भिक्षुओ, महाचोर ऊबड-खावड स्थानमें रहने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, महाचोर नदियोंके पतन पर रहता है, या ऊबड-खावड पर्वतोंमें रहने वाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार महाचोर ऊबड-खावड स्थानमें रहने वाला होता है।

भिक्षुओ, महाचोर घने (-जंगलमें) रहने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, महाचोर घनी-घासमें (तिनके) रहने वाला होता है, घने पेड़ोंमें रहने वाला होता है, गुफामें रहने वाला होता है, वन-खण्डमें रहने वाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार महाचोर घनेमें रहने वाला होता है।

भिक्षुओ, महाचोर बलवानोंका आश्रित रहने वाला कैसे होता है?

भिक्षुओ, चोर राजाओं या राजमहामात्योंका आश्रित होता है। उसके मनमें यह होता है कि यदि मुझे कोई कुछ कहेगा तो यह राजा या राज-महामात्य मेरे पक्षमें बोलेंगे। यदि उसे कोई कुछ कहता है तो राजा या राजमहामात्य उसके पक्षमें बोलते हैं। भिक्षुओ, इस प्रकार चोर बलवानोंका आश्रित रहने वाला होता है।

भिक्षुओ, महाचोर सम्पत्तिका त्याग करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, महाचोर धनी होता है, बहुत सम्पत्तिशाली, बहुत ऐश्वर्यवान्। उसके मनमें यह होता है कि यदि मुझे कोई कुछ कहेगा तो उसका धनसे स्वागत करूँगा, यदि उसे कोई कुछ कहता है तो वह धनसे उसका स्वागत करता है। इस प्रकार भिक्षुओ महाचोर सम्पत्तिका त्याग करने वाला होता है।

भिक्षुओ, महाचोर अकेला विचरने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, महाचोर अकेला ही दूसरोंकी सम्पत्तिको लेने वाला होता है। यह किसलिये? ताकि मेरी रहस्यकी बात बाहर प्रकट न हो जाय। भिक्षुओ, इस प्रकार महाचोर अकेला विचरने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस डाकूमें ये पाँच बातें होती हैं, वह सेंध भी लगाता है, लूटता भी है, डाका भी डालता है तथा रास्ता भी घेरता है।

इसी प्रकार जिस पापी भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह स्वयं अपनेको आघात पहुँचाता हुआ विचरता है, छोटे-बड़े दोषोंसे युक्त होता है तथा बहुत अपुण्यार्जन करता है। कौन सी पाँच बातें? भिक्षुओ, जो पापी-भिक्षु होता है, वह ऊबड-खावड स्थानोंमें रहने वाला होता है, वह घनेमें रहने वाला होता है, बलवानोंका आश्रित रहने वाला होता है, सम्पत्तिका त्याग करने वाला होता है तथा अकेला विचरने वाला होता है। भिक्षुओ, पापी-भिक्षु, ऊबड-खावड स्थानोंमें रहने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, जो पापी भिक्षु होता है उसके शारीरिक-कर्म ऊबड-खावड होते हैं, वाणीके कर्म ऊबड-खावड होते हैं तथा मनके कर्म ऊबड-खावड होते हैं। भिक्षुओ, पापी

भिक्षु घनेमे रहने वाला कैसे होता है ?" भिक्षुओ, पापी भिक्षु मिथ्या-दृष्टि होता है, दो सिरेकी दृष्टियोसे युक्त। भिक्षुओ, इस प्रकार पापी भिक्षु, घनेमे रहने वाला होता है।

"भिक्षुओ, पापी -भिक्षु वलवानोका आश्रित रहने वाला कैसे होता है ?" भिक्षुओ, पापी-भिक्षु राजाओ वा राज-महामात्योका आश्रित होता है। उसके मनमें यह होता है कि यदि मुझे कोई कुछ कहेगा तो यह राजा वा राजमहामात्य मेरे पक्षमे बोलेगा। यदि उसे कोई कुछ कहता है तो राजा वा राजमहामात्य उसके पक्षमे बोलते है। भिक्षुओ, इस प्रकार चोर वलवानोका आश्रित रहने वाला होता है।

भिक्षुओ, पापी-भिक्षु सम्पत्तिका त्याग करने वाला कैसे होता है ? भिक्षुओ पापी-भिक्षुको चीवर-पिण्डपात-शयनासन-ग्लान-प्रत्यय-भैपज्य-परिष्कार मिलते रहते हैं। उसके मनमे यह होता है कि यदि मुझे कोई कुछ कहेगा तो उसका चीवर आदिसे स्वागत करूँगा। यदि उसे कोई कुछ कहता है तो वह चीवर आदिसे उसका स्वागत करता है। इस प्रकार भिक्षुओ,पापी-भिक्षु सम्पत्तिका त्याग करने वाला होता है।

भिक्षुओ, पापी-भिक्षु अकेला विचरने वाला कैसे होता है ? भिक्षुओ,पापी-भिक्षु अकेलाही प्रत्यन्त जनपदमे निवास स्थान ग्रहण करता है। वह वहाँ (गृहस्थ–) कुलोंके पास जा उनसे लाभान्वित होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, पापी-भिक्षु अकेला ही विचरने वाला होता है।

इस प्रकार भिक्षुओ, जिस पापी-भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है, वह स्वय अपनेको आघात पहुँचाता हुआ विचरता है, छोटे-वडे दोपोसे युक्त होता है तथा वहुत अपुण्यार्जन करता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है, वह श्रमणोमे श्रमण-सुकुमार होता है। कौनसी पाँच वाते ? भिक्षुओ, वह किसीके द्वारा प्रार्थना किये जाने पर ही वहुधा चीवरका उपयोग करता है, विना प्रार्थनाके नही, किसीके द्वारा प्रार्थना किये जाने पर ही वहुधा पिण्डपात (= भिक्षा) का उपयोग करता है, विना प्रार्थनाके नही, किसीके द्वारा प्रार्थना किये जाने पर ही वहुधा शयनासनका उपयोग करता है, विना प्रार्थनाके नही, किसीके द्वारा प्रार्थना किये जाने पर ही वहुधा ग्लान-प्रत्यय-भैपज्य-परिप्कारका उपयोग करता है, विना प्रार्थनाके नही, वह जिन ब्रह्मचारियोंके साथ रहता है,वे प्रसन्नता पूर्वक ही उसके प्रति शारीरिक-कर्मका व्यवहार करते हैं, अप्रसन्नता पूर्वक नही, प्रसन्नतापूर्वक ही उसके प्रति वाणीके कर्मका व्यवहार करते हैं, अप्रसन्नता पूर्वक नही, प्रसन्नतापूर्वक ही उसके प्रति मनके कर्मका व्यवहार करते हैं,

अप्रसन्नता पूर्वक नही। वे उसके लिये बहुधा अच्छा ही उपहार लाते है, जो अच्छा नही हो, वह कम ही। जो पित्तके प्रकोप होते है, कफके प्रकोप होते है, तथा वातके प्रकोप होते है, जो सनिपात (–ज्वर) होते है, जो ऋतुओंके परिवर्तित होनेके कारण होते है, जो विपम परिस्थितियोसे उत्पन्न होते है, जो तीव्र होते है तथा जो कर्मोके फल-स्वरूप उत्पन्न होते है—वैसे कष्ट उसे बहुत नही होते। वह प्राय निरोग रहता है। वह चारो चैतसिक ध्यानोको, जो इसी जन्ममें सुख देनेवाले है, प्राप्त करने वाला होता है, सुविधासे प्राप्त करने वाला होता है, विना किसी कष्टके प्राप्त करने वाला होता है, अनायास प्राप्त करने वाला होता है। वह आस्रवोका क्षय कर, अनास्रव चित्तकी विमुक्तिको, प्रज्ञाकी विमुक्तिको, इसी जन्ममे स्वय साक्षात् कर, प्राप्तकर, विहार करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बातें होती है, वह श्रमणोमें श्रमण-सुकुमार होता है।

भिक्षुओ, यदि कोई किसीके बारेमें यह ठीक-ठीक कहेगा कि यह श्रमणोमें श्रमण-सुकुमार है तो वह मेरे बारेमे ही यह ठीक-ठीक कहेगा कि यह श्रमणोमे श्रमण-सुकुमार है। भिक्षुओ, मै ही किसीके द्वारा प्रार्थना किये जानेपर ही बहुधा चीवरका उपयोग करता हुँ, विना प्रार्थनाके नही, किसीके द्वारा प्रार्थना किये जानेपर ही बहुधा पिण्डपात शयनासन ग्लान-प्रत्यय-भैपज्य परिष्कारका उपयोग करता हुँ, विना प्रार्थनाके नही, जिन भिक्षुओंके साथ विहार करता हूँ, वे बहूधा प्रसन्नता-पूर्वकही मेरे प्रति शारीरिक-कर्मका व्यवहार करते है, अप्रसन्नता पूर्वक नही, वे बहुधा प्रसन्नतापूर्वक ही मेरे प्रति वाणीके कर्मका व्यवहार करते है, अप्रसन्नतापूर्वक नही वे बहुधा प्रसन्नतापूर्वकही मेरे प्रति मनके कर्मका व्यवहार करते है, अप्रसन्नतापूर्वक नही, वे प्राय मेरे लिये अच्छा उपहार ही लाते है, जो अच्छा न हो ऐसा कम ही। जो पित्तके प्रकोप होते है, कफके प्रकोप होते है तथा वातके प्रकोप होते है, जो सन्निपात (–ज्वर) होते है, जो विपम परिस्थितियोसे उत्पन्न होते है, जो तीव्र होते है तथा जो कर्मोके फलस्वरूप उत्पन्न होते है—वैसे कष्ट मुझे बहुत नही होते। मै प्राय निरोग रहता हूँ। मैं चारो चैतसिक ध्यानोको, जो इसी जन्ममे सुख देने वाले है, प्राप्त करने वाला हूँ, सुविधासे प्राप्त करने वाला हूँ, विना किसी कष्टके प्राप्त करने वाला हूँ, अनायास प्राप्त करने वाला हूँ। मै आस्रवो का क्षय कर, अनास्रव चित्तकी विमुक्तिको, प्रज्ञाकी विमुक्तिको, इसी जन्ममे स्वय साक्षात् कर, प्राप्तकर विहार करता हूँ। भिक्षुओ, यदि कोई किसीके बारेमे यह ठीक ठीक कहेगा कि यह श्रमणोमे श्रमण-कुमार है तो वह मेरे बारेमें ही यह ठीक-ठीक कहेगा कि वह श्रमणोमें श्रमण-सुकुमार है।

भिक्षुओ, ये पाँच सुख-विहार है। कौनसे पाँच ? भिक्षुओ, भिक्षुका अपने सब्रह्मचारियोके प्रति प्रकट रूपमे और अप्रकटरूपमे शारीरिक व्यवहार मैत्री-युक्त होता, वाणीका व्यवहार मैत्री-युक्त होता है तथा मनका व्यवहार मैत्री-युक्त होता है; जो शील अखण्ड होते है, छिद्र-रहित होते है, उवना धब्बोके होते है, जो स्वच्छ होते है, जो परिशुद्ध होते है, जो विज्ञो द्वारा प्रशसित होते है, जो विकार-युक्त नही होते है तथा जो समाधिका सवर्धन करने वाले होते है, वैसे शीलोंसे युक्त हो सब्रह्मचारियोके साथ प्रकट अथवा अप्रकट अवस्थामे विहार करता है, यह जो आर्य-दृष्टि है, निर्याणिक-दृष्टि है, तदनुसार आचरण करने वालेको दु ख-क्षयकी ओर ले जाने वाली दृष्टि है, वैसी दृष्टिसे युक्त हो वह सब्रह्मचारियोके साथ प्रकट अथवा अप्रकट अवस्थामे विहार करता है। भिक्षुओ, ये पाँच सुख-विहार है।

एक समय भगवान् कोसम्बीके घोपितारामने विहार करते थे। तव आयुष्मान आनन्द जहाँ भगवान्थे वहाँ पहुचे। पास जाकर भगवान्को नमस्कार कर एक ओर वैठे। एक ओर वैठे हुए आयुष्मान आनन्दने भगवान्से यह कहा—"भन्ते! वे कौनसे गुण है, जिनके होनेसे भिक्षु-सघमे विहार करता हुआ भिक्षु सुखपूर्वक रहता है ?"

"आनन्द! यदि भिक्षु स्वय शील-सम्पन्न होता है और दूसरेको शील-सम्पन्न होनेकी प्रेरणा नही भी करता, तो इतना होनेसे भी भिक्षु सघके वीचमे सुख-पूर्वक विहार करता है।"

"भन्ते! क्या कोई दूसरी भी स्थिति है, जिसमे भिक्षु सघके वीचमे सुख-पूर्वक विहार करता है ?"

"आनन्द! है। आनन्द! यदि भिक्षु स्वय शील-सम्पन्न होता है और दूसरेको शील-सम्पन्न होनेकी प्रेरणा नही भी करता, अपनी ही अपेक्षा रखने वाला होता है, दूसरेकी चिन्ता नही भी करने वाला होता है तो इतना होनेसे भी आनन्द! भिक्षु सघके वीचमे सुखपूर्वक विहार करता है।"

"भन्ते! क्या कोई दूसरी भी स्थिति है, जिसमे भिक्षु सघके वीचमें मुख-पूर्वक विहार करता है ?"

"आनन्द! है। आनन्द! यदि भिक्षु स्वय शील-सम्पन्न होता है और दूसरेको शील सम्पन्न होनेकी प्रेरणा नही भी करता, अपनी ही अपेक्षा रखता है, दूमरे की चिन्ता नही भी करने वाला होता है, अधिक-प्रसिद्ध नही होता, किन्तु अधिक-प्रमिद्ध न होनेके कारण त्रासको प्राप्त नही होता। इतना होनेने भी आनन्द! भिक्षु मघके वीचमे सुखपूर्वक विहार करता है।

"भन्ते! क्या कोई दूमरी भी स्थिति है, जिममे भिक्षु मघके वीचमें मुख पूर्वक विहार करता है?"

"आनन्द! है। आनन्द! यदि भिक्षु स्वय शील-सम्पन्न होता है और दूसरेको शील-सम्पन्न होने की प्रेरणा नही भी करता, अपनी ही अपेक्षा रखता है, किसी दूमरेकी चिन्ता नही भी करने वाला होता है, अधिक प्रसिद्व नही होना, किन्तु अधिक प्रसिद्ध न होनेके कारण त्रासको प्राप्त नही होता, तथा इमी जन्ममें सुख देने वाले चारो चैतसिक ध्यानोको सरलतासे, विना कठिनाई के प्राप्न करने वाला होता है। इतना होनेसे भी आनन्द! भिक्षु सघके वीचमें सुखपूर्वक विहार करना है।"

"भन्ते! क्या कोई दूमरी भी स्थिति है, जिसमें भिक्षु मघके वीचमे मुख-पूर्वक विहार करता है?"

"आनन्द! है। आनन्द! यदि भिक्षु स्वय शील-सम्पन्न होता है और दूसरेको शील-सम्पन्न होनेकी प्रेरणा नही भी करता, अपनी ही अपेक्षा रखता है किसी दूसरेकी चिन्ता नही भी करने वाला होता है, अधिक प्रमिद्ध नही होता किन्तु अधिक प्रसिद्ध न होनेके कारण त्रासको प्राप्त नही होता तथा इसी जन्ममें सुख देने वाले चारो चैतसिक ध्यानोको सरलतासे विना कठिनाईके प्राप्त करने वाला होता है और आस्रवोका क्षय कर अनास्रव चित्त-विमुक्ति, प्रज्ञा-विमुक्ति को इमी जन्ममें प्राप्तकर, साक्षात् कर, विहार करता है। इतना होनेसे आनन्द! भिक्षु सघके वीचमें सुखपूर्वक विहार करता है। आनन्द! मै किसी दूसरे सुख-विहारको इमसे वढकर या श्रेष्ठतर नही कहता हूँ।

भिक्षुओ, इन पाँच वातोसे युक्त भिक्षु आतिथ्य करने योग्य होता है, सत्कार करने योग्य होता है, दक्षिणाके योग्य होता है, हाथ जोडनेके योग्य होता है तथा लोगोंके लिये सर्वश्रेष्ठ पुण्य-क्षेत्र होता है। कौनसी पाँच वातोसे युक्त होता है,? भिक्षुओ, भिक्षु शील-युक्त होता है, समाधि-युक्त होता है, प्रज्ञा-युक्त होता है, विमुक्ति-युक्त होता है तथा विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनसे युक्त होता है। भिक्षुओ, इन पाँच वातोंसे युक्त भिक्षु आतिथ्य करने योग्य होता है, सत्कार करने योग्य होता है, दक्षिणा देनेके योग्य होता है; हाथ जोडनेके योग्य होता है तथा लोगोके लिये मर्व-श्रेष्ठ पुण्य-क्षेत्र होता है।

भिक्षुओ, इन पाँच वातोसे युक्त भिक्षु आतिथ्य करने योग्य होता है - पुण्य क्षेत्र होता है। कौनसी पाँच वातोंसे युक्त होता है! 'भिक्षुओ, भिक्षु अशैक्ष शील-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष समाधि-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष प्रज्ञा-स्कन्धसे

युक्त होता है, अशैक्ष विमुक्ति-ज्ञान दर्शनसे युक्त होता है। भिक्षुओ, इन पाँच बातोसे युक्त भिक्षु अतिथ्य करने योग्य होता है   पुण्य-क्षेत्र होता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते होती है, वह चारो दिशाओमे प्रसिद्ध होता है। कौनसी पाँच बाते ? भिक्षुओ, भिक्षु शीलवान् होता है, प्रातिमोक्षके नियमो का पालन करने वाला, आचरण-युक्त तथा योग्य स्थानपर ही जाने वाला, छोटेसे छोटे दोष मे भी भय देखने वाला तथा सम्यक् प्रकारसे शिक्षा ग्रहण करने वाला, बहुश्रुत होता है, श्रुत-धारी, श्रुत्वान्,जो आदिमे कल्याणकारक, मध्यमे कल्याणकारक, अन्तमे कल्याणकारक, अर्थयुक्त, व्यजन-युक्त, सम्पूर्ण रूप मे परिशुद्ध ब्रह्मचर्यको स्पष्ट करने वाले, वैसे धर्म उस भिक्षुके द्वारा बहुत करके सुने गये होते है, वाणी द्वारा धारण किये गये होते है, मन द्वारा परिचित किये गये होते है, अनुप्रेक्षित किये गये होते है, (सम्यक्-) दृष्टि द्वारा हृदयगम किये गये होते है, वह जैसे-तैसे चीवर-पिण्डपात-शयनासन-ग्लान-प्रत्यय भैषज्य आदि भिक्षुकी आवश्यकताओसे सन्तुष्ट होता है, वह इसी जन्ममे सुख देने वाले, चारो चैतसिक ध्यानोको सरलतासे, बिना कठिनाईके प्राप्त करने वाला होता है और आस्रवोका क्षय कर अनास्रव चित्त-विमुक्ति, प्रज्ञा विमुक्तिको इसी जन्ममे प्राप्त कर, साक्षात् कर विहार करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाच बाते होती है, वह भिक्षु चारो दिशाओमे प्रसिद्ध होता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बातें होती है, वह जगलमें एकान्त वास करनेमें समर्थ होता है। कौनसी पाँच बाते ? भिक्षुओ, भिक्षु शीलवान् होता है   सम्यक् प्रकारसे शिक्षा ग्रहण करने वाला, बहुश्रुत होता है   (सम्यक्-) दृष्टि द्वारा हृदयगम किये गये होते है, वह परिश्रमी होता है, शक्तिशाली, दृढ-पराक्रमी, कुशल-धर्मोकी धुरीको कन्धेपर उठाये रहने वाला, वह इसी जन्ममे सुख देने वाले, चारो चैतसिक-ध्यानोको, सरलतासे, बिना कठिनाईके प्राप्त करने वाला होता है और आस्रवोका क्षय कर, अनास्रव चित्त-विमुक्ति, प्रज्ञा-विमुक्तिको इसी जन्ममे प्राप्त कर, साक्षात् कर विहार करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बाते होती है, वह जगलमे एकान्त-वास करनेके योग्य होता है।

(२) अन्धक विन्द वर्ग

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते होती है, वैसा गृहस्थोंके ससर्गमे रहने वाला भिक्षु उनका अप्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा नही लगता, उनका आदर-भाजन नही रहता, उनका सत्कार-भाजन नही रहता। कौनसी पाँच बाते ? वह अमित्रोका विश्वास करने वाला होता है, वह स्वय किसी चीजका स्वामी न होने हुए भी

स्वामी की तरह 'यह लो, यह लो' कहने वाला होता है, आपससे झगडने वाले परिवारोकी सगति करने वाला होता है, कानाफूमी करने वाला होता है तथा अति माँगने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वातें होती है, वैसा गृहस्योंके ससर्गमे रहने वाला भिक्षु, उनका अप्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा नही लगता, उनका आदर-भाजन नही रहता, उनका मत्कार-भाजन नही रहता।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है, वैसा गृहस्थोके ससर्गमें रहने वाला भिक्षु, उनका प्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा लगता है, उनका आदर-भाजन होता है, उनका सत्कार भाजन होता है। कौनसी पाँच वाते? वह अमित्रोका विश्वास करने वाला नही होता है, वह स्वय किसी चीजका स्वामी न होते हुए भी स्वामीकी तरह 'यह लो, यह लो' कहने वाला नही होता है। आपसमे झगडने वाले परिवारो की सगति करने वाला नही होता है, कानाफूसी करने वाला नही होता है तथा अति-माँगने वाला नही होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है, वैसा गृहस्थोंके ससर्गमे रहने वाला भिक्षु, उनका प्रिय हो जाता है, उन्हे अच्छा लगता है, उनका आदर-भाजन होता है, उनका सत्कार-भाजन होता है।

भिक्षुओ, जिम श्रमणमें ये पाँच वातें हो, उसे अपना अनुयायी-श्रमण नही वनाना चाहिये। कौनमी पाँच वाते? वह वहुत दूर दूर रहता है, वह वहुत पास पास रहता है, (उपाध्याय का) भिक्षा-पात्र भर जाने पर उसे ग्रहण नही करता; सदोप वात वोलनेके समय टोकता नही है, वोलते सामय वीच वीचमे अपने वोलने लगता है, दुष्प्रज्ञ होता है, जड होता है, वज्रमूर्ख होता है। भिक्षुओ, जिस श्रमणमे ये पाँच वातें हो उसे अपना अनुयायी-श्रमण नही वनाना चाहिये।

भिक्षुओ, जिस श्रमणमे ये पाँच वाते हो, उसे अपना अनुयायी-श्रमण वनाना चाहिये। कौनसी पाँच वाते? वह वहुत दूर दूर नही रहता, वह वहुत पास पास नही रहता, (उपाध्याय) का भिक्षापात्र भर जानेपर उसे ग्रहण करता है, सदोप वात वोलनेके समय टोकता है, वोलते समय वीच वीचमे अपने नही वोलने लगता है, ज्ञानवान् होता है, जड नही होता है, वज्रमूर्ख नही होता है। भिक्षुओ, जिस श्रमणमें ये पाँच वाते हो उसे अपना अनुयायी-श्रमण वनाना चाहिये।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वातें होती है, वह इस योग्य नही होता कि वह सम्यक्-सम्वोधि को प्राप्त कर विहार कर मके। कौनसी पाँच वाते? वह रूपो (के आकर्पण) को सहन कर सकने वाला नही होता, वह शब्दो (के आकर्पण) को सहन कर सकने वाला नही होता, वह गन्धो (के आकर्पण) को सहन कर सकने वाला

नही होता, वह रसो (के आकर्षण) को सहन कर सकने वाला नही होता तथा वह स्पर्शो (के आकर्षण) को सहन कर सकने वाला नही होता। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वातें होती हैं, वह इस योग्य नही होता कि वह सम्यक्-सम्वोधिको प्राप्त कर विहार कर सके।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है, वह इस योग्य होता है कि वह सम्यक् सम्वोधिको प्राप्त कर विहार कर सके। कौनसी पाँच वातें ? वह रूपो (के आकर्षण) को सहन कर सकने वाला होता है, वह शब्दो (के आकर्षण) को सहन कर सकने वाला होता है, वह गन्धो के आकर्षणको सहन कर सकने वाला होता है, वह रसोके (आकर्षण) को सहन कर सकने वाला होता है तथा वह स्पर्शो (के आकर्षण) को सहन कर सकने वाला होता है। भिक्षुओ जिस भिक्षुमे ये पाच वाते होती है, वह इस योग्य होता है कि वह सम्यक्-सम्वोधिको प्राप्तकर विहार कर सके।

एक समय भगवान् मगध (जनपद) के अन्धकविन्द नामक स्थानपर विहार कर रहे थे। तव आयुष्मान् आनन्द जहाँ भगवान् थे वहाँ गये, पास जाकर भगवान्को अभिवादनकर एक ओर वैठ गये। एक ओर वैठे हुए आनन्दको भगवान्ने यह कहा—आनन्द! जो नये भिक्षु है, जिन्हे प्रव्रजित हुए अभी चिरकाल नही हुआ है, जो इस वुद्ध-शासन (= धर्म-विनय)मे अभी अभी आये है, उन्हे इन पाँच वातोकी शिक्षा देनी चाहिये, इनका अभ्यास कराना चाहिये, इनमे प्रतिष्ठित करना चाहिये। कौनसी पाँच वाते ? उन्हे कहना चाहिये—आओ, आयुष्मानो! तुम लोग शीलवान् वनो, प्राति-मोक्षके नियमोके पालन करने वाले, आचरण करने वाले, योग्य स्थानोमे ही विचरने वाले, छोटे से छोटे दोष के करनेमे भी भय मानने वाले तथा शिक्षाओका अच्छी तरह पालन करने वाले। इस प्रकार उन्हे प्रातिमोक्षके नियमोकी शिक्षा देनी चाहिये, इनका अभ्यास कराना चाहिये, इनमे प्रतिष्ठित करना चाहिये। उन्हे कहना चाहिये—आओ आयुष्मानो! तुम लोग सयतेन्द्रिय होकर विचरो, स्मृतिकी रक्षा करते हुए विचरो, स्मृतिको ज्ञान युक्त वनाते हुए विचरो, सुरक्षित-मन वाले होकर विचरो, सुरक्षित चित्तवाले होकर विचरो। इस प्रकार उन्हे इन्द्रिय सयमके नियमोकी शिक्षा देनी चाहिये, इनका अभ्यास कराना चाहिये, इनमे प्रतिष्ठित करना चाहिये। उन्हे कहना चाहिये—आओ आयुष्मानो! तुम लोग मितभाषी वनो, सयत वाणी वोलने वाले। इस प्रकार उन्हे मित-भाषणके नियमोकी शिक्षा देनी चाहिये, इनका अभ्यास कराना चाहिये, इनमे प्रतिष्ठित करना चाहिये। उन्हे कहना चाहिये—आओ आयुष्मानो! तुम लोग आरण्यक होओ, जगलोमें एकान्त स्थानपर रहो।

इस प्रकार उन्हे शरीरके एकान्त-वासकी शिक्षा देनी चाहिये, इसका अभ्यास कराना चाहिये, इसमे प्रतिष्ठित करना चाहिये। उन्हे कहना चाहिये—आओ आयुष्मानो! तुम सम्यक्-दृष्टिवाले होओ, सम्यक्-दर्शनसे युक्त। इस प्रकार उन्हे सम्यक्-दर्शनकी शिक्षा देनी चाहिये, इसका अभ्यास कराना चाहिये, इसमे प्रतिष्ठित करना चाहिये। आनन्द! जो नये भिक्षु है, जिन्हे प्रव्रजित हुए अभी चिरकाल नही हुआ है, जो इस बुद्ध-शासन (=धर्म-विनय) मे अभी अभी आये है, उन्हे इन पाँच बातोंकी शिक्षा देनी चाहिये, इनका अभ्यास कराना चाहिये, इनमे प्रतिष्ठित करना चाहिये।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बाते होती है, वह जैसे लाकर नरकमें ही डाल दी गई हो। कौनसी पाँच बातें? वह निवास-स्थानके विषयमें मात्सर्य-युक्त होती है, वह गृहस्थ-कुलोके विषयमे मात्सर्य-युक्त होती है, वह वस्तु-लाभके विषयमें मात्सर्य-युक्त होती है, वह गुणानुवादके विषयमे मात्सर्य-युक्त होती है तथा वह धर्मका पाठ सिखानेके विषयमे मात्सर्य-युक्त होती है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमे ये पाँच बाते होती है, वह जैसे लाकर नरकमें ही डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती है, वह जैसे लाकर स्वर्गमे ही डाल दी गई हो। कौनसी पाँच बाते? वह निवास-स्थानके विषयमें मात्सर्य-युक्त नही होती है, वह गृहस्थ-कुलोके विषयमे मात्सर्य-युक्त नही होती है, वह वस्तु-लाभके विषयमे मात्सर्य-युक्त नही होती है, वह गुणानुवादके विषयमे मात्सर्य-युक्त नही होती है तथा वह धर्मका पाठ सिखानेके विषयमे मात्सर्य-युक्त नही होती है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमे ये पाँच बाते होती है, वह जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बाते होती है, वह जैसे लाकर नरकमें ही डाल दी गई हो। कौनसी पाच बाते? वह बिना सोचे, बिना विचारे अप्रशसनीयकी प्रशसा करती है, बिना सोचे बिना विचारे प्रशसनीयकी निन्दा करती है, बिना सोचे, बिना विचारे अश्रद्धेय स्थानपर श्रद्धा व्यक्त करती है, बिना सोचे, बिना विचारे श्रद्धेय स्थानपर अश्रद्धा व्यक्त करती है, श्रद्धापूर्वक दी गई चीज नही ग्रहण करती है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमे ये पाँच बाते होती है, वह जैसे लाकर नरकमे ही डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमे ये पाँच बातें होती है, वह लाकर जैसे स्वर्गमे ही डाल दी गई हो। कौनसी पाँच बातें? वह सोच-विचारकर अप्रशसनीयकी अप्रशसा करती है, सोच-विचारकर, प्रशसनीयकी प्रशसा करती है, सोच-विचारकर अश्रद्धेय स्थानपर अश्रद्धा व्यक्त करती है, सोच-विचारकर श्रद्धेय स्थान पर श्रद्धा

व्यक्त करती है, श्रद्धापूर्वक दी गई चीज ग्रहण करती है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमे ये पाँच वाते होती है, वह जैसे लाकर स्वर्गमे ही डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमे ये पाँच बाते होती है, वह लाकर जैसे नरकमे डाल दी गई हो। कौनसी पाँच वाते? वह बिना सोचे, बिना विचारे अप्रशसनीय की प्रशसा करती है, विना सोचे, विना विचारे प्रशसनीय की निन्दा करती है, ईर्पालु होती है, मात्सर्य-युक्त होती है, श्रद्धासे दी गई वस्तु ग्रहण नही करती है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमे ये पाँच वाते होती है, वह लाकर जैसे नरकमें डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमे ये पाच वाते होती है वह लाकर जैसे स्वर्गमे डाल दी गई हो। कौन सी पाँच वाते? वह सोच-विचारकर निन्दनीय की निन्दा करती है, सोच-विचारकर प्रशसनीयकी प्रशसा करती है, ईर्षालु नही होती, मात्सर्य-युक्त नही होती, श्रद्धासे दी गई वस्तु ग्रहण करती है। भिक्षुओ जिस भिक्षुणी मे ये पाच वाते होती है, वह लाकर जैसे स्वर्गमे डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमे ये पाँच वाते होती है, वह लाकर जैसे नरकमे डाल दी गई हो। कौन सी पाँच वाते? वह विना सोचे, विना विचारे अप्रशसनीयकी प्रशसा करती है, विना सोचे विना विचारे प्रशसनीयकी निन्दा करती है, मिथ्या-दृष्टि वाली होती है, मिथ्या-सकल्प वाली होती है, श्रद्धासे दी गई वस्तु ग्रहण नही करती है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमे ये पाँच वाते होती है, वह लाकर जैसे नरकमे डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमे ये पाँच वाते होती है, वह लाकर स्वर्गमे डाल दी गई हो। कौनसी पाँच वाते? वह सोच-विचारकर निन्दनीय की निन्दा करती है, सोच-विचारकर प्रशसनीयकी प्रशसा करती है, सम्यक्-दृष्टि वाली होती है, सम्यक्-सकल्प वाली होती है, श्रद्धासे दी गई वस्तु ग्रहण करती है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच वाते होती है, वह लाकर जैसे स्वर्गमे डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमे ये पाँच वाते होती है, वह लाकर जैसे नरकमे डाल दी गई हो। कौनसी पाँच वाते? वह विना सोचे, विना विचारे अप्रगसनीयकी प्रशसा करती है; विना सोचे, विना विचारे प्रगसनीय की निन्दा करती है, मिथ्या-वाणी वाली होती है, मिथ्या-कर्मान्त वाली होती है, श्रद्धासे दी गई वस्तु ग्रहण नही करती है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमे ये पाच वाते होती है, वह लाकर जैसे नरकमें डालमे दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमे ये पाँच बाते होती हैं, वह लाकर जैसे स्वर्गमें डाल दी गई हो। कौनसी पाँच बाते ? वह सोच-विचाकर निन्दनीयकी निन्दा करती है, सोच विचारकर प्रशसनीयकी प्रशमा करती है, मम्यक्-वाणी वाली होती है, सम्यक् कर्मान्त वाली होती है, श्रद्धामे दी गई वस्तु ग्रहण करती है। भिक्षुओ . स्वर्गमे डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमे ये पाँच बाते होती है, वह लाकर जैसे नरकमें डाल दी गई हो। कौन सी पाँच बातें ? वह विना सोचे, विना विचारे अप्रशसनीय की प्रशसा करती है , विना सोचे, विना विचारे, प्रशसनीय की निन्दा करती है, मिथ्या-व्यायाम वाली होती है, मिथ्या-स्मृति वाली होती है तथा श्रद्धासे दी गई वस्तु ग्रहण नही करती है। भिक्षुओ नरकमें डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती है, वह लाकर जैसे स्वर्गमे डाल दी गई हो। कौनसी पाँच बातें ? वह सोच विचारकर निन्दनीयकी निन्दा करती हैं, सोच विचार कर प्रशसनीयकी प्रशसा करती है, सम्यक्-व्यायाम वाली होती है, सम्यक् स्मृति वाली होती है तथा श्रद्धासे दी गई वस्तु ग्रहण करने वाली होती है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती हैं वह लाकर जैसे स्वर्गमें डाल दी गई हो।

(३) गिलान-वर्ग

एक समय भगवान् वैशाली (नगर) के पासके महावनमे कूटागार शालामें निवास करते थे।

तव भगवान् शामके समय ध्यान-भावनासे उठ जहाँ रोगी-शाला थी, वहाँ गये। वहाँ भगवान्ने किसी दुर्वल रोगी भिक्षुको देखा। तव भगवान् वहाँ विछे आसनपर बैठे। बैठकर भगवान्ने भिक्षुओको सम्वोधित किया—"भिक्षुओ ! जिस दुर्वल रोगी भिक्षुमे ये पाँच बातें रहती है, उसके बारेमे यह आशा की जा सकती है कि वह अचिर कालमें ही आस्रवोका क्षय कर प्राप्त कर विहार करेगा। कौनसी पाँच बातें ? भिक्षुओ, वह भिक्षु शरीरके प्रति अशुभ (=जुगुप्सा) भावनासे युक्त हो विहार करता है, आहारके प्रति प्रतिकूल सज्ञा वाला, समस्त लोकके प्रति वैराग्यकी भावनासे युक्त, सब सस्कारोको अनित्य समझने वाला तथा मरणानुस्मृति उसके मनमे सुप्रतिष्ठित होती है। भिक्षुओ, जिस दुर्वल रोगी भिक्षुमे ये पाँच बातें रहती है, उसके बारेमें यह आशा की जा सकती है कि वह अचिर कालमें ही आस्रवोका क्षय कर . ... प्राप्त कर विहार करेगा।

भिक्षुओ, जो कोई भी भिक्षु या भिक्षुणी इन पाँच बातोकी भावना करेगी, उसके बारेमे यह आशा की जा सकती है कि उसे दो फलोमे से एक फलकी प्राप्ति होगी—या तो इसी जन्ममें अर्हत्व अथवा उपाधि-शेष रहने पर अनागामी-भाव। कौनसी पाँच ? भिक्षुओ, भिक्षुकी अपनी स्मृति ही सभी धर्मों(= अस्तित्वो)की उत्पत्ति-विनाश सम्बन्धी प्रज्ञाको लेकर सुप्रतिष्ठित होती है, वह शरीरके प्रति अशुभ (= जुगुप्सा) भावनासे युक्त हो विहार करता है, आहारके प्रति प्रतिकूल-सज्ञावाला, समस्त लोकके प्रति वैराग्यकी भावनासे युक्त तथा सभी सस्कारोको अनित्य समझने वाला। भिक्षुओ, जो कोई भी भिक्षु या भिक्षुणी इन पाँच बातोकी भावना करेगी, उसके बारेमे यह आशा की जा सकती है कि उसे दो फलोमे से एक फलकी प्राप्ति होगी—या तो इसी जन्ममे अर्हत्व अथवा उपाधि-शेष रहने पर अनागामी-भाव।

भिक्षुओ, जिस रोगीमे ये पाँच बाते होती है, उसकी शुश्रूषा करना बडा कठिन होता है। कौन सी पाँच बाते ? पथ्य ग्रहण करने वाला नही होता, पथ्यकी मात्रा नही जानता, दवाईका सेवन करने वाला नही होता, अपने हितैषी शुश्रूषा करने वालेको रोगका यथार्थ रूप नही बताता कि रोग जा रहा है वा रोग आ रहा है वा रोग स्थिर है, और वह उन शारीरिक वेदनाओको—जो दु खद होती है, जो तीव्र होती है, जो चुभने वाली होती है, जो कडवी होती है, जो अप्रिय होती है, जो बुरी होती है तथा जो प्राणोका हरण कर लेने वाली जैसी प्रतीत होती है, उनको सहन करने वाला नही होता। भिक्षुओ, जिस रोगीमें ये पाँच बातें होती है, उसकी शुश्रूषा करना बड़ा कठिन होता है।

भिक्षुओ, जिस रोगीमे ये पाँच बाते होती हैं, उसकी शुश्रुषा करना सहज होता है। कौनसी पाँच बाते ? पथ्य ग्रहण करने वाला होता है, पथ्यकी मात्रा जानता है, दवाईका सेवन करने वाला होता है, अपने हितैषी शुश्रूषा करने वालेको रोगका यथार्थ रूप बताने वाला होता है कि रोग जा रहा है वा रोग आ रहा है वा रोग स्थिर है, और वह उन शारीरिक वेदनाओको—जो दु खद होती है, जो तीव्र होती है, जो चुभने वाली होती है, जो कडुवी होती है, जो अप्रिय होती है तथा जो प्राणोका हरण कर लेने वाली जैसी प्रतीत होती है—उनको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस रोगीमें ये पाँच बाते होती है, उसकी शुश्रूषा करना सहज होता है।

भिक्षुओ, जिस रोगी-शुश्रूषकमे ये पाँच बाते होती है वह रोगीकी सेवामे समर्थ नही होता। कौनसी पाँच ? वह औषध नही तैयार कर सकता, वह पथ्य-अपथ्य

नही जानता, अपथ्य ले आता है पथ्य हटा ले जाता है, वस्तु-लोभ से रोगी की सेवामें रहता है, मैत्री-चित्तसे सेवा नही करता, उसे मल-मूत्र, उल्टी या थूक हटाकर फेंकनेमे घृणा मालूम होती है तथा वह समय समयपर रोगीको धार्मिक वातचीत करके ढारस वधानेमें, वढावा देनेमे, प्रमुदित करनेमे, उत्साहित करनेमे, प्रहर्षित करनेमे समर्थ नही होता। भिक्षुओ, जिस रोगी शुश्रूपकमें ये पाच बाते होती है वह रोगी की सेवामें समर्थ नही होता।

भिक्षुओ, जिस रोगी-शुश्रूषकमें ये पाच बाते होती है वह रोगीकी सेवामे समर्थ होता है। कौनसी पाँच? वह औपध तैयार कर सकता है, वह पथ्य-अपथ्य जानता है, पथ्य ले आता है, अपथ्य हटा ले जाता है; वह वस्तु-लोभसे रोगीकी सेवामे नही रहता है, मैत्री-चित्तसे सेवा करता है, उसे मल-मूत्र, उल्टी या थूक हटाकर फेंकनेमें घृणा नही मालूम होती है तथा वह समय समय पर रोगीको धार्मिक बातचीत करके ढारस वँधाने मे, वढावा देनेमें, प्रमुदित करनेमे, उत्साहित करनेमे, प्रहर्पित करनेमे समर्थ होता है। भिक्षुओ, जिस रोगी शुश्रूपकमें ये पाँच बातें होती हैं, वह रोगीकी सेवामें समर्थ होता है।

भिक्षुओ, ये पाँच बाते आयु घटाने वाली होती है। कौनसी पाँच? अपथ्य सेवन करने वाला होता है, पथ्यकी मात्रा नही जानता, कच्चा-पक्का खाने वाला होता है, समय-असमय विचरने वाला होता है तथा अब्रह्मचारी होता है। भिक्षुओ, ये पाँच बाते आयु घटाने वाली होती है।

भिक्षुओ, ये पाँच बाते आयु वढाने वाली होती है। कौनसी पाँच? पथ्य सेवन करने वाला होता है, पथ्यकी मात्रा जानता है, अच्छी तरह पका हुआ ही खाने वाला होता है, समय देखकर विचरने वाला होता है तथा ब्रह्मचारी होता है। भिक्षुओ, पाँच बातें आयु वढाने वाली होती है।

भिक्षुओ, ये पाँच बाते आयु घटाने वाली होती है। कौनसी पाँच? अपथ्य सेवन करने वाला होता है, पथ्यकी मात्रा नही जानता, कच्चा-पका खाने वाला होता है, दुश्शील होता है तथा कुसगतिमे रहने वाला होता है। भिक्षुओ ये पाँच बाते आयु घटाने वाली होती है।

भिक्षुओ, ये पाँच बाते आयु वढाने वाली होती है। कौन सी पाँच? पथ्य सेवन करने वाला होता है, पथ्यकी मात्रा जानता है, अच्छी तरह पका हुआ ही खाने वाला होता है, सदाचारी होता है तथा सुसगति मे रहने वाला होता है। भिक्षुओ, ये पाँच बातें आयु वढाने वाली होती है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बाते हो वह सघसे पृथक अकेला रहने देनेके योग्य नही होता। कौन सी पाँच बाते ? भिक्षुओ, वह भिक्षु जैसे-तैसे चीवर से सन्तुष्ट नही होता, जैसी-तैसी भिक्षासे सतुष्ट नही होता, जैसे-तैसे शयनासनसे सन्तुष्ट नही होता, जैसे-तैसे ग्लान-प्रत्यय भैषज्य-परिष्कारसे सतुष्ट नही होता तथा काम-सकल्प-बहुल होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते हो वह सघसे पृथक अकेला रहने देनेके योग्य नही होता।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते हो वह सघसे पृथक् अकेला रहने देनेके योग्य होता है। कौनसी पाँच बाते ? भिक्षुओ, वह भिक्षु जैसे-तैसे चीवरसे सन्तुष्ट होता है, जैसी-तैसी भिक्षासे सन्तुष्ट होता है, जैसे-तैसे शयनासनसे सन्तुष्ट होता है, जैसे तैसे ग्लान-प्रत्यय भैषज्य-परिष्कारसे सतुष्ट होता है, तथा वह नैष्क्रम-सकल्प-बहुल होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते हो वह सघसे पृथक अकेला रहने देनेके योग्य होता है।

भिक्षुओ, ये पाँच श्रमण-दु ख है। कौनसे पाँच ? भिक्षुओ, भिक्षु जैसे-तैसे चीवरसे असन्तुष्ट होता है, जैसी-तैसी भिक्षासे असन्तुष्ट होता है, जैसे-तैसे शयनामनसे असन्तुष्ट होता है, जैसे-तैसे ग्लान-प्रत्यय-भैषज्य-परिष्कारसे असन्तुष्ट होता है तथा बेमनसे ब्रह्मचर्य वास करता है। भिक्षुओ, ये पाँच श्रमण-दु ख है।

भिक्षुओ, ये पाँच श्रमण-सुख है। कौनसे पाँच ? भिक्षुओ, भिक्षु जैसे-तैसे चीवरसे सन्तुष्ट होता है, जैसी-तैसी भिक्षासे सन्तुष्ट होता है, जैसे-तैसे शयनासनसे सन्तुष्ट होता है, जैसे-तैसे ग्लान-प्रत्यय-भैपज्य-परिष्कारसे सन्तुष्ट होता है और मनसे ब्रह्मचर्य-वास करता है। भिक्षुओ, ये पाँच श्रमण-सुख है।

भिक्षुओ, ये पाँच अपाय-गामी होते है, नरक-गामी होते है, मड गये होते है, इनका उद्धार नही हो सकता। कौनसे पाँच ? जो मातृ-हत्या करने वाला होता है, जो पिताकी हत्या करने वाला होता है, जो अर्हतकी हत्या करने वाला होता है, जो दुष्ट चित्तसे तथागतके शरीरमें रक्त बहाने वाला होता है तथा जो सघमें फूट डालने वाला होता है। भिक्षुओ, ये पाँच अपाय-गामी होते है, नरक-गामी होते है, मड गये होते है, उनका उद्धार नही हो सकता।

भिक्षुओ, ये पाँच हानियाँ है। कौनसी पाँच ? सगे सम्बन्धियोका न रहना, सम्पत्तिका नाश, स्वास्थ्य बिगड जाना, शीलकी हानि तथा सम्यक्-दृष्टिसे पतित हो जाना। भिक्षुओ सगे-सम्बन्धियोंके न रहने, सम्पत्तिका नाश हो जाने अथवा स्वास्थ्य बिगड जानेके कारण प्राणी मरनेके अनन्तर अपाय, दुर्गति तथा नरकको नही प्राप्त

होते हैं, किन्तु शीलकी हानि तथा सम्यक्-दृष्टिसे पतित हो जानेसे प्राणी मरनेके अनन्तर, अपाय, दुर्गति तथा नरकको प्राप्त होते हैं। भिक्षुओ, ये पाँच हानियाँ हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच सम्पत्तियाँ हैं। कौनसी पाँच ? सगे-सम्बन्धियोंका होना, भोग-सम्पत्तिका होना, स्वास्थ्यका होना, शील-युक्त होना, सम्यक् दृष्टि-युक्त होना। भिक्षुओ सगे सम्बन्धियोंके रहनेसे, भोग-सम्पत्तिके रहनेसे, स्वास्थ्यके रहनेसे, प्राणी शरीरके न रहने पर, मरनेके अनन्तर, सुगति, स्वर्ग-लोकमे जन्म ग्रहण नही करते, किन्तु शील-सम्पत्तिके रहने पर या सम्यक्-दृष्टि होनेसे ही प्राणी शरीरके न रहनेपर, मरनेके अनन्तर सुगति, स्वर्ग-लोकमें जन्म ग्रहण करते हैं। भिक्षुओ, ये पाँच सम्पत्तियाँ हैं।

(४) राज वर्ग

भिक्षुओ, जिस चक्रवर्ती राजामें ये पाँच बाते होती हैं वह धर्मानुसार ही (राज-) चक्र चलाता है, उस धर्मचक्र को उसका कोई भी शत्रु नही अप्रवर्तित कर सकता। कौनसी पाँच बातें ? भिक्षुओ, वह चक्रवर्ती राजा अर्थज्ञ होता है, धर्मज्ञ होता है, मात्रज्ञ होता है, कालज्ञ होता है तथा परिषदका जानकार होता है। भिक्षुओ, जिस चक्रवर्ती राजामें ये पाँच बातें होती है वह धर्मानुसार ही (राज-) चक्र चलाता है, उस धर्मचक्रको उसका कोई भी शत्रु अप्रवर्तित नही कर सकता। इसी प्रकार भिक्षुओ तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध में भी पाँच बाते है और वे धर्मानुसार ही अपने अनुपम धर्म-चक्रका प्रवर्तन करते हैं, उस धर्मचक्रको लोकमें न कोई श्रमण, न कोई ब्राह्मण, न देव, न मार और न कोई ब्रह्मा ही अप्रवर्तित कर सकता है। कौनसी पाँच बातें ? भिक्षुओ, तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध अर्थज्ञ होते है, धर्मज्ञ होते हैं, मात्रज्ञ होते हैं, कालज्ञ होते हैं तथा परिषदके जानकार होते हैं। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धमें पाँच बातें होती है और वे धर्मानुसार ही अपने धर्म-चक्रका प्रवर्तन करते हैं, उस धर्म-चक्रको इस लोकमे न कोई श्रमण, न कोई ब्राह्मण, न देव, न मार और न कोई ब्रह्मा ही अप्रवर्तित कर सकता है।

भिक्षुओ, जिस चक्रवर्ती-राजाके ज्येष्ठ पुत्रमें ये पाँच बातें होती है, वह पिता द्वारा प्रवर्तित (राज-) चक्रको धर्मानुसार ही अनुप्रवर्तित करता है, उस (राज-) चक्रको उसका कोई भी शत्रु अप्रवर्तित नही कर सकता। कौन-सी पाँच बातें ? भिक्षुओ, चक्रवर्ती राजाका ज्येष्ठ पुत्र अर्थज्ञ होता है, धर्मज्ञ होता है, मात्रज्ञ होता है, कालज्ञ होता है, तथा परिषदका जानकार होता है। भिक्षुओ, जिस चक्रवर्ती राजाके ज्येष्ठ पुत्रमें ये पाँच बातें होती है, वह पिता द्वारा प्रवर्तित (राज-) चक्रको धर्मानुसार ही अनुप्रवर्तित करता है, उस (राज-) चक्रको उसका कोई

भी शत्रु अप्रवर्तित नही कर सकता। इसी प्रकार भिक्षुओ सारिपुत्रमे भी ऐसी पाँच बाते है, जिनके होनेसे वे तथागतके द्वारा प्रवर्तित अनुपम धर्मचक्रका यथोचित अनुप्रवर्तन करते है, उस धर्म-चक्रको इस लोकमे न श्रमण, न ब्राह्मण, न देव, न मार और न ब्रह्मा ही अप्रवर्तित कर सकता है। कौन-सी पाँच बाते ? भिक्षुओ, सारिपुत्र अर्थज्ञ है, धर्मज्ञ है, मात्रज्ञ है, कालज्ञ है तथा परिषद्के जानकार है। भिक्षुओ, सारिपुत्रमे ये ऐसी पाँच बाते है, जिनके होनेसे वे तथागतके द्वारा प्रवर्तित अनुपम धर्मचक्रका यथोचित अनुप्रवर्तन करते है, उस धर्म-चक्रको इस लोकमे न श्रमण, न ब्राह्मण, न देव, न मार और न ब्रह्मा ही अप्रवर्तित कर सकता है।

भिक्षुओ, जो भी धार्मिक धर्म-राजा चक्रवर्ती-नरेश होता है, वह भी अराजकताके चक्रको प्रवर्तित नही करता। ऐसा कहनेपर एक भिक्षुने भगवान्से निवेदन किया—"भन्ते ! धार्मिक धर्म-राजा चक्रवर्ती-नरेशका राजा कौन होता है ?"

भगवान्ने उत्तर दिया—"हे भिक्षु ! धर्म। हे भिक्षु ! जो धार्मिक धर्म-राजा चक्रवर्ती-नरेश होता है वह धर्मको ही लेकर, धर्मका ही सत्कार करते हुए, धर्मका ही गौरव करते हुए, धर्मकी पूजा करते हुए, धर्म-ध्वजी होकर, धर्म-केतु होकर धर्मका ही आधिपत्य स्वीकार कर, अन्त पुरमे धार्मिक आवरण तथा सरक्षणकी व्यवस्था करता है।

फिर हे भिक्षु ! जो धार्मिक धर्म-राजा चक्रवर्ती-नरेश होता है, वह धर्मको ही लेकर, धर्मका ही सत्कार करते हुए, धर्मका ही गौरव करते हुए, धर्मकी पूजा करते हुए, धर्म-ध्वजी होकर, धर्म-केतु होकर, धर्मका ही आधिपत्य स्वीकार कर नियुक्त क्षत्रिय-सेनाके धार्मिक आवरण तथा सरक्षणकी व्यवस्था करता है। वह ब्राह्मणोके वैश्यो (=गृहपतियो) के, निगम, तथा जनपदके लोगोके, श्रमण-ब्राह्मणोके तथा पशु-पक्षियोके भी धार्मिक आवरण तथा सरक्षणकी व्यवस्था करता है।

फिर हे भिक्षु ! वह धार्मिक धर्म-राजा चक्रवर्ती-नरेश धर्मको ही लेकर, धर्मका ही सत्कार करते हुए, धर्मका ही गौरव करते हुए, धर्मकी ही पूजा करते हुए, धर्म-ध्वजी होकर,धर्म-केतु होकर, धर्मका ही आधिपत्य स्वीकारकर, अन्त पुरमे धार्मिक आवरण तथा सरक्षणकी व्यवस्था करता है। वह नियुक्त क्षत्रिय-सेनाके, ब्राह्मणोके, वैश्योके, निगम तथा जनपदके लोगोके, श्रमण ब्राह्मणोके तथा पशुपक्षियोके भी धार्मिक आवरण तथा सरक्षणकी व्यवस्था कर धर्मानुसार ही (राज-) चक्र प्रवर्तित करता है। उस (राज-) चक्रको उनका कोई भी शत्रु अप्रवर्तित नही कर सकता।

इसी प्रकार भिक्षु ! तथागत अर्हत् सम्यक्-सम्बुद्ध, धार्मिक, धर्म-राज धर्मको ही लेकर, धर्मका ही सत्कार करते हुए, धर्मका ही गौरव करते हुए, धर्मकी ही पूजा करते हुए, धर्म-ध्वजी होकर, धर्म-केतु होकर, धर्मका ही आधिपत्य स्वीकार कर भिक्षुओंके आवरण तथा सरक्षणकी व्यवस्था करते है—ऐसा शारीरिक कर्म करना चाहिये, ऐसा शारीरिक कर्म नही करना चाहिये, ऐसा वाणीका कर्म करना चाहिये, ऐसा वाणीका कर्म नही करना चाहिये, ऐसा मनोकर्म करना चाहिये, ऐमा मनोकर्म करना चाहिये, ऐसी जीविका करनी चाहिये, ऐसी जीविका नही करनी चाहिये, तथा इस प्रकारके ग्राम-निगममें रहना चाहिये और इस प्रकारके ग्राम-निगममे न रहना चाहिये।

और फिर भिक्षु ! तथागत अर्हत् सम्यक्-सम्बुद्ध, धार्मिक, धर्म-राज धर्मको ही लेकर, धर्मका ही सत्कार करते हुए, धर्मका ही गौरव करते हुए, धर्मकी ही पूजा करते हुए, धर्म-ध्वजी होकर, धर्म-केतु होकर, धर्मका ही आधिपत्य स्वीकार कर, भिक्षुओंके आवरण तथा सरक्षणकी व्यवस्था करते है—ऐमा शारीरिक-कर्म करना चाहिये, ऐसा शारीरिक-कर्म नही करना चाहिये, ऐसा वाणीका कर्म करना चाहिये, ऐसा वाणीका कर्म नही करना चाहिये, ऐसा मनोकर्म करना चाहिये, ऐसा मनोकर्म नही करना चाहिये, ऐमी जीविका करनी चाहिये, ऐसी जीविका नही करनी चाहिये तथा इस प्रकारके ग्राम-निगममे रहना चाहिये और इस प्रकारके ग्राम-निगममे न रहना चाहिये। भिक्षु ! वह तथागत अर्हत्-सम्यक्-सम्बुद्ध, धार्मिक, धर्म-राज धर्मको ही लेकर, धर्मका ही सत्कार करते हुए, धर्मका ही गौरव करते हुए, धर्मकी ही पूजा करते हुए, धर्म-ध्वजी होकर, धर्म-केतु होकर, धर्मका ही आधिपत्य स्वीकार कर, भिक्षुओंके आवरण तथा सरक्षणकी व्यवस्था करते है। वे भिक्षुणियोंके, उपासकोके, उपासिकाओंके आवरण तथा सरक्षणकी व्यवस्था करते है। वे धर्मसे ही अनुपम धर्मचक्र प्रवर्तित करते है, इस धर्म-चक्रको इस लोकमे न कोई श्रमण, न कोई ब्राह्मण, न देव, न मार और न कोई ब्रह्मा ही अप्रवर्तित कर सकता है।

भिक्षुओ, जिम मुकुटधारी क्षत्रिय-राजामे ये पाँच बाते होती हैं, वह जिस जिस दिशामे विहार करता है, वह अपने राज्यकी सीमामे ही विचरता है। कौन-सी पाँच बातें ? भिक्षुओ, मुकुटधारी क्षत्रिय-राजा माता तथा पिता दोनोकी ओरसे सुजात होता है, सात पीढी तक शुद्ध वश वाला, जाति-वादकी दृष्टिसे निर्दोष, ऐश्वर्य-युक्त होता है, महा धनवान्, उसके खजाने तथा धनागार भरे रहते है, बलवान होता है, राज-भक्त आज्ञाकारिणी चतुरगी सेनासे युक्त, उसका महामत्री (= परिनायक)

भी पण्डित होता है, बुद्धिमान होता है, मेधावी होता है, भूत-भविष्यत-वर्तमानकी बातोपर विचार करनेमे समर्थ होता है, उसके ये चारो गुण उसे यशस्वी बनाते है—इन पाँच गुणोसे युक्त वह जिस जिस दिशामे जाता है, अपने राज्यकी सीमामे ही जाता है। ऐसा किसलिये ? भिक्षुओ, जो विजयी होता है, उसकी यही रीति होती है।

इस प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते होती है, वह जिस जिस दिशामे जाता है 'विमुक्त' चित्त रहकर ही विचरता है। कौन-सी पाँच बाते ? भिक्षुओ, भिक्षु शीलवान् होता है, प्रातिमोक्षके नियमोका पालन करने वाला, योग्य विधिसे और योग्य-स्थानपर ही विचरने वाला, छोटी-से-छोटी गल्ती करनेमे भी भय मानने वाला, शिक्षापदोको सम्यक् प्रकारसे ग्रहण करने वाला, वैसे ही जैसे मुकुट-धारी क्षत्रिय-राजा (ऊँची) जाति वाला होता है, बहुश्रुत होता है, श्रुतको धारण करने वाला, श्रुतका सग्रह करने वाला, जो आदिमे कल्याणकारक, मध्यमे कल्याण-कारक, अन्तमे कल्याणकारक, सार्थक, सव्यजन, केवल परिपूर्ण परिशुद्ध ब्रह्मचर्यका गुणानुवाद करने वाले धर्म होते है वैसे धर्म इसके बहुश्रुत होते है, वाणी द्वारा धारण किये गये होते हैं, मनके द्वारा परिचित किये गये होते है, (सम्यक्–) दृष्टि द्वारा भली प्रकार परीक्षित तथा सम्यक् प्रकारसे ग्रहण किये गये होते है, जैसे राजा ऐश्वर्य-युक्त होता है, महाधनवान, उसके खजाने तथा धनागार भरे रहते है, वह अकुशल-धर्मोके प्रहाणके लिये तथा कुशल-धर्मोको धारण करनेके लिये प्रयत्नशील रहता है,सामर्थ्यवान् होता है, दृढ पराक्रमी होता है, उसने कुशल धर्मोके प्रति अपने कधेका जुआ उतारकर रख नही दिया होता है जैसे मुकुट धारी क्षत्रिय-राजा बलवान् होता है, वह प्रज्ञावान् होता है, वस्तुओकी उत्पत्ति तथा निरोधका यथार्थ ज्ञान करानेवाली प्रज्ञासे युक्त, आर्य, बीधने वली, सम्यक् प्रकारसे दुःख-क्षयकी ओर ले जाने वाली प्रज्ञासे युक्त, जैसे मुकुट धारी क्षत्रिय महामत्रीसे युक्त होता है, उसके ये चारो गुण विमुक्ति-फल-प्रदायी होते है। वह इस पाँचवें विमुक्ति फलसे युक्त होकर जिस जिस दिशामे विहार करता है, विमुक्त-चित्त हो विहार करता है। ऐसा क्यो ? भिक्षुओ, जो विमुक्त-चित्त होता है, उसकी यही रीति होती है।

भिक्षुओ, मकुटधारी क्षत्रिय-राजा का ज्येष्ठ पुत्र पांच बातोसे युक्त होनेपर राज्यकी कामना करता है। कौन-सी पाँच बातोसे युक्त होनेपर ? भिक्षुओ, मुकुटधारी क्षत्रिय राजाका ज्येष्ठ पुत्र माता तथा पिता दोनोकी ओरसे सुजात होता है, सात पीढी तक शुद्ध वश वाला, जाति-वादकी दृष्टिसे निर्दोष, सुन्दर होता है, दर्शनीय होता है, प्रिय लगने वाला होता है, श्रेष्ठतम वर्णसे युक्त, माता पिताका

प्रिय होता है, उन्हे अच्छा लगने वाला, निगम तथा जनपदके लोगोका प्रिय होता है, उन्हे अच्छा लगने वाला, जो मुकुटधारी क्षत्रिय राजाओके शिल्प होते है जैसे हस्ती-शिल्प, अश्व-शिल्प, रथ-शिल्प, धनुशिल्प, तथा खड्ग-शिल्प, उनके विषयमे सम्पूर्ण रूपसे शिक्षित होता है। उसके मनमें होता है कि मै माता तथा पिता दोनोकी ओरसे सुजात हूँ, सात पीढी तक शुद्ध वश वाला, जातिवादकी दृष्टिसे निर्दोप, मै क्यो राज्यकी कामना न करूँ? मै सुन्दर हूँ, दर्शनीय हूँ, प्रिय लगने वाला हूँ, श्रेष्ठतम वर्णसे युक्त हूँ, मै क्यो राज्यकी कामना न करूँ? मै माता-पिताका प्रिय हूँ, उन्हे अच्छा लगने, वाला हूँ, मै क्यो राज्यकी कामना न करूँ? मै निगम तथा जनपदके लोगोका प्रिय हूँ, उन्हे अच्छा लगने वाला हूँ, मै क्यो राज्यकी कामना न करूँ? जो मुकुटधारी क्षत्रिय राजाओके शिल्प होते है जैसे हस्ती-शिल्प, अश्व-शिल्प, रथ-शिल्प, धनुशिल्प, तथा खड्ग-शिल्प, उनके विषयमे सम्पूर्ण रूपसे शिक्षित हूँ, मै क्यो राज्यकी कामना न करूँ? भिक्षुओ, जिस मुकुटधारी क्षत्रिय राजाके ज्येष्ठ पुत्रमे ये पाँच बातें होती है, वह राज्यकी कामना करता है।

इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बाते होती है वह आस्रवोके क्षयकी कामना करता है। कौन-सी पाँच बाते? भिक्षुओ, भिक्षु श्रद्धावान् होता है, वह तथागतकी 'बोधि' के प्रति विश्वासी होता है—वह भगवान् अर्हत है, सम्यक्-सम्बुद्ध है, विद्या तथा आचरणसे युक्त है, सुगति-प्राप्त है, लोकके जानकार है, अनुपम है, पुरुषोका दमन करने वाले सारथी है, देव-मनुष्योके शास्ता है, बुद्ध है, भगवान् है। वह निरोग होता है, स्वस्थ होता है, सम-प्रकृतिसे युक्त, न अतिशील और न अति ऊष्ण, मध्यम-भावसे प्रयत्न करनेमे समर्थ। वह शठ नही होता है, मायावी नही होता, शास्ता अथवा विज्ञ सब्रह्मचारियोके सम्मुख यथार्थ बात प्रकट कर देने वाला होता है। वह अकुशल-धर्मोके प्रहाणके लिये तथा कुशल धर्मोके धारणके करनेके लिये प्रयत्नशील रहता है, सामर्थ्यवान् होता है, दृढ पराक्रमी होता है, उसने कुशल-धर्मोके प्रति अपने कधेका जुआ उतार कर रख नही दिया होता है। वह प्रज्ञावान् होता है, वस्तुओकी उत्पत्ति तथा निरोधका यथार्थ ज्ञान कराने वाली प्रज्ञासे युक्त, आर्य, बीधने वाली, सम्यक् प्रकारसे दुःख-क्षयकी ओर ले जाने वाली प्रज्ञासे युक्त। उसके मनमे होता है, मै श्रद्धावान् हूँ, मै तथागतकी 'बोधि' के प्रति विश्वासी हूँ—वह भगवान् अर्हत है, सम्यक्-सम्बुद्ध है   देव मनुष्योके शास्ता है, बुद्ध है, भगवान् है, मै आस्रवोके क्षयकी कामना क्यो न करू? मै निरोग हूँ, स्वस्थ हूँ, सम-प्रकृतिसे युक्त हूँ, न अतिशीत और न अति ऊष्ण, मध्यम-भावसे प्रयत्न

करनेमे समर्थ हूँ, मै क्यो आस्रवोके क्षयकी कामना न करू ? मै शठ नही हूँ, मायावी नही हूँ, शास्ता अथवा विज्ञ सब्रह्मचारियोके सम्मुख यथार्थ बात प्रगट कर देने वाला, हूँ, मै क्यो आस्रवोके क्षयकी कामना न करू ? मै अकुशल धर्मोके प्रहाणके लिये तथा कुशल धर्मोके धारण करनेके लिये प्रयत्नशील रहता हूँ, सामर्थ्यवान् रहता हूँ, दृढ-पराक्रमी रहता हूँ, कुशल-धर्मोके प्रति अपने कधेका जुआ उतार कर रख नही दिया है, मै क्यो आस्रवोके क्षयकी कामना न करू ? मै प्रज्ञावान् हूँ, वस्तुओकी उत्पत्ति तथा निरोधका यथार्थ ज्ञान कराने वाली प्रज्ञासे युक्त, आर्य बीधने वाली सम्यक् प्रकारसे दु ख-क्षयकी ओर ले जानेवाली प्रज्ञासे युक्त, मै क्यो आस्रवोके क्षयकी कामना न करु ? भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते होती है, वह आस्रवोके क्षयकी कामना करता है।

भिक्षुओ, मुकुटधारी क्षत्रिय-राजाका ज्येष्ठ-पुत्र पाँच बातोसे युक्त होनेपर उपराजा होनेकी कामना करता है। कौन-सी पाँच बातोसे युक्त होनेपर ? भिक्षुओ, मुकुटधारी क्षत्रिय-राजाका ज्येष्ठ-पुत्र माता तथा पिता दोनोकी ओरसे सुजात होता है, सात पीढी तक शुद्ध वश वाला, जातिवादकी दृष्टिसे निर्दोष, सुन्दर होता है, दर्शनीय होता है, प्रिय लगने वाला होता है, श्रेष्ठतम वर्णसे युक्त, माता पिताका प्रिय होता है, अच्छा लगने वाला, सेनाका प्रिय होता है, अच्छा लगने वाला, वह पण्डित होता है, मेधावी होता है, भूत-भविष्यत्-वर्तमान की बातोपर सम्यक् विचार कर सकने वाला। उसके मनमे होता है कि मै माता तथा पिता दोनोकी ओरसे सुजात हूँ, सात पीढी तक शुद्ध वश वाला, जातिवादकी दृष्टिसे निर्दोष, मै उपराजा होनेकी कामना क्यो न करु ? मै सुन्दर हूँ, दर्शनीय हूँ, प्रिय लगने वाला हूँ, श्रेष्ठतम वर्णसे युक्त हूँ, मै उपराजा होनेकी कामना क्यो न करु ? मै माता पिताका प्रिय हूँ, अच्छा लगने वाला हूँ, मै क्यो उपराजा होनेकी कामना न करूँ ? मै सेनाका प्रिय हूँ, मै क्यो उपराजा होनेकी कामना न करूँ ? मै पण्डित हूँ, मेधावी हूँ, भूत-भविष्यत्, वर्तमानकी बातोपर विचार कर सकने वाला हूँ, मै क्यो उपराजा होनेकी कामना न करूँ ? भिक्षुओ, मुकुट धारी क्षत्रिय-राजाका ज्येष्ठ-पुत्र इन पाँच बातोसे युक्त होनेपर उपराजा होनेकी कामना करता है।

इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते होती है, वह आस्रवोके क्षयकी कामना करता है। कौन-सी पाँच बाते ? भिक्षुओ, भिक्षु शीलवान् होता है . शिक्षाओको सम्यक् प्रकार ग्रहण करता है। वह बहुश्रुत होता है . सम्यक्-दृष्टिसे युक्त, चारो स्मृति उपस्थानोमे उसका चित्त सम्यक् प्रकारसे

सुप्रतिष्ठित होता है। वह अकुशल-धर्मोंके प्रहाणके लिये तथा कुशल धर्मोंके धारण करनेके लिये प्रयत्नशील रहता है, सामर्थ्यवान् होता है, दृढ़-पराक्रमी होता है, उसने कुशल-धर्मोंके प्रति अपने कन्धेका जुआ उतार कर रख नही दिया होता है। वह प्रज्ञावान् होता है, वस्तुओंकी उत्पत्ति तथा निरोधका यथार्थ ज्ञान कराने वाली प्रज्ञासे युक्त, आर्य, बींधने वाली, सम्यक् प्रकारसे दुःखक्षय की ओर ले जाने वाली प्रज्ञासे युक्त। उसके मनमें होता है मैं शीलवान् हूँ, प्रातिमोक्षके नियमोंका पालन करने वाला, योग्य-विधिसे और योग्य स्थानपर ही विचरने वाला, छोटी-से-छोटी गल्ती करनेमें भी भय मानने वाला तथा शिक्षा-पदोंको सम्यक् प्रकारसे ग्रहण करने वाला, मैं क्यों आस्रवोंके क्षयकी कामना न करूँ? मैं बहु-श्रुत हूँ, श्रुतको धारण करने वाला, श्रुतका संग्रह करने वाला, जो आदिमें कल्याणकारक, मध्यमें कल्याणकारक, अन्तमें कल्याण-कारक, सार्थक, सव्यंजन, केवल परिपूर्ण परिशुद्ध ब्रह्मचर्यका गुणानुवाद करने वाले धर्म होते हैं वैसे धर्म मेरे बहु-श्रुत हैं, वाणी द्वारा धारण किये गये हैं, मनके द्वारा परिचित किये गये हैं, (सम्यक्) दृष्टि द्वारा भली प्रकार परीक्षित तथा सम्यक्-प्रकारसे ग्रहण किये गये हैं, मैं क्यों आस्रवोंके क्षयकी कामना न करूँ? मेरा चित्त चारों स्मृति-उपस्थानोंमें सम्यक् प्रकारसे सुप्रतिष्ठित है, मैं क्यों आस्रवोंके क्षयकी कामना न करूँ? मैं अकुशल-धर्मोंके प्रहाणके लिये तथा कुशल-धर्मोंको धारण करनेके लिये प्रयत्नशील रहता हूँ, सामर्थ्यवान् हूँ, दृढ़-पराक्रमी हूँ, मैंने कुशल-धर्मोंके प्रति अपने कन्धेका जुआ उतार कर रख नही दिया है, मैं क्यों आस्रवोंके क्षयकी कामना न करूँ? मैं प्रज्ञावान् हूँ, वस्तुओंकी उत्पत्ति तथा निरोधका यथार्थ ज्ञान कराने वाली प्रज्ञासे युक्त हूँ, आर्य, बींधने वाली, सम्यक् प्रकारसे दुःख क्षयकी ओर ले जाने वाली प्रज्ञासे युक्त हूँ, मैं क्यों आस्रवोंके क्षयकी कामना न करूँ? भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह आस्रवोंके क्षयकी कामना करता है।

भिक्षुओ, ये पाँच जने हैं जो रातमें सोते कम हैं और जागते अधिक हैं। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, पुरुषकी कामना करने वाली स्त्री रातमें सोती कम है, जागती अधिक है। भिक्षुओ, स्त्रीकी कामना करने वाला पुरुष रातमें सोता कम है, जागता अधिक है। भिक्षुओ, चोरीकी कामना करने वाला चोर रातमें सोता कम है, जागता अधिक है। भिक्षुओ, राजकीय काम-काजमें लगा हुआ राजा सोता कम है, जागता अधिक है। भिक्षुओ, जो भिक्षु (आस्रवोंसे) विसंयोगकी कामना करता है वह रातमें सोता कम है और जागता अधिक है। भिक्षुओ, ये पाँच रातमें सोते कम हैं, जागते अधिक हैं।

भिक्षुओ, राजाके जिस हाथीमे ये पाँच बाते होती है वह बहुत खाने वाला होता है, बहुत घूमने वाला होता है, बहुत मल करने वाला होता है, शलाका ग्रहण करने वाला होता है और वह राजकीय हाथी कहलाता है। कौन-सी पांच बाते ? भिक्षुओ, राजाका हाथी रूप, शब्द, गन्ध, रस तथा स्पृष्टव्यको सहन करने वाला नही होता। भिक्षुओ, इन पाँच बातोसे युक्त राजाका हाथी बहुत खाने वाला होता है, बहुत घूमने वाला होता है, बहुत मल करने वाला होता है, शलाका ग्रहण करने वाला होता है और वह राजकीय हाथी कहलाता है।

इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते होती है वह बहुत भोजन करने वाला होता है, बहुत घूमने वाला होता है, आसन (= पीठ)को मर्दित करने वाला होता है, शलाका ग्रहण करने वाला होता है, और वह 'भिक्षु' कहलाता है। कौन-सी पाँच बाते ? भिक्षुओ, भिक्षु रूप, शब्द, गन्ध रस तथा स्पृष्टव्यको सहन करने वाला नही होता। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बाते होती है, वह बहुत भोजन करने वाला होता है, बहुत घूमने वाला होता है, आसन(= पीठ) को मर्दित करने वाला होता है, शलाकाको ग्रहण करने वाला होता है और भिक्षु ' कहलाता है।

भिक्षुओ, राजाके जिस हाथीमे ये पाँच बाते होती है, वह न राजाके योग्य है, न राजाकी सेवामे ही रहनेके योग्य होता है और न वह राजाका अग ही कहलाता है। कौन-सी पाँच बाते ? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी रूपोको, शब्दोको, गन्धोको रसोको, स्पृष्टव्योको सहन न करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी रूपोको सहन न करने वाला कैसे होता है ? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जानेपर, हाथियोंके समूहको देखकर, अश्वोके समूहको देखकर, रथोके समूहको देखकर अथवा पैदल-सेनाको देखकर पीछे हट जाता है, मुँह मोड लेता है, खडा नही रहता, युद्ध-भूमिमे नही उतर सकता। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका वैसा हाथी रूपोको न सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी शब्दोको न सहन करने वाला कैसे होता है ? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जानेपर, हाथियोके शब्दको सुनकर,अश्वोके शब्दको सुनकर, रथोंके शब्दको सुनकर,पैदल-सेनाके शब्दको सुनकर, अथवा भेरी, ढोल, शख आदिके शब्दको सुनकर पीछे हट जाता है, मुँह मोड लेता है, खडा नही रहता, युद्ध-भूमिमे उतर नही सकता। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका वैसा हाथी शब्दोको न सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी गन्धोको न सहन कर सकने वाला कैसे होता है ? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जानेपर जब राजाके श्रेष्ठ लडने वाले हाथियोंके मल-मूत्रकी

गन्ध सूंघता है तो वह पीछे हट जाता है, मुंह मोड लेता है, खडा नही रहता, युद्ध-भूमिमें नही उतर सकता। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका वैसा हाथी गन्धोको न सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी रसोको न सहन कर सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जानेपर एक दिन, दो दिन, तीन दिन, चार दिन या पांच दिन घास-पानी न मिलनेपर पीछे हट जाता है, मुंह मोड लेता है, खडा नही रहता, युद्ध-भूमिमे नही उतर सकता। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका वैसा हाथी रसोको न सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी स्पृष्टव्योको न सहन कर सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जानेपर एक, दो, तीन चार, या पांच बाणोसे बींधे जानेपर पीछे हट जाता है, मुंह मोड लेता है, खडा नही रहता, युद्ध-भूमिमें नही उतर सकता। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका वैसा हाथी स्पृष्टव्योको न सहन कर सकने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाके जिस हाथीमें ये पाँच बाते होती है, वह न राजाके योग्य होता है, न राजाकी सेवामे ही रहनेके योग्य होता है, और न वह राजाका अग ही कहलाता है।

इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते होती है, वह न स्वागत करने योग्य होता है, न आतिथ्य करने योग्य होता है, न दक्षिणाके योग्य होता है, न हाथ जोडने योग्य होता है और न लोगोके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र ही होता है। कौनसी पाँच बाते? भिक्षुओ, वह भिक्षु रूपो, शब्दो, गन्धो, रसो तथा स्पृष्टव्योको न सह सकने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु रूपोको न सह सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु आंखसे रूपोको देखकर आकर्षक रूपमे आसक्त हो जाता है, वह अपने चित्तको सभाले नहीरख सकता। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु, रूपोको न सह सकने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु शब्दोको न सह सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु कानसे शब्दोको सुनकर आकर्षक शब्दोमे आसक्त हो जाता है, वह अपने चित्तको सभाले नही रख सकता। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु शब्दोको न सह सकने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु गन्धोको न सह सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु नाकसे गन्धोको सूंघकर आकर्षक गन्धोमे आसक्त हो जाता है, वह अपने चित्त को सभाले नही रख सकता। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु गधोको न सह सकने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु रसोको न सह सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु जिह्वासे रसोको चखकर आकर्षक रसोमे आसक्त हो जाता है, वह अपने चित्तको सभाले नही रख सकता।

भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु रसोको न सह सकने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु स्पृष्टव्योको न सह सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु कायसे स्पृष्टव्योका स्पर्श कर आकर्षक स्पृष्टव्योमे आसक्त हो जाता है, वह अपने चित्तको सभाले नही रख सकता। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु स्पृष्टव्योको स्पर्श न कर सकने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वातें होती है, वह न स्वागत करने योग्य होता है, न आतिथ्य करने योग्य होता है, न दक्षिणाके योग्य होता है, न हाथ जोडने योग्य होता है और न लोगोके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र ही होता है।

भिक्षुओ, राजाके जिस हाथीमे ये पाँच वाते होती है, वह राजाके योग्य होता है, राजाकी सेवामें ही रहनेके योग्य होता है और वह राजाका अग ही कहलाता है। कौनसी पाँच वाते? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी रूपोको   स्पृष्टव्योको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी रूपोको सहन करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जानेपर, हाथियोके समूहको देखकर, अश्वोंके समूहको देखकर, रथोके समूहको देखकर अथवा पैदल-सेनाको देखकर पीछे नही हट जाता है, मुँह नही मोड लेता है, खडा रहता है, युद्ध-भूमिमे उतर सकता है। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका वैसा हाथी रूपोको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी, शब्दोको सहन करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जाने पर, हाथियोंके शब्दको सुनकर अश्वोके शब्दको सुनकर, रथोके शब्दोको सुनकर, पैदल-सेनाके शब्दको सुनकर अथवा भेरी, ढोल, शख आदिके शब्दको सुनकर पीछे नही हट जाता है, मुँह नही मोड लेता है, खडा रहता है, युद्ध-भूमिमे उतर सकता है। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका वैसा हाथी शब्दोको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी, युद्धके लिये जानेपर जब राजाके श्रेष्ठ लडनेवाले हाथियोके मल-मूत्रकी गन्ध सूँघता है, तो वह पीछे नही हट जाता है, मुँह नही मोड लेता है, खडा रहता है, युद्ध-भूमिमें उतर सकता है। भिक्षुओ इस प्रकार राजाका वैसा हाथी गन्धोको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी रसोको सहन कर सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जानेपर एक दिन, दो दिन, तीन दिन, चार दिन या पाँच दिन घास-पानी न मिलनेपर पीछे नही हट जाता है, मुँह नही मोड लेता है, खडा रहता है, युद्ध-भूमिमे उतर सकता है। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका वैसा हाथी रसोको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी स्पृष्टव्योको सहन कर सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जानेपर एक, दो,

तीन, चार या पांच वाणोंमे वींधे जानेपर पीछे नही हट जाता है, मुंह नही मोड़ लेता है, खडा रहता है, युद्ध-भूमिमे उतर सकता है। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका वैसा हाथी स्पृष्टव्योको सहन कर सकने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाके जिस हाथीमे ये पांच बातें होती है, वह राजाके योग्य होता है, राजाकी सेवामे ही रहनेके योग्य होता है और वह राजाका अग ही कहलाता है।

इसी प्रकार जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती है, वह स्वागत करने योग्य होता है, आतिथ्य करने योग्य होता है, दक्षिणाके योग्य होता है, हाथ जोडने योग्य होता है और लोगोंके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र होता है। कौनसी पांच बातें? भिक्षुओ, वह भिक्षु रूपो, शब्दो, गन्धो, रसो तथा स्पृष्टव्योको सह सकने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु रूपोंको सह सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु आंखकेसे रूपको देखकर आकर्षक रूपमे आसक्त नही हो जाता है, वह अपने चित्तको सभाले रख सकता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु रूपोको सह सकने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु शब्दोको सह सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु कानसे शब्दको सुनकर आकर्षक शब्दमें आसक्त नही हो जाता है, वह अपने चित्तको सभाले रख सकता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु शब्दोको सह सकने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु गन्धोको सह सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु नाकसे गन्धोको सूंघकर आकर्षक गन्धमे आसक्त नही हो जाता है, वह अपने चित्तको सभाले रख सकता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु गन्धोको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु रसोको सह सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु जिह्वासे रसोको चखकर आकर्षक रसमे आसक्त नही हो जाता है, वह अपने चित्तको सभाले रख सकता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु रसोको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु स्पृष्टव्यो को सहन कर सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु काय (=शरीर) से स्पृष्टव्यको स्पर्श कर आकर्षक स्पृष्टव्यमे आसक्त नही हो जाता है, वह अपने चित्तको सभाले रख सकता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु स्पृष्टव्योको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पांच बाते होती है, वह स्वागत करने योग्य होता है, आतिथ्य करने योग्य होता है, दक्षिणाके योग्य होता है, हाथ जोडने योग्य होता है और लोगोके लिये अनुपम पुण्यक्षेत्र होता है।

भिक्षुओ, राजाके जिस हाथीमें ये पांच बाते होती है, वह राजाके योग्य होता है, राजाकी सेवामें ही रहनेके योग्य होता है और वह राजाका अगही कहलाता है। कौनसी पांच बातें? भिक्षुओ, राजाका हाथी सुनने वाला होता है, नाश करने

वाला होता है, रक्षा करने वाला होता है, सहन करने वाला होता है तथा जाने वाला होता है। भिक्षुओ, राजा का हाथी सुनने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, हाथीका महावत उसे जो कुछ करनेको कहता है, चाहे कोई ऐसी बात हो जो उसने पहलेकी हो, और चाहे कोई ऐसी बात हो जो उसने पहले न की हो, उसे ध्यान देकर, मन लगाकर सारे चित्तसे, कानोको उधर कर सुनता है। इस प्रकार भिक्षुओ, राजाका हाथी सुनने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका हाथी नाश करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जाने पर हाथीकाभी नाश करता है, हाथी-सवारका भी नाश करता है, अश्वका भी नाश करता है, अश्वारोहीका भी नाश करता है, रथका भी नाश करता है, रथी का भी नाश करता है तथा पैदल (-सेनाका) भी नाश करता है। इस प्रकार भिक्षुओ, राजा का हाथी नाश करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजा का हाथी रक्षा करने वाला कसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जाने पर, अपने अगले हिस्से की भी रक्षा करता है, पिछले हिस्सेकी भी रक्षा करता है, अगले पाँवकी भी रक्षा करता है, पिछले पाँवकी भी रक्षा करता है, सिरकी रक्षा करता है, कानोकी रक्षा करता है, दान्तोकी रक्षा करता है, सूण्डकी रक्षा करता है, पूंछकी रक्षा करता है, हाथी-सवारकी रक्षा करता है। इस प्रकार भिक्षुओ, राजाका हाथी रक्षा करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजा का हाथी सहन करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी शक्ति प्रहारोको सहन करने वाला होता है, तलवारके प्रहारोको सहन करने वाला होता है, वाणोके प्रहारोको सहन करने वाला होता है, कुल्हाडियोके प्रहारको सहन करने वाला होता है, भेरी-ढोल-शख आदिके शब्दोको सहन करने वाला होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, राजा का हाथी सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका हाथी जाने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, हाथीका महावत उसे जिस किसी भी दिशामे भेजता है, चाहे वह उधर पहले गया हो और चाहे पहले न गया हो, उस दिशामे वह शीघ्र ही जाता है। इस प्रकार भिक्षुओ, राजा का हाथी जाने वाला होता है। भिक्षुओ, राजा के जिस हाथी मे ये पाँच बाते होती है, वह राजा के योग्य होता है, राजा की सेवामे ही रहनेके योग्य होता है, और वह राजा का अग ही कहलाता है।

इसी प्रकार जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते होती है, वह स्वागत करने योग्य होता है, आतिथ्य करने योग्य होता है, दक्षिणाके योग्य होता है, हाथ जोडने योग्य होता है और लोगोंके लिये अनुपम पुण्यक्षेत्र होता है। कौनसी पाँच बातें? भिक्षुओ, भिक्षु सुनने वाला होता है, नाश करने वाला होता है, रक्षा करने वाला होता है,

सहन करने वाला होता है तथा जाने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु सुनने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, जिस समय तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनयकी देशना होती है उस समय वह ध्यान देकर, मनमे करके, सारे चित्त को उधर लगा, एकाग्र हो, धर्मको सुनता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु सुनने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु नाश करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षुके मनमे जो काम-वितर्क उत्पन्न होते है, उन्हे वह सहन नही करता, त्याग देता है, हटा देता है, नष्टकर डालता है—अभाव प्राप्त कर डालता है। वह उत्पन्न क्रोध-वितर्कको सहन नही करता, त्याग देता है, हटा देता है, नष्ट कर डालता है, अभाव प्राप्त कर डालता है। वह उत्पन्न विहिंसा-वितर्कको सहन नही करता, त्याग देता है, हटा देता है, नष्ट कर डालता है, अभाव-प्राप्तकर डालता है। वह जो जो पाप-पूर्ण अकुशल-भाव उत्पन्न होते है, उन्हे सहन नही करता, त्याग देता है, हटा देता है, नष्ट कर डालता है, अभाव-प्राप्त कर डालता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु नाश करने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु रक्षा करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु आँखसे रूपको देखकर उसके निमित्तो (=चिह्नो) या उसके लक्षणो को ग्रहण नही करता। उसे डर लगा रहता है कि चक्षुको असयत विचरने देनेसे कही लोभ-द्वेष रूपी अकुशल पाप-पूर्ण भाव मनमें जगह न कर ले। वह उसे सयत रखनेका प्रयास करता है। वह चक्षुकी रक्षा करता है, चक्षु इन्द्रियके सम्वन्धमे सयमी रहता है। वह कानसे शब्द सुनकर नासिका से गन्धको सूँघकर जिह्वासे रसको चखकर कायसे स्पृष्टव्यका स्पर्श करके मनसे मनके विषयोको जानकर उनके निमित्तो (=चिह्नो) या उनके लक्षणोको ग्रहण नही करता। उसे डर लगा रहता है कि मनको असयत विचरने देनेसे कही लोभ-द्वेष रूपी अकुशल पाप-पूर्ण भाव मनमे जगह न कर लें। वह उसे सयत रखनेका प्रयास करता है। वह मनकी रक्षा करता है, मन-इन्द्रियके सम्वन्धमें सयमी रहता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु रक्षा करने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु सहन करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास, डक मारने वाले जीव, मच्छर, हवा, धूप, रेंगने वाले जानवरोंके स्पर्श, दुरुक्त-वचन या दुष्ट-वाणी, उत्पन्न शारीरिक वेदनाओ—दुःखदायक, तीव्र, कठोर, कटु, प्रतिकूल, न अच्छी लगने वाली, प्राण हर लेने वाली—का सहन करने वाला होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु जाने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु उस दिशामें—जिस दिशामें पहले नही गया, इस लम्बे मार्गसे उन सभी सस्कारोके शमन, सभी उपाधियोंके त्याग, तृष्णाके क्षय, वैराग्य,

निरोध, निर्वाण,—शीघ्र ही जाने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते होती है, वह स्वागत करने योग्य होता है, आतिथ्य करने योग्य होता है, दक्षिणाके योग्य होता है, हाथ जोडने योग्य होता है और लोगोके लिये अनुपम पुण्यक्षेत्र होता है।

(५) तिकण्डकी वर्ग

भिक्षुओ, दुनियामें पाँच तरहके लोग हैं। कौनसे पाँच तरहके लोग? देकर अवज्ञा करने वाला, साथ रखकर अवज्ञा करने वाला, वचनसे चिपकने वाला, लोभी तथा मन्द-बुद्धि मूढ। भिक्षुओ, आदमी देकर अवज्ञा करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी दूसरेको चीवर, भिक्षा, शयनासन, ग्लान-प्रत्यय-भैषज्य-परिष्कार देता है। उसके मनमे यह अहकार रहता है—मैं देने वाला, हूँ, यह लेने वाला है। वह उसे देकर अवज्ञा करता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी देकर अवज्ञा करता है। भिक्षुओ, आदमी साथ रखकर कैसे अवज्ञा करता है? भिक्षुओ, एक आदमी दूसरे आदमीके साथ दो या तीन वर्ष रहता है। वह साथ रखकर अवज्ञा करता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी साथ रखकर अवज्ञा करता है। भिक्षुओ, आदमी वचनसे चिपकने वाला (=अदियमुख) कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी दूसरेकी प्रशसा या निन्दा सुनते ही उसे तुरन्त मनमे जगह देता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी वचनसे चिपकने वाला होता हैं। भिक्षुओ, आदमी लोभी कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी अतिरिक्त-श्रद्धा वाला होता है, अतिरिक्त-भक्तिवाला, अतिरिक्त-प्रेम वाला तथा अतिरिक्त प्रासाद वाला। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी लोभी होता है। भिक्षुओ, आदमी मन्द-बुद्धि मूढ कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी कुशला-कुशल धर्मोको नही पहचानता, सदोष-निर्दोष धर्मोको नही पहचानता, निकृष्ठ-श्रेष्ठ धर्मोको नही जानता तथा कृष्ण-शुक्ल धर्म (=पाप-पुण्य) को नही जानता। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी मन्द-बुद्धि मूढ होता है। भिक्षुओ, दुनियामे ये पाँच तरहके लोग हैं।

भिक्षुओ, दुनियामे पाँच तरहके लोग है। कौनसे पाँच तरहके? भिक्षुओ, एक आदमी दोष भी करता है और पश्चाताप भी करता है, वह चित्त तथा प्रज्ञाकी उस यथार्थ विमुक्तिसे अपरिचित रहता है जिसके प्राप्त होनेपर सभी अकुशल-पाप-धर्मोका मूलोच्छेद हो जाता है। भिक्षुओ, एक आदमी दोप तो करता है किन्तु पश्चाताप नहीं करता। वह भी चित्त तथा प्रज्ञाकी उस यथार्थ विमुक्तिसे अपरिचित रहता है जिसके प्राप्त होनेपर सभी अकुशल पाप-धर्मोका मूलोच्छेद हो जाता है। भिक्षुओ, एक आदमी (अब) दोप नहीं करता है किन्तु तब भी (पूर्वकृत दोषोंके) पश्चातापसे मुक्त नही होता। वह भी चित्त तथा प्रज्ञाकी उस यथार्थ विमुक्तिसे अपरिचित रहता

है, जिसके प्राप्त होनेपर सभी अकुशल पाप-धर्मोंका मूलोच्छेद हो जाता है। भिक्षुओ, एक आदमी (अब) दोष नहीं करता और पश्चाताप भी नहीं करता, वह भी चित्त तथा प्रज्ञाकी उस यथार्थ विमुक्तिसे अपरिचित रहता है, जिसके प्राप्त होनेपर सभी अकुशल पाप-धर्मोंका मूलोच्छद हो जाता है। भिक्षुओ, एक आदमी न दोष करता है, न पश्चाताप करता है। वह चित्त तथा प्रज्ञाकी उस यथार्थ विमुक्तिसे परिचित रहता है, जिसके प्राप्त होनपर सभी अकुशल पाप-धर्मोंका मूलोच्छद हो जाता है।

भिक्षुओ, जो आदमी दोष भी करता है, पश्चाताप भी करता है, जो चित्त तथा प्रज्ञाकी उस यथार्थ विमुक्तिसे अपरिचित रहता है, जिसके प्राप्त होने पर सभी अकुशल पाप-धर्मोंका मूलोच्छेद हो जाता है, उस आदमीको इस प्रकार कहना चाहिये— "आयुष्मान्के मनमे सदोषताके कारण उत्पन्न हुए आस्रव है, पश्चातापसे उत्पन्न आस्रव वृद्धि पा रहे हैं। आयुष्मान्के लिये यह अच्छा होगा यदि आयुष्मान् सदोषतासे उत्पन्न आस्रवोको छोड और पश्चातापमे उत्पन्न आस्रवोंको दूर कर चित्त और प्रज्ञा (की मुक्ति) का अभ्यास करें। इस प्रकार आप इस पाँचवी प्रकारके आदमीके समान हो जायेंगे।"

भिक्षुओ, जो आदमी दोष तो करता है, किन्तु पश्चाताप नही करता, जो चित्त तथा प्रज्ञाकी उस यथार्थ विमुक्तिसे अपरिचित रहता है, जिसके प्राप्त होनेपर सभी अकुशल पाप-धर्मोंका मूलोच्छेद हो जाता है, उस आदमीको इस प्रकार कहना चाहिये—"आयुष्मान् के मनमे सदोषताके कारण उत्पन्न हुए आस्रव है, किन्तु पश्चातापसे उत्पन्न आस्रव वृद्धि नही पा रहे हैं। आयुष्मान्के लिये यह अच्छा होगा यदि आयुष्मान् सदोषतासे उत्पन्न आस्रवोको छोड चित्त और प्रज्ञा (की मुक्ति) का अभ्यास करे। इस प्रकार आप इस पाँचवी प्रकारके आदमीके समान हो जायेंगे।

भिक्षुओ, जो आदमी (अब) दोष नही करता है, किन्तु (पूर्वकृत दोषोके) पश्चातापसे युक्त नही होता, जो चित्त तथा प्रज्ञाकी उस यथार्थ मुक्तिसे अपरिचित रहता है, जिसके प्राप्त होनेपर सभी अकुशल पाप-धर्मोंका मूलोच्छेद हो जाता है, उस आदमीको इस प्रकार कहना चाहिये—"आयुष्मान् के मनमे सदोषतासे उत्पन्न आस्रव नही है, किन्तु पश्चातापसे उत्पन्न आस्रव वृद्धि पा रहे हैं। आयुष्मान्के लिये यह अच्छा होगा यदि आयुष्मान् पश्चातापसे उत्पन्न आस्रवोको छोड चित्त और प्रज्ञा (की मुक्ति) का अभ्यास करें। इस प्रकार आप इस पाँचवी प्रकारके आदमीके समान हो जायेगे।"

भिक्षुओ, जो आदमी न दोष करता है और न पश्चाताप करता है, जो चित्त तथा प्रज्ञाकी उस यथार्थ मुक्तिसे अपरिचित रहता है, जिसके प्राप्त होनेपर सभी अकुशल पाप-धर्मोंका मूलोच्छेद हो जाता है, उस आदमीको इस प्रकार कहना

चाहिये—"आयुष्मान्‌के मनमे न सदोषतासे उत्पन्न आस्रव है और न पश्चातापसे उत्पन्न आस्रव वृद्धि पा रहे है। आयुष्मानके लिये यह अच्छा होगा कि आयुष्मान् चित्त् और प्रज्ञा (की मुक्ति) का अभ्यास करे। इस प्रकार आप इस पाँचवी प्रकारके आदमीके समान हो जायेगे।"

भिक्षुओ, इस प्रकार ये चारो प्रकारके आदमी इस पाँचवी प्रकारके आदमी द्वारा इस तरह उपदेश दिये जानेपर, इस तरह अनुशासन किये जानेपर क्रमश आस्रवोके क्षयको प्राप्त होते है।

एक समय भगवान् वैशालीके महावनकी कूटागार शालामे विहार करते थे। तव भगवान् पूर्वाह्न समय पहनकर, पात्र चीवर लेकर भिक्षाटन्‌के लिये निकले। उस समय सारन्दद चैत्यमे इकट्ठे वैठे हुए पाँच सौ लिच्छवियोमे यह वात चीत चली—दुनियामे इन पाँच रत्नोकी उत्पत्ति दुर्लभ है। कौनसे पाच रत्नोकी ? दुनियामे हस्ति-रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामे अश्व-रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनयिामें मणि-रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामे स्त्री-रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामे गृहपति (वैश्य) रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामे इन पाँच रत्नोकी उत्पत्ति दुर्लभ है।

तव लिच्छवियोने एक आदमी को रास्तेपर खडा किया—अरे ! जव भी तुझे दिखाई दे कि भगवान् चले आ रहे है तो हमें कहना। उस आदमीने देखा कि भगवान् दूरसे चले आ रहे है। देखकर वह जहाँ लिच्छवी थे, वहाँ पहुँचा। पास जाकर उन लिच्छवियोसे उसने यह कहा—'महाशयो ! यह भगवान् अर्हत सम्यक्-सम्बुद्ध चले आ रहे है। अव तुम जिस कार्यका योग्य समय समझो।' तव वे लिच्छवी जहाँ भगवान् थे, वहाँ गये। पास जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर खडे हो गये। एक ओर खडे हुए उन लिच्छवियोने भगवान्‌से यह कहा—भन्ते ! आपकी वडी कृपा होगी, यदि आप जहाँ सारन्दद चैत्य है, वहाँ पधारे। भगवान्‌ने चुप रहकर स्वीकार किया। तव भगवान् जहाँ सारन्दद चैत्य है, वहाँ पहुँचे। पहुँचकर बिछे आसन पर वैठे। वैठकर भगवान्‌ने उन लिच्छिवियोसे यह कहा—लिच्छवियो ! इस समय वैठे क्या वातचीत कर रहे हो ? इस समय क्या वातचीत चल रही है ? भन्ते ! हम लोगोंके वीचमें जो यहाँ वैठे है, जो यहाँ एकत्र है, यह वातचीत चली—दुनियामे इन पाँच रत्नोकी उत्पत्ति दुर्लभ है। कौनसे पाच रत्नोकी ? दुनियामे हस्ति-रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामे अश्व-रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामें मणि-रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामे स्त्री-रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामे गृहपति (वैश्य)-रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामे इन पाँच रत्नोकी उत्पत्ति दुर्लभ है।"

"लिच्छवियो ! तुम लोग जो कामनाओमे रमे रहते हो, तुम्हारे वीच कामनाओके ही सम्बन्धमे वात-चीत चली। लिच्छवियो ! दुनियामें इन पाँच रत्नो

की उत्पत्ति दुर्लभ है। कौनसे पाँच रत्नोंकी। दुनियामें तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध की उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामें तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनयका उपदेश करने वालेकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामें तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनयका उपदेश किये जानेपर उसे समझने वाले की उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामें तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनयके उपदेशको हृदयगम कर तदानुसार आचरण करने वालेकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामें कृतज्ञ कृतउपकारको जानने वाले व्यक्तिकी उत्पत्ति दुर्लभ है। भिक्षुओ! दुनियामें इन पाँच रत्नोंकी उत्पत्ति दुर्लभ है।"

एक समय भगवान् साकेत (जनपद) के तिकण्टकी वनमें विहार करते थे। वहाँ भगवान्ने भिक्षुओंको आमंत्रित किया। —'भिक्षुओ।' भिक्षुओंने भगवान्को प्रतिवचन दिया—'भदन्त।' भगवान्ने यह कहा—

"भिक्षुओ, भिक्षुके लिये यह अच्छा है, यदि वह समय समयपर जो अप्रतिकूल हो उसके प्रति प्रतिकूल-सञ्ज्ञा धारण करके विहार करे। भिक्षुओ, भिक्षुके लिये यह अच्छा है यदि वह समय समय पर प्रतिकूल हो उसके प्रति अप्रतिकूल-सञ्ज्ञा धारण करके विहार करे। भिक्षुओ, भिक्षुके लिये यह अच्छा है कि यदि वह समय समय पर जो अप्रतिकूल हो तथा जो प्रतिकूल हो उन दोनोंके प्रति प्रतिकूल-सञ्ज्ञा धारण करके विहार करे। भिक्षुओ, भिक्षुके लिये यह अच्छा है यदि वह समय समयपर जो प्रतिकूल हो तथा जो अप्रतिकूल हो उन दोनोंके प्रति अप्रतिकूल-सञ्ज्ञा धारण करके विहार करे। भिक्षुओ, भिक्षुके लिये यह अच्छा है यदि वह समय समय पर जो अप्रतिकूल हो तथा जो प्रतिकूल हो उन दोनोंकी ओरसे विमुख हो उपेक्षावान् हो स्मृति सम्प्रजन्यसे युक्त हो विहार करे। भिक्षुओ, भिक्षु किस उद्देश्यसे जो अप्रतिकूल हो उसके प्रति प्रतिकूल सञ्ज्ञा धारण करके विहार करे? ताकि आकर्षक विषयोंके प्रति मेरे मनमें राग उत्पन्न न हो। भिक्षुओ, भिक्षु इस उद्देश्यसे जो अप्रतिकूल हो उसके प्रति प्रतिकूल सञ्ज्ञा धारण करके विहार करे। भिक्षुओ, भिक्षु किस उद्देश्यसे जो प्रतिकूल हो उसके प्रति अप्रतिकूल सञ्ज्ञा धारण करके विहार करे? ताकि विकर्षक विषयो के प्रति मेरे मनमे द्वेष उत्पन्न न हो। भिक्षुओ, भिक्षु इस उद्देश्यसे जो प्रतिकूल हो उसके प्रति अप्रतिकूल-सञ्ज्ञा धारण करके विहार करे। भिक्षुओ, भिक्षु किस उद्देश्यसे जो अप्रतिकूल हो तथा जो प्रतिकूल हो उन दोनोंके प्रति प्रतिकूल-सञ्ज्ञा धारण कर विहार करे? ताकि आकर्षक विषयोंके प्रति मेरे मनमें राग उत्पन्न न हो, ताकि विकर्षक विषयोंके प्रति मेरे मनमें द्वेष उत्पन्न न हो। भिक्षुओ, भिक्षु इस उद्देश्यसे जो अप्रतिकूल हो तथा जो प्रतिकूल हो उन दोनोंके प्रति प्रतिकूल-सञ्ज्ञा धारण करके विहार करे। भिक्षुओ, भिक्षु किस उद्देश्यसे जो प्रतिकूल हो तथा जो अप्रतिकूल हो उन दोनोंके प्रति अप्रतिकूल-सञ्ज्ञा धारण कर विहार करे।? ताकि विकर्षक विषयोंके

प्रति मेरे मनमे द्वेष उत्पन्न न हो, ताकि आकर्षक विषयोके प्रति मेरे मनमे राग उत्पन्न न हो। भिक्षुओ, भिक्षु इस उद्देश्यसे जो प्रतिकूल हो तथा जो अप्रतिकूल हो उन दोनो के प्रति अप्रतिकूल-सज्ञा धारण करे। भिक्षुओ, भिक्षु किस उद्देश्यसे जो अप्रतिकूल हो तथा जो प्रतिकूल हो उन दोनोकी ओरसे विमुख हो उपेक्षावान् हो स्मृति-सम्प्रजन्यसे युक्त हो विहार करे ? ताकि आकर्षक विषयोके प्रति मेरे मनमे कोई, कही, कुछ राग उत्पन्न न हो , ताकि विकर्षक विषयोके प्रति मेरे मनमे कोई, कही कुछ द्वेष उत्पन्न न हो, ताकि मूढता उत्पन्न करने वाले विषयोके प्रति मेरे मनमे कोई, कही, कुछ मोह उत्पन्न न हो। भिक्षुओ, भिक्षु इस उद्देश्यसे जो अप्रतिकूल हो तथा जो प्रतिकूल हो उन दोनोकी ओरसे विमुख हो, उपेक्षावान् हो स्मृति-सम्प्रजन्यसे युक्त हो विहार करे ।

भिक्षुओ, जिसमे ये पाँच वाते हो वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर नरकमे डाल दिया हो। कौनसी पाँच वाते ? वह प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, काम भोगोके सम्वन्धमे मिथ्याचारी होता है, झुठ बोलने वाला होता है तथा सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली-चीजोके ग्रहण करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिसमे ये पाँच वाते हो, वह ऐसा ही होता है, जैसे लाकर नरक मे डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिसमे ये पाँच वाते हो वह ऐसा ही होता है, जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच वाते ? वह प्राणी-हिंमा करनेसे विरत होता है, चोरी करनेसे विरत होता है, काम-भोगोके सम्वधमे मिथ्याचारसे विरत रहता है, झूठ वोलनेसे विरत रहता है तथा सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली चीजोके ग्रहण करनेसे विरत रहता है। भिक्षुओ, जिसमे ये पाँच वाते हो, वह ऐमा ही होता है जैसे लाकर स्वर्गमे डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते हो उमे 'मित्र' मानकर उसका आश्रय नही करना चाहिये। वह खेती का काम आदि करवाता है झगडे पैदा करता है, प्रसिद्ध भिक्षुओके वीच विरोधी पक्ष ग्रहण करता है, लम्वी अव्यवस्थित चारिकायें करता है, तथा समय समय पर धार्मिक वातचीत द्वारा शिक्षा देने, उत्माहित करने, वढावा देने और चित्त प्रसन्न करनेमे समर्थ नही होता है। भिक्षुओ, जिम भिक्षुमे ये पाँच वाते हो उसे मित्र मानकर उमका आश्रय नही करना चाहिये।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते हो उसे 'मित्र' मानकर उमका आश्रय करना चाहिये। वह खेतीका काम आदि नही करवाता है, झगडे पैदा नही करता है, प्रसिद्ध भिक्षुओके वीच विरोधी पक्ष नहीं ग्रहण करता, लम्वी अव्यवस्थित चारिकायें नही करता तथा समय समय पर धार्मिक वातचीत द्वारा शिक्षा देने, उत्साहित करने,

वढावा देने और चित्त प्रसन्न करनेमे समर्थ होना है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच वातें हो, उसे 'मित्र' मानकर उसका आश्रय करना चाहिये।

भिक्षुओ, ये पाँच असत्पुरुष-दान हैं। कौनसे पाँच? आदर-वुद्धिसे न देना, असावधानीसे देना, अपने हाथसे न देना, फेंकनेकी तरह देना, फल-प्राप्तिमें अविश्वास पूर्वक देना। भिक्षुओ, ये पाँच असत्पुरुष-दान हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच सत्पुरुष-दान हैं। कौनसे पाँच? आदर-वुद्धिसे देना, सावधानीसे देना, अपने हाथसे देना, गौरव-पूर्वक देना, फल-प्राप्तिमें विश्वास रखकर देना। भिक्षुओ, ये पाँच सत्पुरुष-दान हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच सत्पुरुष-दान हैं। कौनसे पाँच? श्रद्धापूर्वक दान देता है, गौरव सहित दान देता है, उचति समय पर दान देता है, मुक्तहस्त होकर दान देता है, विना अपने या दूसरेको आघात पहुँचाये दान देता है। भिक्षुओ, जो श्रद्धापूर्वक दान देता है, उसे जहाँ जहाँ उस दानका फल प्राप्त होता है वहाँ वहाँ वह धनवान पैदा होता है, महा धनवान् पैदा होता है, ऐश्वर्यशाली होता है, सुन्दर होता है, दर्शनीय होता है, मनोरम होता है तथा श्रेष्ठतम रूपसे युक्त होता है। भिक्षुओ, जो गौरव सहित दान देता है, उसे जहाँ जहाँ उस दानका फल प्राप्त होता है वहाँ वहाँ वह धनवान् पैदा होता है, महाधनवान् पैदा होता है, ऐश्वर्यशाली होता है, सुन्दर होता है, दर्शनीय होता है मनोरम होता है, तथा श्रेष्ठतम रूपसे युक्त होता है। भिक्षुओ, जो उचित समयपर दान देता है, उसे जहाँ जहाँ उस दानका फल प्राप्त होता है, वहाँ वहाँ वह धनवान् पैदा होता है, महा धनवान् पैदा होता है, ऐश्वर्यशाली होता है, सुन्दर होता है, दर्शनीय होता है, मनोरम होता है तथा श्रेष्ठतम रूपसे युक्त होता है। भिक्षुओ, जो मुक्त हस्त होकर दान देता है,उसे जहाँ जहाँ उस दानका फल प्राप्त होता है, वहाँ वहाँ वह धनवान् पैदा होता है, महाधनवान् पैदा होता है, ऐश्वर्यशाली होता है, सुन्दर होता है, दर्शनीय होता है, मनोरम होता है तथा श्रेष्ठतम रूपसे युक्त होता है। भिक्षुओ, जो विना अपने या दूसरेको आघात पहुँचाये दान देता है, उसे जहाँ जहाँ उस दानका फल प्राप्त होता है, वहाँ वहाँ वह धनवान् पैदा होता है, महाधनवान् पैदा होता है, ऐश्वर्यशाली होता है और आगसे, पानीसे, राजासे, चोरसे, अथवा अप्रिय उत्तराधिकारीसे—किसीसे भी उसे धन-हानि का खतरा नही रहता।

भिक्षुओ, ये पाँच वातें क्षणिक-मुक्ति प्राप्त[1] भिक्षुकी हानिका कारण होती है, कौनसी पाँच? कार्य-वहुलता, वचन-वहुलता, निद्रा-वहुलता, परिचय-वहुलता तथा विमुक्त-चित्तका पर्यवेक्षण न करना। भिक्षुओ, ये पाँच वाते क्षणिक-मुक्ति-प्राप्त भिक्षुकी हानिका कारण होती है।

---

१ किसी कार्यमें लगे रहनेपर चित्तकी राग-द्वेषसे समय-मर्यादित 'मुक्ति'।

भिक्षुओ, ये पाँच बाते क्षणिक-मुक्ति-प्राप्त भिक्षुकी हानिका कारण नही होती है। कौनसी पाँच ? कार्य-बहुलताका न होना, वचन-बहुलताका न होना, निद्रा-बहुलताका न होना, परिचय-बहुलता का न होना, विमुक्त चित्तका पर्यवेक्षण करना। भिक्षुओ, ये पाँच बाते क्षणिक-मुक्ति-प्राप्त भिक्षुकी हानिका कारण नही होती है।

भिक्षुओ, ये पाँच बाते क्षणिक-मुक्ति-प्राप्त भिक्षुकी हानिका कारण होती है, कौनसी पाँच ? कार्य-बहुलता ,वचन-बहुलता, निद्रा-बहुलता, इन्द्रिय-असयम, भोजनमे मात्रज्ञ न होना। भिक्षुओ, ये पाँच बाते क्षणिक-मुक्ति-प्राप्त भिक्षुकी हानि का कारण होती हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच बाते क्षणिक-मुक्ति-प्राप्त भिक्षुकी हानिका कारण नही होती है। कौन-सी पाच ? कार्य-बहुलताका न होना, वचन-बहुलताका न होना, निद्रा-बहुलताका न होना, इन्द्रिय-सयम, भोजनमें मात्रज्ञ होना। भिक्षुओ, ये पाँच बाते क्षणिक-मुक्ति-प्राप्त भिक्षुकी हानिका कारण नही होती है।

(१) सद्धर्म वर्ग

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बातें होती है वह धर्म सुनता हुआ भी इस योग्य नही होता कि कुशल-धर्मोके पथपर चलकर उद्देश्य प्राप्ति कर सके। कौन-सी पाँच बातें ? धर्म-कथाका उपहास करता है, धर्म-कथिकका उपहास करता है, अपना उपहास करता है, जड-मूर्ख दुष्टप्रज्ञ होता है तथा न जानते हुए भी समझता है कि मै जानता हूँ। भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बाते होती है वह धर्म सुनता हुआ भी इस योग्य नही होता कि कुशल-धर्मोके पथपर चलकर उद्देश्य -प्राप्ति कर सके।

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें होती है वह धर्म सुनता हुआ इस योग्य होता है कि कुशल धर्मोके पथपर चलकर उद्देश्य प्राप्ति कर सके। कौन-सी पाँच बाते ? धर्म-कथाका उपहास नही करता है, धर्म-कथितका उपहास नही करता है, अपना उपहास नही करता है, जड-मूर्ख नही, प्रज्ञावान् होता है तथा नही जाननेपर यह नही समझता कि मै जानता हूँ। भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बाते होती है वह धर्म सुनता हुआ भी इस योग्य होता है कि कुशल-धर्मोके पथपर चलकर उद्देश्य प्राप्त कर सके।

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बाते होती है, वह धर्म सुनता हुआ भी इस योग्य नही होता कि कुशल-धर्मोके पथपर चलकर उद्देश्य-प्राप्ति कर सके। कौन-सी पाँच बाते ? ढोगी ढोग-युक्त चित्तसे धर्मोपदेश सुनता है, छिद्रानुवेषण करनेकी दृष्टिसे उपालम्भ देनेकी इच्छा वाला धर्मोपदेश सुनता है, धर्मोपदेशके प्रति दुर्भावना युक्त चित्तसे धर्मोपदेश सुनता है, जड-मूर्ख दुष्प्रज्ञ होता है, तथा न जानते हुए भी

समझता है कि मै जानता हूँ। भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच वाते होनी है वह धर्म सुनता हुआ भी इम योग्य नही होता कि कुशल-धर्मोके पथपर चलकर उद्देश्य-प्राप्ति कर सके।

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच वाते होती है वह धर्म सुनता हुआ भी इम योग्य होता है कि कुशल-धर्मोके पथपर चलकर उद्देश्य-प्राप्ति कर मके। कौन-सी पाँच वाते ? अम्रक्ष-युक्त चित्तमे अम्रक्षी (= जो ढोगी नही है) धर्मोपदेश सुनता है, छिद्रानवेपण नही करनेकी दृष्टिसे उपालम्भ रहित हो धर्मोपदेश मुनता है, धर्मोपदेशक के प्रति दुर्भावना रहित चित्तसे धर्मोपदेश मुनता है, जड-मूर्ख नही, प्रज्ञावान होता है तथा नही जाननेपर यह नही ममझता कि मै जानता हूँ। भिक्षुओ, जिन व्यक्तिमे ये पाँच वाते होती है, वह धर्म मुनता हुआ इम योग्य होता है कि कुशल-धर्मोके पथपर चलकर उद्देश्य-प्राप्ति कर सके।

भिक्षुओ, ये पाँच वाते सद्धर्मके न्हामका, सद्धर्मके अतर्धान होनेका कारण होती है। कौन-मी पाँच ? भिक्षुओ, भिक्षु ध्यान देकर धर्मका श्रवण नही करते, ध्यान देकर धर्मका पाठ नही करते, ध्यान देकर धर्मको याद नही रखते, ध्यान देकर स्मृति-गत धर्मोके अर्थपर विचार नही करते और न ध्यान देकर उन धर्मो तथा उनके अर्थोको जानकर तदनुसार जीवन ही व्यतीत करते है। भिक्षुओ, ये पाँच वाते सद्धर्मके न्हामका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है।

भिक्षुओ, ये पाँच वाते सद्धर्मकी स्थिति, मद्धर्मका न्हाम न होने, सद्धर्मका अतर्धान न होनेका कारण होती है। कौन-सी पाँच ? भिक्षुओ, भिक्षु ध्यान देकर धर्मका श्रवण करते है, ध्यान देकर धर्मका पाठ करते है, ध्यान देकर धर्मको याद रखते है, ध्यान देकर स्मृति-गत धर्मोके अर्थपर विचार करते है तथा ध्यान देकर उन धर्मो तथा उनके अर्थोको जानकर तदनुसार जीवन व्यतीत करते है। भिक्षुओ, ये पाँच वाते सद्धर्मकी स्थिति, मद्धर्मका न्हाम न होने, मद्धर्मका अन्तर्धान न होनेका कारण होती है।

भिक्षुओ, ये पाँच वाते मद्धर्मके न्हासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है। कौन-सी पाँच ? भिक्षुओ, भिक्षु धर्मका—सुत्त, गेय्य, वेय्याकरण, गाथा, उदान, इतिवुत्तक, जातक, अब्भुतधम्म, वैथुल्य (वेदल्ल) का—पाठ नही करते है। भिक्षुओ, यह पहली वात है, जो सद्धर्मके न्हासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु जैसे उन्होने धर्म सुना है, जैमे उन्होने पाठ किया है, उसी तरह विस्तारसे दूमरोको उस धर्मकी देशना नही करते। भिक्षुओ, यह दूसरी वात है, जो सद्धर्मके न्हामका, सद्धर्मके अतर्धान होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु जैसे उन्होने धर्म सुना है, जैसे उन्होने पाठ किया है, उसी तरह विस्तारसे दूसरोको

वह धर्म बँचवाते नही है। भिक्षुओ, यह तीसरी बात है, जो सद्धर्मके ह्रासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु जैसे उन्होने धर्म सुना है, जैसे उन्होने पाठ किया है, उसी तरहसे वे विस्तारसे उसका सम्मिलित-पाठ (= सज्झायन) नही करते है। भिक्षुओ, यह चौथी बात है जो सद्धर्मके ह्रासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु जैसे उन्होने धर्म सुना है, जैसे उन्होने पाठ किया है, उसी तरहसे वे उस धर्मका चित्तसे विचार नही करते है, मनन नही करते है, मनसे उसका परीक्षण नही करते है। भिक्षुओ, यह पाँचवी बात है जो सद्धर्मके ह्रासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है। भिक्षुओ, ये पाँच बाते सद्धर्मके ह्रासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है।

भिक्षुओ, ये पाँच बाते सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ह्रास न होने, सद्धर्मका अतर्धान न होनेका कारण होती है। कौन-सी पाँच? भिक्षुओ, भिक्षु धर्मका—सुत्त, गेय्य, वेय्याकरण, गाथा, उदान, इतिवुत्तक, जातक, अब्भुतधम्म, वैथुल्य (= वेदल्ल) का—पाठ करते है। भिक्षुओ, यह पहली बात है जो सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ह्रास न होने, सद्धर्मका अतर्धान न होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, जैसे उन्होने धर्म सुना है, जैसे उन्होने पाठ किया है, उसी तरहसे दूसरोको उस धर्मकी देशना करते है। भिक्षुओ, यह दूसरी बात है जो सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ह्रास न होने, सद्धर्मका अतर्धान न होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु जैसे उन्होने धर्म सुना है, जैसे उन्होने पाठ किया है, उसी तरह विस्तारसे दूसरोको वह धर्म बँचवाते है। भिक्षुओ, यह तीसरी बात है, जो सद्धर्मके ह्रासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु जैसे उन्होने धर्म सुना है, जैसे उन्होने पाठ किया है, उसी तरहसे वे विस्तारसे उसका सम्मिलित पाठ (= सज्झायन) करते है। भिक्षुओ, यह चौथी बात है जो सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ह्रास न होने, सद्धर्मका अन्तर्धान न होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु जैसे उन्होने धर्म सुना है, जैसे उन्होने पाठ किया है, उसी तरहसे वे उस धर्मका चित्तसे विचार करते है, मनन करते है, मनसे उसका परीक्षण करते है। भिक्षुओ, यह पाँचवी बात है, जो सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ह्रास न होने, सद्धर्मका अन्तर्धान न होनेका कारण होती है। भिक्षुओ, ये पाँच बाते सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ह्रास न होने तथा सद्धर्मका अन्तर्धान न होनेका कारण होती है।

भिक्षुओ, ये पाँच बाते सद्धर्मके ह्रासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है। कौन-सी पाँच बाते? भिक्षुओ, भिक्षु ऐसे दुर्ग्रहीत सुत्रोका पाठ करते है जिनके पद-व्यजन यथायोग्य नही होते। भिक्षुओ, जिनके पद-व्यजन यथायोग्य नही होते, उन सुत्रोका अर्थ भी यथायोग्य नही होता। भिक्षुओ, यह पहली बात है

जो सद्धर्मके ह्रासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है। भिक्षुओ, भिक्षु दुर्मुख होते है, दुर्वचनोंसे युक्त, असहनशील, अनुशासनको अंगीकार करनेमें अकुशल। भिक्षुओ, यह दूसरी बात है जो सद्धर्मके ह्रासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, जो भिक्षु बहु-श्रुत होते है, आगम-धर होते है, धर्म-धर होते है, विनय-धर होते है, मातृका-धर[1] होते है, वे दूसरोंको अच्छी तरह सूत्र नहीं सिखाते। उनके मरनेपर सुत्तन्तकी जड कट जाती है, उसके लिये कहीं शरण-स्थल नहीं रहता। भिक्षुओ, यह तीसरी बात है जो सद्धर्मके ह्रासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, स्थविर भिक्षु जोडू-बटोरू हो जाते है, शिथिल हो जाते है, पतनकी ओर पूर्वगामी, एकान्त चिन्तनके विषयमें जुआ उतार कर रख देने वाले, अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये वीर्य नही करने वाले, तथा प्रयत्न नहीं करने वाले अनधिकृत-को अधिकृत करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात् करनेके लिये। उन के पीछे आने वाली जनता भी उनका अनुकरण करती है। वह भी जोडू-बटोरू हो जाती है, शिथिल हो जाती है, पतनकी ओर पूर्व-गामी, एकान्त-चिन्तनके विषयमें जुआ उतार कर रख देनेवाली, अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये वीर्य नही करने वाली तथा प्रयत्न नहीं करने वाली अनधिकृतको अधिकृत करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात् करनेके लिये। भिक्षुओ, यह चौथी बात है जो सद्धर्मके ह्रासका, सद्धर्मके अन्तर्धानका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, संघमे फूट पड जाती है, भिक्षुओ, संघमे फूट पड जानेपर परस्पर गाली दी जाती है, परस्पर भला-बुरा कहा जाता है, परस्पर झगडे होते है, परस्पर एक दूसरेको त्यागते हैं। ऐसा होनेपर संघके प्रति जो अश्रद्धावान् होते है, वे श्रद्धावान् नही बनते, जो श्रद्धावान् होते है, उनमे से कुछ अश्रद्धावान् हो जाते हैं। भिक्षुओ, यह पाँचवी बात है जो सद्धर्मके ह्रासका, सद्धर्मके अन्तर्धानका कारण होती है।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ह्रास न होने, सद्धर्मका अंतर्धान न होनेका कारण होती हैं। कौन-सी पाँच बातें? भिक्षुओ, भिक्षु ऐसे सुगृहीत सुत्रोंका पाठ करते है जिनके पद-व्यंजन यथायोग्य होते है, उन सुत्रोंका अर्थ भी यथायोग्य होता है। भिक्षुओ, जिनके पद-व्यंजन यथायोग्य होते है, उन सुत्रोंके अर्थ भी यथायोग्य होते है। भिक्षुओ, यह पहली बात है, जो सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ह्रास न होने, सद्धर्मका अन्तर्धान न होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु सुवच होते है, सुवचनोंसे युक्त, सहनशील, अनुशासनको अंगीकार करनेमें कुशल। भिक्षुओ, यह दुसरी बात है जो सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ह्रास न होने, सद्धर्मका अन्तर्धान न होनेका कारण होती है। भिक्षुओ, जो भिक्षु बहुत-श्रुत होते है, आगम-धर

१ अभिधर्मके शीर्षकोको धारण करने वाले।

होते है, धर्म-धर होते है, विनय-धर होते है, मातृका-धर होते है, वे दूसरोको अच्छी तरह सूत्र बँचवाते है। उनके मरने पर सु त्तन्तका मूलोच्छेद नही होता, उसके लिये प्रतिष्ठा बनी रहती है। भिक्षुओ, यह तीसरी वात है जो सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ऱ्हास न होने, सद्धर्मका अन्तर्धान न होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, स्थविर भिक्षु, जोड-बटोरु नही होते, शिथिल नही होते, पतनकी ओर पूर्व-गामी नही होते, एकान्त-चिन्तनके विषयमे जुआ उतार कर रख देने वाले नही होते। अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये असाक्षातकृतको साक्षात करनेके लिये वीर्य करते है। भिक्षुओ, यह चौथी वात है, जो सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ऱ्हास न होने, सद्धर्मका अन्तर्धान न होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, सघमे फूट नही पड जाती है, वह समग्र-भावसे एक होकर अविवाद-रहित हो, एक ही उद्देश्यको लेकर सुखपूर्वक विहार करता है। भिक्षुओ, सघके एकत्र रहनेपर, परस्पर गाली नही दी जाती, परस्पर भला-बुरा नही कहा जाता, परस्पर झगडे नही होते, परस्पर एक दूसरेको नही त्यागते। ऐसा होनेपर जो अश्रद्धावान् होते है, वे श्रद्धावान हो जाते है, जो श्रद्धावान होते है, वे अधिक श्रद्धावान् हो जाते है। भिक्षुओ,यह पाँचवी बात है, जो सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ऱ्हास न होने, सद्धर्मका अन्तर्धान न होनेका कारण होती है।

भिक्षुओ, आदमी आदमीको लेकर, इन पाँच आदमियोके प्रति बोली गई वाणी अप्रिय-वाणी होती है। किन पाँच आदमियोके प्रति ? भिक्षुओ, अश्रद्धावान्के लिये श्रद्धा सम्बन्धी वातचीत अप्रिय-वाणी होती है। दुश्शीलके लिये सदाचार सम्बन्धी वातचीत अप्रिय-वाणी होती है। अल्प-श्रुतके लिये बहुश्रुत-पनकी वातचीत अप्रिय-वाणी होती है। कजूसके लिये त्याग सम्बन्धी वातचीत अप्रिय-वाणी होती है। मूर्खके लिये प्रज्ञा सम्बन्धी वातचीत अप्रिय वाणी होती है। भिक्षुओ, अश्रद्धावान्के लिये श्रद्धा सम्बन्धी वातचीत अप्रिय वाणी क्यो होती है ? भिक्षुओ, जो अश्रद्धावान् होता है वह श्रद्धाकी वात कही जानेपर क्षुब्ध होता है, कुपित होता है, क्रोधित होता है, विरोध करता है, कोप, द्वेष तथा असतोष प्रकट करता है। यह किसलिये ? भिक्षुओ, वह अपनेमें उस श्रद्धा-सम्पत्तिको नही देखता, उस वातचीतसे उसके मनमे प्रीति-प्रमोद पैदा नही होता। इसलिये अश्रद्धावान्के लिये श्रद्धा सम्बन्धी वातचीत अप्रिय-वाणी होती है। भिक्षुओ, दुश्शीलके लिये सदाचार सम्बन्धी वातचीत अप्रिय-वाणी क्यो होती है ? भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, वह सदाचारकी वातचीत कही जानेपर क्षुब्ध होता है, कुपित होता है, क्रोधित होता है, विरोध करता है, कोप-द्वेष तथा असन्तोष प्रकट करता है। यह किस लिये ? भिक्षुओ, वह अपनेमे उस सदाचार-सम्पत्तिको नही देखता। उस वातचीतसे उसके मनमे प्रीति-प्रमोद पैदा नही होता। इसलिये दुश्शीलके लिये

सदाचार सम्बन्धी वातचीत अप्रिय-वाणी होती है। भिक्षुओ, अल्प-श्रुतके लिये वहु-श्रुत-पन सम्बन्धी वातचीत अप्रिय-वाणी क्यो होती है? भिक्षुओ, जो अल्प-श्रुत होता है वह वहु-श्रुत-पनकी वातचीत कही जानेपर क्षुव्ध होता है, कुपित होता है, क्रोधित होता है, विरोध करता है, कोप-द्वेप तथा असन्तोप प्रकट करता है। यह किस लिये? भिक्षुओ, वह अपनेमे उस वहुश्रुत-पनकी सम्पत्तिको नही देखता, उस वातचीतसे उसके मनमें प्रीति-प्रमोद पैदा नही होता। इसलिये अल्प-श्रुतके लिये वहु-श्रुत-पत सम्बन्धी वातचीत अप्रिय-वाणी होती है। भिक्षुओ, कजूसके लिये त्याग सम्बन्धी वातचीत अप्रिय-वाणी क्यो होती है? भिक्षुओ, जो कजूस होता है, वह त्यागकी वातचीत कही जानेपर क्षुव्ध होता है, कुपित होता है, क्रोधित होता है, विरोध करता है, कोप-द्वेप तथा असन्तोप प्रकट करता है। यह किम लिये? भिक्षुओ, वह अपनेमे उस त्याग-सम्पत्तिको नही देखता, उस वातचीतसे उसके मनमे प्रीति-प्रमोद पैदा नही होता। इसलिये कजूसके लिये त्याग सम्बन्धी वातचीत अप्रिय-वाणी होती है। भिक्षुओ, मूर्खके लिये प्रज्ञा सम्बन्धी वातचीत अप्रिय-वाणी क्यो होती है? भिक्षुओ, जो मूर्ख होता है, वह प्रज्ञाकी वातचीत कही जानेपर क्षुव्ध होता है, कुपित होता है, क्रोधित होता है, विरोध करता है, कोप-द्वेप तथा असन्तोप प्रकट करता है। यह किसलिये? भिक्षुओ, वह अपनेमे उस प्रज्ञा-सम्पत्तिको नही देखता, उस वातचीतसे उसके मनमे प्रीति-प्रमोद पैदा नही होता। इसलिये मूर्खके लिये प्रज्ञा सम्बन्धी वातचीत अप्रिय-वाणी होती है। भिक्षुओ, आदमी आदमीको लेकर इन पाँच आदमियोके प्रति वोली गई वाणी अप्रिय-वाणी होती है।

भिक्षुओ, आदमी आदमीको लेकर इन पाँच आदमियोके प्रति वोली गई वाणी प्रिय-वाणी होती है। किन पाँच आदमियोके प्रति? भिक्षुओ, श्रद्धावानके लिये श्रद्धा सम्बन्धी वातचीत प्रिय-वाणी होती है। शीलवान्के लिये सदाचार सम्बन्धी वातचीत प्रिय-वाणी होती है। वहुश्रुतके लिये वहुश्रुत-पन सम्बन्धी वातचीत प्रियवाणी होती है। त्यागीके लिये त्याग सम्बन्धी वातचीत प्रियवाणी होती है। प्रज्ञावान्के लिये प्रज्ञा सम्वन्धी वातचीत प्रियवाणी होती है। भिक्षुओ, श्रद्धावानके लिये श्रद्धा सम्बन्धी वातचीत प्रिय-वाणी क्यो होती है? भिक्षुओ, जो श्रद्धावान् होता है, वह श्रद्धाकी वातचीत कही जानेपर क्षुव्ध नही होता है, कुपित नही होता है, क्रोधित नही होता है, विरोध नही करता है, कोप, द्वेप, तथा असतोप प्रकट नही करता है। यह किस लिये? भिक्षुओ, वह अपनेमे उस श्रद्धा सम्पत्तिको देखता है, उस वातचीतसे उसके मनमे प्रीति-प्रमोद पैदा होता है। इसलिये श्रद्धावान्के लिये श्रद्धा-सम्बन्धी वातचीत प्रियवाणी होती है। भिक्षुओ, शीलवान्के लिये सदाचार सम्बन्धी वातचीत प्रिय-वाणी क्यो होती है? भिक्षुओ, जो शीलवान् होता है, वह सदाचारकी वातचीत

कही जानेपर क्षुब्ध नही होता है, कुपित नही होता है, क्रोधित नही होता है, विरोध नहीं करता है, कोप, द्वेष, तथा असतोष प्रकट नही करता है। यह किस लिये? भिक्षुओ, वह अपनेमे उस सदाचार सम्पत्तिको देखता है, उस वातचीतसे उसके मनमे प्रीति-प्रमोद पैदा होता है। इसलिये शीलवान्के लिये सदाचार सम्वन्धी वातचीत प्रिय-वाणी होती है। भिक्षुओ, वहुश्रुतके लिये वहुश्रुतपन सम्वन्धी वातचीत प्रिय-वाणी क्यो होती है? भिक्षुओ, जो वहुश्रुत होता है, वह वहुश्रुत-पनकी वातचीत कही जानेपर क्षुब्ध नही होता है, कुपित नही होता है, क्रोधित नही होता है, विरोध नही करता है। यह किस लिये? भिक्षुओ, वह अपनेमे उस वहु-श्रुत-सम्पदाको देखता है, उस वातचीतसे उसके मनमे प्रीति-प्रमोद पैदा होता है। इसलिये वहुश्रुतके लिये वहुश्रुत-पन सम्वन्धी वातचीत प्रिय-वाणी होती है। भिक्षुओ, त्यागीके लिये त्याग सम्वन्धी वातचीत प्रिय-वाणी क्यो होती है? भिक्षुओ, जो त्यागी होता है, वह त्यागकी वातचीत कही जाने पर क्षुब्ध नही हो होता है, कुपित नही होता है, क्रोधित नही होता है, विरोध नही करता है। यह किस लिये? भिक्षुओ, वह अपनेमे उस त्याग-सम्पदाको देखता है, उस वातचीतसे उसके मनमे प्रीति-प्रमोद पैदा होता है। इसलिये त्यागीके लिये त्याग सम्वन्धी वातचीत प्रिय-वाणी होती है। भिक्षुओ, प्रज्ञावानके लिये प्रज्ञा सम्वन्धी वातचीत प्रिय-वाणी क्यो होती है? भिक्षुओ, जो प्रज्ञावान् होता है, वह प्रज्ञाकी वातचीत कही जानेपर क्षुब्ध नही होता है, कुपित नही होता है, क्रोधित नही होता है, विरोध नही करता है। यह किस लिये? भिक्षुओ, वह अपनेमें उस प्रज्ञा सम्पदाको देखता है, उस वातचीतसे उसके मनमें प्रीति-प्रमोद पैदा होता है। इसलिये प्रज्ञावान्के लिये प्रज्ञा सम्वन्धी वातचीत प्रिय-वाणी होती है। भिक्षुओ, आदमी आदमीको लेकर इन पाँच आदमियोंके प्रति वोली गई वाणी प्रियवाणी होती है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वातें होती है वह आसक्तिमे आसक्त हो जाता है। कौनसी पाँच वाते? भिक्षुओ, भिक्षु अश्रद्धावान् होता है, दुश्शील होता है, अल्प-श्रुत होता है, आलसी होता है, तथा मूर्ख (दुष्प्रज्ञ) होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है, वह आसक्तिमे आसक्त हो जाता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वात होती है वह विशारद होता है। कौनसी पाँच वाते? भिक्षुओ, भिक्षु श्रद्धावान् होता है, सदाचारी होता है, वहुश्रुत होता है, अप्रमादी होता है, तथा प्रज्ञावान् होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाच वाते होती है, वह विशारद होता है।

एक समय भगवान् कोसम्वीके घोषितारामसे विहार करते थे। उस समय आयुष्मान् उदायी वहुतसे गृहस्थोंसे घिरे हुए उन्हे बैठे धर्मोपदेश दे रहे थे। आयुष्मान् आनन्दने देखा कि आयुष्मान् उदायी वहुतसे गृहस्थोंसे घिरे हुए, उन्हे बैठे धर्मोपदेश दे

रहे थे। देखकर आयुष्मान् आनन्द जहाँ भगवान् थे वहाँ पहुँचे। जाकर भगवान्को प्रणामकर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे आयुष्मान् आनन्दने भगवान्से निवेदन किया—भन्ते! आयुष्मान् उदायी बहुतसे गृहस्थोसे घिरे हुए उन्हे बैठे धर्मोपदेश दे रहे हैं। (भगवान् बोले)—आनन्द! दूसरोको धर्मोपदेश देना आसान नही। आनन्द! जिसे दूसरोको धर्मोपदेश देना हो उसे स्वय पाँच बातोमे प्रतिष्ठित होकर दूसरोको धर्मोपदेश देना चाहिये। कौनसी पाँच बाते? उसे निश्चय करना चाहिये कि मैं दान-कथा शील-कथा आदिके क्रमसे ही दूसरोको धर्मोपदेश दूँगा। उसे निश्चय करना चाहिये कि मैं प्रत्येक कथनका कारण प्रकट करते हुए दूसरोको धर्मोपदेश दूँगा। उसे निश्चय करना चाहिये कि मैं सभी प्राणियोके प्रति करुणासे प्रेरित होकर ही दूसरोको धर्मोपदेश दूँगा। उसे निश्चय करना चाहिये कि मैं बिना चीवर आदि किसी भी वस्तुके लोभके दूसरोको धर्मोपदेश दूँगा। उसे निश्चय करना चाहिये कि मैं बिना अपने या दूसरोको आघात पहुँचाये दूसरोको धर्मोपदेश दूँगा। आनन्द! दूसरोको धर्मोपदेश देना आसान नही। आनन्द! जिसे दूसरोको धर्मोपदेश देना हो उसे स्वय पाँच बातोमें प्रतिष्ठित होना चाहिये।

भिक्षुओ, ये पाँच प्रवृत्तियाँ उत्पन्न होनेपर इन्हे रोकना बहुत कठिन हो जाता है। कौनसी पाँच? उत्पन्न हुए रागका रोकना बहुत कठिन होता है। उत्पन्न हुए क्रोधका शमन बहुत कठिन होता है। उत्पन्न हुए मोहका मूलोच्छेद बहुत कठिन होता है। उत्पन्न सूझ (प्रतिभा) को दबाना बहुत कठिन होता है। उत्पन्न गमनचित्त (कही जानेका सकल्प) को बदलना बहुत कठिन हो जाता है। भिक्षुओ, ये पाँच (प्रवृत्तियाँ) ऐसी है, जिनके उत्पन्न होनेपर उन्हे रोकना कठिन हो जाता है।

(२) आघात वर्ग

भिक्षुओ, ये पाँच विरोधी-भावके उपशमन है। भिक्षुको चाहिये कि वह इन पाँचो विरोधी-भावोके उत्पन्न होनेपर उनका सर्वथा उपशमन करे। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, जिस व्यक्तिके प्रति मनमे विरोधी भाव पैदा हो, उस व्यक्तिके प्रति मैत्री-भावना करनी चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्तिके प्रति विरोधी-भावका उपशमन करना चाहिये। भिक्षुओ, जिस व्यक्तिके प्रति मनमे विरोधी-भाव पैदा हो उस व्यक्ति के प्रति करुणा-भावना करनी चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्तिके प्रति विरोधी-भावका उपशमन करना चाहिये। भिक्षुओ, जिस व्यक्तिके प्रति मनमें विरोधी-भाव पैदा हो उस व्यक्तिके प्रति उपेक्षा-भावना करनी चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्तिके प्रति विरोधी भावका उपशमन करना चाहिये। भिक्षुओ, जिस व्यक्तिके प्रति मनमे विरोधी-भाव पैदा हो, उस व्यक्तिकी ओरसे मनको हटा देना चाहिये, ध्यानको हटा लेना चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्तिके प्रति विरोधी-भावका उपशमन करना चाहिये। भिक्षुओ,

जिस व्यक्तिके प्रति मनमे विरोधी-भाव पैदा हो, उस व्यक्तिके प्रति कर्म-भावको मनमे प्रतिष्ठित करना चाहिये। उसे मनमे कहना चाहिये कि आयुष्मान् आप कर्म-अधिकृत है, कर्म-दायाद है, या कर्म ही आपका वन्धु है, कर्म ही आपका शरण-स्थल है, आप जो भी भला या बुरा काम करेगे उसकी जिम्मेदारी आपपर होगी। इस प्रकार उस व्यक्तिके प्रति विरोधी-भावका शमन करना चाहिये। भिक्षुओ, ये पॉच विरोधी-भावके उपशमन है। भिक्षुको चाहिये कि वह इन पाचो विरोधी-भावोके उत्पन्न होनेपर उनका सर्वथा उपशमन करे।

तव आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओको सम्वोधित किया—"आयुष्मानो भिक्षुओ।" उन भिक्षुओने आयुष्मान् सारिपुत्रको प्रति-वचन दिया—"आयुष्मान्!" आयुष्मान् सारिपुत्रने यह कहा—आयुष्मानो! ये पाँच विरोधी-भाव के उपशमन है। भिक्षुको चाहिये कि वह इन पाँचो विरोधी-भावोके उत्पन्न होने पर उनका सर्वथा उपशमन करे। कौनसे पाँच? आयुष्मानो! एक आदमी ऐसा होता है जिसके शारीरिक कर्म अशुद्ध होते है। किन्तु वाणीके कर्म शुद्ध होते है। आयुष्मानो! ऐसे व्यक्तिके प्रति भी उत्पन्न हुए विरोधी भावका शमन करना चाहिये। आयुष्मानो! एक आदमी ऐसा होता है जिसके वाणीके कर्म अशुद्ध होते है, किन्तु शारीरिक कर्म शुद्ध होते है। आयुष्मानो! ऐसे व्यक्तिके प्रति भी उत्पन्न हुए विरोधी भाव का शमन करना चाहिये। आयुष्मानो! एक आदमी ऐसा होता है जिसके शारीरिक कर्म अशुद्ध होते है तथा वाणीके कर्म भी अशुद्ध होते है, किन्तु वीचवीचमे थोडे-थोडे समयके लिये वह शुद्ध (सावकाश) रहता है और प्रीति-युक्त रहता है। आयुष्मानो! ऐसे व्यक्तिके प्रति भी उत्पन्न हुए विरोधी-भावका शमन करना चाहिये। आयुष्मानो! एक आदमी ऐसा होता है जिसके शारीरिक कर्म अशुद्ध होते है, वाणीके कर्म भी अशुद्ध होते है, और वीचवीचमे थोडे समयके लिये भी न वह शुद्ध रहता है और न प्रीतियुक्त रहता है। आयुष्मानो! ऐसे व्यक्तिके प्रति भी उत्पन्न हुए विरोधी-भावका शमन करना चाहिये। आयुष्मानो! एक आदमी ऐसा होता है जिसके शारीरिक कर्म शुद्ध होते है, वाणीके कर्म शुद्ध होते है, और वीचवीचमे उसे चित्तका अवकाश और प्रीति भी प्राप्त रहती है। आयुष्मानो! ऐसे व्यक्तिके प्रति भी उत्पन्न हुए विरोधी-भावका शमन करना चाहिये।

आयुष्मानो! जो आदमी ऐसा होता है कि जिसके शारीरिक-कर्म अशुद्ध होते है, वाणीके कर्म शुद्ध होते है, ऐसे व्यक्तिके प्रति उत्पन्न हुए विरोधी-भावका शमन कैसे करना चाहिये? आयुष्मानो! जैसे कोई भिक्षु हो, जो मात्र चीथडोंसे बने वस्त्र ही पहनता हो और उसे गलीमे पडा हुआ चीथडा मिल जाय और वह बायें पाँवसे उसे दबाकर, दाहिने पाँवसे उसे फैलाकर, उस चीथडेमेंसे जो सारवान् (= मजबूत) हिस्सा

हो उसे फाडकर और लेकर चला जाय। इसी प्रकार आयुष्मानो! जो ऐसा आदमी होता है कि जिसके शारीरिक कर्म-अशुद्ध होते हैं, किन्तु वाणीके कर्म शुद्ध होते हैं, उस समय ऐसे व्यक्तिके अशुद्ध शारीरिक कर्मोंकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिये। किन्तु उस समय उसकी जो वाणीकी परिशुद्धि रहती है, उसीकी ओर ध्यान देना चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्तिके प्रति उत्पन्न हुए विरोधी-भावका शमन करना चाहिये। आयुष्मानो! जो आदमी ऐसा होता है कि जिसके शारीरिक कर्म शुद्ध होते हैं, किन्तु वाणीके कर्म अशुद्ध होते हैं, ऐसे व्यक्तिके प्रति उत्पन्न हुए विरोधी-भावका शमन कैसे करना चाहिये? आयुष्मान जैसे कोई तालाब हो वह शैवाल तथा पानीकी पपड़ीसे ढका हो। वहाँ एक आदमी आये जो गरमीसे तपा हो, गरमीसे घबराया हो, थका हो तृषा लगी हो, प्यासा हो। वह उस तालाबमें उतरकर, दोनों हाथोंसे इतिनिरि (?) और शैवाल तथा पानीकी पपड़ीको हटाकर, अञ्जलिसे पानी लेकर पिये। इसी प्रकार आयुष्मानो! जो यह आदमी ऐसा हो कि जिसके वाणीके कर्म अशुद्ध हों, किन्तु शरीरके कर्म शुद्ध हों, उस समय उस व्यक्तिके वाणीके अशुद्ध कर्मोंकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिये। उस समय उस व्यक्तिके शरीरके शुद्ध कर्मोंकी ओर ही ध्यान देना चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्तिके प्रति उत्पन्न हुये विरोधी-भावका शमन करना चाहिये।

आयुष्मानो! जो आदमी ऐसा होता है कि जिसके शारीरिक कर्म अशुद्ध होते हैं, वाणीके कर्म अशुद्ध होते हैं, किन्तु बीच बीचमे थोडे थोडे समयके लिये वह शुद्ध (=सावकाश) रहता है और प्रीतियुक्त रहता है। ऐसे व्यक्तिके प्रति उत्पन्न हुए विरोधी-भावका शमन कैसे करना चाहिये? आयुष्मानो! जैसे गोपद (?) में सीमित पानी हो। वहाँ एक आदमी आये जो गरमीसे तपा हो, गरमीसे घबराया हो, थका हो, तृषा लगी हो, प्यासा हो। उसके मनमें हो गोपदका यह पानी थोड़ासा है, यदि मै अञ्जलिसे पानी पीऊँगा अथवा बरतनसे हिला दूंगा तोमैं इस पानीको क्षुब्धकर दूंगा और यह पीनेके योग्य नही रहेगा। अच्छा होगा कि मै दोनो घुटनो तथा दोनो हाथोंके बल झुककर गौ-बैलकी तरह पानी पीकर चल दूं। वह घुटनो और हाथोंके बल झुककर, गौ-बैलकी तरह पानी पीकर चल दे। इसी प्रकार आयुष्मानो! जो यह आदमी ऐसा हो कि जिसके शारीरिक-कर्म अशुद्ध हो, वाणीके कर्म अशुद्ध हो, किन्तु बीच बीचमे थोडी थोडे समयके लिये वह शुद्ध (=सावकाश) रहता है और प्रीति-युक्त रहता है। उसके जो अशुद्ध शारीरिक-कर्म हो उनकी ओर ध्यान नही देना चाहिये तथा जो अशुद्ध वाणीके कर्म हो उनकी ओर भी ध्यान नही देना चाहिये। उस आदमी को बीच बीचमें, थोडे थोडे समयके लिये जो अवकाश रहता है, जो प्रीति प्राप्त रहती है, उसीकी ओर ध्यान देना चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्तिके प्रति उत्पन्न हुए विरोधी-भावका शमन करना चाहिये।

आयुष्मानो! जो आदमी ऐसा होता है कि जिसके शारीरिक कर्म अशुद्ध होते है, वाणीके कर्म अशुद्ध होते है और बीच बीचमे थोडे समयके लिये भी न वह शुद्ध रहता है और न प्रीति-युक्त रहता है। ऐसे व्यक्तिके प्रति उत्पन्न हुए विरोधी-भावका शमन कैसे करना चाहिये? जैसे आयुष्मानो! कोई आदमी अस्वस्थ हो, दुखी हो, अत्यन्त रोगी हो और रास्तेमे हो। उसके आगेका गाँव भी अभी दूर हो और पीछे का गाँव भी दूर छूट गया हो। उसे न खाना ही ठीक मिलता हो, न औषध ही ठीक मिलती हो, न सेवक ही ठीक मिलता हो और न उसे कोई गाँव तक पहुँचा देने वाला मिलता हो। उसे कोई दूसरा आदमी देखे जो स्वय रास्ता चल रहा हो। वह उस आदमीके प्रति करुणा, दया तथा अनुकम्पासे प्रेरित होकर सोचे कि किसी तरह इस आदमीको योग्य पथ्य मिल जाये, योग्य औषध मिल जाय, योग्य सेवक मिल जाय, और कोई गाँव तक पहुँचा देने वाला मिल जाय। यह किस लिये? ताकि वह रास्तेमे ही कष्ट पाकर मर न जाये! इसी प्रकार आयुष्मानो! जो यह आदमी ऐसा हो कि जिसके शारीरिक कर्म अशुद्ध हो, वाणीके कर्म अशुद्ध हो, और बीच बीचमे थोडे समयके लिये भी न वह शुद्ध रहता हो और न प्रीति-युक्त रहता हो, ऐसे व्यक्तिके प्रति भी आयुष्मानो करूणा, दया तथा अनुकम्पा ही रखनी चाहिये कि यह आयुष्मान् शारीरिक दुश्चरित्रताको छोड शारीरिक सुचरित्रताका जीवन व्यतीत करे, वाणीकी दुश्चरित्रताको छोड वाणीकी सुचरित्रताका जीवन व्यतीत करे तथा मनकी दुश्चरित्रताको छोड मनकी सुचरित्रताका जीवन व्यतीत करे। यह किस लिये? ताकि यह आयुष्मान शरीरके छूटने पर, मरनेके अनन्तर, नरकमे न पडे, दुर्गति प्राप्त न हो। इस प्रकार उस व्यक्तिके प्रति उत्पन्न हुए विरोधी-भावका उपशमन करना चाहिये।

आयुष्मानो! जो आदमी ऐसा होता है कि जिसके शारीरिक कर्म शुद्ध होते है, वाणीके कर्म शुद्ध होते है और जो बीचबीचमे शुद्ध होता है और प्रीतियुक्त रहता है। उसके प्रति उत्पन्न विरोधी-भावका कैसे उपशमन करना चाहिये? जैसे आयुष्मानो! कोई पुष्करिणी हो, अच्छे जल वाली हो, स्वच्छ जल वाली, शीतल जल वाली, श्वेत जल वाली हो, सु-तीर्थ हो, रमणीय हो तथा नाना प्रकारके वृक्षोसे आच्छन्न हो। वहाँ एक आदमी आये, जो गर्मीसे तपा हो, गर्मीसे घबराया हो, थका हो, तृषा लगी हो, प्यासा हो। वह उस पुष्करिणीमे उतर, स्नान कर, जल पीकर, बाहर आकर वही वृक्षकी छायामे बैठ जाये वा लेट जाय। इसी प्रकार आयुष्मानो! जो

आदमी ऐसा हो कि जिसके शारीरिक कर्म शुद्ध हो, वाणीके कर्म शुद्ध हो और जो बीचबीचमे शुद्ध होता है और प्रीतियुक्त होता है, ऐसे व्यक्तिके जो शुद्ध शारीरिक-कर्म हो उनकी ओर भी ध्यान देना चाहिये, जो शुद्ध वाणीके कर्म हो, उनकी ओर भी ध्यान देना चाहिये, जो वह बीच बीचमे शुद्ध होता है और प्रीति-युक्त होता है, उसकी ओर भी ध्यान देना चाहिये। इस प्रकार ऐसे व्यक्ति के प्रति उत्पन्न हुई विरोधी-भावना का उपशमन करना चाहिये। आयुष्मानो! जो हर तरहसे प्रसन्न होता है, वह दूसरोकी प्रसन्नताका कारण होता है। भिक्षुओ, ये पाँच विरोधी-भावके उपशमन है। भिक्षुओको चाहिये कि वह इन पाचो विरोधी-भावोके उत्पन्न होनेपर उनका सर्वथा उपशमन करे।

तव आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओको सम्बोधित किया—"आयुष्मानो, भिक्षुओ!" उन भिक्षुओने आयुष्मान् सारिपुत्रको प्रत्युत्तर दिया—"आयुष्मान्!" तव आयुष्मान् सारिपुत्रने यह कहा—"भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते हो वह सब्रह्मचारियो द्वारा धर्म-चर्चाके योग्य है। कौनसी पाँच वाते? स्वय शीलवान् होता है और शीलसम्पत्तिके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोका समाधान करता है। स्वय समाधि-लाभी होता है और समाधि-सम्पत्तिके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोका समाधान करता है। स्वय प्रज्ञा-सम्पन्न होता है और प्रज्ञा-सम्पत्तिके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोका समाधान करता है। स्वय विमुक्ति-युक्त होता है और विमुक्ति-सम्पत्तिके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोका उत्तर देता है। स्वय विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन युक्त होता है और विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोका उत्तर देता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते हो, वह सब्रह्मचारियो द्वारा धर्म-चर्चाके योग्य होता है।"

तव आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओको सम्बोधित किया भिक्षुओ! जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते हो, वह सब्रह्मचारियोके साथ रहने योग्य होता है। कौनसी पाँच वाते? स्वय शीलवान् होता है और शील-सम्पत्तिके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोका समाधान करता है। स्वय समाधि-लाभी होता है और समाधि-सम्पत्तिके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोका समाधान करता है। स्वय प्रज्ञा-सम्पन्न होता है और प्रज्ञा-सम्पत्तिके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोका समाधान करता है। स्वय विमुक्ति-युक्त होता है और विमुक्ति-सम्पत्तिके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोका उत्तर देता है। स्वय विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन युक्त होता है और विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोका उत्तर देता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षमे ये पाँच वाते हो, वह सब्रह्मचारियो द्वारा धर्म-चर्चाके योग्य होता है।

तव आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओको सम्वोधित किया आयुष्मानो ! जो कोई भी दूसरोसे पूछता है, वह या तो इन पाचो कारणोसे अथवा इन पाचोमेंसे किसी एक कारणसे। कौनसे पाँच कारणोसे ? मन्द-वुद्धि होनेके कारण, मूढता होनेके कारण दूसरोसे प्रश्न पूछता है। इच्छा के वशीभूत होकर दूसरोसे प्रश्न पूछता है, दूसरोको परास्त करनेके लिये दूसरोसे प्रश्न पूछता है, जाननेकी इच्छासे दूसरोंसे प्रश्न पूछता है, अथवा कुपित होकर प्रश्न पूछता है—यदि मेरे प्रश्न पूछनेपर यह यथार्थ रूपसे उसका समाधान कर देता है तो ठीक, यदि मेरे प्रश्न पूछने पर यह यथार्थ रूपसे उसका समाधान नही कर देता है तो मैं ही इसका यथार्थ रूपसे समाधान करूँगा।

आयुष्मानो ! जो कोई भी दूसरोसे प्रश्न पूछता है, वह या तो इन पाँचो कारणोसे अथवा इन पाँचोमेंसे किसी एक कारणसे। आयुष्मानो ! मैं जो दूसरोसे प्रश्न पूछता हूँ, वह इसी भावनासे पूछता हूँ—यदि मेरे प्रश्न पूछनेपर यथार्थ रूपसे उसका समाधान कर देता है तो ठीक, यदि मेरे प्रश्न पूछनेपर यह यथार्थ रूपसे उसका समाधान नही कर देता है तो मैं ही इस प्रश्नका यथार्थ रूपसे समाधान करूँगा।

तव आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओको सम्वोधित किया—आयुष्मानो ! इसकी सम्भावना है कि शील-समाधि तथा प्रज्ञासे युक्त भिक्षु सज्ञावेदयितनिरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। इसकी भी सम्भावना है कि यदि वह इसी जन्ममे अर्हत्व प्राप्त न करे तो वह इसके अनन्तर कामावचर देवताओकी सगतिमे उत्पन्न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर सज्ञावेदयित निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। ऐसा कहने पर—आयुष्मान् उदायीने आयुष्मान् सारिपुत्रको यह कहा—आयुष्मान् सारिपुत्र ! इसकी कोई सम्भावना नही है, इसकी कोई गुंजायश नही है कि वह भिक्षु इसके अनन्तर कामावचर देवताओकी सगति मे उत्पन्न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर सज्ञावेदयित निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। इसके लिये जगह नही है। दूसरी वार भी . . . तीसरी वार भी आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओको सम्वोधित किया—आयुष्मानो ! इसकी सम्भावना है कि शील-समाधि तथा प्रज्ञासे युक्त भिक्षु सज्ञावेदयित निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। इसकी भी सम्भावना है कि यदि वह इसी जन्ममे अर्हत्वको प्राप्त न करे तो वह इसके अनन्तर कामावचर देवताओकी सगतिमे उत्पन्न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर सज्ञा-

वेदयित निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। तीसरी बार भी आयुष्मान् उदायीने आयुष्मान् सारिपुत्रको यह कहा—आयुष्मान् सारिपुत्र ! इसकी कोई सम्भावना नहीं है, इसकी कोई गुंजायश नहीं है, कि वह भिक्षु इसके अनन्तर कामावचर देवताओंकी सगतिमें उत्पन्न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर, सज्ञावेदयित निरोध ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। इसके लिये जगह नहीं है।

तब आयुष्मान् सारिपुत्रके मनमें यह हुआ कि तीन बार आयुष्मान् उदायीने मेरा विरोध किया, किन्तु एक भी भिक्षुने मेरा समर्थन नहीं किया। क्यों न मैं जहाँ भगवान् हैं वहाँ चलूं ? तब आयुष्मान् सारिपुत्र जहाँ भगवान् थे, वहाँ गये। जाकर भगवान् को नमस्कार कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठकर आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओंको सम्बोधित किया—आयुष्मानो। इस की सम्भावना है कि शील, समाधि तथा प्रज्ञासे युक्त भिक्षु सज्ञावेदयित-निरोध नामक ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। इसकी भी सम्भावना है कि यदि वह इसी जन्ममें अर्हत्व प्राप्त न करे तो वह इसके अनन्तर कामावचर-देवताओंकी सगतिमें उत्पन्न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर सज्ञावेदयित निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। ऐसा कहने पर आयुष्मान् उदायी ने आयुष्मान् सारिपुत्र को यह कहा—आयुष्मान् सारिपुत्र ! इसकी कोई सम्भावना नहीं है, इसकी कोई गुंजायश नहीं है कि वह भिक्षु, इसके अनन्तर (कामावचर-देवताओं) की सगतिमें उत्पन्न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर सज्ञावेदयित-निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। इसके लिये जगह नहीं है। दूसरी बार भी तीसरी बार भी आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओंको सम्बोधित किया—आयुष्मानो ! इसकी सम्भावना है कि शील, समाधिसे तथा प्रज्ञासे युक्त भिक्षु सज्ञावेदयित निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। इसकी भी सम्भावना है कि यदि वह इसी जन्ममे अर्हत्व प्राप्त न करे तो वह इसके अनन्तर कामावचर देवताओंकी सगतिमे उत्पन्न हो कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर सज्ञावेदयित निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। तीसरी बार भी आयुष्मान् उदायीने आयुष्मान् सारिपुत्रको यह कहा—आयुष्मान् सारिपुत्र ! इसकी कोई सभावना नही है, इसकी कोई गुंजायश नही है कि वह भिक्षु इसके अनन्तर कामावचर-देवताओंकी सगतिमें

उत्पन्न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारणकर सञ्ज्ञावेदयित निरोध ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। इसके लिये जगह नही है।

तब आयुष्मान् सारिपुत्रके मनमे आया कि भगवान् की उपस्थितिमे ही आयुष्मान् उदायीने तीन बार मेरा विरोध किया। किसी एक भिक्षुने भी मेरा समर्थन नही किया। मैं चुप क्यो न रहूँ ? तब आयुष्मान् सारिपुत्र चुप हो गये। तब भगवान्ने आयुष्मान् आनन्दको सम्बोधित किया—उदायी! मनोमय-कायसे तू क्या समझता है ?

"भन्ते! अरूपी सञ्ज्ञामय देवगण ?"

"उदायी! तुझ मूर्ख अपण्डितके बोलनेसे क्या प्रयोजन ? तुझे भी बोलना योग्य जचता है ?"

तब भगवान्ने आयुष्मान् आनन्दको सम्बोधित किया—"आनन्द! जब स्थविर भिक्षु (सारिपुत्र) को कष्ट दिया जाता है, तब तुम उपेक्षा करते हो ? स्थविर भिक्षुको कष्ट पाता देखकर तुम्हारे मनमे करुणा भी नहीं पैदा होती ?"

तब भगवान्ने भिक्षुओको सम्बोधित किया—भिक्षुओ, इसकी सम्भावना है कि शील, समाधि तथा प्रज्ञासे युक्त भिक्षु सञ्ज्ञावेदयित निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। इसकी भी सम्भावना है कि यदि वह इसी जन्ममे अर्हत्व प्राप्त न करे तो वह इसके अनन्तर कामावचर-देवताओकी सगतिमे उत्पन्न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर सञ्ज्ञावेदयित निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। भगवान्ने यह कहा और यह कह कर सुगत आसनसे उठकर चले गये।

तब भगवान्के चले जानेके थोडी ही देर बाद आयुष्मान् आनन्द जहाँ आयुष्मान् उपवान थे, वहाँ पहुँचे। पास जाकर आयुष्मान् उपवानको यह कहा—"उपवान दूसरे भिक्षु स्थविरको हैरान करते हैं। हम उनसे बात नही करते। लेकिन आयुष्मान् उपवान इसमे कुछ भी आश्चर्य नही है कि भगवान् आज शामके समय ध्यानावस्थासे इसी सम्बन्धमे कुछ कहे—सुने। हो सकता है कि भगवान्का यह कथन ठीक ठीक आयुष्मान् उपवानकी समझमे आये। अभी हमारी सकोच-शीलता दूर हुई।

तब भगवान् शामके समय ध्यानावस्थासे उठ जहाँ सेवा-भवन (= उपस्थान-शाला) था, वहाँ गये। जाकर बिछे आसनपर बैठे। बैठकर भगवान्ने आयुष्मान् उपवान्को यह कहा—उपवान्! स्थविर भिक्षुमे ऐसे कितने गुण होने चाहिये जिनके

होनेसे स्थविर भिक्षु अपने सब्रह्मचारियों (=साथियों) का प्रिय होता है, उन्हें अच्छा लगने वाला होता है, उनका आदर-भाजन होता है तथा उनके द्वारा सत्कृत होता है ?

"भन्ते ! स्थविर भिक्षुमें ऐसे पाँच गुण होने चाहिये जिनके होनेसे स्थविर भिक्षु अपने सब्रह्मचारियोंका प्रिय होता है, उन्हें अच्छा लगने वाला होता है, उनका आदर-भाजन होता है, तथा उनके द्वारा सत्कृत होता है। कौनसे पाँच ? भन्ते ! स्थविर भिक्षु शीलवान् होता है—शिक्षापदोको सम्यक्-प्रकार ग्रहण करता है; बहुश्रुत होता है—(सम्यक्) दृष्टि द्वारा भली प्रकार बींधा गया, कल्याणकर वचन बोलने वाला होता है, कल्याणकर वाणीसे युक्त, मधुरवाणीसे युक्त, निर्मल, निर्दोष, अर्थको प्रकट करने वाली, इसी जन्ममें सुख देने वाले, चारों चैतसिक ध्यानोको सहज ही से, आसानीसे, अनायास प्राप्त करने वाला होता है, आस्रवोंका क्षय कर ... साक्षात् कर प्राप्तकर विहार करता है। भन्ते ! जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच गुण होते हैं, वह स्थविर भिक्षु अपने सब्रह्मचारियोंका प्रिय होता है, उन्हे अच्छा लगने वाला होता है, उनका आदर भाजन होता है, तथा उनके द्वारा सत्कृत होता है। बहुत अच्छा, बहुत अच्छा उपवान ! उपवान ! जिन स्थविर भिक्षुमें ये पाँच गुण होते हैं, वह स्थविर भिक्षु अपने सब्रह्मचारियोंका प्रिय होता है, उन्हे अच्छा लगने वाला होता है, उनका आदर-भाजन होता है तथा उनके द्वारा सत्कृत होता है। उपवान् यदि ये पाँच गुण स्थविर भिक्षुमें न हो तो उसके सब्रह्मचारी उसका सत्कार, उसका गौरव क्यों करेंगे, उसे क्यों मानेंगे, उसे क्यों पूजेंगे ? क्या टूटे दांत वाला होनेके कारण ? क्या सफेद बालो वाला होनेके कारण ? क्या चमड़ीमें झुर्रियाँ पड जानेके कारण ? उपवान ! क्योंकि स्थविर भिक्षुमें ये पाँच गुण विद्यमान है, इसी-लिये सब्रह्मचारी उसका सत्कार, उसका गौरव करते है, उसे मानते है, उसे पूजते है।

तब आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओंको सम्बोधित किया .

आयुष्मानो ! जो भिक्षु किसी दूसरे भिक्षु पर दोषारोपण करना चाहता हो उसे चाहिये कि स्वयं पाँच बातोंपर दृढ रहकर दूसरे भिक्षु पर दोषारोपण करे। कौनसी पाँच बातो पर ? उचित समय देखकर दोषारोपण करूँगा, अनुचित समय पर नही ; सच्चा दोषारोपण करूँगा, मिथ्या दोषारोपण नही , मधुर शब्दोंसे दोषारोपण करूँगा कठोर शब्दोंसे नही , हितचितासे दोषारोपण करूँगा, अहित चितासे नही , तथा मैत्री चित्तसे दोषारोपण करूँगा, द्वेष चित्तसे नही। आयुष्मानो ! जो भिक्षु किसी दूसरे भिक्षुपर दोषारोपण करना चाहता हो उसे चाहिये कि स्वयं पाच बातो पर दृढ़ रहकर दूसरे भिक्षुपर दोषारोपण करे।

आयुष्मानो ! मैं देखता हूँ कि कोई कोई आदमी ऐसा होता है जिसे इस लिये क्रोध आ जाता है, क्योकि उसपर अनुचित समयपर दोषारोपण किया गया है, उचित समय देखकर नही, क्योकि उसपर मिथ्या दोषारोपण किया गया है, सच्चा दोषारोपण नही ; कठोर शब्दोमें दोषारोपण किया गया है, मधुर शब्दोमे नही, अहित चितासे दोषारोपण किया गया है, हित-चिन्तासे नही , तथा द्वेष चित्तसे दोषारोपण किया गया है, मैत्री-चित्तसे नही ।

आयुष्मानो ! जिस भिक्षु पर यथोचित विधि से (धर्मानुसार) दोषारोपण नही किया गया, उसे पाँच प्रकारसे उसकी लज्जा दूर कर देनी चाहिये—आयुष्मान् ! तुमपर अनुचित समय पर दोषारोपण हुआ है, उचित समय पर नही , मिथ्या दोषारोपण किया गया है, सच्चा दोषारोपण नही , कठोर शब्दोमे दोषारोपण किया गया है, मधुर शब्दोमे नही , अहित चिन्तासे दोषारोपण किया गया है, हित-चितासे नही तथा द्वेष-चित्तसे दोषारोपण किया गया है , मैत्री-चित्तसे नही। आयुष्मानो ! जिस भिक्षु पर यथोचित विधिसे दोषारोपण नही किया गया, पाँच प्रकारसे उसकी लज्जा दूर करनी चाहिये।

आयुष्मानो ! जिस भिक्षुने यथोचित-विधि से (धर्मानुसार) दोषारोपण नही किया, पाँच प्रकारसे उसे लज्जित करना चाहिये—आयुष्मान् ! तुमने अनुचित समय पर दोषारोपण किया है, उचित समय पर नही , मिथ्या दोषारोपण किया है, सच्चा दोषारोपण नही , कठोर शब्दोमे दोषारोपण किया है, मधुर शब्दोमें नही , अहित चिन्तासे दोषारोपण किया है, हितचितासे नही। आयुष्मानो ! जिस भिक्षुने यथोचित विधि से (धर्मानुसार) दोषारोपण नही किया, पांच प्रकारसे उसे लज्जित करना चाहिये। यह किस लिये ? ताकि वह किसी दूसरे भिक्षुपर भी (इसी तरह) दोषारोपण न करे।

आयुष्मानो ! मै देखता हूँ कि कोई कोई आदमी ऐसा होता है, जिसे क्रोध आता है, यद्यपि उस पर समय देखकर दोषारोपण किया गया है, अनुचित समय पर नही , सच्चा दोषारोपण किया गया है, मिथ्या दोषारोपण नही , मधुर-शब्दोमे दोषारोपण किया गया है, कठोर शब्दोमे नही , हित-चितासे दोषारोपण किया गया है, अहित चिन्तासे नही , मैत्री चित्तसे दोषारोपण किया गया है, द्वेष-चित्तसे नही।

आयुष्मानो ! जिस भिक्षुपर यथोचित-विधिसे (धर्मानुसार) दोषारोपण किया हो, पाँच प्रकारसे उसे लज्जित करना चाहिये—आयुष्मान् ! तुम पर समय देखकर दोषारोपण किया गया है, अनुचित समय पर नही , सच्चा दोषारोपण

किया गया है, मिथ्या दोषारोपण नही, मधुर शब्दोंमे दोषारोपण किया गया है, कठोर शब्दोमे नही, हित-चिन्तासे दोषारोपण किया गया है, अहित-चिन्तासे नही, मैत्री-चित्तसे दोषारोपण किया गया है, द्वेष-चित्तसे नही। आयुष्मानो! जिस भिक्षु पर यथोचित विधि से (धर्मानुसार) दोषारोपण किया हो, पाँच प्रकारसे उसे लज्जित करना चाहिये।

आयुष्मानो! जिस भिक्षुने यथोचित विधि से (धर्मानुसार) दोषारोपण किया हो, पाँच प्रकारसे उसकी लज्जा दूर करनी चाहिये—आयुष्मान्! तुमने उचित समय देखकर दोषारोपण किया है, अनुचित समय पर नही, सच्चा दोषारोपण किया है, मिथ्या दोषारोपण नही, मधुर शब्दोंमे दोषारोपण किया है, कठोर शब्दोमे नही, हित चिन्तासे दोषारोपण किया है, अहित चिन्तासे नही, मैत्रीचित्तसे दोषारोपण किया है, द्वेष चित्तसे नही। आयुष्मानो! जिस भिक्षुने यथोचित विधि से (धर्मानुसार) दोषारोपण किया हो, पाँच प्रकारसे उसकी लज्जा दूर करनी चाहिये। यह किस लिये? ताकि वह किसी दूसरे भिक्षु पर भी उसी तरह दोषारोपण करे।

आयुष्मानो! जिस व्यक्ति पर दोषारोपण हो उसे चाहिये कि वह दो बातोंको हाथसे न जाने दे, सत्यको तथा स्थिरताको। आयुष्मानो! यदि मुझ पर भी दूसरे दोषारोपण करें—भले ही वह उचित समय पर किया गया हो, भले ही अनुचित समय पर किया गया हो, भले ही सच्चा दोषारोपण हो वा मिथ्या, भले ही मधुर शब्दोंमे दोषारोपण करें, भले ही कठोर शब्दोमे, भले ही हितचिन्तासे दोषारोपण करें, भले ही अहित-चिन्तासे, भले ही मैत्री-चित्तसे दोषारोपण करें, भले ही द्वेष-चित्तसे—तो मै भी इन्ही दो बातोंको हाथसे जाने न दूंगा—सत्यको तथा स्थिरता को। यदि मैं जानूंगा कि कोई दोष या गुण मुझमे है तो मै कह दूंगा कि यह बात मुझमे है, यह बात मुझमे विद्यमान् है। यदि मै जानूंगा कि कोई दोष या गुण मुझमें नही है तो मै कह दूंगा कि यह दोष या गुण मुझमे नही है।"

"सारिपुत्र! ऐसा कहने पर भी क्या कुछ बेकार-आदमी बात नही समझते?"

"भन्ते! जो श्रद्धावान् होते है, जीविकार्थी होते है, श्रद्धापूर्वक घरसे बेघर हुए नही रहते है, शठ होते है, मायावी होते है, छली होते है, उद्धत् होते है, अहकारी होते है, चपल होते है, वातूनी होते है, कही कुछ भी बोलने वाले होते है, असयमी होते है, भोजनके विषयमे अमात्रज्ञ होते है, जागृत नही रहने वाले होते है, श्रमणत्वकी ओर से लापरवाह होते है, शिक्षाओ के प्रति विशेष गौरवका भाव नहीं

रखने वाले होते है, जोड्-बटोरू होते है, शिथिल होते है, पतनकी ओर अग्रसर होने वाले होते है, एकान्त-जीवनकी ओरसे उदासीन होते है, आलसी होते है, प्रयत्न रहित होते है, मूढ-स्मृति होते है, विचार-रहित होते है, एकाग्रता-रहित होते है, भ्रान्तचित्त होते है, मूर्ख होते है तथा जड होते है , वे मेरे ऐसा कहने पर भी बात नही समझते। 'किन्तु भन्ते! जो कुल-पुत्र श्रद्धा-पूर्वक घरसे बेघर हुए रहते है, जो शठ नही होते है, जो मायावी नही होते है, जो छली नही होते है, जो उद्धत नही होते है, जो अहकारी नही होते है, जो चपल नही होते है, जो बातूनी नही होते है, जो सोच-समझकर बोलने वाले होते है, जो सयमी होते है, जो भोजनके विषयमे मात्रज्ञ होते है, जो जागृत नही रहने वाले होते है, जो श्रमणत्वकी ओरसे लापरवाह नही होते है, जो शिक्षाओके प्रति विशेष गौरवका भाव रखने वाले होते है, जो जोड्-बटोरू नही होते है, जो शिथिल नही होते है, जो पतनकी ओर अग्रसर होने वाले नही होते है, जो एकान्त-जीवनकी ओरसे उदासीन होते है, जो आलसी नही होते , जो वीर्य-वान् होते है, जो प्रयत्न-वान् होते है, जो स्मृतिमान् होते है, जो विचारवान् होते है, जो स्थिर-चित्त होते है, जो एकाग्र-चित्त होते है, जो प्रज्ञावान् होते है तथा जो जड नही होते है—वे मेरे ऐसा कहने पर बात समझ लेते है।"

"सारिपुत्र! जो अश्रद्धावान् हो, जो जीविकार्थी हो, जो श्रद्धापूर्वक घरसे बेघर हुए नही हो, जो शठ हो, जो मायावी हो, जो छली हो, जो उद्धत हो, जो अहकारी हो, जो चपल हो, जो बातूनी हो, जो कही भी कुछ भी बोलने वाले हो, जो असयमी हो, जो भोजनके विषयमे अमात्रज्ञ हो, जो जागृत न रहने वाले हो, जो श्रमणत्वकी ओरसे लापरवाह हो, जो शिक्षाओके प्रति विशेष गौरवका भाव न रखने वाले हो, जो जोड्-बटोरू हो, जो शिथिल हो, जो पतनकी ओर अग्रसर होनेवाले हो, जो एकान्त जीवनकी ओरसे उदासीन हो, जो आलसी हो, जो प्रयत्न-रहित हो, जो मूढ-स्मृति हो, जो विचार-रहित हो, जो एकाग्रता-रहित हो, जो भ्रान्त-चित्त हो, जो मूर्ख हो तथा जो जड हो—ऐसे लोगोको रहने दो। किन्तु हे सारिपुत्र! जो कुलपुत्र श्रद्धापूर्वक घरसे बेघर हुए हो, जो शठ न हो, जो छली न हो, जो उद्धत न हो, जो अहकारी न हो, जो चपल न हो, जो बातूनी न हो, जो कही भी कुछ भी बोलने वाले न हो, जो असयमी न हो, जो भोजनके विषयमे मात्रज्ञ हो, जो जाग्रत रहने वाले हो, जो श्रमणत्व की ओरसे लापरवाह न हो, जो शिक्षाओके प्रति विशेष गौरवका भाव न रखने वाले हो, जो जोड्-बटोरू न हो, जो शिथिल न हो, जो पतनकी ओर अग्रसर होने वाले न हो, जो एकान्त-जीवनकी ओरसे उदासीन न हो, जो आलसी न हो, जो वीर्य-वान् हो,

जो प्रयत्न-वान् हो, जो स्मृतिमान हो, जो विचारवान् हो, जो स्थिर-चित्त हो, जो एकाग्रचित्त हो, जो प्रज्ञावान् हो तथा जो जड न हो—ऐसे लोगोको तुम उपदेश देना। हे सारिपुत्र! अपने सब्रह्मचारियोको उपदेश दे। हे सारिपुत्र! अपने सब्रह्मचारियोका अनुशासन कर। हे सारिपुत्र! तू सकल्प कर कि मै अपने सब्रह्मचारियोको असद्धर्मसे उबारकर सद्धर्ममे प्रतिष्ठित करूँगा। सारिपुत्र! तुझे ही यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

तब आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओको सम्बोधित किया भिक्षुओ, जो दुश्शील है, जिसका शील खण्डित है, उसका समाधिका आधार जाता रहता है; सम्यक् समाधिके न रहनेपर, सम्यक समाधि खण्डित होनेपर यथार्थ ज्ञान-दर्शनका आधार जाता रहता है, यथार्थ ज्ञान-दर्शनके न रहनेपर, यथार्थ ज्ञान-दर्शन खण्डित होनेपर निर्वेद-वैराग्यका आधार नही रहता, निर्वेद-वैराग्यके न रहनेपर, निर्वेद-वैराग्य खण्डित होनेपर विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनका आधार नही रहता—जैसे भिक्षुओ, जिस पेडकी शाखाये तथा पत्ते नही रहते, उसकी पपडी, उसकी त्वचा, उसका फेग्गु (?) तथा उसका सार भी पूर्णताको प्राप्त नही होता। उसी प्रकार आयुष्मानो! जो दुश्शील है, जिसका शील खण्डित है, उसका समाधिका आधार जाता रहता है, सम्यक् समाधिके न रहनेपर, सम्यक् समाधि खण्डित होनेपर, यथार्थ ज्ञान दर्शनका आधार जाता रहता है, यथार्थ ज्ञान-दर्शनके न रहनेपर, यथार्थ-ज्ञान-दर्शन खण्डित होनेपर, निर्वेद वैराग्य का आधार नही रहता, निर्वेद-वैराग्यके न रहनेपर, निर्वेद-वैराग्य खण्डित होनेपर विमुक्ति ज्ञान-दर्शनका आधार जाता रहता है।

आयुष्मानो! जो शीलवान होता है, जिसका शील खण्डित नही होता, उसका सम्यक् समाधिका आधार बना रहता है, सम्यक् समाधिके रहनेपर, सम्यक् समाधिके खण्डित न होनेपर यथार्थ ज्ञान-दर्शनका आधार बना रहता है, यथार्थ ज्ञान दर्शनके रहनेपर, यथार्थ ज्ञान-दर्शनके खण्डित न होनेपर निर्वेद-वैराग्यका आधार बना रहता है, निर्वेद-वैराग्यके रहनेपर, निर्वेद-वैराग्य खण्डित न होनेपर, विमुक्ति ज्ञान-दर्शनका आधार बना रहता है—जैसे आयुष्मानो! जिस पेडकी शाखायें तथा पत्ते बने रहते है, उसकी पपडी, उसकी त्वचा, उसका फेग्गु तथा उसका सार भी पूर्णताको प्राप्त होता है। इसी प्रकार आयुष्मानो! जो शीलवान् होता है, जिसका शील खण्डित नही होता, उसका सम्यक् समाधिका आधार बना रहता है, सम्यक् समाधि के रहनेपर, सम्यक् समाधिके खण्डित न होनेपर, यथार्थ-ज्ञान-दर्शनका आधार बना रहताहै;

यथार्थ ज्ञान-दर्शनके रहनेपर, यथार्थ ज्ञान-दर्शनके खण्डित न होनेपर, निर्वेद-वैराग्यका आधार वना रहता है; निर्वेद-वैराग्यके रहनेपर, निर्वेद-वैराग्य खण्डित न होनेपर, विमुक्ति ज्ञान-दर्शनका आधार वना रहता है।

तव आयुष्मान आनन्द जहाँ आयुष्मान सारिपुत्र थे, वहाँ गये। पास जाकर आयुष्मान सारिपुत्रके साथ कुशल-क्षेमकी वातचीत की। कुशल-क्षेमकी वातचीत समाप्त हो जानेपर, आयुष्मान आनन्द एक ओर वैठे। एक ओर वैठे हुए आयुष्मान् आनन्दने आयुष्मान् सारिपुत्रसे यह कहा—आयुष्मान् सारिपुत्र! कौनसे गुण होनेसे भिक्षु कुशल-धर्मोंके प्रति क्षिप्र-ध्यान देने वाला कहा जाता है, सम्यक प्रकार ग्रहण करने-वाला तथा ग्रहण की हुई वातको धारण किये रखने वाला? सारिपुत्र वोले—'आयुष्मान् आनन्द वहुत-श्रुत हैं। आयुष्मान् आनन्द ही इस विषयमे अपना मत कहे।'

"तो आयुष्मान सारिपुत्र सुने। भली प्रकार मनमें धारण करे। कहूँगा।"

"वहुत अच्छा" कह आयुष्मान् सारिपुत्रने आयुष्मान आनन्दको प्रति-वचन दिया। आयुष्मान आनन्दने यह कहा—

"आयुष्मान्! सारिपुत्र! भिक्षु अर्थ करनेमे कुशल होता है, धर्मके विषयमे कुशल होता है, शब्दोकी व्युत्पत्ति (= नियुक्ति) के विषयमे कुशल होता है, शब्दो (= व्यजन) के विषयमे कुशल होता है। और क्रम (= पूर्वापर) के विषयमे कुशल होता है। आयुष्मान् सारिपुत्र! ये पाँच गुण होनेसे भिक्षु कुशल-धर्मोंके प्रति क्षिप्र-ध्यान देने वाला कहा जाता है, सम्यक् प्रकार ग्रहण करने वाला तथा ग्रहणकी हुई वातको धारण किये रहने वाला।"

"आश्चर्य है, अद्भुत है यह जो आयुष्मान् आनन्दका सुभाषित है। हमारी मान्यता है कि आयुष्मान् आनन्दमे ये पाँचो गुण हैं। आयुष्मान् आनन्द अर्थ-कुशल है, धर्म-कुशल है, निरुक्ति-कुशल है, व्यजन-कुशल है तथा पूर्वापर कुशल है।"

एक समय आयुष्मान आनन्द कौशाम्वीके घोषितारामसे विहार कर रहे थे। तव आयुष्मान् भद्रजित जहाँ आयुष्मान् आनन्द थे वहाँ आये। पास आकर आयुष्मान् आनन्दसे कुशल-क्षेमकी वातचीत की। कुशल-क्षेमकी वातचीत हो चुकनेपर आयुष्मान् भद्रजित एक ओर वैठे। एक ओर वैठे हुए आयुष्मान् भद्रजितने आयुष्मान् आनन्दसे ये प्रश्न पूछा—

"आयुष्मान् भद्रजित! दर्शनीयोमें श्रेष्ठतम क्या है? श्रवणीयोमें श्रेष्ठतम क्या है? सुखोमें श्रेष्ठतम क्या है? सज्ञाओमें श्रेष्ठतम क्या है? भवोमें श्रेष्ठतम क्या है?"

"आयुष्मान्! ब्रह्म है जो सर्वोपरि है, जिसके ऊपर कोई नही है, जो द्रष्टा है तथा जो वशवर्ती है। जो कोई उस ब्रह्माको देखता है, वह देखने वालोमे श्रेष्ठतम है।

"आयुष्मान्! आभस्वर नामक देवता है, वे सुखसे सम्पूर्ण है, सुखसे परिपूर्ण है। वे कभी-कभी उल्लास-वाक्य कहते है—ओह! सुख है। ओह! सुख है। जो उस शब्दको सुनता है, वह सुननेवालोमे श्रेष्ठतम है।

"आयुष्मान्! शुभ-कृष्ण नामक देवता है। वे शान्तिकी तरह सुखका अनुभव करते है। यह सुखोमे श्रेष्ठतम है।

"आयुष्मान्! आकिञ्चायतन तक पहुँचने वाले देवता है। यह सञ्ज्ञाओमे श्रेष्ठतम है।

"आयुष्मान! नेवसञ्ञानासाञ्ञायतन तक पहुँचने वाले देवता है। यह भवोमे अग्र है।"

"आयुष्मान भद्रजितकी यह वात-चीत वहुत जनोके कथनसे मेल खाती है।"

"आयुष्मान आनन्द वहुश्रुत है। आयुष्मान आनन्दको जैसा लगे वैसा कहे।"

"तो आयुष्मान भद्रजित! सुने। अच्छी तरह मनमे धारण करे। मै कहता हूँ।"

"वहुत अच्छा आयुष्मान्!" कह आयुष्मान भद्रजितने आयुष्मान आनन्द को प्रतिवचन दिया। आयुष्मान आनन्दने यह कहा—

"आयुष्मान! जिस प्रकार देखनेसे देखनेके अनन्तर आस्रवोका क्षय होता है, ऐसा देखना दर्शनोमे श्रेष्ठतम है। जिस प्रकार सुननेसे, वादमे आस्रवोका क्षय होता है, ऐसा सुनना श्रवणोमे श्रेष्ठतम है। जिस प्रकारके सुखकी अनुभूतिसे वादमें आश्रवोका क्षय होता है, यह सुखोमे श्रेष्ठतम है। जिस प्रकारकी सञ्ज्ञाओका अनुभव करनेमे, वादमें आस्रवोका क्षय होता है, यह सञ्ज्ञाओमे श्रेष्ठतम है। जिस प्रकारके भवके अनन्तर आस्रवोका क्षय होता है, यह भवोमे श्रेष्ठम है।

एक समय भगवान् श्रावस्तीके जेतवनाराममे विहार कर रहे थे। वहाँ भगवान्ने भिक्षुओको सम्वोधित किया—"भिक्षुओ!" "भदन्त" कहकर उन भिक्षुओने भगवान्को प्रतिवचन दिया। तव भगवान्ने यह कहा—भिक्षुओ, जिस उपासकमें ये पाँच वाते होती है, वह निस्तेजताको प्राप्त होता है। कौन-सी पाँच वाते? वह प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, कामभोगोके सम्वन्धमें

मिथ्याचार करने वाला होता है, झूठ बोलने वाला होता है, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोका सेवन करने वाला होता है। भिक्षुओ! जिस उपासकमे ये पाँच बातें होती है, वह निस्तेजताको प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, जिस उपासकमे ये पाँच बाते होती है, वह पण्डित होता है। कौन सी पाँच बाते? वह प्राणी-हिंसासे विरत रहता है, चोरीसे विरत रहता है, कामभोग सम्बन्धी मिथ्याचारसे विरत रहता है, झूठ बोलनेसे विरत रहता है तथा सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोके सेवनसे विरत रहता है। भिक्षुओ, जिस उपासकमे ये पाँच बाते होती है, वह विशारद (= पण्डित) होता है।

भिक्षुओ, जिस उपासकमे ये पाँच बाते होती है, वह अविशारद बना रहकर ही गृहवास करता है। कौन-सी पाँच बाते? वह प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, कामभोग सम्बन्धी मिथ्याचार करने वाला होता है, झूठ बोलने वाला होता है, तथा सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोका सेवन करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस उपासकमे ये पाँच बाते होती है, वह अविशारद बना रह कर ही गृह-वास करता है।

भिक्षुओ, जिस उपासकमे ये पाँच बातें होती है वह विशारद (पण्डित) बना रहकर ही गृहवास करता है। कौन-सी पाँच बाते? वह प्राणी-हिंसासे विरत रहता है ... सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोके सेवनसे विरत रहता है। भिक्षुओ, जिस उपासकमें ये पाँच बाते होती है, वह विशारद होकर ही गृहवास करता है।

भिक्षुओ, जिस उपासकमे ये पाँच बाते होती है, वह जैसे लाकर नरकमे ही डाल दिया गया हो। कौन-सी पाँच बाते? वह प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, कामभोग-सम्बन्धी मिथ्याचार करने वाला होता है, झूठ बोलने वाला होता है, तथा सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोका सेवन करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस उपासकमे ये पाँच बाते होती है, उसे जैसे लाकर नरकमे ही डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते होती है, वह जैसे लाकर स्वर्गमे ही डाल दिया गया हो। कौन-सी पाँच बाते? वह प्राणी-हिंसासे विरत होता है ... सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोका सेवन करनेसे विरत होता है। भिक्षुओ, जिस उपासकमे ये पाँच बाते होती है, उसे जैसे लाकर स्वर्गमे ही डाल दिया गया हो।

उस समय अनाथ-पिण्डिक गृहपति जहाँ भगवान थे, वहाँ गये। पास जाकर भगवान्को नमस्कार कर, एक ओर बैठे। एक ओर बैठे हुए अनाथ-पिण्डिक गृहपतिसे

भगवानने यह कहा—हे गृहपति ! ये पाँच भय है, अहितकर वाते (=वैर) है, जिन्हे विना छोडे आदमी दुश्शील कहलाता है, और नरकमे जन्म ग्रहण करता है,। कौन-सी पाँच बाते ? प्राणी-हिंसा, चोरी, व्यभिचार, झूठ बोलना, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोका सेवन। हे गृहपति ! ये पाँच भय है, अहितकर वाते (=वैर) है, जिन्हे विना छोडे आदमी दुश्शील कहलाता है, और नरकमे जन्म ग्रहण करता है। हे गृहपति ! ये पाँच भय है, अहितकर वाते (=वैर) है, जिन्हे छोड देनेमे आदमी सुशील कहलाता है और स्वर्गमे जन्म ग्रहण करता है। कौन-सी पाँच वाते ? प्राणी-हिंसा, चोरी, व्यभिचार, झूठ वोलना, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोका सेवन। हे गृहपति ! ये पाँच भय है, अहितकर वाते (=वैर) है, जिन्हे छोड देनेमे आदमी सुशील कहलाता है और स्वर्गमें जन्म ग्रहण करता है।

हे गृहपति ! प्राणी-हिंसा करनेके फल-स्वरूप आदमीको इसी जन्ममें जो दुःख पैदा होता है, मरनेके अनन्तर भी जो भय-दुःख पैदा होता है तथा जो मानसिक दुःख होता है, प्राणी-हिंसासे विरत रहनेके फल-स्वरूप न इसी जन्ममें होने वाला भय-दुःख होता है, न मरनेके अनन्तर होने वाला भय-दुःख होता है तथा न मानसिक-दुःख होता है। इस प्रकार, प्राणी-हिंसासे विरत रहने वालेका जो भय-दुःख होता है, वह शान्त हो जाता है।

गृहपति ! चोरी करनेके फलस्वरूप . व्यभिचारके फलस्वरूप . झूठ वोलनेके फलस्वरूप सुरा-मेरय आदि नशीली-चीजे सेवन करनेके फल-स्वरूप आदमीको इसी जन्ममें जो भय-दुःख पैदा होता है, मरनेके अनन्तर, जो भय-दुःख पैदा होता है, तथा जो मानसिक दुःख होता है। इसी प्रकार सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोके सेवनसे विरत रहनेसे न इसी जन्ममे होने वाला भय-दुःख होता है, न मरनेके अनन्तर होने वाला भय-दुःख होता है तथा न मानसिक दुःख होता है। भिक्षुओ, जो सुरा-मेरय आदि नशीली-चीजोके सेवनसे पृथक रहता है, उसका भय-दुःख शान्त हो जाता है।

यो पाण अतिपातेति मुसावादञ्च भासति,
लोके अदिन्न आदियति परदार च गच्छति ॥
सुरामेरयपानञ्च यो नरो अनुयुञ्जति
अप्पहाय पञ्च वेरानि दुस्सीलो इति वुच्चति ॥
कायस्स भेदा दुप्पञ्ञो निरय सोपपज्जति,
यो पाण नातिपातेति मुसावाद न भासति ॥

लोके अदिन्न नादियति परदार न गच्छति,
सुरामेरयपान च यो नरो नानुयुञ्जति
पहाय पच वेरानि सीलवा इति वुच्चति,
कायस्स भेदा सप्पञ्ञो सुगतिं सोपज्जति ॥

[जो प्राणी-हिंसा करता है, झूठ बोलता है, चोरी करता है, पर-स्त्री गमन करता है, सुरामेरय आदि नशीली चीजोका सेवन करता है—जो इन पाँच अहितकर वातोको नही छोडता, वह दुश्शील कहलाता है। वह मूर्ख मरनेके अनन्तर, नरकमे जन्म ग्रहण करता है। जो प्राणी-हिंसा नही करता, झूठ नही बोलता, चोरी नही करता, पर-स्त्री गमन नही करता, तथा सुरामेरय आदि नशीली चीजे ग्रहण करता है—जो इन पाँच अहितकर वातोसे विरत रहता है, वह सुशील कहलाता है। वह प्रज्ञावान् मरनेके अनन्तर स्वर्गमे जन्म ग्रहण करता है।]

भिक्षुओ, जिस उपासकमे ये पाँच वाते होती है, वह चाण्डाल-उपासक कहलाता है, मलिन-उपासक कहलाता है, निकृष्ठ-उपासक कहलाता है। कौनसी पाँच वाते? वह अश्रद्धावान् होता है, दुश्शील होता है, भले-बुरे शकुनोमे विश्वास करने वाला होता है, भले-बुरे शकुनो की ओर देखता रहता है, अपने कर्मोकी ओर नही, इस (=बुद्ध) शासनसे वाहर दक्षिणाके पात्र खोजता है और वही दान-मान आदि पूर्व-कृत्य करता है। भिक्षुओ, जिस उपासकमे ये पाँच वाते होती है, वह चाण्डाल-उपासक कहलाता है, मलिन-उपासक कहलाता है, निकृष्ठ-उपासक कहलाता है।

भिक्षुओ, जिस उपासकमे ये पाँच वाते होती है, वह उपासक-रत्न कहलाता है, उपासक-पद्म कहलाता है, उपासक-पुण्डरीक कहलाता है। कौनसी पाँच वाते? वह श्रद्धावान् होता है, सुशील होता है, भले-बुरे शकुनोमे विश्वास करने वाला नही होता है, भले-बुरे शकुनोकी ओर न देखता रहकर अपने कर्मोकी ओर देखता है, इस (बुद्ध-) शासनसे से वाहर दक्षिणाके पात्र न खोज, यही दान-मान आदि पूर्व-कृत्य करता है। भिक्षुओ, जिस उपासकमे ये पाँच वाते होती है, वह उपासक-रत्न कहलाता है, उपासक-पद्म कहलाता है, उपासक-पुण्डरीक कहलाता है।

उस समय पाँच सौ उपासकोंको साथ लिये अनाथपिण्डिक उपासक जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचा। पास जाकर भगवान्को नमस्कार कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए अनाथ-पिण्डिक गृहपति को भगवान्ने यह कहा—हे गृहपति! आप लोगोने चीवर, भिक्षा, शयनासन तथा रोगीकी आवश्यकताओंसे भिक्षु-सघकी

सेवा की है। हे गृहपति ! उतने मात्रसे ही सन्तुष्ट नही रहना चाहिये कि हम लोगोंने चीवर-भिक्षा-शयनासन तथा रोगीकी आवश्यकताओंसे भिक्षु-संघकी सेवा की है। इसलिये हे गृहपति ! यह सीखना चाहिये कि समय समयपर एकान्त प्रीति-सुखका अनुभव करेंगे।

ऐसा कहनेपर आयुष्मान् सारिपुत्रने भगवान्से कहा—भन्ते ! यह आश्चर्य-कर है। भन्ते ! यह अद्भुत है। भन्ते ! यह जो आपका सुभाषित है कि हे गृह-पति ! आप लोगोंने चीवर, भिक्षा, शयनासन तथा रोगीकी आवश्यकताओंसे भिक्षु संघकी सेवा की है। हे गृहपति ! उतने मात्रसे ही सन्तुष्ट नही रहना चाहिये कि हम लोगोंने चीवर-भिक्षा-शयनासन तथा रोगीकी आवश्यकताओंसे भिक्षु-संघकी सेवा की है। इसलिये हे गृहपति ! यह सीखना चाहिये कि हम समय-समयपर एकान्त प्रीति-सुखका अनुभव करेंगे। भन्ते ! जिस समय आर्य-श्रावक एकान्त प्रीति-सुखका अनुभव करता है, उस समय उसे पाँच बातोंकी अनुभूति नही होती। यह जो काम-भोगसे उत्पन्न दुःख-दौर्मनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नही होती, यह जो काम-भोगसे उत्पन्न सुख-सौमनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नही होती, यह जो अकुशल-कर्मसे उत्पन्न दुःख-दौर्मनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नही होती, यह जो अकुशल-कर्मसे उत्पन्न सुख-सौमनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नही होती, यह जो कुशल कर्मसे उत्पन्न दुःख दौर्मनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नही होती। भन्ते ! जिस समय आर्य-श्रावक एकान्त प्रीति-सुखका अनुभव करता है, उस समय उसे इन पाँच बातोंकी अनुभूति नही होती।

"सारिपुत्र ! बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। सारिपुत्र ! जिस समय आर्य-श्रावक एकान्त प्रीति-सुखका अनुभव करता है, उस समय उसे पाँच बातोंकी अनुभूति नही होती। यह जो काम-भोगोंसे उत्पन्न दुःख-दौर्मनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नही होती, यह जो काम-भोगोंसे उत्पन्न सुख-सौमनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नही होती, यह जो अकुशल-कर्मसे उत्पन्न दुःख-दौर्मनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नही होती, यह जो अकुशल-कर्मसे उत्पन्न सुख-सौमनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नही होती, यह जो कुशल-कर्मसे उत्पन्न दुःख-दौर्मनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नही होती। हे सारिपुत्र ! जिस समय आर्य-श्रावक एकान्त-प्रीति सुखका अनुभव करता है, उस समय उसे इन पाँच बातोंकी अनुभूति नही होती।

भिक्षुओ, ये पाँच व्योपार उपासकके लिये अकरणीय है। कौनसे पाँच? अस्त्रो-शस्त्रोका व्यापार, प्राणियो (= मनुष्यो) का व्यापार, माँसका व्यापार, मद्यका व्यापार तथा विषका व्यापार। भिक्षुओ,ये पाँच व्योपार उपासकके लिये अकरणीय है।

भिक्षुओ, तो तुम क्या मानते हो, क्या तुमने कही देखा या सुना है कि अमुक आदमीने प्राणी-हिंसाका त्याग कर दिया है, वह प्राणी-हिंसासे विरत है, उसे राज-पुरुष पकड़कर प्राणी-हिंसासे विरत रहनेके कारण, मारते हो या बाँधते हो, देशनिकाला देते हो अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हो? "भन्ते! नही।" ठीक है भिक्षुओ, मैंने भी न कभी देखा है, न सुना है कि अमुक आदमीने प्राणी-हिंसाका त्याग-कर दिया हो, वह प्राणी-हिंसासे विरत हो और उसे राज-पुरुष पकडकर प्राणी-हिंसासे विरत रहनेके कारण, मारते हो, बाधते हो, देश-निकाला दे देते हो अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हो। हाँ, वे उसने जैसा पाप-कर्म किया रहता है वैसा ही उसकी घोषणा करते हैं कि इस आदमीने स्त्री या पुरुषकी हत्या की। तब उसे राज-पुरुष पकडकर प्राणी-हिंसा करनेके कारण मारते है, बाधते है, देश-निकाला दे देते है अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते है। क्या तुमने ऐसा देखा है या सुना है? "भन्ते! देखा है, सुना है और सुनेंगे भी।"

भिक्षुओ, तो तुम क्या मानते हो, क्या तुमने कही देखा या सुना है कि अमुक आदमीने चोरीका त्यागकर दिया है, वह चोरीसे विरत है, उसे राज-पुरुष पकडकर चोरीसे विरत रहनेके कारण, मारते हो या बाधते हो, देश-निकाला देते हो अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हो? "भन्ते! नही।" ठीक है भिक्षुओ, मैंने भी न कभी देखा है, न सुना है, कि अमुक आदमीने चोरीका त्यागकर दिया हो, वह चोरीसे विरत हो, और उसे राज-पुरुष पकडकर चोरीसे विरत रहनेके कारण, मारते हो, बाधते हो, देश निकाला दे देते हो अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हो। हाँ, वे उसने जैसा पाप-कर्म किया रहता है, वैसा ही उसकी घोषणा करते है कि इस आदमीने गाँव या जगलसे चोरीकी है। तब उसे राज-पुरुष पकड कर चोरी करनेके कारण, मारते है, बाधते है, देश-निकाला दे देते है अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते है। क्या तुमने ऐसा देखा है या सुना है? "भन्ते! देखा है, सुना है और सुनेंगे भी।"

भिक्षुओ, तो तुम क्या मानते हो, क्या तुमने कही देखा या सुना है कि अमुक आदमीने व्यभिचारका त्याग कर दिया है, वह व्यभिचारसे विरत है, उसे राज-

पुरुष पकड कर व्यभिचारसे विरत रहनेके कारण, मारते हो, बाधते हो, देश-निकाला दे देते हो अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हो? "भन्ते! नही!" ठीक है भिक्षुओ, मैंने भी न कभी देखा है, न सुना है कि अमुक आदमीने व्यभिचारका त्याग कर दिया हो, वह व्यभिचारसे विरत हो, और उसे राजपुरुष पकडकर व्यभिचारसे विरत रहनेके कारण, मारते हो, बाधते हो, देश-निकाला दे देते हो अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हो। हाँ, वे उसने जैसा पाप-कर्म किया रहता है, वैसा ही उसकी घोषणा करते है कि इस आदमीने पराई स्त्रियोके साथ, पराई कुमारियोंके साथ सहवास किया है। तब उसे राजपुरूप पकड कर व्यभिचार करनेके कारण, मारते हैं, बाधते हैं, देश-निकाला दे देते हैं अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते है। क्या तुमने ऐसा देखा है, या सुना है? "भन्ते! देखा है, सुना है और सुनेंगे भी।"

भिक्षुओ, तो तुम क्या मानते हो, क्या तुमने कही देखा या सुना है कि अमुक आदमीने झूठका त्याग कर दिया है, वह झूठसे विरत है, उसे राज-पुरुप पकडकर झूठसे विरत रहनेके कारण, मारते हो या बाधते हो, देश-निकाला दे देते हो अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हो? "भन्ते! नही।" ठीक है भिक्षुओ, मैंने भी न कभी देखा है, न सुना है कि अमुक आदमीने झूठ बोलनेका त्याग कर दिया हो, वह झूठ बोलनेसे विरत हो और उसे राज-पुरुप पकडकर झूठ बोलनेसे विरत रहनेके कारण, मारते हो, बाधते हो, देश-निकाला दे देते हो अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हो। हाँ, वे, उसने जैसा पाप-कर्म किया रहता है, वैसा ही उसकी घोपणा करते हैं कि इस आदमीने गृहपति वा गृहपति-पुत्रसे झूठ बोलकर अपना मतलब सिद्ध करता है। तब उसे राज-पुरुप पकडकर झूठ बोलनेके कारण, मारते है, बाधते है, देश निकाला दे देते हैं अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते है। क्या तुमने ऐसा देखा है, या सुना है? "भन्ते! देखा है, सुना है और सुनेंगे भी।"

भिक्षुओ, तो तुम क्या मानते हो, क्या तुमने कही देखा या सुना है कि अमुक आदमीने सुरा-मेरय आदि नशीली-चीजोका त्याग कर दिया है, वह सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोसे विरत है, उसे राज-पुरूष पकडकर सुरा-मेरय आदि नशीली-चीजोसे विरत रहनेके कारण, मारते हो या बाधते हो, देश-निकाला दे देते हो अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हो। हाँ, वे, उसने जैसा पाप-कर्म किया रहता है, वैसा ही उसकी घोषणा करते है कि इस आदमी ने सुरा-मेरय आदिके नशेमे इस स्त्री या पुरुषकी हत्या कर डाली। इस आदमीने सुरा-मेरय आदिके नशेमे गाँव या जगलसे चोरीकी, इस आदमीने सुरा-मेरय आदिके नशेमे पराई स्त्रियोके साथ, पराई

कुमारियोके साथ सहवास किया है, इस आदमीने सुरा-मेरय आदिके नशेमे गृहपति या गृहपति-पुत्रसे झूठ बोलकर अपना मतलब पूरा किया है। तब उसे राज-पुरुष पकडकर सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोका सेवन करनेके कारण, मारते है, बाधते है, देश-निकाला दे देते है अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते है। क्या तुमने ऐसा देखा है या सुना है ? "भन्ते ! देखा है, सुना है और सुनेंगे भी।"

उस समय पाँच सौ उपासकोसे घिरा हुआ अनाथपिण्डिक जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचा। पास जाकर भगवान्को अभिवादन कर एक ओर बैठा। तब भगवान् ने आयुष्मान सारिपुत्रको सम्बोधित किया—सारिपुत्र ! जो कोई श्वेतवस्त्रधारी गृहस्थ ऐसा हो जो पाँच विषयोमें सयतेन्द्रिय हो, जो चारो प्रत्यक्ष सुखानुभव स्वरूप चैतसिक ध्यानोको अनायास, बिना कष्टके प्राप्त कर सकता हो—वह यदि चाहे तो वह स्वय अपने बारेमे यह घोषणा कर सकता है—मेरी नरकमे जन्म ग्रहण करनेकी सभावना क्षीण हो गई, मेरी पशु-योनिमे जन्म ग्रहण करनेकी सभावना क्षीण हो गई, मेरी अपाय-दु खमे पडनेकी सभावना क्षीण हो गई, मै स्रोतपान्न हो गया हूँ, मै पतन्मुख नही हूँ, मेरी सम्बोधि-प्राप्ति निश्चित है। वह किन पाँच विषयो (= कर्मों)मे सयतेन्द्रिय होता है ? सारिपुत्र ! आर्य-श्रावक प्राणी-हिंसासे विरत होता है, चोरीसे विरत होता है, कामभोग सम्बन्धी मिथ्याचारसे विरत होता है, झूठ बोलनेसे विरत होता है, तथा सुरा-मेरय आदि नशीले पदार्थोके सेवनसे विरत होता है। वह इन पाँच विषयो (= कर्मों) मे सयतेन्द्रिय होता है। वह किन चार प्रत्यक्ष सुखानुभव-स्वरूप चैतसिक ध्यानोको अनायास, बिना कष्टके प्राप्तकर सकने वाला होता है ? सारिपुत्र ! आर्य-श्रावक बुद्धके प्रति अविचल श्रद्धासे युक्त होता है, वह भगवान् अर्हत है, सम्यक् सम्बुद्ध है, विद्या तथा आचरणसे युक्त है, सुगत है, लोक-विद् है, अनुपम है, (दुष्ट—) पुरुषोका दमन करने वाले सारथी है, देवताओ तथा मनुष्योंके शास्ता है, भगवान् बुद्ध है। यह उसका प्रथम प्रत्यक्ष सुखानुभव-स्वरूप चैतसिक ध्यान होता है, जो अशुद्ध चित्तकी शुद्धिका कारण होता है तथा मैले चित्तकी निर्मलताका कारण होता है। फिर सारिपुत्र ! आर्य-श्रावक धर्मके प्रति अविचल श्रद्धासे युक्त होता है—भगवान् द्वारा उपदिष्ट धर्म अच्छी प्रकार समझाकर देशना किया गया है, वह सादृष्टिक (= प्रत्यक्ष)—धर्म है, वह कालके बधनसे परे है, उसके बारेमे यह कहा जा सकता है कि आओ और स्वय परीक्षा करके देख लो, (निर्वाणकी ओर) ले जाने वाला है, प्रत्येक विज्ञ आदमी स्वय जान सकता है। यह उसका दूसरा प्रत्यक्ष-सुखानुभव-स्वरूप चैतसिक ध्यान हो सकता है, जो अशुद्ध चित्तकी शुद्धिका कारण

होता है तथा मैले चित्तकी निर्मलताका कारण होता है। फिर सारिपुत्र! आर्य-श्रावक संघके प्रति अविचल श्रद्धासे युक्त होता है—भगवान्का श्रावक-संघ सुप्रतिपन्न है, भगवान्का श्रावक संघ ऋजु (मार्ग पर) प्रतिपन्न है, भगवान्का श्रावक संघ न्याय (मार्गपर) प्रतिपन्न है, भगवानका श्रावक संघ उचित पथपर प्रतिपन्न है—पुरुषोंके ये जो चार जोड़े है, ये जो (स्रोतापन्न-मार्ग स्रोतापन्न-फल प्राप्त आदि) आठ पुद्गल है—यही भगवान्का श्रावक-संघ है। यह आदर करने योग्य है। यह सत्कार करने योग्य है। यह दक्षिणाके योग्य है। यह हाथ जोड़ने योग्य है। यह लोगोंके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र है। यह उसका तीसरा प्रत्यक्ष सुखानुभव-स्वरूप चैतसिक ध्यान होता है, जो अशुद्ध चित्तकी शुद्धिका कारण होता है तथा मैले चित्तकी निर्मलताका कारण होता है। फिर सारिपुत्र! आर्य-श्रावक आर्य-श्रेष्ठ शीलोंसे युक्त होता है, जो अखण्डित होते है, जो छिद्र रहित होते है, जो बिना धब्बेके होते है, जो बिना दागके होते है, जो स्वतन्त्र होते है, जो विज्ञ पुरुषो द्वारा प्रशंसित होते है, जो अछूते होते है तथा जो समाधि-प्राप्तिमे सहायक होते है। यह उसका चौथा प्रत्यक्ष सुखानुभव स्वरूप चैतसिक ध्यान होता है, जो अशुद्ध चित्तकी शुद्धिका कारण होता है तथा मैले चित्तकी निर्मलताका कारण होता है। वह उन चारो प्रत्यक्षसुखानुभव-स्वरूप चैतसिक ध्यानोंको अनायास, बिना कष्टके प्राप्त किये रहने वाला होता है। सारिपुत्र! जो कोई श्वेत वस्त्र धारी गृहस्थ ऐसा हो जो पाँच विषयोमे संयतेन्द्रिय हो, जो चारो प्रत्यक्षसुखानुभव-स्वरूप चैतसिक ध्यानोंको अनायास, बिना कष्टके प्राप्त कर सकता हो, वह यदि चाहे तो स्वयं अपने बारेमें यह घोषणा कर सकता है—मेरी नरकमे जन्म ग्रहण करनेकी संभावना क्षीण हो गई, मेरी पशु-योनिमे जन्म ग्रहण करनेकी संभावना क्षीण हो गई, मेरी अपाय-दु:खमें पड़नेकी संभावना क्षीण हो गई, मै स्रोतापन्न हो गया हूँ, मै पतनोन्मुख नही हूँ, मेरी सम्बोधि-प्राप्ति निश्चित है।

निरयेसु भयं दिस्वा पापानि परिवज्जये,
अरियधम्मं समादाय पण्डितो परिवज्जये॥
न हिंसे पाणभूतानि विज्जमाने परक्कमे,
मुसा च न भणे जानं अदिन्नं न परामसे॥
सेहि दारेहि सन्तुट्ठो परदारंच ना रमे,
मेरयं वारुणिं जन्तु न पिवे चित्तमोहनिं॥
अनुस्सरेय्य सम्बुद्धं धम्मं चानुवितक्कये,
अब्यापज्झं हितं चित्तं देवलोकाय भावये॥

उपट्ठिते देय्यधम्मे पुञ्ञत्थस्स जिगिंसतो,
सन्तेसु पठम दिन्ना विपुला होति दक्खिणा ।।
सन्तो हवे पवक्खामि सारिपुत्त सुणाहि मे,
इति कण्हासु सेतासु रोहिणीसु हिरीसु वा ।।
कम्मासासु सरूपासु गोसु पारेतासु वा,
यासु कासु च एतासु दिन्नो जायति पुँगवो ।।
धोरय्हो बलसम्पन्नो कल्याणजवनिक्कमो,
तमेव भारे युजन्ति नास्स वण्ण परिक्खरे ।।
एवमेव मनुस्सेसु यस्मि कस्मिंचि जातिये,
खतिये ब्राह्मणवेस्से सुद्दे चण्डालपुक्कसे ।।
यासु कासु च एतासु दन्तो जायति सुब्बतो,
धम्मट्ठो सीलसम्पन्नो सच्चवादी हरीमतो ।।
पहीणजातिमरणो ब्रह्मचरियस्स केवली,
पन्नहारो विसयुत्तो कतकिच्चो अनासवो ।।
पारगु सब्बधम्मान अनुपादाय निब्बुतो,
तस्मिंच विरजे खेत्ते विपुला होति दक्खिणा ।।
बालाव अविजानन्ता दुम्मेधा अस्सुताविनो,
बहिद्धा देन्ति दानानि न हि सन्ते उपासरे ।।
ये च सन्ते उपासेन्ति सप्पञ्ञे धीरसम्मते,
सद्धा च नेस सुगते मूलजाता पतिट्ठिता ।।
देवलोक च ते यन्ति कुले वा इध जायरे,
अनुपुब्बेन निब्बाण अधिगच्छन्ति पण्डिता ।।

[नरक भयका ध्यानकर पण्डितको चाहिये कि आर्य-धर्मको सम्यक् प्रकार ग्रहण कर पापोसे दूर रहे। पराक्रम रहते प्राणि-हिंसा न करे, झूठ न बोले, जानबूझकर दूसरेकी चोरी न करे। अपनी स्त्रीमे सन्तुष्ट रहे, पराई स्त्रीमे रमण न करे। आदमीको चाहिये कि उसे मूढ बना देने वाली वारुणीका पान न करे। सम्बुद्धका अनुस्मरण करे, धर्मका चिन्तन करे और देवलोक (= ब्रम्हलोक) की प्राप्तिके लिये क्रोध-रहित मैत्री चित्तकी भावना करे। जब दान करनेके लिये कुछ उपस्थित हो और पुण्यकी कामना हो तो प्रथम शान्तचित्तोको दे। उनको दिया गया दान महाफलदायी होता है। हे सारिपुत्र! तू मेरी बात सुन। मैं अब शान्त-चित्तोके बारेमें कहता हूँ। इन

गौवो वा पारेताओ (?) मे से जिस किसीमे भी—चाहे उसका रग काला हो, चाहे श्वेत हो, चाहे लाल हो, चाहे हिरी (?) हो, चाहे चितकबरी हो—ऐसा श्रेष्ठ बैल पैदा होता है जो (भार) ढो सकने वाला होता है, जो बलवान् होता है, जिसकी अच्छी चाल होती है, उसीपर भार लादा जाता है, उसके रगकी परीक्षा नही की जाती। इसी प्रकार आदमियोमें कोई किसी भी जातिका हो—चाहे क्षत्रिय हो, चाहे ब्राह्मण हो, चाहे वैश्य हो, चाहे शूद्र हो, चाहे चाण्डाल हो, चाहे भगी हो—यदि वह सुव्रत है, यदि वह धर्म-स्थित है, यदि वह शीलसम्पन्न है, यदि वह सत्यवादी है, यदि वह भय (–लज्जा) युक्त है, यदि वह जरा-मरणके बधनसे परे है, यदि वह पूर्ण रूपसे ब्रह्मचर्यका पालन करने वाला है, यदि वह भार-मुक्त है, यदि वह आसक्ति-रहित है, यदि वह कृत-कृत्य है, यदि वह अनास्रव है, यदि वह सभी विषयो (= धर्मो) से परे है और उसने पूर्ण निर्वाण प्राप्त कर लिया है तो ऐसे रज-रहित (निर्मल) व्यक्तिको यदि दान दिया जाता है, तो उस दानका महान् फल होता है। जो मूर्ख होते है, जो अज्ञ होते है, जो दुर्बुद्धि होते है, जो अश्रुत (= अज्ञानी) होते है, वे बाहर (-अन्यो को) दान देते है। वे सत्पुरुषोकी सगति नही करते। जो धीर जन, प्रज्ञावान्, सन्त पुरुषोकी सगति करते है, उनके मनमे सुगतके प्रति दृढ श्रद्धा प्रतिष्ठित है। वे या तो देवलोकको प्राप्त होते है अथवा यहाँ उत्पन्न होने पर (श्रेष्ठ-) कुलमें उत्पन्न होते है। ऐसे पण्डित जन क्रमश निर्वाणकी प्राप्ति करते है।]

एक समय भगवान् कोशल (जनपद) में महान् भिक्षु-सघके साथ चारिका कर रहे थे। रास्ता चलते हुए भगवान्ने एक प्रदेशमे एक बडा शालवन देखा। देखकर, रास्ता छोड, जिधर वह शालवन था, उधर बढे। पास जाकर, उस शालवनका अवगाहन कर, एक प्रदेशमे मुस्कराये। तब आयुष्मान आनन्दके मनमें यह हुआ—भगवान्के मुस्करानेका क्या हेतु है, क्या कारण है? तथागत् कभी अकारण नही मुस्कराते है। तब आयुष्मान् आनन्दने भगवान्से यह कहा—भन्ते ! भगवान्के मुस्करानेका क्या हेतु है, क्या कारण है? तथागत कभी अकारण नही मुस्कराते है।

आनन्द ! पुराने समयमे यहाँ एक नगर था—समृद्ध, ऐश्वर्य-युक्त तथा जनाकीर्ण। आनन्द ! भगवान् काश्यप अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध उसी नगरके आश्रय रहते थे। आनन्द ! भगवान् काश्यप अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका गवेसी नामका एक उपासक था। वह अपूर्ण सदाचारी था। आनन्द ! गवेसी उपासक द्वारा शिक्षा-पद ग्रहण कराये गये पाच सौ दूसरे उपासक भी थे। वे भी अपूर्ण सदाचारी थे।

आनन्द! तव गवेसी उपासक के मनमे यह वात आई—मै इन पाँच सौ उपासकोका वहुत उपकार करने वाला हूँ, आगे आगे चलने वाला हूँ, शील ग्रहण कराने वाला हूँ। मै अपूर्ण सदाचारी हूँ। ये पाँच सौ उपासक भी अपूर्ण सदाचारी है। हम दोनो ही समान है। मेरी कुछ भी विशेषता नही है। मै अव इनसे कुछ विशिष्ट वननेके लिये प्रयास करू। तब आनन्द! वह गवेसी उपासक उन पाँच सौ उपासकोके पास गया। पास जाकर उन पाँच सौ उपासकोसे वोला—'आयुष्मानो! आजके वादसे तुम यह मान लो कि मै पूर्ण सदाचारी हूँ।' तव आनन्द! उन पाँच सौ उपासकोके मनमें यह वात आई—आर्य गवेसी हमारे वहुत उपकारक है, आगे आगे चलने वाले है, हमे शीलोमे प्रतिष्ठित कराने वाले है। आर्य गवेसी पूर्ण सदाचारी वनने जा रहे है। हम भी क्यो न वने? तव आनन्द! वह पाँच सौ उपासक जहाँ गवेसी उपासक था, वहाँ पहुँचे। पास जाकर गवेसी उपासक से वोले—'आर्य गवेसी! आजके वादसे हम पाँच सौ उपासकोको भी पूर्ण सदाचारी माने।' तव आनन्द गवेसी उपासक के मनमे यह वात आई—"मै इन पाँच सौ उपासकोका वहुत उपकार करने वाला हूँ, आगे आगे चलने वाला हूँ, शील ग्रहण कराने वाला हूँ। मै सम्पूर्ण सदाचारी हूँ। ये पाँच सौ उपासक भी सम्पूर्ण सदाचारी है। हम दोनो ही समान है। मेरी कुछ भी विशेषता नही है। मै अव इनसे कुछ विशिष्ट वननेके लिये प्रयास करूँ।' तव आनन्द! वह गवेसी उपासक उन पाँच सौ उपासकोके पास गया। पास जाकर उन पाँच सौ उपासकोसे वोला—'आयुष्मानो! आजके वादसे तुम लोग मूझे ब्रह्मचारी मानो—ग्राम्य मैथुन धर्मसे सर्वथा विरत।' तव आनन्द! उन पाँच सौ उपासकोके मनमे यह वात आई—आर्य गवेसी हमारे वहुत उपकारक है, आगे आगे चलने वाले है, हमे शीलोमे प्रतिष्ठित करानेवाले है। आर्य गवेसी ब्रह्मचारी वनने जा रहे है—ग्राम्य मैथुन धर्मसे सर्वथा विरत। हम भी क्यो न वनें? तव आनन्द! वह पाँच सौ उपासक जहाँ गवेसी उपासक था, वहाँ पहुँचे। पास जाकर गवेसी उपासक से वोले—'आर्य गवेसी! आजके वादसे हम पाँच सौ उपासकोको भी ब्रह्मचारी मानें—ग्राम्य मैथुन धर्मसे सर्वथा विरत।' तव आनन्द! गवेसी उपासक के मनमे यह वात आई—'मै इन पाँच सौ उपासकोका वहुत उपकार करने वाला हूँ, आगे आगे चलने वाला हूँ, शीलग्रहण कराने वाला हूँ। मै पूर्ण सदाचारी हूँ। ये पाँच सौ उपासक भी पूर्ण सदाचारी है। मै ब्रह्मचारी हूँ—ग्राम्य मैथुन धर्मसे सर्वथा विरत। ये पाँच सौ उपासक भी ब्रह्मचारी है—ग्राम्य मैथुन धर्मसे सर्वथा विरत। हम दोनो ही समान है। मेरी कुछ भी विशेषता नही है। मै अव इनसे विशिष्ट वननेके लिये

प्रयास करू।' तब आनन्द! वह गवेसी उपासक उन पाँच सौ उपासकोंके पास गया। पास जाकर उन पाँच सौ उपासकोंसे बोला—'आयुष्मानो! आजसे बादसे तुम लोग मुझे एकाहारी मानो—रात्रि भोजनसे विरत, विकाल-भोजनसे सर्वथा विरत।' तब आनन्द! उन पाँच सौ उपासकोंके मनमें यह बात आई—आर्य गवेसी हमारे बहुत उपकारक हैं, आगे आगे चलने वाले हैं, हमें शीलोंमें प्रतिष्ठित कराने वाले हैं। आर्य गवेसी एकाहारी बनने जा रहे हैं—रात्रि भोजनसे विरत, विकाल-भोजनसे सर्वथा विरत। हम भी क्यों न बनें? तब आनन्द! वह पाँच सौ उपासक जहाँ गवेसी उपासक था, वहाँ पहुँचे। पास जाकर गवेसी उपासकसे बोले—'आर्य गवेसी! आजके बादसे हम पाँच सौ उपासकोंको भी एकाहारी मानें——रात्रि भोजनसे विरत, विकाल-भोजनसे सर्वथा विरत।' तब आनन्द! गवेसी उपासकके मनमें यह बात आई—'मैं इन पाँच सौ उपासकोंका बहुत उपकार करने वाला हूँ, आगे आगे चलने वाला हूँ, शील ग्रहण कराने वाला हूँ। मैं सम्पूर्ण सदाचारी हूँ। यह पाँच सौ उपासक भी सम्पूर्ण सदाचारी हैं। मैं ब्रह्मचारी हूँ—ग्राम्य मैथुन धर्मसे सर्वथा विरत। ये पाँच सौ उपासक भी ब्रह्मचारी हैं—ग्राम्य मैथुन धर्मसे सर्वथा विरत। मैं एकाहारी हूँ—रात्रि भोजनसे विरत, विकाल-भोजनसे सर्वथा विरत। ये पाँच सौ उपासक भी एकाहारी हैं—रात्रि भोजनसे विरत, विकाल-भोजनसे सर्वथा विरत। हम दोनो ही समान हैं। मेरी कुछ भी विशेषता नही है। मैं अब इनसे कुछ विशिष्ट बननेके लिये प्रयास करू!

तब आनन्द! गवेसी उपासक जहाँ भगवान् काश्यप अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध थे, वहाँ गया। पास जाकर उन भगवान् काश्यप अर्हत सम्यक् सम्बुद्धसे कहा—'भन्ते! भगवान्‌के पाससे मुझे प्रव्रज्या मिले, मुझे उपसम्पदा मिले।' आनन्द! गवेसी उपासकको भगवान् काश्यप अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध के पाससे प्रव्रज्या मिल गई, उपसम्पदा मिल गई। आनन्द! उपसम्पन्न होनेके थोडे ही समयके भीतर गवेसी भिक्षु अकेले, एकान्तमे रहकर, अप्रमादी हो, प्रयत्नकर, साधना करते रहकर, जिस उद्देश्यकी प्राप्तिके लिये कुल-पुत्र एकदम घरसे बेघर हो प्रव्रजित हो जाते हैं, उस अनुपम ब्रह्मचर्य-परायण उद्देश्यको शीघ्र ही, इसी जन्ममें प्राप्त कर, साक्षात् कर, विचरने लगा। उसे यह निश्चय हो गया कि जन्म (–मरण) का बधन क्षीण हो गया, ब्रह्मचर्य-वासका उद्देश्य पूरा हो गया, जो करनेका था, वह कर लिया, अब यहाँके लिये कुछ करणीय नही रहा। आनन्द! गवेसी भिक्षु एक अर्हत हो गये।

तब आनन्द ! उन पाँच सौ उपासकोके मनमे यह बात आई—आर्य गवेसी हमारे बहुत उपकारक हैं, आगे आगे चलने वाले हैं, हमे शीलोमें प्रतिष्ठित कराने वाले है। आर्य गवेसी केश-दाढी मुण्डवा, काषाय वस्त्र पहन, घरसे बेघर हो, प्रव्रजित हो गये। हम भी क्यो न हो जाये ? आनन्द ! तब वे पाँच सौ उपासक जहाँ भगवान् अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध थे, वहाँ पहुँचे। जाकर भगवान् काश्यप अर्हत सम्यक् सम्बुद्धसे यह निवेदन किया—भन्ते ! भगवान्‌के पाससे हमे प्रव्रज्या मिले, हमे उपसम्पदा मिले। आनन्द ! उन पाँच सौ उपासकोने भगवान् काश्यप अर्हत सम्यक् सम्बुद्धसे प्रव्रज्या प्राप्त की, उपसम्पदा प्राप्त की।

तब आनन्द ! गवेसी भिक्षुके मनमे यह बात आई—मैं इस अनुपम विमुक्ति सुखका अनायास लाभी हूँ। क्या अच्छा हो यदि यह पाँच सौ भिक्षु भी इस विमुक्ति-सुखके अनायास लाभी हो सके ! तब आनन्द ! वे पाँच सौ भिक्षु अकेले, एकान्तमे रहकर, अप्रमादी हो, प्रयत्न कर, साधन करते रहकर, जिस उद्देश्यकी प्राप्तिके लिये कुलपुत्र एकदम घरसे बेघर हो प्रव्रजित हो जाते हैं, उस अनुपम ब्रह्मचर्य-परायण उद्देश्यको शीघ्र ही, इसी जन्ममे प्राप्तकर, साक्षात् कर, विचरने लगे। उन्हे यह निश्चय हो गया कि जन्म-मरणका बंधन क्षीण हो गया, ब्रह्मचर्य-वासका उद्देश्य पूरा हो गया, जो करनेका था वह कर लिया, अब यहाँ के लिये कुछ करणीय नही रहा।

आनन्द ! गवेसी प्रमुख उन पाँच सौ भिक्षुओने उत्तरोत्तर श्रेष्ठ से श्रेष्ठ उद्देश्यकी ओर आगे बढते हुए अनुपम विमुक्ति-सुखको प्राप्त कर लिया। इसलिये आनन्द ! यही सीखना चाहिये कि हम उत्तरोत्तर श्रेष्ठसे श्रेष्ठतर उद्देश्यकी ओर आगे बढते हुए अनुपम विमुक्ति-सुखको प्राप्त करेगे। आनन्द ! इसी लिये यही सीखना चाहिये।

(४) आरण्यक वर्ग

भिक्षुओ, ये पाँच आरण्यक होते है। कौनसे पाँच ? (बुद्धि) मन्दता या मूढताके कारण भी कोई कोई आरण्य-वासी (=आरण्यक) होते है। पापेच्छाके कारण भी कोई कोई आरण्यक होता है। उन्मत्त अथवा विक्षिप्त-चित्त होनेके कारण भी कोई कोई आरण्यक होता है। बुद्ध और बुद्ध-श्रावकोके द्वारा अरण्यवास प्रशंसित होनेके कारण भी कोई कोई आरण्यक होता है। अल्पेच्छताके ही कारण, सतुष्ठ होने के ही कारण, श्रेष्ठ-जीवन बितानेकी इच्छाके ही कारण, एकान्त-जीवन प्रिय होनेके ही कारण, इतने से ही सन्तुष्ट रहनेके ही कारण भी कोई कोई आरण्यक होता है। भिक्षुओ, ये पाँच आरण्यक होते है,। भिक्षुओ, इन पाँचो आरण्यकोमें जो अल्पेच्छता

के ही कारण, सतुष्ट होनेके ही कारण, श्रेष्ठ-जीवन बिताने की इच्छाके ही कारण, एकान्त-जीवन प्रिय होनेके ही कारण, इतनेसे ही सतुष्ट रहनेके कारण जो आरण्यक होता है, वही इन पाँचो आरण्यकोमें अग्र, श्रेष्ठ, प्रमुख, उत्तम और परश्रेष्ठ कहलाता है। भिक्षुओ, जैसे गौसे दूध होता है, दूधसे ही दही, दहीसे नवनीत (= मक्खन) नवनीतसे घी, घीसे घी-माण्ड (?)—घी-माण्ड ही इन सबमें श्रेष्ठ कहलाता है। इसी प्रकार भिक्षुओ, इन पाँच प्रकारके आरण्यकोमें जो अल्पेच्छताके ही कारण, सतुष्ट होनेके ही कारण, श्रेष्ठ-जीवन बितानेकी इच्छाके ही कारण, एकान्त-जीवन प्रिय होनेके कारण, इतनेसे ही सन्तुष्ट रहनेके कारण जो आरण्यक होता है, वही इन पाचो आरण्यकोमें अग्र, श्रेष्ठ, प्रमुख, उत्तम और परम श्रेष्ठ कहलाता है।

भिक्षुओ, ये पाँच पांसुकूलिक (-धूलमे पड़े चीथड़ोका बना चीवर पहनने वाले) है भिक्षुओ, ये पाच वृक्ष-मूलक (वृक्षकी ही छायामें रहने वाले) है भिक्षुओ, ये पाँच श्मशानिक (श्मशानमे ही रहने वाले) है . भिक्षुओ, ये पाँच खुले आकाशके नीचे ही रहने वाले है भिक्षुओ, ये पाँच बैठे ही रहने वाले होते है भिक्षुओ, ये पाँच जैसा भी आसन मिले वैसा ही ग्रहण करने वाले होते है भिक्षुओ, ये पाँच एक ही आसन पर बैठकर भिक्षा ग्रहण करने वाले होते है भिक्षुओ, ये पाँच सामान्य समयके बाद भिक्षाको अस्वीकार करने वाले होते है भिक्षुओ, ये पाँच केवल भिक्षा पात्रमें प्राप्त भोजन ग्रहण करने वाले होते है। कौनसे पाँच ? (बुद्धि) मन्दता या मूढताके कारण भी कोई कोई पिण्ड-पातिक होता है। उन्मत्त अथवा विक्षिप्त-चित्त होनेके कारण भी कोई-कोई पिण्डपातिक होता है। बुद्ध और बुद्ध-श्रावको द्वारा प्रशसित होनेके कारण भी कोई कोई पिण्ड-पातिक होता है। अल्पेच्छताके ही कारण, सतुष्ट होनेके ही कारण, श्रेष्ठ-जीवन बितानेकी ही इच्छाके कारण, एकान्त-जीवन प्रिय होनेके ही कारण, इतने से ही सन्तुष्ट रहनेके कारण भी कोई-कोई पिण्डपातिक होता है। भिक्षुओ, ये पाँच पिण्डपातिक होते हैं।

भिक्षुओ, इन पाँच प्रकारके पिण्ड-पातिकोमे जो अल्पेच्छता के ही कारण, सन्तुष्ट होनेके ही कारण, श्रेष्ठ-जीवन बितानेकी इच्छाकी ही कारण, एकान्त-जीवन प्रिय होनेके ही कारण, इतनेसे ही सन्तुष्ट रहनेके कारण, जो पिण्ड-पातिक होता है, वही इन पाँचो पिण्ड-पातिकोमे अग्र, श्रेष्ठ, प्रमुख, उत्तम और पर श्रेष्ठ कहलाता है। भिक्षुओ, जैसे गौसे दूध होता है, दूधसे दही, दहीसे नवनीत (मक्खन), नवनीतसे घी, घीसे घी-माण्ड (?)—घी-माण्ड ही, इन सबमे श्रेष्ठ कहलाता है। इसी प्रकार

भिक्षुओ, इन पाँच प्रकारके पिण्ड-पातिकोमे जो अल्पेच्छताके ही कारण, सतुष्ट होने के ही कारण, श्रेष्ठ-जीवन वितानेकी इच्छाके ही कारण, एकान्त-जीवन प्रिय होनेके ही कारण, इतनेसे ही सन्तुष्ट रहनेके ही कारण पिण्डपातिक होता है, वह इन पाँचो पिण्ड-पातिकोमे अग्र, श्रेष्ठ, प्रमुख, उत्तम और पर श्रेष्ठ कहलाता है।

(५) ब्राह्मण वर्ग

भिक्षुओ, ये पाँच वाते ऐसी है जो पहले ब्राह्मणोमे दिखाई देती थी, अव ब्राह्मणोमें नही दिखाई देती, अव कुत्तोमे दिखाई देती है। कौनसी पाँच वाते? भिक्षुओ, पहलेके ब्राह्मण केवल ब्राह्मणीसे ही सहवास करते थे, अब्राह्मणीसे नही। भिक्षुओ, अबके ब्राह्मण, ब्राह्मणीके पास भी जाते है, अब्राह्मणी के पास भी। भिक्षुओ, अव कुत्ते कुतियाके ही पास जाते है, अकुतियाके पास नही। भिक्षुओ, यह पहली वात है जो पहलेके ब्राह्मणोमें दिखाई देती थी, अबके ब्राह्मणोमें नही दिखाई देती, अव कुत्तोमे दिखाई देती है।

भिक्षुओ, पहलेके ब्राह्मण रजस्वलाके ही पास जाते थे, अरजस्वलाके पास नही। भिक्षुओ, अबके ब्राह्मण रजस्वलाके पास भी जाते है, अरजस्वलाके पास भी। भिक्षुओ, अब कुत्ते रजस्वला कुतियाके ही पास जाते है, अरजस्वला कुतियाके पास नही। भिक्षुओ, यह दूसरी वात है जो पहलेके ब्राह्मणोमे दिखाई देती थी, अवके ब्राह्मणोमे नही दिखाई देती, अव कुत्तोमे दिखाई देती है।

भिक्षुओ, पहलेके ब्राह्मण ब्राह्मणीका क्रय-विक्रय नही करते थे। जो प्रिया होती थी, उसीको सहवास करने के लिये अगीकार करते थे। भिक्षुओ, अवके ब्राह्मण ब्राह्मणीका क्रय-विक्रय भी करते है, जो प्रिया होती है उसे भी सहवासके लिये अगीकार करते है। भिक्षुओ, अव कुत्ते कुतियाका क्रय-विक्रय नही करते, जो प्रिया होती है उसे ही सहवासके लिये अगीकार करते है। भिक्षुओ, यह तीसरी वात है जो पहलेके ब्राह्मणोमे दिखाई देती थी, अवके ब्राह्मणोमे नही दिखाई देती, अव कुत्तोमे दिखाई देती है।

भिक्षुओ, पहलेके ब्राह्मण धन-धान्य अथवा चाँदी-सोनेका सग्रह नही करते थे। भिक्षुओ, अवके ब्राह्मण धन-धान्य तथा चादी-सोनेका सग्रह करते है। भिक्षुओ, अव कुत्ते धन-धान्य अथवा चादी-सोनेका सग्रह नही करते। भिक्षुओ, यह चौथी वात है जो पहलेके ब्राह्मणोमे दिखाई देती थी, अवके ब्राह्मणोमें नही दिखाई देती, अव कुत्तोमे दिखाई देती है।

भिक्षुओ, पहलेके ब्राह्मण सन्ध्याके समय सन्ध्याके भोजनके लिये, प्रात कालके समय प्रात कालके भोजनके लिये, भिक्षाटन करते थे। भिक्षुओ, अबके ब्राह्मण पेट भर खाकर, बाकी बाँध कर ले जाते है। भिक्षुओ, अब कुत्ते शामके समय शामका और प्रात कालके समय प्रात कालका भोजन खोजते है। भिक्षुओ, यह पाँचवी बात है जो पहलेके ब्राह्मणोमे दिखाई देती थी, अबके ब्राह्मणोमे नही दिखाई देती, अब कुत्तोमे दिखाई देती है।

तब द्रोण ब्राह्मण जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवान् बुद्धसे कुशल-क्षेमकी बातचीत की। कुशलक्षेम पूछ चुकनेके बाद वह एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए द्रोण ब्राह्मणने भगवान्से यह कहा—हे गौतम! हमने यह सुना है कि आप ऐसे ब्राह्मणोका, जो बडे-बूढे हो, वृद्ध हो, आयु-प्राप्त हो, न अभिवादन करते है, न उनको आसन देकर या बैठनेके लिये कहकर उनका स्वागत ही करते है। तो क्या हे गौतम! यह ऐसा ही है कि आप ऐसे ब्राह्मणोका, जो बडे-बूढे हो, वृद्ध हो, आयु-प्राप्त हो, न अभिवादन करते है, न उनको आसन देकर या बैठनेके लिये कहकर उनका स्वागत ही करते है? हे गौतम! यह तो आपके लिये उचित नही है।

"हे द्रोण! तू भी अपने आपको ब्राह्मण कहता है?"

"हे गौतम! यदि ठीक ठीक कहने वाला कोई किसी के बारेमें कहे कि यह ब्राह्मण है, यह माता तथा पिता दोनो ही की ओरसे सुजात है, इसकी सात पीढी तककी वश-परम्परा शुद्ध है, यह जातिवादकी दृष्टिसे निर्दोष है, यह अध्यापक है, यह (वेद–) मन्त्र धारी है, यह तीनो-वेदोमे पारगत है, निघण्टु, केटुभयुक्त, अक्षर-प्रभेद युक्त, सख्याके हिसावसे पाँचवे इतिहास-युक्त, यह (वेदका) पद-पाठ करने वाला है, यह व्याकरणका जानकार है, यह लोकायत-महापुरुष लक्षणोका पूरा जानकार है, तो वह मेरे ही बारेमे ठीक ठीक कहेगा।

"हे गौतम! मै ही वह ब्राह्मण हूँ, जो माता पिता दोनोकी ओरसे सुजात है, जिसकी सात पीढी तककी वश-परम्परा शुद्ध है, जो जातिवादकी दृष्टिसे निर्दोष है, जो अध्यापक है, जो (वेद–) मन्त्रधारी है, जो तीनो वेदोमें पारगत है, निघण्टु-केटुभ-युक्त, अक्षर-प्रभेद-युक्त, सख्याके हिसावसे पाँचवे इतिहास युक्त, जो (= वेदका) पद-पाठ करने वाला है, जो व्याकरणका जानकार है, जो लोकायत महापुरुष-लक्षणोका पूरा जानकार है।"

"हे द्रोण! जो तुम्हारे पूर्वज ब्राह्मणोके ऋषी-गण हुए है, जो मन्त्रोकी रचना करने वाले थे, मन्त्रोके प्रवक्ता थे, जिनके द्वारा सग्रहीत पुराने मन्त्रोका आजके ब्राह्मण अनुगायन करते है, अनुभाषण करते है, परम्परानुसार शिक्षण करते है, अनुवाचन करते है—जैसे अट्टक, वामक, वामदेव, विश्वामित्र, जम्दग्नि, अगीरस,भारद्वाज वसिष्ठ, काश्यप, भृगु,—वे पाँच प्रकारके ब्राह्मणोका वर्णन करते है—ब्रह्म-समान, देव-समान, मर्यादायुक्त, मर्यादा-रहित तथा पाँचवा चाण्डाल-ब्राह्मण। हे द्रोण! तू उनमेंसे कौन (=कौन-सा) ब्राह्मण है?"

"हे गौतम! मै इन पाँच प्रकारके ब्राह्मणोको नही जानता। मै केवल 'ब्राह्मण' को ही जानता हूँ। अच्छा हो हे गौतम! आप मुझे इस प्रकारका उपदेश दे कि मै इन पाँच प्रकारके ब्राह्मणोको जान लूँ।"

"तो ब्राह्मण! सुन। अच्छी तरहसे मनमे धारण कर। मै कहता हूँ।"

"बहुत अच्छा" कहकर द्रोण ब्राह्मणने भगवान्‌को प्रतिवचन दिया। भगवान्‌ने यह कहा—

"द्रोण! ब्राह्मण ब्रह्म-समान कैसे होता है? द्रोण! ब्राह्मण माता-पिता दोनोकी ओरसे सुजात होता है, उसकी सात पीढी तककी वश-परम्परा शुद्ध होती है, जातिवादकी दृष्टिसे निर्दोष होता है। वह (वेद–) मन्त्रोका अध्ययन करता हुआ, अडतालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य व्रतका पालन करता है। अडतालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य-व्रतका पालन करते हुए (वेद–) मन्त्रोका अध्ययन कर अधर्मानुसार नही, किन्तु धर्मानुसार आचार्यके लिये गुरु-दक्षिणा (=आचार्य-धन) खोजता है। द्रोण! इस विषयमे धर्म-विधि क्या है? न कृषि करके, न व्योपार करके, न गोपालनसे, न धनुर्विद्या से, न राजकीय नौकरीसे और न किसी दूसरे शिल्पसे। वह भिक्षाके ठूठेको घृणाकी दृष्टिसे न देख, केवल भिक्षाटन द्वारा आचार्य-धन खोजता है। वह आचार्यको उसकी गुरु-दक्षिणा भेटकर, बाल-दाढी मुण्डा, काषाय वस्त्र पहन, घरसे बेघर हो प्रव्रजित हो जाता है। वह प्रव्रजित हो जानेपर एक दिशा, दूसरी दिशा, तीसरी दिशा तथा चौथी दिशाको मैत्री-युक्त चित्तसे व्याप्त कर विचरता है। वह ऊपर, नीचे, तिर्यक् सभी दिशाओमे सर्वत्र, सबके लिये, समस्त लोकको मैत्री-युक्त, विपुल, अप्रमाण, वैर-रहित, क्रोध-रहित चित्तसे विचरता है। वह करुणा युक्त चित्तसे मुदिता-युक्त चित्तसे, उपेक्षा-युक्त चित्तसे एक दिशा, दूसरी दिशा, तीसरी दिशा तथा चौथी दिशाको व्याप्त कर विचरता है। वह ऊपर, नीचे, तिर्यक सभी दिशाओमे, सर्वत्र, सबके लिये, समस्त लोकको उपेक्षा-युक्त, विपुल, अप्रमाण, वैर-रहित, क्रोध-

रहित चित्तसे विचरता है। वह इन चारो ब्रह्म-विहारोका अभ्यास कर शरीरके न रहनेपर, मरनेके अनन्तर सुगति ब्रह्म-लोकमे उत्पन्न होता है। द्रोण! इस प्रकार ब्राह्मण ब्रह्म-समान होता है।

द्रोण! ब्राह्मण देव-समान कैसे होता है? द्रोण! ब्राह्मण माता-पिता दोनोकी ओरसे सुजात होता है, उसकी सात पीढी तककी वंश-परम्परा शुद्ध होती है, जातिवादकी दृष्टिसे निर्दोष होता है। वह (वेद-) मन्त्रोका अध्ययन करता हुआ, अडतालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य-व्रतका पालन करता है। अडतालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य-व्रतका पालन करते हुए (वेद-) मन्त्रोका अध्ययन कर अधर्मानुसार नही, किन्तु धर्मानुसार आचार्यके लिये गुरु-दक्षिणा (= आचार्य-धन) खोजता है। उस विषयमें धर्म-विधि क्या है? न कृषि करके, न व्योपार करके, न गोपालनसे, न धनुर्विद्यासे, न राजकीय नौकरीसे और न किसी दूसरे शिल्पसे। वह भिक्षाके ठूंठेको घृणाकी दृष्टिसे न देख, केवल भिक्षाटन द्वारा आचार्य धन खोजता है। वह आचार्यको उसकी दक्षिणा भेट कर अधर्मानुसार नही, धर्मानुसार ही, भार्याकी खोज करता है। इस विषयमे धर्म-विधि क्या है? वह क्रय-विक्रय द्वारा उसे प्राप्त नही करता है। उसकी ब्राह्मणी केवल उसके हाथपर जल डालकर उसके माता-पिता द्वारा उसे दी गई होती है। वह केवल ब्राह्मणीसे ही सहवास करता है, क्षत्राणीसे नही, वैश्य-स्त्रीसे नही, शूद्र-स्त्रीसे नही, चण्डाल-स्त्रीसे नही, निषाद-स्त्रीसे नही, वासफोड स्त्रीसे नही, भगिनसे नही तथा पुक्कुस-स्त्रीसे नही। वह गर्भिणीसे सहवास नही करता, दूध पिलाती स्त्रीसे नही, अरजस्वलासे नही। द्रोण! वह ब्राह्मण गर्भिणीसे क्यो सहवास नही करता? द्रोण! यदि वह ब्राह्मण गर्भिणीसे सहवास करता है तो वह तरुण वा तरुणी गूंहमें बहुत लथ-पथ जैसी हो जाती है। इसलिये हे द्रोण! वह ब्राह्मण गर्भिणीसे सहवास नही करता। द्रोण! वह ब्राह्मण दूध पिलाती हुईसे क्यो सहवास नही करता? द्रोण! यदि वह ब्राह्मण दूध पिलाती हुईसे सहवास करे तो वह तरुण या तरुणी अशुचि पापी-सी होती है। इसलिये हे द्रोण! वह ब्राह्मण दूध पिलाती हुईसे सहवास नही करता। द्रोण! वह ब्राह्मण अरजस्वलासे क्यो सहवास नही करता? द्रोण! यदि वह ब्राह्मण अरजस्वलासे सहवास करता है, तो वह ब्राह्मणी न उसकी कामेच्छाकी तृप्तिके लिये होती है, न क्रीडाके लिये होती है, न रतिके लिये होती है, वह ब्राह्मणी उस ब्राह्मणके लिये केवल जनन करनेवाली होती है। वह बालक या बालिकाको जन्म दे, बाल-दाढी मुण्डा, काषाय-वस्त्र पहन, घरसे बेघर हो, प्रव्रजित हो जाता है। इस प्रकार प्रव्रजित हुआ हुआ वह काम-भोगोंसे पृथक हो

ध्यानको प्राप्त कर विचरता है। वह इन चारो ध्यानोका अभ्यास कर, शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर सुगति, स्वर्ग लोकमे जन्म ग्रहण करता है। द्रोण! इस प्रकार ब्राह्मण देव-समान होता है।

द्रोण! ब्राह्मण मर्यादाका पालन करने वाला कैसे होता है? द्रोण! ब्राह्मण माता-पिता दोनोकी ओरसे सुजात होता है, उसकी सात पीढी तककी वश-परम्परा शुद्ध होती है, जातिवादकी दृष्टिसे निर्दोष होता है। वह (वेद–) मन्त्रोका अध्ययन करता हुआ, अडतालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य-व्रतका पालन करता है। अडतालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य व्रतका पालन करते हुए (वेद–) मन्त्रोका अध्ययन कर अधर्मानुसार नही, किन्तु धर्मानुसार आचार्यके लिये गुरु-दक्षिणा (=आचार्य-धन) खोजता है। इस विषयमे धर्म-विधि क्या है? न कृषि करके, न व्योपार करके, न गोपालनसे, न धनुर्विद्यासे, न राजकीय नौकरीसे और न किसी दूसरे शिल्पसे। वह भिक्षाके ठूठेको घृणाकी दृष्टिसे न देख, केवल भिक्षाटन द्वारा आचार्य धन खोजता है। वह आचार्यको उसकी दक्षिणा भेंट कर अधर्मानुसार नही, धर्मानुसार ही भार्याकी खोज करता है। इस विषयमे धर्म-विधि क्या है? वह क्रय-विक्रय द्वारा उसे प्राप्त नही करता है। उसकी ब्राह्मणी केवल उसके हाथपर जल डालकर ब्राह्मणीके माता-पिता द्वारा उसे दी गई होती है। वह केवल ब्राह्मणीसे ही सहवास करता है, क्षत्राणीसे नही, वैश्य-स्त्रीसे नही, शूद्र-स्त्रीसे नही, चण्डाल-स्त्रीसे नही, निपाद-स्त्रीसे नही, बाँस-फोड-स्त्रीसे नही, भगिनसे नही तथा पुक्कुस-स्त्रीसे नही। वह गर्भिणीसे सवहास नही करता, दूध पिलाती स्त्रीसे नही, अरजस्वलासे नही। द्रोण! वह ब्राह्मण गर्भिणी स्त्रीसे क्यो सहवास नही करता? द्रोण! यदि वह ब्राह्मण गर्भिणी स्त्रीसे सहवास करे केवल जनन करनेवाली होती है। वह पुत्र या पुत्रीको जन्म दे, उस सन्तान-सुखका ही आनन्द लेते हुए गृहस्थी करता है। वह घर छोड बे-घर नही होता। वह पुराने ब्राह्मणोकी मर्यादाका पालन करता है। उसका अतिक्रमण नही करता। क्योकि वह ब्राह्मण जो पुराने ब्राह्मणोकी मर्यादाका पालन करता है, उसका अतिक्रमण नही करता, इसलिये हे द्रोण! वह ब्राह्मण मर्यादा-युक्त रहता है। हे द्रोण! इस प्रकार ब्राह्मण मर्यादा-युक्त होता है।

द्रोण! ब्राह्मण मर्यादाका उल्लघन करने वाला कैसे होता है? द्रोण! ब्राह्मण माता पिता दोनोकी ओरसे सुजात होता है जाति-वादकी दृष्टिसे निर्दोष होता है। वह (वेद–) मन्त्रोका अध्ययन करता हुआ अडतालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य व्रतका पालन करता है। अडतालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य व्रतका

पालन करते हुए (वेद–) मन्त्रोका अध्ययन कर, अधर्मानुसार नही, किन्तु धर्मानुसार आचार्यके लिये गुरु-दक्षिणा (= आचार्य धन) खोजता है। इस विषयमे धर्म-विधि क्या है ? न कृषि करके, न व्योपार करके, न गोपालनसे, न धनुर्विद्यासे, न राजकीय नौकरीसे और न किसी दूसरे शिल्पसे। वह भिक्षाके ठूठेको घृणाकी दृष्टिसे न देख, केवल भिक्षाटन द्वारा आचार्य-धन खोजता है। वह आचार्यको उसकी दक्षिणा सौंपकर धर्मानुसार भी, अधर्मानुसार भी, क्रय-विक्रय द्वारा भी, और हाथपर पानी डालकर भी दी गई ब्राह्मणीको प्राप्त करता है। वह ब्राह्मणीसे भी सहवास करता है, क्षत्राणीसे भी, वैश्य-स्त्रीसे भी, शूद्र-स्त्रीसे भी, चण्डाल-स्त्रीसे भी, निषाद-स्त्रीसे भी, बास-फोड स्त्रीसे भी, भगिनसे भी तथा पक्कुस-स्त्रीसे भी। वह गर्भिणीसे भी सहवास कराता है, दूध पिलाती हुईसे भी सहवास करता है, रजस्वलासे भी सहवास करता है तथा अरज-स्वलासे भी सहवास करता है। उसकी ब्राह्मणी उसकी कामेच्छाकी तृप्तिके लिये भी होती है, क्रीडाके लिये भी होती है, रतिके लिये भी होती है तथा जनन करने वाली भी होती है। वह पुराने ब्राह्मणोकी मर्यादाका पालन नही करता, उसका अतिक्रमण करता है। क्योकि जो पुराने ब्राह्मणोकी मर्यादा होती है, वह उसका पालन नही करता, वह उसका अतिक्रमण करता है, इसलिये द्रोण ! वह ब्राह्मण मर्यादाका उल्लघन करने वाला होता है।

द्रोण ! ब्राह्मण चण्डाल-ब्राह्मण कैसे होता है ? द्रोण ! ब्राह्मण माता पिता दोनोकी ओरसे सुजात होता है, उसकी सात-पीढी तककी वश-परम्परा शुद्ध होती है, जाति-वादकी दृष्टिसे निर्दोष होता है। वह (वेद-) मन्त्रोका अध्ययन करता हुआ, अडतालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य-व्रतका पालन करता है। अडतालीस वर्ष तक कुमार ब्रह्मचर्य-व्रतका पालन करते हुए (वेद –) मन्त्रोका अध्ययन कर धर्मा-नुसार वा अधर्मानुसार आचार्य-धन खोजता है। वह कृषि करके, व्योपार करके, गोपालनसे, धनुर्विद्यासे, राजकीय-नौकरीसे तथा किसी दूसरे शिल्पसे भी। वह भिक्षाके ठूठे तकको घृणाकी दृष्टिसे नही देखता। वह आचार्यको गुरु-दक्षिणा भेट कर धर्मानुसार या अधर्मानुसार भार्याकी खोज करता है। वह क्रय-विक्रय द्वारा भी खोजता है। वह ब्राह्मणीके माता पिता द्वारा उसके हाथपर जल डालकर दी गई ब्राह्मणीको भी प्राप्त करता है। वह ब्राह्मणीसे भी सहवास करता है, क्षत्राणीसे भी सहवास करता है, वैश्य-स्त्रीसे भी, शूद्र-स्त्रीसे भी, चण्डाल-स्त्रीसे भी, भगिन-स्त्रीसे भी तथा पक्कुस-स्त्रीसे भी। वह गर्भिणीसे भी सहवास करता है, दूध पिलाती हुई से भी सहवास करता है, रजस्वलासे भी सहवास करता है तथा अरजस्वलासे

भी। उसकी ब्राह्मणी उसकी कामेच्छा की पूर्तिके लिये भी होती है, क्रीडाके लिये भी होती है, रतिके लिये भी होती है तथा जनन करने वाली भी होती है। वह सभी तरहके काम करके जीविका चलाता है। उससे ब्राह्मण पूछते है—'आप अपने आपको ब्राह्मण कहते हुए क्यो सभी तरहके काम करके जीविका चलाते है?' वह उत्तर देता है—"जैसे आग शुचि अशुचि दोनोको जला डालती है, वह स्वय लिप्त नही होती। इसी प्रकार यदि ब्राह्मण सभी तरहके काम करके भी जीविका चलाता है, तो भी वह उससे लिप्त नही होता। द्रोण! क्योकि वह सभी तरहके काम करके जीविका चलाता है, इसलिये वह चण्डाल-ब्राह्मण कहलाता है! द्रोण! इस प्रकार ब्राह्मण चण्डाल-ब्राह्मण होता है।

हे द्रोण! जो तुम्हारे पूर्वज ब्राह्मणोके ऋषीगण हुए है, जो मन्त्रोकी रचना करने वाले थे, मन्त्रोके प्रवक्ता था, जिनके द्वारा सग्रहीत पुराने मन्त्रोका आजके ब्राह्मण अनुगायन करते है, अनुभाषण करते है, परम्परानुसार शिक्षण करते है, अनुवाचन करते है—जैसे अट्टक, वामक, वामदेव, विश्वामित्र, जम्दग्नि, अङ्गीरस, भारद्वाज, वसिष्ठ, काश्यप, भृगु—वे ही इन पाँच प्रकारके ब्राह्मणोका वर्णन करते है—ब्रह्म-समान, देव-समान, मर्यादा-युक्त, मर्यादा-रहित तथा पाँचवाँ चण्डाल-ब्राह्मण। हे द्रोण! तू उनमेंसे कौन-सा ब्राह्मण है?

"हे गौतम! यदि ऐसा है तो हम चण्डाल-ब्राह्मणकी गिनतीमे भी नही है। हे गौतम! आपका कथन वहुत सुन्दर है हे गौतम! आजसे प्राण रहने तक आप मुझे अपना शरणागत उपासक समझे।"

उस समय सगारव ब्राह्मण जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचा। पास जाकर भगवान्से कुशल-क्षेम सम्वन्धी वातचीत की। कुशल-क्षेमकी वातचीत समाप्त होनेपर वह एक ओर वैठ गया। एक ओर वैठे हुए सगारव ब्राह्मणने भगवान्से यह पूछा—हे गौतम! इसका क्या हेतु है, क्या कारण है कि किसी समय चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद-) मन्त्र भी भूल जाते है, न पाठ किये गये मन्त्रोका तो कहना ही क्या? इसका क्या हेतु है, क्या कारण है कि किसी समय चिरकाल तक पाठ न किये गये (वेद-) मन्त्र भी याद रहते है, चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद-) मन्त्रोका तो कहना ही क्या?"

ब्राह्मण! जिस समय चित्तमे काम-राग व्याप्त रहता है और उत्पन्न काम-रागके शमनका यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी यथार्थ

रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है, उस समय पर-हित भी यथार्थ रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है, उस समय आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे न दिखाई देता है, न ज्ञान रहता है। उस समय चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्र भी भूल जाते हैं, न पाठ किये गये मन्त्रोंका तो कहना ही क्या? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानी भरा वर्तन हो, उसमें लाखका रग, हल्दीका रग, नीला-रग वा मञ्जीठका रग पडा हो, उस वर्तनमें कोई आँख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट न हो, दिखाई न दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण! जिस समय चित्तमें काम-राग व्याप्त रहता है और उत्पन्न काम-रागके शमनका यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हितभी यर्थार्थ रूपसे न दिखाई देता है, न ज्ञात रहता है, उस समय पर-हित भी यर्थार्थ रूपसे न दिखाई देता है, न ज्ञात रहता है। उस समय आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे न दिखाई देता है, न ज्ञात रहता है। उस समय चिर-काल तक पाठ किये गये (वेद) मन्त्र भी भूल जाते है, न पाठ किये गये मन्त्रोका तो कहना ही क्या?

फिर हे ब्राह्मण! जिस समय चित्तमे व्यापदि (=क्रोध) व्याप्त रहता है और उत्पन्न व्यापादके शमनका यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी परहित भी आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है। उस समय चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्र भी भूल जाते है, न पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोका तो कहना ही क्या? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानी भरा वर्तन हो, वह आग पर रखा हो, गर्म हो, उबल रहा हो, उफन रहा हो, उस वर्तनमे कोई आँख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट न हो, दिखाई न दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण! जिस चित्तमे व्यापाद (=क्रोध) व्याप्त रहता है और उत्पन्न व्यापादके शमनका यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी यथार्थ-रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है, उस समय पर-हित भी उस समय आत्म-हित तथा पर-हित भी यथार्थ रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है। उस समय चिर काल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्र भी भूल जाते है, न पाठ किये गये मन्त्रोका तो कहना ही क्या?

फिर हे ब्राह्मण! जिस समय चित्तमें थीन-मिद्ध (=आलस्य-तन्द्रा) व्याप्त रहता है, और उत्पन्न आलस्य तथा तन्द्राके शमनका यथार्य उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी परहित भी आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है। उस समय चिर काल तक पाठ

किये गये (वेद–) मन्त्र भी भूल जाते है, न पाठ किये गये वेद-मन्त्रोका तो कहना ही क्या ? हे ब्राह्मण ! जैसे कोई पानीका वर्तन हो, उसके ऊपर कोई-कीचड हो, उस वर्तनमे कोई आँख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट न हो, दिखाई न दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण ! जिस चित्तमे थीन-मिद्ध व्याप्त रहता है, और उत्पन्न थीन-मिद्धके शमनका यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी पर-हित भी आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है। उस समय चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद –) मन्त्र भी भूल जाते है, न पाठ किये गये मन्त्रोका तो कहना ही क्या ?

फिर हे ब्राह्मण ! जिस समय चित्तमे उद्धतपन तथा कौकृत्य (= पश्चाताप) व्याप्त रहता है और उत्पन्न उद्धतपन तथा कौकृत्यके शमनका यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी पर हित भी आत्म हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है। उस समय चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्र भी भूल जाते है, न पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोका तो कहना ही क्या ? हे ब्राह्मण ! जैसे कोई पानीका वर्तन हो, वह हवासे चचल हो, हिलता-डोलता हो, उसमे लहरे उठ रही हो, उस वर्तनमे कोई आँख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट न हो, दिखाई न दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण ! जिस चित्तमे उद्धतपन तथा कौकृत्य व्यापा रहता और उत्पन्न उद्धतपन तथा कौकृत्यके शमनका यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है। उस समय चिर काल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्र भी भूल जाते है, न पाठ किये गये मन्त्रोका तो कहना ही क्या ?

फिर हे ब्राह्मण ! जिस समय चित्तमे सन्देह (= विचिकित्सा) व्याप्त रहता है और उत्पन्न सन्देहके शमनका यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी परहित भी आत्म हित तथा पर हित भी यथार्थ रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है। उस समय चिर-काल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्र भी भूल जाते है, न पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोका तो कहना ही क्या ? हे ब्राह्मण ! जैसे कोई पानीका वर्तन हो, अस्थिर हो, हिलता हो, तलपर ही कीचड युक्त हो, अन्धेरेमे रखा हो, उस वर्तनमे कोई आँख वाला आदमी अपना मुंह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट न हो, दिखाई न दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण ! जिस चित्तमे सन्देह (= विचिचिकित्सा) व्याप्त रहता है और उत्पन्न सन्देहके शमनका

यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी . परहित भी . आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है। उस समय चिर काल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्र भी भूल जाते है, न पाठ किये गये मन्त्रोका तो कहना ही क्या ?

किन्तु हे ब्राह्मण! जिस समय चित्तमे काम-राग व्याप्त नही रहता है और उत्पन्न काम-रागके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है, उस समय परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है, उस समय आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है। उस समय चिर काल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद आ जाते है, चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोका तो कहना ही क्या ? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानी भरा वर्तन हो, उसमे न लाखका रग हो, न हल्दीका रग हो, न नीला रग हो, न मजीठा रग हो, उस वर्तनमें कोई आँख-वाला अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट हो, दिखाई दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण! जिस समय चित्तमे काम-राग व्याप्त नही रहता है और उत्पन्न काम-रागके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्महित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है, पर-हित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है, उस समय आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है। उस समय चिर काल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद आ जाते है, चिर काल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोका तो कहना ही क्या ?

फिर हे ब्राह्मण! जिस समय चित्तमे क्रोध (=व्यापाद) व्याप्त नही रहता है और उत्पन्न व्यापादके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी परहित भी . आत्महित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है। उस समय चिरकाल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद आ जाते है। चिर काल तक पाठ न किये गये (वेद –) मन्त्रोका तो कहना ही क्या! हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानी भरा वर्तन हो, वह न आगपर रखा हो, न गर्म हो, न उवल रहा हो, न उफान आ रहा हो, उस वर्तनमें कोई आँख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट हो, दिखाई दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण! जिस समय चित्तमे क्रोध (=व्यापाद) व्याप्त नही रहता है और उत्पन्न व्यापादके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी . परहित-भी आत्महित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता

है। उस समय चिरकाल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद आ जाते है, चिरकाल तक पाठ किये गये वेद-मन्त्रोका तो कहना ही क्या?

फिर हे ब्राह्मण! जिस समय चित्तमे थीन-मिद्ध (=आलस्य तन्द्रा) व्याप्त नही रहता है और उत्पन्न थीन-मिद्धके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी परहित भी आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है। उम समय चिरकाल तक पाठ न किये गये वेद (=मन्त्र) भी याद आ जाते है। चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोका तो कहना ही क्या? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानीका वर्तन हो, उमके ऊपर कोई कीचड न हो, उस वर्तनमें कोई आँख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट हो, दिखाई दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण! जिस चित्तमे थीन-मिद्ध व्याप्त नही रहता है और उत्पद्धन्न थीन-मिद्धके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी पर हित भी आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है। उस समय चिर काल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद आ जाते है। चिर काल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोका तो कहना ही क्या?

फिर हे ब्राह्मण! जिस समय चित्तमे उद्धतपन तथा कौकृत्य (=पश्चाताप) व्याप्त नही रहता है और उत्पन्न उद्धतपन तथा कौकृत्यके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी . परहित भी आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है। उस समय चिरकाल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद आ जाते है। चिर काल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोका तो कहना ही क्या? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानीका वर्तन हो, वह हवासे चचल न हो, हिलता-डोलता न हो, उममे लहरे न उठ रही हो, उम वर्तनमे कोई आँख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उमे वहाँ प्रकट हो, दिखाई दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण! जिस चित्तमे उद्धतपन तथा कौकृत्य (=पश्चात्ताप) व्याप्त नही रहता है और उत्पन्न उद्धतपन तथा कौकृत्यके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्महित भी परहित भी आत्म हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है। उस समय चिरकाल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद आ जाते है। चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोका तो कहना ही क्या?

फिर हे ब्राह्मण! जिस समय चित्तमे सन्देह (=विचिकित्सा) व्याप्त नही रहता है और उत्पन्न सन्देहके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय

आत्महित भी परहित भी आत्महित तथा परहित भी यथार्थ रूपमें ज्ञात रहता है, दिखाई देता है। उम समय चिरकाल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद आ जाते हैं, चिर काल तक पाठ किये गये गये (वेद–) मन्त्रोका तो कहना ही क्या ? हे ब्राह्मण ! जैसे कोई पानीका वर्तन हो, अस्थिर न हो, हिलता न हो, तलपर ही कीचड युक्त न हो, अन्धेरेमे रखा न हो, उस वर्तनमें कोई आँख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट हो, दिखाई दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण ! जिस चित्तमे सन्देह (= विचिकित्सा) व्याप्त नही रहता है और उत्पन्न सन्देहके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उम मसय आत्म हित भी परहित भी आत्म हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है। उस समय चिरकाल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद आ जाते हैं, चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद) मन्त्रोका तो कहना ही क्या ? हे ब्राह्मण ! यही हेतु है, यही कारण है कि किसी समय चिर काल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद रहते है, चिर काल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोका तो कहना ही क्या ?

"हे गौतम ! आपका कहना वहुत ही सुन्दर है . हे गौतम ! आजसे प्राण रहने तक आप मुझे अपना शरणागत उपासक समझें।"

एक समय भगवान् वैशालीके महावनमें कूटागार शालामे विहार करते थे। उस समय कारण पाली नामका ब्राह्मण लिच्छवियोका काम काज देखता था। कारण पाली ब्राह्मणने देखा कि पिंगियानि ब्राह्मण दूरसे चला आ रहा है। उसे, आता देख, पिंगियानि ब्राह्मणसे वह वोला—पिंगियानि ! आप मध्याह्नके समय कहाँसे आ रहे है ?"

"मै श्रमण गौतमके पाससे चला आ रहा हूँ।"

"पिंगियानि ! तुम श्रमण गौतमकी प्रज्ञा-सामर्थ्यके वारेमे क्या समझते हो ? क्या तुम उसे पण्डित मानते हो।"

"कहाँ मै और कहाँ श्रमण गौतम ! मै कौन हूँ जो श्रमण गौतमकी प्रज्ञा-सामर्थ्य जानूंगा। श्रमण गौतमकी प्रज्ञा सामर्थ्यका जानने वाला भी वैसी ही प्रज्ञा-सामर्थ्य वाला होना चाहिये।"

"पिंगियानि ! तुम श्रमण गौतमकी वहुत उदार प्रशसा कर रहे हो।"

"श्रमण गौतम पहले ही अत्यन्त प्रशसित है। वह देवताओ तथा मनुष्योंसेमे श्रेष्ठ है।"

"पिंगियानि! किस बातको लेकर तुम श्रमण गौतमके प्रति इतने श्रद्धावान् हो?"

"हे पुरुष! जैसे श्रेष्ठ-रससे तृप्त हुआ आदमी, दूसरे हीन रसोकी इच्छा नही करता। इसी प्रकार जहाँ जहाँसे भी—चाहे सूत्रको लेकर, चाहे गेय्यको लेकर चाहे वेय्याकरणको लेकर और चाहे अद्‌भुत धर्मको लेकर—उस श्रमण गौतमकी धर्म देशना सुननेको मिलती है, फिर उस उस विपयमें वहुतसे श्रमण-ब्राह्मणोके मत सुननेकी इच्छा नही होती। हे पुरुष! जैसे कोई भूखसे दुवलाया हुआ आदमी मधु-पिण्ड पा ले। वह उसे जहाँ जहाँसे भी चखे उसे वह स्वादिप्ट ही स्वादिप्ट लगे। इसी प्रकार जहाँ जहाँसे भी—चाहे सूत्रको लेकर, चाहे गेय्यको लेकर, चाहे वेय्याकरणको लेकर और चाहे अद्‌भुत-धर्मको लेकर—उस श्रमण गौतमकी धर्म-देशना सुननेको मिलती है, वह सन्तोप-प्राप्ति का कारण होती ही है, वह आनन्द-प्राप्तिका कारण होती ही है। हे पुरुप! जैसे किसीको चन्दनकी लकडी मिले—चाहे हरे चन्दनकी हो और चाहे लाल चदनकी हो—उसे वह चाहे जडसे घिसे, चाहे वीचसे घिसे और चाहे सिरेपरसे घिसे, उसमेंसे सन्तोप-प्रद सुगन्धि ही निकलती है। इसी प्रकार जहाँ जहाँसे भी—चाहे सूत्रको लेकर, चाहे गेय्यको लेकर, चाहे वेय्याकरणको लेकर और चाहे अद्‌भुत-धर्मको लेकर—उस श्रमण गौतमकी धर्म-देशना सुननेको मिलती है, वह सन्तोप-प्राप्तिका कारण होती ही है, वह आनन्द-प्राप्तिका कारण होती ही है। हे पुरुप! जैसे कोई आदमी अत्यन्त रोगी हो, दुखी हो, पीडित हो। कोई कुशल चिकित्सक उसके रोगको मूलत नष्ट कर दे। इसी प्रकार जहाँ जहाँसे भी—चाहे सूत्रको लेकर, चाहे गेय्यको लेकर, चाहे वेय्याकरणको लेकर और चाहे अद्‌भुत धर्मको लेकर—उस श्रमण गौतमकी धर्म-देशना सुननेको मिलती है, उसमे शोक, रोना-पीटना, दु ख, दौर्मनस्य, पश्चाताप अन्तर्धान होते ही है। हे पुरुप! जैसे कोई पुष्करिणी हो, अच्छे जल वाली, अनुकूल जल वाली, शीतल जल वाली, स्वच्छ सुतीर्थ वाली तथा रमणीय। तव कोई आदमी आये ग्रीप्ममे अभितप्त, ग्रीप्मसे घिरा हुआ, क्लान्त, थका हुआ, प्यासा, वह उस तालावमे उतरकर, नहाकर, पानी पीकर सारे दर्द-क्लेश तथा जलनको शान्त कर ले। इसी प्रकार जहाँ जहाँसे भी—चाहे सूत्रको लेकर, चाहे गेय्यको लेकर, चाहे वेय्याकरणको लेकर और चाहे अद्‌भुत-धर्म को लेकर—उस श्रमण गौतमकी धर्म-देशना सुननेको मिलती है, उससे सभी शोक, रोना-पीटना, दु ख, दौर्मनस्य, पश्चात्ताप शान्त होते ही है।

ऐसा कहनेपर कारण पाली ब्राह्मण आसनसे उठा और उत्तरीयको अपने दाहिने कधेपर रख, अपना दाहिनी घुटना पृथ्वीपर गडा, भगवानकी ओर हाथ जोड, तीन

वार प्रीति-वाक्य कहा—उन भगवान् अर्हत् सम्यक् सम्बुद्धको नमस्कार है, उन भगवान् अर्हत् सम्यक् सम्बुद्धको नमस्कार है, उन भगवान् अर्हत् सम्यक-सम्मुद्धको नमस्कार है। हे पिंगियानि! यह वहुत मुन्दर है। हे पिंगियानि! यह वहुत सुन्दर है। पिंगियानि! जैसे कोई औन्धेको सीधा कर दे, ढकेको उघाड दे, अथवा मूढको मार्ग वता दे, अथवा आँख वालोंके देखनेके लिये तेल-प्रदीपकी व्यवस्था करे! हे पिंगियानि! तुमने अनेक प्रकारसे धर्मका प्रकाशन किया। हे पिंगियानि। मै उन भगवान् गौतमकी शरण जाता हूँ, धर्मकी तथा भिक्षु सघकी। पिंगियानि! आजसे प्राण रहने तक आप मुझे शरणागत उपासक समझें।

एक समय भगवान् वैशालीके महावानमें कूटागार शालामें विहार करते थे। उस समय पाँच सौ लिच्छवी भगवान्का सत्सग करते थे। उनमेंसे कुछ लिच्छवी नीले थे, नील-वर्ण, नील-वस्त्र तथा नीले-अलकारो वाले। उनमेंसे कुछ लिच्छवी पीले थे, पीत-वर्ण, पीत-वस्त्र तथा पीले अलकारो वाले। उनमेंसे कुछ लिच्छवी लाल थे, रक्त-वर्ण, रक्त वस्त्र तथा लाल अलकारो वाले। उनमेंसे कुछ लिच्छवी सफेद थे, श्वेत-वर्ण, श्वेत-वस्त्र तथा सफेद अलकारो वाले। भगवान् वर्ण और यशमे उन लिच्छिवियोंसे भी वढकर थे। तव पिंगियानी व्राह्मण अपने उत्तरीयको अपने एक कधेपर कर, भगवान्को अजलि-वद्ध नमस्कार कर, भगवान्से वोला—"भगवान्! मुझे (काव्य) सूझ रहा है, सुगत! मुझे काव्य सूझ रहा है।"

भगवान्ने कहा—पिंगियानी! तुझे (काव्य) सूझे। तव पिंगियानि व्राह्मणने भगवान्के सम्मुख ही योग्य गाथाओंसे उनकी स्तुति की—

पदुम यथा कोकनद सुगन्ध
पातो सिया फुल्लमवीतगन्ध
अगीरस पस्स विरोचमान
तपन्तमादिन्चमिवन्तलिक्खे ॥

[जिम प्रकार प्रात काल सुगन्धि-युक्त कोकनद कमल पुष्पित होता है, उसीके समान अगीरस-गोत्र वाले तथागतको देखो—जो आकाशमें चमकते हुए सूर्यके समान प्रकाशमान है।]

तव उन लिच्छवियोंने पिंगियानि व्राह्मणको पाँच सौ उत्तरीय (दुशाले) ओढा दिये। पिंगियानी व्राह्मणने वे पाँच सौ दुशाले भगवान्को समर्पित कर दिये। तव भगवान्ने उन लिच्छिवियोंसे यह कहा—

लिच्छवियो ! दुनियामे पाँच रत्नोका प्रादुर्भाव कठिन है। कौनसे पाँच रत्नोका ? दुनियामे तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव कठिन है। दुनियामे तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनयका उपदेश करने वालेका प्रादुर्भाव कठिन है। दुनियामें तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनयका उपदेश होने पर उसके समझने वालेका प्रादुर्भाव कठिन है। दुनियामे तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्मका उपदेश होनेपर उसे समझकर तदनुसार आचरण करने वालेका प्रादुर्भाव कठिन है। दुनियामे कृतज्ञ, कृत-उपकारको जानने वाले आदमीका प्रादुर्भाव कठिन है। लिच्छवियो ! दुनियामे इन पाँच रत्नोका प्रादुर्भाव कठिन है।

भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नही किया था, जिस समय अभी बोधि प्राप्त नही की थी, जिस समय अभी 'बोधिसत्व' ही थे, उस समय उन्होने पाँच महान स्वप्न देखे। कौनसे पाँच ? भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नही किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नही की थी, जिस समय अभी 'बोधिसत्व' ही थे, उस समय (देखे स्वप्नमे) यह महापृथ्वी उनकी महान् शैया बनी हुई थी, पर्वतराज हिमालय उनका तकिया था, पूर्वीय समुद्र बायें हाथसे ढका था, पश्चिमीय समुद्र दाहिने हाथसे ढका था, दक्षिण समुद्र दोनो पाँवोसे ढका था। भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नही किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नही की थी, जिस समय अभी 'बोधिसत्व' ही थे, उस समय उन्होने यह पहला महान स्वप्न देखा था।

फिर भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नही किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नही की थी, जिस समय अभी 'बोधिसत्व' ही थे, उस समय उनकी नाभीसे तिरिया नामक तिनकोने उगकर आकाशको जा छुआ था। भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नही किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्ति नही कि थी, जिस समय अभी 'बोधिसत्व' ही थे, उस समय उन्होने यह दूसरा महान स्वप्न देखा था।

फिर भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नही किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नही की थी, जिस समय अभी 'बोधिसत्व' ही थे, उस समय कुछ काले सिर तथा श्वेत रगके जीव पाँवसे ऊपरकी ओर बढने-बढते घुटनो तक ढककर खडे हो गये थे। भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नही किया था, जिस समय अभी 'बोधिसत्व' ही थे, उस समय उहोने यह तीसरा महान स्वप्न देखा था।

फिर भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नही की थी, जिस समय अभी 'बोधि-सत्व' ही थे, उस समय नाना वर्णके चार पक्षी चारो दिशाओसे आये और उनके चरणोंमें गिरकर सभी सफेद वर्णके हो गये। भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नही किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्ति नही की थी, जिस समय अभी 'बोधि-सत्व' ही थे, उस समय उन्होंने यह चौथा स्वप्न देखा था।

फिर भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी 'बोद्धि' प्राप्त नही की थी, जिस समय अभी 'बोधि-सत्व' ही थे, उस समय गूथ-पर्वतपर ऊपर-ऊपर चलते थे, चलते समय उससे सर्वथा अलिप्त रहते थे। भिक्षुओ, जिस समय तथागत सअर्हत सम्यक सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नही किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नही की थी, जिस समय अभी बोधि-सत्व' ही थे, उस समय उन्होने यह पाँचवाँ स्वप्न देखा था।

भिक्षुओ, यह जो जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नही किया था, जिस समय अभी 'बोद्धि' प्राप्त नही की थी, जिस समय अभी 'बोधि-सत्व' ही थे, उस समय यह महा-पृथ्वी उनकी महान शैया बनी हुई थी, पर्वतराज हिमालय उनका तकिया था, पूर्वीय समुद्र बायें हाथसे ढका था, पश्चिमीय समुद्र दायें हाथसे ढँका था, दक्षिण समुद्र दोनो पाँवसे ढँका था। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने अनुपम सम्यक् सम्बोधिको प्राप्त किया, उसी को प्रकट करने वाला यह पहला महान स्वप्न दिखाई दिया था।

भिक्षुओ, यह जो जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नही किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नही की थी, जिस समय अभी 'बोधि-सत्व' ही थे, उस समय उनकी नाभीसे तिरिया नामक तिनकोने उगकर आकाशको जा छुआ था। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने आर्य अष्टागिक मार्गका ज्ञान प्राप्त कर, उसे देव-मनुष्यो तक प्रकाशित किया। उसीको प्रकट करने वाला यह दूसरा महान स्वप्न दिखाई दिया था।

भिक्षुओ, यह जो जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने 'बुद्धत्व' लाभ नही किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नही की थी, जिस समय अभी 'बोधिसत्व' ही थे, उस समय कुछ काले सिर तथा श्वेत रगके जीव पाँवसे ऊपरकी ओर बढते बढते घुटनो तक ढककर खडे हो गये थे। भिक्षुओ, बहुतसे श्वेत वस्त्र

धारी गृहस्थी प्राणान्त होने तक तथागतके शरणागत हुए। उसीको प्रकट करने वाला यह तीसरा महान स्वप्न दिखाई दिया था।

भिक्षुओ, यह जो जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने 'बुद्धत्व' लाभ नही किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नही की थी, जिस समय अभी 'बोधिसत्व ही थे, उस समय नाना वर्णके चार पक्षी चारो दिशाओसे आये और उनके चरणोमे गिरकर सभी सफेद वर्णके हो गये। भिक्षुओ, क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य तथा शूद्र—ये चारो वर्ण है। वे तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनयके अनुसार घरसे बे-घर हो प्रव्रजित हो, अनुपम विमुक्ति को साक्षात् करते है। इसीको प्रकट करने वाला यह चौथा महान स्वप्न दिखाई दिया था।

भिक्षुओ, यह जो जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने 'बुद्धत्व' लाभ नही किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नही की थी, जिस समय अभी 'बोधि-सत्व' ही थे, उस समय गूथ-पर्वत पर ऊपर ऊपर चलते थे, चलते समय उससे सर्वथा अलिप्त रहते थे। भिक्षुओ, तथागत चीवर, भिक्षा, शयनासन, ग्लान-प्रत्यय, भैषज्य-परिष्कारोको प्राप्त करने वाले है। तथागत इनके प्रति अनासक्त, अमूर्छित, रहते है। वे इन मे बिना उलझे हुए, इनके दुष्परिणामको देखते हुए, मुक्त-प्रज्ञ हो इनका उपभोग करते है। इसीको प्रकट करने वाला यह महान् स्वप्न दिखाई दिया था। भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नही किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नही की थी, जिस समय अभी 'बोधि-सत्व' ही थे, उस समय उन्होने पाँच महान स्वप्न देखे।

भिक्षुओ, वर्षा होनेमे ये पाँच बाधाये आ उपस्थित होती है, जिन्हे ज्योतिषी नही जान सकते, जहाँ तक ज्योतिषियोकी आँख नही पहुँचती। कौन-सी पाँच? भिक्षुओ, ऊपर आकाशमे अग्नि (=तेज) धातु प्रकुपित हो जाती है, उससे उत्पन्न मेघ लौट जाते है। भिक्षुओ, वर्षा होनेमे यह पहली बाधा आ उपस्थित होती है, जिसे ज्योतिषी नही जान सकते, जहाँ तक ज्योतिषिओ की आँख नही पहुँचती। फिर भिक्षुओ, ऊपर आकाशमे वायु धातु प्रकुपित हो जाती है। उससे उत्पन्न मेघ लौट जाते है। भिक्षुओ, वर्षा होनेमे यह दूसरी बाधा आ उपस्थित होती है, जिसे ज्योतिषी नही जान सकते, जहाँ तक ज्योतिषियोकी आँख नही पहुँचती।

फिर भिक्षुओ, असुरेन्द्र राहु हाथसे पानी लेकर महासमुद्रमे छोड देता है। भिक्षुओ, वर्षा होनेमे यह तीसरी बाधा आ उपस्थित होती है, जिसे ज्योतिषी नही जान सकते, जहाँतक ज्योतिषियोकी आँख नही पहुँचती।

फिर भिक्षुओ, वर्षा-बादल देव प्रमादी हो जाते है। भिक्षुओ, वर्षा होनेमें यह चौथी बाधा आ उपस्थित होती है, जिसे ज्योतिषी नही जान सकते, जहाँ तक ज्योतिषियोकी आँख नही पहुँचती।

फिर भिक्षुओ, आदमी अधार्मिक हो जाते है। भिक्षुओ, वर्षा होनेमे यह पाँचवी बाधा आ उपस्थिति होती है, जिसे ज्योतिषी नही जान सकते, जहाँ तक ज्योतिषियोकी आँख नही पहुँचती।

भिक्षुओ, वर्षा होनेमें ये पांच बाधायें आ उपस्थित होती है, जिन्हे ज्योतिषी नही जान सकते, जहाँ तक ज्योतिषियोकी आँख नही पहुँचती।

भिक्षुओ, जिस वाणीमें ये पांच बातें होती है, वह वाणी सुभाषित होती है, दुर्भाषित नही, विज्ञोके लिये निर्दोष। कौन-सी पांच बातें? समय देखकर बोली गई वाणी होती है, सत्य वाणी होती है, कोमल वाणी होती है, हितकर-वाणी होती है, तथा मैत्री-चित्तसे बोली गई वाणी होती है। भिक्षुओ, जिस वाणीमें ये पाँच बातें होती है, वह वाणी सुभाषित होती है, दुर्भाषित नही, विज्ञोके लिये निर्दोष।

भिक्षुओ, जिस समय शीलवान् प्रव्रजित किसी भी गृहस्थके यहाँ जाते है, तो गृहस्थ पांच तरहसे बहुत पुण्यार्जन करते है। कौन-सी पांच तरहसे? भिक्षुओ जिस समय शीलवान् प्रव्रजितोके गृहस्थोके यहाँ जानेपर, गृहस्थ-जन उन्हे देखकर मनमे श्रद्धा उत्पन्न करते है, उस समय भिक्षुओ! उस कुलके लोग स्वर्गगामी मार्गपर आरूढ होते है। भिक्षुओ, जिस समय शीलवान् प्रव्रजितोंके गृहस्थोंके यहाँ जानेपर, गृहस्थ-जन स्वागत करते है, अभिवादन करते है तथा आसन देते हैं, उस समय भिक्षुओ, उस कुलके लोग ऊँचे कुलमे जन्म लेने वाली प्रतिपदाका अनुगमन करते है। भिक्षुओ, जिस समय शीलवान् प्रव्रजितोंके गृहस्थोके यहाँ जानेपर गृहस्थ-जन मात्सर्य-मलको त्याग देते हैं, उस समय भिक्षुओ, उस कुलके लोग महेशाक्य प्रतिपदापर आरूढ हो जाते है। भिक्षुओ, जिस समय शीलवान् प्रव्रजितोंके गृहस्थोंके यहाँ जानेपर लोग यथा-शक्ति यथा-बल दान देते है, उस समय भिक्षुओ, उस कुलके लोग महा-भोग प्राप्त कराने वाली प्रतिपदाका अनुकरण है। भिक्षुओ, जिस समय शीलवान् प्रव्रजितोंके गृहस्थोंके यहाँ जानेपर मनुष्य प्रश्न पूछते हैं, सवाल करते है, धर्म सुनते है, उस समय भिक्षुओ, उस कुलके लोग प्रज्ञा प्राप्त कराने वाली प्रतिपदाका अनुगमन करते है। भिक्षुओ, जिस समय शीलवान् प्रव्रजित किसी भी गृहस्थके यहाँ जाते हैं, तो गृहस्थ पांच तरहसे बहुत पुण्यार्जन करते हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच विमोक्ष-धातु है। कौन-सी पाँच? भिक्षुओ, एक भिक्षु काम-भोगोका विचार करता है, उसका मन काम-भोगोमे नही उलझता है, काम-भोगोमे प्रसन्न नही होता है, काम-भोगोपर स्थिर नही होता है तथा काम-भोगोपर नही छूटता है। किन्तु जब वह निष्क्रमणका विचार करता है, तो उसका मन निष्क्रमण में उलझता है, निष्क्रमणमे प्रसन्न होता है, निष्क्रमण पर स्थिर होता है तथा निष्क्रमण पर छूटता है। उस भिक्षुका वह चित्त सुगति-प्राप्त होता है, सुभावित होता है, सुप्रतिष्ठित होता है, सुविमुक्त होता है, काम-भोगोसे सम्यक् रूपसे विमुक्त होता है। काम-भोगोके कारण जो आस्रव, जो विघात, जो परिदाह उत्पन्न होते है, वह उनसे मुक्त होता है, वह उस वेदनाका अनुभव नही करता। भिक्षुओ, इसे ही काम-भोगोसे विमुक्ति कहते है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु क्रोध (=व्यापाद) का विचार करता है, उसका मन व्यापाद मे नही उलझता है, व्यापादमे प्रसन्न नही होता है, व्यापाद पर स्थिर नही होता है तथा व्यापाद पर नही छूटता है। किन्तु जब वह अक्रोध (=अव्यापद) का विचार करता है, तो उसका मन अव्यापादमे उलझता है, अव्यापादमे प्रसन्न होता है, अव्यापाद पर स्थिर होता है तथा अव्यापाद पर छूटता है। उस भिक्षुका वह चित्त सुगति प्राप्त होता है, सुभावित होता है, सुप्रतिष्ठित होता है, सुविमुक्त होता है, व्यापादसे सम्यक् रूपसे विमुक्त होता है। व्यापादके कारण जो आश्रव, जो विघात, जो परिदाह उत्पन्न होते है, वह उनसे मुक्त होता है, वह उस वेदनाका अनुभव नही करता। भिक्षुओ, इसे ही व्यापादसे मुक्ति कहते है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु विहिंसाका विचार करता है, उसका मन विहिंसामे नही उलझता है, विहिंसामे प्रसन्न नही होता है, विहिंसापर स्थिर नही होता है तथा विहिंसापर नही छूटता है। किन्तु जब वह अविहिंसा (=मैत्री) का विचार करता है, तो उसका मन अविहिंसामे उलझता है, अविहिंसामे प्रसन्न होता है, अविहिंसापर स्थिर होता है तथा अविहिंसापर छूटता है। उस भिक्षुका वह चित्त सुगति-प्राप्त होता है, सुभावित होता है, सप्रतिष्ठित होता है, सुविमुक्त होता है, विहिंसासे सम्यक् रूपसे विमुक्त होता है। विहिंसाके कारण जो आस्रव, जो विघात, जो परिदाह उत्पन्न होते है, वह उनसे मुक्त होता है, वह उस वेदनाका अनुभव नही करता। भिक्षुओ, इसे ही विहिंसासे मुक्ति कहते है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु रूपका विचार करना है, उसका मन रूपमे नही उलझता है, रूपमे प्रसन्न नही होता है, रूपपर स्थिर नही होता है तथा रूपपर नही

छूटता है। किन्तु जब वह अरूपका विचार करता है, तो उसका मन अरूपमें उलझता है, अरूपमें प्रसन्न होता है, अरूपपर स्थिर होता है, तथा अरूपपर छूटता है। उस भिक्षुका वह चित्त सुगति-प्राप्त होता है, सुभावित होता है, सुप्रतिष्ठित होता है, सुविमुक्त होता है, रूपसे सम्यक् रूपसे विमुक्त होता है, रूपके कारण जो आस्रव, जो विघात, जो परिदाह उत्पन्न होते हैं, वह उनसे मुक्त होता है, वह उस वेदनाका अनुभव नही करता। भिक्षुओ, इसे ही रूपसे विमुक्ति कहते है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु सत्काय (= दृष्टि) का विचार करता है, उसका मन सत्कायमें नही उलझता है, सत्कायमें प्रसन्न नही होता है, सत्कायपर स्थिर नही होता है, तथा सत्काय पर नही छूटता है। किन्तु जब वह असत्कायका विचार करता है, तो उसका मन असत्कायमे उलझता है, असत्कायमें प्रसन्न होता है, असत्कायपर स्थिर होता है, तथा असत्काय पर छूटता है। उस भिक्षुका वह चित्त सुगति-प्राप्त होता है, सुभावित होता है, सुप्रतिष्ठित होता है, सुविमुक्त होता है, सत्कायसे सम्यक् रूपसे विमुक्त होता है। सत्कायके कारण जो आस्रव, जो विघात, जो परदाह उत्पन्न होते है, वह उनसे मुक्त होता है, वह उस वेदनाका अनुभव नही करता। भिक्षुओ, इसे ही सत्काय (= दृष्टि) से विमुक्ति कहते है। जो ऐसा विमुक्त-पुरुप होता है, काम-भोग सम्वन्धी मजा भी उसका अनुशय (चित्तका बन्धन) नही बनता, व्यापाद सम्वन्धी मजा भी उसका अनुशय नही वनता, विहिंसा सम्वन्धी मजा भी उसका अनुशय नही वनता, रूप सम्वन्धी मजा भी उसका अनुशय नही वनता, सत्काय (= दृष्टि) सम्वन्धी मजा भी उसका अनुशय नही वनता। जो कामभोग सम्वन्धी अनुशयसे मुक्त होता है, जो व्यापाद सम्वन्धी अनुशयसे मुक्त होता है, जो विहिंसा सम्वन्धी अनुशयसे मुक्त होता है, जो रूप सम्वन्धी अनुशयसे मुक्त होता है तथा जो सत्काय (= दृष्टि) सम्वन्धी अनुशयसे मुक्त होता है, भिक्षुओ, उसीके वारेमे कहा जा सकता है कि वह अनुशय-रहित है, कि उसने तृष्णाके वन्धनको काट दिया है, सयोजनोको हटा दिया है, कि उसने अहकारका सम्यक् प्रकारसे शमन कर दु खका अन्त कर डाला है। भिक्षुओ, ये पाँच विमोक्ष-धातु है।

(६) किम्बिल वर्ग

एक समय भगवान किम्बिल प्रदेशके वेलुवनमे विहार करते थे। उस समय आयुष्मान् किम्बिल जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचे। पास जाकर भगवान्को अभिवादन कर एक ओर मैठे। एक ओर वैठे हुए आयुष्मान् किम्बिलने भगवान्से यह कहा—भन्ते! इसका क्या कारण है, क्या हेतु है कि तथागतके परिनिर्वाण

प्राप्त कर लेनेपर सद्धर्म चिर-स्थायी नही होता ? हे किम्बिल ! तथागतके परिनिर्वाण प्राप्त कर लेनेपर भिक्षु भिक्षणियाँ, उपासक उपासिकाये शास्ताके प्रति गौरव-रहित हो जाती है, आदर-रहित हो जाती है। धर्मके प्रति गौरव-रहित हो जाती है, आदर-रहित हो जाती है। सघके प्रति गौरव रहित हो जाती है, आदर-रहित हो जाती है। शिक्षाओके प्रति गौरव-रहित हो जाती है, आदर-रहित हो जाती है। परस्पर गौरव-रहित हो जाती है, आदर-रहित हो जाती है। किम्बिल ! यही इसका कारण है, यही इसका हेतु है कि तथागतके परिनिर्वाण प्राप्त कर लेनेपर सद्धर्म चिरस्थायी नही होता।

भन्ते ! इसका क्या कारण है, क्या हेतु है कि तथागतके परिनिर्वाण प्राप्त कर लेनेपर (भी) सद्धर्म चिरस्थायी रहता है। हे किम्बिल ! तथागतके परि-निर्वाण प्राप्त कर लेनेपर भिक्षु, भिक्षुणियाँ, उपासक, उपासिकाये शास्ताके प्रति गौरव-सहित रहती है, आदर-सहित रहती है। धर्मके प्रति गौरव-सहित रहती है, आदर-सहित रहती है। सघके प्रति गौरव-सहित रहती है, आदर-सहित रहती है। शिक्षाओके प्रति गौरव-सहित रहती है, आदर-सहित रहती है। परस्पर गौरव-सहित रहती है, आदर-सहित रहती है। किम्बिल ! यही इसका कारण है, यही इसका हेतु है कि तथागतके परिनिर्वाण प्राप्त कर लेनेपर (भी) सद्धर्म चिरस्थायी रहता है।

भिक्षुओ, धर्म-श्रवणके पाँच शुभ परिणाम होते है। कौनसे पाँच ? पहले नही सुनी हुई बात सुननेको मिलती है। सुनी हुई बात स्पष्ट हो जाती है। सन्देह मिट जाता है। मिथ्या-दृष्टि नष्ट हो जाती है। चित्त प्रसन्न होता है। भिक्षुओ, धर्म-श्रवणके ये पाँच शुभ-परिणाम होते है।

भिक्षुओ, राजाके जिस श्रेष्ठ घोडेमे ये पाँच बाते होती है, वह राजाके योग्य होता है, राजाके भोगने योग्य होता है, राजाका अग ही गिना जाता है। कौनसी पाँच बाते ? ऋजु होता है, तेज चल सकने वाला होता है, मृदु-भाव युक्त होता है, क्षमाशील होता है, सहनशील होता है। भिक्षुओ, राजाके जिस श्रेष्ठ घोडेमे ये पाँच बाते होती है, वह राजाके योग्य होता है, राजाके भोगने योग्य होता है, राजाका अग ही गिना जाता है। इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बाते होती है वह आदर करने योग्य होता है, सत्कार करने योग्य होता है, दक्षिणाके योग्य होता है, हाथ जोडनेके योग्य होता है तथा लोगोके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र होता है। कौन-सी पाँच बाते ? ऋजु होता है, गतिमान होता है, मृदु होता है, क्षमा-शील होता है तथा

सहन-शील होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते होती है वह आदर करने योग्य होता है, सत्कार करने योग्य होता है, दक्षिणाके योग्य होता है, हाथ जोडनेके योग्य होता है तथा लोगोके लिये, अनुपम पुण्य क्षेत्र होता है।

भिक्षुओ, ये पाँच बल है। कौनसे पाँच? श्रद्धाबल, ह्री (=लज्जा बल,) ओतप्प (=पाप-भीरुता)-बल, वीर्य-बल तथा प्रज्ञा-बल। भिक्षुओ, ये पाँच बल है।

भिक्षुओ, ये पाँच चैतसिक बाधाये है। कौन-सी पाँच? भिक्षुओ, एक भिक्षु शास्ताके प्रति सन्देहयुक्त होता है, विचिकित्सा-सहित होता है, उधर झुका हुआ नही होता है तथा श्रद्धावान नही होता है। भिक्षुओ, जो कोई शास्ताके प्रति सन्देहयुक्त होता है, विचिकित्सा-सहित होता है, उधर झुका हुआ नही होता है तथा श्रद्धावान् नही होता है उसका चित्त प्रयत्न करनेमे युक्त नही होता है, योगाभ्यासमें नही लगता है, सतत साधनामे अनुरक्त नही होता है। जिसका चित्त प्रयत्न करनेमे युक्त नही होता है, योगाभ्यासमे नही लगता है, सतत् साधनामे अनुरक्त नही होता है, यह पहली चैतसिक-बाधा है। फिर भिक्षुओ, धर्मके प्रति सन्देहयुक्त होता है संघके प्रति सन्देहयुक्त होता है शिक्षाओके प्रति सन्देहयुक्त होता है अपने सब्रह्मचारियो (=साथियो) के प्रति कुपित होता है, असन्तुष्ट होता है, आहत-चित्त होता है, बाधायुक्त होता है। उसका चित्त प्रयत्न करनेमें युक्त नही होता है, योगाभ्यास मे नही लगता है, सतत् साधनामे अनुरक्त नही होता है। यह पाँचवी चैतसिक-बाधा है। भिक्षुओ, ये पाँच चैतसिक-बाधाये है।

भिक्षुओ, ये पाँच चैतसिक-बन्धन है। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, भिक्षु काम-भोगोके प्रति राग-युक्त रहता है, छन्द-युक्त रहता है, प्रेम-युक्त रहता है, पिपासा-युक्त रहता है, परिदाह (=जलन) युक्त रहता है तथा तृष्णा-युक्त रहता है। भिक्षुओ, जो भिक्षु काम-भोगोके प्रति राग-युक्त रहता है, छन्द-युक्त रहता है, प्रेम-युक्त रहता है, पिपासा-युक्त रहता है, परिदाह (=जलन) युक्त रहता है तथा तृष्णा युक्त रहता है, उसका चित्त प्रयत्न करनेमे युक्त नही होता है, योगाभ्यासमे नही लगता है, सतत् साधनामे अनुरक्त नही होता है। यह पहला चैतसिक-बन्धन है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु काया (=शरीर) के प्रति राग-युक्त रहता है रूपके प्रति रागयुक्त होता है यथेच्छ पेट भरकर खाकर शैयाके सुख, स्पर्श-सुख, तन्द्रा-सुखमे लीन रहता है किसी देव-योनिमे जन्म ग्रहण करनेकी इच्छासे ब्रह्मचर्य वास करता है। वह सोचता है कि इस शील, इस व्रत, इस तप या इस ब्रह्मचर्य वाससे मैं

या तो देवता अथवा देवतानुचर होकर जन्म ग्रहण करूँगा। उसका चित्त प्रयत्न करनेमे युक्त नही होता है, योगाभ्यासमें नही लगता है, सतत साधनामे अनुरक्त नही होता है। भिक्षुओ, ये पाँच चित्तके वन्धन है।

भिक्षुओ, यवागु खानेके ये पाँच शुभ-परिणाम होते है। कौनसे पाँच ? भूख मिटती है, प्यास मिटती है, वायु यथोचित विधिसे गमन करता है, वस्तीकी शुद्धि होती है, अपच-शेष पच जाता है। भिक्षुओ, यवागु (=पतली खिचडी) खानेके ये पाँच शुभ-परिणाम है।

भिक्षुओ, दातुन न करनेके ये पाँच दुष्परिणाम है। कौनसे पाँच ? आँखको हानि पहुँचती है, मुँहसे दुर्गन्ध आती है, रस-हरण करने वाली (नाडियाँ) शुद्ध नही होती है, पित्त और श्लेषम खाये भोजनको ढक लेते है तथा उसे खाना अच्छा नही लगता है। भिक्षुओ, दातुन न करनेके ये पाॅच दुष्परिणाम है।

भिक्षुओ, दातुन करनेके ये पाँच शुभ-परिणाम है। कौनसे पाँच ? आँखको हानि नही पहुँचती, मुँहसे दुर्गन्ध नही आती, रस-हरण करने वाली (नाडियाॅ) शुद्ध होती है, पित्त और श्लेषम खाये भोजनको ढकता नही है तथा उसे खाया भोजन अच्छा लगता है। भिक्षुओ, दातुन करनेके ये पाँच शुभ-परिणाम है।

भिक्षुओ, खीचकर, गानेके स्वरमे धर्म-पाठ करनेके ये पाँच दुष्परिणाम है। कौनसे पाँच ? स्वय अपने स्वरमे अनुरक्त हो जाता है, दूसरे भी उस स्वरमे अनुरक्त हो जाते है, गृहस्थ लोग भी यह सोच क्षुब्ध होते है कि जैसे हम गाते है, वैसे ही ये शाक्य-पुत्रीय श्रमण गाते है, आलाप (=स्वर निकुत्ति) की इच्छा होनेसे समाधिमे व्याघात पहुँचता है। भिक्षुओ, खीच कर, गानेके स्वरमे पाठ करनेके, ये पाँच दुष्परिणाम है।

भिक्षुओ, जो कोई मूढ स्मृतिमान होकर, वे-खवर होकर सोता है, उसके पाँच दुष्परिणाम है। कौनसे पाँच ? दुखी रहकर सोता है, दुखी रहकर जागता है, वुरे स्वप्न दिखाई देते है, देवता रक्षा नही करते है तथा स्वप्न-दोष होता है। भिक्षुओ, जो कोई मूढ स्मृतिमान् होकर, वेखवर होकर सोता है, उसके पाँच दुष्परिणाम है।

भिक्षुओ, जो कोई उपस्थित-स्मृति तथा होशके साथ सोता है, उसके पाँच शुभ-परिणाम है। कौनसे पाँच ? सुखपूर्वक सोता है, सुख पूर्वक जागता है, वुरे स्वप्न नही देखता है, देवता रक्षा करते है तथा स्वप्न-दोष नही होता है। भिक्षुओ, जो कोई उपस्थित-स्मृति तथा होशके साथ सोता है, उसके पाँच शुभ-परिणाम है।

भिक्षुओ, जो भिक्षु अपने सब्रह्मचारियोंको गाली देने वाला, डराने वाला तथा बुरा-भला कहने वाला होता है, उसके विषयमें पाँच आशकाये करनी चाहिये। कौन-सी पाँच? वह लोकोत्तर धर्ममे भ्रष्ट हो जाता है, अन्य किसी दोषका दोषी हो जाता है, भयानक बीमारीका शिकार हो जाता है, होश-हवास रहित हो मृत्युको प्राप्त होता है, शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर दुर्गतिको प्राप्त होता है, नरकमें उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, जो भिक्षु अपने सब्रह्मचारियोंको गाली देनेवाला, डरने वाला तथा बुरा-भला कहने वाला होता है, उसके विषयमे पाँच आशकाये करनी चाहिये।

भिक्षुओ, जो भिक्षु झगडालू होता है, कलह करने वाला होता है, विवाद करने वाला होता है, बेकार बातचीत करने वाला होता है, सघमे बखेडा खडा करने वाला होता है, उसके विषयमे पाँच आशकाये करनी चाहिये। कौन-सी पाँच? उसे अप्राप्तकी प्राप्ति नही होती, प्राप्तकी हानि हो जाती है, बदनामी होती है, होश-हवास गवाकर मृत्युको प्राप्त होता है, शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर दुर्गतिको प्राप्त होता है, नरकमे उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, जो भिक्षु झगडालू होता है, कलह करने वाला होता है, विवाद करने वाला होता है, बेकार बातचीत करने वाला होता है, सघमे बखेडा खडा करने वाला होता है। उसके विषयमे पाँच आशकाये करनी चाहिये।

भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह इन पाँच दुष्परिणामोका भागी होता है। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह प्रमादी होनेके कारण अपनी बहुत-सी भौतिक हानि कर बैठता है। भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह इस पहले दुष्परिणामका भागी होता है। फिर भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, उसकी बदनामी होती है। भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह इस दूसरे दुष्परिणामका भागी होता है। फिर भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह जिस जिस परिषद्मे जाता है चाहे क्षत्रिय-परिषद हो, चाहे ब्राह्मण-परिषद हो, चाहे गृहपति (=वैश्य) परिषद हो, जहाँ कही भी जाता है आत्म-विश्वासके साथ ही जाता है, सिर नीचा किये नही जाता है। भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह इस तीसरे दुष्परिणामका भागी होता है। फिर भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह बेखबरीकी हालतमें ही मृत्युको प्राप्त होता है। भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह इस चौथे दुष्परिणामका भागी होता है। फिर भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है,

जो दुराचारी होता है, वह शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर, दुर्गतिको प्राप्त होता है, नरकमे उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह इस पाँचवे दुष्परिणामका भागी होता है। भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह इन पाँच दुष्परिणामोका भागी होता है।

भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह इन पाँच शुभ-परिणामोका भागी होता है। कौनसे पाँच ? भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह अप्रमादी होनेके कारण वहुत-सी भोग-सामग्री प्राप्त कर लेता है। भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह इस पहले शुभ-परिणाम का भागी होता है। फिर भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह यशस्वी होता है। भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह इस दूसरे शुभ-परिणामका भागी होता है। फिर भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह जिस जिस परिषदमे जाता है, चाहे क्षत्रिय परिषद हो, चाहे ब्राह्मण-परिषद हो, चाहे गृहपति-परिषद हो, जहाँ भी कही जाता है, आत्म विश्वासके साथ जाता है, सिर नीचा किये नही जाता है। भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह इस तीसरे शुभ-परिणामका भागी होता है। फिर भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह वेखवरीकी हालतमे मृत्युको प्राप्त नही होता। भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह इस चौथे शुभ-परिणामका भागी होता है। फिर भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्गमे उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह इन पाँच शुभ परिणामोका भागी होता है।

भिक्षुओ, अत्यधिक वोलनेके ये पाँच दुष्परिणाम होते है। कौनसे पाँच ? झूठ वोलना होता है, चुगली खानी होती है, कठोर वोलना होता है, वेकार वोलना होता है, शरीरके छूटनेपर मरनेके अनन्तर दुर्गतिको प्राप्त होना होता है, नरकमे जन्म होता है।

भिक्षुओ, मितभापी होनेके ये पाँच शुभ-परिणाम होते है। कौन-से पाँच ? झूठ नही वोलता है, चुगली नही खाता है, कठोर नही वोलता है, वेकार नही वोलता है, शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्गमे जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, मितभापी होनेके ये पाँच सुशुभ-परिणाम है।

भिक्षुओ, असहनशीलताके ये पाँच दुष्परिणाम हैं। कौनसे पाँच? बहुत-जनोका अप्रिय होता है, अच्छा न लगने वाला, वैर-बहुल होता है, दोष-बहुल होता है, मूढ-चित्त होकर मृत्युको प्राप्त होता है, शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर दुर्गतिको प्राप्त होता है, नरकमे जन्म होता है।

भिक्षुओ, सहनशीलताके ये पाँच शुभ-परिणाम हैं। कौनसे पाँच? बहुत जनोका प्रिय होता है, अच्छा लगने वाला, वैर-बहुल नही होता है, दोष-बहुल नही होता है, मूढ चित्त होकर मृत्युको प्राप्त नही होता है, शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्गमे जन्म ग्रहण करता है।

भिक्षुओ, असहन शीलताके ये पाँच दुष्परिणाम है। कौनसे पाँच? बहुत जनोका अप्रिय होता है, अच्छा न लगने वाला, रौद्र होता है, पश्चात्ताप करने वाला होता है, मूढ-चित्त होकर मृत्युको प्राप्त होता है, शरीरके छूटनेपर मरनेके अनन्तर दुर्गतिको प्राप्त होता है, नरकमे जन्म होता है।

भिक्षुओ, सहन-शीलताके ये पाँच शुभ-परिणाम होते हैं। कौनसे पाँच? बहुत जनोका प्रिय होता है, अच्छा लगने वाला, रौद्र नही होता है, पश्चात्ताप करने वाला नही होता है, मूढ-चित्त होकर मृत्युको प्राप्त नही होता है, शरीरके छूटनेपर, मृत्युके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्गमे जन्म ग्रहण करता है।

भिक्षुओ, अप्रसन्न-चित्त रहनेके पाँच दुष्परिणाम हैं। कौनसे पाँच? आत्म-निन्दाका भाजन होता है, जानकार विज्ञजन निन्दा करते हैं, बदनामी होती है, मूढ-चित्त होकर मृत्युको प्राप्त होता है, शरीरके छूटनेपर, मृत्युके अनन्तर दुर्गतिको प्राप्त होता है, नरकमे जन्म होता है।

भिक्षुओ, प्रसन्न-चित्त रहनेके पाँच शुभ-परिणाम हैं। कौनसे पाँच? आत्म-निन्दाका भाजन नही होता है, जानकार विज्ञ जन प्रशसा करते है, यशस्वी होता है, मूढ-चित्त होकर मृत्युको प्राप्त नही होता है, शरीरके छूटनेपर, मृत्युके होनेपर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्गमे जन्म ग्रहण करता है।

भिक्षुओ, अप्रसन्न-चित्त रहनेके पाँच दुष्परिणाम है। कौनसे पाँच? अप्रसन्न प्रसन्न नही होते हैं, कुछ प्रसन्न-चित्त भी अन्यथा हो जाते है, शास्ताकी आज्ञाका उल्लघन होता है, बादमे आने वाली पीढी उसका अनुकरण करती है, उसका चित्त प्रसन्न नही रहता। भिक्षुओ, अप्रसन्न-चित्त रहनेके ये पाँच दुष्परिणाम होते है।

भिक्षुओ, प्रसन्न-चित्त रहनेके ये पाँच शुभ-परिणाम होते हैं। कौनसे पाँच? अप्रसन्न प्रसन्न हो जाते है, प्रसन्न-चित्त और भी अधिक प्रसन्न-चित्त हो

जाते है, शास्ताकी आज्ञाका पालन होता है, वादमे आनेवाली पीढी उसका अनुकरण करती है, उसका चित्त प्रसन्न रहता है। भिक्षुओ, प्रसन्न चित्त रहनेके ये पाँच शुभ-परिणाम होते है।

भिक्षुओ, अग्नि (—पूजा) के पाँच दुष्परिणाम है। कौनसे पाँच? आँखके लिये अच्छी नही होती, दुर्वर्ण वनाने वाली होती है, दुर्वल वनाने वाली होती है, लोगोसे सम्वन्ध वढाने वाली होती है, तथा राज-कथा, चोर-कथा, आदि व्यर्थकी वातचीत की ओर ले जानी वाली होती है। भिक्षुओ, अग्नि (—पूजा) के पाँच दुष्परिणाम है।

भिक्षुओ, मधुरा (=मथुरा) नगरीमे ये पाँच दोप है। कौनसे पाँच? भूमि ऊवड-खावड है, धूलि वहुत है, भयानक कुत्ते है, कष्टदायक यक्ष है, तथा भिक्षा सुलभ नही है। भिक्षुओ, मधुरा (=मथुरा) नगरी मे ये पाँच दोप है।

(८) दीर्घ चारिका वर्ग

भिक्षुओ, दीर्घ चारिकाके, अव्यवस्थित चारिकाके, अयोग्य विधिमे विचरनेके पाँच दुष्परिणाम है। कौनसे पाँच? अश्रुत (—धर्म) सुनना नही मिलता, सुना हुआ (—धर्म) स्पष्ट नही होता, अधकचरे ज्ञानके कारण अपण्डित होता है, भयानक रोगका आतक वना रहता है तथा विना मित्रोके रहता है। भिक्षुओ, दीर्घ चारिकाके, अव्यवस्थित चारिकाके, अयोग्य विधिसे विचरनेके पाँच दुष्परिणाम है।

भिक्षुओ, व्यवस्थित चारिकाके पाँच शुभ परिणाम होते है। कौनसे पाँच? अश्रुत (—धर्म) सुनना मिलता है, सुना हुआ (—धर्म) स्पष्ट होता है, अधकचरा ज्ञान होनेपर भी पण्डित होता है, भयानक रोगका भय नही वना रहता तथा मित्रो वाला होता है। भिक्षुओ, व्यवस्थित चारिकाके पाँच शुभ-परिणाम है।

भिक्षुओ, दीर्घ चारिकाके, अव्यस्थित चारिकाके, अयोग्य विधिसे विचरनेके पाँच दुष्परिणाम है। कौनसे पाँच? अप्राप्त प्राप्त नही होता, प्राप्तकी हानि होती है, कुछ (—प्राप्त) ज्ञान होनेसे अपण्डित होता है, भयानक रोगका आतक वना रहता है तथा विना मित्रोके रहता है। भिक्षुओ, दीर्घ चारिकाके, अव्यवस्थित चारिकाके, अयोग्य-विधिसे विचरनेके पाँच दुष्परिणाम है।

भिक्षुओ, व्यवस्थित चारिकाके पाँच शुभ-परिणाम होते है। कौनसे पाँच? अप्राप्त प्राप्त होता है, प्राप्तकी हानि नही होती, कुछ प्राप्त ज्ञान होनेपर भी पण्डित होता है, भयानक रोगका भय वना रहता है तथा मित्रो वाला होता है। भिक्षुओ, व्यवस्थित चारिकाके पाँच शुभ-परिणाम होते है।

भिक्षुओ, (–एक जगह) चिरकाल तक रहनेके पांच दुष्परिणाम होते है। कौनसे पाँच ? वहुत-सा सामान इकट्ठा हो जाता है, वहुत-सी दवाइयाँ इकट्ठी हो जाती है, वहुतसे काम-काजमे उलझ जाता है, गृहस्थ और प्रव्रजितोके साथ अयोग्य ससर्ग वढ जाता है, उस आवासको छोडते जाते समय आसक्ति वनी रहती है। भिक्षुओ, (एक जगह) चिर काल तक रहनेके पाँच दुष्परिणाम होते है।

भिक्षुओ, (–एक जगह) चिरकाल तक न रहनेके पाँच शुभ परिणाम होते हैं। कौनसे पाँच ? वहुत-सा सामान इकठ्ठा नही होता, वहुत-सी दवाइयाँ इकट्ठी नही होती, वहुतसे काम-काजमें नही उलझता, गृहस्थ और प्रव्रजितोके साथ अयोग्य ससर्ग नही वढता, उस आवासको अनासक्त भावसे छोड जा सकता है। भिक्षुओ, (–एक जगह) चिर काल तक न रहनेके पाँच शुभ परिणाम होते है।

भिक्षुओ, (–एक जगह) चिरकाल तक रहनेके पांच दुष्परिणाम होते है। कौनसे पाँच ? आवास (=निवास स्थान) के प्रति मात्सर्य पैदा हो जाता है, कुल (=वश) के प्रति मात्सर्य पैदा हो जाता है, लाभके प्रति मात्सर्य पैदा हो जाता है, वर्णके प्रति मात्सर्य पैदा हो जाता है, धर्मके प्रति मात्सर्य पैदा हो जाता है। भिक्षुओ, एक जगह चिरकाल तक रहनेके पाँच दुष्परिणाम होते हैं।

भिक्षुओ, (एक जगह–) चिरकाल तक न रहनेके पाँच शुभ परिणाम होते होते है। कौनसे पाँच ? आवास (=निवास) के प्रति मात्सर्य नही पैदा होता है, कुल (वश) के प्रति मात्सर्य नही पैदा होता है, लाभ के प्रति मात्सर्य नही पैदा होता हैं, वर्णके प्रति मात्सर्य नही पैदा होता है, तथा धर्मके प्रति मात्सर्य नही पैदा होता है। भिक्षुओ, (एक जगह) चिरकाल तक न रहनेके पाँच शुभ-परिणाम होते है।

भिक्षुओ, गृहस्थोके साथ अति मेल-जोलके पाँच दुष्परिणाम है। कौनसे पाँच ? विना निमन्त्रणके आने जाने वाला होता है, एकान्तमे उठने वैठने वाला होता है, छिपे स्थानमे उठने वैठने वाला होता है, स्त्रियोको चार-पाँच वाक्योसे अधिक धर्म-देशना करने वाला होता है, काम-भोग सम्वन्धी सकल्प अधिकतासे उत्पन्न होने लग जाते हैं। भिक्षुओ, गृहस्थोके साथ अति मेल जोलके पाँच दुष्परिणाम है।

भिक्षुओ, गृहस्थोंके साथ अति-मेल-जोल वाला भिक्षु यदि अनुचित समय उन्हीके ससर्गमे रहता है, तो उसके पाँच दुष्परिणाम होते है। कौनसे पाँच ? स्त्रियोका निरन्तर दर्शन, दर्शन होनेपर ससर्ग, ससर्ग होनेपर विश्वास, विश्वास होनेपर अवनति। अवनत चित्तसे ऐसी आशका करनी चाहिये—वेमनसे ब्रह्मचर्य-जीवन व्यतीत करेगा, किसी न किसी काम-भोग-सम्वन्धी दोषका दोषी होगा अथवा शिक्षा (=भिक्षु जीवन)

का त्यागकर हीन-मार्गी (=गृहस्थ) हो जायेगा। भिक्षुओ, गृहस्थोके साथ अति मेल-जोल वाला भिक्षु यदि अनुचित समयतक उन्हीके ससर्गमे रहता है, तो उसके पाँच दुष्पारिणाम होते हैं।

भिक्षुओ, भोग्य पदार्थों (=सम्पत्ति) के पाँच दोप हैं। कौनसे पाँच? सम्पत्तिको आगसे खतरा रहता है, सम्पत्तिको जलसे खतरा रहता है, सम्पत्तिको राज्यसे खतरा रहता है, सम्पत्तिको चोरोसे खतरा रहता है तथा सम्पत्तिको अप्रिय उत्तराधिकारियोंसे खतरा रहता है।

भिक्षुओ, भोग्य पदार्थों (=सम्पत्ति) के पाँच गुण हैं। कौनसे पाँच? सम्पत्ति होनेसे आदमी अपने आपको सुख पूर्वक, आनन्द पूर्वक रख सकता है, भली प्रकार सुख भोग सकता है। माता पिताको सुख पूर्वक, आनन्द पूर्वक रख सकता है, भली प्रकार सुख पहुँचा सकता है। पुत्र, स्त्री दास, तथा मजदूर आदिको सुखपूर्वक आनन्द पूर्वक रख सकता है, उन्हे भली प्रकार सुख पहुँचा सकता है, यार-दोस्तोको, सुख पूर्वक, आनन्द पूर्वक रख सकता है, उन्हे भली प्रकार सुख पहुँचा सकता है। श्रमण-ब्राह्मणोको ऊर्ध्व-गामी दक्षिणा दे सकता है, जो स्वर्गीय होती है, जो सुख-दायक होती है, जो स्वर्ग तक पहुँचा देने वाली होती है। भिक्षुओ, भोग्य पदार्थों (=सम्पत्ति) के ये पाँच गुण हैं।

भिक्षुओ, जिन परिवारो (=कुलो) मे समयपर भोजन नही होता, वहाँ पाँच दोष होते हैं। कौनसे पाँच? जो अतिथि होते है, जो पाहुने होते है, उन्हे कोई समयपर नही पूछता, जो वलि-ग्राहक देवता होते है, उन्हे भी कोई समयपर नही पूछता, जो एकाहारी, रातको भोजन न करने वाले, विकाल भोजनसे विरत रहने वाले श्रमण-ब्राह्मण होते है, उन्हे भी कोई समय पर नही पूछता, दास-कर्मकर लोग वेमनसे काम करते है, असमयपर किया गया उतना ही भोजन शरीरमे ओज पहुँचाने वाला नही होता। भिक्षुओ, जिन, परिवारो (=कुलो) मे समयपर भोजन नही होता, वह वहाँ पाँच दोप होते हैं।

भिक्षुओ, जिन परिवारो (=कुलो) मे समयपर भोजन होता है, वहाँ पाँच गुण होते हैं। कौनसे पाँच? जो अतिथि होते है, जो पाहुने होते है, उन्हे समयपर पूछा जाता है। जो वलि-ग्राहक देवता होते है, उन्हे समयपर पूछा जाता है। जो एकाहारी, रातको भोजनन न करने वाले, विकाल-भोजनसे विरत रहने वाले श्रमण-ब्राह्मण होते है, उन्हे समयपर पूछा जाता है। दास-कर्मकर लोग मनमे काम करते हैं। समयपर किया गया उतना ही भोजन शरीरमे ओज पहुँचाने वाला होता

है। भिक्षुओ, जिन परिवारो (=कुलो) मे समयपर भोजन होता है, वहां पांच गुण होते है।

भिक्षुओ, काले सांपमे पांच दोप होते है। कौनसे पांच? अस्वच्छ होता है, दुर्गन्ध-पूर्ण होता है, बहुत सोने वाला होता है, भयका कारण होता है तथा मित्र-द्रोही होता है। भिक्षुओ, काले सांपमे ये पांच दोप होते है। इस प्रकार भिक्षुओ, स्त्रियोमे भी ये पांच दुर्गुण होते है। कौनसे पांच? अस्वच्छ होती है, दुर्गन्ध पूर्ण होती है, बहुत सोने वाली होती है, भयका कारण होती है, तथा मित्र-द्रोही होती है। भिक्षुओ, स्त्रियोमे ये पांच दुर्गुण होते है।

भिक्षुओ, काले सांपमे ये पांच दुर्गुण होते है। कौनसे पांच? क्रोधी-स्वभावका होता है, द्वेपी होता है, घोर-विपैला होता है, दुष्ट जिह्वा वाला होता है तथा मित्र-द्रोही होती है। भिक्षुओ, काले सांपमे ये पांच दुर्गुण होते है। भिक्षुओ, इसी प्रकार स्त्रियोमे भी ये पांच दुर्गुण होते है। कौनसे पांच? क्रोधी स्वभावकी होती है, द्वेपपूर्ण होती है, घोर विपैली होती है, दुष्टजिव्हा होती है, तथा मित्र-द्रोहिणी होती है। भिक्षुओ स्त्रियोका घोर विपैलापन इस बातमे होता है कि वह बहुत करके अत्यन्त कामुक होती है। भिक्षुओ, स्त्रियोका दुष्ट जिह्वापन इस बातमे होता है कि वह बहुत करके चुगल-खोरनी होती है। भिक्षुओ, स्त्रियोका द्रोहीपन इस बातसे रहता है कि स्त्रियां अतिचारिणी होती है। भिक्षुओ, स्त्रियोके ये पांच दुर्गुण है।

(४) आवासिक वर्ग

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमे ये पांच बाते होती है, वह सत्कार करने योग्य नही होता है। कौनसी पांच बातें? वह ढगसे नही रहता है, वह कर्तव्यो (=व्रतो) का पालन नही करता, वह बहुश्रुत नही होता, श्रुतवान् नही होता, एकान्तप्रिय नही होता, योगाभ्यासी नही होता, कल्याण-वचन बोलने वाला नही होता, प्रिय-भापी नही होता, दुष्प्रज्ञ होता है, जड-मूर्ख। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पांच बाते होती है, वह सत्कार करने योग्य नही होता है।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पांच बाते होती है, वह सत्कार करने योग्य होता है। कौनसी पांच बातें? वह ढगसे रहता है, वह कर्तव्यो (=व्रतो) का पालन करता है, वह बहुश्रुत होता है, श्रुतवान् होता है, एकान्त-प्रिय होता है, योगाभ्यासी होता है, कल्याण-वचन बोलने वाला होता है, प्रिय-भापी होता है, प्रज्ञावान् होता है, बुद्धिमान्। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पांच बाते होती है, वह सत्कार करने योग्य होता है।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है, वह अपने सब्रह्मचारियो (=साथियो) का प्रिय होता है, अच्छा लगने वाला होता है, गौरवार्ह होता है, सत्कार करने योग्य होता है। कौनसी पाँच वातें? वह सदाचारी होता है, प्रातिमोक्षके नियमोका पालन करने वाला होता है, सदाचारणमे विचरने वाला होता है, छोटेसे दोपमे भी भय मानने वाला होता है, भिक्षाओको सम्यक् प्रकारसे ग्रहण करने वाला होता है, वहुश्रुत होता है, श्रुतवान् होता है, जो धर्म आदिमे कल्याणकारक, मध्यमे कल्याणकारक, अन्तमे कल्याणकारक, सार्थक होते है, व्यजन (=शब्द) सहित होते है, सम्पूर्ण रूपसे परिशुद्ध ब्रह्मचर्यकी महिमाका वर्णन करने वाले होते है, उस प्रकारके धर्म उसके द्वारा वहुश्रुत होते है, वाणी द्वारा धारण किये गये होते है, मनके द्वारा परिचित किये गये होते है, अनुपरीक्षण किये गये होते है, (सम्यक्-) दृष्टि द्वारा सम्यक् प्रकारसे ग्रहण किये गये होते है, प्रिय-भाषी होता है, मधुरवाणी वोलने वाला होता है, विनम्र वोलने वाला होता है, विश्वसनीय वाणी वोलने वाला होता है, निर्दोप बोलने वाला होता है, अर्थ-व्रोधक वाणी वोलने वाला होता है। वह चैतसिक, प्रत्यक्ष सुख देने वाले चारो ध्यानोको अनायास प्राप्त करने वाला होता है, वह आस्रवोका क्षय कर, अनास्रव चित्त-विमुक्ति-प्रज्ञाविमुक्तिको इसी जन्ममे स्वय प्राप्त कर, स्वय साक्षात् कर विचरता है। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है, वह अपने सब्रह्मचारियो (=साथियो) का प्रिय होता है, अच्छा लगने वाला होता है, और गौरवार्ह होता है, सत्कार करने योग्य होता है।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है, वह भिक्षु आवास (=विहार) की शोभा होता है। कौनसी पाँच वातें? वह सदाचारी होता है शिक्षाओको सम्यक् प्रकार ग्रहण करने वाला होता है। वह वहुश्रुत होता है . (सम्यक्) दृष्टि द्वारा सम्यक प्रकारसे ग्रहण किये गये होते है। वह प्रिय-भापी होता है, मधुरवाणी बोलने वाला, विनम्र वोलने वाला, विश्वसनीय वोलने वाला, निर्दोप वोलने वाला, अर्थ-बोधक वाणी वोलने वाला। वह समर्थ होता है अपने पास आने वाले लोगोका धार्मिक वातचीतसे मार्ग-दर्शन करनेमे, उन्हे वढावा देनेमें, उनका उत्साह वढानेमे, उन्हे प्रसन्न करनेमे। वह चैतसिक, प्रत्यक्ष सुख देने वाले, चारो ध्यानोको अनायास प्राप्त करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमे ये पाँच वातें होती है, वह भिक्षु आवास (=विहार) की शोभा होता है।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है वह विहारका वहुत उपकारी होता है। कौनसी पाँच? वह सदाचारी होता है . शिक्षाओको सम्यक्

प्रकार ग्रहण करने वाला होता है। वह बहुश्रुत होता है। . (सम्यक्) दृष्टिसे सम्यक् प्रकार ग्रहण किये गये होते है। टूटे-फूटेकी मरम्मत करने वाला होता है, महान भिक्षुसघका आगमन होता है, नाना प्रदेशोंसे भिक्षु आते है—तो वह गृहस्थोंके पास जाकर कहता है, आयुष्मानो! महान् भिक्षु सघका आगमन हुआ है, नाना प्रदेशो-के भिक्षु आये है, पुण्य करो, यह पुण्य करनेका समय है। वह चैतसिक, प्रत्यक्ष सुख देने वाले, चारो-ध्यानोको अनायास प्राप्त करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बाते होती है, वह विहारका बहुत उपकारी होता है।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमे ये पांच बाते होती है, वह गृहस्थोपर अनुकम्पा करने वाला होता है। कौनसी पांच बाते? वह उन्हे शीलोमे प्रतिष्ठित करता है, धर्म-देशनामे स्थिर करता है और उन्हे कहता है कि जो सभी प्रकारके सत्कारके योग्य है उनका ध्यान करो। महान् भिक्षु सघका आगमन होता है, नाना प्रदेशोंसे भिक्षु आते है—तो वह गृहस्थोंके पास जाकर कहता है, आयुष्मानो! महान् भिक्षु सघका आगमन हुआ है, नाना प्रदेशोके भिक्षु आये है, पुण्य करो, यह पुण्य करने का समय है। वे उसे जैसा भी रूखा-सूखा या बढिया भोजन देते है, उसे ग्रहण करता है। श्रद्धापूर्वक दिये गये भोजनका तिरस्कार नही करता। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती है, वह गृहस्थोपर अनुकम्पा करने वाला होता है।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमे ये पांच बाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमे डाल दिया गया हो। वह बिना सोचे, बिना परीक्षा किये दुर्गुणीके गुण कहता है। वह बिना सोचे, बिना परीक्षा किये गुणीके दुर्गुण कहता है। वह बिना सोचे, बिना परीक्षा किये अश्रद्धेय स्थानपर श्रद्धा व्यक्त करता है। वह बिना सोचे, बिना परीक्षा किये श्रद्धेय स्थानपर अश्रद्धा व्यक्त करता है। वह श्रद्धापूर्वक दी गई वस्तुका तिरस्कार कर देता है। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमे ये पांच बाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो। कौनसी पांच बाते? वह सोच-विचारकर, परीक्षा करके दुर्गुणीके दुर्गुण कहता है। वह सोच-विचार कर, परीक्षा करके गुणी के गुण कहता है। वह सोच-विचार कर, परीक्षा करके अश्रद्धेय स्थानपर अश्रद्धा व्यक्त करता है। वह सोच-विचारकर, परीक्षा करके श्रद्धेय स्थानपर श्रद्धा व्यक्त करता है। वह श्रद्धापूर्वक दी गई वस्तुका तिरस्कार नही करता। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमे ये पाँच बातें होती है, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस नैवासिक भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमे डाल दिया गया हो। कौनसी पॉच वाते ? वह विना सोचे, विना परीक्षा किये दुर्गुणीके गुण कहता है। वह विना सोचे, विना परीक्षा किये गुणीके दुर्गुण कहता है, आवास (=निवास स्थान) के प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, आवासके प्रति लोभी, कुल (=परिवारो) के प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, कुलके प्रति लोभी, श्रद्धासे दी गई वस्तुका तिरस्कार करता है। भिक्षुओ, जिस नैवासिक भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमे डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमे डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच वाते ? वह सोच-विचार कर, परीक्षा करके दुर्गुण कहता है। वह सोच-विचारकर परीक्षा करके गुणीके गुण कहता है। वह आवास (=निवास स्थान) के प्रति लोभी मात्सर्य-युक्त नही होता है, आवासके प्रति लोभी नही, कुल (=परिवारो) के प्रति मात्सर्य-युक्त नही होता है, कुलके प्रति लोभी नही, श्रद्धासे दी गई वस्तुका तिरस्कार नही करता है। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच वाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमे डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमे डाल दिया गया हो। कौनसी पॉच वाते ? वह विना सोचे, विना परीक्षा किये दुर्गुणीके गुण कहता है, वह विना सोचे, विना परीक्षा किये गुणीके दुर्गुण कहता है, वह आवास (=निवासस्थान) के प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, कुल (=परिवार) के प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, लाभके प्रति मात्सर्य-युक्त होता है। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमे ये पॉच वातें होती है, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस नेवामिक भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच वाते ? वह मोच-विचारकर, परीक्षा करके दुर्गुणीके दुर्गुण कहता है। वह मोच-विचारकर परीक्षा करके, गुणीके गुण कहता है। वह आवास (=निवासस्थान) के प्रति मात्मर्य-युक्त नहीं होता है, कुल (=परिवार) के प्रति मात्मर्य-युक्त नही होता है, लाभके प्रति मात्मर्य-युक्त नही होता है। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमे ये पाँच वातें होनी है, वह ऐमा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस नेवामिक भिक्षुमें ये पाँच वाते होती हैं वह ऐसा ही होता है जैमा लाकर नरकमे डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच वाते? वह आवास (=निवासस्थान) के प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, कुल (=परिवार) के प्रति मात्मर्य-युक्त होता है, लाभके प्रति मात्मर्य-युक्त होता है, वर्णके प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, श्रद्धासे दी गई वस्तुका तिरस्कार करता है। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमे ये पाँच वातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैमा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच वाते होती है वह वैसा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच वाते? आवास (=निवास स्थान) के प्रति मात्सर्य-युक्त नही होता है, कुल (=परिवार) के प्रति मात्सर्य-युक्त नही होता है, लाभके प्रति मात्सर्य-युक्त नही होता है, वर्णके प्रति मात्सर्य-युक्त नही होता है, श्रद्धासे दी गई वस्तुका तिरस्कार नही करता है। भिक्षुओ, जिम नेवामिक भिक्षुमें ये पाँच वाते होती है, वह ऐसा ही होता है, जैसा लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमे ये पाँच वातें होती है वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमे डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच वातें? आवास (=निवास-स्थान) के प्रति मात्मर्य-युक्त होता है, कुल (=परिवार) के प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, लाभके प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, वर्णके प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, धर्मके प्रति मात्सर्य-युक्त होता है। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच वातें होती है वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमे ये पाँच होती है वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमे डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच वातें? आवास (=निवासस्थान) के प्रति मात्सर्य-युक्त नही होता है, कुल (=परिवार)के प्रति मात्सर्य-युक्त नही होता है, लाभके प्रति मात्सर्य-युक्त नही होता है, वर्णके प्रति मात्सर्य-युक्त नही होता है। धर्मके प्रति मात्सर्य-युक्त नही होता है। भिक्षुओ, जिस नैवासिक भिक्षुमे ये पाँच वाते होती है वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो।

(५) दुश्चरित वर्ग

भिक्षुओ, दुश्चरित्रताके पाँच दुष्परिणाम होते है। कौनसे पाँच? अपना आप भी अपने आपको दोप देता है। जानकार विज्ञजन निन्दा करते हैं। वदनामी

होती है। बेखबरीकी हालतमे मृत्युको प्राप्त होता है। शरीर छूटनेपर, मरनेके अनन्तर दुर्गतिको प्राप्त होता है, नरकमे जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, दुश्चरित्रता मे ये पाँच दुष्परिणाम हैं।

भिक्षुओ, सच्चरित्रताके ये पाँच शुभ-परिणाम है। अपना आप भी अपनी निन्दा नही करता है, जानकार विज्ञजन प्रशसा करते है, नेकनामी होती है, जागरूक रहकर मृत्युको प्राप्त होता है। छुटनेपर, मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्गमे जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, सुचरित्रताके ये पाँच शुभ परिणाम है।

भिक्षुओ, शारीरिक दुश्चरित्रताके पाँच दुष्परिणाम है शारीरिक सच्चरित्रताके वाणीकी दुश्चरित्रताके वाणीकी सच्चरित्रताके मानसिक दुश्चरित्रताके मानसिक सच्चरित्रताके। कौनसे पाँच ? अपना आप भी अपनी निन्दा नही करता है, जान लेने पर विज्ञजन प्रशसा करते है, नेकनामी होती है, जागरूक रहकर मृत्युको प्राप्त होता है। छूटने पर, मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्ग लोकमे जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, मानसिक सच्चरित्रताके ये पाँच शुभ परिणाम है।

भिक्षुओ, दुश्चरित्रताके पाँच दुष्परिणाम होते हैं। कौनसे पाँच ? अपना आप भी अपने आपको दोष देता है, जानकार विज्ञजन निन्दा करते है, वदनामी होती है, सद्धर्मसे उखड जाता है, असद्धर्ममे प्रतिष्ठित होता है। भिक्षुओ, दुश्चरित्रता के पाँच दुष्परिणाम हैं।

भिक्षुओ, सच्चरित्रताके पाँच शुभ-परिणाम है। कौनसे पाँ च ? अपना आप अपनेको दोष नही देता, जानकार विज्ञ-जन प्रशसा करते है, नेकनामी होती है, असद्धर्मसे उखड जाता है, सद्धर्ममे प्रतिष्ठित होता है।

भिक्षुओ, शारीरिक दुश्चरित्रताके पाँच दुष्परिणाम होते है शारीरिक सच्चरित्रताके वाणीकी दुश्चरित्रताके वाणीकी सच्चरित्रताके . मनकी दुश्चरित्रताके मनकी सच्चरित्रताके। कौनसे पाँच ? अपना आप अपनेको दोष नही देता, जानकार विज्ञ-जन प्रशसा करते हैं, नेकनामी होती है, असद्धर्मसे उखड जाता ह, सद्धर्ममे प्रतिष्ठित होता है। भिक्षुओ, मनकी सच्चरित्रताके ये पाँच शुभ-परिणाम हैं।

भिक्षुओ, मरघटके पाँच दुष्परिणाम है। कौनसे पाँच ? अशुचिता, दुर्गन्ध, भय, प्रेत आदिका निवास तथा वहुतसे लोगोका रोना-पीटना। भिक्षुओ, मरघटके ये पाँच दुष्परिणाम है। इसी प्रकार भिक्षुओ, मरघट-समान मनुष्यके भी पाँच दुर्गुण

है। कौनसे पाँच ? भिक्षुओ, एक आदमीका शारीरिक-कर्म अशुचिपूर्ण होता है, वाणीका कर्म अशुचिपूर्ण होता है, मानसिक कर्म अशुचिपूर्ण होता है—यही उसकी अशुचिता कहता हूँ। भिक्षुओ, जैसे वह मरघट अशुचिपूर्ण होता है, वैसा ही मैं इस आदमीको कहता हूँ।

जिस आदमीके शारीरिक-कर्म अशुचिपूर्ण होते है, वाणीके कर्म अशुचिपूर्ण होते है, मानसिक-कर्म अशुचिपूर्ण होते है, उस आदमीकी बदनामी होती है—यही उसका दुर्गन्ध-पूर्ण होना है। भिक्षुओ, जैसे वह मरघट दुर्गन्ध-पूर्ण होता है, वैसा ही मैं इस आदमीको कहता हूँ।

जिस आदमीके शारीरिक-कर्म अशुचिपूर्ण होते है, वाणीके कर्म अशुचिपूर्ण होते है, मानसिक-कर्म अशुचिपूर्ण होते है, उसे जो सद्गुणी भिक्षु (= साथी) होते है वे दूर ही दूर रखते है—यही उसका भय-युक्त होना है। भिक्षुओ, जैसे ही वह मरघट भय-पूर्ण होता है, वैसा ही मैं इस आदमीको कहता हूँ।

जिस आदमीके शारीरिक-कर्म अशुचिपूर्ण होते है, वाणीके कर्म अशुचिपूर्ण होते है, मानसिक-कर्म अशुचिपूर्ण होते है, वह अपने ही जैसे आदमियोके साथ रहता है। यही उसकी प्रेत-सगति है। भिक्षुओ, जैसे मरघट प्रेत आदिका घर होता है वैसा ही मैं इस आदमीको कहता हूँ।

जिस आदमीके शारीरिक-कर्म अशुचिपूर्ण होते है, वाणीके कर्म अशुचिपूर्ण होते है, मानसिक-कर्म अशुचिपूर्ण होते है, उस आदमीको देखकर उसके सद्गुणी साथी क्षुब्ध होते है—यही हमारे लिये कितने बडे दु खकी बात है कि हम ऐसे आदमीके साथ रहते है। यही उसका रोदन-पूर्ण होना है। भिक्षुओ, जैसे मरघट बहुतसे लोगोके रोने-पीटनेकी जगह है, वैसा ही मैं इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, मरघट समान आदमीके ये पाँच दुर्गुण होते है।

भिक्षुओ, व्यक्तिके प्रिय होनेके पाँच दुष्परिणाम है, कौनसे पाँच ? भिक्षुओ, जिस आदमीसे एक आदमी का प्रेम होता है, वह किसी ऐसे दोपका दोपी होता है जिस दोपके कारण सघ उसका उत्क्षेपणीय कर्म (= दण्ड विशेप) करता है। उसके मनमे होता है कि जो व्यक्ति मेरा प्रिय है, मुझे अच्छा लगने वाला है, सबने उसका उत्क्षेपणीय-कर्म किया है। वह भिक्षुओंसे अप्रसन्न हो जाता है। भिक्षुओसे अप्रसन्न हो जानेके कारण दूसरे भिक्षुओकी सगति नही करता। दूसरे भिक्षुओकी सगति न करनेके कारण सद्धर्म नही सुनता। सद्धर्म न सुननेसे वह सद्धर्म से पतित होता है। भिक्षुओ, व्यक्तिके प्रिय होनेका यह पहला दुष्परिणाम है।

फिर भिक्षुओ, जिस आदमीसे एक आदमीका प्रेम होता है, वह किसी ऐसे दोषका दोषी होता है जिस दोषके कारण सघ उसे अन्तमे विठा देता है। उसके मनमे होता है कि जो व्यक्ति मेरा प्रिय है, मुझे अच्छा लगने वाला है, सघने उसे अन्तमे विठा दिया है। वह भिक्षुओसे अप्रसन्न हो जाता है। भिक्षुओसे अप्रसन्न हो जानेके कारण दूसरे भिक्षुओकी सगति नही करता । दूसरे भिक्षुओकी सगति न करने के कारण सद्धर्म नही सुनता। सद्धर्म न सुननेके से वह सद्धर्मसे पतित हो जाता है। भिक्षुओ, व्यक्तिके प्रिय होनेका यह दूसरा दुष्परिणाम है।

फिर भिक्षुओ, जिस आदमीसे एक, आदमीका प्रेम हो जाता है, वह किसी ओर चला जाता है वह भ्रान्त-चित्त हो जाता है वह मर जाता है। उसके मनमे होता है कि जो व्यक्ति मेरा प्रिय है, मुझे अच्छा लगने वाला है, वह मर गया है। वह भिक्षुओसे अप्रसन्न हो जाता है। भिक्षुओसे अप्रसन्न हो जानेके कारण दूसरे भिक्षुओकी सगति नही करता। दूसरे भिक्षुओकी सगति न करनेके कारण सद्धर्म नही सुनता। सद्धर्म न सुननेसे वह धर्मसे पतित हो जाता है। भिक्षुओ, व्यक्तिके प्रिय होनेका यह पाँचवाँ दुष्परिणाम है। भिक्षुओ, व्यक्तिके प्रिय होनेके ये पाँच दुष्परिणाम है।

(६) उपसम्पदा वर्ग

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते हो, उसे ही दूसरोको उपसम्पदा देनी चाहिये। कौनसी पाँच वाते ? भिक्षुओ, वह भिक्षु अशैक्ष शील-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष समाधि-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष प्रज्ञा-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष विमुक्ति-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनसे युक्त होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते हो, उसे ही दूसरोको उपसम्पदा देनी चाहिये।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते हो, उसे ही दूसरोको आश्रय देना चाहिये . श्रामणेर वनाकर रखना चाहिये। कौनसी पाँच वाते। भिक्षुओ, वह भिक्षु अशैक्ष शील-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष समाधि-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष प्रज्ञा-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष विमुक्ति-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष विमुक्ति ज्ञान-दर्शन स्कन्धसे युक्त होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच वाते हो उसे ही दूसरोको श्रामणेर वनाकर रखना चाहिये।

भिक्षुओ, ये पाँच मात्सर्य है। कौनसे पाँच ? आवास (= निवासस्थान) के वारेमे मात्सर्य, कुल (= परिवारो)के वारेमे मात्सर्य, लाभके वारेमे मात्सर्य, वर्णके

वारेमें मात्सर्य तथा धर्मके बारेमें मात्सर्य। भिक्षुओ, ये पाँच मात्सर्य हैं। भिक्षुओ, इन पाँचो मात्सर्योंमें यही निकृष्ठतम मात्सर्य है, यह जो धर्म-मात्सर्य है।

भिक्षुओ, पाँच मात्सर्योंका प्रहाण करनेके लिये, मूलोच्छेद करनेके लिये ही ब्रह्मचर्य-वास किया जाता है। कौनसे पाँच मात्सर्योंका ? आवास (= निवास-स्थान) के मात्सर्यके प्रहाणके लिये, मूलोच्छेदके लिये ब्रह्मचर्य-वास किया जाता है। कुल-मात्सर्यके लाभ-मात्सर्यके वर्ण-मात्सर्यके धर्म-मात्सर्यके प्रहाण करनेके लिये, मूलोच्छेद करनेके लिये ब्रह्मचर्य-वास किया जाता है।

भिक्षुओ, विना इन पाँच वातोका त्याग किये प्रथम-ध्यानकी प्राप्ति असम्भव है। कौनसी पाँच ? आवास (= निवास स्थान) मात्सर्य, कुल (= परिवार) मात्सर्य, लाभ-मात्सर्य, वर्ण-मात्सर्य—भिक्षुओ, विना इन पाँच वातोका त्याग किये प्रथम-ध्यानकी प्राप्ति असभव है।

भिक्षुओ, इन पाँच वातोका त्याग कर देनेसे प्रथम-ध्यानकी प्राप्ति सभव है। कौनसी पाँच ? आवास (= निवास स्थान) मात्सर्य, कुल (= परिवार) मात्सर्य, लाभ-मात्सर्य, वर्ण-मात्सर्य, धर्म-मात्सर्य—भिक्षुओ, इन पाँच वातोका त्यागकर देनेसे प्रथम-ध्यानकी प्राप्ति सभव है।

भिक्षुओ, विना इन पाँच वातोका त्याग किये दूसरे ध्यानकी तीसरे ध्यानकी चौथे ध्यानकी स्रोतापत्ति फलकी सकृदागामी फलकी अनागामी फलकी अर्हत्व फलकी प्राप्ति असम्भव है। कौनसी पाँच ? आवास (= निवास स्थान) मात्सर्य, कुल (= परिवार) मात्सर्य लाभ-मात्सर्य, वर्ण-मात्सर्य, धर्म-मात्सर्य—भिक्षुओ, विना इन पाँच वातोका त्याग किये अर्हत्व-फलकी प्राप्ति असभव है।

भिक्षुओ, इन पाँच वातोका त्याग कर देनेसे द्वितीय ध्यानकी तृतीय ध्यानकी चतुर्थ ध्यानकी स्रोतापत्ति फलकी सकृदागामी फलकी अनागामी फलकी अर्हत्व फलकी प्राप्ति सम्भव है।

भिक्षुओ, विना इन पाँच वातोका त्याग किये प्रथम ध्यानकी प्राप्ति असम्भव है। कौनसी पाँच वातें ? आवास (= निवास स्थान) मात्सर्य, कुल (= परिवार) मात्सर्य, लाभ-मात्सर्य, वर्ण-मात्सर्य, अकृतज्ञता। भिक्षुओ, विना इन पाँच वातोका त्याग किये प्रथम ध्यानकी प्राप्ति असम्भव है।

भिक्षुओ, इन पाँच वातोका त्याग कर देनेसे प्रथम-ध्यानकी प्राप्ति सम्भव है। कौनसी पाँच वातें ? आवास (= निवासस्थान) मात्सर्य, कुल (= परिवार)

मात्सर्य, लाभ-मात्सर्य, वर्ण-मात्सर्य, अकृतज्ञता। भिक्षुओ, इन पाँच बातोका त्याग कर देनेसे प्रथम-ध्यानकी प्राप्ति सम्भव है।

भिक्षुओ, बिना इन पाँच बातोका त्याग किये द्वितीय ध्यानकी . तृतीय ध्यानकी . चतुर्थ ध्यानकी . स्रोतापत्ति फलकी . सकृदागामी फलकी अनागामी फलकी . अर्हत्व फलकी प्राप्ति असम्भव है। कौनसी पाँच बातोका? आवास (= निवास स्थान) मात्सर्य, कुल-मात्सर्य, लाभ मात्सर्य, वर्ण-मात्सर्य, अकृतज्ञता। भिक्षुओ, बिना इन पाँच बातोका त्याग किये अर्हत्वकी प्राप्ति असम्भव है।

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बाते हो उसे भोजन-व्यवस्थापक (–भत्तु-देसक) कभी नही चुनना चाहिये। कौनसी पाँच? जो इच्छाके वशमे हो जाता हो, जो द्वेषके वशमे हो जाता हो, जो मोहके वशमे हो जाता हो, जो भयके वशमे हो जाता हो जो उद्दिष्ट-अनुद्दिष्ट[1] को नही जानता। भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बाते हो उसे भोजन-व्यवस्थापक (= भत्तुद्देसक) नही बनाना चाहिये।

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बातें हो उसे भत्तुद्देसक चुनना चाहिये। कौनसी पाँच? जो इच्छाके वशीभूत न होता हो, जो द्वेषके वशीभूत न होता हो, जो मोहके वशीभूत न होता हो, जो भयके वशीभूत न होता हो, जो उद्दिष्ट-अनुद्दिष्ट को जानता हो। भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बाते हो उसे भोजन-व्यवस्थापक (= भत्तुद्देसक) बनाना चाहिये।

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बातें हो, उसे न भत्तुद्देसक चुनना चाहिये, चुना जानेपर भेजा जाना नही चाहिये . .

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बातें न हो, वह चुना जानेपर भेजा जाना चाहिये .

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बाते हो, वह मूर्ख समझा जाना चाहिये .

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बाते न हो, वह पण्डित समझा जाना चाहिये

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बाते हो, वह स्वय अपनेको आघात पहुँचाने वाला होता है

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बाते न हो, वह स्वय अपनेको आघात पहुँचाने वाला नही होता है

---

१ व्यक्ति विशेषके लिये बनाया गया भोजन 'उद्दिष्ट' भोजन कहलायेगा।

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बाते हो, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर नरकमे डाल दिया गया हो . .

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बाते न हो, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमे डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच बाते ? वह इच्छाके वशीभूत नही होता, वह द्वेषके वशीभूत नही होता, वह मोहके वशीभूत नही होता, वह भयके वशीभूत नही होता तथा वह उद्दिष्ट-अनुद्दिष्टको जानता है। भिक्षुओ, जिस भत्तुद्देसकमें ये पाँच बाते हो वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर स्वर्गमे डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बाते हो उसे शयनासन व्यवस्थापक (सेनासन पञ्ञापक) नही चुनना चाहिये

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बाते हो, उसे शयनासन-व्यवस्थापक चुनना चाहिये .

[वह प्रज्ञप्त-अप्रज्ञप्तको नही जानता, वह प्रज्ञप्त-अप्रज्ञप्तको जानता है।]

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बातें हो उसे शयनासन दिलाने वाला (=सेनासन गाहापक) चुनना चाहिये शयनासन दिलाने वाला चुनना चाहिये . प्रज्ञप्त-अप्रज्ञप्त नही जानता है प्रज्ञप्त-अप्रज्ञप्त जानता है भाण्डागारिक (=कोपाध्यक्ष) न चुनना चाहिये भाण्डागारिक चुनना चाहिये . रक्षित–अरक्षित (गुप्तागुप्त) नही जानता, गुप्तागुप्त जानता है . चीवर-प्रतिग्राहक नही चुनना चाहिये, चीवर-प्रतिग्राहक चुनना चाहिये . ग्रहण किया गया, न ग्रहण किया गया नही जानता ग्रहण किया गया, न ग्रहण किया गया जानता है चीवर-बाँटने वाला न चुनना चाहिये चीवर बाँटने वाला चुनना चाहिये यवागु बाँटने वाला न चुनना चाहिये. यवागु बाँटने वाला चुनना चाहिये फल बाँटने वाला न चुनना चाहिये . फल बाँटने वाला चुनना चाहिये खाजा (=खज्जक) बाँटने वाला न चुनना चाहिये खाजा बाँटने वाला चुनना चाहिये वह बाँटा गया, न बाँटा गया जानता है अल्पमात्र विसर्जन करने वाला न चुनना चाहिये अल्पमात्र विसर्जन करने वाला चुनना चाहिये . विसर्जित अविसर्जित नही जानता विसर्जित अविसर्जित जानता है वर्षा-शाटिका दिलाने वाला न चुनना चाहिये . वर्षा-शाटिका दिलाने वाला चुनना चाहिये, गृहीत-अगृहीत नही जानता . गृहीत अगृहीत जानता है . पात्र दिलाने वाला न चुनना चाहिये, पात्र

दिलाने वाला चुनना चाहिये   गृहीत अगृहीतको नही जानता   गृहीत अगृहीतको जानता है   आराम (= विहार) निरीक्षक चुनना चाहिये . आराम-निरीक्षक (आरामिके-पेसिक) न चुनना चाहिये . .प्रेषित-अप्रेषित नही जानता . प्रेषित अप्रेषित जानता है   श्रामणेर-प्रेषक चुनना चाहिये . . श्रामणेर-प्रेषक नही चुनना चाहिये. चुना गया भी नही भेजना चाहिये . . चुना गया भी भेजना चाहिये   भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बाते हो, वह मूर्ख समझा जाना चाहिये

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बाते हो, वह पण्डित समझा जाना चाहिये

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमे ये पाँच बाते हो, वह स्वय अपने आपको आघात पहुँचाने वाला होता है   स्वय अपने आपको आघात पहुँचाने वाला नही होता है   जैसे लाकर नरकमे डाल दिया गया हो   जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो   कौनसी पाँच बाते ? वह इच्छाके वशीभूत नही होता, वह द्वेपके वशीभूत नही होता, वह मोहके वशीभूत नही होता, वह भयके वशीभूत नही होता तथा वह प्रेषित-अप्रेषितको जानता है। भिक्षुओ जिस श्रामणेर-प्रेषकमे ये पाँच बातें होती है, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर स्वर्गमे डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर नरकमे डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच बाते ? प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, अब्रह्मचारी होता है, झूठ बोलने वाला होताहै, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोका सेवन करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर नरकमे डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर स्वर्गमे डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच बातें ? वह प्राणी-हिंसासे विरत होता है, चोरीसे विरत होता है, अब्रह्मचर्यसे विरत होता है, झूठ बोलनेसे विरत होता है, सुरा मेरय आदि नशीली चीजोका सेवन करनेसे विरत होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमे ये पाँच बाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर स्वर्गमे डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमे   जिस शैक्षमानमे   जिस श्रामणेरमे . जिस श्रामणेरीमें   जिस उपासकमे   जिस उपासिकामे ये पाँच बातें होती है, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर नरकमे डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच बातें ? प्राणी-हिंसा करने वाली होती है, चोरी करने वाली होती है, व्यभिचार

करने वाली होती है, झूठ बोलने वाली होती है, सुरा-मेरय आदि नशीली वस्तुओंका सेवन करने वाली होती है। भिक्षुओ, जिस उपासिका में ये बातें होती है, वह ऐसी ही होती है जैसे लाकर नरकमे डाल दी गयी हो।

भिक्षुओ, जिस उपासिकामें ये पाँच बाते होती है वह ऐसी ही होती है जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दी हो। कौनसी पाँच बातें? प्राणी-हिंसासे विरत रहने वाली होती है, चोरीसे विरत रहने वाली होती है, काम-भोग सम्बन्धी मिथ्याचारसे विरत रहने वाली होती है, झूठसे विरत रहने वाली होती है, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोंके सेवनसे विरत रहने वाली होती है। भिक्षुओ, जिस उपासिकामें ये पाँच बातें होती है, वह ऐसी ही होती है जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दी गयी हो।

भिक्षुओ, जिस आजीवकमे ये पाँच बाते होती है, वह ऐसा ही होता है, जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच बातें? प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, अब्रह्मचारी होता है, झूठ बोलने वाला होता है, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोका सेवन करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस आजीवकमें ये पाँच बाते होती है, वह ऐसा ही होता है, जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस निगण्ठ (= निर्ग्रन्थ) जिस वृद्ध-श्रावकमे . जिस-जटिलकमें जिस परिव्राजकमें जिस मागन्दिकमे जिस दण्डिकमें जिस आरुद्धकमें जिस गोतमकमें . जिस देव धम्मिकमे ये पाँच बाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमे डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच बातें? वह प्राणी हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, अब्रह्मचारी होता है, झूठ बोलने वाला होता है, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजें ग्रहण करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस देवधम्मिकमें ये पाँच बाते होती है, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमे डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, राग (= कामचेतना) का क्षय करनेके लिये पाँच भावनाओका अभ्यास करना चाहिये। कौनसी पाँच? अशुभ-सज्ञा, मरण-सज्ञा, दुष्परिणाम (= आदिनव) सज्ञा, भोजनके सम्बन्धमें प्रतिकूल-सज्ञा तथा सभी लोकोंके प्रति अनासक्तिकी भावना। भिक्षुओ, राग (= कामचेतना) का क्षय करनेके लिये इन पाँच भावनाओका अभ्यास करना चाहिये।

भिक्षुओ, राग (= कामचेतना) का क्षय करनेके लिये पाँच भावनाओका अभ्यास करना चाहिये। कौनसी पाँच? अनित्य-सज्ञा, अनात्म-सज्ञा, मरण-सज्ञा,

भोजनके प्रति प्रतिकूल-सज्ञा, सभी लोकोके प्रति अनासक्तिकी भावना। भिक्षुओ, राग (= कामचेतना) का क्षय करनेके लिये इन पाँच भावनाओका अभ्यास करना चाहिये।

भिक्षुओ, रागका क्षय करनेके लिये पाँच भावनाओका अभ्यास करना चाहिये। कौनसी पाँच ? अनित्य-सज्ञा, अनित्यमे दु ख-सज्ञा, दु खमे अनात्म-सज्ञा, प्रहाण-सज्ञा, वैराग्य-सज्ञा। भिक्षुओ, रागका क्षय करनेके लिये इन पाँच भावनाओका अभ्यास करना चाहिये।

भिक्षुओ, रागका क्षय करनेके लिये पाँच भावनाओका अभ्यास करना चाहिये। कौनसी पाँच ? श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। भिक्षुओ, रागका क्षय करनेके लिये पाँच भावनाओका अभ्यास करना चाहिये।

भिक्षुओ, रागका क्षय करनेके लिये पाँच भावनाओका अभ्यास करना चाहिये, कौनसी पाँच ? श्रद्धा-बल, वीर्य-बल, समाधि-बल, स्मृति-बल, प्रज्ञा-बल। भिक्षुओ, रागका क्षय करनेके लिये पाँच भावनाओका अभ्यास करना चाहिये।

भिक्षुओ, रागका यथार्थ परिचय प्राप्त करनेके लिये, क्षय करनेके लिये, प्रहाण करनेके लिये, नष्ट करनेके लिये, समाप्त करनेके लिये, विरागके लिये, निरोधके लिये, त्यागके लिये, परित्यागके लिये इन पाँच भावनाओका अभ्यास करना चाहिये।

भिक्षुओ, द्वेषका मोहका . क्रोधका . . उपनाहका .. म्रक्षका प्लाशका ईर्षाका मात्सर्यका . मायाका . • शठताका स्तब्धताका सारम्भ (= कलह) का मान का अतिमानका मदका प्रमादका यथार्थ परिचय प्राप्त करनेके लिये, क्षय करनेके लिये, प्रहाण करनेके लिये, नष्ट करनेके लिये, विरागके लिये निरोधके लिये, परित्यागके लिये इन पाँच भावनाओका अभ्यास करना चाहिये।
